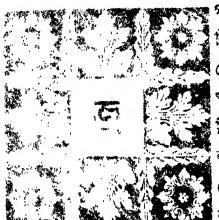
বিবিধার্থ-সঙ্

अवाराखिकान-आनिविना-निष्य-मारिकानि-एगा छक मानिक श्रे ।

गकाम :११६, हेछ्छ।

इत उल्लाभत उर्शिख।



राष्ट्र अलाम्म श्र-

গ্ৰুপা ছিল লা ্য, এতাকশাম প্ৰাচাৰ রাজ-कुल्लीहरू भारकाम प्राप्त ५३व. प्राप्त कर के प्रमुख्या है है । जन्म चार्य-नामक अवस्थ-निवादत युक्त के विकास शार के महत्व।

मन क करिया कि। ये कूल (नोत वा नाम वश्टला वह या क्वेटका क्यायो क मन्द्र नामी हरा है। मात्र प्राष्ट्रांन मरह, कथा काज मराख नरहः, कडीडे मिकिन प्रार्थना श्राकाम दा अलाह काराटक त्य नकन क्रूननविश्वाक क्रिक्ति विश्वामित्न कर्ज्य ४ अधिक रहेदा 🚑 भाषाण्य कियाहितान, छाङापिरगद्ग यत्नावर्गन विक्यूक्यानि-(क्रम्भन-प्रक्रिक भावसभा भूमिक इवेटमन मटमार मारे।

श्राठीन वः मगाउद्धर मूम यत्री कार्भावालय मि विश्वाक्तारत जावृत्व थाएक, अवस्टिखांकिक करण-शमीर्द अनामार- मध्यक अन्तर्भ निम्नम नश्चमान **एटे एक शादा। य**णिक विविधारणह छेड- भिड्यक पहन्त्र सामापिरणक कहापि काला महिल রোভর উন্নতিতে তভাপি ১ংক্ল-প্রায়ভ-বিষয়ক-পাপ व्यागता भारतिय शहर देखिहारगढ वकास-र्यादक क्ष ियरशत 'बारका- अने भारत डेज र क**िएडे केवा जेका**ए के केवा वात्न भागानिक इंडे- विद्याता करण्यः, स्यान्त् व्यवस्थानिक वकः তেছি। পত্র প্রা- বিংশভি বার নিক্ষতি হওনের বিশ্বভাল পরে हाला-नियल श्रक्ता । वर्ष व्यवस्था चाह्रव करेल : नारभद्र वृक्ति अ नाटमात स्टिम बेहेटक सामिन : ्रक नकत (क्न-लाक शांकिक क्रिक : अमृत उत् कि किन कर काम प्रत्मात मुनिर्मन-अजार कृत्वत आप् कार करेश के जिस के बिन कर करें বিশিষ্ক বিক্ষিত করিতে ক্তোদ্যম হইয়া- ভারে অভির' হুইছে। এই বিহুটি ক্রিটি किला म । व्यवना मक्ष्रजाक्ष्यकान मक्र-नाखत भाविज अवि का कि व्य भूनक हायर विक्री हो हहे। व शर्वक निर्मानाहा सूनि-क्षिपिए क्षेत्र उर्भाष्ठ आसार बामता स्त्रकृत्वत अनुकेर्तिम ठाँशता अवनीमश्रद्भात मुझ्यका-सर्भ म

व्यवसम्ब श्राकानर । इन, करः ं बनाइएस हेन्द्रस्य /लोनायमान च-। इनि- प्रशाम-श्राम अपूर्ण मुर्वा-क वृक्षः निरम्भयः कविस्ति । अम-गांव । अ परश्वधादी अक रोड श-লৈ: ত্রিন নাম প্রমার, এবং তিনি ्रेल्क्सिनी डाक्स्य आव हरेलान । ৰতানিগৰ প্ৰাৰ্থ**নায় বুল্লাও আপন** ়ংলে প্ৰত্ত হল। **তা**ছাত ক্ত দ্বী-ল প্ৰাভক্ত ৬ শছা ও বেৰহন্ত ৪০০ লাগের তাম **চাল্ক বা দো**ল 🔻 🚧 শহুৰ-পাহ্ৰৰ ভাঁছার রাজ্য। ্লা া কদাংশহইতে ঘনুধারী কদা-ত তথান আরে। দানব-দম্লে তা-हिला प्रतिका**छिन अयुक्त रम "श**हिन ১৯১৪ জনাজুল-মঞ্জনী **তাহার**

ত্র বিষয়ে ইংপাদন করেন।

১০০ জিলাংশ-চক্ত-গদা-পদ্যু
১০০ জিলাংশ-চক্ত-গদা-পদ্যু
১০০ জিলাংশ-প্রেদান-প্রেক মাম্বতী

১০০ জিলাংশ-প্রেদান-প্রেক মাম্বতী

১০০ জিলাংশ-সাল্ভার কলে চতু ইন চাত্ত
শালে বিজ্ঞান্ত সংস্থান শ্রেদ্

তি এই জান কর-প্রান সভুষ্টিয় দানব- প্থা-পা হল হল্প-গল্পান নত হইয়া- হইতে প্ লৈই কৈ লাভাৱ করেন, ততই করেন। কেইতে অভিনৰ দানবগণ উপিত পুপ্র হা হলি আশাপ্রণ গালনমাত। ক্রিছোতা নামা ভাছাদিগের হল্পান

অধিষ্ঠাত্রী দেবার। দৈত শোণিত-পান-পূর্ক আনি-ষ্টের নিরাকরণ করিলেন।

এই গণেশর সভ্যাসভ্য-বিষয়ে বাক্য ব্যয় করা বিফল, পরস্তু ইহাতে স্পত্ত প্রকাশ পাইতেছে যে প্রকালে উজ্জ-নামধারী বাক্তি-চতুষ্ঠয় সর্দ্দমন-পূর্বক কিন্দুৰ্ম্মের উয়তি লাখন করিয়াছিলে। ভারতব্বে ইর্নালিক বল্প ক্ষিকুল নামে বিখ্যাত আছে, এবং সাজ্যতে ভানেক লা জন্য-শেষ্ঠ জন্ম-পূর্বণ করিয়াজেন; বিশোসভঃ সংকীতি-সম্পাদনে চোলান-বংশ অলি চায়-বালে গ্রানা জারী: তালা নর্মদা-নদাতটে পোরা-মাসবতী নগরী: তালা ক্র্মান আজে। ভ্রান্থিক ক্রেন্সালিক, আন্যাবর্তী প্রত্তি অন্যাক্ষ ভ্রান্থিক ক্রেন্সাভিন্ন আন্যাবর্তী প্রত্তি অন্যাক্ষ ভ্রান্থিক ক্রেন্সাভিন্ন

এই বংশের অজয়পাল নামা এক বাহিন
আজমির নগরে আপন রাজপাট আপেন কর হ
তথায় তারাগড় নামক এক দুল নির্মাণ করে।
তিনি তোহান রাজাদিগের মধ্যে অতি প্রসাদ,
এবং তাঁহার সমকালান বাহিনা তাঁহাকে সঞ্জনবর্দ্ধী রাজ্য নামে বিখাতে করিয়াছিল: এবং
তাহার রাজ্য-কালের নির্মাপন মাই; এবং সাফান
বংশের বিবরণও ক্রমান্তরে প্রচরিত নাই। ধ্রণিত
আছে, তাঁহার পরলোক-হওনের কিয়্তুলে নামে ত্র্লিগিটি জানৈক মান্তরতা
হইতে আগমন করত আজমিরের রাজ্যত্ত বিভার ক্রেন। তাঁহার এক জীর সালে চতুরি লাভি
প্র হয়, এবং ভাহাদিগের সস্তানে আজমির
দেশ রাজকুলে সমাকার্ণ বলা রাজা দুলারায়

^{*} ওৎকালে বজ্বিবাছকপ ক্লাচার বাজ ুপ্রদিধের মধ্যে প্রচার । জন্ম নাই।

এবং ভুম্ল-সম্পানে তাহাকে বধ করিয়া তদীয় হৈ, মোহিল, নতানা, বাদেরিয়া, ভৌতেচা, প্র जभरत प्लाइ পুঞ लांहे, पूर्णत প्राहोत्राभित्र वक्र व्हे उन्हे व हत्र। জীড়া করিতে > যবনাদিগের নিষ্ঠুর সরাঘাতে বি- মাণিকেরে উত্তর বিভারির। আজমিরে অব-हुन भारतान करह ना।

ভুদের চতুদিণে শুক্ষ লবণ ভদনুকাপ হইয়া রছি-शाहि। **बहे कुरमत माम "**माकछती कुम ", अवः তদপভূংদে অধুনা "শান্তর" নাম বিখ্যাত चाहि। वे दुरस्त मधारात्म अक कूमु मस्मित **प्रवा**त्र मूर्जि व्यक्तालि विद्रालमान व्याह्न।

मानिकातास किस्र काल चत्रता वान कद्रठ व्यवस्थाय यवमहिशतक शत्रास कतिया वाक्षित् "यव्हिया" नात्म विश्वास क्रिया

তাঁছারই বংশজাত; তাঁছার রাজ্য-সময়ে মুসল্ । উদ্ধার করেন। তাঁছার অপান্ত্রে রাজ্য-সময়ে মুসল্- । মানেরা আফ্রনির দেশ প্রথম আক্রমণ করে, আনেক স্থানে ব্রাজ্য-স্থাপন করিয়াছিল। কিচি. রাক্তা আপন হত্তণত করিয়াছিল। এই যুদ্ধ-। রিয়া, বাগ্রেচা প্রভৃতি চোহান বংশ তাহা-

মষ্ট হয়। জ্যেট চোহান-বংশার অভন্তে প্রিয়পাত্র, স্তানপূর্বক বহুকালাবেধি যবন-দন্দে পাব্দ ছিল। ভাষার বিনাশে। গলেই যৎপরোনাতি থাকিয়া ক্ষতিয়ধ্য প্রতিপালন করিয়াচিলেন। বিষয় প্রাতাহাকে চিরকারণায়-করণাভিপ্রায়ে। পরস্ত তাঁহাদিগের বিশেষ বিশ্বণে কারকোর ाम्बर्का-भरक्षा भवा कविश्वाह्य: व्यवत त्रहे वाजक विश्व इस वाठिकवृत्सत धीरिक वर्षक इस्टर्ड ভর্দ। পাছে যুঙ্ঘুর ধারণ করিত বলিয়া ভদব**ধি না, অভএব ভদী**য় ভিজাদশ-পুল্**ষ-পার**ত গেগ চোষানের আপন বালকদিণের পদে উক্ত আভ-় পূর্বক বিদল্দেবের উল্লেখ লারিব। ভিলি বিলন্ (বিলুণ?) দেবের পূঞ্: বিলন্দের শ**থর্ম**-भणाद्वारघट नाज्यन छोहात जुन्छ। मानिकाताम शक्त नात्म विधान हिल्लम, अवः जालम प्रान-এর বেলে প্রস্থান করেন। তথায় শাক্**ন্তরী দেবী সমপ্**ণ-পূর্বক গ্রাননাধিপতি মহম্নকৈ আক্ষিত্ ক্লেক্সিক্স কর্মান ভারতিকে নিভয়-প্রদান-পূর্বক। হুইতে দুয়াকরে করেন। ভার্মর সমকালে ছরি-আংদেশ করিলেন; "এই স্থানের চতুদিনি। য়ানা ও শতক্ত নদীর মধ্যবভি অর্থ্য ২০রাজের ে পর্যান্ত অদ্য অস্বারোহণে পরিভূমণ করিতে পুঞ গোগা নামক এক জন চোছানের অধীনে শগ্রুবে, অভাব্ৎ তোমাকে রাজ্য করিছে প্রদান । ছিল। সমরনৈপুণে। তিনি বারাক্র চোড়ান-ব্ং**শে** ব্তিলামঃ প্রস্তু পার্থান, ভুমণকালে আপন অভিভীয়ক্তপে খ্যাভ ছিলেন এবং তাঁছার রাজ্ श्राम्बार व्यक्ति किति नाण। मार्गिका द्वारा कम्मू- शांके स्महता मध्य प्रशासिकारमिति " मारम ৰূপ করিতে ারম্ভ করিয়া কিয়দূর-ভুমণান তর অদ্যাপি বর্মান আছে। ক্থিত আছে, অপুঞ্ক शन्छाटि खरानाकन कविया प्राथन अमिक्नोक्छ। अयुक्त छिनि नृश्चित करेश (नरीत खाहाधन। नमञ्ज जूमि छकूरण हाम्द्रत नगाय कान भारार्थ क्रियां इतिन, अवः तमना-श्रहारण्य भूवश्रम चार्ड इरेशास्त्र। शास राक्त इरेन. अक वृष्ट पूरेंकि यव शास इन। त्राश्व न-शाशास अक हो स अक अभिनी वर्डमान हिन, उन्नाद्य वे यव क्रिट्स **मिर्दिन अहे जादना जाँहाइ दियम इहेल : कह-**শেৰে তাহা উভয়কে বিভাগ করিয়া দিলে। वे यव-मार्गाका जाहात शक्षक शाहरून भव कत्य, ७ অश्विमीगर्ल्ड वक मार्क अनुक इस **ारे भावक यथाकारत रुप्त-(मृष्ठकारन** शब

কাল-পর্যান্ত বংনছিগকে পরাভূত করিয়ারাম্য । शाक्टिन: किय क्वरनार्य इविवास नरसी দে ঘৰনর জানতম্দের বিপক্ষে যুদ্ধ শরিতে ২ চরারিংশ পুত, বঙি ভাতৃপুত্র ও প্রাণাপ্রয় व्या मह जानरकीला-नश्रद्ध-भूदंक नकरण वीत-। প্রাপ্ত হল। 🖟 নির্বংশ বীরশ্যেকর নদ্গতির 'म हाराश्चमाद्यहे बागालि ठाँहार गाः-हिक कुम्म स्ट्रीट्स थारक।

ामन्तर ४ न॰वर ১०७७ व्यवि ১১९० व्यव ४ चार्क्सन-प्रतम हाक्य कतियाहित्तम ! ! त मभकारन विन्त्-डाजनावर्ग नकरलडे छा-ানের আধিপত্য খীকার করিত। তাঁহাত্র জেলেল লভি**ত্মুলব্যাপার** হইয়াছিল। শামিন। ্ৰিল ্ভলোট বংশায় তেজস্বা (বৈশ্ৰু) ं फेंग्ड्रांड आमुद्ध व्यशुगद्ध रूम; ममा-त्रीमती लुडिछाड सर्छाड्ड्ड्रेंड आत्रिया চরন ক্রাপ্তা করিলেন। পোধা**নির ভুরা**র, প্রায় রাল বংশ **মিয়াভাধিপতি মহেশও** अभूतर्गे क्षेत्र (पानाशृद्धत सहित द्वाका कत-कड़िल्ला । १४ मृहहाक **कहरबाएक छेलान्डि ड** भरपूर के हा **अ मूलकान हरेक क**त इकेर रमत्त : उड़ीकृत, हाकाछा লন কৰিলক 🐩 কলভ অন্হলবাবার क राष्ट्रीत मकत्वह िनवर्षत्वह देनस्-ব্য পরিগাণত তহুমাত্র , ≩ নীরুমণ্ড-विवहनक मामान् काकान नाक. शहन । ः প्रयुक्त अवस्य छोकाई अगावापन मसन जिनामय संश्री इतेश संश द्राणित स्तान े अधिन करतमः **अ**ख्य-(मरण अम्)र्गिश् ग्मह नव्य " नात्म वर्डमान भारह।

গাপি রাজপুঞ্জিত্যর মধ্যে সুদর্শর দৃষ্ঠাস্ত- : কথিত আছে বিসল দেব কোন সময়ে স্বধর্ম-ালে ভাহার প্রচার আছে। এই সপরিবার পেগি। ত্যাস-পূর্বক যবন-ধর্ম গুছণ করিয়াছিলেন; এবং তথপরে ধর্মভ্যাগ জন্য পাপের প্রায়শ্চিত্তও করিয়াছিলেনঃ কিছ ভালার এবং ভাঁচার মৃত্ বিষয়ক বিবরণ অনেক অলীক মশ্যে আকৃত क्हेशार्क, जाकाक्ट्रेटच सरका का का का मूक्ठिन।

> বিদলের গুঞ্জ শুনুরাজ। তিনি পিতাচ্টতে व्यक्ति-शाम्यक अव्या शाय हन। जे क्रम অধুনা হানিৰ নামে বিখ্যাত। তাহার অন্তি मूटङ शासकना अंदर्यन काश्म वर्गाङ वाका त्रवधीत वाग कतिएकन। वे ताक्वतस्त्र सर्घ। বিশেষ স্থাতা ছিল, ও উভয়েই সংব্য ১০৮০ অকে যুৱন-কর্ত্ক আক্রান্ত হইয়াছিলেন এণ্ডীর মুব্দে পরতে হট্যা শশকে শ নামক সহানত ব্যা-शाह माधन करहन, अधार निक गृहः भनवन्यकः करू मलितिवादि विवादिश्व करत्या जे यहा-চিতাহইতে সুরভী নামা ভাহার এক কন্যামার तकः) भारेशाहिल। जनुताकः धरमञ्जे भला-য়নের উদ্যোগে ছিলেন, কিন্তু তাঁহার প্ঞ ইই-পাল স্বদেশে শত্রুর আগমনের অপেক্ষা না করিয়া স্বয়ণ শত্রবিপক্ষে সগুনর হন: ও পণিত্র তাহাদের সহিত তাঁহার এক তুমুল সভাম হয়। ভাহাতে তিনি **सहएउ यवन (मनामायकरक वि**-नर्धे क्रिट्लमः किन्नु यवनाज्ञाचाटक जिम्नि स्त्रः मृज्ञास इरेश शिष्ट्रलन। जे **कारनत्र निकट**हे মুরভী এক বটবিটপেরমূলে উপবিষ্ঠা **থা**কিয়া মৃত্যুর প্রভাগোয় ছিলেন কারণ পথ-শুভিতে e श्रमाভादि डोहाइ एवस्टिश डेशहिक-श्राम ছিল, জীবনশার লেশও ছিল না। এমত স্মারে काशन हिटलंब व्यविष्ठाको कामाशृह्य (एवं) व्हे-বৃক্ষহট্ডে বিনির্গতা হুইয়া সুর্ক্তার প্রস্তালা

कारक किरलन; "छ्य नाहे, (ठाकान-कर्ज़क ভোষার পিতৃ-শালু নিপাতিত হইয়াছে: এই ক্ষণে সেই ধারপুক্ষকে রক্ষা কর "। সুর্ভী দে वीत बाड्याय जाहात हत्वाम् उपाता हेडेला वित ভগ্ন শতি পুকৃত্তিত করিলেক। এ ইউপাল হরবতী ब्राह्मात जालन करतन, अवः छिनि चनितासः চারাইগ্রাছলেন, তলিনিত্ত তাঁহার অপতেরা হর-भः न नाटम विथा । इहेशास्त्र ।

গলিবরের ভুমণ ব্ভান্ত। পুথ্য ভাগ। लिनिशरे (मर्ल गांजा।

अध्यात्राधः ।

গুরুকারের ও তৎপরিবারের পরিচয়: দেশভুমানে তা-গার এখন প্রস্থাতঃ ভলভথ কল্যা চাছার কাহাতেজ্ব নাশ: আত্ম পুণেরজাণ ভাষার সমূরত: লেলিপট দেশের। পারে পালিয়া ভাজার প্রাণে দীমে, ও ভ্যাত্রিত করেদ कतिया कामारक भे लाटम भगया घाउराह रियटन।

টি-হেম্সায়র-দেশে আমার পিড।
বাস করিতেন। তিনি তথাকার অতি ক্ষ্যান্য বাকি। তাহার পাঁচ পুঞ হয়, তথাধে। আমি তৃতীয়। আমার চতুদ্ন বৎসর বয়ঃক্রম হইলে পিত। আমাকে কেম্ব্রিজ-নগরের ইমানিউয়ল কালেজে বিদ্যাভ্যানার্থ পা-ঠাইয়া দেন। মেথানে খানি তিন ৰৎসর থা-কিয়া রীতিমত বিদ্যাভ্যাস করিয়াছিলাম। যৎ-কিঞ্ছিৎ অৰ্থ যাহা পাইডাম ভাছা অভ্যাপ, সুভরাং ভদ্যারা আমার নির্বাহ হওয়া অতি কঠিন इहेशाहित; कति कि? कल्माशासास्य अयुक विद्यालय शक्किमान-शूर्वक छम्म व्यक्ति नामक कित्रवात्र शहामन शहिया लक्ष्म-मना

কটেল্ন, ও তাহার বিবরণ শুবণ করণামস্তর তা-। লণ্ডন মগরের এক জন বিজ চিভিৎসকের নি-কট ক্রমাপত চাবি ২৫৭৪ থাকিছা চিকিছনা বিদ্যা শিথিতে লাগিলাম। পিতা মালাহ কিছত, कर्ष्य भाके।हेश पिटकम्। व्यासि उत् त. पूस्यकाः विभिट्यत केशियाणि मानिक-विमा ও গণি छ-वि-দ্যার কোন ২ অংশ শিক্ষা সরিবার জন্যে বায় করিতাম; তথন প্রায়েই মলে ২ গ্রত যে ইছাতে কথন না কথন আমার ভাগ্য ফিরিবেক।

বেটিনের নিকটহইতে আনি পিতার নিকট প্রত্যাগমন করিলে পর তিনি ও আমার পিতৃব্য লান মহাশয় এবং জনাৰে। কুটুৰ আমাকে চা-तिभाठ है।का नित्तन, अतः कश्टिनन, यनि चामि निट्डम नगरत थाकि, जन्हा इहेटन आमात छनि-ৰার জনঃ বংসরে২ চিনশত টাকা প্রেরণ করি-त्ना छनाङ्यानुभाषा डे नगरत याचि पुरु वरमह माठ मान थालिया जामात नीर्च याजात डेल्यूक हितिदना उपा कलाम कतिसाहिनाम।

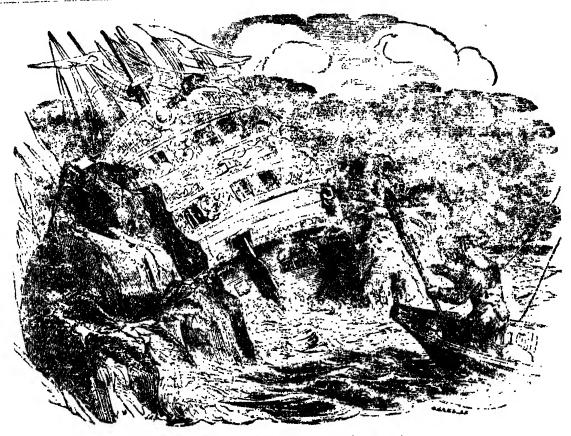
লিডন্ চইতে প্রত্যাগমনের কিছ্কাল পরে আ-मात हिरेजवा निकक (विनि महासम हेवाहीम (शांदान् रामक कक जान जाशांजि कारश्रानं नि-কট আমাকে চিকিৎসকের পদে নিযুক্ত করিয়া बिद्यान । जाहार महिल खनाशंक मार्फ किम বৎসর দুই একবার লিবেণ্ট দেশে ও অন্যান্য द्राप्त राजायां कर्तयाहिनाम। उथाश्हेर क तिशा **आमिशा लक्ष्म् नगरत** চिकिৎना दावगाइ দিনপাত করিতে মনস্থ করিলাম; ভাহাতে বেটিয় महामञ्ज आमारक यरवं डेंटनाई पितन, ड व्यामारक निया চिकिल्मा कदाइँट करबक क রোগিকে অনুরোধ করিলেন। ওল্ডজুরা-না স্থানে একট। কুদু বাটী ছিল, তাহারি उ ভাড়া महेनाम, এবং আগন व्यवद्या

গলীস্থ এড্মপ্ত বটন নামক এক ব/জির মেঠী কায় কিঞ্ছিৎ উত্ম কল কলিল। এন্টিলোপ্

Ð

জ্ঞান দুট জাহাজে চিকিৎসকের পদে নিযুক্ত ছুইয়া ছুল্ল বং সরের জনের ভারেতবর্ষে ও পশ্চিম-ইভিগ্ প্রতারে ভূমণ করিয়াছিলাম: ভারতে াতার ধানরও কিঞি**ৎ কৃদি হয়। তথায় ন**র্বদা ভত্তেত্র প্রক পাইবরে **বস্তাবন। ছিল, তা-** । উঠিলে ভত্তৰ ক্ষেত্ৰিপের রীতি চরিত্র আহার ব সভাব কার্যাল্ক ও মান্সিক ভাব এবং ভাষা শৈপিতে নিয়ন্ত চইতাম; বে সকল কথা আমার मान कहन बद्दा बनाति वामि यरशातानां छ मू धो इन्द्रा थाकि।

শামা দিতীয়া কনাকে বিবাহ করিলাম. ও তা- জাহাজের কাপ্তেন উইলিয়ম প্রিচার্ড মাহেৰ ভং-श्रात्र (योजू क हाति महमू होकाउ शावशं शिन। कात्न मिक्न ममूत्यू याहेट हितनः, जिनि व्यामात्क দুই বৎসর পরে আমার ঐ হিতকারী শিক্ষকের এক শুভ কর্মের ভার দিয়া আপনার সমভিব্যা-মৃত্যু হয়। তাহার বিয়োগে, সহায় অতি অত্থা হারী করিলেন। ইং ১৯৯৯ সালের ৪টা মে মানে इहेल, नुज्राः आमात नार्वभारत्रत्र উত্তরে ভর আমরা বিষ্টল্ ছইতে জাহাজ লইয়া যাত্র। করি, ছাস ছইয়া কেন হইতে লাগিল; ফলতঃ অধিকাংশ। ও প্রথমানস্থায় আমাদের মথেষ্ট লাভও ২ইতে ব্জুবান্ধারের স্কিত ভুলা ব্যবসায়ে সপাতু হওয়া লাগিল। পরস্তু আমাদের সমুদ্ে ভুমণ বিষয়ের আমার মনপ্রীতিকর হইত না। এই হেতু আমি সবিস্তার বণনে পাঠকগণের শুম ও বিরক্তি জন্মান আপেন স্থ্রী ও অন্যান্য **স্বজনের সহিত প**র্যমূল্য কোন ক্রমেই উচিত হয় ন: কেবল তাঁহাদিগকে कित्या भूनवीत नमुम्याखाद मनन कत्र अमू- এই माख कानाहेलिই यथि इंडेटंड शादि, य আমাদের ষ্ডান্হইতে ভারত্বধে যাইবার স্মন্তে প্রথিমবে) এক প্রচণ্ডতর বাত্র আনিয়া প্রামাদি-গকে জাহাজ গুল ব্যান্ডিমান্ ভূমি নামক দ্বীপে উব্রপশ্চিম্দিকে লইরা ফেলিল। অব্ধানপূর্ক নিরীক্ষণ করিয়। দেখিলান যে খানরা পৃখীর নি ে ছেছ প্রাচান । অখ্যানান গুরু লইয়া পাঠ করভ। রক্ত্তইতে ৩০ আনা ২ কলা দকিলে বহিয়াছি। काबाइ मावकाम काल यानरम याशन हरेंडा छीरत पूरेमेंव मगरश व्यश्विम छ शतिभूम ७ कमर्य। वश्व **काङ्गंद्र कृष्टिया व्यामारमञ्जूषाम्म अन् ना**दिक सहिया গেল; অবশিষ্ট লোক অতি দুৰ্ল অবস্থায় রাহল। अमक ममारा मादचत मार्गत वहें जातिएथ नाविरक-রা জাহাজের অর্দ্র রজ্জু অস্তরে জলমগু পর্ব ত দে-थिতে পाইन; किञ्ज ७ ८ नमाय सफ् अ ठामृण अवन এই কএক আবার শেষ্টা শুভ্যাত্তা হয় নাই, ছিল, যে তদ্ধিতে কোন কল হইল মান আমাদি-ভাষাতে আমি অতিশয় শিরক হইয়া ত্রীপুঞ্ গকেপোতের সহিত তাহার উপার প্রতিষ্ঠ হইল, প্রভৃতি পরিজনের সহিত গৃতে অবভান,করিতেই এবং পতনমাত্তেই জাহাজের ভল ক্ট ছইয়া মনত্র করিয়াছিলাম। নাবিকগণের চিকিৎসা করি-। গেল। আমরা 🔊 জন, নাবিক একত্র ভ্রয়া জা-ার প্রত্যাশায় আমি ওল্ডজুরী ইইতে আগন হাজহইতে সমুদ্ধে পোডাবতরণের ভরি খানি না-🌞 " উঠাইয়া ফেটর্ নামক গলাতে ও তথাহইতে। মাহ্যা তদারোহণ পূর্বক ও ঐ জাহা**ল ও মথা** গরি नामक द्वारन नरेश। (भनाम ; श्रेष रन नकन इहेटल मूट्ड याहेवात सम्। मायू र मास वाहिट व व्यक्त-स्थाना मार्थ किन वर्गत काल लागिलामा आवाह मानमानुमारत व्यास एय मार्फ धा थाकिए । ति विषय भूबील- हाति (काम के कल्प कारिया विशाहिनाम, क्या



(পালতর প্রস্তুত্বত প্রভাৱন করিকেছে 🕕

কিং এতদবস্থায় নমুদ্রে তরজে নির্ভির কর এক মাত্র উপায়ে, এবং আধ্যণ্টা কাল তদ-वलश्राम थाकिए ना थाकिए छेखद्रिम ११ इंटर हठार এक প্রবল ঝাপ্টা আসিয়া নৌফাথানি জলসাৎ করিলেক। তদনস্তর নৌকাস্ত সঞ্চিপণ ও শৌতহইতে যাহারা পর্বতে উঠিয়াছিল, এবং याहाता के उभ পোতে हिंध जाहारमंत्र काहात कि बरेना रहेन किष्टूरे विनटि लाति ना; किस्र নিশ্চয় বোধ হইতেছে ভাহাদিগের কাহারই প্রাণ রকা হয় নাই। আনি কেবল আমার বিষয়ই कहिटल लाडि। मोकाहुम्ल हरेशा श्रुवसारः मस्त-র্প স্বাৰ্থ করিতে হইল, এবং সোতঃ ও কিন্তু আমি দেখিতেই পাই নাই। এটে

भागत थात वाहिवात कमा तिहल ना, कातन वासूत माशाया अवस् मृत वानु हेर्ड लाजि-उद्ध्रिक व्यवद्यातः मद्भरतामाणि भित्रम्य नाम। मर्दा २ भम्बता एतात व्यनुभवान कति-कतिए इरेशाष्ट्रिन, जाराष्ट्र आत मात्रित रेशता आहिलार, किन्न कान रस नारे : अवस्मध्य যখন নিরভিশয় পরিশুনে মৃত প্রায় ছইলাম, তথনি বোধ হইল যেন তল স্পূৰ্ণ করিয়াছি: ज्यकारन वार्ष्ट्र वाचन दहेशाहिन। ज्यहारन বনুদ্রে ঢালু এতাদৃশ অম্প যে আমি তার পাইবার পূরে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ গমন করিয়া-ছিলাম। অনুভব হয় তীর প্রাণ্ডির সময় রাজি क्षे वन्ता इरुया थाकित्वक। कन्छत এक लाग জ্ঞোশ স্থান গমন করিলাম, কিন্তু কাহারে৷ বাট্টু ৰা বৰ্ণভিত্ত কোৰ চিহ্নও দৃষ্টিগোচর ক্টল গ কলতঃ তৎকালে আমি এতাদৃশ পরিশাস্ত 😿 যে হয়ত দে লকল কামার নয়ন পথে বর্ত্তমী

्रमा शयः छ भागोद्ध छ **एतक व्यमक्त वस्त्रत** র্লিক্টা কেবল উপর দিকে সূর্যোর তেজে দৃষ্টি-ক্ষেপ করিতে আমার ক্ষতা ছিল,তাহাতে কেবল व्यागाह नहत्निम्दह शोङ वृष्टि इहेट कातिन। रमरकद 'छाजू पिर्वार किलाएन क्षेत्र करें छिन ; কিন্তু ভদবস্তাই জাকাশ ব্যহাত আমার আর किष्ठे पृष्टिभाष्ट्र यहेन मा।

ক্ষানৈকের মধ্যে বোধ হইল যেন কতকগুলিন সভাৰ প্ৰাণী আমাৰ বাম পাদে লড়িতেছে; পাৱে क्रायर उपनात जानात तक पर्म बाहैरन ্ আমি যথাশক্তি নীচে নিরীক্ষণ করিয়া দেখিলাম व होर्ए थाइ इइ-बङ्गलो-পরিমাণ धनुवीब-ধারী কভকগুলিৰ মনুব্যাকার প্রাণী তথায় ভূমণ 'हिट्डि**ष्ट्र**। **इंडिम**र्था (दांच इहेन, 8॰ **स्नर**मञ्ज क ले क्य बनुषा कर कम कशुशाबी अ-াক্তির পদ্চাৎ ২ যাইচেছে। এই সকল শুপার দর্শনে আমি অভ্যন্ত বিষয়ান হাতে ভাহাদের পূর্বক চীক্ষার ও গেয়ল ক্ট্রান

मिठाल क्षाल. जाहार जाहात भी प्रकान, क्टी- नस दहेश डेटेकश्चरत ही कात किताम। जन्द-হতঃ পোত ত্য প কর। সময়ে আর্দ্ধ বোতল বুলিও বিশে ভাছার। সকলে ভয়ে ইভস্তভঃ পলায়ন মদ পাল করিয়াছিলাম, এলারৰ আমাকে অঘোর কিবিলঃ এবং পারে শুনিয়াছিলাম তাছাদের নিশু অক্ষৰ করিতে লাগিল; ও তথায় কোন কায়ক জন আমার শরীটের দুই পার্শ্ব দিয়া যালের উপরি শয়ন করিবামাত্র এমন স্মৃতি নিদ্রা ভূমিতে লাকাইয়া পড়াতে অভাস্তে বেদনা পা-উপত্তি তইল যে আমার জীবনকালের মধ্যে ইয়াছিল। মাহা হউক, তাহারা অনিকলেই কি-আর তাদৃশ নিদু৷ ইইয়াছে কি না তাহা অরণ রিয়াশআইল, এবং তল্পধ্যে এক ভান নির্ভিশয় হয় না। গণনায় বোধ হয় নয় ধণ্টা নিদ্ভি নাহসপূর্বক আমার মৃথেন প্রতি দৃষ্টিপাত ক-ছিলাম, বেমনা নিদুভিন্ধ কালে প্রভাত হই- রিয়া বিষয়জ্ঞাপক ভাবে হও উভোলনপূর্বক দ্রাছিল। মত:পর **উঠিতে চেষ্টা করিয়া দেখি** উত্ত্**লিত নয়নে বধীর-**তর উচ্চৈ খরে চীৎকার লডিলার সমর্থ নাই, ও অতি কটে পাশ্ করত "হেকিনা দিগল্" এই নাত্র শক্ত স্পষ্ট-ফিব্রিন্ন দেখিলাম যে আমার উভয় হস্ত পাদ . কপে উচ্চারণ করিল। অপরাপরেরাও সেই দাস্ত্র দুদ্দালে বা কইয়াছে, এবং আমার দীর্ঘকেশও বার্থার করিতে লাগিল; কিন্তু ভাতারা কি ব-ভজল বাহা রহিয়াছে। ভবংপর আমি আরো। বিল ভাষা আমি কিছুই জানিতে পারিলাম না। াৰে ব্রিলাম যে আমার বাত্মুলহইতে উক্ত আমি তথন-পর্যান্তও ভূমিতে পড়িয়াছিলান পাঠকেরা অনায়াসেই অনুমান করিতে পারিবেন। অবশেষে মুক্ত হইবার চেপ্তা করিলে ২ ভাগ্য-ক্রমে সেই সকল বধানরজ্জু ছিড়িতে আমার नामर्थ रहेल, अवर या लाज क्षूम् र नासू मून নিতে প্রেখিত করিয়া আমার বাম হস্ত ভাহার স্হিত্ বন্ধন করিয়া রাথিয়াছিল, সে ক্রল উৎপাটন করিয়া ঐ হস্ত আপন মুখের দিকে আনম্ন পূৰ্বক ভাছায়া যে কপে আনাকে বা ধিয়াছিল, তাহা ক্লানিতে পারিলাস, এবং ডং-कर्त्र वनशूर्वक छानाछानि छ महीत हानमा क्तार्ड कांडमञ्ज (यमना (वाथ क्रेन : किन्त म नकल मिएएड व्यायात वामिक्रियात कमा मोठ कतिया ज्ञिष वाथा हिन, जांनी श्रृतिया गान कामि उथमहे काबून पूरे माया नाफिरल ना-রিয়াছিলাম। কিন্তু ঐ প্রাণীদিগকে ধরিবার शृद्ध डाहाता भूमधात नानाहर जातिन। छा-

हिन। अ भक्ष छक्ष इहेटन शह खना भिन, य क्रांशास्त्र अक स्न डेटेक्श्चरत "क्नाः क्रांस्क्र" এই শব্দ করিতেছে। তৎপরে গৃহ্তৈতিকের মধ্যে আ-পন বাম হাতে যেন শত ২ সূচী ফুটাইতেছে বোধ করিয়া দেখিলাম, যে সূচিকাপ্রমাণ প্রায়ন এক শত বাণ আমার ঐ ছত্তে কিন্দ প্রতিয়াছে: ইহা ব্যত্তিত ভাষাল্ল বোমের মত আলো কতকগুলিন মুব্য আকাশেও উৎক্ষিপ্ত নরিয়াছিল। প্রমান হয় ভাচারও ফনেকগুলা আমার গাত্রে পড়িয়া থাকি-থেক, কিন্তু ভাছাতে আমি জক্ষেপ্ত করি নাই। কএকটা আমার মুখে পড়িতে আইলে আমি বাম হাত দিয়া তাহা ঢাকিয়া রাথিয়াছিল'ম। এথন এট বান-বৰ্মণ শোষ হুটল, তথন আমি দুংখ ও যা-कनाम् (शाकातां एक नाशिनाम, अव॰ शुनर्वाह वा-হল চড়োইতে চেষ্ঠা করাতে ভাহারা পূর্বাপেকায় শ্ৰিক শার-বৃত্তি করিলে লাগিল। তথ্যবা কএক জন ত্রিশুল লট্য়া আমার আশে পালে বিধিবার ंडेाय हिन, किंदु क्लानक्राम चामात गाय त দিল মাক্ষ-চন্দ্ৰিনিমিত একটা কুর্ত্তি থাকায় তাহা ভাষার। বিধিতে পারে নাই। আমি তথন পর্যান্ত द्धित क्षेष्ठ थाका वृष्कितं कार्य। विटवहना कदिशा,या-वर द्वाञ्चन व्य जावर मिहे जारव शाकिर उहे हे छ्व **रहेलाय,** (क्रमन) यन्**ह** क्रिया**हिलाय (य** द्राजिकात्ल আমার বাম হস্তুক্ত থািকলে আমি আপনাকে অ-নায়ানেই মুক্তবন্ধন করিব। ভাছাদিগকে দেখিয়া আমার এমত হং প্রতায় চইয়াছিল, যে যাহা দিগকে আমি তখন দেখিলাম, তাহাদের মত যদি ति शास्त्र नकत्व रूप, ७ (नरे नकत्व यपि अक अकाख रमनामन माजिया यागात विकंटन याहरम তাर। रहेला चामि अकाकी हे (महे मकरला ममान হুইতে পারিব,কিন্তু খামার ভাগ্যে তাহার বিপরীত कन मित्राष्ट्रिं। यासारक स्थित शाकिएड (म्थित्र)

जाहाता वान-निरक्षण कतिएक काल हरेन सर्छे; किन्नु भानमान श्रमित्रा जानिए भातिनाथ (य का-हाता जारगरक अकल इहेशारह। शाम कामालि परत আমার দক্ষিণ কর্ণের নিকটে ক্রমাগত প্রায়ঃ গল वन्ते। ठेक २ निक खिलिए लाहेनाम, गाँगाएँ लाख इंडेन रम् अङ्गता रामान कर्य कविराडरङ् । स्मर्ट-ৰূপ জনন-দশায় থাকিয়া আমি মথাশক্তি কিছু দূর পর্যান্ত করাইয়। দেখিলাম, দে ভাছার ভ্রি-ছাড়া এক হস্ত উচ্চ এক মঞ্চ প্রস্তুত করিয়ারাখি-থ্যাছে। ভাষাতে ভাষাদের চারি জন লোক ধরিছে পারে, অপর অদুপরি উঠিবার জন্য দুই ভিন থানা কাষ্টের সোণানও লাগান ভাছে। পরে ভাহাদের अक कन वृक्ष वाञ्चि (वह मर्थ्य मी कृष्टिया **कि**ष्टु व-জ্বা করিতে লাগিল, কিন্তু আমি তাহার এক বণ্ড বুঝিতে পারিলাম না। বক্তার ভিষ্টি বর্ণ-মাত্র वागात कारण कारहा (नहें धोधान वर्गक, व्यानम বজ্তা করণের পূর্বে "লেজেন, দেহল, সম্" এই বাক্য তিন বার উটেডঃমরে **কহিয়াছিল। পরে** তাহারা তথকালের ও পূর্বকার কথা গুলিন আমার নিকট পুনঝক করিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছিল। এই (मार्याक वाक) भूवनभाज **काशांप्तत eo कम लाक** তৎক্ষণাৎ আমার মন্তকের ব্যাদিগের বন্ধন ফা-টিয়া দিল, ভাহাতে আমি দক্ষিণ পার্মে ক্রিয়া নেই বক্তার আকার প্রকার দেখিতে সমথ ছইলামা (वाध रुरेन म अध/वर्क ७ (नरे मक्ष किस नर-**চর অন্য তিন জনহুইতে দ্বার্যাকার।: क्वार्श**टम्ब 👊 🗵 জনকে ঐ প্রধানের পরিক্দের ভূমিপভিত-গ্রান্ত-' ভাগ ধরিয়া পাকিতে দেখিয়া বোৰ হইল সে ভাহার বড় মনিষ্ঠ, তাহার দৈহিক দার্ঘতা পরিমাণ আ-मात मधामा अक्रुवीहरेट किछ् व १। चनत पूर्का छ रात पूरे नात्यं अवनवत्नत नाय माण्यासानि वका रहेल में उर् चिनिय चर्था क्रिका

ভয়-প্রদর্শন কথন কিছু অঞ্চাকার কথন আ খেদ इस উर्ज्यावस ९ मुर्ग्यामिक मृष्टिभां कद्र कर यन स्ति नाम छिन्किक कथा किशाष्ट्रिकाम। **अरक** কিছু মাত্র আহার করি নাই, ভাহাতে আবার 🖰 স্বভাবপরবশ্য সুল্রাং ফুখায় শুদ্ধ গ্রায় ও বিকল 🕌 **इंडेंग्र**िव् थारेतात हेण्या कामाहेतात कमा বারস্বার খালন অস্থলী মুখে দিয়া অকর্ত্তর অবৈ-या श्रकारन निष्क इन्टि शादिनाय ना।

ক্ষত্রকথানা সিড়ি আমার পার্ষে লাগাইতে আ-দেশ করিলে ভাষারা ভাষা করিল। পরে ভদ্বারা আমেটে উপরি প্রায়ঃ এক শত জন উঠিয়া আমার : शास्त्र काछ (मधिएन भावनाम। कवकी। भाज নামাবিথ পাওমান্দে পরিপূর্ণ ছিল, কিন্তু দে

্ত হয় সে তাহা সমুদায় করিতে লাগিল; তা- | হারা **যথাশক্তি শীঘু**২ আ**মার মুখে** আহার शाटि आमात म्मेडेरे প্রভাতি হইল ध्य म कथन | यागारेट बागिन, किन्न ভाবে বুঝিলাম আ-मात जाकात उ क्थात श्रामू जीव-मर्भाम जाहारमत ও দয়া প্রকাশ করিকেছে। আমিও তখন বাম । নিতান্ত বিকায় হইয়াছিল। অনন্তর আমি ইঞ্লিত-ছারা পানেচ্ছা ব্যক্ত করিলে পর ভাহারা আমার তাঁহাকে নালা মানিতেছি, এমনি ভাবে অধী- আহারের আতিশ্যা দর্শনে এৎকিঞ্জিৎ পানীয়ে क्रिष्ट् रुहेरवक ना विरविष्ठना कतिया मावधान-शृईक আহি জাহাজ ছাড়িবার এক ঘণ্টা পূর্ব অবধি। একটা মদপূর্ণ ক্ষুদু পিঁপা সাংগড়াইয়া আমিল। পরে তাহার ঢাকনি খুলিয়া আমার হাতের কাছে ताथित्व उद्ध खन चामि এक निःधारमहे चना য়ানে পান করিয়া শেষ করিলাম: কারণ পে পাজে আধ বতল পানায় দুব্যক্টতে অধিক া ধরিতে পারিত না। ক্যাস্বাদনে যেন বগঞ্জি দেশের ভরগে আমার ইজিত ভালমতে বুঝিয়াছিল অপকৃষ্ট মদিরা এমনি বোধ হইল, কিন্তু তদপে-। পরে জানিতে পারিলাম তাহারা প্রধান কর্তাকে। কায় কিছু খাদুতর। দিতায়লার জানিলে তাহাও ছরগো বলিয়া ডাকিড। **লে মাচাহইতে নামিয়া। নেই কাপে** পান করি**য়া পুনর্বার অ**ধিক প্রাথনার इक्टिंग कतिवास। किन्तु जाहारमत वे पुना चाद কিছু মাত্র ছিল না। আমার এতাদৃশ অভুত ব্যা-পার নয়নগোচর করিয়া ভাষাতা জয়প্রতি করক স্থের দিকে কিয়া আসিতে লাণিল। তাহা- আমার বুকের উপরি প্রেন**ং "ছেকিন। দিলল** দের একো আন্নান বিশ্যে প্রথম সংবাদ পাইবা-। ব্রে**ধারণ বলিয়া নৃত্য ক**রিকে লাগিল। ভাছারা মাত্র রাজপানীচইতে কএকটি ছোট ২ চুপড়ি আমাকে সঙ্কেতদার। ঐ দুহ পিঁপ। দুরে ছুড়িয়া বিওলে প্রিপুণ করিয়া **আমার জন্যে পাঠা- কৈলিতে কহিল, কিন্তু ইভিপূর্বে পরোরেক্** ইয়া দিয়াছিলেন, আগনন নলীন সে দকল তা- মিবোলা " এই বাক্যদারা দকল লোকেই नोटि नामिट मछक इहेशाहिल। फाहाहा भून। भर्ष छ पूर्वेगे भाज क्लिंक मिश्रा बक-সকল কোন পাশ্র মাংস ভাছা আমি আ**স্থাদন | কালে " হেকিমা ভেরল্" বলিয়: উটেচঃস্বরে চীৎ**÷ कतिया किछ्हे इंडविटम्य कतिए शाविसाम ना। कात्र कविए नाशिन। याहाता आसात्र सतीदित উপস্তি সমুদায় সামগ্রা দুই তিন গ্রাসেই নিঃশেষ উপর দিয়া যাতায়াত করিতেছিল, 🗷 আয়-६२ल; अक २ वादत जामि जिम हाति है। कतिया खित मर्था किन, छाहारमत 8-16- समस्य भविया े तमत शिष्ठ ग्राम कतिएक वाणिलाम, म ज्ञिएक किवान किवान कमा जाहाना जामारक শিশু প্রায় বন্দুকের ছিটাওলির মত। তা- বারখার প্ররোচনা দিতে লাগিলা; কিন্তু মদে ২

পারিত তত নছে, অধিকন্তু সন্মান করণাভিপ্রায়ে ভাছাদের প্রতি আমি অধীনতার ভাবও প্রকাশ कित्रशिक्ष्ताम, इंशाटि म्खताः चामारक खे कण्या-লাছষ্টতে রহিত ছইতে ছইল। আরো বিবেচনা 'ক্রিয়। দেখিলাম যে ভাহারদের এ ৰূপ সমারোহ ও ব্যায়াস-পূর্ব আমার আতিথ্য করণে আ-मारक जाहारमत निक्र वाधाई हरेए इस्। म यात्रा इंडेक वे जकल कृषु माननाली बामांत মুক্তৈক হস্ত-যুক্ত-প্রকণ্ডে-দেহ অবলোকন করি-বামাত্র যে বিনা হৃৎকম্পে অকুতোভয়ে তাহাতে আরোহণ-পূর্বক গমনাগমন করিয়া বীরতা প্র-काम कित्रशिष्ट्न. जम्मीत जागात जिल्लानीम শিশায়ের আর ইয়ন্তা ছিল না।

রা. না. বি.

ভ্রম্ল্কের কুঠিভে লবণ-পুস্তৃত-করণের পৃথা।

📆 🎎 🎏 विधार्यंत ध्रथम ও षिठीय शस्त्र ्रैं: नान, चाकिय, **त्रममा**प्ति अटएएमोश বি ্গুপ্তান ২ বাণিক্য দুব্য প্রস্তুত-কর-গুর্ভিক্ত্র্র্ভুট্ট ণের বিবরণ প্রকটিত করা গিয়াছে; এই পর্বে লবণ, সোরা, চিনি, লাক্ষা প্রভৃতি অপরাপর কএক পদাথের উৎপাদন-বিষয়ক সত্ত্ ক্ষেপ-বিবরণ লিপিবদ্ধ করিতে সঙ্কণ্প করিয়া উপস্থিত খণ্ডে লবণ প্রস্তুত করণের প্রথা নিজ-পণ করিতেছি।

अवर**्क** व्यविद्धः देश्हास हास्त्रपूर्यहा चानम হত্তে রাখিয়াছেন; ভাঁহাদিগের অনুমতি ভিন্ন কেছ ঐ পদার্থ প্রস্তুত করিলে তৎক্ষণাৎ সে রাজ-बारत मधनीत रहा। व्यापत वक्रमान य मक्क् बार्व

ভাবিয়া দেখিলাম, যে ভালারা আমাকে যে গ্রস্তত হইয়া থাকে, তৎসমুদার কোম্পানি ক্রয় কুলো কেলিয়াছে, তাহা তাহারা যত করিতে করিয়া লন, ও তৎপরে অপ্ট বা ততোধিক-ওৰ মূল্যে ভাহা প্রজাদিগের ব্যবহারাথে বিক্রয় करतन। बरे अकरठिया वानिका वार्यिक ० कार्कि টাকা কোম্পানির লভা ছুইছা পাকে, এবং তথ-कार्या-नम्भाषमार्थ जाँशाहा तिश्व-गाय महकारम वर् नड्थाक कायानम् मः अलि । अ अत्मक कूर्मः চারী নিযুক্ত করিয়াছেন, এবং তালাদের সুশা-সনার্থে স্থানে২ নিয়ামক কর্বর্গও নিযুক্ত আছে। **रब्र-रिंग (य नकन न**दन-श्रेख्र**्ड कार्य**) निम्न আছে, তাহার নিয়ামক নাহেবেরা কলিকাভায় স্বস্থিতি করেন: এবং ভাহাদিগের বৈঠক "সাল্ট-বোর্ড " নামে বিখ্যাত। ঐ বোর্ডের অধীনস্ক্রমন্ত कॉर्यानरा अक नियस कर्य भन्यत इहेबा शास्क, जारात अटला विवत्रः नक्ताहरू विवत्रः वाज् হয়, স্মত্ত্রৰ প্রস্তাব-সভ্জেপ-করণাভিপ্রায়ে এ-ত্তা কেবল তম্নুকের কৃঠিতে যে প্রকারে **শ্ব**ণ-প্रखंड-कर्त्व कार्या सम्लड व्ह्या थाटक, डाइन्त्रहे বর্ণন করিব।

> তম্লুক নগর কলিকাকাহইতে ২২ কোশ আন खाद क्राया विकास करी करते कि का शूर्वकारन खाइ। मन्यम ও বাণিজ-বিষয়ে भूमहकाल विथ/१७ ছিল; অধুনা সে খ্যাতি লুপ্ত প্রায় ছইয়াছে, কেবল নাম মাত্র অবশিষ্ট আছে। পরস্তু লবণ नद्दत्त अरे नगत नामाना नद्द। हेराट य कृष्ठि चारह, जाहाहहरेड প्रांड वरमत २१३० वक्त त्यान লবন প্রস্তুত, তথা কোম্পানির ২৫ লক্ষ টাতা नाफ, रहेशा शांक।

> उम्बू (क्त्र मम्ब्रकूरोत् क्षीरन भारा कि कार्य) नम्र निष्ठि चार्छ, उपित्यं उम्लूङ, रेमनाका कतामूठा, बाद्धकाँबार करः हम्तर् कार्यालय-तकन बाएक नाम विधार

नार्त्र विভক्ত আছে। कूम् कार्यानास्त्र नाम ' एका "। बहे जकन कार्यानस्त्र मास्त्रामा, स्मारत्त्र, जा-मन्मात, स्त्रतामात প्रकृषि जिम्र सम्बर्गिनाहे অনেক কর্মকর্ত্তা নিযুক্ত আছে; তাছারা কার্বিক মাস অব্ধিবনার প্রারম্ভ প্রায়ত লবন প্রস্তু তীকরণ 🕫 আড়জে কত লাণ প্রস্তুত করা কর্ত্তব্য ভাচার প্রিমাণ নিদিও করিয়া দেন। সেই পরিমাণের माभ "ভाয়দাদ্"। वे ভায়দাদানুসারে প্রত্যেক হুদার কল্করেকেরা আপন্থ হুদার সম্ভর্গত প্রজাবিগকে ভাকাইয়া কে কত পরিমাণে লবণ প্লান্ত কৰিবে, ও কি প্ৰকারে মূল্য লইবেক ভালা নিদারিত করে, ও তদ্বিরণ এক ২ ছাপা কাগজে নিথিয়া দেয়। এই নির্দারণ-ক্রিয়ার নাম ণ্যোদ্পেত্র. শ ওয়ে কাণজে ভাছা বি**থিত হয়** काहाइ नाम "हार्डाठी," **६ य मकत व**र्जाङ्का এক্লুজারে শোদাপত্র ভির করিয়া হাতচিঠা প্রাপ্ত হয় তাহার। ' মলজা " নামে প্রাত। লবণ-প্রস্তানিরণ সাধো অভ্যাস্থা **লাভ, সু**তরা কেবল এই কার্যো কেইই দিনপাত করিতে পারে না, মল-**का-मा**(इहे लदन **श्रेख** 5 कहा वासी 5 क्यिकार्सा कत्यं ७ जाहारमं माहिम्। मृद इय ना, नकताहे िल्ल श्रान्य ও ककान्त महिल्.

় ভম্লুকের ব্বণ ভ্রত্ত ভাগার্থী, হল্লী, টেফ-इंग्थिको, त्रायथानी, প्रकृति करत्रक नमीत्र कटन ্প্রস্তিত হয়, সূত্রাং লবণ-প্রস্তুত-করণের কার্য্যা-্য সকল ঐ নদীতটে নিৰ্মিত আছে। মলজীয়া 'পোপযুক্ত ভান-নিদিউ-করণ পূর্বক ভাছ। <u>দারি</u>

विख्यान करते । जाङ्गात ध्रथसार्थणात स्थास । , अन्यक्रिकात खरात मास्तिकार्या क्या ।

তাহার প্রত্যেক আতৃত্বথোপযুক্ত কুদুহ কার্যা- শহাতর গ; তাহা সর্বাপেকাষ বৃহৎ, এবং তা-হাতে লবণের মৃত্তিকা প্রস্তুত হয়; দ্বিভায়াণশের नाम "जूति" वर्षां कक्ष: जनवाक कन द्रा-থিবার জ্ন্য ভাষা আবন্যক; ভূতীয়াণশের নাম "मामा" वार्थार नवन हाँकियाह आतः हजूर्य • ভূঁরি ঘর " অপ্নাথ লবন পাক করিবার ৃ। এই কার্যে/ নিযুক্ত থাকে। কাজিক-মাসের প্রারম্ভে । অতশ-চতুষ্ঠয়ের সমষ্টির নাম । প্রালাদিও বাং ज्वन मगारकत (मान्छे-वार्ष्ड) नारम्बद्धा कान् "भनन्न;" बहै क्ल बक र शालाणित निमिट्ड पुहे তিন বিষা ভূমির প্রয়োজন হইয়া থাকে।

> शृर्दरे छेक ब्हेशाह, थाला छित वनाना भ-হুইতে চাতর বৃহ্ৎ; ভদুর্থে এক বিঘা বা ভাগে-ধিক স্থান আবেশ।ক হয়। মলকারা তাহা অভি भावधारम लिकान करत. स्थाइइँट कं अक व्यक्त वे পরিমিত মৃতিকা অন্ন করিয়া কোশার নাধ্য হ ও চতুদিলৈ বাধ দিয়া ভাছা তিন সংশে 🕞 ভাগ করে। তৎপরে ঐ ক্ষেত্রত্তর খনন করিয়া তদুপরি মই দিয়া দুমি চৌরস করা যায়। ঐ চৌরস-করা ভূমি ৮।১০ দিবস होएम एक করিলে তাহার উপরিভাগের সৃত্তিকা, ইউক-প্রাচারে লোনা नागित्व (य अकात्र हुनं सामा उकारण, एवं कहेत्र) यात्र। हुनं भ्रञ्ज इहेटन उपुलति ले। ए इस बन মনুষ্য ইতত্তঃ ভুমণ করিয়া ভত্তাবৎ উত্তম-क्रिं। मिन्न करात, ७ उर्भात वक मधार ভাষা রোদে গুক্ত কললে ঐ চর্ব পুরপ্রবারা চাঁ-চিয়া একতা করা যায়। কটালের জানে চাতর निक थाकिल व तोलुत गाराना क्रेंटन वन-মৃত্তিক। উত্তমক্রপে উৎপন্ন হয়। অপর বন্যার জনে চাতর খৌত হইলে তথা কার্ত্তিক বা সগু-शायन भारत भारत वार्का वर्गाय वा क्रियानाय भारता

পত্তির হানি জন্মে। পৌষ ও মাঘ মাদে জোয়া-রের জলে জুরি-নামক কুপ্ত-সকল পরিপূর্ণ না হুইলেও লবণ প্রস্তুত কার্যোর হানি সম্ভাবনা।

জুরি নির্মাণার্থে চারিকাঠা ভূমি আবশ্যক।

উ ভূমিতে ৫।৬ হন্ত গভার এক কুপ্ত থনন করত
এক পায়ানালাদ্বারা ভাহা কোন নদার সহিত
সংযুক্ত করিলেই জুরি প্রস্তুত হইল। কটালের
দিবস উক্ত লালা দিয়া নদার লবণাসূতে জুরি
পরিপূর্ণ হইলে, মলজারা মালা কদ্ম করিয়া লবণ
প্রস্তুত করণাথে স্মত্রে ঐ জল রক্ষা করে। বর্ষা
কালো জুরি বৃত্তির জলে পারপূর্ণ হইয়া থাকে;
কাত্রিক-মানে সেই জল সিঞ্চন-পূর্বক জুরি পরিজ্ঞার করত, কটালের লবণাস্থদারা ভাহা পূরণ
করা লবণ-প্রস্তুত-করণ-কার্যের এক প্রধান কর্ম;
সাবধানে ভাহা সম্পার না হইলে সকল শুম বিফল
হণ্টনার সম্ভাবনা।

চাতর জোয়ারের জলে শিক্ত করিয়া খনন ও রৌদুে শুক্ত করণের নাম "সাজন"। কার্ত্তিক মাসে তজপে চাতর প্রস্তুত করিলে ক্রন্যাগত তিন মাস তাহাতে লবন-মৃত্তিকা জন্মিতে পারে, তৎপরে মা-যের শেষে বা ফালগুণের প্রারম্ভে তাহা পুনঃ জ্যো-য়ারের জলে শিক্ত করিয়া খনন না করিলে ও তদু-পরি ভক্ষ ও মাদার অকর্মন। মৃত্তিকা না হড়াইয়া দিলে তাহাতে লবন-মৃত্তিকা উত্তমক্ষপে জন্মে না।

थानाष्ट्रित ज्वाहारम्य नाम माना; जिल्लानार्थि मनमोता चामन इस পतिथि, ও हा। इस उक्त अक मृदस्त प्रस्क कर्त्र जम्मित आ। इस गर्जीत स द इस मित्रिय मानमावस्य अक गर्ज थिनिज करिया मृखिका, सम, वानुकाण्याद्रा जोहात उन मृद्य अस्तित चर्छा, कर्त्रा जहनस्त जोहात स्ता "कृष्णि" नामक अक्षि मृद्द्रभाव द्रामन कर्न्न अक वश्न-मन चाना जोहात महित्र सूर्भन्न मिन्नक्ष এক প্রকাপ্ত জালার সংযোগ করিয়া দেয়। ঐ জালার নাম "নাদ", এবং তাহাতে তল্পত্র কলস জল ধরিতে পারে।

চাতরে লবণ-মৃত্তিকা প্রস্তুত হইলেই মলজার। পূর্বোক্ত কুডির উপর বংশ নির্মিত এক থানি ছাকনি ও তদ্পরি কিঞ্চিৎ খড় রাখিয়া এ মৃত্তিকায় মালার গত্ত পরিপূণ করত পাদ্ধার। তাহা উর্মন্তপে চাপিয়া দের, ও জুরিহইতে ৮० तलम लवन-कन उन्शति गानिष्ठ थाक। बे জল লবণ মৃত্তিকা খোত কৰিয়া জনশং বংশনল-ঘারা নাদে আবিয়া প্রিন্দ চয় । কিন্তু তৎসৰু-माय जन नवन-मृजिकाक्ष्रे ए श्यक् इय नाः ৮० क्लम क्रालंत ७०।७२ क्लमभाव नार्ष चा-সিয়া পড়ে, অবশিষ্ট জল 🚊 মৃত্তিকার সহিত न न्य थारक। नारम कल-ाष्ट्रा हस्टि क्रेटन मनकोता वे नवन-कन अक श्यक कमरम सहैया রাথে, এবং মাদার খৌত হৃত্তিকা চাতরে নিকেপ করণাভিপ্রায়ে স্থানাস্তর করত মাদায় **নৃতন লবক**-মৃত্তিকা দিয়া তাহা ছাঁকিতে প্রবৃত্ত হয় 🖟 🥕

লবণ জাল দিবার ঘরের নান ভুন্রি ঘর; ভাছা
চাতরের সরিকটেই নিশ্চিত হয়। তাহার দৈর্ঘ্য
পরিমাণ ২৫।২৬ হস্ত, এবং প্রস্ত ৭ বা ৮ হস্ত। মলকামাত্রেই ঐ ঘর উত্তর দক্ষিণে দীঘ, এবং তাহার
দক্ষিণ ভাগাপেক্ষায় উত্তর ভাগা অধিক উচ্চ করিয়া নির্মাণ করে; তথকারণ এই যে দক্ষিণ ভাগা
তাহাদিগের আবাসস্থান, তাহা অধিক উচ্চ করিবার প্রয়োজন নাই, কিন্তু উত্তর-ভাগে লবণকালের উনুন নির্মাণ করিতে হয়; তজ্জাত-খুলনির্গমনের নিমিত্ত গৃহ উচ্চ না করিলে ত্যাক্রের
অবিহৃতি করা কঠিন হইয়া উঠে। উক্ত
মৃত্তিকাদার। নির্মিত হয়; তাহা ভিন্ত হয়
সৃত্তিকাদার। নির্মিত হয়; তাহা ভিন্ত হয়

ভেড় সের। ভংসমুদায় কর্দমে প্রোথিত করিয়া উন্নের উপর ভর্গিত করিলে যে অবয়ব হয় ভাচ, নার্মে প্রদর্শিত হইল; মলজীরা ভাহাকে: "কাঁটেল, এবং যে মৃৎপিণ্ডের উপর তাছা স্থা-

উন্নে অথি প্রজালত করিলে কর্ম গুদ্ গুট্যা তত্ত্ব সমস্ত কুঁড়ি-পাত্তের এক পিও হইয়া উঠে। চারি পাঁচ বাছর ঘণ্টা काल ভाছাতে नाम्ह लवन-छन शांक लिंदल पूरे ब्याफ़ा बरन श्रेष्ठल हय। ये त्याफ़ी

VV V.V.V V V V V $A : A \land A$ AAAAAAAAAAAAAAA

छन्दात भारतं शाभिक थारक, अवः छाहाहहरा যে জল নিংস্ত হয়, তাহা ঝোড়ার নিমুন্ত তৃণের উপর পড়িয়া লবণের স্থল-পিণ্ডকপে পরিণ্ড व्या वं सरम-शिष्टित नाम " शाहा-स्वर्गः व्यना লবণাপেক্ষায় ভাষা বিশেষ নিৰ্মাল: কিন্তু মল-জীয়া তাহা কোম্পানিকে না দিয়া অনায়ানে গোপনে খন্যকে বিক্রয় করিতে পারে বলিয়া পাছ্নখনৰ প্ৰস্তুত করণের নিষেধ আছে।

লবন-পাক-কর্নের পরিভাষা "পোক্তান্"। पूरे (बाजा नवन शिक्षान क्टेंटन कामनमाइ, নামক নোম্পানির এক জন কর্মকারক আ-मिश्रा व लवरगणीत अक को मृम्त हिल् करतः अ मूनुति माम ''काम्ल', अवः ठाहा-**१३८७ जे मृमुक्तित नाम छेट्लस १३४।८१।**

स्वन मृष्ठि इरेटन शत मनकोत्र लाखारत नका क्रिका थारकमः হাপিত হয়; তথার লা দৰারাক प्रिट पाकिया शास: अ**क व्हेटन शा**स

শত বা দুই শত াঁচিশটি মিশীর কুন কোর গোলা-ঘরের ভূম্পরি ভূপাকারে রাখা যায়। ছোট ২ মূৎপাত্ত স্থাপিত করিতে হয়; ঐ পাত্তের দশ বার দিবস লবণ গোলা-ঘরে রাখিয়া পরে নাম "ক্ডি্" ও ভাঞার প্রভেত্তটার আ্যতন ভাঞা গোলাছইতে বাহির করত গোলার দ্বার-নিকটে স্থূপ করিয়া রাখিতে হয়। ঐ স্ভূপের नाम "वाष्ट्रित कीष्ट्र"; ১०१४० फिवन जे काष्ट्रि শুক্ষ হুইলে পর কোম্পানির ''পোক্তান-দারেংগা '' नामक कर्मकारी छाङ्। मनझोत निक्षे स्ट्रैएड পিত করে, ভাছা "বাঁটিচক্র" শব্দে কছে। তোলিত করিয়া লয়, এবং যে পরিমাণে লবণ প্রাপ্ত তাহা মলজীর হাতচিঠায় লিখিয়া দেয়। लवन-ज्ल-कद्रन-मभास जलकाही (कथाल) जनव-রত এক বিশেষ পদ উচ্চারণ করিয়া **থাকে,** তাকা ্এত্বে উদ্ভ করিলে গোধ হয় কেহই বিরক্ত ् इक्टरन ना। उरला यथा,

> * दामरभाभारत शक्षुरङ्। মাল দিজে হবে পঞ্জুড়ে।; জবিদ চলে। ভইয়ারে। এক পাশ দিতে হবে পঞ্জে "।।

(शाकान-मारवाभा-क १० लदन (जानिक करे-লেই তাত কোল্পানির পদার্থ হইল। তীছারা खे वादन धार्तभादाशनभूदत कानमून कांद्रमा काः-পনাদিগের গোলা পূর্ণ করেন; ও অবকাশমতে তাহা লবণবিজেভাদিগকে আপনাদিগের নিন্দিই-মৃল্যে বিজয় করিয়া গাকেন। মলদীরা কো-न्यानित निकरणे लवरभत मृता चाएक रहरू स्थान করা তেও বা তেও করিয়া প্রাপ্ত হইয়া পাছেঃ भारत काम्भानि को नवन **५०/>१। क**न्निया वि-क्य करतन: मुख्याः क्या विकासित मृत्र क्या कर्लापि अद्र एक्स 'ड व्यम् । नमस्य चार्या वर् ্ত্রীত তাঁহারা মোদ করা অপপত। ২।।। টাকা

হতির বিবরণ।

मङ्ग्रक विविधार्थ-नसूर वना इसी

रेट्रे धंतिनात প्राणा उद्विधिक एउँ घाटए:

अस्मा नाधात्रनकरम जे शस-रमु
रक्षत প্রাকৃতিক-বিবরণ প্রকাশ করা যাইতেছে।

ইদানী ওনের সর্ব প্রকার ভূচর পশু অপেকা হন্তী অতি বৃহদাক্তিমান্ জন্ত; ইহার গভার-পাংশুল-বণ-বিশিপ্ত-শরীরের উচ্চতা প্রায়ঃ ৮ হন্ত; এবং ইছার ভার প্রায় ৮৮ মোন পরিমিত হইয়া থাকে। এই গুরুতর-ভার-ধারণ-নিমিত্ত হন্তির স্তম্ভূলা সুদ্দ পদ্চ তুইয় সমাক উপ্যুক্ত; পদ্চতুইয়ের অগুভাগ পণ্ড নথবিশিষ্ট।

হান্তর কর্মদেশ অত্যন্ত হুম্ব: সুতরাং অন্যান্য জন্তর ন্যায় ভাহারা মন্তক সঞ্চালন করিতে পারে লা হাহার মন্তক ও দশনদন্ত যে প্রকার বৃহৎ, ভাহাতে কলের হুম্বতাই আবশ্যক। কিন্তু পর-মেশ্বর ঐ দোষাপনয়নার্থে হান্তকে এক সুদীর্ঘ দৃশ্ব প্রদান করিয়াছেন: মনুযোর পক্ষে হন্ত ছাদৃশ উপকারী, হন্তির পক্ষে শৃত্তও তজ্ঞপ। লই প্রত্যন্তের অগুভাগ এমত আশ্চর্যাক্রপে নির্মিত, যে তথ্যক্ষারে হন্দ্রী কি অত্যন্ত গুরু কি অভি সুক্রা পদার্থ অনায়ানে প্রতীতি করি-তে পারে।

इस्ति मुद्दव्हित उद्युष्ट उद्युष्ट अक श्रुकात क्रिया विद्युष्ट विद्युष विद्युष्ट विद्

শিষ্ট ক্ষুপু চক্ষু প্রদান করিয়াছেন ইয়া কোন মতে ভাহার পক্ষে হামিজনক নছে:

এই চতুপাদের শরীরস্থ স্বভাবনিদ্ধ শন্ত হাহার সুদ্দ দন্তপ্তঃ: এই ভয়ানক শন্তের নাখানে।
সে কুদুরুক্ষ সকলকৈ উদ্মালিত করিয়া কেলে।
এতদ্বারা একবার মারে আঘাত করিলে শিংহ
ব্যাঘু গণ্ডারাদি ভাষণ-জন্তও বিনপ্ত হইয়া যায়।
হস্তীর চর্ষণ দন্তশ্বেনি শত্র্য গর্যান্ত ভাষা হয়
না; এবং পরে উন্মূলিত হইলে পুনর্ষার নৃতন
দন্ত উথিত হয়।

হস্তিনী বিংশতি মাস এবং অন্তাদশ দিন একতি
মাত্র করভকে গভেধারণ করে। এ করভের জন্মকালীন উচ্চতা প্রায় ২ হত। সে মুখের দার।
স্তন্যপান করিয়া থাকে। তিন বর্ষ পরে ভাষার
দশন উৎপন্ন হয়, এবং ত্রিংশদ্বর্ষ বয়ক হইলে
সে পূর্ণাবয়ব হইয়া উঠে। যদিও যথার্থনারী
হস্তার পরমায়ু-কাল নির্ণীত হয় নাই, তথালি
ত্রিংশদ্ধিক শতব্য বয়ক হন্তাও দৃষ্ট হইয়াছে।

ছন্ত্রী-সকল সদা সুদেশ্রিয়, এবং সন্তর্গ কার্য্যে অতিশয় তৎপর।

এই জন্তর তিন প্রকার ভিন্ন ভিন্ন বর। এক প্রকার আত্রাদসূচক: তাহা শৃপ্ত উচ্চ করিয়া তুরীর ন্যায় শব্দ করিলেই জানা যায়। অন্য প্রকার অভাব প্রকাশক; তাহা মুখক্ত অনুদান্ত ঘরেই প্রভীত করিয়া দেয়। অপর এক প্রকার কোধজাপক: তাহা কঠদেশেৎপন্ন ভীষ্ণ শব্দ-দারা অভিব্যক্ত করিয়া থাকে।

रेश वर्ष मृत्यत विषय विषय विषय करेत ता करें श्राकाश कर मन्द्यात स्थीन रहा। स्थि श्राकीन कालाविश खातळवर्थी है नृश्किश्व खब्द सन्द्रान धनवान वाक्षित रखिन्त्र स्थि-नृद्ध सादतास्य कृतित्व गर्वता समूद्रक रहेता शाकित्वन। स्थाह ज्ञित



(कर्म्य कम्भान-धर्म :

স্ভাবমাত্র এবিষয়ের কেবল অনুকূল হইয়াছে भामम कतिरम हेशोता सकीय तक्करकत मन्भान पुर्व कतिर हि শাজাকারী ধ্ইয়া শীঘুই রক্ষককে সেহ করে; এবং তাহার বিশেষ ২ সক্ষেত এবং বিশেষ ২ ব্যগুভার মহিত ভাহ। পালন করে। মনুষ্/দিপকে পৃষ্ঠ-দেশে গৃহণ করিবার নিমিত্ত সে উপৰিষ্ট **इहेशा थाटक। भिक्ना फिटन बात उपयादेन ও বफ** क्रम अवृत्वि मामा अकात कार्या ७ डाहारक ७९-পর দেখা যায়। ভাহাকে চলোইবার নিমিত্ত কদাচিৎ অন্ধুশদন্ত ব্যবহার করিতে হয়।

अत्मत्क दिरवहना कदिशास्त्रम, त्य इस स्वाहे-কের কর্ম এক হতিছারা সম্পন্ন হয়; কিন্তু णहात शांतरन ममधिक यणु कता अदः वस् পরিমিক আহার প্রদাম করা অভ্যাবশাক। তা-কাৰ্কে প্ৰভাৰ ১ মোন ভছুল এবং আ॰ মোন शानीय फिटल एस ।

रखेड माननिक श्रन-नकत पाछ भाष्क्र स्था अविनए यानाक यानक प्रकात छेराएक विमान

ছেন; ভথাৰে। আমরা বিদ্যুদুইটি আশ্চর্যা বিষয়

अकरा नत्को अरम्रामद काम मनाव मृतवाद ইচ্ছা করিয়া ধকীয়া প্রিয়েত্স হস্তীর উপর আন-শব্দ ব্ৰিয়া থাকে। হস্তিপের আজ্ঞা-সকল কদা- রোল্ল করিয়াছিলেন; একটি অপ্রশাহ স্ক্রিয়া চিৎ कर्त्वाल क्रेट्ड (मधा यात्र—हस्त्री **कर्ति** डीहारक भवन क्रिटेड हरेत्राहिन। जे शक्राध কভিপয় পাঁড়ার্স্ত ব্যক্তি পরিজ্ঞ বায়ু ও সূর্যেটা রশ্মি সেবনাথ শল্পান ছিল। ভারতেক ক্রন্ত-ब्रिडा वर्ष्ट्र कम गाँडवृत्र मवायदक निक्रिक्ट स्मित्री भंगायम कतिव। संगाव मारे अपूर्वभ व कि कि गरक रेखिशन हाता सम्बंध कहिएक हैका किशी হতির প্রতি অন্ত্রাষাত করিছে আমেশ করি-लान। एडी किश्चमुद्र शममें क्षिया त्रांशित्य नि-**जास मगोलक एक्ट्रेस चात वक लामगाव क मगन** क्रितिक मा। रुखिन वृथा छाहारक भूमः भूमः व्याचार कदिए वाशिना नवार करिएन, "रेगा कर्रात्म व्यापाण कर्"। प्रकार कहिराह स्का-भीग एखे अनरे निहामुद्र व/स्टिप्ड नमूद्र हैस्ड-ज्यस्ता में विकास प्रतिकात शरी स्थान द्वारिक (गक, क्षि काशास्त्र गास्त्राष्ट्र (क्षर भारतिक जक्कादकरे सामास्त्रीक ठतिया वर्णय श्रीतकाङ्ग कतिन। अहे महा-छक्त छेलाताक मानवाकात-বিশিষ্ট নির্দায় জান্তকে কলে বহন করিবার কত অনুপযুক্ত!

বক্ষাৰ আথানহারা হতির কৃতজ্ঞা-গুৰ **প্রকাশি হইতেছে।**

া কোন এক ভদু লোক একদা হস্তীপৃষ্ঠে আরো-হণ-পূর্বক মৃগানুসরণ ক্রমে গমন করিয়াছিলেন; ক্ষরণ্য-মধ্যে এক সিংহকে মারিবার উপজ্ঞা-সময়ে [†]

मा, उथम खक्षावाता जाकि मात्रधारम একে একে देन बामानि एय हरेना हिंग हरिन अहहेटड ज्मिज्ञ भिज्ञ रहेवामान्य नैश्रकादा उथ कनार वाकाख श्रेतन किंद्र श्कीत क्वकना क्या (में निक्षेत्र अक्षि उक् माथा उदक्रनगांव एका-ৰারা ধারণপূর্বক সমত করিয়া বলপূৰ্বক এ প্র-কার ভাবে কিংহের প্রোপরি স্থাপিত ক্রিক্র, य फर्नुभाषा मिः रूटक चालम आन क नीकान পরিভাগে করিতে হইল। এই ঝাপার মিমুন্থ हिट्य मुन्दब्बर्श क्षेड्रील इहेट्रक।



(क्बोंबें कुक्कबांस निप्दहंत सममबहेदक शमुखान कका।)

मामदा त्य माखत महत्काश विचत्रव श्राकामा मखक मृत्वत, त्याम, वन्ध्र मुखि ; जाहारमत त्ररण अक श्रकात रही भारतः शाविष्णुरकता व्याकतिया त्ररणतः त्यारकता सर्वे अवन कतिया क्र राशांत्रिक अव विश्ववर्ग बीवहा राज किया- पश्चिम बादका श्रामिक खानदरणास अधिक

क्षिनाम, क्षित्राम, तुक, निश्रम ध्रकृषि विश्वत र्रह्म, अवः शासूत्र क्षिक कृतुल्यः रमान कामा उर्गत एक। उपाकीय चामतिक। जासारमत चाकृष्टित मार्गमान किथिए वृहस् त्त्रता प्रावचनित्र गढी चलाचा जावारमा श्रीम नारतक विविद्यारक, त्र त्यार

वन প্रकाक कित्रारहन।

কৃকি জাতির বিবরণ।

কি নামক অসভা জাতির নাম এত-দেশীয় অনেক লোকেই শ্রুত আ-ছেন: ভাছারা চউগুমের পূর্বোত্তর मिक्ष अमेरिक नाम करता वाध हरा, क्रिका পূর্বাঞ্চলার মনুষ্য-মধ্যে অতীক কর্বর। ভাঁছারা অপরাপর পার্বভা লোকের দ্যায় থর্বকার, দুটি্ষ্ট, विक्रि. ७ ः डिम्बी, अर॰ शूर्व-एमीय वनाना लाकवर गठमानिका, कुनुष्ठकः **उ वर्जुब-मम्**म म्थिविनिह।

कुकिएए मरसा अक छेशांशान अहाँना चारह, যে এক পিতার পাত্রীষ্বয়ের মধ্যে কনিষ্ঠার গভে তাহাদের উৎপত্তি, এবং জ্যেষ্টার গর্ভে মঘলা-তির জন্ম হয়। এই জাতিবয়ের স্মত্নদৃষ্টে একাপ विवत्त अन्यत् (वाध इस ना।

কুনিরা ষভাবতঃ মুগয়াসজ, ও বৃযুৎসু, নতা **ব্যক্তির করে।** রাজার। ক্রমালয়ে বোকদের। धक्तान मस्टरकत প्রোভাগে रक्त, क्रमा है भूर्यकारन ज्याकी स्वाहित स्वाहित

शिक्ति इहेत्व उन्ति नक्षीता क्षारिक वृक्ष-नक्षा श्रिकारमत निक्षे व्हेर कत गुरुव, क विशेषकारम ও মৃত্তিকা-তুপ কেপণ করিয়া ভাচার পলা- যোদাদিগের উপর কর্তৃত্ব করা রাজার অধিকার; শ্বন-সুবিধা করিয়া দেয়। বদিও পশুর নিকট- কিন্তু প্রত্যেক শ্রেণীর অধিপতি, কি দক্ষি কি ছটতে এবস্পুকার বৃদ্ধির কার্য্য প্রতীকা করা যায় বিগুত্, সকল সময়েই আপনার আজ্ঞানকণ মা, তথাপি কিয়ৎকাল-পূর্বে প্রিঞ্জল পাছেব ব্যবস্থা প্রচলিত করিতে পারেন। অধিপতিত্ব कांकतिक। (मटन जुमन कतिया देशद्वाक दिन- शम मामामा तांकशदमत नाय शांतरमार्था मटन ; প্रकाता मन्त्रामोछ-शूर्वक উপयूक्त वाक्तिरक व्यवि-পতিৰপদে বরণ করে।

ভীর, ধনুঃ, পরিষ, দাত্র, প্রভৃতি অন্ত কুকি-प्तत् व। वहार्य। ; এनः शरम (भश्रान) **ठर्जनिर्मिन** কলকও ভাহার। ব্যবহার করিয়া **থাকে। ভাহার।** কি নামক অসভা জাতির নাম এত- পর্বত্যধ্যে অতীব দুর্গম ভানে বর্গতি করে: সেই ভান পাড়া নাংখ উক্ত হয় ৷ প্রত্যেক পাড়ায় অন্যুন পঞ্জাত, তৃত্তাপি বা বিষহসু ব্যক্তাধিকে-त्र**७ वम् कि व्यास्त्रः भाग्यः न्यक्तारकः भ**न्न क्रिकाः **পদ-कत्त**न-गानरम ७१२। । जारु। मूर्गिविङ् नः म-षाता शतिरवंडिक करतः जात षातरमरम निवाहर প্রহরিতা করিয়া থাকে। এই নকল বিষয় এবং ভাৰ্দের পর্নালা-নির্মাণের নিয়ম-দৃষ্টে বোধ হয় যে তাহারা কদাপি নির্ভন্ন দিশ্যিস্ত চিত্তে कालयागन कदिएक भारत भी,

कृकित। कमालि मण्युष यूष करत हा; श्रजू छ इाजिकारन निःश्वय अन्हात्र बाह्रो सञ्जूषन-निक्रि वानिया अक्राय उत्राहित्यक चाक्रमन करते। जसी ण्डेटल **मञ्जूलरकाद छित्र-मञ्जल-मुक्ल वहेसा छालाता** कारधुनि-शृदिक व्याशन २ लाखा मटना शानिष्ठ एस, ও ক্দু হ নান। বতন্ত শেণতে বিভক্ত আছে; এবং নিহত ব্যক্তিদের বস্তানদিগকৈ বটুরা দাসবৎ ख्याणि नकरनरे शासिवामारमण निक्षे ख्यी- श्रांखिणानन करता मजूमाता कि क् ए देश मही व रमामस्त्रक ; अ चयमानित वाकि यावि एकान छेलत कर्ड करतन, बार संयान-हिल्ह्यकल अक बोहर श्रकांच कहिए मा लाल, कार्य समावह-কুমবৰ উত্তরীয় বৰ পরিধান, ও কেল বমুহায়কে ভাতৰ হয় না 🏋 💛 💛 💛 💆 🕬

চৌর্যবৃদ্ধি যে প্রকার প্রশংসনীয় ছিল, ইহাদি-গের মধ্যেও ভজ্ঞপ; ইহারা ভক্ষর-ক্রিয়ায় গুড় হইলেই অবমানিত হয়, এবং হাত দুব্য অধি-কারিকে প্রতিদান করিতে বাধ্য হয়।

কৃতিদের বৈরনিঘাতন প্রবৃত্তি অতি চমং করে।
ব্যাঘুদ্ধারা যদি কোন ব্যক্তি নিছত হয়, তবে
ভাহার জ্ঞাতিরা যাবৎ সেই ব্যাঘুকে বা তদতাবে অনৈতক শার্দ্দলকে বিনাশপূর্বক প্রতিবাদৈদিগকে ভোজ দিতে না পারে, তাবৎ অবজ্ঞাত
থাকে। অপর কেহ একটা বৃক্ষহইতে পতিত হইলে
নেই বৃক্ষকে থণ্ড ২ না করিরা ক্ষান্ত হয় না।

পূর্বোক্ত বিবরণ শুবনে অনুমান হয়, যে বুঝি ভাহারা কেবল মৃগয়া মাত্র করিয়া জীবন যাপন করে; ফলতঃ তাহা নহে। কৃষিকর্ম ও পশুপালনাদি কর্মও তাহাদের মধ্যে প্রচলিত আছে; পরস্ত তৎতাবৎ ক্রিয়া অতি অসভ্য ভাবে নিশের হয়।

উদ্বাহ ক্রিয়ায় কৃকিদের বিশেষ প্রথা এই যে বরকর্ত্তা কন্যকেতার নিকট স্বকীয় পূত্রের সা-হস. সম্বামপ্রিয়তা, এব॰ চোর্যটনপূণ্যের পরি-চয় দেয়।

কোন কুকির মৃত্যু হইলে ভাহার জাতিরা এক শুডুত ব্যবহার করে। বৎসরের যে কোন দিবদে মৃত্যু হউক না কেন, মহাবিষুব সঙ্কা-ন্তির পূর্বদিবস-পর্যান্ত মৃতব্যক্তির সৎকার হয় মা। ভাহারা ঐ শব বেশ্বাহইতে কিয়ন্দুরবর্তি এক মন্দোপরি রক্ষা করে, এবং পরিবারের কেছ মা কেছ শহিমিশ ভাহার নিকট বসিয়া থাকে। অনন্তর বৈশাথের সঙ্কান্তি-দিবস উপন্থিত হইলে সমস্ভ জাতি কুটুর একত্রিত হওত বেই মৃত ব্য-ক্রিকে চিতারোহিত করিয়া দুগা করে; পরে একত্রে জোলানে রক্ত হয়। বটুমি নাহেব মকীয়-ভূমণ-সময়ে উত্তর-অমরিকার আদিম প্রজাদিগের মধ্যে এই নাপ ব্যবহার দর্শন করিয়াছিলেন। পরস্পার অতি দূরবৃত্তি
এই দুই অসভ্য জাতির উদুশী ব্যহহার-সমন্ত্র
অতি আশ্চর্যা বলিতে হইবে।

কৃতিদের প্রলোকে বিশ্বাস আছে। তাহাদের
মতে ইশরের অনুগুহোৎপাদন কিচ্তেই তত
হয় না, যত শত্র-বিনাশদ্বারা সম্ভবে। ইশরকে তাহারা সর্বসুষ্টা এবং সর্বাধিপতি বলিয়া
বিবেচনা করে, এবং তাঁহাকে "থোজান পৃতিআরু" নামে ব্যক্ত করে। যীন্সাক্ নামে অপেকাকৃত অপ্প ক্ষমভাবিশিপ্ত অপর এক দেবতা
আছেন; তিনি ইশ্বর ও কুকিদিণে মধ্যম্মরূপ।
মনুশ্য যত অসভ্য হয়, ততই ইশ্বর বিষয়ে অস্পাই
অনুভব গ্রাথো। কুকিরা পূতাআ ক্লর-প্রতিত্তে
গবয় পশু বলিদান দেয়; আর যাম্সাক্কে হার
প্রাণ করে। কুকিদিণের প্রত্যেক পাড়ায় মীম্সাক্রে এক জ্বন্য প্রতিমূর্ত্তি থাকে; তাহারের
ক্রিরা পূজা করে।

রঙ্গানিয়। এবং অরঙ্গাবাদবাদী বাঙ্গালিদিগতে কৃকির। অত্যন্ত উত্ত্যক্ত করে; কেবল মন্তক্ত এবং লবন গুড়ন কর। মাত্র ভাষাদের উদ্দেশ্য।

কৃতি-ভাষার কতিপর শক এই; মাপা (মন্ত্র)
নুনাও (মানবা), মাপানাউঠি (বালক), মুনাউঠি (বালিকা), কা (শিতা), নু (মাহা), চোপুই (ভ্রাতা), চানু (ভগিনী), কু (পিতান্ত),
কি (পিতামহা)।

) वाषित, १११७।

উৎস ও ममोत्र विवदन।

केंद्रेके केंद्रेसी हैं मुन्ने करनत आकर। मृचा-कित्र में कम ক্রিনার্শি সামুক্তার পরিগত চুকীয়া **অন্ত**-ब्रोटक उदाकिशिल इयः ७ उधाय किर १-কোরামা শিশির হিমানী বা বৃধিরপে পৃথিব্যপার বহিত ছট্য। থাকে। এ ব্যিত বারির কিয়দ্পশ মৃত্তিক। মধ্যে। প্রনিষ্ট ইউক্স্ট্রেরে ও অপরাপণ নদীরপে পরিণত किया अभियोग्त कनवडी ७ श्रामोत वारमाश्युका करता. उडेकः डारः भूनं कतिया **धारक।**

তরল প্রতেথির এক প্রধান ধ্যা, এই যে ডাঙার ্ সম্মান সংগ্রাম প্রকে, ক্যাপি ভাষার কোন অংশ উচ্চ, ও অপারণ শানিমু ক্রানা: কোন করেও বশতঃ ধনোফেতার मिंदित लब्बिश्रं थे क्ले आस्मिश्लिख इंडेश महमा-क्रकः हक्ष्माह (५६०) करहा अहे काह--वन्नकः **উक्र श्रा**त्यव কোন ছিদু বা ফাটালে বৃষ্টির জল প্রবিষ্ট হউলে এ ছিদু ৰা কাটালের তল দিয়া তালা নিমু **স্থানে আসিয়া তথা-**, কংব লোন ভিদুদার। শাহি বেচে উথাকপ্ত হইতে থাকে। के कालाक्ष्यक एवं जाए 'डेर**म'' टा "(काग्रा**वा)'' এবং পৃথিবার অনেক স্থানে তাহা বর্ত্তনান আছে। धनपुट प्रशिष्ट (म ममृतु-हल ও क्यान र झारन मुखिका त्तम करिया है-**महरण छै**र्शक्तिष्ठ अनेया धारक : अनव ইয়াত ভিত্তান্ত **হট্রাছে, যে প্**থিবার **অন্ত**ভিটো স্বভাব-নিদ্ধ জন ভাছে, দেই হ্মে ফুটুত করিয়া দিলে তাজা সম-্বাং জমাগত উৎক্ষিপ্ত হট্টতে খাকে, সৃষ্টি-জলজাত উৎ-দেও ন্যায় কদাপি ভাষার বেগের লাদ রুদ্ধি বা মধ্যে **হ**া विज्ञाम कर मा अते छेप्रामत नाम " शत्रुकतनारम " **क्रम्(अस्म जाहार कावस्तह मानः ८**७५ वहार धारक 📳 কোন, ক্যানে পাটা প্রকৃত উৎসের (কোয়ারার) নাপা দক্ত হয়: কোথাও তালা কুণ্ডক্লপে পরিণত আছে; তথায় ভালার উৎক্ষেপণ প্রতাক ভয় না **অংচ ভাহা** যে অকৃত উৎস নটে, ভাষার প্রমাণ এট যে রৌদ্ধেরা কৃষ্টিতে তাহার বিশেষ হাস-বৃদ্ধি হর না। অপর উদ্বাধ্যমন-नमास द्यान १ है अभव जन कृतकंत्र तक्षक लोहाति.

। अनार्थ झर्म कविया उर्भागविविभिक्के ७ उउर हरेता উঠে। দীতাকুণ নামে বিশ্বাভ এতদেশীয় উফোণ্ড-সকল बे श्रकारत উদ্ভ ्ता। आहेम्न । घोटम बने श्रकात कंबकरी अञ्चान्त्र। उदम आहरा जाहार जम वजान्त উষ্ণ যে তত্ততা লোকেরা তাহাতে অনায়ানে মাণ্দ পুরুষ্ট্র কাল প্রাক্তিয়া পরে বায়ুর ক্রমে এবং পাক ক'র্যা লয়। উক্ত দেশে ঐ উৎস-সকল "গ্রহসর" পৃথিত্তি ও দুর্যোর পর্মার মমরতার হাদ-বৃদ্ধানুসারে নামে বিখ্যাত। তত্ত্বাধিনা পাত্রিকায় ঐ উৎদৈকের সুচাক বিাবৰ প্রচারিত আছে; পাঠকদিনের সুশভার্বে তাহাইইটে কয়েক পঙ্কি নিমে উদ্ভ করিলাম।

িতথার মৃত্তিকাদয় নেটানে প্রিনেটন্ট **এক বৃহৎ,কুঞ্** হয়। যে জল ভূমিলাও হয়, জন্ধারা মৃত্তিকা লিজ খা- "আছে। মথান দ্বি খাকে, ভথান ভাষার জল বিলক্ষণ " छेक छ कोरिहत नगार नियान अवश् मर्वाना जनीय नाका অপেস 📲 ে । । । । । । । । করিলে ঐ জল উৎচ্ছিত্ত । । ও অল্ল অল্ল বুদ্বুদ্ উচ্চ। কুভের বেইটন ন্যুলায়িক ্রতিত হয়, কিছ বাজার জুল লাগিক গভার নছে। ধ্রুমন "পরিপূর্ন বাকে, তথনও O ছাতের অংগকা অধিক "কল থাকে না; হাহার মধ্যভলে ন্যুনাধিক ৫৪ **হস্ত** "গভার একটা কুপ আছে, ভাছার ব্যান প্রায়ঃ ৬ শ্রু, "কিন্তু মৃত্তে নিকট এতা প্ৰশস্ত ছাইয়া কুভের সহিত মি-''লিত সুট্রাছে।

> শমধ্যে মধ্যে আয়েয়ে গিরির যেরপ ভয়াৎগাভ হু, " সেই রূপ এই প্রবল পুসুরণ * হইন্ডেও অক্সাঃ উসং কল "ও বাক্সাদি প্রচণ্ড বেগে নির্মত ছইয়া প্রকে। প্রথমে 'ঘন তন কামানের **শব্দে**র ন্যায় যোৱতর গভার শঞ্জন " এবণ করা যা, , তৎক্ষণাখ ভাষ্ট্রসমু উপস্থিত হয়, পার-"करवर दूरहर कन डेन्स्ट्राइत धननदूर**ण क्रिल धा**त्क. 3 राग्मानि महमा ऐश्रिष्ठ इहेग्रा क्रच्न-**'অবশেষ** কঃ " দিনকৈ বিভিন্ত স্টয়া পড়ে। সেই সমন্ত ৰাকা "এড় উর্ভেডিটে বি প্রায়ঃ আটি কেনুৰ হইতে দৃষ্ঠি করা "যায় পারম্বার এইরূপ **তল ও বাবল নিগত হটবার** "পর একটা প্রকাশ জল-প্রবাহ প্রভূত-বাঞা-রাশিতে "পরিবেটিত হর্ম। অভার উর্দ্রনামী হয়। এই প্রবা-"হের জলীয় ভাগ চতুদিকে ব্যক্তেনে এ ক্লপ আরুত থাকে, যে তাহার অধিকাপশ দ্বিগোচক হয়, না শে সময়কার অভ্যন্ত সংস্থাপার দৃষ্টি করিলে বিশ্বস্থাপন " হইতে হয়। ভূরি ভূরি আলা-রাশি উপর্যাপরি ছুশিত

क चर्निएड प्रारक्षाकालात नित्म तिलवरमत् भाष र अनुमृद् া, নকাৰ ভাষা পদাৰ্থে প্ৰসুত্ৰ-শ্ৰন্থ কাৰ্ম্বৰ শ্ৰীষ্টাটেৰ, সুক্তিক চ

্লিছ্টতে হউতে উপিত ইট্যা গগণ মণ্ডল আচ্চাদিত রপে পৃথিবী পরিষ্কার রাশিতে নিয়োজিত আচে। মপ্র 👺 কয়িত হইতে হইতে ফেনাকার হইয়া চতুর্দিটেক বিকার্ণ 🐉 হয়, এবণ সেই জলের কিয়দণ্শ বাক্ষা হইয়া অবশিষ্ট 🖠 *প্রদর্শন করে। উহার অপেক্ষায় সৃদ্ধা আশ্চরী। "ব্যাপার আর কি আছি ? কুণ্ড হইতে জল নিগত श्रीतात ममरत नाना প्रकात वर्ष धात्र करतः क्यानः "कंशन উৎকৃষ্ণ नीलतर्रन, कथन कथन উজ्জ्वल श्रिष्ट बर्रन, "এবং অধিক দূর উত্থিত হউলে তাদ্ধ শ্বেত বার্ণ শোহ। 🤏 লায়। উর্দ্ধামি-প্রাগ্-সমূলায় নানা ভাগে বিভক্ত ۴ 🛊 🔻 সহসূপর্ম শৌগ্রের উপুরণ জলগারা 🕆 📆 🖛 । তথ্যস্য কভক ধারা চিক দর্ল ভাবে "ভাবে পতিত হট্যা অপুত্র শোভা প্রকাশ করে। "ইছার অপেক্ষায় রমণীয় ব্যাপার আরু কি আছে? বস্তী হওয়া যায়, তভ্ট সন্কার্ণ বোদ হত। 🕊 সকল জল-পারার এ প্রকার প্রথর বেগ, যে তাহার 🍍 🕏 টিয়া পূর্ফাবৎ ব্রির থাকে।

্ৰী কুলের উদ্দান্ত প্ৰত্ন পাত স্থাপন করে। ইহাতেই। তিমিধযুক এক সুপাত্যপ্ৰস্থাৰ দেখিতে পাইবেন। সাপ্য পাক হয়, শার আমা আবিশাক করে না^{শ গ}। ্ষে দকল উৎসে পুভূত জল নিৰ্গত হয়, ভাছা ্রিরপে পরিণ্ড থাকা সম্ভবে না; এলস্বেডো-ইপৈ প্রাহিত হটয়া থাকে। এই প্রকাদ দুই তিন বা জুলৈাধিক পার্দ্রতা সো্তঃ একত চিলিত হইয়া নদার है करतः भत्य कियम देशम-करन सभी भूग हरा ना। দলের এইবিকাশশ দুবীভূত পার্বতা বর্ফ হইভেট পর হয়। অপর কৃতিজলও তৎপুরণের পোদক हो ; क्लाज्य नमी-नकल शृथिवीत नम्मा सक्रम ; मामाना नि वा नशरत्त्र भग्नः श्रमामी (य श्रकारत् छञ्छा महस्र नावनाक जन मृद्र जनगरन करत, नमीन्नकन (मह

* ककारवाधिमी भावको, ३११६ मक ७८ शृक्षे।

∰করে, ভাহার মধ্যবর্ত্তি উর্বামি জল-প্রবাহ-দকন সামানা প্রঃপ্রণালীতে কেবল অপরিস্কার অনাসশ্যক কল वहिर्गं इस : उपिनी निक्नुद्वाकनीय श्रेमार्थ वर्षेस। यास् क्षप्र कोवणात्वत् कोवत्वाशास्य नकत्नत् गृष्ट्यत् का भरान 🌁 সম্দায় ভাগ ফেন্-রপে পড়িত ছবয়া অপুর্ল-ফেন-বর্ষণ ় করে; অপিকন্ত নদী-সকলকে পৃথিবীর স্বভাবসিদ্ধ রাজ-পথ বলিশেও বলা যায়, তাহায়ারা মনুষ্যেরা অনায়ালে দূর-দেশে গমনাগমন ও বাণিক্য করিতে সক্ষম হয়।

त्य खात्न वे डेश्टमत शात्म कार्य मनीत डेश-পত্তিভান। তথাহউত্তে নদী-সকল প্রতের নিমু দিগো অনুগামী হয়; এই প্রযুক্তই নদীর অপরাতিধান "নিয়ুরা।"। ঐ বামন-সময়ে ভাতারা প্রিমধ্যে অপরাপার নদী বা স্মোতের * সাইত মিলিত চটায়া সদৰ্ধি কোন দাগর বা অন্য মনী বা ছুদে নিপাটত না ছয়, তদৰ্ধি প্**উন্থিত** হয়, আরে কতক্য়লি ধারা সুন্দরে রূপ বজ জনশংবৃদ্ধিশীল হুইতে থাকে; এই কারণ নদার সঙ্গন-স্থান নৰ্বাপেক্ষায় মূল্ ও তথাছইতে উৎপত্যভিম্যে য**ত অগ্ৰ**-

পजाठर्डेट अवस्तुन नगर्य नहीं गोन्न (बनातजी **"উপরি প্ররুর নিক্ষেপ করিলে, মগ্ন না হটিয়া জলের। ধাকে, দরল ভূমিতে তাদ্শ থাকে না। ভাপর ঐ হার-**"তেজে অনেক দূর ঊর্জ্যামী হয়। কিয়ৎকান এইরপ তরণ-সময়ে স্থান-বিশেষে পর্বতের চাল্পুযুক্ত কোরাই "জল-পারা নিগত হট্যা পারে নিবৃত্ত হয়, তথন যে জল-় নদী হসাৎ অতি উজ চটতে নিমেু প⊜তত হয়; **ঐ পভানের** "কুও একেবারে শ্রন্ধ হট্যা যায়, পরে অংবার জল নাম "প্রসূত্রণ" জল প্রপাত ' কা করণা"; ভাছা শেক থিতে অতি আশ্চয়া নূমণীয়: কিন্তু শাধুনা এই স্কুল্কে ''ঐ কুভের জল এমন তপ্ত, যে পার্শ্বর্ত্তি লোকে তম্বনির অবকাশ নাই; অত্তর্ব তথ্যসূত্রত্তি তাহাতে মাণ্স পাক করিয়া থায়। তাহারা একটা পাঠকরণকে অনুরোধ করি ১৭৯৭ শকের ভত্তুবো**ছিনী** 🏴 পাত্রে শীঙল জল পুরিয়া তাহাতে মাণ্স রাথে, পরে - প্রিকার ৩১ পুতে অবলোকন করেন , ভথার তাহায়া

্নদী-সকলের উৎপত্তি স্থান আচ.উচ্চ ্তথাস্ইতে তা-হার। সহিক্টস্ নিমুদ্ধান দিয়। গমন করে, সুতর। । কোন नर्थ्यकिमिथादवत प्रभाग्नातम पूजे छेरम छेतित जाहोत्पत्र जन वे भक्ट रह छेड्य भाष निहा धनादिङ इत्या बाटक, তথা এক ভানের উৎপর নদীষয় বিপরীতাভিনুথ হয়! পর্ত্ত বৃহৎ হটলে ভাছার চতুর্নিগাই বৃহত্ত্ব মনী প্রবাহিত হট্যা খাকে। अ नमी-मकत्मत उर्शां सात्नव মধ্যে যে ব্যৱধান খাকে তাহার প্রত্যেকদিক তদিক্ষু নদীর "জলকর-ভূমি" নামে গ্রাভ।

নদীমাত্রেই উচ্চ স্থানে উৎপদ্হইয়া সাগর বা 🌉

^{*} भूताशानुमादत (च मकल चन्नारमिक कन्यानाः अक महान धकुः चार्यकात्र व्यक्षिक मृत कुमन करतः, काशास्त्रिकतः व्यक्षे अक्षेत्र

হ্দের অভিমুখে গমন করে; কিন্তু দকলেই দাগর পর্যান্ত केंद्रे हे रेटेंड शाहर ना; श्रीधमत्था खना नेमीत महिल बिखिड केडेंग भाष । (य. नकन नमी व्यापन शहरा गांशर কা হুদ প্ৰসাৰ গমন করে, তাহার: "প্রধানা" কা "मात्रकाः । १ या मकल मही वे श्रधामात्र शर्ल्ड व्यामित्रा নিপতিত হয়, ভাষার ভাষার "অধীনা" বা শনদী-गरिमा" नाम गाउ।

গ্ৰুল হিমালতে উৎপন্ন চত্যা সম্দু পথাৰ বিস্ত়্ এপ্রয়ুক্ত ভাহ। প্রধান নদী নামে আভে: यम्ना, সোন, গঞ্ক চর্মস্বতি প্রভাত নদীসকল গ্রমায় নিপতিত হয়, मुख्या हाराहा शकाद व्यथीनाः वै व्यथीना नमी-सकत याला प्राप्तात कला प्राप्ताना नगीएक नम्राप्त करता. अह ्डजू लाएक जाड्रामिश्रास्य "कंत्र श्रमाशिमी मनी " गएक्छ वन्त निवया भारक। वे कब्रधमाबिनी ও ध्रधाना ननी-मकल एम इसि पिया चुमन करत, उरनमुनायरक ये प्रधाना र्भे पहर एक कल अडिल इस. उरमामास व भूभाना नमी-ছারা সমন্ত্রে নীত হইয়া থাকে: মুভরাৎ ঋতু ও কালা-মুদারে তাহার বেগ ও গভারতাব অনাথা হয়; বদাকা-লে নদাতে যে পরিমানে জল খাকা সম্ভাবনা, অন্য সময়ে डाधा इट्रेंट्ड भारत ना। ये जल-दृक्तिर अभत अक কার্থ আছে ৷ গ্রীসার শেষে প্রথর-ভগন-ভাপে গর্বতের ৷ বরুফ গলির। প্রভূত কল উৎপন্ন হয়, সেটা জল নদীতে নিপাঁৱত জাইবা ভাছার অংশতন ও বেগের বৃদ্ধি করে। কোন ম গুৰ্কার লেখেন, যে নদীর উৎপত্তি কান যত ডাল, চামার আয়তনও তদনুসারে অধিক হয়; একথা अवरण्डम भड़ा १४०० - जमीन कर्लमासिनीधापन मह्याः, प अप्तरणत लक्षात् ६ एकानात वृक्तित आहुया, ७ वायू ७ भृष्टिकात भाकतामुङाभनारत कारास्य वृक्ति इयः, रश म्हिला । उत्तर कार्म अहिका कार्या कार्या । कार्या कार्या कार्या । कार्या कार्या । वार्या कार्या । वार्या कार्या । वार्या कार्या । वार्या वार्या । वार्या वार्या । वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या । वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या । वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या । वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या वार्या । वार्या वा शास्त्र, यथाकात अर्थान-भवन चांत डेक, यथाय शहूत वृष्टि নিপতিত হয় ও অনেক সভাবেশিক উপদ আছে, তথা-कात नमी कानारशकांत वृहद इहरतक हें हा जानाया-দেই সমূৰে ! দক্ষিণ কান্ত্ৰিকার পৰাচ-দক্ষা আহি উক্ষ্ তথাকার ভূমি অলি বু. ও প্রদা কলে আর্ ধাকে, ও বায় প্রচুর বাম্পে পরিপুর্ব, লখায় অনেক স্বভাবলিছ উৎস আছে, ও সর্বাণ প্রভূত বৃষ্টি নিপতিত হইয়া থাকে, वाश्वत रुधाकातः मनी-मकामत राष्ट्र राख तिहर, अहेर

अयुक्त जामान त्य अकात तृर्य नमी उपनाम स्मैशाहरी, जाम्य नमी श्थितीत जात कुलाभि मृश्वे इस ना। है छै-রোপ-এও অতি কুনু, ভাগতে বৃহন্দীর স্থান নাই। আ-ফরিকা তমুমরুভূমিতে পরিপুর্ন, ও আদিয়ার মধ্যভাগে অতি বৃহৎ পর্বত ও স্থানে ২ বৃহদৃহৎ সুদ ধাকাতে, 🥸 তথাকার বায়ু তাদৃশ আদু না ছওয়াতে, তর্থ-থাজেও अठाउ वृष्ट्रमा **रहेतात महावना नाहै।**

প্রত-শিধর**হটতে নিপতন-**সময়ে **নদ্যম্** যে তেনা প্রাপ্ত হয়, সমভ্মিতে আইলেও ভাহার শেষ হয় না 🖟 পৌ বেগের সাহায়ে নদী-সকল বল দূর পার্যন্ত অনা-তাকে পরিভূমণ করিয়া থাকে। মার্কিন দেশীয় আমাজন্ নামুট মহানদী দে গর্জ দিয়া গমের করে, ভাছার ১৮,০০০ इन्द्र मोध एंगिएड अक नक्षण माज मान् आहा: श्रामण त्वभवजी तीन नमीत धः (काम मीर्ष्य ।।। इस माज मान्। কোন ২ নদী প্ৰতিমাধ্য নিমে কোমল-মৃত্তিকা-বিশিক্ট নদীর "প্রদেশ" শব্দে আঞান করি। উক্ত প্রদেশে আতি-দৃঢ় পর্বত-এও প্রাপ্ত হউলে ঐ গিরির নিমুভাগের কোমল মৃত্তিকা পৌত করিয়া তৎস্থান দিয়া প্রবাহিত ইয়। अहे आकृष्य गालात अहस्मिनीय श्राहीन मनुरुग्ता शब्दाह ष्टिलन न[्] के कि तो वेद्यातक " खन्नुव्यक्तित विश्वनी " **मध्य** আখান করিজেন, কপিত আছে, সরস্বতী-নদীর কোন স্থান এই প্রকার গঞ্ভাবে প্রবাহিত হয়, কিছু আমরা ভাষার বিশেষ বিবর্জ জাত মহি। ইউরোপ-**ধতে বি**দেশ্ अ लिक् विक्रिंग श्वारमत प्रश्तास्त्र का अन्ति का अन् প্রকারে অন্তঃসলিল বাহিত শ্রীয়া থাকে : অপর কোন ২ कारन वान्कात आहुका शांकितनत नमें। आहे जाया जाया शांकितन হটয়া খাকে: গয়াধামের নিকট ফল্ভ নদা ভছিষয়ের वक मुकीख इन।

নদীর বিশেষ বণনের নিমিত্ত ভূগোলবেতারা ভাষার গতি জিন অপ্ৰে বিভাগ করেন; প্রথম পার্বভ্যাৎশ; डाङ्। रेममङ्के त्वस्थिता, ७ मर्खारभक्ताय त्वधंस्त्री: पिकीस, মধ্যাৎশ; তাহার বেগী মধ্যম, গম্য-ড্নে শ্যুভ্মি, অবং ধারা সর্পানতির ন্যায় বক্র। তৃড়ীক, সম্পাশশ, ভাষার বেগ অভান্ত লঘু নদার গঞ স্থান কোমল মৃত্তিকাবিশিকী সওয়াতে नमी नकन थे भारत প्राप्त बरु शाहात्र विकल इंडेगा, ত্রিকোণমণ্ডল-ভূমি উৎপন্ন করে। পরত্ব শক্ত নদীই अहे श्रकारत बरुधाता नरह, हैनेनकि मित्रा रम नमा সমূদ্ৰ সভাম করে, তাহা বহু পারা হয় নাও আমার जन् मानी महातमी अरु शास्त्र मंगूरत मिनकिए हरा।

তিকোণমণ্ডল ভূমির বিবরণ পুর্বেই উক্ত ইউয়াছে, পরত্ত বৃহৎ। তাহার উভয় পার্শের তালা এমৎ লয়া তথার তাহার অবস্থা-ভেদের উল্লেখ, হয় নাই। চৌড়া যে তদবলম্বনে সে অনায়ানেই উড়ি-এক নদীর অপর নদীতে পতন সময়ে যে তিকোণ মণ্ডল তৈ সক্ষম হয়। ঐ ডালাতে যে সে তেবল উভি-উৎপন্ন হয়, তাহার নান "নাদেয় তিকোণমণ্ডল": যে তেই পারে তাহা মহে; তদ্বারা জলেতেও নির্ভি-মণ্ডল পার্শে উৎপন্ন হয়, তাহার নান 'য়্নীয় তিকোণমণ্ডল," ও যে মণ্ডল সমুদু ডটে উৎপন্ন হয়, তাহার নাম "সামুদুক তিকোণমণ্ডল।" বন্দুকের শুলি যত দুর উঠিয়া থাকে তত দুর

নদী-দকলের গতি দর্শ নহে; যে ভূমি দিয়া বাহিত হয়, ভাগার দৃঢ়ভানুদারে ভাহা দর্পগতির নাায় বক্ত হয়। ঐ সক্রভায় নদীর সেগের হাুদতা জন্মায়; ভাহা না থাকিলে অংবয়ানধি শেব-প্যায় দর্ল নদীতে জন্মেনুতের বৈগের এতাদৃশ কৃষ্ণি হুইত, যে ভাহাতে সমস্ত ধ্বংশ হুইভ। গঞা প্রভাব বিধি শেষপ্রাস্ত শুজু হুইলে, বোধ হয়, ভাগার জল ১ ঘণীয়ে দুই শত কোশ স্থান ভূমণ করিত। নদীর ক্রভায় ঐ বেগের লাঘ্য হুইয়া সরল ভূমিতে কুর্রিণি দুই তিন ক্রেশের অধিক হয় না। অপার এই বক্রভায় নদীর দৈখা বৃদ্ধি করিয়া এক নদীঘার। অনেক স্থান শিক্ত করিবার উপায় করে।

উড्छोय्रमान महन्।

होड़ा य उनवन**श्रत रम अ**नाशास्त्र डेडि-তে সক্ষম হয়। ঐ ডানাতে যে সে কেবল উভি-তেই পারে তাহা মহে; তদ্যারা জলেতেও নির্তি-শয়-বেগ-সহকারে ভাছারা সাঁভার দিতে পারে : বন্দুকের গুলি যত দূর উঠিয়া পাকে তত দূর शर्माञ्च करे **मध्ना कत** हाजिया करणामास छै-ठिएक ममर्थ इस, ७ फानाएक मुख्य इहेरल अक्दात জলেপড়িয়া সম্ভরণ দিয়া শ্রান্তি দূর করত, পুন-वीव श्राप्त के प्राप्त करा । फल्किन् नामक अक का ठोर वृह्मकात मसूमु गटमा **हहारक था**ई-বার জন্য অভ্যন্ত ক্রভবেগে ইহার পশ্চাৎ ২ তাড়াতাড়ি করিয়া থাকে; কিন্তু ইহা কেবল এই পক্ষবলে ভাষার করালগুংসে না পড়িয়া আছা প্রাণ রক্ষা করে। উপরিভাগে উড্ডান হইবার সম: য়ে কথন ২ বৃহৎ পক্ষিতে ভাড়া দেয়, ভাঙা **হইলে** তাহারা তৎক্ষণাৎ জল মধ্যে সম্তরণ দিতে প্রবৃত্ত रय। এই काठीरात महरमात প্रধान वामणान ভূমধ্যস্থ সাগর, পরস্তু গুীয়াকালে অন্যান্য সমু-(मु ७ वेहा कथन २ पृष्टित्या हत हम् ।

কৌতুক কণা।

গণকের মাহায়া।

শুল্লেন, "আমার অন্তকালের কত দিলেন, "আমার অন্তকালের কত শুশ্লেন, "আমার অন্তকালের কত শুশ্লেন্দ্র দিন বজি আছে"? সে কহিল, "দশ বজনর"। তৎশুলে বাদশাহ নিরতিশয় ভা-বিত ও তদুপলকে পাড়িত হইন শুনুগত হই-লেন। এক জন সূবৃদ্ধি অমাত্য এই দুদৈবের সমুদ্ধ পার করণাভিপ্রায়ে এ গুণককে বাদশাহ-স্থানি ঘানে ভাকিয়া জিজাসিলেন; "ভোমার জীবনের শার কত কাল শবশিষ্ট আছেশ? সে মুকুনা করি-

क्षा डेखर कतिन ; " विमः छ वध्मत्र "। ताक्षमञ्जी তৎক্ষণাৎ তলবারদারা তাদার মস্তকচ্ছেদ্য করিয়া कहिरल्य, "महाद्राज, देशात भवनात देख्या (मथू-म "। वाम मार् जाशाटक मञ्जूष्टे श्रेया फेक्सीरवर वू-बित्को शत्वत श्रमारमा कतिएक नामितनम् अप दक्षि शन्दकत वारका व्याद्या कडिएक कान्त इहेरलन। পাৰ্গল হউলেও ফল আছে।

এক দিন এক দুৱাত্মা পাদশাছ একাকী আলন নগরহইতে বাহির হইয়া এক ব্যক্তিকে গাছ-ভন্নায় বসিয়া থাকিতে দেখিয়া ভাষাকে জিজা-मिटन्न: "अ तारकात ताका कि अकात, पुताका কি সুবিচারক''? সে উত্তর করিল: "নিরতিলয় पुटाराः ": वाक्नांक् किकानिटननः "चामारक किनिन् 😘 😘 कहिन; "मा"। वामणाह कहि-हरेश किकांत्रव: "वाशनि वासादक खारनन"? भागभाष्ट्र कहित्वन ; "ना"। तम कहिन ; "आसि । ান্ত নওলাগরের পুঞা প্রত্যেক মানে আমি ভিন দিন করিয়া পাপল হইয়া থাকি, আজি ঐ তিন দিনের এক **দিন "। ইছা শুনিয়া** বাদ-नाइ देव कार वहान बद्धारम श्रदान कवितन।

प्रमुख्याक अल्लामिंड धन कि श्राकारत यात्र शरा

এক ক্রজি প্রভাত হয় খানি কটি ক্রয় করিত। একদা কোন ফার্কর ভাষাত্তে জিড্ডাবিল, " তুমি প্রতি দিন ছয় থানি কছিয়া কটা কেন ক্রেয় কর্ণা সে উত্তর করিল, পঞ্জ পানি স্মতে ক্রন क्रिया थाकि, आह अक थानि गुर्थ निर्कण कलि, पुरे चामि পূর্বের ধার শোষ, ও অপর দুই থানি धात (महे"। कित वे वारकात नाव वृत्तिएक मा পারিয়া ব্যক্তরূপে কহিছে কহিলে, সে কহিল; "এক থানি ভিক্কৃককে দান তরি, এক আপনি ধাই, भूखरक अमान करिया। हेरा क्षाम्या करिया राजा করত নিৰুত্তর হইল।

সরাইইইতে রাজভবনের প্রভেদ কি 🔧

এক জন সন্ন্যাসী তাতার দেশে ভূমণ করিছে ২ বালু নগরে উপস্থিত হটয়া সরাই দুমে এক রা-कात श्रानारम श्रातम कितिमः ६ इञ्डलः करेनक অবলোকন করিয়া রাজার সন্তোনাগারে প্রবিষ্ট इरेल. जंतर उथा महामूलाताना जनातम् पूर्वक বিশ্রান করিতে লাগিল। ইতিমধ্যে রক্ষকেরা তা-হাকে দেখিতে পাইয়া জিজাসিল, "তুমি এখানে कि जना वानिशाष्ट्रण। नद्गाना करिन, "वानि करे চটিতে রাত্রিধাপন কারতে মনস্থ করিয়াছি"। চৌ-कीमारतता त्लावशूर्वक जाहारक कहिल, " अ कठी नरह, त्राक्रं छवन "। अस्य नमरम द्राक्षां अधान লেন, প্রামি এ দেশের রাজা শ। এ ব্যক্তি ভীত । দিয়া যান; ডিনি ভাষাকে দেখিয়া সহাস্থবদনে জিজানিলেন, "সম্যাসিন্ তৃমি এ রাজভবন কি সরাই ইহা বুঝিতে পার না"? সম্মানী निद्दिष्टि, "सहाताज, पूरे अकृषि अनु कहिए वामना कांद्र, अनुमाठि कतिएठ चाड्या इडेक"। अकान्ता श्राष्ट्र रहेश जनसङ जिल्लामिन, "महा-त्राक, यथम अ वाष्टी मिर्मिक इस, उथम हेहाटड क वान कतिश्राष्ट्रिल ?? त्राष्ट्रा कश्रितन, "भा-बाद পूर्वभूकरयद्वा "। भएत स्विक्किःनिन, " लास्य वान कतियाहिन?" द्वाका कहिरननः "व्यावात्र शिका"। नद्गामी जि**कानिन, "अकरन एक ना**नः कतिर ठएक् ? " इस्का किएलन " भावि। " अमस्त्र त्न किञ्चानिया, "शरह रक महान कृतिराक का हाका क्टिलन, अवामात উउत्राधिकात्रीण। वस्राको करिन, "महाताकः। य यत्न नगर्त्र ५ अक लाक রাস করে, এবং অসুক্রমে রাহাতে এভ অধিক चार्जिय नाम कतिरवक्त, जाहारक ब्राह्म उत्तर महा मूहे थानि लिखा माठाटक अवलिख मूहे थालि मूहे , बाग्रना; नजाहेरे विद्यालय गा

विविधार्थ-मञ्जूर,

তাপ্ৰ

প্রারুত্তেভিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র 🗀

मकाक ১११७, टेवमाथ ।



भारमी जांजित विवत्।

ग्रिश्च किंकाजा-मगरत ला-\overline রুগী-জাতীয় শত শত ব্যক্তি नर्वरा पृष्ठे रह, किन्न जारास्त्र क्रीणिक्षिक क्रीडि यावहात अवः

অবগত আছেন: প্রাচীনকালে হিন্দু ও পা-রণী জাতির পরস্পর অতি নৈকটা সম্বল ছিল; কোন কোন নংকৃত গুস্তকার পারস্য-হেম্পকে वार्यावर्डंत वास्त्रं वित्रा भग किशास्त्रः **७ शा**तमीरमत मर्था अवङ चरमक वावस्त्र व्याद्ध, याचात्र निहरू न्याहीन देवितक महस्त्र व्यत्नकार्टन नेमछ। श्रवाक रुत्र। वार्वावटशङ्ग থমের বিবন্ধ এতকেশীয় অতি অংশ লোকে প্রাচীন ধর-গ্রু সংক্তের অপভূষা ভাষায় রচিত, অতএব উক্ত বিবরণ অনেকের পক্ষে মনঃ-প্রসাদক বোধ হইতে পারে, নন্দেহ নাই।

পারস্য দেশ এই জাতির নিবাস-ভূমি। অতি প্রাচীন-কালাবধি মুসলমান-ধর্মের প্রারম্ভ-পর্যান্ত তাহারা বিখ্যান্ত ও মান্য, অগুগণ্য কপে তদেশে বাস করিয়াছিল; শেষোক্ত সময়ে তথায় মুসলমান-ধর্ম প্রচারিত হইলে শুকাবান পারসীরা নদেশ-ভ্যাগপূর্বক ভারতবর্ষে আগমন ক-রেন; অধুনা ভারতবর্ষের পশ্চিমাঞ্চলে অনেক পারসীর অবস্থিতি আছে। তাহারা বহুকাল এই উফ দেশে থাকিয়াও আপনাদের স্বাভাবিক সুক্রান ক পরাক্রমশালিতাহইতে বিচ্ছিয় হ্যানাই। নদের বির্যান, বুক্ষিম্ভা, এবং উদ্যম্পান্তা-বিষয়েও তাহারা কাহার পশ্চাদ্রলী নহে। বাণিক্র্য তাহাদের সাধারণ-বৃত্তি; তৎসহকারে তাহারা বিপ্ল অর্থ সম্পত্তি সঞ্জয় করিয়া থাকে।

পারসার। ফে দকল নিকেন্ডনে বাস করে,
তালা তালি তালান্ত, ও শণারিজ্ত; গৃহের তললেশে জ্রী, পুল, প্রভ্, ভূত্য, সকলেই অব্যহিত
ললে শরন করে। কিন্তু তালাদের প্রমোদালয়লকল নুদৃশ্য ও সুসজ্জীভূত হইয়া থাকে। এ
সমস্ত অভালিকাতে তালারা বর্ত্তমান ইউরোপীয়প্রথান্ত্রলম পান ভোজন করিয়া থাকে। পদ্দী,
মুগঘাকালী পশু, কুলু, ও শশক ব্যত্তীক প্রায়ঃ
লর্ত্রকার জন্তর মান্স তালাদের খাদ্য; কিন্তু
তালারা ভিন্ত-ধর্মাবলদ্বী লোকদের নহিত আলার করে না।

পারসাদের বস্তান ক্রেম গুহুণ করিলে নামকরণৰূপ একটি জিয়ার খনুষ্ঠান করিতে হয়।
নাত বর্ষ বয়সের পর, এবং ত্রিমামাধিক চতুর্দ্ধশ
বংশরের মধ্যে গারসী বালক "কন্তি"। যজোপবাত) ধারণ করে; ঐ উপার্বাত ৭২ গাছি উঠু-

কেশে নির্মিত হয়। উপনয়নের সময়ে তাহার।
"সদা" নামক একটি পবিত্র অক্সরক্ষিণীও ধারণ
করিয়া থাকে; এবং এই নকল পবিত্র পাদাথকে
কদাপি পরিত্যাগ করা অনুচিত জ্ঞান করে;
কেবল জীণ হইলে পরিবর্জ করিবার বিধি
ভাছে।

পারসীদিগের বোধে বিবাহ অভি মহৎ कर्ण; शूर्व जाहा जम्माद क्ववार्थ काल-বিচারের অপেকা ছিল না! কিন্তু অধুনা বো-बाइ व्यक्षत्वत भातभीता हिम्मू-भगत्कत भागम-मानूनाइ विवादकत छ छ मिन छित्र करत। भातमो योक्यरकडा यक्तमानरम्द्र कन्मामिशरक मह्धर्मिश कतिएक भारत, किन्तु यक्षमारनद्रा याक्षकरमत कुमा-রীগণের পাণিগুত্ন করিতে পারে না। এফণে বোষাই প্রদেশত পারনীরা এ নিয়মতে আ গুছে করিয়া হাজকদিগকে কন্যা দান করে ना। वद्द-विवाद ठाहारम्त नार्ड विश्वितिक: কিন্তু বাল্য-বিবাহ প্রচলিত আছে। তাহারা क्निमूमिशत्क व्यम्कतन कतिया পूर्विमित्तत छेवाक-কালে বহুল পরিমাণে অর্থ বায় করে। পারদা जीता व्यविनिष्णकारण चस्त्रभूत्रव्हेटक नहिष्णांटम যাভায়াত করিয়া থাকে৷

भावमीरमद विद्युष्टमामूनार्दे वृक्तदाशन अक উত্তম कर्म : अदः कनवान वृक्ष-रक्षम कर्ना कर्ज्दा नरह। अहे निमिष्ठ कृष्टकत वा उम्हानभारतन्न कार्या छाहादा कमाशि श्रवृद्ध हम्न ना।

প্রত্যক্ষ পদার্থের মধ্যে বিশেষকাপে তাহার।
অথির অর্চনা করিয়া থাকে। জ্যোজিপেদার্থ
নিরাকার পরসেশরের অতি শুেষ্ঠ প্রতিকাপ বলিয়া
বিবেচিত হয়, সূতরাং সূর্য, চন্দু, গুহ, নক্ষা
সকলও নকানবোগ্য। সূর্যের উহর কালে পারসীরা তাহার সভ পার করিয়া বারে।

পারসীরা অঝি-চয়ন করিয়া দন্দির মধ্যে রক্ষা করে; ক্রমিক পোষণদারা নেই অমি চিরকাল প্র-র্য্যন্ত প্রজ্ঞানিত থাকে। ভারতবর্ষে দুই প্রকার অথি আছে; वद्याम् ७ णामित्रान्। छमয়পूत, नोमति, এবং বোশ্বাই এই তিন স্থানে বহু।ম্-অথি-রক্ষার মন্দির আছে: আদিরান্ অথি উক্ত প্রদেশে অন্যা-ना चारनक द्वारन द्वालिक चाहि। शांत्रजीरमत विवा-হাদি মহৎক্রিয়াকলাপ-সকল অথিমন্দির মধ্যে সম্পন্ন হয়। ক্রিয়াকলাপ-অনুধান-কালে তাহারা "হোম" (সোম?) অর্থাৎ পারস্য দেশজাত লতা-বিশেষের রসকে অতি পবিত্র জানিয়া ব্যব-হার করিয়া থাকে। গোমূত্রও তাহাদের বিবেচ-नाश श्वम भागर्य, अहे अयुक्त जाहाता चारमे भा-মত্রে গাত্র ধৌত করত পরে গুদ্ধ জলে সান করে। তাছারা উপায়ান্তর সত্ত্বে জলে বা অথিতে কদাপি অশুদ্ধ দুব্য ক্ষেপ করে না, এবং পারতপক্ষে অফি-নির্বাণে প্রবৃত্ত হর না।

পারনীদের শাজে পুরোহিতকে অর্থ-দান্দার। প্রায়শ্চিত্ত করিবার বিধান আছে; কিন্তু উপ-বাস করা পারসী-ধর্মের অহু নহে।

পারসাদের মধ্যে বাজকেরা একটি পৃথক জাতি;
তাহারা পরম্পরাক্রমে যাজকতা-কর্মে নিযুক্ত
থাকে। যাহারা অভিশাজ-ব্যবসায়ী, তাহাদের
উপাধি ''দস্তর্"; আরু যাহারা পোরহিত্য-কর্ম
করিয়া থাকে তাহাদের নাম ''মোবেদ্"। তাহাদের কোম নির্দিষ্ট বেতন নাই; কর্মানুসারে
দক্ষিণা প্রাপ্ত হয়। এক্ষণে মোবেদেরা যজমানকত্ক অবজ্ঞাত হইরা দরিদু হইরা পড়িয়াছে;
তরিমিত্ত অনেককে বৈব্যিক কার্ম্যে প্রকৃত্ত হইতে
হইয়াছে।

আবেন্তা নামক গুড় পারনীদের পর্যপুত্রক। বৈ গুড় সংকৃত মূলীর কোক ভাষার বিশিক,

अवः चि आहोम विविद्या कथिक इरेशाएए। পারসীরা কছেন, গুষ্তাস্থা নামক রাজার সময়ে মহাত্মা জর্ত্য্ৎ দৈবানুগুহে তাহা প্রচার করি-याहित्वन ; किन्न हेमानी स्टान्त कान भूतान्स-नूमकाशो পश्चिष्ठ चनुमान करतन, य शांतम्।-দেশীয় আর্দাযির বাবেগান্ নামক রাজার সময়ে জেন্দাবেস্তা গুদ্ধ কোন ভিন্ন ব্যক্তি কর্তৃক সঙ্কলিত হুইয়াছিল। পারবীদিগের মতে প্রস্তাবিত গুস্থ পূর্বে বিংশতি কাণ্ডে বিভক্ত ছিল; তন্মধ্যে অধুনা विकास नामक अविधि माज मन्त्री कांख धारा হওয়া যায়। য়েষ্ৎসাদেহ, য়েষ্তে বিস্পারেদ্ ইজিসা এবং খর্দাবেস্তা নামক অপরাপর কাণ্ডের কিঞ্চিৎ হ অংশও প্রাপ্তব্য আছে। এই গৃত্ত ব্যতীত বন্দেহেষ্ নামক পুস্তকেও পারসীরা বিশ্বাস রাথে। ঐ গুন্থচয়ে ধর্মের আদিভূত क्ठक्ष्ठनिन मठा वाका व्यवना निवक व्यास्ः; কিন্তু অবশিষ্ট ভাগ মনঃকণ্পিত মানাপ্রকার উপাখ্যানে পরিপূর্ণ। সেই সকল কাম্পেনিক বিষ-য়ের বিবরণ বাহুলা করিছে আমাদের অভিনটি नार ; खुन ७३ वक्त या अहै या शाहनोहा मह्मल ७ व्यमञ्चलत প्रावर्शक चन्न अकि एवं उ अकि দৈত্যের অন্তিম মীকার[্] করে; তাহাদের নাম **अर्थक्**ष्यरः **षष्ट्रिमा**न्। अर्थक्ष् क्षनटच्छ मृक्षन अ कीविं रिशंत मूर्थ विधान करतमः चितुमान् नित्रस्त তাহার বিক্ষ চেষ্টার প্রবৃত্ত থাকে। ওর্মজ্ জী-ৰদিগের রক্ষার্থ " করোহর্" (দিক্পাল) লকলের मृष्टि कतियाद्यमः अधियान् जविकदसः " विव 🥶 (देमका) भगदक छेर भागन कतिशास्त्र। প्राविश्वदश्र रिण निमिष्ठ करतास्त्र-गठन रामण राज्यकाः व्यक्त माध्यार्थ शिर्द्रमा उद्भाग घटना । वर्षम् चम्कृत हरेवा अम्बानर्शक वर्षभाव क्राधितात क्षक (काम, क्षमहत्त्व, अनः क्षत्रकार शक्ति

মহাত্মাদিগকে পৃথিবীতে প্রেরণ করেন; তাঁহাক্তা মাছা উপদেশ করিয়া যান, তাহাই পারদীদের ধর্মবিষয়ক শাস্ত্র। ওর্মজ্নকে সকল মহলালয়
জানিয়া উপাসনা করা; মন, বাক্তা, ও কর্মকে
পরিশুদ্ধ রাখা; দিকপাল ও অপরাপর শেষ্ঠ
পদার্থকে অচনা করা; প্রত্যেক পারদীর অবশ্য
কর্মবা কর্মা।

জেলাবেস্তায় কয়োমের্স নামা এক ব্যক্তি মনুষ্ধ-বংশের আদিপুরুষ বলিয়া উক্ত হইয়াছেন; এবং বন্দেহেষ গুল্লে সপ্রকাপধারী অভ্যানের প্রামর্শে মানব-বংশের জনক জননার বিপথ গ্রমন, ও এক জলপাবনের বিষয় অভিহিত হইয়াছে।

পারনাদিগের মতে দ্বাদশ নৌর্মাদে বৎসর, ও তিন সহসু বৎসরে এক যুগ হয়।

কোন তাক্তি মৃত হইলে পাছে কোন দৈত্য। আদিয়া ভালার শরীরকে আক্রমণ করে, এই আলক্ষ:-নিবরেণার্থ পারসীরা মৃত ব্যক্তির নিকট ঈশ্বর স্থোত্র পাঠ করে, ও তা**হার চতুর্দিকে** কুল্র-সকলকে পরিবেঞ্চিত করিয়া রাথে। মৃত শহার প্রোথিত বা দথ্য করা হয় না; আশান ভূমিতে অনাবভক্তে। রক্ষিত হয়। যদি তাহার म्कित हणूर प्रथमकः भृभुषाता गृहीक ह्य, कत्व ভাষা অতি শুভ চিহ্ন: মৃত্যুর দিবস-চত্ ইয়-পরে "সরিওয়" নামক দৃত মনুয়ের আত্মাকে 'वित्नवीम' नामक कशींक (मठु मिया लड्डा यात्र; তথায় রয়নেরষ্ৎ নামক দূত জাবাঝার কার্য্য-সকলের পরিমাণ করে; পুণেরে ভাগ অধিক हरेल चर्गबातक कृकृत छाहात्क श्रक्तिताथ करत না: পাপাত্মা ব্যক্তিকে নরক কূপে নিপ্তিত **ब्ह्राठ गरा। नतरकत यज्ञका व्यक्ति ख्यानक**; কিন্ত তাকা নিত/স্থায়ী নতে। ওনজদ্মুগ-পরি-वर्त-वाह्री अमाल अक ममन्न ध्यात्रन कतित्वन,

यथन षड्यान् यमन-गर्धर्यभाष প्रवृत्त इहैरव, यथन পৃথিবীइटेट्ड छয়, শোক, पू:थ, অপনীত इहैरव, এবং উপদ্ভিত পৃথিবীই আনন্দপূর্ণ মর্গ-ধানের মূর্বা ধারণ করিবে।

গলিবরের ভূমণ-বৃত্তান্ত।

आक्रीआअआ स नखत यथन छोहाता (मथिन, य जानि अ बात किष्ट्रे थाहेए हाहि ना, उथन 黑黑黑黑 ठाराप्तत्र मत्था क्षयान वक क्रम डेळ-**পদস্ব এক্তি ৰন্থানহইতে আমার নিকটে আ**-নিয়া উপস্থিত হইল। সে ভাদশ জন পারিষদ नमভिजाहादा वहेशा आमात्र पक्तिंग शाप वहिंगा একথানি মুখের দিকে অগুসারী হুইয়া এক-থানি রাজদত্ত ভয়ামাঞ্চিত ক্ষমতা-পত্র আ-মার চকুর নিকটে ধরিয়া রাগসূচক ব্যতীত অপরাপর হাবভাব জ্ঞাপক অহভেম্বার সহিত প্রায়ঃ অর্জ দণ্ড কাল কিছু বলিতে লাগিল। ভাবে বোধ হইল, যে প্রকৃত প্রস্তাবে কোন প্রতিজ্ঞা করিতেছে; বার ২ সম্পুথের দিগে অজুলীমারা निर्फ्य क्रिएं नागित शत कानिएं भारि-नाम, या उवाइरेट अक्लाइटकान पूरत तक-थानोत पिटकरे निर्फाण कतिएक हिन, बे पिटेंगत ताला

তথায় আমাকে नहेश्रा याहेटच निजास मनन कति-

য়াছিল। আপাতভঃ **আমি বাক্ট্যার। কিছু কহি-**

एक नाशिनाम, किस किष्ट्रे केन मिनी मा। शरत

আমি নেই মুক্ত হস্ত থালি দিয়া, ভাষ্ট্ৰাৰ সকৰ

স্পর্ল-পুরঃসর ভাষ। আপন শিরে ও শরীরে প্রকাশ

कर्त्रेष्ठ मरक ज्ञाती क्रोतारक वचनक्रेट्ड मुक्क कर्तिहा

দিতে প্রার্থনা করিয়াছিলাম। কো**ধ ছইঞ**ানা

মার মনোগত অভিপ্রের বিশিষ্ট প্রকারেই রাজার

सरग्रम रुरेगारिम, दक्तमा (म सामान निर्मा

भागत बाद्रा अविवरत व्यवकारि, अवः बरुर्ख হস্ত ধরিয়া এখনি ভাব প্রকাশ করিল, যেন সে 'आ**यारक चवना/हे चवरुक क**ित्रा नहेना याहे-বেক। যাহা হউক সে আরো কয়েক ইঞ্জিত-षात्रा चामारक कानाइल, य ज्यांग्र शिल यरथंडे খাদ্য ও পেয় এবং বিশেষ অতিথিসৎকার পাইতে পারিবে। সমনন্তর আমি পুনর্বার সেই वकान एक रानद्र जिमास कतिशाहिलास, किन्तु जा-মার মৃথে ও হস্ত পাদাদিতে তাহাদের বাণ-বেধনের বেদনা বোধ ও ভূরি ২ বাণ তথম পর্যান্ত ভাষাতে বিদ্ধ হইয়া থাকিতে, এবং তা-मृश देवित मध्यात वृष्ति देवैद्य प्रियो, म्हा छ-षाता ''वाभारक नहेशा यरथच्हा कतह '' कहे कथा তাহাদিগকে জানাইলাম। ইহাতে ঐ হ্রগো **খ**স-জিগণে পরিবৃত হইয়া সভ/তা-পূর্বক **পর্মানন্দে** প্রস্থান করিল। ক্ষণকাল বিলম্বে গুনিতে পাই-नाम, यে তাहाর। मर्बमाधांत्रत "(ललनाम (म-লান " এই শব্দ ভূয়োভূয়ঃ পুনকজি এবং আমার উভয় পার্শের বন্ধন কিঞ্চিৎ শিথিল করিয়া এক প্রকার সুগন্ধি অনুলেপন লইয়। আমার গাত্রে মর্দন করিতেছে, ভাহাতে অবি-लाबरे कामात गाउँ हरेए मरे मकन् वान-यून-বেদনা এক কালে দূর চুইয়া গেল। একে তা-হাদের খাদ্য ও প্রেয় বস্তুর ভোজন ও পানে उৎकानीन चामात वर्शातास्त्र बाह्य ताथ रहेशाहिल, जाराद्ध चारात जाम्म (यमरमानभाष ভাৰার আরো আভিনয় বোধ হওয়াতে আৰি অবিকৰেই নিদ্যভিত্ত হইয়া পড়িলামা পরে জানা भाग चार पार पार विम् के दिलाय; चान्तरी है वा कि ? अमनश्र इहेर्फ शास्त्र, ति रहेफ हाकाकात कान देवका जामाह भागाविद्धातिक भागीद्व किन् बाशक जैनायत माजा मिनादेश रिका वाकिएनक।

ताथ इहेट एहं, छेक बार्ण इन शाखित शाख चामारक जूम महान पिथियोगां जाहां जा जा ताक मगोर्ण कियात मर्गाप प्रमः जाहार ज ताका चामार्ग शित्र हु हु हो। ग जा मखरण यित्र हो चामारक जाम्म यक्षा ताथिर मन इ करतमः हु हार हु जाहां ता तक नीर्याण चामारक निम्न यहां स्म क्षा करत, शाख जाहां चामारक निम्न वहां से स्म करत, शाख जाहां चामारक शाखिर जाहां से ममरें नामायिथ चक्र खाका शाखिर चाराः कर चामारक ताक थानीर चहें सामान निमित्र चाराः कर चामारक ताक थानीर चहें सा याहे या ताल करत।

এতাদৃশ দৃঢ় প্রতিজ্ঞা অতি সাহসিক ቄ चार्शिश विलिए इस्टिक, প্रक्रीं इस्टिक, य তৎকালে ইউরোপে কোন রাজপুঞ আমার जूना हरेए भारतन नाहै। तम याका हडेक अ वर्ष वर्षमा ७ वर्षातात कार्या करा इन्द्राहित विधि हर्स, (कनन। के जकन (नाटकता आभारक নিদ্যুবস্থায় শেল ও বাণদারা বিদ্ধুকরিয়া শা-রিয়া কেলিতে চেটা করিয়াছিল, ভদেষ্টনের বে-पना প্रথমতঃ উপলব্ধি হইবামাত্র আমার নিদ্যা ভঙ্গও হইয়াছিল; অধিকন্ত ভাহাতে আমার ক্রোধ ও বল এত বৃদ্ধি করিতে পারিত, যে व्यानि उपवन्यतम् वनाशास्त्रहे सह मकल दक्षन एएन कतिए পात्रिजाम, जारा रहेटल जारात्रा কোন ক্রমেই আর আমার অনিষ্ঠ করিতে পা-तिष्ठ मा, সুভताः **चामात म्या शाहे** वात् ७ छोहा-দের আর কোন আশা থাকিত না।

बहे नकन लाक भनित विष्णा निकास भारत मर्भी, बदः मुश्रितम निका-नहां ममारोत छेट-नाह क नाहारक। निक्यामि नारक वर्शातानांक त्ररुपत्र। बहे बाकात कृष श्रक्ति काती र भाराव वर्षका मानिका सन्। महनक हर्ष्याशिक निकि

নানাবিধ শকটাকার যন্ত্র প্রস্তুত করা আছে। এই क्षाका नईमा भाव अञ्चित वम मस्या वे २ नःग्रा-মের যোগ্য পোত নির্মাণ করান, তন্মধ্যে কোন ২ খানা উদ্ধৃ সভ্যায় নয় কৃট বা ছয় হাত লম্বাভ इन्हेंग थारक, श्रञ्ज इ**न्टल (म नकल के यञ्ज** निशा সমৃদু পর্যান্ত ৩া৪ শত গজ ভূমি টানিয়া আনা যায়। ঐ বহন যন্ত্র নির্মাণ করিবার সময়ে ৫০০ শত সূত্রধর এবং কারিকর লাগিয়াছিল। ভাছা কেবল এক কাষ্টময় অবয়ব ভিন্ন আর কিছু মাত্র নহে, ভূমি ছাড়া তিন ইঞ্চ অবধি প্রায় উদ্বে সাত ফুট बश्चः ও दिखात्र চात्रि कृषे, बादिः भक्ति চক্তের উপরে চলে। ঐ যন্ত্র উপস্থিতি হইবামাত্র তাহা-(प्रत महा क्वांगहन धृमि चामात कर्वकृहत প्रविष्ठे । হইল. বোধ হয় তাহা আমার তথায় গৌছিবার চারি যন্টা পরে আসিতে **আরম্ভ হইয়া থাকিবেক**। আফিড পড়িয়াছিলাম, তাহা আমার সমান ২ স্তানে আনাত হইয়া স্থাপিত হইল,কিন্তু আমাকে 🖔 তুলিয়া এ যানে রাথ। ভাচাদের পক্ষে বিজ্ঞাভীয়া कठिन दर्गालात इहेशा छेठिल। अक २ कृष्टे लच्चा मिटल, नामिकाश जून मिटल यमन व्याध इस, এমন আশী জন লোক এই কাষ্য সাধিতে প্রস্তুত িতেমনি বোধ হওয়াতে আমাকে হাঁচিতে হইল, হুইয়া সূত্লির মত শক্ত রুডভুতে বড়িশা- তৎশব্দ শুবণে তা**হার। কৈ কোথায় পলায়**ন কৃতি ভাক বাঁগালা কারিকরকে দিয়া আমার গলা। করিল ভাষার কিছুই ছির করিতে পারি না। এত হাত পাদ শরীর বিশিষ্ট্রতেপ বাঁধাইল। পরে হঠাৎ জাগরিত হ**ইবার কারণ আমি তিন সম্বাহ** টালিতে নিযুক হইয়া ইতস্ততঃ অনেক ২ কপি-কলে দানা বাধিয়া অবিশাতে ভিন ঘণ্টা পরি-कहिए प्रवाद कालीन छाहाँ कि कि निमुख-

क्तिना वाथ हरा. जाहाटक जायाटक वक्षन कतिन বার সময়ে সুযুগু করিয়া রঙ্থিয়াছিলা অমস্তর आय नार्क ठज्छेत्र ज्ञानी छैक, अक्क शरमत नाउ রাজকীয় খোটক আনিক্সা ঐ **শকটে** যোজনা পূৰ্বক রাজধানীর অভিমুখে আমাকে টানিয়া नहेशा शिला। পूर्विहे वला निशास्त्र, औ द्वामक-हैट ब्राज्यामी अक शाम क्लाम शय मृत्र।

আমরা রাজধানীর অভিমুখে চলিতে আরম্ভ করিবার ৪ চারি ঘণ্টা পরে এক মত্যন্ত হাস্য জনক আক্ষিত ঘটনায় আমার নিদ্যু ভঙ্গ হয়। যৎকালান রাজধানীতে উত্তীর্ণ হই, তথ্য মিদ্রিতা-বস্থায় আমাকে কেমন দেখায় এই কৃতৃহল দেখি-বার জন্য তজ্ঞপাকারের দুই তিন জন যুবক লোক আসিয়া ঐ শক্ট যন্ত্ৰ দাঁড় করাইয়া ভাহাতে বহিয়া উঠিতে এবং ক্রমে ২ আমার মুখের দিকে চলিয়া আসিতুত লাগিল। তন্ধাধ্যে রক্ষক পদা-ভিষিক্ত এক ব্যক্তি আপন হতের শূলালের ধা-রাল অগুভাগ আমার নাদিকারজ্বে প্রবিষ্ট করিয়া নয় শাভ বলবান লোক ঐ দড়ি ধরিয়া আমাকে পরে জানিতে পারি**লাম**া ক্রাম্ভার **শব্**স হই+ वात किছू व्यवनिष्ठि शामित ३ कामता उथारहेट श्वाम. अवर ब्राजिकारल बाबाइ पूरे पार्स भार শুনে কিলা করিয়া আমাকে সেই যাব্রে তুলিয়া শত রক্ষক আর্থেক লোক ছাতে মনালা এ অপ-मद्भारत ज्यार नामारक वाधिया किल्ला । अ दार्घ रुख धमुद्दीश नरेका नाइक निका नाहिका ममछ विषय ভाषाता शदत कामारक कानावृद्धा- (काशायुक्त यारे, अहे कार्य को किएक कार्यका। ছিল: ইতিপূর্বে আমাকে সেই পের দুব্য পান পর দিন প্রাভঃকালে সুর্যোগর কইলে আমরা शूनवीत छनिए भाषा कतिमास । अभेदत्र , केव नक कान देवध निर्मुष्ठ कात्रशानिशा थानिरमुक्, । उन्नाइहर्ष्ठ अहार निमा अब मूट्या इन्ना किंद्र केदार्न হইতে দুই প্রহর অতীত হইল। তত্ত্তা সমুটি সভাগণে পরিতৃত হইষা আমাদিগকৈ দেখিতে বাহিরে আইলোন, কিন্তু আমার শরীরে আরো-হণ করিয়া পাছে তাঁহার দৈহিক কোন শান্তির ব্যাঘাত ক্ষমে একারণ তাঁহার প্রধান ২ কর্ম-চারিরা ব্যস্ত হইতে লাগিল।

বেখানে আমাকে বছিবার শকট যন্ত্র স্থাতি ।

ছিল, তথায় একটা প্রাচীন মন্দির ছিল, রাজ্যের নর্বাপেকায় সেই টা অতি বৃহৎ; কয়েক বৎসর পূবে তথায় একটা আকম্মিক হত্যা হওয়াতে তাহ। অপবিত্র রূপে গণ্য হইয়াছিল। প্রকাবর্গের আগুহানুসারে ইহা এক অশুদ্ধ পদার্থের নিদর্শন স্থল স্বরূপে পরিগণিত; সূত্রাং তথাহইতে অলঙ্কার ও বহু মূল্য দূব্য সামগ্রী স্থানান্তর নীত হইয়াছিল, কেবল সেই মন্দিরটি মাত্র সামান্য ব্যবহারেই নিযুক্ত ছিল।

কল্পানা খির হইয়াছিল। ইহার উত্তরদিকের প্রনাল ছার হাা০ হাত উচ্চ, ও প্রস্থ পরিমাণে প্রায়

১০ হাত, তাহা দিয়া আমি অনায়াদে সক্ষৃতিত

ইইয়া প্রবেশিতে পারিতাম। ছারের দুই পাথে
ভূমি ছাড়া ছয় অজুলি উদ্বে দুই কুদু গবাকের
বামদিকের গবাক দিয়া প্রায় শতাব্ধি সূক্ষ হ
কুদু শৃত্তথলে আমার বাম পাদ বাঁথিয়া ৩৬ টা
ভালা বন্ধ করিয়া রাথিয়াছিল। এই মন্দিরের বিপরীত দিগে প্রধান রাজপথের পাথে

১২০০ হাত দুরে এক উচ্চ গুরুক ছিল, অন্ততঃ
ভাহার উচ্চভা প্রায় ৩০ ইন্ত ইবৈক। দৃষ্টিগোচর হয় লাই, কিন্ত পরে উনিতে পাইলাক, ভ্রত্য

সমৃতি নিক্ষ ব্যায় ক্ষাণ্ডক প্রথম করিয়ার
সালনে এ গুরুকের উপরি আর্যেক্ত করিয়ার
সালনে এ গুরুকের উপরি আর্যান্ত করিয়ারিসালনে এ গুরুকের উপরি আর্যান্ত করিয়ারিসালনে এ গুরুকের উপরি আর্যান্ত করিয়ারি-

লেন। এতদ্যতীত আমার উপস্থানের বার্গ্র শ্বণমাত্র অতিমাত্র ব্যুগুতা সহকারে সেই নগর নিবাসী এক লক্ষ প্রজা আমাকে দেখিবার মান-নেই বাহিরে আসিয়াছিল। বিশেষতঃ সাম্থা-মতা সহকারে আমাকে রক্ষা করিবার জন্য বোব হয় অনুন্দ দশ সহসুলোক নিযুক্ত হইয়া থাকি-বেক, এবং উহারা সোপান সহযোগে আমার দেহের উপরি আরোহণ করিত; কিন্তু অবিলধেই ভাহাদিগকে এতাদৃশ মরণ যাতনা দানে নিরত করিবার মানসে ঘোষণা বাহির হইয়াছিল।

কর্মকারেরা আমাকে তাদৃশ বন্ধন চ্ছেদনে
অসমর্থ বৃঝিয়া ত্রায় সে দকল রজ্জু কাটিয়া
কেলিল। তাহাতে তথন আমি এতাদৃশ বিষয় ও
অসুস্থভাবে গাজোপান করিয়াছিলাম, যে জন্মাবচ্ছিয়ে আমার তেমনটি আর কথন হয় নাই।
গাজোপান পুরয়নর আমাকে বেড়াইতে দেখিয়া
উপস্থিত প্রজাবর্গের যে রূপ কোলাহল ও চমৎ
কার বোধ হইয়াছিল, তাহা বচনাতীত। বে
শৃত্থেলে আমার বাম পাদ বন্ধ ছিল, তাহা প্রায়
চারি হাত লম্বা সুতরাং তাহাতে যে আমি
অর্জান্দ্রালয়ে অগু পশ্চাৎ গমনাগমন করিতে
পারিতাম এমৎ মহে, কিছু সম্কুচিত হইয়া অনায়ানে মন্দির মধ্যে প্রবেশ ও তাহার মধ্যে বিস্তৃত
শরীরে শয়ন করিতেও সমর্থ হইয়াছিলাম।

हेन्डि अयमाधात्र ममाथा 📑 हा. मा. वि.

मनीज-गर्भ।

हत हम माहे, किन्न गाह समिट शाहेबान, फ्वज। कि मूहे श्रकात, कर्क्छ व मूक्छि। द्व नमाहे निका नक्षा कार्यक श्रधाम व/स्कित्व नमाहित्र हित्र के कार्यक कार



উৎপন্ন ধুনি। অপর যে ধুনিদার। বস্তু নির্দেশিত, বা কোন ক্রিয়া বা অস্তর্ভাবাদি অর্থ বিজ্ঞাত হয়, তাহার নাম সুকৃতি; শাজে ঐ সুকৃতি ধুনিকে বর্ণাত্মক ধুনি বা ভাষা শকে বিধান করে।

অকৃতি ধুনি ষরের ও কালের অনিয়মে উৎপন্ন

হইলে "নার্থ" হয়, ও ষর ও কালের বিশেষ নিয়মে শব্দিত হইলে গীতবাদ্যাদিরতাপ পরিণত হইয়া সম্রাত উৎপন্ন করে। ঐ সুষরবিশিপ্ত অকৃতি
ধুনিতে মনোরঞ্জন হয় বলিয়া সন্ধাত শাস্তে তাহাকে
"নার্থ" শব্দে কহে। "দুম্ তানা নানা দেরে না"
এই কয়েকটি শব্দ এক-ষরে অনিয়মিতকাল-ব্যবধানে ক্রমশঃ দু—ম্—তা—না—না ইত্যাদি রূপে উচ্চারণ করিলে কোন সন্ধাত-রসের

ইদ্য় হয় না; পরস্ত মর ও কাল নিয়মের সাহায্যে তাহাই উত্তম সন্ধাত হইতে পারে। অতএব ষর ও কাল নিয়মই গীতের মূল, তডির
গীত সন্তবে না।

কণ্ঠহইতে যে ২ ষর নিগত হয় তাহার লক্ষণ বিবেচনা করিলে তাহাকে সাত প্রকারে বিভাগ করা যাইতে পারে। গীত-প্রসঙ্গে যে ষর আয়াস ব্যতাত অয়তে নিগত হয় প্রাধান্যার্থে তাহাকে "প্রথম ষর ", এবং তদপজুংদে " সূর " ও কদাপি "প্রথম " শব্দে বলা যায়। ময়ুর বা গর্দ্ধভের সহিত ঐ ষরের তুলনা হইয়া থাকে। ইহা "ষড্জ" নামেও বিখ্যাত আছে। তদনস্তর দিতীয় ষর; তাহা ব্য-ধ্নির তুল্য প্রযুক্ত "ধ্যয়ত" নামে বিখ্যাত। ভেড বা চাতক রবের সহিতও তাহার তুলনা হইয়া থাকে। তৃত্তির নাম "গা-কার" তাহা ধেনু বা অলার ধ্নি সমূল। চতুর্থের নাম "বাংশা, এবং কোকিল বা জোক মর তাহার তুলনা ছাল। তদনস্তর কুসুন্ধ-কালের কোকল-কাকলী-তুল্য যে মর ভাহার নাম

"পঞ্চন"। যা ষর বার অশ্ব-মনের জুলা, এবং "ধৈবত" নামে বিখ্যাত। সপ্তম কুঞ্জর-খুনি সদৃশ, ও "নিষাদ" নামে খ্যাত। এই সপ্ত হরের সমষ্টি নাম "স্বরগুমে"। কথিত আছে যে সজীত-শাস্ত্র-বিশারদ সোমেশ্বর নামা কোন গ-শুত উক্ত সপ্তম্বরের নিয়ম নিরূপণ করেন।

গভী-ও সানুনাসিক শব্দে এই ষ্রগ্রাম বিশুণা কৃত হয়, তদ্যথা "ষড়জ গ্রাম", "মধ্যম গ্রাম" এবং "গালার গ্রাম"। মনুষ্যে ঐ সমস্ত তিন গ্রাম উচ্চারণ করিতে পারে না। জ্রীলোকের কঠে মধ্যম ও গালার গ্রাম, ও পুরুষের কঠে ষড়জ ও মধ্যম গ্রাম উচ্চারিত হইয়া থাকে। এই ষর-গ্রামের সুবোধার্থে বাণা বা সেতার যদ্রের আলোচনা আবশ্যক। শেষোক্ত যদ্রের দণ্ডে শোড়য থানি "পরদা" নামে বিখ্যাত ধাতুময় শলাকা থাকে, তাহার মধ্যস্থ সপ্ত থানিহইতে মধ্য-গ্রামের গ্রামের প্রথম পঞ্চ ষর, ও উদ্বের চারি খানিতে বড়জ-প্রামের শেষ চারি ষর আলাপিত হইয়া থাকে।

এই পরদা-সকল যে ২ তানে নিবদ্ধ হয় তাহার মধ্যগত হানে অপর পরদা বাদ্মিয়া ধুনি
করিলে উল্লেখিত নগু-ম্বর ব্যতীত অন্য ম্বর
উৎপর হইবে, ইহা অবশ্যই সম্ভবে। ঐ সকল
ম্বর প্রধান দণ্ড ম্বরের অধান; অতএব কাপক
বর্ণনায় ভাহা ম্বরের জা নামে বিশ্লাত হয়। যড়জ্ল
ও থাবভ পরদার মধ্যবর্ত্তি হানে অপর চারিটি
পরদা বাদ্মিয়া চারিটি অধান ম্বরের উৎপাদন
করিয়া থাকে, এই হেতুক শাজে যড়জের
চারি জীর নির্দেশ আছে। এই কাপে থাবভের তিন জী, গান্ধারের দুই, মধ্যমের চারি,
পঞ্চনের চারি, বৈবতের তিন, এবং নিবাদের

ক্ষিত গায়ক ভিন্ন অনের অনায়াদে বোধগমা ক্ষেপ কর। অন্বিশ্যক।

चह-गृत्भित व्यावाशित य जात्म अक साहतु विज्ञास ध्रेश जवशत सर्तृत व्यक्ति दश, जाहांत ব্রের আরোধ অবরোচে যে ব্রে রাগনিপার 🖹 नृष्यंना मध्यात इरेश थाटक, ও जिन गुरिम ্রভার সংখ্যা একবিংশতি নিরূপিত হয় 🔃

स्टाइल्टरशॅरेड **পश्चिमार्डिट् क्रथक-धिरः; वि-**ः শেবতঃ বে দকল আচারেরো ধর্মগুন্থও ভূরি ২ ক্রপক-বন্যুন পারিপূর্ণ করিয়াছেন, তাহারা যে प्रामान्त्रपान-मर्गाठ-भाष्ट्राह महीत्र क्रिकान-कार्द्र निक्षिक कतिरनन, हेहारक जाम्हर्य। कि? মেট বর্ণনা সকল অভ্যন্ত মনৈছিল; ভদ্যারা: এতদেশীয় জনগণে মনঃ এতদৃশ মুখ্য আছে, र्य जोकांत्र याधार्था अधूना अनगरनत मरन श्रकः हित कहाई कडिन। शूर्टि डेक ब्हैश्लाइ, बत-

্ ল'ৰ'ৰ'বি, পুনাল মধ্

का बाहिती, रामा, जन्मवर्ता, बदान ही, इन्हर्मा, इंडिका, ऋषु।। रकारा, रोजदर्गा, अभविषा, भाक्षी, माक्षमी, वृद्धी, वृक्षा। সলাপন্য, জালোপনী, লেডী, তবর্র রোটিনী, রমেয়া, জেন-421 Bq:

र्ग भुक्तमानिद्धत् मात्र गर्थ , 🖰

বড়ক পু'মের মুক্তনা কলিতা, মধামা, চিকা, হোছিনী, মঙস্কা, व्यक्तिती, वर्ण्यक्षाः यकाय त्यारम्ब युक्तन्त **शक्ष्या, य्यमती, यूम्**न मंदा, यहा, व हा, वनामही, छादूत। बाक्षात बुद्धात मुक्त्वा ह्योपूरी, ्राक्षी, रेश्वर्य, खमता, मुद्रा, नागवडी, दिलामा।

पूरे * जो निकाणिक हम । এই प्राविश्मिक व्यथीन | नकन शूक्यकाल ও छनीय व्यक्ति-नकन जीकाल चरের সমষ্টির নাম "অভি "। কদাপি ইহা- বিণিত হয়। অপর সেই জাপুক্ষদিগের অপ-मिशरक " वर्ष-बह " नरक्छ कहा यात्र। शूम- एड/इड निर्फ्न चारह; डाहाहा "हाम नारम ভেদে এই শ্রুতির নিয়ম অন্যথা হইয়া থাকে। বিখ্যাত। বড্ছের পুঞ ভৈরব রাগ, ঋষভের মধ্যম-গ্রামে পঞ্চমের ংশ্ব শ্রুতি ধৈবতের পুঞ্র মালকৌশ, গান্ধারের পুঞ্র হিন্দোল, মধ্য-অধীন হয়: পরস্ত তাহার বিশেষ লক্ষণ সুশি- । মের পুঞা দীপক রাগ, পঞ্চমের পুঞা মেঘ রাগ, এবং ধৈবতের পুঞ জ্রাগ, কেবল নিষাদ ষ্টানে না। অতএব, তদ্বিষয়ের বিবরণে কাল- । নিঃসন্তান। অপর ঐ রাগ সকলের জীপুঞাদি পরিবারের প্রচুর বর্ণন আছে। ফলতঃ, যে সকল मझी विक धर्माकान्त ও এक श्रधान मह-मखनीत অনুযায়ী তাহারা সেই প্রবাদের পরিবার নামে নাত স্বস্ৰা। কোন ২ নজাত-শাল্তানুসারে মৃচ্ছন। বিখ্যাত হয়: ও পরস্পার সমধর্মতার নৈকট্যা-नूगात हो, शूब, शूबवधू, महहतो अङ्गि नात्म হয় তাহাকেও মুচ্ছন। শক্তে কহে। সপ্ত-ষ্ত্রে নিদিও হয়। এই সমধর্মতা, অর্থাৎ কোন্হ রাগ কাহার সহিত কোন্হ লকণে জুলা তাহা, নিরূপণ করা মত্যস্ত কঠিন, এবং সনেক রাগ সম্বলে ভন্নিৰূপণ কেবল কম্পনা মাত্ৰ; সুভ্ৰাং **এবিষয়ে नकन गुष्ठकात्रित मञ** क्षेत्रा **रुष्टेट** शास्त्र না। অঙ্ক-বিদ্যা-প্রণেতা শুভঙ্কর ছয় রাগের ছত্রিশ রাগিণা নির্দেশ করিরাছেন; কিন্তু হনু-মান্-ভরতাদি অপর প্রাচীন-গুম্কারেরা তাগার খন্যথায় কোন রাগে**র পাচ ছা,** কোন রাগের **ছয়, কোন রাগের मध বা चंडे जो বর্ণন করেন।** সোমেশ্বর ভৈরবরাগের পাঁচ জ্রা নির্দেশ করি<u>ল</u> য়াছেন, অথচ কুৱাপি ভাষার সাত জীরও উক্তি चाह्य चलत वे बोहिएतत्र माह्यत्र अनिकास नाहै। टेडत्वी चिडिश्रमिका द्राणिनी; चरमक शुक्कारतत মতে ও নাম বু/ৎপত্তিতে ইহা 🥦 🕏 ভৈরবের जो राक चार्छ; चथठ भुद्राखन-मरक देश मानकोत्मत को विनया वर्षिक स्टेशार्टा चन-तालत कार्य क्रांभिनी ७ चनुताभाषित विवदम अह क्ल जिल्ला पृष्ठे रहा।

গুন্থকারের। এই রাগ-সকলকে তিন বর্গে বি-ভাগ করেন। প্রথম, যে সকল রাগের আলাপনে সমস্ত ভারের উচ্চারণ হয়, ভাছাদিগের নাম "সম্পূণ" রাগ; দিভায়, যে সকল রাগের আ-লাপনে ছয় থানি ভার উচ্চারিত হয়, তাহার নাম "যাড়ব"; তৃতীয়, ও যে সকল রাগে পঞ্চ য়র ধুনিত হয়. ভাইার নাম "উড়ব"। এই রাগ-সমূহের ধ্যান ও আলাপনের কাল নির্দ্দিন্ত আছে, কিন্তু প্রস্তাব-বাহুল্ল্য হইবার ভায়ে এই স্থলে তাহার উল্লেখ করিতে স্পৃহা হইতেছে না।

मकोरञ्ज मृत यह ७४० कार्लंड नियम। जन्मर्थः স্বরের সূল বিবরণ উক্ত হুইল, এই ক্ষণে কাল লিয়নের লক্ষ্ণ বক্তব্য। ভানাদেরে ইত্যাদি প্রদন্ত मृष्टीरखं श्राप्तिक इरेशाह, य कान नियम ना थाकित्न कराणि मञ्चीठ द्रामद উत्नुक इइट्ड পারে পা। দ্বর শ্রুতি মৃচ্ছনার আলাপন অতি দুচাৰু ৰূপে হইলেও সন্ধীত রুদের সার্থকতার নিমিত্ত কাল-নিয়মের অত্যন্ত প্রয়োজন রাথে। বড়জ ঋষভ গান্ধার মধ্যমাদির প্রত্যেকের উচ্চা-রণে তুল্য কাল আবশ্যক; তদন্যথায় রসের হানি হয়। এই কাল নিয়মের নাম "তাল"। ঐ তালের মর্মা এই যে নৃত্য-সম্বন্ধে পাদ বি-(कण, वामा-अयरक नक (वान) अ शोज-अश्रक বাক্য, নিদিষ্ট-কালে নিদিষ্ট-নঙ্খ্যায় প্রয়োজিত **रुहेरवक। এक मूर्ह्ए यम्प्रिंग हा**बिंहि वाक्र উচ্চারিত হয়, তৎপর মুহুর্ত্তেও সেই চারিটি বা তদ্বিত্তণ বা তদকেক অথবা ভচ্চতুৰ্থাংশ বাৰু উচ্চারিত হওয়া আবশ্যক; কদাপি ভরিয়মের - जमाथा रहेतारे जातात रानि रशा वाहा । जोरजत जानमिनदम्ब नाम "लग्न"; बन्दः (य इति विदास क्ता यात्र छांदात माम "माम"। बहे मान पूरे थकात, भीरकत वर्षा । या वर्षि काषा वात,

গুস্থকারের। এই রাগ-সকলকে তিন বর্গে বি- তাছার নাম "অস্তর্গত মান" বা "সম"; ও গে করেন। প্রথম, যে সকল রাগের আলাপনে পদ সম্পূর্ণ হইলে যে বিরাম হয়, তাছার নাম তে স্বরের উচ্চারণ হয়, তাছাদিগের নাম "পূর্ণ মান"।

পূর্বকালে ভারতবর্ষীয় সক্লীতবেস্তারা শ্বর-মকল

থানায়ানে লিপিবদ্ধ করিয়া রাথিতেন; কিন্তু ইদানীস্তনের গায়কেরা সক্লীত বিদ্যার সাধন না করিয়া কেবল স্বর-সাধন করেন, এই প্রযুক্ত সে
বিদ্যার একেবারে লোপ হইয়াছে। এই ক্লেণ
কাগজে সুর লিখিবার উল্লেখ করিলেও উপহাসাম্পদ হইতে হয়; অথচ ইউরোপ খণ্ডে সর্বদাই এক দেশের নূতন স্বর-বিন্যাস (সুর) লিপিবদ্ধ হইয়া অন্য দেশে প্রেরিত হইতেছে; এবং
এ লিপি-দৃষ্টে স্বর-সাধন করিলে কোন মতে
খাদিম গায়কের স্বর হইতে পৃথক্ হয় না।
এতদেশে বিদ্যার পুনরাবিভাবে ভরসা করি এই
লপ্ত বিদ্যারও উদ্ধার হইবেক।

शुप्तत्र विवत्रशः

ক্ষা কি থকা কি প্রকারে নদী ও কুগু রুপে পরিণত হয়, তাহার বিবরণ পুর্রেই উক্ষা হইয়াছে। ঐ উৎস-জলসমূত কুগু অতি কিট্টা কুছ হইলে "হুদ" নামে বিখ্যাত হয়। দেই হুদ চারি প্রকার; প্রথম যাহার জল সোভো-রপে বহির্নত না হয়, ও যাহাতে সোভা উৎপন্ন হল তৃতীয়, যে হুদ সোভঃ উৎপাদন করে, ও সোভো-জল প্রাপ্ত হয়। চতুর্গ, যাহাতে অন্যত্রের সোভো-জল আ-সিয়া নিপতিত হয়, অর্থচ তাহাহইতে কোন সোভা; নির্নত হয় না।

প্রথম প্রকার যুদ বৃহৎ কৃত মাত্র; কোন প্রশান্তর নিমৃ-হানে উৎস জল সঙ্গত হইলেই তাহার উৎপত্তি হব। ঐ উৎস-জল নিমু হান পরিপূর্ণ করত উহত ইইলি প্রোতের সৃষ্টি হয়, এবং ভাগাই জিতীয় প্রকার

জল দেখিলুকে প্ৰ-নলী দিয়া লাগেলালিক মহাবমুদুে অপ- চরণ করিয়া থাকে। मुक करा चार्यभार-धरावद छेखवाधनम् रेयकान कुमार् 95 22 3 1

চহুত প্রকার হাদ অভি আশ্চর্যা, তাহাতে প্রকাল হ ন্দ্ৰীৱ ছল ভাৰ্তিশা পাছে, অখ্যত ভাহাত্তীতে নিৰ্মাণ কোন त्रातः भूगक राग मा। सातान अवश काक्रीय हर এই প্রকার কুদের এক দ্**টোন্ত করা, উরোল**, বহুগা প্রভাষ ক্ষেত্রী প্রকাপ্ত নদীয় ছাপে প্রভুত জল জাসিয়া মিল্ড ফার্যায় সুদে নিপতিত হনতেছে, এবপ ঐ ভুদহনীকে ৬০০)১ নিধমনের কোন পথ নাই, অথচ ভদ্ধারা ঐ চুদের এন্ত্রত সার না চল্টা সর্প জনশং ভারার মুাস্ট ররাহার । তা আশ্রুটা স্থাপারের কারণ নিরূপণার্থে ৪ ১৯৪ ৪৬ ৪ বস একে করিবাছেন। আমাদের বোধে লোকে ১০ জনত লোক প্রেমি কারেণ্ড কল্পারাই নদ্যা<mark>গত</mark>্ 1 24 11 x 12 3 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1

কার্যার ৮ গার্থার সুমার কল লবগান্ত, এবং তান কার জান আন্দ্রনামের প্রামান করে। প্রভাতি কর্মতেতে (१) क्ष्मिक्षण (१०० नः १००० काल काल महत्त्वस वक व्यापनः ভিলা, ফলালা পুষ্ণালু ও কাল্পাল ভূষের **মধাবলী ভূমি** ভাপেনিফ এল ৬৫১, ১লবান্নিক চুক আনী**ভ মৃত্রিকাপ্রচরে** राका देवशव वर्गाप्तः उपारणात्मक भूत्य वाजान ও আশ্বাস বুধ ওক্সালন্ত একত বিলিড থাকিত। মহা-सम्बद्धार ७०४४(म मिन्सीम्ड किन्।

১৬ বিজ্ঞানি এক সেনে ১ ১৯০০ **পদ্ধ এটা** পুন-ए में अन्तर्भ करेता थाएक स्तुन्तिम क्रम बजेगात श्राम ११८५ किए उस्तानात-राधिकाताका काला १ श्रामीस**ामक** বলের উৎযের লাক্ষর বশস্ত গ্রেছর লোপোপাত্তি মন্ত্রা-মান মালারসা দেখের স্কিমিট্র গুরু এই পুরুরে উৎ**যের** Pg 3/5年 知701 > 型程 3月 1

পেৰিত পুদ নিৰাত সময়েও কতাৰ ভা**ন্দেলিত হয়।** करिनश-१५ १९७१ अमध-शरमत अही श्रुकात स्थाव। देशांत কারে। অস্যাপত নিশ্চিত হর নাই। রোধ হয় ভূমতে 🙀 रेपर राश्हें कहें आस्मानन डेशिक्ट करता।

হুদ ; ঐ হিদের নিকটনমি কেনে উচ্চ স্থানহইতে : কোন ং হুদে দীপবৎ ভূমুখণ্ড বাহামানহইতে দৃষ্ট হয ; আগত কোন প্রেতঃ তাহ্যতে নিপতিত হউলে তৃতীয় ভূতজ্বেভার। অনুমান করিয়াছেন যে বোদম্ভিকাৰৎ প্রকার মূদ প্রস্তুর মহ। উত্তর-আমরিকার এবস্কুকার, এক প্রকার লঘুমৃত্তিকাথও ভটহইতে বিক্ষির হইয়া অতি বুর্তি ভূদ জানক আলে: ভাছাতে অনেক নদী স্থানাপরি ভাসিয়া থাকে। প্রসিয়া-দেশে গর্ভ-ছুদে এক আদিনত নিগতিক কয়, এবং অনশেষে তৎসমুদায়ের বাহ্যমান দ্বীপ আছে, যাহাতে অনায়াদে শতাধিক পেনু

বায়ুর বিবরণ।

শ্লিস্ক্রিম্ন ক্রিমার চতুদিরে ৪০ জ্যোতিয়া ক্রোশ অন্তর পর্যান্ত সক্ষত্র বায়ুতে পরিপূর্ণ; ঐ 🌋 বাষ্ঠ গতিতে জগতির অনেক ইন্ট সা-🏸 💥 💥 🍇 बिठ स्टेशा थात्म। (राम डेसारक "भावक" अधीय शतिकानी मत्य निधान करत, कारन मूर्शस्त्रश क्ष्मित मृत्रो कर्नुभार्श वार्ष्ट्रे अक माञ् छेभाग्र।

যে নিয়মে তরল প্রাথের গাতি নিজার হইয়া থাকে সায়ুও দেই নিয়মের অধীন; ফলতঃ বায় এক প্রকার তরল পদার্থ, মুভরাপ সর্ভা প্রকারের ভাষাদের গ্রন্থ ইহাতে বস্তমান আছে; এই মাত্র বিশেষ যে তরল शनार्णत अनुताकमन अर्थकाक्छ पृष्ट विनया लाहा অনারাদে স্ফীত হল না; বালুর অপ্রবাকনন শক্তি অত্যন্ত বহু এই প্ৰযুক্ত বায়ু আনায়াদেই ফুঠিত হ্ইতে

भूत्यहें हेक हरेग़ाफ उतन भागार्थन अक श्रमान পর্ম এটা যে ভাষ্টে সলার সমোক থাকে, কদাপি তাহার কোন অংশ উচ্চ ও অপরাংশ নিমু হয় नाः (काम कात्रवारवादः मध्याष्ठजात शानि शहेला ए५-ऋगार के भागार्थ आत्मानित इहेगा महमाक्रजा-त्रकात (उद्यो करत्।

অপর এক নিয়ম এই দে বস্তু মাতেই উফতায় महोड अव भीट भक्तिड इस ; कुल सम्र मकल भगार्थ এট নিয়মের অধীন; কেছ্ট্টিছাহটতে ভতক নছে , भोडकारन य मोइ-अन्छ हिक अक इन्ह मोर्च शास्क গ্ৰাম্মে তাহা এক হস্তহউত্তে কিঞিৎ অধিক দীৰ্ঘ হয়; অপর তাহা অগ্নিতে উৎতপ্ত করিলে তদপেক্ষায় আরও দীঘ হয়। স্বৰ্ণ রক্ত প্রস্তুরাদি অপার সকল পদার্থত এই প্রকার। দৃঢ় পদার্থাপেক্ষায় তরল পদার্থ উফ্ডায় कंषिक वृक्ष रयः, बायू उत्तन नानार्थः मध्या नान्धीरनाक्ष्याह अधिक मृत्य, मृष्ट्रा॰ कारा श्रोत्य वकाह महोस रहा।

বাহু ৰভাৰতঃ সর্বাত্ত বিহুতারে বাকে, পারস্ত কোন এক প্রদেশে সূর্ব্ব্যান্তাপ অসিক হউলে, বা দাবাৰল রা অন্য কোন কারণে বাযু উত্তও হউলে, পুর্ব্বোক্ত বিভার নিয়েনা- নুসারে তাঁহা তৎজ্ঞাৎ স্কৃতি ও অন্য বাযুর অপেক্ষ্পাই লয় হয়। এই লঘু বাযুর ধর্ম উর্দ্ধে গমন; এবং ঐ বায়ু যথন উর্দ্ধে গমন করিতে থাকে তৎকালে প্রথমোক্ত নিয়মপ্রযুক্ত তাহার অপার দিক্ষ্থ শীতল স্কুল বায়ু তৎশারিত্যক্ত-স্থান প্রণার্থে তদিলে ধাবমান হয়; তথা এই দুই নিয়মপ্রযুক্তই বিরু বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে; মণ্দ-বায়ু, ঘূর্লি বায়ু, কড় প্রভৃতি সকলই ঐ কারণহইতে উৎপন্ন হয়।

যে বালু প্রভিষ্টার অর্জ-কোশ-মাত্র ভূমণ করে ভাহা প্রায়ঃ সহ্দা আমাদিনের বোধনমা হয় না; যে বালু শিকটার ২ না ২।।০ কোশ স্থান ভূমণ করে ভাহা "মন্দ-বালু" নামে থাাত। চত্রলু একহন্তম্বানে ভাহা যে বেনে আহত হয়, এক চটাকের যে ভার ভাহা তদন্ত্রশ হলব। প্রতি ঘটার যে বায়ু ৫। ৭ কোশ ভূমণ করে ভাহাকে "ভেজো-নারু" শব্দে কহা মার; ভাহা বিশেষ ভেজোবন্ত হউলে প্রতি ঘটার ২০। ১৫ কোশ স্থান অণুগমন করে। ভাহার বেনের পরিমাণ প্রতিষ্ঠার ২৫। ৩০ কোশ স্থান ভূমণ করে, এবং ভাহার বেনের পরিমাণ প্রতিষ্ঠার ২৫। ৩০ কোশ স্থান ভূমণ করে, এবং ভাহার বেনের পরিমাণ ১০। ১২ দের; পরস্ত দকল আড় সমরেনে হয় না, এই প্রযুক্ত ভৎসম্বন্ধে কোন লাভ্যারণ নিয়ম নিরপণ করে। অসাধ্যা। যাহা উক্ত ইউল ভাহা সামান্য কড় পক্ষেপ্ত স্কুল আনুমান মাত্র।

পৃথিবীর সুনেক ও কুমেক কেন্দ্র অতান্ত শীতল, তথাছইতে যত নিরক্ষ-বৃত্তের নিকট অগ্রুসর হওয়া যায় তত গ্রীয়ের বৃদ্ধি হয়, এই কারণ বশতা দুই কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুথে নিয়ত দুই বায়ু-প্রবাহ আলিতেছে; কদাপি-তাহার নিরুত্তি নাই। অপর নিরক্ষ-বৃত্তের নিকটহইতে যে উত্তপ্ত বায়ু উর্চ্ছে গমন করে তাহা কিয়দুর উল্চে উচিলে তথাকার শীতল বায়ুর সংস্কর্শে শীতল হইয়া কেন্দুহইতে আগত বায়ুর হান প্রথার্থে কেন্দুহিইতে আগত বায়ুর হান প্রথার্থে কেন্দুহিইতে আগত বায়ুর হান প্রথার্থে কেন্দুহিইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুথে আন্ধ্রীয়ের করিছে, আকালের উর্ভ্রেশে তল্প বায়ুপ্রবাহ কিয়ত ক্রেন্তে, আকালের উর্ভ্রেশে তলপ্ত বায়ুপ্রবাহ ক্রিয়ত ক্রেন্তের গমন করেছে। এই বায়ুপ্রবাহ ক্রেয়ত ক্রেয়াভিমুথে গমন করিতেছে। এই বায়ুপ্রবাহ ক্রেয়ত ক্রেয়াভিমুথে গমন করিতেছে। এই বায়ুপ্রবাহ ক্রেয়ত ক্রেয়াভিমুথে গমন করিতেছে। এই বায়ুপ্রবাহ ক্রেয়াভ্রুইয়ের

ক্যাপি নিবৃত্তি নাই, এই প্রবুক্ত ডাহাকে "নিবত আছু" শবে কহা মাইতে পারে। এই নিয়ত-বায়র দে প্রবাহ মুমের কেন্দুহইতে আইলে ভাহার স্বাভাবিক গাঁও দক্ষি-ণাভিমুথ, ও যে প্রবাহ কুমেল-কেন্দ্রইন্তে আইনে ভাচরে গতি উত্তরাভিদুশ; কিন্তু প্রত্যক ভাহা প্রতীত হয় না; তদনাধায় ঐ বায়ু ঈশান কোণ ও অমি কোণছউতে আসিয়া থাকে; তাহার কারণ এই, পৃথিবী নিয়ত পুর্বাভিমৃথে অতাত্ত-ভয়ানক-বেণে প্রতি-ঘণ্টায় এক সহসু-ভ্যোতিষী-জোশ-ব্যাপ্ত স্থান ভুমণ করে; বায়ু অপ-ৰ্যাপ্ত অভ হটলেও এক ঘটায় শত বা এক শত পঁটিশ কোশের অধিক স্থান ভূমণ করিতে পারে না; অভএব উত্তর বা দক্ষিণ দিগ্ছইতে কড় আসিলেও পৃথিবীসমূত্ৰে ভাছার গতি ঞ্জু থাকিতে পারে না, এবং নিরক্ষ-বৃত্তের নিক্টছ মনুষাকে দৈট কড় ইশান বা অঘি কোণছইডে আগত বোধ হয়। পুরেজি নিয়ত-বাষুর বেগ কড়ের বেগছউতে অনেক লমু; মুত্রাও তাহা ইৰান ও অমি কোণাগত হইয়া থাকে। এই বাযুতে জাহাজ গমনাগমনের বিশেষ সাহায্য হয় বলিয়া নানিকেরা ইহাকে "বাণিজ্ঞা-বায়-" শব্দে কছে।

দূর্য্যোত্তাপে জল অপেক্ষায় স্থল অধিক উত্তও হয়, অতএর পৃথিবীর যে অংশে অধিক কুল আছে তাহা জলাধিকা অংশহইতে অধিক **উ**ফ থাকে। **দিভীয়**-প্রকরণে উক্ত হইয়াছে নিরক্ষ-বৃত্তের দক্ষিণাপেক্ষায় উত্তর-দিগে অধিক স্থল আছে। এই প্রযুক্ত নিরক্ষ-বৃত্তস্থ স্থান অত্যন্ত উফ না হ্**ট্য**় তাহার সাত অংশ **উত্ত**-রে, অতান্ত উফতা প্রতাক্ষ হয়। এই স্থানের উভয় পার্পে প্রায়ঃ পাঁচ অংশ স্থানের বায়ু উভগ্ত হইয়া खेर्चनमन करत, अव॰ औ सुद्धतु शूदगार्थ शूर्खाक वा-ণিল্য-বারু প্রবাহিত হয়; কিন্তু পৃথিনীর গতিতে ভাছার গতির বক্ততা ঘটিয়া, ঐ স্থানে তাহা প্রতাক হয় না। নিরক বৃত্তের উপরে দশ অংশহইতে ২৫ অংশ প্র-র্ঘান্ত পৃথ্যীর উত্তর-ভাগের বাণিঞা-বার্ প্রবাত হয়; 🦔 দক্ষিণ-ভাগের বাণিজ্য-বায়ু নিরক্ষ-বৃত্তের **উত্ত**ে ছিডার অংশহইতে দক্ষিণে ২৩ অংশ পর্যান্ত স্থানে প্রবাধ रश। এই पूरे वांबू-मधालक प्रधादिक शास बाकू छक्-गमन करत, किंद्र श्वियोत महिक्टि छादा धनावारम क्षानुक्ठ रह नाः सर्वता भागः निकां उत्तार रहः प्राप्ता र वर सारन जवाब वर देशा बाटक, और श्रमुक नावि- কেরা ইহাকে "নির্মাভ ও অদ্বির-বায়ু-মণ্ডল" পব্দে

পৃথিবীর সর্ভ্রত গদাপি খলময় ছইত তাহা হইলে বাণিজ্য-বায়ুও সঞ্জ সমান বোধ হটত; কিন্তু ভূভাগের উষ্ণতা ও প্রতের একঃ পুযুক্ত ভাষা ভূভাগে অনুভূত ভারত-সমূদের উত্তর, পশ্চিম ও পুর্বভাগ ভ্রিছার। বেষ্টিভ, বিশেষভঃ মহাপ্রাচীরস্বরূপ হিমালয়পর্কতে ভাহার অধিকাণ আরুত: উত্তরভাগের বাণিল্য-বায় मे প্রাচীর শন্তুন করিয়া আদিতে পারে না; সুতরাণ ভারত-সমূদ্রে ঐ বাণিজারায়ূর প্রচার নাই; তথার তৎপরিবর্ত্তে অপর একপ্রকার বায়ু বঙ্গিয়া থাকে; ভাষা প্রথম ছয় মানু अधिरकाण्डहें ए अभित इस मान वास्रकाण्डहें छ-বাত হয় বলিয়। "মৌদাম বায় " নামে থ্যাত। কার্তিক कावित रेठाव-शर्याह " आध्यय-बाधू " ও रेवनांश अविधि আখিন পর্যায় "বায়ব্য বায়ু" বহিয়া খাকে। সমৃদ্রে এই বায়ু অনুভ্র হ্মীবাব পূর্বেট্ ইহার ভূভাণে প্রচার अर् अपूक कार्यस्य भौतृत्व जातम् इहैवात ज्ञानकः भृत्य कान्यन-भारमहे जामता भनशानिन महान कहिया ্তি প্রামাক মৌসুম আরম্ভ হইবার সময় বিপাকাগত বায়ুপ্রবাহের দ ধননে প্রায়ঃ অভান্ত অভ বৃক্তি ভূফান कडेंगा धारत। निरुक्त-बृ**रखंद्र मक्तिर्य मण अर्थ शर्मा** अर्थान भोम्बि-राष्ट्र मीउकाल वाष्ट्रकाषश्हेर**उ उ शीरक धरि-**কোণহালৈ প্রয়েত হয়।

উত্তর-বাণিজ্য-বাংর দে মণ্ডল নির্দিষ্ট হউল তাহার-ি সাধ্য প্ৰদানন্ধৰ চৰতে প্ৰবাহ হয়, এ প্ৰযুক্ত ভুত্ৰতা अवर सान ''रेनकल दासूत प्रश्नन'; ও मक्किन-वार्गिका-वायु-मछरवार भक्तिम बायू नकमा वागुरकारगर्केटछ शु-वीक केत विनिद्धा "वायवा-वार्युत भक्त " नार्म विश्वास्त्र।

বাশ্সরয়ে যাহ) উক্ত হইল তাহ্য বায়ুর সাধারণ নিয়া তেবৰ মহানস্তে ইহা প্ৰতাক হয়; পৰ্বত, মঞ্-ভূমি বন, উপত্যকা, নগরাদির বাগা বা সাহায্যে স্থান-ল ১৬৪ টছার অনেক অনাথা চট্টা থাকে; কিছ এছিলে ভাহার বর্ণন লেখা বারালা। আরব দেশের সিমুম। নামক প্রাণ-সম্মাতক উত্তপ্ত বায়ুর বিবরণ বিবিধার্থের ৰিভায় পৰোঁউক হইয়াছে; ঐ রপ বায়ু অন্য**ন বাণু**÷ কামর মক্ত-ভূমিতেও উৎপার ভ্রয়। ধাকে।

नमृनुउटि निराजारत राष्ट्र नियक नमृनुक्वेटक कृमाकि-

মূথে ও রাত্রিতে ভ্মিহইতে সম্দ্রাতিমূথে বহিরা থাকে। अहे श्रक्तरात अ भगांत घोराता स्रतारंगान्यकः পাঠ করিয়াছেন তাঁহারা এই ঘটনার কারণ অনা-য়ালে বুৰিতে পারিবেন। দূর্য্যোদয় অবধি জল অংশৈ-কায় ভূমি শীৰু উরপ্ত হইতে থাকে, সুতরা ভূমির হয় না কেবল ম্থানমুদ্রের গতে তাহার প্রচার আছে। বায়ু তপ্ত হইয়া উত্তে উটতে থাকে; ও সমুদ্রের বার্ আকর্ষণ করিয়া ভূভাগে আনয়ন করে। রন্তনীতে জল অপেকায় ভূমি শাষু শীতদ হয়, তথা দিবদের বিপরীতে রাত্রিতে ভ্ভানের বায়ু সমুদ্রাভিমুখে ঘাইতে থাকে। এই বালু প্রবাহময়ের নাম "সমুদ্রালু" ও "ভূমিবালু"। ইহা কেবল সমূদুত্ট সন্নিকটেই অনুভূত হয়।

যে কারণ প্রযুক্ত কোন কূল পদার্জোপরি লোকী-यांठ कहित्व वे लाके कृत शर्नार्वहरेट প্रजावर्जन करत, वायुक्त मिहे कावरणव अधीन; अहे श्रयुक्त वायु-প্রবাহ পর্যন্ত বা প্রাচীরাদি কৌন পদার্থে আহত হইলে (महे भाग विकास अधाव क्षेत्र कत्र का तो एवं निर्देश जुमन कतिरक धारक लाहार शेरक जना पिरा यात। विल-ক্ষাভিদ্ধ দুই বাষ্প্রবাহ পরব্র আছত হইলেও এই घटेना महत्व, अन॰ जाहात्ज श्लागः धृर्निवासुद्र উৎপত্তি করে। কোন এক স্থান হচাৎ ৰাষ্-পূনা ছইলে ডৎ-স্থান পুরণার্গে চতুর্দিগছইতে যে বায়ু ধাবমান হয়, তা-হাতেও ধূৰিকায়ু উৎপন্ন হয়। ঘূৰ্নিবায়র উৎপাদনাপে। আকাশমন্তবে বিদ্যুৎসম্ভবীয় অন্যান্য করেণও থাকিতে পারে; কিন্তু তাহ। অদ্যাপি উভাবিত হয় নাই। এই ঘূর্নি वार् बाह्न भविनव रहेरन "धुनिधरक" नाम विश्वार रहे। "বুটে" বা "ভূত" নামেও ইহা প্ৰনিদ্ধ আছে। এতকেশীয় नामाना लाएक हेरा ब्रम् कविला श्रीक्षत्र-वज-शतिवर्जनद বিধি দিয়া থাকে। সে যাহা হউক জলে যে প্রকারে আব-র্বন বা কলভুত জন্মে, বায়ুতে সেট রূপে ঘূর্নিবায়ু জন্ম। প্রকরায়-সঞ্কন-সময়ে অনাতৃত ভানে ধূলিরাশি ও উদ্ধ भवामि महेशः मुद्राकात् बाकाल प्रशास कतिए अहै বায়ুকে অনেকে দেখিয়াছেন। গ্রীল্মকালে পঞ্চাব-বেশে **बरे अकारत धृ**लिक प्रातः अन्नर स्टैता शास्त्र।

अहे चूर्निवाय चूर्नन कविरास शास्त्रमानि **चेर्ल्स** कमानि वा অগ্রে গমন করে। ইয়ার অূর্বন্ধারকের। পরিসর অধিক रहेटन প्रावः चशु-शनमहे नद्वत्वः, अवशः क्यांका स्वतंक विवरकार बहेमां बहिए बार्ट । शहार स्वयंक अक्या रविकाशियन, अक कामाम्बन्धितिम् अक क्रिक्र ক্ষেত্র-প্রসারিত-কতকগুলি বন্ত্র লইয়া সহসুষিক হন্তাত্তরে নিক্ষেপ করে। বিলাতে ক্রয়তন্ নামক স্থানে
এই বায়ুকর্তৃক একদা এক হাস্যজনক ব্যাপার ঘটিয়াছিল; তথায় এক বিস্তীর্গ ক্ষেত্রে এক জন রজক
অনেক বন্ত্র শুস্কু-করিবার নিমিত্তে প্রসারিত করিয়া দিয়াছিল, এমত সময়ে এক ঘূর্নিকায়ু আসিয়া ঐ সমস্ত বন্ত্র উল্ভোলন করত ক্ষেত্র-নিকটম্ এক গিরিজার চূড়ায়
বেনিত করিয়া দিলেক।

সামান্যতঃ এই বায়ুর বেগ অত্যন্ত গরিষ্ঠ বােধ হয় না; পরস্ত ইহার ক্ষমতা কোনমতে সামান্য নহে। পক্ষি ইণ্ডিস দেশে এই বা্যু এক ২ সময়ে এমত ভয়ানক হয়, য়ে তাহার মনন করিতে হইলেও শরীরে লোনাঞ্চ হইয়া উচে। কথিত আছে, য়ে এই বায়ুনগরোপরি দিয়া ভুমণ-করিবার সময়ে য়ে দিয়া প্রনাত হয়, সেই সারীর সমস্ত ইয়ক কাঠাদি নির্মিত অটালিকা সমূলে উৎপাটন করিয়া শতাধিক হস্ত প্রশন্ত অটালিকা সমূলে উৎপাটন করিয়া শতাধিক হস্ত প্রশন্ত বিশ্বান এই আগান-অবশানন্তর স্থানিমাণ করিয়া দিয়া আয়। এই আগান-অবশানন্তর স্থানিয়ায়ু-কর্তৃক পুরু-রিগার ঘাট-উৎপাটন-বিয়য়ক এতদেশে য়ে গল্প প্রচার আছে তাহা নিতান্ত অসম্ভব বােধ হয় না। এই বায়ু-সহকারে বয়ুভা-দ্বাপে দুর্গের বপ্রহইতে অনেকবার প্রকাণ্ড ২ কামান উড়িয়া গিয়াছে।

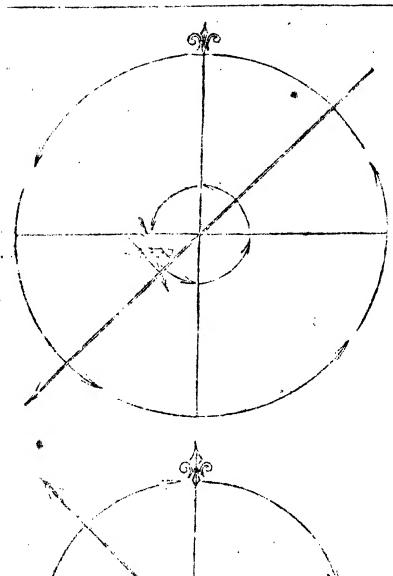
বাদালা ১১৪৪ অব্দে এই প্রকার ঘূর্নিবায়ু পাপা পেলিয়াঘাটাইউতে আরম্ভ ইয়া দক্ষিণ-দেশস্থ বেণিয়া-পুকুর পর্যন্ত প্রায়ঃ আট কোশ পথ প্রস্থে অর্জ-পোয়ার মধ্যে ঘর দার রক্ষ প্রভৃতি যে কোন বস্তু ছিল, তৎভাবতের সমূলে উন্থান ও ধ্বংস করিয়াছিল। তৎকর্তৃক প্রিন্সেপ্ সাহেকের লবণের কুটিইউতে করেকটা বিংশভাধিক মন ভারি লৌহ কটাই উদিয়া গিয়াছিল, এবং ইউক নির্মিত প্রকাপ্ত স্তম্ভাছিল।

এই ঘূর্ণবায়র মণ্ডল শতাধিক-কোশ পরিদরবান হইলৈ প্রকৃত "কড়" নামে বিখ্যাত হয়; ফলতঃ কড় মাতেই ঘূর্ণবায়, কদাপি কোন কড় তীরের ন্যায় ঋজু ভাবে
এক দিয়ে গমন করে না; সকলেই ঘূর্ণন করিতে ২ অগ্রলর হয়; তৎসময়ে যে কিছু পদার্থ তল্পয়ে পড়ে
ভাহারও গতি ঐ কড়ের ন্যায় ঘটে। মূর্ণনের মঞ্জ ভাহারও গতি ঐ কড়ের ন্যায় ঘটে। মূর্ণনের মঞ্জ ভাহারও গতি ঐ কড়ের ন্যায় ঘটে। মূর্ণনের মঞ্জ

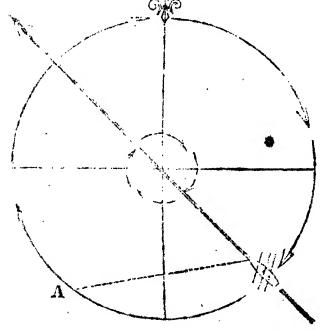
প্রকার হয়। এই প্রযুক্ত ইহার ধর্মজ্ঞাপক নাম রা-থিতে হইলে ইহাকে "বাভাবর্ত" বলা মাইতে পারে। পাঠकवृत्मत प्रांत चार्ड डेप्ह श्हें डेड भारत, ए अहे কড় অভিয়মে যে দিনো ইচ্ছা সেই দিনো হইতে পারে: কিন্তু তাহা ভুম মাত্র; চন্দু-নূর্বোর গতি যে প্রকার ब्रिज नियरम निक्शन रय, वर्ड भारे श्रकात अथानीय निय-মের অধীন; কদাপি ভাহার অন্যথা হয় না। নিরক্ষ্য-ৰের উত্তরের তাবৎ কড় পূর্বহেইতে উত্তর ও পশ্চিম দিয়া মূর্ণন করিতে ২ উত্তরাভিম্থে অগুসর হয়, ও নিরক্ষ-ৰুম্বের দক্ষিণে যে সকল কড় হয় তাহা পশ্চিমহইতে উত্তর ও পূর্বে দিয়া ঘূর্ণন করিতে ২ দক্ষিণে প্রস্থান করত; কোন ২ অড় এই প্রকারে কিন্দ্র অগুনানন করত মণ্ডলা-কারে প্রত্যাবর্ত্তন করে; কিন্তু এ প্রশান্ত যত কড় দৃষ্ট হ**ইয়াছে**, তাহার কোনটায় ইহার অনামত অনুভূত **হয়** নাই। অপর পৃতে যে চিত্রদয় মৃদ্রিত হইল, তাহাতে এই গতির বিষয় স্লষ্ট বোপ হইবেক। শর-সকলের অনুভাগ যে দিগে ৰায়ুর গতি দেই দিগে কল্পিত হইয়াছে।

এই নিয়ম জ্ঞাত থাকিলে নাবিকদিণের পক্ষে অত্যন্ত উপকার দর্শে; তদ্মারা তাহারা অনায়ালে বুডুইতে পলায়ন করত পোত ও আদ্ম-রক্ষা করিতে পারে। অনেক নাবিক এই বিদ্যার লাহায়ো কড়ে জলমথ না হইয়া বহুদিবল-নাধ্য পথ অতি অল্প দিনের মধ্যে ভুমণ করিয়াছেন। অবিতর্কেরা অনায়ালেই কহিয়া থাকে, বড় কি প্রকারে ভুমণ করে তাহার জ্ঞানে কল কি? কিন্তু বড়ের সময়ে সমৃদ্-মধ্যে তাহারা পোতত্ব থাকিলে এ প্রশ্নের লদুল্ভর ভাষাদিণেরই নিকটইত পাওয়া মাইতে পারে। বাণিজ্যার্থে ন্যুনাধিক ২০,০০০ জাহাজ দিবারাত্রি সমৃদ্রেভুমণ করিতেছে; ভাহার প্রভাকে গড়ে ৫০ জন মনুষ্য মাছে; যে বিদ্যায় তাহাদের রক্ষার উপায় চেক্টা করে তাহা যে মহোপকারি ও শিথিবার যোগ্য ভাহা পাঠ-কর্ষা অবশাই মীকার করিবেন।

রধ চক্রের ঘূর্ণন-সময়ে তাহার পরিধি অত্যন্ত বেগে ঘূর্ণন করে, তদ্ধপ ফতগতি তাহার নাজিতে দৃষ্ট হয় না; কণতঃ নাজির মধ্যভাগ ছির থাকে। বায়ুর ফুর্ণন-সময়ে তদিপরিত ঘটনা প্রভাক হয়; কড়মগুলের পরিধি মে বেগে ঘূর্ণন করে, তাহার মধ্যভাগে তদ-পেক্ষার ধরতর বেগ বোধ হয়। এই প্রযুক্ত করের সময়ে হানে অভ্যন্তকর মধ্যভাগ আকিয়া উপাহিত



পৃথিবীর উত্তর এওছ কড়ের গতি। বায়ু পূর্ব্ব-इडेटर উखर ও পশ্চিম দিয়া चूर्गन कहिरदृष्ट ।



প্ৰিবার দক্ষিণ থঞ্জ কড়ের গতি। বার্ পশ্চিমহউতে উত্তর ও পুর্ব্ধ দিয়া ঘূর্ণন করিছেছে।

্বর তথার ভরস্কর উপাদুব ঘটে; তদনত্তর সত্মগুলের

वाजावरर्जन बाान नर्वाव नमान रह ना। शक्ति-रेखिन् ^{(नवडार्ग खाङ्}रमः, श्रथ्रत य मिन्द्रहेरड नामू खाहेरम श्राप्तरम नाम गठ क्वालिः मकः गड**्रखाडि**यी खान चारात विभवित निग्रहेर्ट बाबू श्रवार २०। 🖟 🔑 शान विश्वनित रहेवार । क्रांबर नेपूर्त शाक्निक रहेवार बान नर्खन। घटि। होन नमूत्तु এই রাান नक्कोर्न इङ्ग्रा ১ শত व। ১॥० শত কোশ হয়।

বাভাবর্ত্তের গতি বিষয়েও অদ্বিতা আছে। ভাহা প্রতি ঘণ্টার ৭ অবধি ৫০ জ্যোতিথা ক্রোশ স্থান ভুমণ করিতে পারে।

বড় ভূড়াণে প্রাহিত হইলে পর্বত বৃক্ষ বাটীপ্রাচারাদি দারা অবরোগিত, নিপ্থে গত ও ত্রায় নিম্নেজঃ
হয়; সমুদ্রে তজপ কোন বাধা না থাকাতে, অনায়াসে
বহু দ্র পর্যায় তুমণ করে; এবং তথায় আপন ধর্ম
ও লক্ষণ উত্তনরূপে প্রচারিত করিয়া থাকে। এই প্রযুক্ত
বাড়ের পর্ম-নিরূপণার্থে নাবিকেরা মাদৃশ অবকাশ প্রাপ্ত
হয়, ভ্লস্থ মনুনোর তাদৃশ সম্বরে না; অধিকন্ত এ
বিনরের পরিজ্ঞান নাবিকদিনের যাদৃশ প্রয়োজনীয় স্থলস্থদিনের তাদৃশ নহে, সুতরাং উক্ত বিদ্যার্জনি উভয়ে
সমোৎসাহলা না হওয়াতে উভয়ে তুলা পারদর্শী হইতে
পারে না। রেডফিল্ড, রাড, পিডিংটন্ এবং মরি
নাহেরেরা এ বিষয়ের প্রধান আচার্যা, ইহাদিনের পুর্বে
কেহ বাডাবত্রের পর্মানিক্রপণে কৃতকার্য্য হরেন নাই।

শমুদ্রের যে ভাগ দিয়া বাতাবর্ত্ত প্রবাহিত হয়, তথাকার জল উথিত হট্টা অন্যত্তাপেক্ষায় ২০।২৫।৫০
হাত কদাপি তদ্বিল বা তিন গুণ উচ্চ হট্টা কড়ের
শহিত ভুমণ করে; এট উথিত বারির নাম "বাতাবর্ত্তলোল"। কাহাজের পক্ষে টহা অতান্ত অনিটকর।
৩০ দালের কড়ে অনেক জাহাজ এই কল্লোলে আরোহণ করিয়া দম্দু তাগ করত গদা লাগর-দাপের মধ্যন্ত্
বৃহ্ণানু উপভিত হট্টাভিল।

ইহার চহুদিনে যে তরসায়িত জলের সোতঃ উৎপন্ন হয়, তাহাকে "বাতাবর্ত্ত-সোতঃ" শব্দে কহি। নাবিক-দিনের পক্ষে তাহার স্বভাব জ্ঞাত থাকা অতান্ত আবশাক; পরস্তু এম্বলে তাহার বাহুলা বর্ণন করা অভিদন্তেয় নহে।

বাভাবত্ত্র সমরে সূত্র্মতঃ মেঘ-গর্জন বিদ্যুৎ-বিকাশ ও প্রচুর বারিবর্যন হট্য়া থাকে, ইহাতে বোধ হয় বি-দুত্তের সহিত বাভাবত্ত্বে কোন বিশেষ সমুদ্ধ থাকিবে।

পৃথিবীর সর্বাতই বাতাকর্ত হইয়া থাকে; কিন্তু বঙ্গোপসাগর, মরিচ-ঘীপের নিকটয় তারত-সম্পু, চীনসম্পু, এবং কারিবি-সম্পু ইহা যে প্রকার বেগবিশিষ্ট হয়, অনাত তদ্দেপ হয় না; এই প্রযুক্ত উক্ত কয় স্থানকে স্থানকে স্থানকে বিধান করেন।

যে ঘূর্ণিবায়ুতে ধূলিখনে উৎপন্ন হয়, তাহা সম্দু প্রবাণ হিত হইলে উর্দ্ধে জলাকর্ষণ করত জল-মুদ্ধ উৎপন্ন করে। ১১৯ সঙ্গাক তত্ত্বাধিনী পত্রিকার এতদিবয়ের একটি সুচারু প্রভাবে প্রকটিত আছে, পাচকদিগের স্ব্যাচরার্থে নিম্মে মৃদ্রিত কতিপয় পতিক তাহাহইতে উদ্ধৃত করিলাম।

"নমুনুরে যে স্থানে জলস্থা উৎপন্ন হয়, তাহার উপ"রিভাগে মেব থাকে। প্রথমে প্রথল ঘূর্ণিবায় উপস্থিত
"হটয়া তথাকার জল অতাস্ত আন্দোলিত হয়, এবং
"চারি পাশ্বের তরঙ্গ সমুদায় সেই স্থানের মধ্য ভাগে
"ফাচ বেগে আগমন করিতে থাকে। প্রভূত জল ও
"জলীয় বাল্ল অবিলয়ে রাশীকৃত হইয়া উঠে, এবং
"বাল্লময় একটা ভাগেকার দ্রম্ম উৎপন্ন হটয়া উদ্ধি দিকে
"উথাত হয়, এবং মেঘ হটতেও ঐ রপান্তার একটা
"উপ্ত অবতার্ন হটয়া তাহার সহিত সংযুক্ত হয়। বে
"হানে উভয় গুণ্ডের সংগোগে হয়, সে স্থানের বিস্তার
"২০ ফ্ট মাত্র। শ্রণ করাগিয়াছে, মহকালে জলস্তম্য
"উৎপন্ন হয়, তথান এক প্রকার গ্রার শব্দ শ্রুত হইতে
"থাকে।

" मतल जनमू ममान मीयं नरह ; अक अकरे दू रेम्बा ''ন্যুনাধিক ১৭৫০ হাত পর্যান্ত হইয়া থাকে 🖰 উহার "পাখনেশ যেমন ছোরাল দেখার, মব্যভাগ সেরপ নছে। " ঈহাতে বোধ হয়, উহ। শ্ন্য-গর্ত্ত অর্থাৎ ফাঁপা। (এই " সৃষ্ট) সতত এক স্থানেই স্থির থাকে এমত নছে; যে দিকে ' বারু বছে, সেই নিকে চলিয়া যায়; কিন্তু বায়ু না বছিলেও "ইতসূতঃ চলিতে দেখা যায়। **সতত এরপ ঘটনাও ঘটিয়া** "খাকে, যে উর্জ ও অধোভাগের বেন সমান না থাকাতে, "ক্রেম ক্রম খেলিয়া পড়ে এবং ছিন্ন ভিন্ন হইয়া যায়। "তাহাতে যে বাল রাশি থাকে, তাহা বিক্ষিপ্ত হইয়া "বাবুর দহিত মিলিত হয়, অথবা দম্দুের উপর বৃষ্টি " হইরা পড়ে। ছলমুম্ব কতক্ষণ থাকে তাইণর নিশ্চয় "নাই। কোন কোন ট। উৎপন্ন হইবার অবাবহিত "পরকণেই অন্তহিত হয়, কোন কোন টা প্রায়ঃ এক ঘণ্টা "কাল পর্যান্ত নট হয় না। আবার কোন কোন টা "উৎপন্ন इইয়া किश्विश्काल मृकित्ताहत श्राटक, शरत " আপনিই ভিরোহিত হয়, এবং পুনর্বার আবির্ভ হয়। "এইরপ তাহার বারম্বার আবির্ভাব ও তিরোভাব দে-"থিতে পাওয়া যায়।

উৎकल प्रत्मात्र विवत्र।

※※**※※**ह (मात्र मिक्राल प्रेरकन नामक कर कृता ननो. अवः शूर्वं नमूमु अवः জञ्जन। उपा-कात दायुं अगठ करता (य श्रायः जफ्निवानी মাত্রেই কৃষ্ঠ, শূল, ও কম্পাজ্ঞরের মধ্যে কোন না কোন রোগে আক্রান্ত থাচে। ইছার পশ্চি-মাধ্য পর্যতে বেপ্তিত; কেবল মধ্যস্থ মোগল ব্যাল নামক দেশ জনাকীণঃ উৎকল দেশের ভূমি কুত্রাপি বালুকাময়; এবং কোন ২ স্থানে | রাঢ় দেশের ন্যায় এক প্রকার হরিদ্যুভ কঠিন মৃদ্রিকা বিশিষ্ট। এন্থানের প্রস্তরদারা যে ভো-জন পাত্র সকল প্রস্তুত হয়, তাহা সাধারণ লো-কের সুবিদিত আছে: এক প্রকার প্রস্তর-হ্ইতে লৌহ উৎপন্ন হইয়া থাকে। লৌহ ব্যতীত অন্য কোন খাতু উৎকল দেশে জন্মে না; লোক প্রবাদ আছে যে পূর্বে সুবর্ণরেখা নদীতে বালুকা-বৎ সুৰ্ধলি প্ৰাপ্ত হুইত। যদিও এখানে অনেকা-त्क नमीत निष्ठ माकार इय, उथानि स मकन मर्बनाई धार शहिस्क थाकः; छत्र किल्पन প্রধান। २ नहीं नाम এই :- সুবর্রেথা, বৈতর্ণী, ব্ৰাহ্মণী, মহানদী, কুশভদু, দয়া, ভাগবী, চি-ছোৎপলা, কাঁশবাঁশ, কাশাই।

বঙ্গদেশ-সাধারণ নানাবিধ শান্য এথানে উৎপান হয় বটে, কিন্তু উর্বরতা বিষয়ে ইহা কদাপি বঙ্গ-দেশের তুলা নহে। এখানকার ইতর জন্তু সকলও বন্ধ দেশের সদৃশা; কেবল কুচিলাথারী নামক একটি বিশেষ পাক্ষর বিষয় শারণ হইতেছে; এই পাক্ষির ভাব প্রায় বাজ পাক্ষির নাার; কেবল ইহার চঞ্ছয় সরল। উৎ- কলেরা কহে যে কুচিলাখারীর মাংদ আহার করিলে বাতরোগের শাস্তি হয়। প্রস্তাবলেথক কর্তৃক ইইার মাংদ অভাবহাত হইয়াছে; কিন্তু ভাহা কোন মতে সুখাদু বোধ হয় দাই।

উড়িলা দেলের মধ্যে তিনটি প্রধান নগর
আছে: বালেশ্বর, কটক, এবং জগরাথ পুরী।
বালেশ্বর কলিকাভাহইতে প্রায় १० জোলা অন্তর:
তথায় ৮।৯ সহসু মনুষ্য বসতি করে। তত্ততা
বিণকেরা বদেশ নির্মিত অন্বপোত সহকারে
কলিকাভায় বাণিজ্য করিয়া থাকে। নৈকটা প্রসুক্ত
পূর্বে এই স্থান ইউরোপায়দিগের প্রসিদ্ধ বাবিজ্যে ক্রম্পুরি এত নিকট, যে পর্বভোহপক্ত
হাবানল অনেকবার প্রস্তাবলেশ্বক কর্তৃক দৃষ্ট
হারাছে, সমুদুও তথাহইতে কিছু অন্তর নহে;
সুতরাং বাঙ্গালিদের পক্ষে বালেশ্বর অস্বাস্থ্যকর
স্থান বলা যায়না।

वात्तथन्नहरेट करेक श्रांत १२ क्लाम मृतः;
हेश शृद्ध উড़िमान नाज्यानी हिन। करेकन
छेड शार्थ निमान्क, मधाडारा श्रञ्ज निम्मिन व्यानक शृद्धान करेन विकास मृद्धे हर। करेन किन वर्डमान गृह मह्या नामिक २,००० वरः व्याक महया श्राह्म १०००। वर्षात्म वात्रवाणी नामक कर्क शाणीन पूर्व बार्षः; जाहा काम विकास कर्क निधिन हर्षे बार्षः; जाहा काम नामक नामक कर्क निधिन हर्षे बार्षः। यूमनमाम नाष्ट्राप्त हरू बन्न करम्मत्रमून नामक कर्षे वाणी पृष्ठ हर्षः; जाहा कर्म मृत्रमा छेपारम्ब मधा वर्षीः; ज्यात्र नयात्र मृत्रमा छेपारम्ब मधा वर्षीः; ज्यात्र नयात्र मुद्धा छेपीरमङ्ग भूवा महम्मह जकी थीन ममान बार्षः।

জগন্নাথ পুরী বা পুক্ষোন্তমক্ষেত্র কলিকাডা-হইতে প্রায় ১৫৫ ক্রোশ পথ অন্তর। তথাকার গৃহ বঙ্গা নুনাধিক ৫৭৫০ বাস্ত ভূবি মারেই নিষ্ণর; কারণ নিবাসী মাত্রেই জগয়াথ দেবের কোন না কোন প্রকার সেবক। এস্থলে অনেক মঠ ও সরোবর দৃষ্ট হয়; সরোবরের মধ্যে চন্দন, ইন্দুদ্যুম, এবং মার্কপ্রেমর প্রভৃতি কতিপরই অতি প্রসিদ্ধ; কিন্তু যাত্রাগণের পুনঃ পুনঃ সানা-দিঘারা তত্তাবতের জল অতি কদর্য্য হইয়া গিয়াছে। পূর্বে ক্ষেত্রে গমন করা কইজনক ছিল; কিন্তু ১৭৩২ শকে কলিকাতান্ত রাজা সুথময় রায় বল্ম নির্মাণার্থ ১,৫০,০০০ টাকা প্রদান করিয়া সেই দুঃখ দূর করিয়াছেন।

উপরোক্ত তিনটি প্রধান নগর ব্যতীত উড়ি-ব্যাদেশে যাজপুর, সোরো, ভদুক, কন্দুাপাড়ী প্রভৃতি * কতিপয় বৃহদ্ গুমি আছে।

উৎকল দেশে জাতিভেদ বন্ধ দেশের ন্যায়।
কেবল কণ্ড্র', পাইন, গোথা প্রভৃতি নূতন নাম
ধারী কতিপয় নীচ বর্ণ মাত্র অতিরিক্ত। তথাকার
থণ্ডাইতের। আপনাদিগকে ক্ষত্রিয় সন্তান বলিয়া
পরিচয় দেয়। হলিয়া-ব্যাক্ষণেরা ব্যাক্ষণের অবশ্য
কন্তব্য কর্ম পরিত্যাগ করিয়া কৃষি কার্য্য অবলম্বন করিয়াছে।

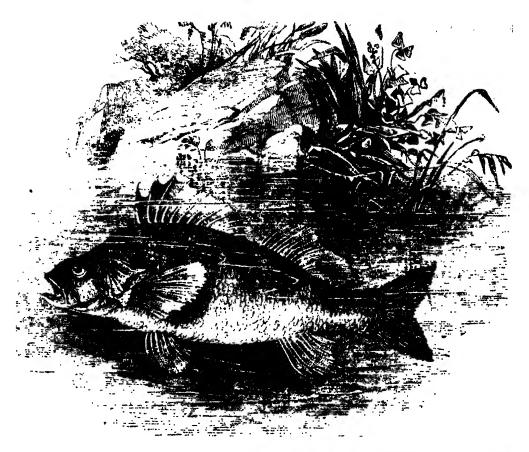
এই দেশে সর্বন্তক প্রায় ১২,৯৬,৩০০ লোক বসতি করে। তাহাদের চরিত্র আপাততঃ এক প্র-কার বিদিতই আছে। তাহারা নির্বীর্য্য, বুদ্ধিহান, এবং ধুর্ত্ত; মদেশে কোন বিশ্বস্ত উচ্চ পদ পায় না, ভিন্ন দেশীয় লোকদিগ ভারাই সেই সকল পদ গৃথীত হয়। হিন্দুদের মধ্যে এমত অপরিকৃত জাতি অতি অপ্যাই দেখা যায়; তাহাদের গৃহ মধ্যে এক অসহ্য ন্যক্তারজনক দুর্গন্ধ স্বভাবতই উৎপন্ন হয়। তথাকার জালো- কেরা কি ৰূপ বিৰূপ অলঙ্কার প্রিয়, তাহা বক্ষ্যমাণ আখ্যান দ্বারা প্রতীত হইতেছে।

কোন আত্মীয়ের মুখে শুনিয়াছি, তিনি একদা কোন প্রয়োজনানুরোধে কন্দ্রাপাড়ী গুলেন এক উড়িয়ার আলয়ে কিয়দিবল অবস্থিতি করিয়া-ছিলেন; এক দিন অন্তঃপুর মধ্যে জেন্দন ধনি আকর্ণন পূর্বক জিজ্ঞানিয়া প্রতীত হইলেন যে তাছাদের দুইটা বধু আছে; তন্মধ্যে কনিষ্ঠা ৭ সের পরিমিত পিত্তল নির্মিত হস্তাভরণ প্রাপ্ত হই-য়াছে, জ্যেষ্ঠার ভাগ্যে এক পোয়া নুন হইবাতে সে অভিমান প্রকাশ করিতেছে। ৫।৬ মাস পরে পুনর্বার তথায় আনিয়া তিনি তথনও সেই জ্যেষ্ঠা বধুকে ভরিমিত্ত রোদন করিতে শুনিয়া-ছিলেন। এই গণ্পা অবিশ্বাস করিবার কোন কারণ দেখিনা।

তিৎকল ভাষা ও বণ্নালা সংকৃত হইতে উৎপন্ন; কিন্তু বাঙ্গলার নায়ে তাহাতে অন্যে বতন্ত্র
শব্দ পাওয়া যায়। উৎকলদের উচ্চারণ বতি
অপকৃষ্ট। তাহারা তালপত্রে কণ্টকবং লোহমায়া
লেখনা সহকারে লিখিয়া থাকে: সূতরাং অক্ষর
সকলের সর্বাবয়বই স্থানজ্ঞা হয়। এই
ভাষায় কাওহাকবিরা এবং কতিপায় বংশাবলী
পুত্তক ব্যতীত দেশমূলক গৃষ্ধ অতি অলপই
আছে। গলাভজিতরজিনী প্রভৃতি কতকগুলীন
পুত্তক সংকৃতহইতে অনুবাদিত হইয়াছে।

উৎকলের বিবরণ আমরা এই স্থলেই শেষ করিতেছি। সময়ান্তর এই দেশের ইতিহাস ও তীর্থ স্থান সকলের বর্ণনা করিতে মৃত্রু করা যা-ইতে পারে।

^{*} প্রীর নিকট সভাবাদী নামে একটি গুমে আছে; তাতা ভারতবর্ষের মানচিত্রে জানবধানতা প্রাযুক্ত সাহবাড়ী নামে লি-থিত ইইয়াছে।



काउना मरम्।

। धर्म विठाइरार्थ (ভाজন-সময়-वाकी व कपाणि म-(बारयान ना कंताएक उधियरम् चक्क व्यक्तिः मुख्याः शास्त य कि मूर्णिक इडेल, डाहात का उला-धृड-कत्रशार्थ कुँछ। ও या एक। छेखम, कि विनत्नार्थ श्राय वाष्ट्र कत्रा का तान स्थि-जाजा, कि भाग भनित, कि सामत्र कारा 🛪 🐯 🖟 भटा विद्युष्ठमा विषा नहा। काञ्चा (सुद्रः, ও मक मृथ्य (कँटा, कि शिठानि, कि शृज्यक मध्या क ना कारनन? जाहात वृह्द मखक, सञ्चमात छात्र वाणि छि**लकाति, जाहा निर्म्म कतिए**ड সবাদ্দেহ, কুড়া প্রিজা, ভড়াগ-নিমে নি- ক্ষান্ত থাকিতে হইল। কেহ২ কহিতে পারেন, वारम (इय. इंड) कि विषय आवान-वृक्षयमिष्ठ। "इटव के इवि मृष्ट्रिक कविवात आवन्।क कि "? मकलात्र विभिन्न चाहि, चल्यव जमाशात् कांश्वामिशक अहे भावत मात्र सत्ताहिताहे कपू-काल-एक्स व्यवभारे व्यक्षंत्र बीकांत कतिए। खत इन्द्रिश विविधार्यंत्र साठेक-मधनी-मर्धा विवा-হইবে; বিশেষতঃ পাঠদশার আমরা শুনিয়াছি- থি আনেকে আছেন, তাঁহাদিগের সংস্থাধ করা অ-লাম, "এক যন্তির এক দিকে চার ও অপর অংশতে তানিষ্ট নতে। অপর উপরে-মৃদ্তিকাত-फिरक এक পांशल " এই বলিয়া কোন পণ্ডিত মং- लाइ (कवी-महाभारवड़ा विविधार्थाई मूला विद्यक्रमा मायादित नक्ष कतिशात्कन, बर्वेर जमवि मर्गा- कतित्व कानिएक शाहित्वन, श्रक्तावि के विद्वाद नि-थ्ठ-क्रवर्गाङ्यारम् ज्यान वामता उड़ारगत निक- मिख डाहारम् निकि शमनात वाधिक वाम स्वान हेवर्जी अ इहे नाहे, अ त्वाहित काञ्चात स्थान अ ना; अ मूरमा कि के कि कि स्थार्थ इहेट कर हैं

কায়িক-সৌন্দর্য্য-বিষয়ে জাতিভেদে মত-ভেদ।

💥 🚧 🚉 वीन यो वन। जनना हाई स्नोन्म र्या ह ूँ (मुश्राधात, এই कथा विलाल विश्व ্র্রু পাঠকবৃন্দের কেহই আমাদি-ক্রুক্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ব গের বিপক্ষ হইবেন না; অথচ তা-খাঁতে আমরা যে নিতাস্ত বিপক্ষ্টান থাকিব অমত নহে। উত্তরামরিকা-খণ্ডের প্রাচীন জাতি-विरम्परम् मम्मार्थ । कथा विनात भनरम् जूति-কাষাত পাইবার পূর্ণ সম্ভাবনা আছে; সুতরাং ৰে ছলে আবার-বিষয়ে এতাদৃশ সৃষ্কট, সে স্থলে और-अज्ञास्त्र नम्रत्य वामान्तित्व मज-अकात्म यं कारनरकत निक विवासी हहेए हेहरन, हेहरि ব্যেন সন্দেহ নাই; অতএব আমরা এই প্রস্তাবে শকীয় অভিপ্রায় স্বায়-ব্যবহারার্থে রাথিয়া যথা-বকাশ কেবল অন্যের মত সঙ্কলন করিব। বস্তুতঃ 🛊 ব্রিষয়ে শীমাংশা করিবার আবশ্যক নাই, পরের ্রিপ্রায় জানিলেই যথেষ্ট।

শবদনের সাকৃতি অপ্তাকার হইলেই অনেক সভ্য শতির মনঃ প্রসন্ন হয়, কিন্তু চীন-দেশীয়েরা তা-লকে 'ঘোড়ানুথী'' কহিয়া থর্ব বদনের প্রশংশা রে, ও একিন জাতীয়েরা ঐ ভাবের বিস্তার মিন মালসাকার-গোল-বদন-বিহীনাকে সৃদ্দ-মধ্যে গণ্য করে না।

ट्रांगिन-गीत-एमो स्र स्वाकित द्याम हेन्तु। नेत किन-नमरत "न्याकिनी" मरक ठाँ हात नम्रत्न त स्वानः मा कित्रमार्ट्स; किन्न गीत-छात्राम छेन्द्र स्वानः चनुताम कित्रण हहेता न्याकिनीत পतिवर्छ क्रित्राकिनी विवर्ण हम्, नर्ष्य ह्यामरत्न किर्ण्य सान हहेतात मन्नावना,—कात्रन गीन-एमोम्सिन-रात मरक क्रुन चिक्त विरम्य श्रान्मनीतः स्व विनामिनीत नयन अगड चान या छान विकमिछ चाहि. कि मृष्ठि चाहि, छान भोषु निश्वन कता याग्र नो, छानाक छानांता श्रद्धमा मृण्यतो छान करता फेट्नंड-एएण "महामा-ताद्धतहे" माहाजा च्युकि; शातमा-एएण व्यवमार्टिम जनसन्दे श्राह्म श्रद्धकः, शातकर्यात करिता "माथा-मृगाकिथिक कत्र", कि "निष्णि इ-हेम्मोर्वत्र" कि "मकती-यूगन", कि "कमन-एन-मृण्य" नयन शाहिलहे मञ्जूछ हन। एम-एडए नय्रत्न श्रू छोन कर्ये, नोन ७ कर्यावर्ग श्रद्धकः विक्राहि। अङ एएगोय शाहिरकत्र। कि एक शिक्रन हक्ष्य कमनीय छान करतन?

ইন্দুধনুর্বৎ বা ভুমরাবলিবৎ ফুল যুগল-জ্র এতদেশে অনেকের চিন্তচকোর সংহরণ করি-য়াছে, কিন্তু তিন-শত্ত-বৎসর-পূর্বে ইটালি-দেশে তজপ জ্রবিশিষ্টা কেহ লোকের সমাদরণীয়া হই-বার বাঞ্ছা করিলে সোলালার। জ্র উৎপাটন করি-তে বাধ্যা হইতেন। তৎকালে প্রায়ঃ অদৃশ্য রে-থাবৎ সূক্ষ জ্রই তথাকার মনোহারি ছিল।

शांकीन मःकृठ कवित्रा "विश्वाष्ठ " ও "विक्र(माष्ठ" उथा "मूका-म्ख" ও "कून्म-म्राज्ज "
महिमा वर्गान गम्मिक इस्टिन ; स्मानीखनीय विनामविक मिन-मिक छूमत्र-गञ्जक निविक्
क्रिकां अ म्ल प्रिटन काँस्टित मान प्राप्त के वर्गायां स्रेक श्रिक व्यायां स्रेक व्यायां स्रेक व्यायां मर्वमा व्याय मिन्या व्यायां स्रेक व्याया

* कथिल चार्फ, य यदशद्धा नाहि मुक्त दद्गान-

লারিনীরা প্রায়ঃ নাসাবিহীনা বোব হয়। আমা-দিগের পূর্বপূরুষের। তথা পারনিরা শুক চঞ্র ন্যায় বক্ত নামিকার প্রিয় ছিলেন, কিয় এই কানে এ দেশে নে ভাবের ভাবুক দুস্পাপ্য।

ফোন্ প্রকার ললাট অনেকের প্রিয় তাহা তাহার শোভার শেষ হয় না। खित कता कठिन ; शान, रिल्हो. डेफ, निमू. वृश्ट, অনুরাগী বর্মান আছে। মন্টেন্ বা**হেব লে-**ললাটের প্রাপ্ত/থে শিরংগুরভোগের কেশ উৎপা-চন করিছেন: বিলাভেও এ প্রকার ললাট অনে-কের প্রিয়: কিন্তু বন্ধ-দেশে " উচ্-কণালী " শব্দ ক্ষত্যন্ত কট্ভিন মধ্যে গণ্য হইয়াছে। মেক্সিকো-(मर्गामः) विवानिर्गतः नामादिय-देख्वापि-एमवन-घाता यादार वनार्षे छ-भगाय क्या এমত তেওায় নিম্নত তথপরা৷ অনাগি জাতিীয়েরা र्ड्य-राभान-प्राधित निमिन्छ वानाकार्त मञ्जू मार्गकत्र ननामे विद्वाकात्र रह्द करता मा-র্কিন-দেশের অপর এক জাতি চেপ্টা কপা-লের লোভে কুদু বালিকাদিগের মন্তকোপরি কাঠ ফলক (তক্তা) বাধিয়া অভীষ্ট-সাধনের উদ্-যোগা হয়।

वाजात्माणिक क्ष-दूखन व्यथूना कनिकाषात्र

 নাসিকা বিহানে বার্থ হয়, কিন্তু কাফরি : প্রিয়, এবং পূর্বে কবিদিগেরও মনোহারী ছিল; জ্ঞারা এবস্পুকার বক্তাকে ভিরক্ষার-ভাজন জ্ঞান কিন্তু পল্লাগ্রামের বেড়া-বিউনি ও পেটে-পাড়ন करतम। जाहारमञ् त्वारथ खडाविषक मानिका अनाशास्त्र वाश्वीरक शतास कतिर शाता अशत কদর্য উচ্চ, ভাছাকে দাবন করিয়া যত নিমু শুভুকান্তিমতীদিগের রক্ত, কটা, ও পিছল কেশের कहा याह, क वह मोन्स्याह वृिक्ष ने सहि। এই माहाका इंडेरहाल-थर्ष्ट्रह ने में सहिकित दिन প্রযুক্ত, আমাদিগের ধাত্রীরা যে প্রয়তের নাদিকা পূর্ণ-চিত্তে মুক্ত-কণ্ঠে গান করিয়া পাকেন। বে-টিপিয়া "টিকাল" ক্রিতে চেষ্টা করে, ভাহারা ্কুয়ানা-জ্ঞারা **কেশের সূক্ষ** সূঁটি বা**নাই**য়া **মস্ত-**ভদনুৰূপ যতে খুনিন্দুয়ের উচ্চতার ভাস করি- কৈর চারি-দিগে দোলায়মান রাখে, এবং বোধ তে আগুহিত থাকে। নূতন জিলও ছাপের মনো-় করে নায়কের মনোমোহনার্থে ঐ সুঁটি অব্যর্থ বুজাতা। নাটালের অস্বারা মহিয-মেদাদিভারা ममछ-(करमात এक वृष्ट शिश्व वानावेंग्रा मछक আবৃত রাথে; ঐ পিণ্ড প্রস্তুত করা বহু কাল-नाधाः, किन्न अकरात श्रन्तक इहेल मृठूर-भर्यान

मिलाघीरभव युवजोबा खुन भर छेडम स्कान कुनु, धनार, अधनार, गकन धकांत्र ननारवेत्रहे करतम्, ७ **४२नव-प्रिम् मुन्प**तीत् वे **विर्माय-नक**न-প্রাপ্তির নিমিত্ত সাধ্যানুসারে যা মোজ: প্রাপ্ত থেন তাঁছার সময়ে ফুনিস-দেশায়া বনিভার! উচ্চ হ্ন, তৎসমুদয়-ছার। পদাবরণ করেন। বিলাতে ও বন্ধ-দেশে ছোট পদ প্রশন্ত, এবং চাম-দেশী-য়েরা বর্ষত্যন্তর্গহিতঃ এ বাকে/র প্রমাণ-সাধ-नात्य जोनिगरक भोगक-लामूका श्रांत्रक कत्रारिया তাহাদের পদকে পাঁচ **ছ**য় **অন্তর্গার অধিক দীর্ঘ** क्ट्रेंट (मश्ना।

> শরীরের অপর অঙ্গ-প্রত্যঙ্গ বিষয়েও এই প্রকার অনেক মত আছে, কিন্তু স্থানাভাব-প্রযুক্ত অধুনা তাহার আ**ন্দোলনে ক্লান্ত হইতে হইল**।

> > অনুরাধাপুরের ইতিহাস।

अ न्द्राधाणूत शृहकाल नकाबाला का का विश्व का का विश्व का हैं अस्ति हैं विकासी**ल कर करवन, छाराद कियू काल** পরে (বিক্রমাদিত। সংবৎসরের ৮৪৪ **বৎসর পূর্বে**)

অনুরাধা নামে তদীয় জনৈক পার্যদ কর্তৃক ঐ নগর 🍴 স্থাপিত হয়৷ মহাবংশে লিখিত আছে, যে তাহা প্রথমতঃ কদম্বা-নদী-ভারস্থ একটি পল্লাগুমেমাত্র ছিল। এক-শত-বর্ষ-পূর্বে তাহার কিছুই প্রদিদ্ধি অন্তঃপাতি হয়। ছিল না। তৎপর পাণ্ডুকাভয় নামক এক ব/জি-দ্বারা তাহার সমৃদ্ধি হইয়াছিল। বিক্রমাদিত্য অব্দের ৩৮১ বৎসর পূর্বে তিনি ঐ স্থানে লঙ্কার 🎚 রাজপাট ভাপন করেন। তিনি অনুরাধাপুরকে 🖟 ভাগ চতুষ্টয়ে বিভক্ত করিয়া প্রত্যেক-ভাগে এক২ 🗍 জন তত্ত্বাবধারক নিযুক্ত করিয়াছিলেন; তৎ-তর-দিগে এক পৃথক গুামে বাস করিত। অনু- মিত ভূমি ভাহার অন্তর্নর্ত্তী ছিল। প্রভাতি কইতেছে।

किथि दिवत। विवृत्त आरह। देनः इत-शूता-বৃত্তবেতারা লেখেন, "যখন বল্প সকল ছায়াবৃত হুইল, তথন মহারাজা (ভিন্স) প্রণাম করিতে করিতে উত্তর দার দিয়া দেই পর্ম শোভাকর

মথাস্থানে নিহিত করিলেন।" এতদ্যার বেখ **इहेट उट्ट म उरकारन महा**विहात मगरतत विह-র্ভুত ছিল; কিন্তু উত্তর-কালে তাহা নগরের

বাস্তবিক, বিক্রমাদিত্যের ২৫০ বৎসর পূর্বইউতে ৩৫০ বৎসর পর পর্য্যন্ত, অনুরাধাপুরের অবস্থা था छिड्डून हिन। তাৎকালিক মহতी महली অউালিকার ভ্রথাবশেষ-সকল দেখিলে বিস্ময়া-নিত হইতে হয়। ঐ প্রাচীন নগরের প্রাচীর, যাহা ১১৬ দংবৎদরে গুথিত হয়, তাহার অবশিষ্ট কালে চণ্ডাল জাতীয় ৫০০ ব্যক্তি পথপরিকারক, ! চিহ্ন দেখিয়া নগরের বিস্তৃত আয়তন প্রতীত ২০০০০ প্রহরী, ১৫০ শববাহক, ও ১৫০ শাশানরক্ষক হইতে পারে। প্রাচীরের পরিমান চতুর্দিকে নিযুক্ত ছিল; এই চণ্ডালেরা নগরের পশ্চিমো-⊹৮ জেশে; সূতরাং ১২৮ চতুর্যু ক্রোশ পরি-

রাধাপুর ঐ সময়ে যে প্রকার উন্নতি প্রাপ্ত: মহাদেন নামক এক অভিরচিত্ত রাজার সময়ে क्ट्रेंशाहिल, তाङ्। এই বিবরণ-দারা বিলক্ষণ এই নগরের সৌভাগ্য-ভঞ্জের উপক্রম ছইল। িতিনি বিক্রমাদিতে/র তিনশত বর্ষেরও পরে 🕆 তিন্দ-নামক রাজার রাজত্ব কালে এই নগ- বর্ত্তমান ছিলেন। প্রথমতঃ বৌদ্ধ ধর্মের বিষ্কৃত্ तित भोष्ठय मर्नेट्डाভादि वृक्ति इयः मःवद चात- म्डानूशामी इहेश जिनि चानक वृहद वृहद चाही-জের ২৫১ বৎসর পূর্বে তিনি বুদ্ধদেবপ্রিয় পবি- বিকা ভগ করেন: কিন্তু, উত্তরকালে তাঁহার মত ত্র বটবৃক্ষ, গঙ্গাতীরহইতে লঙ্কাদ্বীপে আনয়ন পরিবর্ত্ত হইবাতে ভথা অউালিকা-সকল পুন-করিয়া অনুরাধাপুরের সমাপস্থ মহাবিহারে স্থা- বিরে নির্মাণ করিতে সচেপ্ত হইয়াছিলেন। সং-পিত করেন; তাহার প্রসঙ্গে অনুরাধাপুরের বং ষষ্ঠশতাব্দীতে ইহার সৌভাগ্যোমভির প্রতি चात्र वर्गायां कि स्थिशाहिल। अहे नगर्य चन्-রাধাপুরস্থ রাজবংশের সহিত মলয়বার লোকদের यूष (भव रुप्त मारे; रेरात मध्य প্रस्ताविक नगत मगति প্रविष्ठ इहेलन। ७९ णत नमाति इ-पूर्वक कथन तास्वरूपात अधीन, कथन वा आक्रमन-দক্ষিণৰার দিয়া বহিপত হইয়া মহাময়ো- কারিদের হত্তগত হইত। ইহাতে তাহা যে বি-म्धारम প্रবেশ করিলেন; ও চারি জন বৌদ। ভিছন হইয়া বাইবে, তাহা কদাপি আক্রান্ত बाता काबात প्रकिश कतिरलन; अवः किनि या- नरह। ४२० मःवयमस्त तास्रवः स्वा अक कार्य फ्ना क्रम बाजक्याद्वत महिल के देवेत्का माथा | चमुत्राथाशूत्रक शक्तिमान करतन। चामनेन्छा-

कोटि अक क्रम निःहन-रमभोग्न ताका ठाहात পুনকদারাথে চেষ্টা করিয়া কৃতকার্য্য হরেন নাই।

অনুরাধাপুরে যে সকল পুরাতন অউালিকার ভথাবদোৰ পতিভ আছে, তাহা দেখিয়া লঙ্কা-দ্বাপের প্রাচীন উন্নতাবস্থা কেহই অ্স্বাকার করি-তে পারেন না থুকরময়া, লোবামহাপয়া, জৈত-বনরাময়া প্রভৃতি প্রকাপ্ত হর্মা-সকল পথিকের মন-অবশ্যই আক্ষণ করে। বিক্রমাদিত্যের ২৫১ বংসর-পূর্বে তিম্স নৃপতি থুফরময়া অউা-লিকা নিৰ্মাণ করাইয়া ছিলেন: তথায় গৌত্ম দেবের কণ্ঠান্থি প্রোথিত থাকিবার প্রবাদ আছে। তা**হার নিকটে যে স**ফল চিত্রিত প্রস্তর-भग्न एक ६ वृष ६ मिः एहत मृद्धि पृष्ठे क्य, जाकात সংখ্যা কর। কেশকর। কয়েকটি বন্ধ প্রকাশিত ফ্টফাছে; পারি বা **লণ্ডনের অতি প্র**দারিত পথও_{়া} ভাষার ত্লা হয় **কি না সন্দেহ। বোবামহাপর**। নামা বাটিকা অতি বৃহৎ; তালা জতগামিন নাম্ভ রাজাকত্ক সংবৎমারকের ৯৪ বৎসর-পূর্বে গুথিত হয়। এই বেশা এক শত চতুরস্ হন্ত পরিমিত স্থানে স্থিত ছিল; ইহার উচ্চতা এক-শত-হত্ত; এবং ১৬০০ প্রস্তরময় স্তম্ভ ইছার শুলাধার। মটালিকার মধ্যস্তলে এক হস্তিদন্ত-পুষোর ও অপর-ভাগে টোপ্য-নির্মিত চন্দের এতিমূভি, এবং উদভাগে মৃক্তা-থচিত অনেক নকৰ মৃত্তি ছার। অপূর্ব-শোভা সম্পাদিত ছিল। अहे अछि। निका-दियस्य महादः स्था याहा निश्चिष्ठ चारह, চीन (मभीश (वीक ठीर्थयाजीपात राका बाहा छाँका मध्यमान स्हेबारक।

পুশোভরাইক।

প্রশা আহাদ कि? উত্তর। জীবনের মধ্, অলু-शास्त्र जाहा बाउँ। ७ चानमञ्ज्ञ हरू; किंड বহু-পানে গাত্রদাহ উৎপন্ন করে।

২ ৷ সম্ভোষ কি ? সুথে দেহ-যাত্রার মহৌযধি ; किन्न जनायात्म श्रामा वित्या लाएक हेराक नमारत करत ना।

৩। স্থ কি? প্রজাপতি-বিশেষ; পৃথিবী-क्षण-छेन्। निष्-नकरल् वालक-वर्णाहात्र शम्छाए-ধাব্মান হয়: কিন্তু ভাহার চঞ্চলতা ও ৰছ-বিষয়-পুস্পে ভূমণ-প্রিয়তা-প্রযুক্ত কেছই তা-হাকে আয়ত্ত করিতে পারে না।

ह। ভाগ্য कि? व्यवित्विक्ती त्रम्भी, त्य जारात অভ্যস্ত উপাসনাকারীকে পরিত্যাগ করিয়া ভাহার श्वानिहरकत निक्षे डेलग्नाहिका इहेग्रा मह्दान कर्त् ।

 शिक्रम कि? मम्/-िर्मियः शर्द्धत द/ए। তৎপান করিলে অত্যন্ত মনঃপ্রনাদকর ও হাস্য জনক, নিজ-বায়ে আনীত হইলে ভিক্ত ও অনহা বোধ হয়।

७। विठात कि? सनूरयात एमाय ७५ मिकाशास्त्र বিনিমিত সিংহাদন, তাহার এক-ভাগে স্বর্ণ-রচিত। তুলা যত্র। ইহলোকে ধনী ও পরাজনীয়া ইহার প্রকৃত ঢক চুরি করিয়া আনক মেকি চালাইয়া थारक।

> १। उन्न होन्हा कि? मूर्चर्य अथा नावधारन क्नारताव्य क्रिक इंडे निक **इंटेंट भारत, किंड** পড়িবার ভয় অনেক।

৮। वानगाकि । वाक्षान-वित्नव, श्राहारक पूर्वकिया नातिमापि-कान वातक ठाका मूर्तिक হইয়া দেশ চলন হয়।

বিবিধার্থ-সঙ্গৃহ,

প্রারুত্ত্তিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিণ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্ত



द्राहिलाम्द्रात श्रविशृति

রোহিলাদিণের ইতিহাস।

LLL अन्यक्तिक पित्र/विश्वितिरगद् क्षानमात्र जाशांक्रिशत कथीन न्वाराध्वता नकरमहे बाधोन-इहे-मार्थ बाद जेनाक्य कविशाहित्सम् अवः

श्रामंत्र कतिए जाङ्गाबिक इन माहे क्यानि कलका आक्र करहे निहाथिगिकितिरमें यथार्थ वेशीक्स क्रियम मा । तत्रः अक्ष्मटकरे व्यालनाविध्यत्र क्षम-णात्र वाधिका कार्यानार्थ शामनार्विराज्ञ वास्त्रा अक्षानामार्ग व्यवस्था कविर्यन, ध नावाणुजात वरिष्ठ बरनदके से अधियात लाइकिन लाइकात्र छविनदक बत विद्याल कृति कति का विद्याल সুবাদারদিগের রাজবিদ্যুক্ট মোগল-রাজ্যের উৎসাদন ভইবার এক প্রধানকারণ। রোহিলা-দিগের ইতিহাস এবিষয়ের এক দৃষ্টান্ত স্তল।

উক্ত জাতায়েরা আফগান বা পাঠান বংশ-জাত: ভারত্বর্যের বায়ুকোণ্ড ছিন্দুকুশ-গোর প্রভৃতি পর্তবাদী পাঠান-বংশই তাহাদের আ-জয়: গজননাধিপতি মহমুদ পাদশাহের লোকা ह्युत-इंश्टरनंत शत छेक शार्तान-वंश्मीरवृता शुन्ध र ভারতব্য আক্রমণ করিয়াছিল, এবং অবশেষে ভড়োতীয় শাহাবুদিন নামা এক ব্যক্তি দিলীর 🌣 রাজান-ছাবনে আরোছ্। করে। তৎপরে ক্রমা-খ্যে প্রায়ঃ চারি শত ২ৎসর কাল পাঠানের: ভা-व्यटरप्य हाक्या कितिशाष्ट्रित । २०৮२ नःदर्भ नति (मा-গল-জাতায় বাবর শাহ পাঠানদিগের হস্ত্রত ভারত্য অপহরণ করেন। তদব্ধি দিল্লারাক্য (भाराम्बिराम् इस्मा इस: (क्रम भर्धा अवदाः পাঠান-চলভীয় মেচেনাদ-ফরীদ-শের শাহ ছামা-যুদ্দ পাদপাতের নিকটত্ইতে দিল্লীর রাজমুকুট এ-ভাপাছরণ করিয়া লইয়াছিলেন, কিন্তু তাহা অপ্পা-কলে-ম্পেটে তাদার ক্তত্ততে অপস্ত হয়। ঐ কাল অব্ধি পাঠানেরা ভারতকর্ষে সম্পূর্ণক্রণে স্থা-ধানত নাজাগ করিতে পারে নাই। পরস্তু ভাহারা न्द्रमा श्रीवारनत यादा भेगा हिन, बदः ভाরত-नत्वत अध्यक-छात्र भ्वामाति वा कमू २ हाजा। স্থাপন ব্যিয়াছিল। ঐ সকলের **মধ্যে সর্ব-শে-**যে রোহিলখণ্ড রাজ্য ভাপিত হয়। পূর্বে ঐ প্রদেশের নাম কুটাহের ছিল। ভাহার স্থিতি क्रायाधात शन्तिम, शक्रामिशेत शूर्व अदः कूमायुम পৰ্যের দক্ষিণ। এই নীমান্তর্গত ভূমি ত্রিকোণা-কার, এবং প্রচুর-শন্যশালিনা; ভাগতে মোরা-माराम, विदर्भा, इस्पृत, खेन! अक्षि कानक বৃহয়গর আছে।

स्मागन मुम्हितिरात **ख्यान्ना**त्र य नकन বিদেশীয় যবনেরা ধনলাল্যায় ভারতবর্ষে সমা-গত হয়, তক্মধ্যে অনেক কৃছি বা কৃছিল জা-তীয় পাঠান ছিল; কুটাহের প্রদেশে তাহাদের শাস হওয়াতে ক্রমশঃ ঐ প্রদেশের নাম পরিবর্জ হইয়া রোহিলখণ্ড-শব্দে প্রচারিত হয়। এই সকল कहि वा রোছিলা পাঠানদিগের মধ্যে শাহ-আ-লম্ এবং হোসেন খাঁ নামা দুই ভূাতা ১৭২৯ সং-বৎসরে কুটাতের প্রদেশে আলিয়া বসতি করে। তাহার৷ সামান্য ব্যক্তি ছিল, ও সামান্য কর্মে দিনপাত করিত। হোদেনের তিন পুঞ্জ, ডুঞ্জি খাঁ, निशाम थी, बदः मिनावर थी; उनादा (काष्ठ পুঞ্চ প্রনিদ্ধ হইয়াছিল। শাহআলমের দুই পুঞ্ मायुम थाँ। **এवः तहम** थाँ। এই উভয়ের मध्य उड्म वाणिका-दावनायः नियुक्त हनः ६ मात्रूम কতকগুলি সমর্থিয় সহ্চর সমুহ করিয়া দিল্ল্য-থিপতির অনাত্তার (উ**জিরের**) বৈন্য-মধ্যে পরিগ%, হ হইয়। মহারাষ্ট্রীয়দিগের বিক্থে যুদ্ধ যাত্রা করেন, এবং ঐ যুদ্ধে আপন বার্যাও সমর-কুশলতার অনেক উৎকৃত প্রমাণ প্রদর্শন করেন, उश्वकात-चक्ल उक्तित्वत निक्षेष्ट्रेट वृमा-छेन् প্रদেশটি প্রাপ্ত হব। তদনস্তর তিনি কুশাযুদ প্রদেশীয় রাজার নেমাপতি-পদে বৃত বাকিয়া প্রচুর-সম্পত্তি সঞ্চয় করিয়াছিলেন। তাঁহার দুই পুঞ, মোহমদ, এবং ভালীমোহমদ। ত**ন্ধথে দা**-युरं क्रिक्टिक चाजास द्वियं मानिएकन, अ लाहारक যুদ্ধ-বিগুছাদি-বৃদ্যপারে উত্তম-শিক্ষা দিয়াছি-লেন। তাঁহার মৃত্যুর পর আলীমোহআদ পিত্-म्हेरिकान्पादा चलन-मम्बिर/श्राहाद यूच-याजात्र প্রবৃত্ত হন।

७९कारम बाक्रमर्डेझा थे। नामा अक व/कि भाजामानाम-श्रामण्डा कोजमात्री-मरम अकि-

বিক্ত ছিল; সে আলীমোহম্মদকে আপম-সৈন্য-মধ্যে নিযুক্ত করিয়া নিজাধীনস্থ কোন প্রদে-শের কর সম্ভূষ করিতে তাহাকে প্রেরণ করিয়া-ছিল, এবং তাহার কর্ম-কুশ্লতায় সম্ভুষ্ট হইয়া কিয়দিন-পরে দিল্লীর পাদশাহের নিকটহইতে কোন পরগণার তহুশীলদারী-কর্মের এক সনন্দ-পত্র আনাইয়া তাহাকে দেয়া এই ঘটনার অপ্প দিনানন্তর আত্মৎউল্লার্থা কর্মচুতে হয়; ইত্য-वकारम कालीरमाङ्ग्रम ब्राज्ञकब-धारारन विब्रज ষ্ট্য়া নেই অথে স্বজাতীয়-সৈন্য-না**ন**স্ত-নসুহে প্রবৃত্ত হট্য়াছিল; মধ্যে২ পাদশাহের সভাস্থ প্র-ধান ২ কর্মচারিদিগের মুথে উৎকোচ-মথুদা-नि कृषि करत नार ; फनकः भिल्लीश्वत जरकारन এমত নির্বাহ্য হইয়াছিলেন, এবং তাঁছার সভা-नरम्ता अञाम्म पूष्ट्रियाचि इहेशाहिन, य রাজবিদ্যোহরাও উৎকোচসাহায্যে অনায়াদে নিফ্তি পাইত। আলীমোহখাদ এ অবস্থা খজাত ছিল না; বরং তদুপরি নিভর করিয়া সে দিল্ল/ধি-পভির "মির বক্সি," অর্থাৎ সৈন্যদিগের বেতন-দাতা ওম্দৎউল্যুলক নামা জনৈকের প্রতিনি-ধির দহিত যুদ্ধ করিয়া তাহার সমস্ত ভূমি **সম্পত্তি ও** কামান-প্রভৃতি যুদ্ধ-সজ্জা অপহরণ कतिया नरसाहिन। अस्र ६ छन्मुल्क अहे वाउन शाम्मारम्बं कर्नरगान्त्र कतिया विनात श्रार्थनात बूषि करत मारे, किन्छ श्रधान मञ्जी कमकफीन् আলীমোহমদের পক হইয়া তাহার সমস্ত চেষ্টা ৰাৰ্থ করিয়াছিল। किय़ कान भारत, প্রদেশের বৈয়দ্উদীন্ নামা এক জম রাজ-বিদ্যেষী জমিদারের প্রাণ-বিনাশ করাতে অপছত गमेख প্रদেশের জায়গিরি-गगम-পত্ত ও मधान-गृहक পूत्रकात তिनि चानात मारम श्रमान कतान। ब्राक्षिरिद्राण्ति अञ्चापम शूबकात मृद्धे जनरमञ् চমৎকৃত হইল; এব॰ পাঠান মাত্রেই ঐ উৎনাহপূর্ণ-সেনানায়কের অধীনে যুদ্ধ করিতে আগুহাদ্বিত হইল। আলীমোহস্মদও অধিকৃত-ভূনি-সকল
ছিল না। সে স্বজাতীয়দিগকে অধিকৃত-ভূনি-সকল
বিভাগ করিয়া দিয়া ও অর্থাদি-প্রদান-প্রলোভনে
আপন-বদে আনিতে কোনমতে তুটি করিলেক না।

এই मगरत्न चलत अक घटेना इस, जाहारिक তাহার সমগেকপে মৌভাগ্য-বৃদ্ধি হুইয়াছিল; রাজমন্ত্রির নিজ-বিষয়ের মধ্যে গণ্য ছিল; তাহার क्द-मञ्जूर-कद्दनार्थ्य डिनि होदानक नामा क्रंटन-ককে কতকগুলি সেনা-সমভিব্যাহারে প্রেরণ করি-য়াছিলেন। দে ব্যক্তি মোরাদাবাদে স্মানিবাশাত্র আলিমোহখাদের সহিত আপন প্রভুর অধিকারের নীমা বিষয়ক বিবাদ উপস্থিত করিয়া যুক্ পরাস্ত ও গুপ্তহন্তার হয়ে হত-প্রাণ হয়। প্রধান মত্রী কমকদীন্ এই বার্ত্তা শুনিয়া মহাবল-পরা-জান্ত-সেনা-সমভিব্যাহারে আপন পুঞ্জ মীর-মন্ত্র পাঠাইয়াছিলেন; কিন্তু সুচতুর আলী-**মোহ্মদ তাহার পূ**ত্রের সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিয়া অনায়াদে আপদ্হইতে মুক্ত হইয়া-ছিল; অধিকন্ত রাজমন্ত্রির সহিত বৈবাহিক-সম্বন্ধ সংস্থাপন করিয়া আপন-ক্ষ**ন**তা সম্চক্ বৃদ্ধি-मठो कतिदनक।

बहे श्रकात (मागनिम्दित इस्ट्रहेट ममस (ब्रा-हिनथल-दिन वर्जन कित्रा व्यानीत्माहव्यम बश्रक-वानो कूमायून-दिनाधिशिवत विक्यस मसुमादि वस्र्यात्त करत्न। बे ताका व्यक्ति निर्वीर्ध ह मास्र-बहात हित्तनः, पूर्णास (ताहिनामिद्देश बाक्तमद्रम वहात होत हहेता सम्बाशिका कार्यात्म-शृद्धक श्राप्तात्म-शृत हहेत्तन। ठाहात दम्बाशिवत ना-द्राम्नात्त ममत्र-मस्त्रा कित्रशाहिन कर्षे রোহিলাদিগকে দমন করিতে অক্ষম হইয়া অব-শেষে আপন প্রভার দৃষ্টান্তানুগামী হইল। আলী-মোহম্মদ অবাধে কুমায়ুল-প্রদেশ-লুগুন-পূর্বক প্রচুর সম্পত্তি নঞ্চয় করত হরাজ্যে প্রভাগিমন-সময়ে কুমায়ুনাধিপতির সহিত সন্ধি করিয়া বা-যিক তিন লক্ষ টাকা কর নির্দার্থ করিয়া আইদেন।

অতঃপর কিয়দিনের নিমিত্ত আলীর এক ভয়ানিক বিপদ্ ঘটিয়াছিল। অযোধ্যার নবাব সফ্লর-জন্প রোছিলথণ্ডের নিকটন্ত অর্ণ্যহুইতে কিঞিৎ শাল-কান্ত আনয়নের নিমিত্ত কএক জন লোক পাঠাইয়াছিলেন; ভাহারা প্রভুর আজ্ঞা প্রতিপালনার্থে অর্ণে আদিবামাত্র আলালী প্রতিপালনার্থে অর্ণে আদিবামাত্র আলালী আন্তর্গ কর্ম ক্রিত্ত হইয়া তথকানে উপন্তিত হইয়া তথকানে পাদিনাহের আশুয় প্রতিনা করিলেন। এই সময়ে আলা আপন বাল্যমদ্দ মত্ত হইয়া কেশলচেন্তার জুটি করালতে, দিলার পাদশাহ্ সনৈনের আশিয়া তাঁলিক পরাত্ত ও কলা করিয়া আপন রাজপাটে লইয়া যান।

আলী দিল্লী-নগরে কিয়দিন বাস করিতে ২
একদা তাঁহার অনুচরবর্গ কএক সহসু রোহিলা
আতায় ব্যক্তি রাজঘারে আসিয়া আলীনোহস্পদের
মৃক্তির নিমিত অত্ত গোলযোগ উপত্তিত করিলেক; তৎকালে পাদশাহের নৈন্য-সকল বিদেশে প্রেরিত হইয়াছিল; নিশেষতঃ কাবুলাথিপতি আহমদ্শাহ আব্দালা ভাতরবর্ষ আক্রমন করিতে আসিবেন, এই জ্নরব হওয়াতে
পাদশাহের সৈন্যের প্রায়ঃ অনেকেই পঞ্জাবদেশে
উপস্থিত ছিল; কেইই দিল্লী-নগরে বর্জমান ছিল
না; অতএব বহুসত্থাক সমরপ্রিয় রোহিলাদিগকে রাজঘারে দেখিয়া অমাত্যবর্গ সকলেই আ-

গুহাতিশয়ে আলীমেহামদকে মুক্ত করিয়া দিতে পাদশাহকে পরামর্শ দিতে লাগিলেন : রাজাও বর্ত্তমান শক্ষটহইতে মুক্তির কোন সূলভ উপায় না পাইয়া ভাহাতে সঞ্চত হইতে বাধ্য হইলেন; কিন্তু রাজবিদ্যোহা আলীমোহম্মদকে পুনরায় রো-হিলথণ্ডে না পাঠাইয়া সরহিন্দ-দেশের কর সন্তু-হার্থে প্রেরণ করিলেন।

আলী নরহিন্দ-দেশে অতি অণ্প দিন মাত্র ছিলেন। তদেশে তাঁহার যাত্রা করিবার সম-যেই আহমদ্শাহ-আবদালি ভারতবর্ষে আগমন করেন; ও তহিহুদ্ধে সমরসভ্জায়রাজমন্ত্রা ও সৈন্য সামস্ত নকলের বাগুড়া থাকাতে তিনি অনায়ামে সরহিন্দের সমস্ত কর সমুহ করত তৎসহ ঘদেশে প্রস্থান করিতে সক্ষম হইলেন। অপর ঐ অর্থে তিনি অনেক সৈন্য ও যুক্ষসভ্জা নমুহ করিয়া তৎসাহাযে। রোহিলগপ্তের নিকটস্থ নকল ভুম্য-বিকারিদিগের সম্পত্তি অপহরণ করিয়া উৎকৃষ্ট ধনাত্য হইয়া উঠিলেন।

দিলাধিপতি মোহসদ-শাহের মন্ত্রী কমর
উদীন সাহ্মদ্শাহ-আব্নালির লহিত যুদ্দে
নিহত হইয়াছিলেন, ও তৎশোকে মোহসদ শাহও বরায় পরলোক যাত্রা করেন। এই অব-কাশে আলীমোহসদ নির্বিদ্ধে রোহিলখণ্ডে পুনঃ-ভাপিত হইয়া প্রতিবাদী হিন্দু-রাজনাবর্গকে দেশতাত করত ভাহাদিগের অধিকার আপন সহচরহিগকে প্রদান করিলেন; প্রকাপালনের ও কর-সন্তুহের বিহিত নিয়ম নিজারিত করি-লেন; অমাতা-বজু-বাজবদিগের মজলার্থে যথা-বিহিত নিজর ভূমি ও বার্ষিক কিছু ২ অব-থারিত করিরা দিলেন; কল্তঃ গর্ম-প্রকারে আপন ক্ষতাবৃদ্ধির চেতার নিযুক্ত ছিলেন।

অপত্যেরা পৈত্রিক স্বত্ত্ব লইয়া বিবাদ বিসংবাদ । মৎ সূজাউদৌলাকে ৪০ লক টাকা পারিতো-করে এ নিমিত্ত তিনি আপন পিতৃব্য রহমৎ थाँक প्रकृतिका "शक्तिक" व्यर्था तक्का এবং পিতৃব/পুত্র ভুণ্ডিখাঁকে সেনাধ/ক্ষ পদে नियुक्त कतिलान, ও धन्याना ध्रधान समा-তীয় ব্যক্তিবর্গকে ষথাযোগ্য রাজকার্যে নি-युक्त कतिया निरलन। এই नकन ও এবল্পুकाর মধ্যে রোছলথণ্ডদশ অতি মান্য ও গৌর-বাম্বিত হুইয়া উঠিল; এবং রোহিলাদিগের नाम ভाরতবর্যের সর্বতে অধ্যা হইল; সকলে গণ্ড, অতএব হাফিজ রহমৎ খাঁ ষয়ং বা- সাহায্য করিতে প্রবৃত্ত হইল। লকদিগের নামে রাজকার্য্য সম্পাদন করিতে তিনি রোহিলথও-রাজ্যের প্রধান অংশ আ-পন অধীনে রাখিয়া অবশিষ্ট ভ্রাতৃপুঞ্জিনিকে বিভাগ করিয়া দিলেন; পরস্তু ভাছাতেও বি-वारस्त्र त्मय इम्र नाहे; मर्था ६ शृह विरम्हर ७ পরস্পার যুদ্ধও পুনঃ২ ঘটিত। অধিকন্ত অযো-भात नवाव मूका उप्लोग ও महाता हो य ताका-রাও তাহাদিগের বিৰুদ্ধে অজ্ঞ ধারণ করিতে कृष्टि करतम मारे; किंख शांकिक त्रश्माकत नमत देवशूर्वा अक्टबर शहाख्याना हिरमन।

यिक निटंड बीकृठ इहेशा डाँहात नाहाया नहे-য়াছিলেন; কিন্তু পরে অভীষ্ট সিম্ব হইলে আপন প্রতি-শ্রুতি রক্ষায় অবছেল। করেন। সুজাউদ্দৌল। এই প্রকারে বঞ্চিত হওয়াতে অত্যন্ত ৰুট চ্ই-য়াছিলেন, কিন্তু স্বয়ং রোহিলাদিগের বিৰুদ্ধে অস্ত্র ধারণ করিতে ক্ষমতাভাব জানিয়া শুরূ থাকেন। অন্যান্য অনেক সল্লিয়ম সংস্থাপনে অপ্প দিন- পরস্ত সে ঘটনা তাঁহার মনহইতে বিস্ফৃত হয় नाइ; ১৮२৮ मःवर्गत इंग्डाक्यिति निष्ठ তাঁহার এক দল্ধি হয়; সুজ। ইত্যবকাশে ইং-রাজ্দিগকে ৪০ লক্ষ টাকা পুরস্কার ও যে তন্নাম শুবণমাত্রেই কম্পিত কলেবর হইত। কিন্তু পর্যান্ত যুদ্ধ উপস্থিত থাকিবেক তৎকাল পর্যান্ত এই প্রকৃষ্ট রাজ্য সংস্থান করত আলী বহুকাল মাসিক ২॥ লক্ষ টাক। দিতে স্বাকৃত হুইয়া রো-তাহ। मरञ्जान कतिराज भारतन नाहे। ১৮०৫ मर-े हिलामिरनत मसनालं माहाया প्रार्थना कतिरलन । বৎসরে তাঁহার মৃত্যু হয়। ভৎকালে তাঁহার তৎকালে ইংরাজেরা ধন লোচে অভ্যস্ত মুখা ছয় পুঞা বর্ত্তমান ছিল। তাহারা সকলেই অপৌ- ছিল অতএব অনায়াদে কএক দল সৈন্য দিয়া

 ७३ नकान्ताद्व मःव< ३৮०० हेः बाक अ लाशिरलन। ७९कारयँ । जिनि विस्थय शांत्रमर्भी , जारयाद्यात देमन । महाममारतारह (ताहिल**थर्थ** ছিলেন; কিন্তু কলহপ্রিয় রোহিলারা তাঁহার যাত্রা, করিল; হাফিজ রহমৎও ভাহাদিগের বি-কর্ত্বে সম্ভুষ্ট না হইয়া সর্বদা বিবাদ বিসংবাদ : ৰুদ্ধে সাধ্যানুসারে সৈন্য-সামস্ত প্রস্তুত করিয়া উপস্থিত করিত: এই প্রযুক্ত কিয়ৎকাল পরে কুটারনগরে তাহাদিগের প্রত্যক্ষা করিতে লাগ্নি-লেন। অবশেষে ২• সে আপ্রেল দিবলে উভয় সৈ-त्यात नाकार हरेल; अवः উভয়েই नमत नाधान बूर्षि कतित्वक ना, किन्न टेम्वार शक्तिक श्रीवत আঘাতে নিপতিত হইলেন; এবং তদ্ধ্তে তা-रात देननामन रुजाना रहेया भनायनभन रहेल।

व्यानीत्मारकारम् उठीस मूख रेकजूला थी कहे यूषा उनिहर हिलान, अवः, नाथगन्तादा मञ् गःशात जूषि कात्रम मारे; किन्न शाकिरकात अकात रेनम्ब्रिंग्स्क बक्ज द्वाधिए जनक इहेन्ना जन-ः अक्षा महाताङ्कीयन्दिशत समनादर्थ हाकिस तह-। भारत अनावन केत्रक शतिवात ७ मन्युखि नहेशा

রাও সকলে ঐ স্থানে আসিয়া প্রায় ৫০,০০০ ব্যক্তি তুষ্টির জন্য উল্লিখিত করিতে চ্ইল। যথা, **ब**क्ब हरेन।

এদিকে মিলিত ইংরাজ ও অযোধ্যার সৈ-न । ११व च च च निर्म १९६० शूर्वक ताहिना पिशक রোহিলখণ্ডহইতে উৎসন্ন করত লালডং আক্র-মণ করিলেক, ও তথায় উভয় শতু প্রায় দুই মাশ কাল পরস্পার সম্পন্থ থাকে। পর্যাব-দানে ফৈজুল্লরে অবশিষ্ট নগদ টাকা ও মণি যুক্তাদির অন্ধেক লইয়া অযোধার নবাব ामश्र अम्पात नवावी श्रम ७ षामण नक ाका वार्षिक चारशाशयुक्त ভूमि अनानशृदंक াহার বহিত সন্ধি করেন: কিন্তু তাহার সম-ভবণালারি প্রায় বিংশতি স**হসু রোহিলাকে** পরিবারে রো**হিলখণ্ড হইতে দূরী করণ করেন।** मविध ভाরভবর্ষে রোহিলাদিগের উৎসয় হয়, दः আলামোহস্দ কর্ত্ক স্থাপিত রাজ্যের সমুদায় রাজত কাল সঙ্থ্য .. ৩১৭৩ বৎসর। কেবারে লোপ হয়। রামপুর প্রদেশে ফৈজুলার । শার জনৈক নবাব অদ্যাপি বত্রমান আছেন, ন্ত্র তাঁহার বৈন।নামন্তানি কিছু মাত্র নাই।

উष्टिगात ताजावनी।

करन 'ठाफरनात . ताका नामना कि-विवयक हे जि-रमञ विस्मय (लथा याकेरक रहा উৎকলের ইতিহাস লেথকেরা কছেন কলিযু-র প্রারম্ভাবধি বিক্রমাদিতেরে রাক্সাবসান্

কুমাউন্ পর্বভোপরি লালডং নামক নগরের দুর্গে। পর্যান্ত ভারতবর্ষে ক্রমান্তরে ১৩ জন রাজা রাজত্ব অবস্থান করিলেন। যে সকল রোহিলারা খদে- করিয়া গিয়াছেন। ভাঁছাদের নামোলেথ করা এ-শের- স্বাধীনতা রক্ষার আশা রাখিত, তাহা-িস্থলে অপ্রস্তুতাভিধান হইলেও পাঠকগণের পরি-

• •			•		•
যুধিষ্ঠির দেব,		• •	• •	১২	বৎসর
পরিক্ষীৎ দেব,	,	••	• •	969	• •
জনমেজয় দেব	• • •	• •	• •	670	• •
সম্বর-বা-শঙ্কর	দেব,	• •	• •	8>0	• •
গৌতম দেব,	• ••		• •	290	•
महीन्द्र (एव, .			• •	२३४	. •
चिंछ (एव, .	• ••	• •	• •	208	
সেবক-বা অশে	गाक (म	₹.,	• •	74.	• •
वजुनाथ,	•	• •	• •	703	• •
শরশঙ্থ, .	• • •	• •		>>@	
হ:স,		• •	• •	१२२	• •
ভোজ,		• •	••	129	• •
विक्रमानिक/,	•	••	. ,	200	• •

ताक চরিত্র নামক উৎকল গু**ষ্টের মতে** এই রাজবর্গের শেযোক্ত বিক্রমাদিত্য লোকাস্তর গমন কালে এক পুঞ রাখিয়া যাম। তা**ছার নাম কর্ম**-किं वा क्यामिल। हे मि कियू कान के ज़ियारम्य শাসন করত, গ্রিমান প্রুষোত্তম জগরাথ দেবের ज्ञानक क्षेत्रा १७ ग**्ल शहरनाक बाळा करतन।** श्री क मानिक विविधार्थ-मञ्जूद्ध छेरकल जम्मखा वर्षे दिन्मती, जिल्लाम तम्म एकत, विश्वास एकत, विश्वास एकत, विश्वास वर्षे वा अकुरमदमा मामा, मरणान, छना- क्षिम एक नामक जाति क्षम हाका व्यममूक्करम हा-্তির্কুট্টি ওণ, প্রভৃতির বিবরণ করা গিয়াছে,। জন্ম করিয়াছিলেন। ইহাদের রাজ্য শাষণ কালে যবনেরা আনিয়া আক্রমণ করিয়াছিল; একারণ देशारम्ब नाम अथारन উল্লেখ করিছে एरेस, जान-রাধারের নাম প্রয়োজনাভাব প্রযুক্ত বাক্ত করবে जनावना करे उजुराजावनित कश्चिम हाकाइ

নাম শোভন দেব। তিনি ৩১৮ সংবৎসরে উডু ताक निःशामन अधिकांत करतन। खे वर्राक कान वः लाफिय क हिरलन. जारात किहूरे देश्या नाई। किश्वपञ्जी चार्ट्स ठाँहात ताकाकारन यव रन-রা ওড়ুদেশ আক্রমণ করিয়াছিল। তদিশেষ এই तकुवाङ् नामक **এक छन উ**দাদীন বা यवन উৎ-কলদেশাক্রমণের অভিসন্ধিতে বহুসঙ্থ্যক-দেনা मञ्जूह-পূर्दक व्यश्ननीय इन्छाश्च मम्बिन्गहारत লইয়া অৰ্বযানে আৱোহণ করাইয়া জগন্নাথ দে-বের ক্ষেত্রের কিয়দূর অন্তরে সমুদুত্ট-সমীপবর্ত্তি-স্থানে নজর করিয়া অবকাশ প্রতীক্ষা করিতে লা-গিল। ঐ সকল হাতি ঘোড়ার বিষ্ঠা ও তৃণাদি ভূরি ২ প্রবাহিত হইয়া তটাগত হইতে দর্শন করিবামাত্র কতিপয় নগর নিবাসি লোক তৎ-ক্ষণাৎ ভত্রস্থ নরপতি সন্নিধানে অনিয়ত কালে উপস্থান পূর্বক সবিনয়ে এই नমাবেদন করিল; "মহারাজ, অনুমান হয়, আপনার রাজ্য আক্র-मन कर्तनाज्जितास स्वान विशक गरेमनामान निक्षेष्ठ इरेग्नाष्ट्र, मल्मइ नाई "। अरे पूर्वाखा কৰ্ণথগামিনী হইবামাত্র ভূপাল অভিমাত্র ভীত हरेश श्रिमन्प्रहरेट एन्टापिएन श्रीमञ्ज्ञ महाथ प्रत्वत भीमृर्खि नानाविध वस्मूना चनत्रज्ञान-कात ও जामू शिवनमय भूष्णाभरयाति भावािम সহিত এক বস্তাবৃত শকটে আরোপণ করাইয়া তৎসমভিব্যাহারে শোণপুর-গোপলা নামক নগ-ति श्रष्ट्य (वर्ग श्रज्ञान कविरणन। खे ज्ञान काँकात तारकात शक्तिम मीमाय। अम्टिक अ यवन ভটস হইয়া এবং রাজাকে দেখিতে না পাইয়া नमस्मित-नभन्न मूर्छन कत्रक कथाम महा डेनमुर উপস্থিত করিল। আক্রামকগণের অত্যাভার সূত্র क्षित्रा ब्राक्ता लाहे अपूर्ति मृखिका मरधा श्या-विक क्षित्रा अपूर्णात अस वके वृक्त होतान क्षित्री

রাখিলেন, এবং শ্বয়ং দূর্বর্ত্তি নিবিড় অর্ন্য-মধ্যে পলায়ন করিয়া গেলেন।

যবন দল তত্তাবতের কিছুমাত্র অনুসন্ধান না পাইয়া তত্ত্ৰত্য প্ৰজাবৰ্গকে জিজ্ঞানিবাতে সমৃদু তীরবাসী কতিপয় ইভর জাভীয় লোক, যে পথ দিয়া গেলে তাঁছার উদ্দেশ পাওয়া যায় তাহা कानाहेश फिल। तक्कवाङ् अञापृत्र शालानत অপ্রকাশে সমুদ্রে প্রতি নিতান্ত রাগান্ধ হইয়া **७**য় अम्मॅन जन्य निज रेमना मामस्रक हेशांत्र জল তাড়না করিতে আজ্ঞা প্রদান করিল। সমুদ্ এতাদৃশ ঘোরতর যবনাক্রমণ ব্যাপার নয়নগো-চর করিয়া তৎস্থানহইতে প্রায় এক ক্রোলা দুরে পলায়ন করিল, অবোধ যবনেরাও ক্রোধভরে ভাহার প্রতি জভবেগে ধাবমান হইতে লাগিল। व्यन्छत छेलानजतक्रमानामकृत महार्यात शबीत নিনাদ ভয়ানক পয়োরাশি প্রবাহবূ/হ-সমস্ভি-ব্যাহারে পুনর্বার প্রত্যাবৃত্ত হইলে তাহার করাল গুানে দেই মহতা দেনার অধিকাংশ পতিত एक्त, अवः महाविख्ठ **एका नमूनाय अक कारल** জলপাবিত হইয়া গেল। বন্য খুদার বরোকৈ পর্বত পর্যান্ত অগুসর হইয়া ৰবাহিত বালুকার তত্তাবৎস্থান বালুকাময় করিয়া গেল। ঐ সম্ থেই সামৃদ্রিক জলের পরিক্রত ভাগে চিল্কা-क्राप्त पृष्टि रुष्ता अथारन ताका अनि विनर्ष्ट জলল মধ্যে প্রাণ হারাইলেন। অনন্তর তাহার পুত रेमुप्रव शंकितिःशंगनाधिकाः रहेता चा-क्याकता जाहात थान नःहात कतिया किनिन। **उ**परिथि क्रमाग्रङ >८७ वर्मद्र शर्याञ्च यदन दः म **७७ ताका मामम करत। शरत ००० मकार्यः** जे नागत्नत शर्य। क्या

वरे मण्यू भारते. त्याथ इस हात मखन या विः रनपोगहरेट आगड काम समस्य मत्- ঞ্চলস্থ যবন জীনিবার কোন সম্ভাবনা ছিল না।

এক্ষণে আমরা তত্রস্থ বর্ত্তমান কেশরা বংশের বিবরণ করিতে প্রবৃত্ত হট্লাম। ৫২৯ সংবৎসরে ले वर्तमञ्ज निर्दाननाधिताह्य-शूर्वक हाङ्ग्र-मा-नाम प्रावेश हरा। अहे नमशाविध ज्याकात ইতিহাস আমরা যথার্থ বলিয়া গণ্য করিতে পারি, उदश्दंत ताजनः भारतित है ठिहाम अख्ति। (म যাহা হউক, অভিনব রাজ বংশের আদিপুরুষের নাম য্যাতিকেশরা। তিনি অতিশয় যুদ্ধবিদ্যা-বিশারদ ও বিরতিশয় নাছসিক ছিলেন, কিস্তু কিনি কে বা কোন স্থান ছইতে আদিয়াছিলেন, গত হয় নাই। তিনি যবন হস্তহইতে এ রাজ্য নানা ভানে যাহারা পলায়ন করিয়াছিল, রজু-ম্ভ করিয়া স্বাধীন করেন, ও যবনেরা তথাহইতে। পুর নামক দেশে তাহাদের বংশীয় অনেককে নিজ দেশে পলায়**ন করে। য**থাতিকে**শ**রী যাজপুর নগরে আপন রাজধানী সংস্থাপন ও তথায় নৌর পূজক কংশের সহিত কি ৰূপে পূর্বৎ সমা-লানে প্রনিদ্ধ অতি রমণীয় চতুর্ঘারবিশিষ্ট এক রোকে জগন্ধাথ দেবের পূজা কার্য্য নমাধা ছইতে প্রানাদ কিয়া দুর্গবঁৎ সুরক্ষিত স্থান নির্মাণ করি- পারে, তালিষয়ে পরামর্শ স্থির করিয়া আর একটি ভাজিনের ভাজারি রাজ্যশাসন কালে এমান্ অভিনব এমুর্তি নির্মাণ করা যুক্তি সিদ্ধ বোধে জগনাথ দেবের খ্রীমৃত্তির পুনক্ষার ও তৎপূজার : তাহাদিগকে আদেশ করিলে, তাহারা নিবিড়ারণ্য পুনঃ সংস্থাপন হয়। গণ্প আছে, মনে ২ কোন কলৌকিক ভাৰ উদ্ভুত হইলে রাজা যযাভিকেশরী 🖰 वरः পুৰুষোত্তমকেত্ৰে গমন পূৰ্বক তৎস্থান নিবাসি ব্রাজাণদিগের প্রমুখাৎ সার্জ শত বং-নরভেরিত তৎকাল প্রচলিত পুরুষ পরম্পরাগত সহকারে সুচাঞ্চ পরিচ্ছদে নেই সমানীত দাক-জগন্নাথ দেবের খ্রীমূর্ত্তির অদর্শন ব্যাপার প্রবাদ শুবনগোচর করিয়া শোনপুর-গোপলির গছন বন দর্শন করিতে মনস্থ করিলেন। রক্ত বাহুর আজ্মণাবধি এতাবৎ কাল পর্যান্ত ঐ স্থানের কোন প্রদেশের মৃত্তিকা মধ্যে ঐ শ্রীমৃত্তি গুপ্ত মন্দির নির্দিত হইল। তৎকালে পুরাতন ক্ষিত্রটি

সম্বন্ধে ইহা ক্লিপ্ড হইয়া থাকিবেক; কারণ রক্ষিত ছিল, তাহা কাহারো মেত্রপথে পতিত त्मांखन (मरवंत तांका कारन मसूपू मित्रा शिकानां एस नाहे। ताका यंगांखिरकभाती व्यक्त्वकारण ্ষেই বনোদেশে উপস্থিত হইয়া ইতন্ততঃ অস্বে-যণ করিতে ২ যে স্থলে প্রামৃত্তি মৃত্তিকাগতা हरेश। मूत्रिका हिटलन, मिट छल प्रिंशिट शाहे-লেন। দৃষ্টিমাত্র তিনি পেই বট বৃক্ষ চ্ছেদন করি-য়া ফেলিলেন; এবং তম্মূলস্থল খনন করিতে ২ এক পাধাণময় পাত্রে অন্যান্য মুভির সহিত প্রীমজ্জগন্নাথদেবের খ্রীমৃত্তি দেখিতে পাইলেন, কিন্তু কালসহকারে ভাহার অবয়ব সকল চুর্প্রায় क्रेशिक्त। नमनलुत ब्राका ययाजिएक नदी (मह দেবের সেবক বা পরিচারক পূজক ব্রাহ্মণদিগের বংশের অনুস্বানের উদ্যোগ করিতে লাগি-তাহার কিছুমাত্র আয়াদের জ্ঞানভূমিতে সমা- লেন। যবনদিগের আক্রমণকালীন প্রীচইতে **(एथ) गिश्राष्ट्रित। यहाँग्रा ताका** (नहें नकत मस्या প্रतिष्ठे रुहेश প্रতिमा निर्मागर्थ माखाङ अन्मानि मार्क व्यास्थन कतिएक नामिन। भारत তारा প्राथ रहेया बाका यया ठिक्न बीब निकटि উপনীত করিল। রাজাও ধর্মানুগত বাগুতা খণ্ড ও পুরাতন জার্ব প্রতিমাবয়ব সকল পরিক্র ও नानानकारत नमनक्ठ कविद्या बंदानभारतार्द शूत्रो अत्यम कत्राहेलन। **जाहात चारमरमा नात्राजन** मन्मिरद्रद्र अमूक्श अविका आह अवि मृत्का

সাগরোমি-সমানীত বালুকাসমূহে পরিপুরিত ও
আচ্ছন্ন-প্রায় ছিল। পরে অনুক্রমে চারিটি মূর্ত্তি
নির্মিত হইয়া ঐ বর্ত্তমান রাজশাসনের ত্রয়োদশ বৎপরে পুনর্বার সিংহাসনে সমারোপিত
হয়। তৎকালে উপস্থিত দেশদেশান্তরীয় লোকের
জয় শব্দ নমঃশব্দোচ্চারণ পূর্বক সমারোহের
আর ইয়ন্তা ছিল না।

জগন্নাথ দেবের দেবার জন্য রাজা যযাতিকেশরী অনেকানেক সেবক ও পূজক নিযুক্ত করিন্না তাহাদের হতে প্রীমন্দিরের নিত্য নৈমিত্রিক
ব্যয়োপযুক্ত বৃত্তি বিধানার্থ পূর্রার চতুর্দিক্ত্
যাবতায় গামাদি জগন্নাথ-দেবের দেবত্ব প্রকারে নিক্ষর ও শাসনপত্রাকাট করিয়া সমপ্রণ
করিলেন। এতাদৃশ চিরস্মরণীয় সময়ে আপামর
নাধারণ সকলেই রাজাকে "বিভীয়-ইন্দুদুর্মু"
উপাধি প্রদান করিল।

রাজ্যাবসান প্রাক্তালে রাজা যযাতিকেশরী ভুবনেশ্বরে এক মন্দির প্রস্তুত করিতে আরন্ধ করেন, এব॰ ৫৬৭ সংবৎসরে পরলোক যাত্রা করেন।

তৎপরে সুর্যাকেশরা ও অনস্তকেশর নিশমক তাঁহার দুই জন পূপ্র তাহার উত্তরাধিকারী তৎসিংহাসনের অধিকার প্রাপ্ত হইয়া দীর্ঘকাল রাজ্য করেন। উভয়ের রাজ্যকালসঙ্খ্যা ৯৭ বৎসর।
তাহাদের রাজ্য কালীন শেষোক্ত অনস্তকেশরার আরকপূর্ব ভূবনেশরস্থ মন্দিরের শিষ্ট সম্পাদ্দানেশ্যেগ ব্যতীত আর কিছুই অভূত ব্যাপার বোধে উল্লেখিতব্য নাই। ৬৭৩ সংবৎসরে ইহার সিংহাসন ললাটেশ্বকেশরীতে বর্ত্তে। লিজরাজ ভূরনেশরোপাধিক প্রীমুমহাদেবের মহামন্দির দির্মাণ সম্পূর্ণ করাতে ভাহার ভূবনব্যাপিনী বিশ্বাতীর কীর্ত্তি হইয়াছিল। ঐ নির্মাণ কার্য্য

শালিবাহনাকের ৫৮৮ বংশরে স্মশ্পন্ন হয়।
ঐ রাজা তথায় এক মহা বিস্তৃত রাজধানী
সংস্থাপন করেন। ইছার পর ৪৫৫ বংশর কাল
মধ্যে ক্রমাগত কেশরী বংশোন্ডব ৩২ জন
রাজা রাজত্ব করেন; তাঁহারা কেহই বিশেষ বিখ্যাত ছিলেন না।

কৈশরীবংশের ধুংসোপাখ্যান নানা জনে নানা-প্রকার কহিয়া থাকে। রাজচরিত্রে লেখে, যে এই বংশের অন্তিম রাজা নিরপত্য হইয়া লো-कान्छत भगन करत्न। देनव প्रक्रारम्हरू वामूरन्य वनপতि नामक এक वाक्ति, कर्नाहीयक्रदेनकरक আনয়ন করিয়া রাজ্যে অভিষেক করেন। বংশা– বলি গুন্থের লিপি এই, "যে রাজার সহিত বাসু-দেব বনপতি নামক ক্ষমতাপন্ন এক জন ব্ৰাহ্ম-ণের বিবাদ উপস্থিত হইবাতে রাজা ঐ ব্রাহ্মণকে পদ্চুত করিয়া নিকাসন করেন। ইহাতে ব্রাহ্মণ জ্যেখভরে কর্ণাট দেশে যাত্র। করিয়া বিশে-যানুসন্ধান পূৰ্বক চূরস্ক বা চোরগঙ্গ নামক এক ব্যক্তিকে উভি্ষ্যা আক্রমণ করাইতে আনয়ন করে"। সে ১০৫৪ শকাব্দের ১৩ই আশ্বিন গুক্ত-বারে কটক পরাজয় করিয়া তথাকার রাজত্ব হস্তগত করে। পরস্ত রাজাচুর**ল** দেবের বিংহাস**না**-ধিরোহণের দিনাবধারণ বিষয়ে উভয় লিপিরই একবাক্যতা আছে। ইহারি বংশ গঙ্গাবংশ বা গান্তবংশ নামে খ্যাত। ক্রমাগত চারিশত বৎসর তাহার। ঐ স্থানে রাজ্যশাসন করিয়াছিল। লোকে কছে, উক্ত রাজাই মন্তলপাঁঞ্জি নামক জগন্নাথ দে-বের এমন্দিরসংক্রান্ত কোন গুদ্ধ লিথিয়াছেন, **बदः श्रेनरानर एस्टरम्बोद्ध উপাসনা ज्यांश कद्गंड**

* মন্দিরের ভারোপরি নিদ্দ লিখিত লোকে শক নিণ্ডি আছে গঞ্জানীস্মিতে জাতে শকান্দে কীর্তিমানদঃ। প্রানাদমকরোদ্বাজা ললাটেন্দুন্চ কেশ্বী॥ কোন বিশেষ২ দেবীর উপাসনাপর ছিলেন। তাহার নাম ও গুন এবং রাজশাসনের উৎকার্ত্রন প্রীর একাংশে চ্রস্কুট্র নামক এক সরোবরে অদ্যাপি সংরক্ষিত আছে। লোক প্রবাদ এই, "যে শরল্মর ও কটক চৌদারে যে প্রাসাদ ও দুর্গ আছে তদুভয় ইহারি নিমিত"।

১২০৭ সংবৎসরে ভাঁহার পুঞ্ গঙ্গেশ্বর দেব शकार्वीय शामायती शयाच विख्व तांकात পৈত্রিক অধিকার প্রাপ্ত হন। ভৎপরে আর দুই छम हाजब करतन, जाहारामत नामामित हैलाय করা আবশ্যক নাই। অনন্তর গান্তবংশপ্রধান অন-ভাষা ১২৩০ সংবৎসরে সিংহাসন অধিকার করে- मृत्मृष्ठ खारम जिल्का क्रिक क्रिक क्रिक विश्व कर्मा क्रिक তংগাপক্ষালণার্থক প্রায়শ্চিত্তস্বরূপ সনেক দেবা-লয় নির্মাণ পূর্বক তক্মধ্যে নালা দেবতার প্রতি-মূর্তি প্রতিয়াপিত হয়। কিম্বনন্তা আছে এ রাজা ৬০ টা প্রেবি**নয় মন্দির, ১০ সেতু, ৪০ কৃপ, এব**ং ১৫০ ঘাট নির্মাণ করিয়াছিলেন। বিশেষতঃ ৪৫০ ন্তল প্রাম প্রস্তুত করিয়া তাহাতে কেবল বা-ক্ষণ সংখ্যাপন করিয়াছিলেন। এতদ্বাতীত বহু-र प्रयान नामाना भएल करह. (कांकि नता-रत था । कर्नाः, এर॰ कर्मभायरकाख्त महीः म ষ্ঠ্যন্দিরাদি ছার। সুশোভিত করেন। **药**51-রাথ দেবের বর্<mark>ডমান মন্দির</mark> তাঁহার আক্রায় ১১১२ मकास्य शहर इन्न राज्ञ श्री नामा अक ব্যক্তি নিমান করে। এই কার্য্যে তাঁছার প্রায় कार्षि मुमु काय इहेशाहिल। अहे नमाशहे जिनि অপর ১৫ জন ব্যুস্থাও ১৫ জন শুদু সেবক বা পরিচারক এদেবের সেবাকাষ্ট্রে নিযুক্ত করিয়া

িউক্ত শক্ত মান্দর মধ্যে আয়াওল পশ্চাতে পোদিত নোকে নিনাত আছে তেলোক সভাঃ

> প্রথাকে স্থা শুভূথেশ রূপ নিক্ষরনায়কে। প্রাণাদ - করেয়ানাসামসঙ্গীমেন্ ধামধা।

ব্যয় বাহুলা করেন; এবং তদানীং নিতাবেবায় লানা ভাতীয় ভোগ ও নময়েহ যাত্রা এবং মহোৎসব করিবার নৃতন সৃষ্টি হয়। এই প্রবল বংশাভিমানা বত্তমান খুর্দারাজ ব্যবহৃত মুর্দাদি পূর্বে
অনমভীমরাজ কর্ত্রই সৃষ্ট হয়, তাহাতে এই লেথা
আছে, "বার প্রীগজপতি গৌড়েশ্বর নবকোটি
"কণাটোৎকলবর্যোশ্বরাধিরাই ভূতভৈরবদেব
"সাধুশাসনোৎ-করণ-রাবতরাই জতুলবলপরা"ক্রমবন্থামবহসুবাহু ক্রতিয়কুলধর্মকেতু"।

আধুনিক উৎকল দেশীয় ব্যক্তিদিগের, সাবস্ত, মজরাজ, যারজেয়া, পৎসহনি, বড় পণ্ডা প্রভৃতি যে সকল উপাধি শুনা যায় তাহা উক্ত রাজার রাজ্য কলৌন দন্ত।

অনজভানের পুঞ রাজেশ্ব দেব। তিনি ৩৫ বৎসর রাজন করিলে পর ১২৯২ নণ্বৎসরে রাজা ন্সিণ্ছ দেব তাঁহার অবিকার প্রাপ্ত হন। ইহার উপাধি লম্বরা। ইহাকে অতি বিখ্যাত রাজা বলিয়া উভ্যায় ইতিহাসে বর্ণনা করিয়াছে।

মেজর পুরার্ট স্তেব স্বপ্রণীত বান্ধালার ইতি-হাল পুরে লেখেন, যে "এই রাজার রাজত্ব কালীন ১২৯৯ সংবৎসরে বন্ধদেশীয় মুসলমান রাজা কর্তক উড়িষ্যার আক্রমণ হয়"; কিন্তু এ ঘটনার বিষয়ে ওড়ু দেশীয় কোন পুন্তে কিছু মাত্র উল্লেখ নাই।

हेशत ताक्यावनात्न नविश्ह नामधाती व कन ताका ও ভानुभाधिक ७ कन ताका विक्रमापि-ट्यात २००१ वर्ष्णत भर्यास উप्तियास ताक्यकद्धन। त्मारवारकताहे न्यावः नीस विन्ना थ्याच हिन। शकावः त्मात गहिन अ हेशालक कनापि हिन। এই नकन कीर्स मस्या भूती श्रांतम भर्म चार्णत नाना नामक य त्मन् चारह जाहा २००० मकारक ताका कनित्र नतिंश्ह हम्। ভান্পাধিক শেষ রাজা সস্তানাসত্ত্ব স্বোভরাধিকারী স্বরূপ সূর্য্যবংশীয় রাজপুঞ্জ কুলো ছব
কপিলশন্ত্র নামক এক বালককে দত্তক করিয়া
যান। ভাহার খ্যাভিতে কপিলেন্দুদেবোপাধি
হয়। ১৫০৭ সংবৎসরে ভিনি রাজসিংহাসনে আবাঢ় হন। সেতুবন্ধ রামেশ্বর পর্যান্ত ভিনি
পরাজয় করেন। ভাঁহার উত্তরাধিকারির নাম
পুরুষোত্তম দেব। ভিনি কঞ্জিবিরাম প্রেদেশের
রাজার কন্যা পদ্যাবভীকে বিবাহ করেন। ভাহার
গভে প্রভাপজনমূলি বা প্রভাপকদুদেব নামে এক
ভন্য জন্ম। পঞ্চবিংশতি বংশর রাজার করিয়া
১৫৫৯ সংবৎসরে পুরুষোত্তম দেবের লোকান্তর
প্রোপ্ত হইলে প্রভাপকদু পৈতৃক সিংহাসনে আ-

এই ভূপতি মহাপ্রভু চৈতন্য দেবের প্রিয়পাত্র ছিলেন। ১৫৮০ বৎসর পরে তিনি ২১ বৎসর রাজত্ব করিয়া ৩২ পুঞ্জ রাখিয়া পরলোক যাত্রা করেন। নৰজ্যেষ্ট পুত্ৰ পৈতৃক রাজ্য ৫ বৎসর শাসন করিয়া গোবিন্দ বিদ্যাধর নামক এক জন প্রবল প্রতালশালা মন্ত্রীকর্তৃক হত হয়েন। অনন্তর দ্বি-তীয় পুঞ্জ উত্তরাধিকার করে। দেও অন্য ৩০ জন ভাতার বহিত মধ্-প্রাচন্দু নামক মন্ত্রিপুত্রের हर्स्ड विनष्ठे इय्। ত**्পा**तः खे मखी : ৫৮ २ म॰वट-नात निःशानाकाः इहेशा ताका भाविकारमय নামে বিথাত হয়। ইহার সময়ে মুকুন্দ-ছরিচন্দন ও জনার্দ্দন বিদ্যাধর নামক দুই জন খ্যাভ্যাপন্ন वर्ण्ड रुरेग्नाष्ट्रित। जनस्मस्य अरे जाहिम वर्ण्डिह **এই দেশে स्थिन इय्र। অखिम व्यक्ति यम्। शि स्था** এদেশের রাজা হইতে পারে নাই তথাপি তৎপুঞ্ পৌআদিরা পরে রাজা হইয়াছিল। রাজা গোবি-ন্দদেৰ আপন রাজত্বের সন্তম বৎসরে দশাশ্বমেধের बाट्टे आन পविज्ञान करतन। उर्भात समार्मन

বিদ্যাধর মন্ত্রির কৌশলে প্রভাগতক্রনের রাজদিংহাদন প্রাপ্ত হন। তিনি বড় দুরা রা ছিলেন।
অপ্টবর্ষ রাজ্য করিয়া হঠাৎ মৃত্যুগুদে পতিত
হন। এ রাজার কোন উত্তরাধিকারী না থাকায়
নরসিংহজেনানামা এক ব্যক্তি নিরতিশয় দাহসাবলম্বনে তাহার শুন্য দিংহাদনে অধিকার হইলেন। ইহার রাজ্যাবদানে মুক্ল-হরিচন্দন তৈলিক্ত মুকুলদের নামে প্রাদিক হইয়া ১৬০৬ বংবৎসরে তাহার সিংহাদন আরোহণ করে। দেশীয় ইতিহাদ লেখনের কহেন "যে ইহার যাহন ও ক্ষমতা বিজ্যাতীয় ছিল"।

টিফেন্থলর নাহেব নিজ গুল্পে লেখেন; "মু-কুন্দদেব উভিয়ার শেষ স্বাধীন রাজা। তিনি অতি সুশাল ও শান্ত স্বভাব ছিলেন এবং তাহার চারি শত ভোগ্যা স্ত্রী ছিল"। বস্করাজ্যের শা-সনকর্তা শোলেমান গুজুনি নামক **আফ্গান্** ताज। ष्यम-था टेननानामछ मः गुरुशृईक উড়िका দেশ আক্রমণ করিকে আসেন। তদুপলকে তত্ত্য হাজা এক দৃঢ় দুগু নির্মাণ করিয়া আত্ম পরিত্রাণে সুনিদ্ধ হয়েন। পরে বন্ধদেশীয় নেনাপতি কালাপাছাড় আনিয়া উড়িষ্যা পরা-জয় ও খ্রীমৃত্তি লইয়া সমৃদ্রে নিকেপ করিয়া अप्तक छेलमुव करत। **এ**ই वियस्त ইতিহাস লে-থকেরা অনেক অনেক প্রকার কছেন ভাছা পাঠক-বর্গেরও অবিদিত নহে বাহুল্যভয়ে বিবিধার্থে প্রকাশ করিলাম না। পুরীবংশাবলীতে লিখিত আছে, রাজা কোন কার্য্য বশতঃ থুদায় ব্যস্ত থা-कनः नगरत नहना चाक्नान् (नना क्रेक्ब्राब्र् আক্রমাণার্থ অগুসর হইয়া আ সিয়া প্রদেশাধিশে (গবর্ণর) গোপীসাবস্ত সিহ্লারকে পরাজয় ও ভত্তত্ত্য প্रामामधनागातामि नुष्रेन कतिए बात्र कतिल, ताका मूकूमाराव ७९ममागत शास्त्र ज्याहरूट

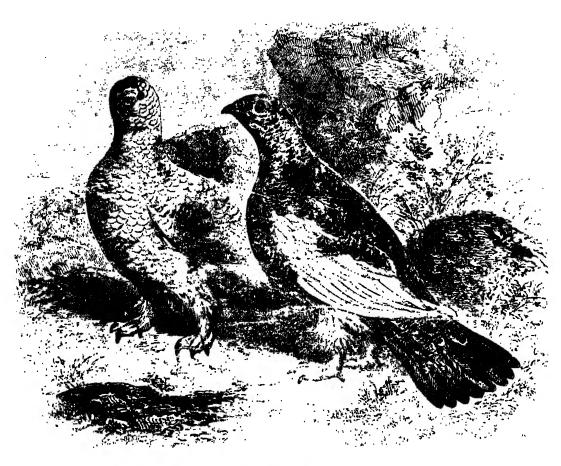
পলায়ন করিয়া অনতিবিলম্বে দিল্লীশবের রাজ্য মধ্যে গিয়া প্রাণ পরিভ্যাগ করিলেন। উৎকল ইতিহাদ লেথকেরা কহে, "যে এই রাজার মর-ণাস্তে মোদলমানেরা এই প্রকারে উড়িষ্যা রাজ্য গুর্বক যথাশাস্ত্র প্রতিষ্ঠাদিপূর্বক মন্দির্জ কিংহা- হরিণ ও থেকশ্গাল-প্রভৃতি পশূপরি নিভর করি-ললে আরোপণ করান । কেহ্ হ কহে রামচন্দু তে হয়। অপর সেই হরিণ-শৃগালও সুপ্রাণ্ড নহে; উত্ত মূত্রাজার জে। প্র

নামে বিখ্যাত হইয়া যবনদিগের অধানতা শ্বী-কার করিয়া ১৮৫০ সংবৎসর পর্য্যন্ত রাজ্য করি-ষাছিল। তাহাদিগের কোন বিশেষ গৌরব ছিল না, অভএব কেবল তাহাদের নাম ও রাজ্যা-রখের বয় নিমে লেখা যাইতেছে।

दानग्यु प्रदे	• •		<i>ৰ</i> ংবং	1808
शुक्तद्वाव्य (मद	• •	• •	**	3000
गर्शम॰ इ. क्रियं्	• •		"	>%>%
शक्राध्त (नर			99	2477
स्कृत्य (प्रव			",	>9>2
मुक्ति शिक्षा करे		• •	,,	>१२ २
ৃষ্ণ বা হরক্ষ দেব	• •	, ,	,,	398b
भागोनाथ (प्रव			• • •	1985
वायदम् (पर			-29	3998
বীরকিশোর দেব	• •	• 1	,,	2922
मृद्यमिष् इ (मव ः	••	• ;	99	১৮ 8₹
मूकुन्स (स्व		• •	>>	37-48

होर्घिशान् शकी।

সামান্ত্র পর অধুনা তাহার বর্ণনা করাই ্ত্ত তৎপর অধুনা তাহার বর্ণনা করাই প্রাপ্ত হুইলে পর তদীয় দেনাপতি রাজা মানসিংহ 🛱 अअअअसी বাহুল্য; ব্যাঘু-বরাহাদির মৃগয়া-উক্ত মন্ত্রিবর দনায়ী বিদ্যাধরের পুঞ বলাই- বিষয়ক-প্রস্তাবে তাহার যথাবিহিত উল্লেখ হই-রাওকে রামচন্দু দেব উপাধি দিয়া উড়িষ্যার য়াছে। অপিচ এতদেশে তাহার। যে সকল জীব রাজাস হাসনে উপবেশন করান। তিনিই পুন- মৃগয়া করিয়া থাকে,তজ্ঞপ কোন জীব তাহাদিগের ৰার নিষকাটে জগলাথ দেবের <u>শ্রিম্</u>রি নির্মাণ- স্বদেশে নাই। ব্যায়ু-বরাহাদির পরিবর্ত্তে তথায় ্ত্মনেককে সূর্য্যোদয় অবধি সূর্য্যান্ত পর্যান্ত পরিশুম নে বাছ। হউক তাঁহারই বংশ খুদার রাজা করিয়া একটি থেকিশ্গাল মারিয়া গৃহে প্রত্যা-গমন করাও দুর্ঘট হয়; হরিণ-শিকার-বিষয়ে ততোধিক পরিশুম। এই প্রযুক্ত বিলাভীয় ধন-বান ব্যক্তিরা আপন ২ অধিকার মধ্যে কতক ভূমি অর্ণাক্পে রাথিয়া তাহাতে বহুসহ্থাক হ্রিণ প্রতিপালন করিয়া রাথেন, ও স্বেচ্ছামত তা-हारे मिकात करतन। পরম্ভ সামান/তঃ এ প্রকার শিকার তনায়াদে প্রাপ্য নছে, সুভরাং অধি-काः म टाकित शक्त शक्ति-मृगया कताई बक माज গতি, ও उमर्थ डिखित, बर्णेत, बक, कामार्थिका প্রভৃতি বিবিধ সুখাদ্য পক্ষীও বিলাতে অমায়াস-প্রাপ্য আছে। অপরপৃষ্টে যে পক্ষার প্রতি মূর্ত্তি মুদুত হইল, তাহা তিত্তির-জাতিজাত; পরস্তু তি-ত্তির অপেক্ষায় অত্যস্ত সুষাদু। তাহার অবয়বও অতি সুন্দর। তাহার **পরিমাণ পুত্রইতে চঞ্**-शर्याञ्च ১८ दूकन मोर्च: **उत्प्रांस्य शूक्** ८ दूकन। তাহার বর্ণ সর্বদা সম থাকে না; গুমিকালে তাহার (मर् शोकाक-इंडेकबर त्रक्तवर्ग, ७ उपूर्णात कृष-বর্ণের অসম রেখা থাকে, কিন্তু শীতকালে তৎ **পরিবর্ত্তে সমস্ত দেহ শুকুবর্ণ বোধ হয়। প্রীয়**



होशिशान शकी।

কালে কেবল পক্ষোপরি কিঞ্চিৎ শুকুবর্ণ থাকে! नग्रताशित्र दक् शालक-श्रेन ও উজ্জ্ল-রক্ত-वर्ग-विभिष्ठे। खो টार्सिशात्मत वर्ग शूरशिक इट्ट অধিক পীতাক্ত ও ফিকা বোধ হয়।

ষভাৰতঃ টামিগান্ পক্ষিরা পার্বত্য-স্থানে বাস করিতে প্রিয়; কিন্তু নিকটে জলা বা শস্য-ক্ষেত্র প্রাপ্ত হইলে তাহাই শেুয়ঃ বোধ করে, नारिएगत काकनोएक भून कतिया ताएथ।

हार्मिशान् व्यक्तिता खोशूक्टव बक्टब वान करता। জ্ঞী টার্মিণান্ চৈত্র মানে ১৯১৮ বা ২০টি অও প্রদাব করত মান্যাবধি জী পুরুষ উভয়ে তদু-পরি তা দিয়া অপত্য উৎপাদ্ধ করে। এক প্রকার

ভাঁড়কাক শিশু-টামিগানের বিশেষ শত্রু, কিন্তু স্বভাৰতঃ ভীত হইলেও অত্যন্ত বাৎসল্য ভাৰ-পুযুক্ত বৃদ্ধ টামিগানেরা অপতা রক্ষার্থে শক্-দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে তুটি করে না। কথিত चाह्न, 🗥 सम्बर जाहानिरंगत नीर एत निक्षे আইলে টামিগান পকা ভথ-পক্ষ বা থঞ্জের ন্যায় হইয়া তাহার সমূথে আনিয়া পড়ে, ও ও তৎস্থান প্রাতঃকালে তথা অপরাহে আপ-িনে ব্যক্তি তাছাকে ধরিবার নিমিত্তে অগুসর হইলে তথাহইতে লফ্চ দিয়া স্থানান্তরে পড়ে; এবং পুনঃ২ এই প্রকার ভণ্ডতা করত তা-शास्त्र वाशन नोष्ट्रेष्ट विश्व प्रा গিয়া উভ্ডীয়মান হইয়া স্থানে প্রভাগেশন कत्त्र। निर्सन-वाना-निवानी वा शाईका छै।सि

शास्त्र मन्त्रादक देवता परियाल को क इस ना ; কিন্তু যে ২ জ্বানে মনুষ্ঠেরা টার্মিগান, শিকার করিতে সর্বদা যাতায়াত করে, তথাকার পক্ষিরা অভ্যন্ত ভীত, এবং মনুষ্য দেখিবামাত্র বহু-मृत्त প্রস্থান করে, **অথবা জক্ল-মথে**/ লুকায়িত হয়; এই প্রযুক্ত কুকুরের সাহায্য-ভিন্ন ঐ পক্ষী-দিগকে শিকার করা কঠিন। প্রস্তাবিত-পঞ্চির। मर्वनारे मूचापू, भत्रष्ठ चाश्विन-माम्ति श्राद्रस्छ তাহার স্বাদুতার বিশেষ উৎকর্ষ জন্মে, তজ্জন हे-बारकता ले नमस्य महा-नमास्त्राह-পूर्वक छा-মিগান-শিকারে যাত্রা করিয়া থাকেন। কথিত আছে. কোন বিশেষ কর্মানুরোধে ইংরাজদিণের মহাসভা পার্লিয়ামেণ্টের বৈঠক ভাদু-মানে শেষ না চটয়া আশ্বিন-পর্যান্ত ক্রমাগত হইলে অনেক সভোরা সভায় **উপস্তিত থা**কিয়া দেশের হিতা-হিত নিচার ও সদুপায় করা অপেকা টার্মিগান্-मृशक्षः स्नुकः मानिक्षा जन्दर्थ शलीगुरम अस्ति कर्त्तम्।

ভারতচন্দু রায়।

বা নান প্রশান কবিদিণের মধ্যে ভারতচন্দু
নান প্রণীত কাব্যের বিচার বিশেষ
লাগক বোধ হইতে পারে, কিন্তু ইহা
আতি দুল্ল ব্যাপার। রায়-গুণাকরের প্রতি লোকের যে প্রকার শানুরাগ ও শুদ্ধা, তাঁহার প্রতি
প্রতিবাদ প্রকাশ করিলে লেখকের প্রতি লোকে
নহজেই বিপক্ষ হইবেন; এবং তাঁহার যশোন
বর্ণন কালীন বিচারকর্ত্তীর অভ্যন্ত সাবধান ও
সতক হওয়া বিধেয়। বর্তুমান কাল কবিকুলের
প্রতি অনুকুল না হইয়া বরঞ্চ কাব্যের বিচারের
সময় এক প্রকার বলিলেও বলা যাইতে পারে,

অতএব এ সময়ে এতছিষয়ে লেখনী ধারণ করা-তে লোক-সকল অবশ্যই ইহাতে নয়নান্তঃপাত করিতে পারেন।

এ দেশের কবিদিণের জীবন-চরিত প্রাপ্ত হওয়া অতি কঠিন, অতএব রায় গুণাকরের বিশ্বেষ বৃত্তান্ত আমরা লিখিতে পারিলাম না। তাঁহার পৌএ প্রীযুক্ত তারকনাথ রায় মহাশয় অধুনা মূলাজ্যেড়-গুমে বাস করিতেছেন, তাঁহার সহিত অন্সদাদির আলাপ থাকিলেও রায় গুণাকরের জীবনের কোন ২ অংশ বর্ণন করিতে পারিতাম। একানে কেবল তাঁহার সকরক্মলাক্ষিত-বচন-রচনার প্রমাণ ও যথাক্রত কিম্বদন্তী অনুযায়ী এ বিষয়ে কিঞ্চিন্মাত্র লিখিতে সক্ষণন করিতেছি।

ভূরিশিট পরগণায় ভারতচন্দু রায়ের নিবাস ছিল; তাহা বদ্ধমানের পশ্চিম অনুমান বিং-শতি ক্রোশ অন্তর হইবে। তাঁহার পিতার নাম নরেন্দুচন্দু রায়; লোক সমাজে তিনি রাজা নরেন্দু রায় নামে প্রসিদ্ধ ছিলেন। তাঁহার কৌলিক উপাধি মুখ্যোপাধ্যায়; ইহা রায় গুণাকর স্বপ্রণীত-গুম্বে স্পষ্টই পরিচয় দি-য়াছেন,

> "ভূরিশিটে মহাকান, ভূপতি নরেন্দ্র রায়, মুখটি বিখ্যাত দেশে দেশে। ভারত তন্য ভার, অশ্বশৃ•মন্ত্র শার. কহে কুফচন্দ্রের আদেশে।।"

মুরনিদাবাদের নবাব আলিবর্দির সময়ে রাজা নরেন্দু রার বর্ত্তমান ছিলেন। তিনি বার্থিক তিন লক্ষ-মুদু৷ রাজ্য প্রাপ্ত হইতেন; এসময়ের চলমা-মুসারে বোধ হয় তাহা নব লক্ষ হইতে পারিত। রায় গুণাকর এই অতুল ঐশর্থের অধিকারী হইয়াও তাহা ভোগ করিতে পারেন নাই। কীত্তিচন্দুরায় বল-প্রকাশ-পূর্বক তাঁহাকে রাজ্যচুত করেন, এবং তয়িমিত্তেই তিনি মহারাজা
কৃষ্ণচন্দু রায়ের আশুয়ে বাস করিয়াছিলেন।
নবদ্বীপাধিপতির রাজ্যের প্রতিও কীর্তিচন্দু
রায়ের বিলক্ষণ দৃষ্টি ছিল, কিন্তু চতুর চুড়ামণি
কৃষ্ণচন্দু আত্মীয়তা-পূর্বক তাঁহার করাল-গ্রাসহইতে রাজ্যাধিকার রক্ষা করিয়াছিলেন।

এ রূপ কিম্বদন্তী আছে, যে বিষমামি *
রোগে তিনি পরলোক প্রাপ্ত হয়েন। মহারাজ
তাঁহাকে রোগমুক্ত-করণ-নিমিত্তপরম-যতু-প্রকাশ
করিয়াছিলেন, কিন্তু কোন প্রকারেই তাহাকে কালের করাল-গ্রামহইছে রক্ষা করিতে পারেন নাই।

রায় গুণাকরের জন্মপত্তিকা প্রাপ্ত কঠিন, এবং তাঁহার পুঞ জাবিত থাকিলেও বা-বিক ক্রিয়ামার। মৃত্যুর দৈবস স্থির হইতে পারিত। অতএব তাঁহার পৃথিবীতে অবতরণ ও তাহাহইতে লালা-সম্বরণের সময় আমরা স্থির

করিতে নিতান্ত অকম; এই মাত্র বলা যাইতে পারে, যে তিনি ১৯৭৪ শকে প্রনিদ্ধ অল্লামন্ত্রল সমাপ্ত করেন, † গণনায় তাহা পলাসির যুদ্ধের তিন বংসর পূর্ব হইবে, এবং অধুনা
এক শত বংসর অতীত হইয়াছে।

> " मूरे भटक कहिनादत श्रीध तिर्फ गांग । द्वित शिक्ष्ठ होत भक्षानी गिकांग ॥" विमामुन्दत ।

কেহ ২ বলেন চোরপঞ্চাশত কাব্য সুন্দর কর্তৃক প্রণীত; তাহার এক নাম চোর কবি, এ কারণ তাহার রচিত কাব্য চোরপঞ্চাশত-নামে প্রসিদ্ধ হইয়াছে; এ বিষয়ে এক প্রাচীন প্রমাণ আছে;

"কবিরমকঃ কবিরমরঃ কবিলোরমযূরকৌ।" কবি অমঞ, অমরশতক কর্তা বলিয়া কেহ ২

^{* (}১) বৈদ্যক শান্তমতে উদরাগ্নি ও প্রকার, মধা, মন্দাগ্নি, সমাগ্নি, ও বিষমাগ্নি।

[†] তেদ লয়ে থবিরদে বুক্ষা নিরুপিলা। সেই শকে এই গীত ভারত রচিলা।।

क्षवामक्षा भागमिश्ह।

কণ্দানা করেন, কিন্তু এ কাপ কিম্বন্তী আছে, যে অমক নামে রাজা ছিলেন, তাঁহার সমক্ষে শঙ্করাচার্য্য ঐ পুস্তক প্রস্তুত করেন। কবি অমর, সম্ভবতঃ অমর্নিংহ, তাঁহার কৃত অভিধান সর্ব-ত্রই প্রস্থিত আছে; তিনি নবরত্বের মধ্যে এক রত্ব ছিলেন। কবিচোর সুন্দর, এবং কবিময়ূর, খোধ হয়, রাজা ময়ুর বর্মা হইবেন। ময়ুর বর্ম চরিত্রে যাঁহার বৃত্যান্ত গ্রয়াছে, তাঁহার অপর নাম শিথিবর্মা।

> ি চিরকাকে গতে করা বিথিবর্মাস্কঃ সুসীং। চন্দুবিদ উঠিও গোডেং বিচারমকরে বিদ্যান উত্তর সহ্যাদ্রি পালে।

অমকশতকের বাঙ্গালা অনুবাদ এ পর্য্যন্ত প্রকাশ হয় নাই: শতক-সমূহ-মধে। কেবল শা-ন্তিশতকের ভাষান্তর দৃষ্ট হয়। অমর-কৃতাভি-ধানের দুই থানা অনুবাদ দেখিতে পাই; প্রথম 'শব্দসিজু ,'' দ্বিতীয় 'শেক্ষকপ্লেতিকা''৷ তন্মধ্যে শেযোক্ত গুরু ত্রীযুক্তজগন্নাথ প্রদাদ মলিকের কৃত। চোরপঞ্চাশত কাব্য, নন্দ কুমার কবিরতু বাঙ্গাল: ভাষায় পদ্যক্তনে অনুবাদ করেন, যাহা অধুনা भूर्व**र**स्तुप्तय ७ टेवजन/व्यक्तापय यस्त्र मृत्ति অন্নদানজলের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়াছে। কবিরত্র-ক্ত চোরপঞ্চাশত কাব্য বহুকাল মৃদ্তি প্রযুক্ত একৰে অপ্ৰাপ্য হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু যাঁহা-দিগের রচনার দোবগুণবিচার করিবার ক্ষমতা আছে, টাছাদের কবিরত্র "প্রণীত-কালী-কৈবল্য-দায়িনা" " ও শুক-বিলাস " প্রভৃতি গুছের রচ नाइ महिত क्षेका कतित्व हेशात ख्रेशाख्य समझस्य হুইবে। যাহা ছুট্টক, চোরপঞ্চাশত কাক্যের বাহা-লা অনুবাদ রায় গুণাকর প্রণীত নছে। অল্লা-মত্রল ব্যতিরিক্ত তিনি রসমঞ্জরী ও সভ্য নারায়-ণের কথা রচনা করেন, কিন্তু শেবোক্ত গুত্তের নাম

প্রায়ঃ অনেকেই অবগত নহেন, যেহেছু সচরাচর সত্য নার্নায়ণের কথা যাহা শুবণ করা যায়, তাহা ভারতচন্দ্রীয় নহে।

३ काल्छन। २११६ भका

এহরিমোহন সেন গুপ্ত।

দেশীয় পাুক্ত সৌঠব।

িটিটিউট্ট শীবাদে যে প্লকার স্বাস্থ্য সম্ভোগ হয়,

🕌 কলিকাতায় ভদ্রপ সৃষ্ঠার প্রত্যাশা কর্ণ কি মাইতে পারে না: ও কলিকাতার সৃষ্ঠা 🏥 🍀 র ছপুরে। নাই। অপর কলিকাভার সন্ধি-करि (य मकन शर्स, शर्मा, मगा, कन, त्रुक्तांनि करज्ञ, তত্তাবৎ কাশীতে সম্ভবে ন: ও চাশার পাশ, পাকী, भगा, कल, श्रुक्या, कान्रालत जुला नरह। **এই প্रकारत उँ०-**পত্তি ও সৃস্কতা বিষয়ে প্রত্যেক দেশের আবান্তরিক ভেদ আছে। ঐ ইতর-ভেদ-বিষয়ক দেশের অসাধারৎ ধর্ম उक्षालमार्थ "প্राकृष मोर्थन" अब् राउला हुईल। দেশ-ভেদে প্রাকৃত নৌভবের ভিন্নতা হওয়াতে পৃথি-বায় প্রমোকার সিদ্ধ হ্ইয়াছে। ফ্লাপি করুণাময় প্রম-পিতা সমৰু পৃথীৰ প্ৰাকৃত দৌভৰ সমান কৰিতেন, তাহা इतेरन अहे करन रच खनाइ बाबाकाडीत कल श्रेष्टापि नादांश कविश थाकि, टांहा कनाशि मह्य इंडेंस मा। এতদেশীর-ব্যক্তিদিগের মতে 🐠 প্রাকৃত দৌষ্ঠর জল ও বায়ুর প্রতি নির্ভর করে; এই প্রয়ুক্ত সামান্য কথায় কোন দেশের সৃত্তাদি গুল বর্ণন করিতে হইলে, লোকে তা-হার জল "বাভাদ (আধ হাওয়া) ভাল" কহিয়া থালে। জল বায়ূর ক্রমে যে দেশের প্রাকৃত দৌষ্ঠবের ভেদ इस् हेड! अवना श्वीकात कतित्व इहेरत, किस्त हेटा मार्ख्या, মে দেশের অবস্থা-ভেদে জল-বায়ুর অনাথা হয়, অত-এর মেট অবস্থাই প্রাক্ত-সৌষ্ঠব-ভেদের আদিকারণ, কল বায়ু লকণ মাত্র। পর্বতোপরিস্থিত দেশ অবশ্যই অনাত্রহাতে পৃথক হটবে ইহা উল্লেখ করাই বাহলা। পদার্থবিদ্যায় পারদর্শী মহাশয়েরা দেশীয় প্রাকৃত-সৌ-গ্র-ভেদের অক্ট কারণ নির্ণয় করিয়াছেন, তদাখা; ১, দূর্ব্যান্তাপ; ২, সম্দু-জলনীমাহইতে উচ্চতা; ৩, সম্দু-रेनको ; ६, मिश्राक्टम हानुका ; ৫, शब्द छ ; ७, मुक्कि ; ৭, চাদ; ৮, বায়ুর বিশেষ গতি।

श्राम्बाभ-(खरम (मरणत প्राक्छ-इर्ड्डुत खनाथ) হয়, ইহা অনায়াদে সম্ভবে; গ্রীয়ামগুলের রৌদুে ও শীত-মণ্ডলের হিম ও দীর্ঘ রাত্রিতে তরু, পুষ্পা, পশ্বাদির সমতা হটবে, ইছা কোন মতে বিশ্বাস যোগ্য নহে। সূর্যা-কিরণ সূর্যাহইতে ঋজুভাবে বিকার্ণ হয়; টিক মন্তকোর্ছ-হটতে আগত ঐ ঋজুকিরণ-ল্লেশে পৃথী বিশেষ উত্তপ্ত হয়, সুতরাপ যে সকল স্থান উক্ত ঋজুকিরণ প্রাপ্ত হয়, ভাষা অন্যতাপেকায় উষ্ণ্ হটয়া থাকে। বুণের্ নামা এক ব্যক্তি ফরাদীদ্ পণ্ডিত গণনা করিয়া দ্বির করি-য়াছেন, যে মধ্যাক্-সময়ে দূর্যা যে স্থানে টিক মন্ত-কোপরি থাকে, ডদিগে ১০,০০০ কিরণ সূর্য্যইউত আনত ছইলে ভাহার ৮১২৩ টি কিরণ তথায় উপনীত হয়, অনশিষ্ট কিরণ বায়ুতে লুপ্ত হয় ৷ সূর্যা মন্তকো-পরি না হটয়া ৫০ অংশ ঢালু থাকিলে সেই স্থানে ৭০২৪ টি কিরণ-মাত্র আগমন করে; সূর্য্য ৭ অংশ जान इहेल २৮**०**५ किं किंत्रन उथाय आहेरन, उ मुर्वा (मड़े झात्नत ठळनाल थाकिल ১৯৯৫ b कित्र वार्स হইয়া কেবল অবশিষ্ট পাঁচটি কিরণ তৎস্থানে সমা-शत रहा। अहनानु-वृख्यहर-प्रशाह मकन **सान वर्मा**द मूहे÷ বরে করিয়া সূঘ্যদেবকে চিক মন্তকোপার প্রাপ্ত হয়,অপর শূসা অত্যন্ত ঢালু হউলেও ঐ ঢালুহা ৬০ অংশের न्।न इस ना, এই প্রযুক্ত পুর্ব্বেক্ত কারণানুসারে ঐ বৃত্তদ্বের मशास् सान नर्सारभक्तांग उष्ट शारक। उक वृद्धपरात বহির্দেশে সূর্যাদের কদাপি টিক মস্কোপরি হন না मर्खमा हामू थारकन, मृजदा जिलाम काल-ও অয়নাম্ত-বৃত্ত-মধাস্ত্-স্বানের তুলা উষ্ণ হয় না। অপর নিরক্ষর্ত্তইতে দেশ-সকল যত দূর হয়, ঐ ঢাল্ভার তত্ই বৃদ্ধি হয়, অতএব ঐ ঢালুতানুসারে তত্তদেশের উষ্ণ-তার হ্রান হয়। সূর্যাদের নর্মনা নিরক্ষরভের টিক উপ-विভাগে ভুমণ করিলে এই निয়মানুসারে কেন্দু-নিকটস্থ স্থান-সকল এমত শীতাক্ত হ্ইত, যে তথায় মনুষ্য ৰাস করিতে পারিত না। এই দোষের নিরাকরণার্থে পূর্বোর অয়ণ হইয়া থাকে, ভত্বারা কেক্সু-নিকটয় য়ান উত্তও হইয়া মনুষ্যাবাদের যোগ্য হয়। যে সময়ে দুর্য্য উত্তরায়ণান্ত-রুন্ডোপরি আইদেন, তৎকালে উত্তর-क्यू-निक्षेष्-शातः निवामान अधिक, ও রাত্রিমান अझ হয়। 🕯 দিবাভাগে পৃথিৱী যে পরিমাণে সুর্য্যোত্তাপ

পারে না, সূতরাশ প্রতাহ গ্রামের সঞ্চয় বৃদ্ধি চউতে খাকে, ও তৎসাহায্যে শস্যাদি উৎপন্ন হয়। ৭০ অংশস্থ-श्रात बारहारव श्रामत्म अहे श्रकारह श्रीयाकारम जालवान যক্কের ৮০ তাপাৎশ গ্রীষ্ হইয়া থাকে। অপর সূর্য্য দক্ষি-गारान याजा कतितन क्रमणः पिरामान कञ्च, ও ताजिमान অধিক হইতে থাকে, তথা ঐ রাত্রিতে সঙ্গুহীত শীতলতা बाह्ममान-मिवरमद উक्षठांद बानागारम ध्व॰्म कदिया मीरलद বৃদ্ধি করিয়া থাকে। শীতগুীষেরে এই কারণ; এবং এই কারণেই সর্বাত ঋতুর ভেদ হয়।

१। मिट्न श्राकृत मोर्थेद एउट्न विठीय कार्न, ममून-জলদীমাহইতে কাহার উচ্চতা। যে দেশ সমৃদু-জলদীমা-সূতরাণ ভাহার প্রাকৃত সৌতবেরও ভেদ হয়। নিরূপিত হইয়াছে, গ্রীমুমণ্ডলে, যেথানে সুযোগভাপ অভান্ত প্রথর, তথায় সমৃদ্-জলদীমাহ উতে ১০,০০০ হয় উচ্চস্থান এতাদৃশ শীতল যে তাহাতে প্রায়ঃ চিরকাল বরফ থাকে।

 गमृत् অতিশोधु गीठन ता उँछः इरा ना; उँछ-ताश् তদুপরিভাগ দিয়া প্রবাত হউলে জলহিলোল-ল্লেশ শীঘু শীতল হইয়া যায়, তথা শীত বায়ু তৎমুশে ঐ জলের উষ্ণতা প্রাপ্ত হইয়া স্বয়ণ উষণ হর, কিন্তু জলকে আন্তাউষণ বা 🔧 भोजन क्रतिष्ठ भारत ना। शिक्षात्न गमसु कन आस्का-লিত থাকাতে শীত বায়ু তাছার একাণ্শ বল্কাল স্নৰ্শ করিয়া থাকিতে পারে না, কারণ প্রতিক্রেন্তন উষ্ণ জল উটিয়া বায়ুর শীতলতা হরণ করে। ভূমি সঞ্জদা আন্দো-लिख रख ना, वाबित नाम डिक्टा मनदन् अनक मरर, শৃতরাপ তদুপরি কায়-গ্রন-সময়ে কেই ভূমি অনায়াকে তাহার ধর্ম অপহরন করে। এই পুযুক্ত সমসূত্রে স্থিত দুই প্রদেশের যে স্থান ভূমিতে বেনিত তাহাতে যে প্রকার অতান্ত শীক্ত ও গ্ৰীষ্ম ঘটিয়া পাকে, সমুদু-বেফিত স্থানে তাদৃশ অত্যন্ত ঘটে না: কুনুদাপ গ্ৰীমাকালে কদাপি -অতান্ত উষণ, বা শতিকালে অভান্ত শতিল, হয় না: সফাদা অন্যত্তাপেক্ষায় সমভাবে থাকে। কলিকাতা ও অফিরি-কার মধাদেশ উভয়েই সমস্ত্রে আছে, কিন্তু কলিকাভার निकटि नमूनु थाकारा चाकतिकात मधारमा याम्न शुरिसूद প্রথরতা ইহাতে তাদৃশ প্রথরতা অনুভ্ত হয় না। সমুদু-বায়ু শীতল হইবার যে কারণ উক্ত হইল, ভদ্ভিন্ন অপর এক কারণ আছে। উক্ত বাবু সমুদু দিয়া আসিবার সময়ে न बुर करत, अञ्चान-ताजिष्ड उषादर भीतन इहेरा वास्भात महित प्रिक्षित इंडर भीतन इहेगा बाहेरन; संदु

ভূমুপরি প্রাত-হওন-নময়ে তাহার বাফা ভূমিতে শো-,বিত হইয়া স্বয়ণ গুল্প ও অসহা উফ হইয়া উঠে।

৪। পৃথিবাপরি দ্যা কিরণ পতনের যে নিয়ম উক্ত হইরাছে, তাহা বিবেচনা করিয়া দেখিলে অনায়াসেই বোধ হইবে, যে দেশের ঢালুতানুসারে তাহার উষ্ণতার, তথা প্রাক্ত ধর্মের, ভেদ হইতে পারে। যে দেশ পুর্কাদিণে ঢালু তাহাতে অগিক রৌদু নিপতিত হয়, সূতরাণ ভা-হার উষ্ণতা অগিক; পশ্চিমদিণে ঢালু দেশে রৌদু প্রথার হয় না, সূত্রাণ গুনিরার অল্লভা ঘটে। এই প্রযুক্ত আল্ল লামক পারতের উভয় পাশস্থ ভূমি সমোদ্দ হললেও বে স্থানে গক্ষ পার্শে দুক্ষা ও সেব ফল, ফলে, তৎকালে অপার পার্শ্ব হিমশিলায় মন্তিত গাকে।

ে। পর্ক্রছারা দেশীয় প্রাকৃত ধর্মের অনেক প্রকার অন্যথা হয়। তদ্বারা বায়ৃত্ব বাদপ আকৃত্র হটারা প্রভ্ত বৃদ্ধিরপে পর্ক্রনুলছ-দেশে।পরি নিপতিত হয়। তাহার বাধায় বায়ুর গতির অন্যথা করে, ও উত্তাপকে প্রভিব্যান্ত হটার দূরে যাইতে নিবারণ করিয়া উফতার বৃদ্ধি করে। এই প্রয়ুক্তই উপত্যকায় বৃদ্ধি ও গুরুষ্ম অধিক ও শাড়র অল্লভা। অপর কৃদিয়া ও দিবিরিয়া দেশের উত্তার কেনি পর্ক্রভানী না থাকাতে হিমমন্তলে ত্রুরলীতবায় আদিয়া ঐ সকল দেশের সমসূত্রে ছিত জনা দেশে ওদ্ধাপ ভাষার শীত কদাপি অনুভূত হয় না।

১। মৃত্তিকা লক্ষ্য লমত্লা নহে; কোন মৃত্তিকা প্রচ্ব সংশ্বনাদিনিই; ভাষাতে বৃষ্ঠির জল পড়িলেই শোষিং বর্ষা পার্থা-গর্ভে চলিয়া মায়, ও ভাষা রৌধ্রে আতি শায় উন্ধান্ত এতা বায়ু উষ্ণকরে। আফরিকা দেশের বাল্কাজেনেই তথাকার ভ্যানক উষ্ণভার কারণ। আনা মৃত্তিকা কর্মানাম ভাষাতে জল পড়িলে শারু হল্প না, ও শ্বাকিরণে সেই জল বাম্পারণে পরিণত কইটা ভগাকার বায়ুকে অসুস্ক্রমক করে। লবন বিশিষ্ট মৃত্তিকাও অস্থান্থাকর।

কা ক্ষি-কার্যো দেশের নৌষ্ঠব-রুদ্ধি হয় ইহা বর্ণন করাই বাহ্লা। অক্সিত ভূমি বন-জন্ধনে সমাকার্ণ, ভত্ততা নদী-সকলের ভট ভগ্ন হইয়াও তদ্বারা বন্যার জল ভূমিতে বিশ্বত চইয়া দুর্গন্ধি বাজা উৎপন্ন করে; তথার সূত্তার হানি অবশাই সম্ভবনীয়। মানব-পরিভামে ভূমি ক্ষিত হইয়া বৌদ্ধে তাম্ব হয়, বন-জল্ল পরিষ্কৃত হয়, নদীর ভট বন্ধ হয়, পুনানা প্রকারে দৌওব-বৃদ্ধির সন্ধায় সংস্থান পিত হয়। পারস্ক বন কাটিবার নিরম আছে, যে স্থানের বনে অনিউকর বায়ু আসিতে নিবারণ করে, তাহা ক্ষেদন করা কোন মতে শ্রেয়ংনহে। কবিত আছে, প্রীস্দেশের সমস্ক বন কাটাতে তত্ততা সুস্কুতার হানি হইয়াছে।

৮। পুর্বেই উক্ত হইরাছে, বারু যে প্রদেশ দিরা
ভূমণ করে, তদৰুসারে ভিন্ন ১ ধর্মবিশিষ্ট হয়। সমৃদাগত
বায়ু শীতল, মক্তৃমাগত বায়ু উষ্ণ ও পার্বতা বায়ু স্তম্ভ ও শীতল, অতথব ইহা অনায়াদে অনুভূত হইতে পারে
যে, বায়ুর আগমন দিগনুসারে প্রাকৃত-সৌধ্বের ভেদ হইবে। যে দেশে সর্বাদা সমৃদ্র-বায়ু প্রবাত হয় তথাকার বায়ু সর্বাদা অনাক্রাপেক্ষায় সমভাবাপন্ন; কদাপি ভক্ততা লোক দুক্র্যা শীত বা অসহা গ্রীয়া ভোগ করে না।

প্রাকৃত দৌষ্ঠবভেদের যে সকল কারণ প্রদর্শিত ফ্রাল তহাগো উফতাই প্রধান; অনা দকল কারণ প্রায়ঃ ঐ উফতার ভারতমা ঘটাইয়াই প্লাকৃত সৌষ্ঠবের ভেদ मञ्जा करत । अ उम्मनात छर्च-मोमा निवस-वृरस्त किथि॰ উত্তরে স্কিত। তথাহইতে যত উত্তর বা দক্ষিণদিনে অগ্রবর্ত্তি হওয়া যার তত সূর্ব্যকিরণের ঢাল্ডা ও হিম-কেন্দ্রের নিকটতা প্রযুক্ত ক্রমশঃ উঞ্তার হ্রাস হল তাপমান সম্ভারা * এই হাস বৃদ্ধি নিরূপিত করা যয়ে ৷ ঐ হর্মার! উক্ত উর্ঘামার উফতা ৮৪ তাপাশা নির-পিত হইয়াছে; অর্থাৎ প্রত্যন্থ মন্ত্রে উফ্ভার ছেভেদ দৃষ্ট হয় তাহার বার্ষিকগড় ৮৪ ভাপাণ্শ। এই গড় निक्रमगार्थ প্रভार वे यद्ध य मकन छान मङ्गा पृष्टि कता याय जारा अकल कतिया (ध कअक बात मृधि कता याग्र उरमङ्धाः पित्र। भूकं मप्तकित रहन कहिए रहः তশার। আছিক গড় নিরুপিত হয়। পরে এক বংশরের नमस আছिक गए अकल कतिया ७५० मिया रतन कतिता বার্ষিক গড় নির্বাপিত হয়। ওদাধা; মদালি প্রাতঃকালে जानमान-माद्ध **फेक्स्टा १**३; मन चण्डोत नमत्र १३, पूरे প্রহরের সময় ৮: ; मूरे প্রহর চারিটার সমর ৮%; ও সন্ত্যার সময় 😘 হয়; ভাহা হইলে নিম্নে লিখিত আকা-नुजारत चाहिक शढ़ ११ ने जाशायम 🗠 🛊 बनक हरेरदे।

^{*}তক্তবোধনী প্রিকার ১০২ সর্খ্যার ঐ ভাপয়ারী বছের বিবরণ প্রকটিভ আছে।

[া] হালা৲শ আপনার্থে সঙ্গ্যার উপর (•) এই প্রকার ছিল্। (‡) ও ভাহার দশা৲শের অ৲শ জাপনার্থ এই প্রকার (*) টিছ দর্থরা যায়।

-	*	
প্লাভঃকালে	٠٠ ٩٤	, .46
১० होत्र नमज्ञ	90	
১২ টার সময় · ·		
৪ টার সময় 🕠	৮৩	
সন্থ্যার সময়"	12	
	-	*
नप्रकि 😬	٠٠ ৩৮১	
দৃষ্টির সঙ্থ্যা	e)) > > (? ? ° + '	
	3 C	
	gy atta-mo-dy-modiff(b)	
	૭ ১	
	೨૯	r* 1
	States speed,	
	8 0	
	8 •	
	distance of the last of the la	
	00	

মাদিক ও বার্ষিক গড় ও এই প্রকারে নিরূপিত হয়। যে সকল দেশের উষ্ণতার বার্ষিক গড় তুলা শাস্ত্রে लाश्मित्रातक "नप्रमृज्यस्मि" अत्य विशान करत । शतुः इंहा बार्खरा या, पूरे फिल्मड़ वार्षिक गए चूना इरेलारे তাহাদের শীতগ্রায় তুলা হইবে, এমত নহে; অভান্ত গ্রায় ও অত্যন্ত শীতের গড় ও মাধুর্য্য গ্রীষ্ম-শীতের গড় তুল্য হইতে পারে; অতএন প্রত্যেক দেশের <u>গ্রীষ্</u>ক্**ষ**ণর উষ্ণভার গড় ও শীতকালের উষ্ণভার গড় নিরূপিত না कतिरम जाहात প्रकृष व्यवसा स्त्रिकेन्छ हम ना। अह निभिन्न भागविष्णावावमातिता वे छिन প्रकार शक नित्र-পিত করিয়া থাকেন। মানচিত্তে "উষণ-সমস্তা," "গ্রীয়া সমসূত্র'' ও "শীত-সমসূত্র'' এই ডিন প্রকার সমস্ত্র অন্ধিত হইয়া খাকে। পূর্ব্যকালে অনেকের বোধ ছিল, ষে বে দকল দেশ এক অংশরেথার উপর স্থিত আছে, তৎভাৰতের উঞ্ভ। তুলা, কিছ দে সুম মাত ; সমস্তের মানচিত্রে দৃক্তি করিলে তাহা ব্লক্ট ব্যক্ত হইবে।

পুর্মেই উক্ত হইরাছে, সমস্তাহ-দেশের শীত গ্রীরা সর্কান তুলা এমত নহে; দেশ ও অবহা ভেদে কোন ২ সমরে অভান্ত শীভ বা গ্রীয়া হইলেও সেই দেশ মাধুর্যা-শীভ-প্রীয়াবিশিক্ত দেশের সহিত সমস্ত্রে অবস্থিত হয়। কলিকাভার অভান্ত-গ্রীয়া-সমরে উক্তা ১০০ ভাপাৎশের অধিক ও শীক্তকালে ৫০ ভাপাৎশের নান হর না। পিকিন নগরে গ্রীয়াকালে ১১০ ভাপাৎশা উক্তা হটে,

অধান শতিকালে সর্প্রে বর্ষে আর্ত হইরা উফতা ৩০ তাপাংশ হয়। ভারতবর্ষের স্থানেং গ্রীয়াকালে উফতা ১০০ বা ১১৫ তাপাংশ হইরা থাকে, কিন্ত শতিকালে তথায় বর্ষ পড়ে না। আফরিকার মরুভ্মিতে উফতা ১২ দৃষ্ট হইরাছে; ঋতুর ক্রমে, বোধ হয়, তাহাত্তিতে অধিক উফতা কুরাপি দৃষ্ট হয় নাই। শতিতা বিষয়েও এই প্রকার ভেদ আছে; অনেক স্থানে সমস্ত শতিকালে জল ক্রিয়া থাকে। নিবিরিয়া-দেশে পারদ ক্রিয়া যায়; কুইবেক্ নগরেও তক্রপ ঘটে। হড্সন্ হুদের তটে পারদ তাপমান যদ্ভের * ন্যুন সঙ্থা হইতে ৫০ তাপাংশ ন্যুন উফতা হইয়াছিল। সুমের্জ-সমুদ্রে কাপ্তান পারী সাহেব উক্ত যদ্ভের ন্যুন সঙ্খ্যাহইতে ৫৫ তাপাংশ ন্যুন উফতা সহ্য করিয়াছিলেন্।

বায়ুর গতি-বর্ণন-সময়ে উক্ত হইয়াছে, পৃথিবীর উত্তরার্দ্ধ অপেক্ষায় দক্ষিণার্দ্ধ শীতল; এবং তদর্ছে সমৃদ্রের আধিকা ঐ শীতলতার কারণ বলিয়া গণ্য হইল্যাছে। পরস্ক তভিন্ন অপর কারণও আছে। সূর্যাদের নিরক্ষরতের উত্তরাধান অপেক্ষায় দক্ষিণায়ণের কাল প্রতাধি উত্তরাধান অপেক্ষায় দক্ষিণায়ণের কাল পত দিন অক্ল; তত্তেত্বক দক্ষিণ ভাগের উষ্ণতার হানি হয়। অপর দক্ষিণ ভাগের সমৃদ্রের বিস্তাণতা-প্রযুক্ত কুমেরু সমৃদ্রের বরক সমৃদ্রেশ্যতে বিকীর্ণ ইইয়া ভ্তাগের সমৃদ্রইতে বরক আদিবার তাদৃশ সদ্পায় না থাকা-প্রযুক্ত উক্ত ঘটনা সম্ভবে না। পৃথিবীর উত্তর ও দক্ষিণাতে উষ্ণতার কি পর্যান্ত ভেদ আছে, তাহা নিম্নেপ্রকটিত হইবে।

অৎশ রেঝা,	林至,	পৃথিবীর দক্ষিণার্কের গড়,	পৃথিবীর উত্তরার্চ্চের গড়,
্ব অবধি ১ [°]	क शीबा,	₽ ₹ • 8'	P-3, 3,
À	वर्षा,		134, 17
၁	8° শীত,	¢5* 88'	62, 91"
8	o° গ্ৰীষ্ম,	62° 36'	৬8 ° , ٩৬'
8	H A	88° %	'60°, 66'
¢	b. 4	80. >9,	* 45°, 3';
त्वर्	কহিয়া খ	ारकन, ए भृषित	ी जगमः मोजन

* তাপমান বন্ধ নানা প্রকার হইয়া থাকে, ভ্রাথ্যে পার্কী তাপমান বন্ধ ও মধ্য ভাপমান হতেই প্রধান। इटेंडिए, काशाह द्वारभ, পार्चिव उक्क हो क्रममं दृष्टि इटे-टिए, किन्तु वे नार्के प्रस्त कान विभागनीय श्रमान नारे। छाशमानयञ्ज এकण ३ वर्णताविध माज श्रमात इटेग्राए, वारे श्रयूक्त छम्। बागाशि किन्नू द्वित कता यादेख शाहर माहे। क्रमांश्च मह्मू वर्णत छाशमान-यञ्ज्याता श्रीका श्रादल व विष्यात मीमार्गा इटेंडि शाहित्।

দেশীয় প্রাকৃতলোষ্ঠব-প্রনঙ্গে ঋতু-ভেদের উল্লেশ্ব আবশা দয়নে, কিছু পৃথিবীর গতি বিষয়ে জনেক বর্ণন না করিলে তাহা অনায়াসে বোধগামা হইবে না। ফলতঃ দে বিষয় গণিতভূগোলে বিচার্যা; অতএব এছলে তদু-ল্লেথা ফান্ত থাকিতে হইল। এ প্রকরণ-সমুদ্ধে পাঠক-দিনের এই মাত্র শরণ রাখা কর্জবা, যে পৃথিবীর উত্ত-লাকে শীতকাল হইলে দক্ষিণার্জে গ্রীষ্মের প্রাদৃষ্ঠান হয়, ও দক্ষিণার্জে শীতের উৎকর্ষ্য হইলে উত্তরার্জে গ্রীষ্মের কৃদ্দের হয়; নচেৎ উত্তরার্জের শীত গ্রীষ্মের ভূলনা-করণ-সময়ে ভুম হইতে পারে।

জিরাফার বিবরণ।

विश्वर्य-श्रकाम-कडरण्ड উপক্রম-সম
श्रिक्त उविद्यार्थ-श्रकाम-कडरण्ड य िक मृति ।

श्रिक्त इवेशिक्त, डाशंड विवर्त श्रक्ति ।

व्य नार्ड : अधुना त्मरे अनिशास निष कहा मत्नानाठ व्येशाहा के जिक क्षित्राका-नामक-পশুवित्मत्य श्रिक्ति । जूमश्रक्त य मकत পশু
नम्भूष्ठि वर्त्तमान आहि. उद्याधा के भशु महीलक्षाय छेक। উत्ति भम अ श्रीवात महिठ करे

शश्रद भम अश्रीवात जूनना व्येश भारत क्षित्र क्षि
वेशाद अग्रकाम आहि. क्ष्राधा के भशु महीलक्ष्याय छेक। উत्ति भम अ श्रीवात महिठ करे

शश्रद भम अश्रीवात जूनना व्येश भारत क्ष्रि
वेशाद अग्रकाम अश्रीवात ज्ञाधाविकीन शाकवित्री अग्रीना अश्रीवात्र अव्यव छेन्द्रवर

मा व्येश वित्रांत मृष्ट भारत्य अवयव छेन्द्रवर

मा व्येश वित्रांत मृष्ट भारत्य अवयव छेन्द्रवर

सात्र जूना त्याय व्यः करे श्रमुक श्रीनिञ्च कर्त्वता
वेशाक वित्रांत कर्त्वाहिन।

वर्षा भित्रांति कर्त्वाहिन।

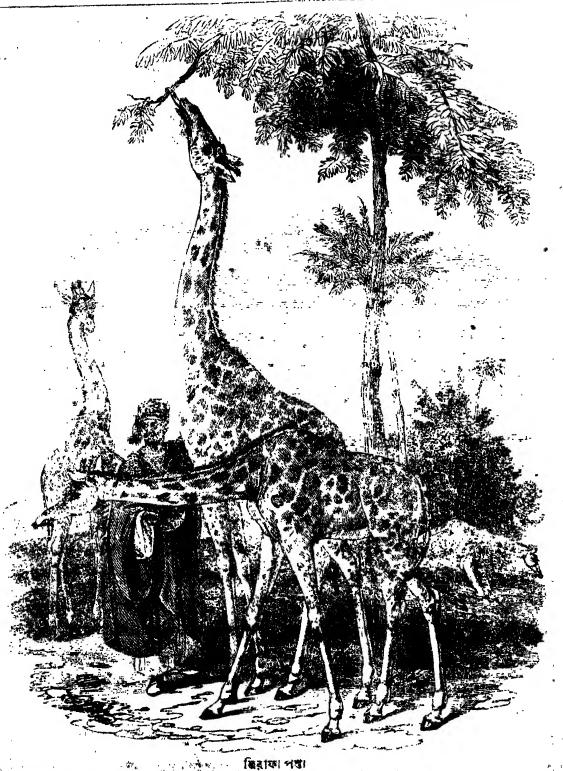
रेरात जग-शान चाकतिका-थंक चनाव कूवा-

পি ইহা প্রাপ্য নহে। উক্ত-খণ্ডে আরব্য-ভাষার
ইহার নাম "জিরাফা" বা "জোরাকা" বা
"জেরাফে" বা "জেরাফেৎ"। ইহার উটুবৎ
অবয়ব এবং ব্যায়ুবৎ চিত্রিতবর্ণ দৃষ্টে কোন ২
ইংরাজ ইহাকে "কামেন্ লেপড্", অর্থাৎ
উট্ভ-ব্যায়ু শব্দে বিধান করিয়াছেন।

জিরাকার স্বয়ব-দৃষ্টে অনেকে বোধ করেন, य हेरात भाष्ठा । भन्दहरू भूतः भन्न भोर्घ, किन्त त्म जुब-माब, कन्नजः जनामा-भन्छ-भारत नाम् हेहांद्र अभूदः भर वार्यकाय भाष्ठा । भर नीर्घ, **क्रिक करम**त डेक ठा श्रयुक्त **डाहात्र** मीर्च ठा **खा छ** প্রত্যক্ষ হয় না৷ উদ্বের পদতলে যে প্রকার मारमिल इरेया थाकि * मित्राकात भरकता তজাপ কোন মাংস-পিণ্ড নাই; কেবল ছবিণ-পূরের नात्र पूरे थानि थुत चाहि। छेट्ट्रेंत छेपत-मध्य य প্रकात कल-ताथिनात सान थारक,तिकाकात উদরে তাদৃশ কোন স্থান দৃষ্ট হয় না; অপর উষ্ট্রের ভারুবহন-শালতাও ইহাতে প্রাপ্য নহে। শ্র-विषय প্रভाविज्ञास्त्र अक चमाधात्रव लक्ष्व चारह। चना-नम्ब-शश्वत नात्र देशा मखरका-পরি দুই শৃষ্ণ ব্যতীক ললাটের পুরোভাগে এক ज्ञीय म्ह्य मृत भाष्ट्र। कीविष्ठ-भश्य णहा क्वितन डेफ माज वाध इश, किन्न वर्ग्वरमाठन कितिलहे न्नार्ट अन्त्रक हम्, या जे डेफ्डा समाग्री-व्हिह्हेट श्वक् बक था विष्टाता बरम ; जना शञ्चा के **कहित महन कान कहि नारे। मछ-**কোপরিত শৃত্তের অগ্রতাগ কুল-কেশে মণ্ডিত।

জিরাকার জিলা অতি আক্র্য। তারা অনায়ানে প্রবারিত বা বস্তুতিত ব্রীয়া ট্রাকে; এবং প্রবারিত হইলে মুখক্টত এক বস্ত ব্রিক গত হইয়া পড়ে। তাহার উপরি ক্ষতক্তির

क निर्देशाच्या १ वट १० शुर्व क्रिया



कणेक थात्क, खाहा (क्ष्मामूनाति नज ता প्रजाविज शख्त हक्षः वृहर, अवः आहात किय-উम्रच वहेत्व शाति । वस्तवर अ श्रमातिक किया- मः मा हक्ष्रका वहिन्छ ; अहे श्रमुक क्ष्मन कड़िएंड नक्षम इत्र।

बाहा बिताकाडी बनामात्म क्या कतिया नित्रकानने ना कहिया वह शत वानामाद्र जा-হার পশ্চাতে স্থিত পদার্থ দেখিতে পারে।

ইহার বর্ণ পাত, এবং তদুপব্লি কৃষ্ণবর্ণের চিত্র হয়। পুংপশু অপেকায় জীর বর্ণ কিকা এবং তাহার বদনের চিত্র কটাবর্ণ।

. हेशाम्ब म्य-मङ्गा २२; उत्पाद्या हर्नन-म्य २८, लटः इन्न-म्य ৮; जे इन्न-मय-मय-इन्द्रम् चिछ; उपदात माफ़ीट हाम्ब किछि जन्म मा, कलण्ड शाहाशाम्बद हेशाम्ब छपद-माफ़ीत पूरताखारण मय नाहे।

বিধাতা প্রস্তাবিত-পশুদিগকে শাখাগু ভথ করিয়া ভক্ষণ করিতে সৃষ্ট করিয়াছেন, সুতরাং তদ-থেই ইহারা প্রশাস্ত। ইহার আফরিকা পশুস্থ বা-বহা বৃক্ষ ভক্ষণ করিয়া দিনপাত করে; তৃণক্ষেত্রে চরণ করিতে হইলে ইহাদিগকে অত্যন্ত ক্রেশ পা-ইতে হয়, কারণ প্রোবর্তিপদ্বয় অত্যন্ত প্রসা-রিত অথবা জানুদ্রয়ভূমিতে আরোপিতনা করিলে তাহাদের বদন ভূমি-ম্পাশ করিতে পারে না।

জিরাকা পশু দলবন্ধ হইরা বাস করে; এবং
আপদহইতে পলায়ন করিয়া প্রান রক্ষা করা শুের

যর নোধ করে; পরস্ত শজু নিকটবর্ত্তী হইলে
পলায়ন-সমগ্রে ভাহাকে ভ্রানক-বেগের সহিত
পদাঘাত করিতে তুটি করে না। স্বভাবতঃ
ইহারা ধার, এবং বাল্যকালাব্যি গৃহে প্রতিপালিত হইলে অনায়ানে মনুযেরে বন্য হয়।
এতৎপশু-দর্শনাভিলাযিরা লার্ড সাহেবের চানকের উদ্যানে অথবা কলিকাভান্থ প্রিযুক্ত কাবু
রাজেন্দু মল্লিক মহাশয়ের সুচাক বিহল্পমনালায়
গিয়া আপন অভান্ত কিন্ধ করিতে পারেন; পরস্ত
ইহা অভব্য, যে উক্ত স্থানস্থ পশু প্রাপ্ত-বয়ন্ধ
নহে; প্রাপ্ত বর্ক পশু সার্দ্ধন হস্ত উচ্চ হয়।

গলিকরের ভুমণ ব্ভান্ত।

দিতীয়াখায় প্রারম্ভ।

লিলিপট দেশীয় সমাটের সভাসমাজে পরিবৃত হইয়া গুরুকর্তাকে বন্ধনাবস্থায় দেখিতে আসা, ও তাঁহার আক্রার প্রকার বর্ণনা। গুরুকারকে তল্পৌয় ভাষা শিক্ষা করাইতে নিপুণতর পণ্ডিত শিক্ষক নিযুক্ত হওন; মুশীলভা নিবন্ধন গুরুকারের রাজানগুরুপ্রান্তি: পরিক্ষণাদি অল্বেস্প্র্রেক গুরুকারের নিকটহইতে তলবার ও বন্দুক কাড়িয়া লওন।

জানি মুক্তবন্ধন হইয়া চতুর্দিক্ নিরীক্রিন্তির করি নাই। ক্রুদ্ধর দেশ একটা উদ্যানের
ন্যায় বোধ হইল। তরিকট্বর্তি প্রান্তর ভূমি
কল উদ্ধান্তর চির্লিক্টি চতুরসু ক্রোশের
অধিক হইবেক না, দে ককল বোধ হইল যেন
চির্লিটা পুপোর চির্লিক্টি প্রান্তর হইবেক।
আর তত্ত্রতা উক্তব্য ব্কের হার্ল্ডি পরিমান
প্রায় ৭ কিটা বামদিকে অবলোকন করিয়া
দেখিলাম, তথাকার প্রথান নগর চিত্রপটে
নিথিত কোন নগরের ন্যায়।

কিন্তং কাল পরে তত্ততা নরপাল নিজ প্রানাদহইতে অবজীণ হইয়া আধারোহণ পুরংনর আমাহিক্তে অগুসর হইয়া আনিতে লাগিলেন। কিন্তু
তাদুল সমানিম তাঁহার গালে বড় সুসাধ্য বোধ
হয় নাই। কারণ তাঁহার আরোহণের অথাটি সুলিকিত হিলা বটে; কিন্তু তাহার জ্যাব্রিক্তিম ও
এতাদুল মাদুল বিকটাকার প্রাণী দুর্শন ক্র নাই,
সুভরাং আমার আকৃতি জন্মনৈটোর ব্যায় তাহার
দৃষ্টি পথে পভিত হইবামান্ত্রের স্ক্রমন্ত্রাক্র

হুইয়া বারম্বার অগিন্ধ পাদ্ধর উত্তোলন কবিতে नाशिन, किंडु में मुहि वाशीताहर विकि निशृत ছিলেন; একারণ আসনচ্যুত হইয়া পড়িলেন না। তদবসরে তাঁহার পারিষ্ত্রপণ্ড তাহার সমাপস্থ হইয়া ঘোটকের ব্লশি ধারণ করিলে ভূপাল তা-হাহইতে অনায়াদেই ভূমিতে অবরোহণ করি-লেন। অনস্তর তিনি বিকায়রসে নিমথ হইয়া বার-স্বার আমার বৃহদাকার নিরীক্ষণ করিতে লাগি-लেन ; किन्नु जामात वन्तन मृष्थलत जनमा सातिह দপ্তায়মান রহিলেন। ক্ষণকাল বিলম্বে তদাক্তায় পা-চক ও পরিচারকবর্গ অয় ব্যঞ্জন ও বিবিধ পানীয় দুব্য এবং ফলমূল প্রভৃতি আমাকে অভ্যবহার করা-ইবার জন্য প্রস্তুত করিয়া শকটযন্ত্রে সমারোপিত করিয়া আমি হস্ত প্রদারিলে পাইতে পারি এমন স্থানে আনিয়া রাথিন। আমিও তথাহইতে ভক্ত ভোজ্য পানীয় দুব্য পুরিত পাত্রাদি লইয়া অবিল-ষ্টেই শূন্য করিলাম। তন্মধ্যে বিংশতিটা পাত্র माः त्रभूवं ও प्रमणे। महा भूवं छिल। माः रत्र विः-শতিটা পাত্র তিন গুনে থাইয়া ১০ পাত্র মদ্য এক এক ঢোকে পান পুরঃসর নিঃশেষ করিলাম। অব-শিষ্ট যাহা ছিল তাহাও এতজপে উদরত হইল। রাজ্ঞারা এবং যুবতা রাজকুমারীরা বছসঙ্খাক প্রিয় বয়ন্য ৰথা সমভিব্যাহারে আৰিয়া আমার কি-**कि॰ मृद्र च २ जामस्य छेशरवसम क**रिन । अपदि অকস্বাৎ নমাটের অশ্ব কোঁন ঔদত্য প্রকাশ করি-ब्राह्मि हेराटक के मकन जोलाक निव्रक्तिमंत्र कोजा হইয়া যে ৰূপে সমাটের সমিধানে উপস্থিত हहेट नाशिन; उदियात याणि किष्टि वर्गनी क्रिकिट निम्राटिक प्रश्रेष्ट भागात वृक्षाकृष्ठ হইতে কিছু অধিক। কিন্তু ততুলা দীৰ্ঘকের তৎ-नष्टात्र व्यात्र त्क्र्रे हिन ना। छाहात्र व्याकात् रूम कहियामाञ प्रमादकत मान एम क विकारमञ्

উদ্বেক इहें । उद्गानीन दालांद्र वयुग् २৮ वरनंद ছিল, তন্মধ্যে প্রায়ঃ সাত বৎসর নানা দিগিজয় করিয়া মহতী শাস্তি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। তাছার আকার প্রকার সূচাক্তরণে দর্শন করিবার মান্দে আমি পার্ম কিরিয়া শয়ন করিলে রাজা আমা-হইতে ৫।৬ হাত দূরে দ্রায়মান রহিলেন। যাহ। হউক আমি অনেকবার ভাহাকে হাতে পা-ইয়াছিলাম; সুত্রাং তাহার বেশভূষাদির বর্ণনে কিছু মাত্র তুটি করিব না। তাঁহার পরিক্রদ অতি পরিকার ও সহজ, না আসিয়াদেশীয় রাজবজের মত অলম্কার বিভূষিত না ইউরোপদেশীয় ভূপা-লদিগের পরিচ্ছ ব পরিচ্ছদ ন্যার আভরণ হীন বের্থ হয় কিন্তু উভয়ের মাঝামাঝি বলিতে পারা যায়। আবার তাহার মন্তকে নানা রত্ন সুশোভিত এক मूवनमञ्ज कितोषे छिल। जाहात हु इाग्न किन छेट-क्षे शक्तिय शुक्ता स्टेमवाद विमुक्त म्ड्यनावसम इ**हे**श शास्त्र यांगि यङ्गाठात कति, धरे छस्त्र नमुष्टि बर्ए अकथानि निष्काय व्यति धात्र করিয়াছিলেন; তাহার দৈর্ঘ্যপরিমাণ প্রায় ভিন বুৰাল হইবেক। তাহার তুৰু ও কোৰ **হারক প্রচি**ক হাটকময়। এ রাজার ধর অতি সূক্ষা, কিন্তু সুস্পাই এবং অভিব্যক্ত বর্ণাত্মক। এমন কি দপ্তায়মান ছই-लिও তাहा श्रामात कर्वकृहत माध्रेन्स भीविष्टे हहे-য়াছিল। রাজবংশীয়ও অমাত্য বংশীয় জালোকেরা मूहाककरण পরিছেল इहेश। को जूक पर्णनार्थ তথার উপস্থিত ছিল। ভাছাদের অবস্থানের স্থান म्मान (वाथ इहेन (यन अक्यानि उँ क्षे नाणेन বন্ত্র মণ্ডিত ভূমি ও তদুপরি কলথোত ও রক্ত নির্মিত পুস্তলিকাবৎ সূত্রীদ্বারা কোন শিশ্পী কিছু ठिक्कन क्यं कित्रा अधिशाहि। वे महाताक कृत्या-ভূমঃ আমার প্রতি বাক্য প্রয়োগ করিতে লাসি-र्तन; जामिल छेलत्र पिनाम; किल रेक्स महस्र

र्वाथक इहेन मा।

त्नरे श्रकारत **উপবিষ্ট हरे**तामाज **भागत भार**ज বাদ ব্যন করিছে লাগিল; তাহার একটায় আমার বানচলুর কিঞ্জিকাত হানি হইয়াছিল। এই উপ-লাক্ষ্যভাষাদের নেনানায়ক (কর্নেল) তক্ষধ্যহইতে দুষ্ট ২ লোক ধরিয়া বাধিতেও তাহাদিগকৈ আ-भाव कहानकरत नम्भाग कविएक चारमन कविएक । किन।

কে कि কহিল উভয়ের মধ্যে কাছারে। তদ্ধ ভদ্মুগারে বেশারাও তাহাদিগকে ব্যানপূর্বক আ-भन र **एकाछ (वसम) भिन्ना ठिलिए र जामि हा**टि অধিকন্ত আৰু কতিপয় ব্যক্তি তথায় উপস্থিত পাই এমন স্থলে আমার সন্ধুখে আনিয়া উপ-ছিল, তাহাদের রীতি নীতি ধারা প্রভৃতির ভাব স্থিত করিল; আমি ও তৎ করাৎ দক্ষিণ হস্ত দিয়া प्रिक्श (राध् इहेल कथक क्रम शूर्ताहिक ७ काशापत मन कथक खनक समिशा e के व्यालन অলারের ব্যবস্থাপক কেবল আত্মপরিচয় প্র- পরিচ্ছদের জেবের মধ্যে রাখিলাম ও যথের প্রতি कान जानतम जामात ममीलागड हहेल। उठ,। अमिन मुश उन्ही प्रचाहेलाम, य म वाध कतिल क्षात्रिन, कहानिम् प्रभानीय, इंट्रोनियान् প्रज्ि य यन वामि जाहादक खीवम्बद्धार्यः शुाम कहित. কএকটা ভাষায় আমার কিছু ২ অভিজ্ঞতা ছিল, ইহা দেখিয়া এ নিৰুপায়ব/জি অভ্যস্ত ভয়ে চাৎ-জানশুদায়েতেই আমি কথা কহিয়া দেখিলাম; কার করিয়া উঠিল। ভালতে লবৈন্য দেনাপতির कारण मूहे यन्ते। थाकिया में हो इहेता। अनल्ड वामारक वालम स्क्रू वहेरा हु दिका वाहित कदिए ह मन्भनास्त्रिति नमाश्रेष्ठ हेज्द्र लाटकत् यथामा- (प्रथिश म काहात कीवरवद्र कामाप्त अकवारव क-क्रम का साहक रवष्ट्रम कतिवा भी छाहरत भारह व्यास । वाञ्चिति कित वासि वित वासि वितरम है जाहा कि गरक তাহারের উপরি কোন প্রকার অভ্যাচার বা ষয়ং। নিরুম করিলাম। কারণ আমি সদয় ভাবে তাহার কিছু দুইতা করি, এই ভাষে রাজা আমাকে খনেক বর্জন রজ্জুছেনন করিয়া তাত্তকে ভূমিতে ছাড়িয়া রজকের হত্তে সমর্গন করিয়া গৈলেন। তম্মধ্যে দিলাম, সেও তৎক্ষণাৎ পলায়ম করিয়া গেল। পরিদেবনাশূন্য কএক ব্যক্তি ছিল, তাহারা আমি এই রূপে অবশিষ্ট পাঁচ জনের এক ২ টিকে বাহির कतिया वक्षमाक्ष्मन अ मुक कतिया मिलाम । इराट তত্ত্ত্য বৈন্যসামস্ত ও স্মাগত ইত্র লোক নকল व्यामात म्याम् विक्रं मर्मान निकास सहसार मरहाय अकाम कान्यक वाशिन। समस्त्र जाराता वाह्नाकरल सम्बद्धा कर्गामा कर्गामा The second second

বিবিধার্থ-সঙ্গৃহ,

পুরারভেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দেয়াত্র মাসিক পত।।



धानुक कार्डित चाराम।

মোগল-জাতির বিবরণ।



चथुना ताई অভিলাষ निष कतिवात প्रयक् कता वाहेरल्ट

विवापिटमंत्र श्रम् स्थानवि व्यामिया-थरश्च मध्य-श्राप्ति सम्बद्ध भिन्न भूनः १ डिझिया इत्रहाटक चन्निक करत, काकात कियक, अनुन, काकात, अवर गरनरक ककाकीय-विवस्त जि- (मारान, वह काकि हजूडेरंप विकक आरक्ष कवा कानु रहेबारहमा अवस्थानुक (धा त्य नकत मन्द्रमाई। तिलात स्मरमाई क्रिस

বসতি করে, তাহারা তিৱত নামে প্রসিদ্ধ, এবং ভাৰাদের নামহইতে তাহাদিগের নিবাস ভুনির नाम । जिंक व्हेशार । काण्लीय-बुर्वत शूर्व গোবি-মকভূমি-পর্যান্ত প্রদেশ তাতার-জাতীয়দি-গের বাসস্থান। পোৰির উত্তরে মাঞ্রিয়া-পর্যান্ত লম্ভ জনপদ্যে সকল মনুষ্ঠে নমাকীৰ্ তাহারা মোগল বা মোজল নামে বিখ্যাত। অপর এই জাতি-ত্রয়ের নিবাস-ভূমির স্থানে ২ অন্য এক জা-তায় মনুষ্য থাকে, তাহাদের নাম তলুম।

পূর্বকালে মোফল ও তাতার জাতির মধ্যে कान विरमय প্रভেদ ছिन ना; উভয়েই তাতার-নানে বিখ্যাত ছিল। অনেকে কছে তাহার। গগ্ ও মেগগ নামা দুই সহোদর ভাতার সন্তান; कन्दः काम्भीय-इम्बर्ख ठीन-म्राम्ब छेखत जान-लवा ख नम छ-श्राम्मवानिता बक काणोत्र, वस्कान मन्दान्य इस्वारक हे जाहारमत का जाः स्न एक हरे-शास्त्र द्रयोग्डेकीन्-नामा अतिक नातन्।-रेजि-श्मार्व तिथन, मार्ड यारे नं दरमत इट्रेन व्यालक्षाया-नार्या श्रानिका तमनीत भत्राक्रममानी शृद्धता जालमाहिटगत वोद्या श्रकाम-कतर्नार्थ করিয়া-বাঘ্যজ্ঞাপক মোকল-উপাধি ধারণ हिन ; अर॰ क्रमणः ठाहारम्त रःण ও পরে তাহাদের দলবল সকলেই ঐ উপাধি ধারণ করি-য়া মোন্ধল-জাতির সৃষ্টি করে।

আলকোয়ার জ্যেষ্টপুঞ্জের নাম বদান্তজার; তিনি বিশিষ্ট ক্ষমতা-সম্পন্ন ছিলেন, এবং তাহার হাজ্য মাঞ্রিয়াহইতে গোবিমকভূমির পশ্চিম পার-পর্যান্ত বিষ্ণুত ছিল; তৎ প্রযুক্ত উক্ত স্থান অদ্যালি মোজোলিয়া নামে বিখ্যাত আছে।

নতঃ নিরামিষ ভোজিপ্রযুক্ত মোগলেরা পশ্চিম দেশীয় আমিষ-প্রিয় ভাতরেদিগের অপেকার

थर्दकाय, अवः लघू। जाशास्त्र कक्षा चि थर्द, अवः उर्ध्ययुक्त नमछ **एह धर्व (वांच इस्र) न्य**या-প্রচুর নছে, কিন্তু মন্তকের কেশ চিক্কণ কৃষ্ণবর্ণ ও দীর্ঘ, মোগলেরা ঐ কেশের একটি বেণী করি-या श्रुटिन नयमान कतिया तात्था नयनवय পরস্পার অতি অন্তর ও তীর্য/গ্-ভাবে স্কিড, না-निका कृषु उथर्व, अदः करणाल छेक। इंहामिरगत हन् मीर्घ, किन्ত তত্ত। पन्त भौकि छेष् माष्ट्रित पन्छ-পঁক্তি হইতে পশ্চাৎ স্থিত, কলতঃ অনেকের দস্ত অধরোপরি স্থাপিত। বর্ণ উত্তম গৌরাজ (চম্প-ক-ৰৰ্ণ) বটে, কিন্তু অবয়ব তাদৃশ সুত্ৰী নছে। বল-दीर्या-ह्याच्यानि अन हेहाहिए इत देशिक मन्य-खि-मरक्षा भना, किहरे जाहार**७ वंक्षिठ मारे**।

চীনদেশীয়দিগের সহিত সংশ্রুব হইবার পুরে মোঞ্জলেরা অদম্য, জুর, এবং বিবাদ-তৎপর ছিল, किन्न व्यथुना भान्त, नहन, बदः व्याजिधा-श्रिय हरे-म्राट्स, शहस व्यम्प्रीं विषय हिश्राश्वरण व्याटक व्य দৈব রাগান্তিত হইলে অদ্যুপি তাহারা ক্ষিপ্তপ্রায় इहेश थारक।

क्षिकार्या-मन्धामान स्थानाता निजान वि-मूथ; (करुरे उৎकर्स अवृष्ठ रम ना; अहिः ভারতবর্ষের তুলা বিস্তীর্ণ মোজলিয়া-প্রদেশে এক সহসু কৃষক প্ৰাপ্ত হওয়া কঠিব। তত্ত্ৰত্য সক लाई स्मय, महिय, हान वा जाय छात्रव कतिशा पि-ন্পাত করে। অপর তাহারা অচল গৃহাদি নির্মা-(वंड उर्शत नरह। जाहारितन स्टान हेडेक नि-আিত বাটী প্রায়ঃ নাই; হংসাদি-আক্সাদন করিবার টাপার ন্যায় কাষ্ট-নিশিত ঠাটে বেবলোম-নি-বিত মলিহার ন্যায় এক প্রকার স্থূল বস্ত্র পাঁক্টা-মোজলদিগের কাশ্রিক সৌধ্র উত্তম নতে। প্রধা- দিত করিলেই ভাষাদের গৃহ প্রস্তুত ইয় ি এ প্-হের নাম "ষের;" ৭০ পৃষ্ঠে তাহার চিত্র সুস্তিত रहेशास्। श्रीत्रकारम अ गृह पूर-रात्र-व्यक्ति-

বছদারা আচ্ছাদিত থাকে; কিন্তু শীতকালে ঐ আচ্ছাদনের দৈওও না করিলে দিনপার্ত করা দুক্ষর হয়। এই ষের-নামক গৃহের মধ/ভাগে এক পাত্ত্রে প্রজ্ঞালিত অঝি রাথে; এবং তজ্জাত-ধূম-নির্গমের নিমিত্ত গৃহোদ্বভাগে এক ছিদু থাকে। মোন্দলিয়া-প্রদেশের কোন ২ স্থান অন্তঃস্ত শী-তল; मीठकारन उथाय वाज-कड़ा पृश्नाधाः, अह প্রযুক্ত মোগলেরা গ্রীম্মকালে তথায় বদতি করিয়া শাতের প্রাব্রম্ভে তথাহইতে অন্যত্ত প্রস্থান করে। অপর মোগলদিগের সম্পত্তি-মধ্যে অশ্ব, উষ্ট্র, ছাগ ও মেষ্ট প্রধান; তাহাদিগের চরণ-করা-ণেতে এক স্থানের ক্ষেত্র ত্ন-শূন্য হইলে, সূতরাং অন্যত্রণ প্রয়াণ করিতে হয়, এই কারণবশতঃও মোগলেরা বহুকাল একস্থানে বাস করিতে পা-রে না; সর্বদা স্থানে ২ ভূমণ করিতে বাধ্য হয়, এবং তল্লিমিত্তে যাদৃশ গৃহ অনায়াদে স্থা-নাম্বরিত হইতে পারে, তাদৃশই প্রস্তুত করে, ও গৃহ-সজ্জার সামগ্রী অধিক সমুহ করে না।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে, মোগলেরা নিরামিষ ভোজী, পরস্তু তাহারা অন্ততঃ যে মাংস-উক্ষণ করে না এমত নহে, মধ্যে ২ মেষ মাংস ব্যবহার করিয়া থাকে। পরস্তু দুগাই তাহাদিগের প্রধান আহার, এবং তাহা নানাপ্রকারে প্রস্তুত করিয়া গুহণ করে। দুগো বা চার জলে যবের শক্তু সিদ্ধা করিয়া ভক্ষণ করাই প্রসিদ্ধা রীতি। তাহারা অন্যিনা-দুগা অতিপ্রিয় জ্ঞান করে; এবং তদুগোর তক্তে এক প্রকার মদ্য প্রস্তুত করিয়া পান করিয়া থাকে। শুদ্ধা জল পান করা মোগলদিগের রীজিনহে। জলে চার্রুইক নামা চা-বিশেষ সিদ্ধা করিয়া পান করাই ব্যবহার-বিদ্ধা। অনেকে এ চার জলে দুগা, লবণ ও নবনীত মিশুত করিয়া ভাহার আদুতা-বৃদ্ধা করে; কদাপি ঘৃতে মরদা ভাজিয়া ভাহার ঐ

চার জলে মিশ্রিত করে। এ চা পান করিবার নিমিত্ত মোগলমাত্রেই আপান ২ বক্ষঃপ্রদেশে কাষ্টমির্মিত চাপান-পাত্র ধারণ করিয়া থাকে।

অশ্বারোহণে মোগলের। অত্যন্ত তৎপর; তৎকর্মে তজ্জাতীয় কেহই অক্ষম নহে, এবং অতি
বৃদ্ধেরাও প্রভাহ বহু-ক্রোশ-পরিমিত-স্থান অশ্বারোহণে ভূমণ করিয়া থাকে। তাতার-জাতীয়েরা
মাংসাশী-প্রযুক্ত মোগলহইতে স্থূলকায়, এবং
বলিষ্ঠ, কিন্তু লঘুকায় মোগলের তুল্য অশ্বারোহণে কুশল হইতে পারে না।

পূর্বকালে মোগলদিগের আদিপুরুষেরা নানা-বিধ দেবদেবীর উপাসনা করিত। বিশেষতঃ বৈকাল নামক হৃদ তাহাদের অত্যন্ত মান্য ছিল। ডেড়-मरुमु वर्भवावधि हेमानी छन भागत्ववा वे स्व-দেবার বিনিময়ে বুদ্ধদেবের সেবায় তৎপর হইয়া-(हः किन्न देवकाल-शूरम्त भीन/ जात नायव श्र नाहे ; व्यम्मानि नकत्व जाहारक यर्भरतानां माना করিয়া থাকে। তাহারা কহে ' ঐ হুদের সমুদুাভি-নান আছে; কোন নরাধম তদ্গুর্ভে নৌকারো-र्ग कतिया वे जनानग्रक 'मानाहे' वर्षा नम्मू नात्म मत्याधन ना कतिया 'अत्मद्धां' व्यर्थाट इन भारत चारवनन कतिरत उदक्रनार (म महानद्राहे নিপতিত হয় ; কারণ ঐ কুপিত হুদ তাহার শাস্তির নিমিত্ত ঝড় বৃষ্টি তরঙ্গ উৎপাদন করিয়া তাহাকে প্রাণে বিনষ্ট করে,"। পরস্তু, শ্রুত আছি, এক জন नाहनशूर्व क्योग्न मनुष्य अवियद्यत याथार्था निकाल-ৰাৰ্থে ঐ ছুদের মধ্যভাগে আপন ভরিমধ্যে দ**্রা**≁ यमान रहेका वे दुएक निकामूहक अटवदा मदस् সম্বোধন করিয়া তদুপরি এক গেলাস মদ্য ঢালি-या नियाहिन; किन्न बे दूर जाहादक किहमाब गांखि प्रम नाहे। त्राथ इस विष्मा विमाने कुम जारादक कमा कतिया थाकिटनका

মোগলের। যুদ্ধবিগুহে অপ্রসিদ্ধ নহে; পূর্বোক্ত বদান্তকার সমন্ত্রিপুণে সামান্য ছিলেন না। তাঁ-হাছইতে দশন পুরুষ জ্ঞ্ছিস্থা আশিয়া-থণ্ডের অধিকাংশ জন্ন করিয়াছিলেন; ও তাঁছার প্র-পৌএ বাবর্শাহ ভারতরর্ষে মোগল-রাজ্য সং-স্থাপন করেন। অপর এই মোগল-রাজ্যংশে আ-ভিলা-প্রভৃতি অনেক সুপ্রসিদ্ধ মহাপাল জন্মগুহুণ করিয়া পারেন, তুক, চীন, ভারতবর্ষ, ও ইউরোপের ক্রক প্রদেশ জয় করিয়াছিলেন।

গলিবরের ভুমণ ব্তান্ত।

্রাক্রিনি মি যে ঘরে থাকিতাম তথায় ভূমি-আ। ভ্রম্প করার রাত্রিকালে জ্রম করার রাত্রিকালে জ্রম করার করি কি, উলিক্ষ্যুক্ত্ৰেক্ষ্ট্ৰেই ক্ৰমাগত এই কে্শে এক পক্ষ যা-भन कड़िएठ क्रेन। **अनुस्त तीकाकाय भागात जन**ा এক শ্যা প্রস্তুত হুইয়াছিল৷ তাহারা আপনা-(मह वावहारतत मङ एह गड मया अकरत अक भक्ते (बाबाई कतिश चानिन, ७द९ वे शृक्ष मरध्र লইয়া প্রিয়া আমার ব্যবহারাথ এক শ্যা পুনঃ श्रान्तर कहारेन। उनारका रम्फ माठ माया मीर्य প্রতে যুভিয়া ও উপর্যুপরি চারিতল করিয়া সীবন क्वेल याक केव्हा डाकारे क्षेत्र, वामि उ९-কালে নেই প্রস্তরময় মেজিয়াক্রপ-শয্যার কা-ঠিন/জনিত যাতনাছইতে মুক্ত ছইলাম। উক্ত म ९५७ में बाल वाहाता व्यामात क्रमा ठापत, करन, লয়ে**স্কল্দ প্রভৃতি অপরাপর ব্যবহার্য্য বস্তা-**দিও প্রস্তুত করিয়া দিয়াছিল। ফলতঃ এত দিন কেশে কালহরণ করিয়া এই কএকখানা বস্তুর नाराया अ यर्थष्ठ विलया मानिएक रहेरवक।

রাজ্যমধ্যে আমার উপস্থিতির সংবাদ প্রচার

रहेवामात कि धनी, कि चनन, कि कूजूरको, नक-लारे चामारक ररिश्वात सम्। चानियाहिन। विवाद कि, गुर्म नकन मून/প्राप्त रहेग्नाहिन।

यित ताका उरकारण ताका मस्य सामनावाता निवातन कित्रा ना शाठाइ राजन, जाहा हहेरल क्गामि उनारनातिक वाशास्त्र महारेनियना हहेगा छिछ। ताका याहाता र व्यामारक मिश्राहिन, जाहारमत नकलरकहे वाहोर कित्रिया याहेर है, वर नजात विमा व्यम्मितिक वामात श्रहत निकहेन्द्र में कहरखत मस्या काहारक उना व्यामित है किन
हिन्द्र, व्याका कित्रया शाठाहेग्राहिस्तन। वहें डेलनर्क व्यक्षारकता यर श्राह्मा का कित्रया कित्रया हिन्द्र।

এদিকে রাজা সশক হইয়া দুয়োভ্য়া সভা দিগকে আহ্বান করিয়া নানা উপলক্ষে আমার विषयः वामान्वामामि कविष्ठ नागितन। शवि-ণামে এক জন সদাশয় নিগুঢ়তবুজ্ঞ মহাত্মা বহুর প্রমুখাৎ অবগত হইলাম; যে সমভা রাজা আমা-य्वि व दिवद्मारलाञ्नाक्वनिक-सहारकुरम हिनयासिन। याश्रम कतिरङ्ख्न। चारमे मरस्त्रता त्राकारक व्यामात वद्यातमात्रम-कद्रश्वत मूय्कि निशाहिनः কারণ দিন ২ আমার আহারাদি দুব্য যোগাইতে यामृत्र वार इंट्रिइन, जाहा यनि उकार किछ काल इ.स. ७८७ द्वाक्र मध्या अककारण पूर्लिक উপস্থিত হুইবার সম্ভাবনা। कथन २ वा छा-হারা এমন পরামর্শ করিতে লাগিল, যে আমাকে কিছু আহার না দিয়া অনহাঙ্গে গুক্ক করিয়া মা-ৱিয়া ফেলে। কোন ২ **নময়ে বিবমিশ্রি**ত-বাণে আমার মুথ নানিকা হস্ত পাদাদি স্বাঞ্চ বিক করিয়া বংহার করিতে উদ্যক্ত 🐂 ে কিন্তু পাছে व्यामात्र मृत्राम्हन्तं शृजिनक द्वाका मध्या विकृत रहेश ताक्षधानी किया अखनकः मधुनाय बाका-मट्या महामाती छेशिन्ड करत, बहे बानकार

তাহাদের তৎকরণের প্রতিবন্ধক হইয়াছিল। এ जमस नामाश्रकात भवामर्ग रुरेट्डाइ, अमर्-जमद्म কএক জন সৈনিক সভাগৃহদ্বারে উপস্থিত হইল। उत्पाद्धा पूरे कन वामात शक हरेयां गिनत्य निर्वमन क्रिन, "महाताकः। এই महावीत चा-মাদের ছয় জন দোষিকে ধরিয়া মোচন করি-श्राष्ट्र, এ वড़ महामञ्जा এই कथा श्रुनिवामाञ मज्ञ - ताकात मत्न अमिन ज्ञांव उपर रहेन, य তিনি তৎক্ষণাৎ ঘোষণাদ্বারা অঠাদশশত হস্তবৃত্ত वे नगरत ও जनूभाखिमगुरमगम्नारत वहे व्यारम्रम ডিপ্তিম প্রচার করিয়া দিলেন, যে "আমার আ-হারার্থে গ্রামস্থ সমস্ত লোকদিগকে অনুক্রমে প্রতিদিনু প্রাতঃকালে ৬ টি গে। ৪০ টি মেষ ও তদুপযুক্ত অন্যান্য খাদ্য ও পেয় দুব্যাদি পা-ঠাইতে হইবেক, এবং যাহা ভাহার উপযুক্ত মূল্য তাহা রাজভাগুারহইতে প্রদত্ত হইবেক "। কা-রণ তথাকার এই প্রথা যে রাজার সংসার্যাত্রা নির্বাহ একপ্রকার নিক্ষর ভূমির উপম্বত্ইতেই হইত, কোন দৈব প্রয়োজন উপস্থিত হইলে ब्राकाञ्च श्रकावर्ग अकवारका यथकिष्मिष्य श्र-দান পূর্বক তৎকার্য্য সমাধা করিত। সে যাহা क्षेक आभात टेम्निक्न পति हर्या मगाधानार्थ ब्राका ७०० लाक विनादिण्य किवल चाहां व मामशात नियुक्त कतिया पिरलन। **वामात** शृह ষারের উভয়-পার্শে তাহাদের শিবির সংস্থাপিত হইল। অপর তদ্দেশপ্রচলিত পরিচ্ছদের ন্যায় আমার বেশোপযুক্ত-পরিচ্ছদ-প্রস্তুত-করণার্থ তিন गठ गृहीकीयो, अवः छट्यामाश्राचान-निका श्र मानार्थ । जन हैशयुक जूनिकक, नियुक्त इरेन। शर्व ब्राक्कीय ज्ञा ७ ,(एक्कीय मान्। त्वाक अवर ब्रकार्थ मिथुक देनन।नामसामि नर्कटनहे व्यामात नव्यस्य निश्मकात्र त्राणात्राक त्रवरमत्र व्यन्-

শীলন করিতে লাগিল। কলতঃ ইত্যাদি ব্যাপার সকল রাজাজ্ঞানুসারে বিশিষ্ট-প্রকারে চলিতে জুটি হইল না। তিন-স্থাহের মধ্যে আমার ডদেশীয় ভাষার যথেষ্ট শিক্ষা হইল। তদানীং রাজাও সশরীরে আসিয়া যৎপরোনান্তি সমান সহকারে আমার তত্ত্বাবধারণ করিতেন; এবং আমার শিক্ষার্থ শিক্ষকদিগকে সাহায্য করিতে মহা সম্ভপ্ত হইতেন।

এখন তাঁহার সহিত আমি এক প্রকার কথা कहिए बाइछ क दिलाय, बामाद वस्तन मुक्ति विषयक कथावाडीहे श्रथम भिका हय। ताङा আমার নিকট আগমন করিবামাত্র আমি প্রতি-দিন ভূমিপাতিত-জানু হইয়া এ কথাই বার মার কহিতাম। তৎশুবৃদে তিনিও উত্তর দিতেন "हाँ, कान नहकारत जूमि मुक्कवस्तन हहरत; কিন্তু আপাততঃ সভাসম্বর্গের সহিত একমতে পরামর্শ করা, বিশেষ্তঃ আমার রাজ্যের শা-স্তিভক্তের অকরণ-বিষয়ে তোমার শপথ করা ব্যতীত তুমি মুক্তি পাইতে পার না।" নে যাহা হউক রাজা আমার প্রতি **সর্বতোভা**রে म्या अकान कहिए नाशितन। मर्था र आका रेथया ও भाक्षीया गरकारत প्रकारर्भत ও जा-হার অনুরাগ-ভাজন হইতে আশাকে ভূয়ো-ভূয়ঃ অনুরোধ করিতে লাগিলেক আরো রা-জার মনের এই অভিপ্রায় বোধ হইল, "বে একেত এ এতাদৃশ বৃহৎকয়ে ভাহাতে আপ্রকার 'উপযুক্ত অন্ত শত্র রাখিলেও রাখিতে পারে, যদি ইহার উপরি আবার অজাদি রাখিয়া থাকে, তবেত যাহার পর নাই ভর ও বিশ্বস্থ घटेनांत गञ्चावना, अञ्जव आनकाश्रयुक यान তিনি কতিপয় দেনা পাঠাইয়া আমার শরীর ও ব্যাদিতে গুপ্ত গ্ত-অন্ত্ৰ শক্ত শৰ্মস্থান

করান, তাহাতে আমি মনে ২ বিষয় বা ক্রুদ না হই।" রাজার এতাদৃশ অভিপ্রায় অবগত হইয়া আমি কহিলাম, "আমি তোমার সম্-थि नथ हरेश नर्वाष ७ পরিধীত পরিচ্ছ-मामि (प्रथान्टिक्), व्यापनि निर्देश ও मञ्जूष्टे ছউন: " এই সমস্ত বিষয় আমি তাঁহাকে **ক**তক কথায় কভক বা ইঙ্গিভছাৱা ত্ৰগভ ব্রাই-লাম: ইহাতে তিনি উত্তর করিলেন, "রাজ্য প্রচলিত-ব/বস্থানুদারে আমার দুই **জন দৈ**নিক যাইয়া ভোমার বজাদি অস্বেয়ণ করিবেক; কিন্তু ভাছা কদাচ বুসম্পন্ন হওয়া বস্তবে না । দয়া ও ্লাম, যথা। নদিচার প্রভৃতি ওণে আমার প্রতি রাজার যে ¹ আমাকে বে সমস্তই তাহার৷ প্রতিদান করিয়া-নেই মূল**ে তাহার। আমাকে দিয়াছিল।**

तिह नकल पुरा ऋष्यमार्थ छेशक्षिक पृष्टे कन দৈনিককে কামি হত্তে করিয়। তুলিয়া প্রথমতঃ আমার কুর্ত্তির জেবের ভিতরে রাখিলাম, পরে ক্রমে ২ ভাহাদিগকে এক জেবছইতে অন্য জেবে প্রবেশ করাইতে লাগিলাম, কিন্তু আমার ঘটিকা-রক্ষণের দুইটি জেব ও অন্য একটা গুপ্ত জেবের मस्य जनर्थक (वार्य जाशांनिगरक प्रावन कद्रा-हैलाम ना, कांत्रभ नामान/२ প্रशासन हरेल छा-हाट जनावाद्रवला जामाइहे वावहाद्र थात्क, অন্যের কিছুমাত্র সংশুব পাকিবার মন্তাবনা নাই।

যড়ি-রাখিবার দুই জেবের একটাতে আমার একটা ফপার ঘড়ি, অপরেতে এক চীরখণ্ড-পূ-টিত কএক সুবৰ্ণ মৃদ্যু ছিল। এই দুই জন ভদু रेननिक कालो, कलम, कागळ लहेशा चामात श्रीत-দ্দরে যেথানে যাহা অধ্বেষণ করিয়া দেখিতে **शाहेल, ७**९मम्माग्रहे चिविक्**लकारा श्वाक** क-রিল। ভত্ত্ লওয়া শেষ হইলে তাহারা ঐ পত্ত मगुरिहेत मूर्गाहत-कर्तन-मानरम चाननाहिनरक क्तिवर्टेट नामारेश मिट पामाटक चनुद्राध করিল। ঐ তালিকা-পত্র-লিখিত তাবদ্বিযয়ের তাহাতে তোমার অনুমতি ও সাহায্য ব্যতাত একটি ২ কথা ধরিয়া নিজ-ভাষায় অনুবাদ করি-

"নহারাজ। আদে আমরা এই ন্রুনৈলের প্রকার বিশাস ক্ষিয়াছিল, তাহাতে তিনি অনা (কুইনবসফুস্ট্রিনের) কুর্ত্তির দক্ষিণ জেব অনুস-য়াবে এককালে নিঃশঙ্ক হইয়া আমার হত্তে আ ্ দ্ধান করিয়া কেবল এক থানি প্রকাণ্ড ভূল বস্ত্র-প্রন সমস্ত লোকদিগকেই সমপ্র করিতে পারি- , খণ্ড দেখিতে পাইলাম; ইহাতে অনায়াসে আপ্র ্ডন ৷ আর ভাহার৷ বে ২ দুব্য আমাহইতে ; নার রাজ্যের প্রধানালয়ের মধ্যভাগ আবৃত ১ই-ল্টয়ড়িল, ঐ নগরহইতে প্রভাগেমন-কালীন তৈ পারে। বামদিকের জেবে একটা বৃহৎ রজ-ভময় নিন্দুক বা করপ্ত (পেটারা) প্রাপ্ত হইল, মা-ছিল। যাতা প্রত্যপণীয় বোধ হয় নাই, তাহার যে দৃশ অ**ব্যেণকর্মরদের পক্ষে তাহা উত্তোলন করা** মলঃ সংমি নিদিউ করিলাম, তদনুসারে তাহার সুদ্রপরাহত। আমর। ইহা অনাবৃত করিয়া দেখা-हैट वामना कड़ाएं जाहाह हहेन; बारत भागता **उचारक्य नामिया (मधिनाम, य्य अक श्रकात** धृनित मध्य चामारहेन चाकाम् भन मध रहेना গিয়াছে; আর ভাহার অণুবৎ কিয়বংশ আমা-(मत উভয়ের মুখনাবিকারজে প্রবিষ্ট হইবাতে व्यायता व्यमवत्र वह काहित्व वाशिनामः। देवात ফতুয়ের দক্ষিণ জেবে দেখি<u>ং</u> মে শাদা ২ পা-चना कान मुन्। উপर्यु। পরিভাবে সাজান বড় **क्र शाहा काहि निया वैक्षा कान २ जन्मरू** চিক্টে চিক্তিত ভাষার প্রত্যেক চিক্ট অনুদায় वर्षर्वज्ञ न/। देशांत नाम (बर्र वर भावा

कान याखा मा अक व खा, मूनहरेल नहा २ इंख कृष्णि यश्चित्र शहादर्थ मून्यांक्किंक, व्यक्तिन যেন মহারাজের সভামশুপের সম্পত্ম কাঠগড়া বোধ হয়, নরলৈল তাহা দিয়া আপন মন্তকের क्रम विनाम कविष्ठा थारक, हेरात उथा कानिवात জন্য তাহাকে জিজ্ঞানিয়া বিরক্ত করিলাম না; कलुङः विलाख कि जामारमञ्जू कथा छाहारक ज्व-গত করান বড় সহজ ব্যাপার নহে। পায়জামার (রেনফুলোর) দক্ষিণদিকের ৰড় জেবের ভিতর একটা লৌহময় ভিতর ফাঁপা কোন স্তম্ভবৎ প্র দার্থ দেখিলাম, সেটা এথানকার মানুষের মত লম্বা, তাহা হইতেও বড় এক থানা কড়িকাঞ্চের ন্যায় শুক্ত কাপ্ত তাহাতে বাঁখা, উহার এক দি-কের উপরি দিয়া একটা প্রকাণ্ড লৌহ খণ্ড বা-ছির হইয়া রহিয়াছে, তাহা আবার এক প্রকার क्रिय़ा काणा; উहामाता कि वावहात्र निष ह्य তাহার কিছুই আমরা জানি না। উহার বাম জেবে ঐক্প অপক্প আর এক যন্ত্র রহিয়াছে। দক্ষি-ণের ক্ষুদুজেবে দেখি কতকগুলিন গোল ২ চেপটা শ্বেত ও রক্তবর্ণ ধাতুনির্মিত খণ্ডবৎ বস্তু। তম-(थ) नामा अनिन इक्ट उत्र (वाथ इहेन। वृहर उ ভারীর কথা কি কহিব, তাহা সঞ্চালন করিতে चामारम्त উভয়ের कम्या इहेल ना। वामिर्कत **क्षादवत्र मरक्षा असिश्च १००० म्हर्मे । कृष्ण्य १**-७ छ দেখিলাম, ঐ জেবের তলে দপ্তায়মান হ্ইয়াও তাহার অগুভাগ স্পর্শ করিতে পারিলাম না। তাহার একটা আবৃত থাকায় কোন অথপ্ত পদার্থের न्यात्र विषय इरेन, किन्तु अभन्नोत्र केन्न जारत (क्या) भिन्न यम कामारम्ब मस्त्रांकत विश्व वर्ष व्यव्यर्ग পোলাকার কোন পদার্থ রহিয়াছে। এতাদুশ ভর-কর বস্ত্র দর্শনে শক্তিত-মনে তাহ। দেখাইতে আ-किकन क्षित्रात्र महरेगनद्व खाबा दिशाहेटक एरेन।

তিনি উভয় বস্তু নিকোষ করিয়া আমাদিগকে জানাইলেন, যে উহার একের দারা তিনি মদেশে আপন শাশ্রুকৌর ও অপর দিয়া ভোজন কালে मार्ग क्डन कतिरुन। जनस्त जात पूर्वे कपूर् জেব ছিল, কিন্তু তক্মধ্যে আমরা প্রবেশ করিতে পারি নাই। দে**খিলাম ইহার দক্ষি**ণ বগ্লি-**হইতে এক গাছা রৌপ্য-শৃঙ্ল বাহির হ**ইরা রহিয়াছে। তাহার তলে এক আশ্চর্য্য যন্ত্র हिन। **यामारम्ब श्रार्थनानुमार्त्व वाहिब**्क्रिल পর দেটা বোধ হইল, যেন বর্ত্তুলাকার ও অ-র্দ্ধেক রজভময় ও অদ্ধেক কোন স্বচ্ছধাতু নি-র্মিত দুব্য বিশেষ। নরলৈল সেই যন্ত্রটি আমা-**रित कर्णत कारह धित्राल त्याध हहेल, यन हेहार ह जनयञ्जर≪ ऋर्वित्र**ञ्**दे धृ**नि हहेटल्**रह। मरन** २. করিলাম হয় তাহা কৌন অজ্ঞাত **পশু, নয়** দেই নরশৈলের উপাস্য দেবতা হইতে পারে। আমরা বৃগুতানহকারে ইহার তত্ত্ব জিজ্ঞাসু হইলে তিনি আমাদিগকে এই বি**জ্ঞাপন করি**-लन, "य हेरात महिल अक मल ना हहेग्रा আমি কোন কর্ম কথন করি না", এই অস্পাই কথার মর্ম যদি আমরা যথার্থকলৈ বুরিয়া থাকি তাহা হইলে আমাদিগকে তাহার উপাস্থ **(म्व**णारे त्वाथ कतिए स्त्रा विस्थावतः हेहा नदटेनात्वत कीवम्नात जावरकाहर्यात नाथरमा-পযোগি সময় কহিয়া দেয়, একারণ ভিনি ইহা-क रेप्तर वायी विषय हुन । जन्म वामिरकं वर्शन वा क्पूरकवर्षेट जिमि अक भागा कानवर मुद्रा वाहित कतिलम, छाहा अछ बड़ य छाहाटक चनाग्रात्म धोरतदम्त कार्या-नाथम एहेटङ शाद्र, কিন্তু তাহা থলির ন্যায় বিস্তৃত এ সংকৃতিত করা বায়, ও তাহা ভজপে ব্যবহার করিছেও रिशियाम। क्यक थक शोउन् बाकु खांबारड

ছিল, যদি তাহ। যথাথ সুবৰ্ণ হয় তাহা হইলে তাহা বহুমূল। হইবেক সন্দেহ নাই।

"মহারাজ, অপেনার আক্তা শিরোধার্য্য করি-য়া নিরতিশয় যতুসহকারে তল্ল২করণপূর্বক নর-শৈলের পরিধীত পরিচ্ছদের জেব নকল অনু-সন্ধান করিয়া দেখিলাম। অপর যে এক প্র-কাণ্ড গশুর চর্মে নির্মিত কটিবজনে তাহার 🖯 কটিদেশ বাধা রহিয়াছে, ভাছাতে পাঁচ মানুষ লম্বা এক থানি আমি তাহার বাম ভাগে লম্ব-मान चारह, चलतिरिक पूरे मूर्या अकरें। रेथली, তাহার এক ২ ট। মুখে আপনার সমুদায় প্রজা অনায়ানে ধরিতে পারে ৷ ইহারি একাংশে অসা- . দাদির মন্ত্রকবৎ বর্ত্তুলাকার গুটিকান্যায় অতি-শয় ভারা বাতুময় কোন পদার্থ, তাহা তুলিতে इहेरल र ए वनवारनं आवश्यक इस्। रेपनीत অপর ভাগে রাশাকৃত ক্ষ্ফবর্ণ বালুকাবৎ বস্তু আছে, তাতা নিতান্ত ওকতর নহে; আমরাও করতলে অক্নে ৫০ টা লইতে পারি।

"নর্গেলের অন্ধ প্রত্যন্ধ করে যিয়া যাহা ২
আমানের নয়নগোচর হুইল তথ্যমুদায় অবিকল পত্রাকাত করিলাম। শৈল মহাশয় আপনার আনেশ যথপরোনান্তি মান্য করিয়া আমাদিপের প্রতি বিশিপ্তরূপ ভদুতা প্রকাশ করিয়া
ছেন ইতি। এই পত্র আপনার শুভ রাজ্যের
উন্নব্তিত্য চাল্মানায় শুক্ চতুর্থীতে স্বাক্ষরিভ হুইয়া ক্রেক্রিন ক্রেক্র, মারদি ক্রেক্
এই বাক্য মধ্য মুদ্বাক্ষিত হুইল ইভি "।

ভূপাল সমিধানে যথাবিধানে এই নির্ঘণ্ট বা তালিকাপত্ত পাঠ সমাপ্ত হইলে পর তিনি নাতি-শ্র-প্রযত্ন-সহকারে আমাকে ঐ সকল রক্ষিত বস্তু সমর্পন করিছে আদেশ করিয়া সর্বাপ্তে তলবারের কথাই উল্লেখ করিলেন; ভাহাতে

আমি তৎক্ষণাৎ সেই সকোষ অন্ত্রথানি ও चन्रान्। वस्तु नकल स्क्विंहरे वाहित कति-नाम। ইতিমধ্যে তিনি ब्रका-कर्त्रगर्थ निक-ममो-পত্ন মনোনীত প্রধান ২ তিন সহসু সেনাকে কিয়দুরে আমাকে ঘেরিয়া দাঁড়াইতে আদেশ क्रियाहित्वन, जाहाता ७ जम्मूनात्त धनूर्वान वहेशा गठक छ।-পূर्वक अमञ्च । প্রস্ত । इहिया हिन ; কিন্তু নৰ্বতোভাবে রাজার প্রতি স্থিরদৃষ্টি হই-বাতে দে দকল আমার দৃষ্টি পথে পতিত হয় নাই। ভূপতি অন্তথানি নিক্ষোষ করাইবার অভি-প্রায় প্রকাশ করিবামাত্র আমি তাহা করিলাম। সমৃদু জল লাগিয়া ভাছার স্থানে ২ কিছু ২ মরিচা পড়িয়াছিল, কিন্তু অধিকাংশই উচ্ছুল ছিল। ঐ নতেজ অন্ত করে করিয়া খেলিবার মত ইভস্ততঃ সঞ্চালন-করিবার-সময়ে সুযেঁ/র তেভোবি**স্ব তা**-হাতে প্রতিবিশ্বিত হইবামাত্র তাদৃশ চাকচক্য-শালী প্রতিফলিততেজে তাহাদের চক্ষু সকল দ্ধা বা বিদ্ধপ্রায় **হওয়াতে তাহারা সমুপঞ্জাতভ**য়ে ভীত ও বিস্মিত হুইয়া উটেচঃম্বরে চাৎকার শব্দ করিয়া উঠিল। রাজার মনোবৃত্তি নিরতিশয় দৃঢ় ছিল বলিয়া তাঁহার যত পরিমাণে ভয়হইতে পা-রিত অনুমান হয় তদপে**का**ग्न खामक मृ∕म **ह**≷-য়াছিল। **অনন্তর রাজা আমাকে তাহা পুন**-র্বার কোষমধ্যগত করিয়া যৎপ্রোনান্তি অনু-গত ভাবে আমার বন্ধনশৃত্থলার অদ্ধিক চারি হত্ত বাহিরে ভূমিকিও করিতে শাদেশ করি-লেন। দ্বিতীয় আদেশে আমাকে সেই কাল-চো-কার মত দুইটা উক্ত অন্তঃজ্না বৌহ-বৃত্ত-वर शमार्थ वाहित कतिए कट्टम, जिमि यूकि-वल दिव कविद्याहित्वन, हेहा आयाद शिखन। যাহা হউক তাঁহারি মতে আমি বালু বছকারে णारा वाहित कवित्रा **छारा एवं कार्ट्य हार्द्य**

তাহার স্বিশেষ অবুগত করাইলাম; এবং বাঞ্-मधनान अस जारा जारात्र निकटि त्राथिनाम; वर्गानत मरधा विभिद्धेकारण वक्त त्रिक्क थाकारक তाहा नमूरपुत खला ভिष्क नाहै; नामूर्पिक ना-विक्यात्वहे श्रायः व म्वात्रकार्थ मञ्ज्ञा-পूर्वक বিশেষ যত্ন করিয়া থাকে। আমি নিভঁর হই-বার জন্য রাজাকে ভূয়োভূয়ঃ সাহস-প্রদান করত मठक हरेट कहिया मून/मार्ग मिरे शिखलात শব্দ করিলাম। ভাছাতে রাজার বিষ্ময় পূর্বা-পেকায় প্রবলতর হইয়াছিল। উপস্থিত শতং লোক শব্দ-শুবণে আহতমৃতবৎ তৎক্ষণমাত্তে ভূমিপতিত হইল; এবং আপন স্থানে দপ্তায়-मान थाकिया सप्तः ब्राक्षांटक विययकान कारह-তনবৎ থাকিতে হইয়াছিল। পরিশেষে পিস্তল मूर्रेषि अ वाकमधनित वंशनी शूर्ववर काँशत वर्गु निक्कि किताम, अवः जानारेश मिनाम; "ए-थिও, नर्दना नावधान, এक फूलिक माज व्यात्रिक (यन ইहाट ना नारंग, जाहा हहेरन हेहांत उदक এक काल महातारकत चिं जिकारि नकन वसु व्याकारम উष्णंन इरेवा यारेरक ?!

এই বাপে আমি ঘড়িটাও রাজার নিকটে
দিলাম, তিনি তদর্শনে কুত্হলী হইয়া দুই জন
দীর্ঘাকার দেনা-নায়ককে ইংলণ্ডে যেমন শাকটিকেরা এল-নামক মদিরার পিপা বহন করে,
তজ্ঞপে তাহা ঘাল-দিয়া কলে বহিয়া আনিতে
আজা প্রদান করিলেন। এই যন্ত্র অনবরত
শব্দার্মান দেখিবামাত্র রাজা বিষয়রদে নিমগু
হইলেনা বিশেষতঃ ঘণ্টার কাঁটাহইতে মিনিটের কাঁটার মধ্যাকারে জতসতি-বিষয়ে নৈপুণ্
নির্মান্ত করিয়া ব্রংবার ভাষার ভত্তানুস্কান
করিতে লাগিলেন। পরত্ত অলোকিক ব্যের তথ্শার্মহ সুবুদ্ধি লোকবিশের অভিসার বিজ্ঞান।

कितिला। बिविरा छाहारित में नकल नाना श्रिकात ह महम्खत, छहावर नत किना छेरल्थ लाठेकवर्णत बनायारमहे बमुख्य लगा ह हथा बन छव ;
लेत वित्र कि, ति मकल बालन दाय हिन्छ मुहाक्करण बानिए लाति नाहे। बन छव बानि तोला छ हामू मुहा, वह र नय थे छ छा है किना छ हाम मुहा, वह र नय थे छ छ हा है किना छ हिनार वर्ष के मकल मुना लिंड किना छ किनार किनार विवास है कि मकल मुना लिंड हिना किनार किनार है बन मकल मुना लिंड है मकल बन्धा जान किनार है किनार है किना है किनार हो किनार है कि

উল্লিখিত জেবের মধ্যে একটা জেব অনুসন্ধানকালীন তাহাদের হাতে পড়ে নাই। তথাধ্যে
এক থানা দিব্যচকু ছিল, দৃষ্টিশক্তির নূলতা
হইলে সময়ে ২ আমি তাহা ব্যবহার করিতাম।
এত্ত্ব্যতীত একটা কুদু দুরবীক্ষণ যন্ত্র ও অন্তঃমান যথসামান্য বন্তুও ছিল, তাহাতে রাজার কিছু
মাত্র অভীষ্টসিদ্ধি হইতে পারিত না। অভএম নেঃ
সকল বন্তু বাহির করিয়া দেখান যুক্তিসিদ্ধি বোধা
করিলাম না, বরং ভাবিয়া দেখান যুক্তিসিদ্ধি বোধা
করিলাম না, বরং ভাবিয়া দেখানা এ সকল
দুব্য পরহন্তগত করিলেই হয় অপক্ত নয় মন্ত্রী
অবশ্যই হইবেক।
রাং লাং বিং

रैं जि बि जो शाधाय असाथ।

টেপর্-পশু।

अन्यक्ति । ज-প्रिंश य भवत वित्र मृद्धि इस्के, जारात नाम क्लिए। शक्ति-चार्क तिका-रिमा देशात सम्बद्धि, उनात भूगमानाहरू वरे भव पविमुखक । श्रीकोन-स्वार्क



ষ্টেপর-পশ্ন।

উচ্চ। শুক্রাপেক্ষায় ইহার শুপ্ত বৃহৎ ও বলবান্, পৃষ্ঠ ও পার্শভাগ শুকু। ও পরিমাণে প্রায়ঃ অর্জহন্ত। ইহার লাজুল অতি। টেপর অতিবলবাদ পশু; কবিক আছে, মত-

शास करन नुमाळ-बोर्ल हेरात कारान कारह; ७; नकरनत ममष्टि १२ हो। कामतिका-समोग তভিন্ন অন্যত্রে ইহা দৃষ্ট হয় না। উক্ত-দ্বীপে ইহা টেপরের কলে এক কেশশেশুণী ছইন্না থাকে; কিন্তু "কুড়োএয়ার," "সালাডা," ও "গিওল" নামে সুমাত্রা-দ্বীপের টেপরে তাহা দৃষ্ট হয় না। এই প্রনিদ্ধ; বেজুলন-মগরে ইহার নাম "বাবি- দেশায় পশুর বর্ণগতও কিঞ্ছিৎ ভেদ শাছে; वानू "; अतः मालाक:-श्रामात्म " हिम् "। हेश्त मिक्क-वामत्रिकात किनम् क्काल-धूमूवर् मु-দেহ শুক্রাকার, ৪াা০ হস্ত দীর্ঘ, এবং ২াা০ হস্ত মাত্রা-ছাপের টেপর চিকুণকৃষ্ণবর্ণ; এবং ভাহার

থার, ও প্রায়িং লোমবিহান। ইহার পদ-চতুষ্টয়ও ব্যাপেকার ইহার বেগ অসহ্যা বৃদ্ধারে বে খার্ল এবং স্থান, ভাষাধ্যে পুরংপদ্ধরে চারিটি দিগ্-দিয়া এই পভরা প্রাবশাস করে ক্রান্ত সক্ষ कदिश, এर॰ भारताला-भाष्यस जिनित कदिशा कृत्वक-धन्मानि स्थ व्येशा क्रिक्ति स्थ शिक्ष नथ थारक। अहे शक्षिरतंत्र व्यक्त-क्ष-मक्ष्मा वृहेत्र। यात्र। विश्वनाति वाद्य-व्यक्तिमा প্রতি মাড়িতে ১, এবং চর্বদন্ত-লঙ্গা উপর প্রোগরি আক্রমণ করিবে ইবার জিনিউ বিল भाषित शक्ति भार्य ५, ७ रमूह द्वारिकार्य मस्या बजार्य-त्राम वात्रमान वाहर सम्बद्धाः

षर्याः वाणु विनष्ठे हरेया यात्र, ख्यालि टिलाइ । किष्टु चमिन्ने रुप्त ना।

ইহারা বভাবতঃ শান্ত, বনুষ্য দেখিলেই পরায়ন করে, এবং দিবদে নিদ্যুত থাকিয়া রজনীযোগে আদে কোন জলাশয়ে উত্তমবাপে সান
করত নবীন-তক্ত-গুল্যাদির অবেষণে বন-পর্যটেন
করিয়া থাকে। কোন দুব্যই ইহাদিগের প্রক্ষে
অথাদ্য নহে। অস্থি, মৃত্তিকা, কান্ত, প্রস্তরগণ্ড
যাহা কিছু নিকটে প্রাপ্ত হয়, তাহাই গলাখঃকরণে
তুটি করে না। ডাজারা-নামক এক জন সাহেব
একটা টেপর্-পশুকে একটা রজতনির্মিত নন্যদান দিয়াছিলেন, সে তাহা তৎক্ষণাৎ চর্বণ করিয়া নির্গিলিত করিয়াছিল।

ইংরাজেরা কছে, টেপর্-পশুর মাংস শুক্ক এবং কঠিন, কিন্তু আমরিকা-দেশবাসিরা ভাহা সুমাদু জানিয়া এই পশুবিনাশে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে; পরস্তু বিনাশের রীতি সর্বৃত্ত তুল্য নহে; কোন স্থানে শিকারিরা বিষাক্ত শরমারা টেপর্-বি-নাশ করে, কুত্রাপি কুক্কুরের সাহায্যে মাভাপ্টনিদ্দ করে; কুত্রাপি বা বন্দুকই টেপর্-সংহারের অন্ত্র বলিয়া গণ্য আছে। কুক্কুর্মারা আক্রান্ত হইলে টেপর্ মাতকদিপের সহিত ভয়ানকজপে ঘুম্বা করিয়া থাকে; এবং অনেককে বিনক্ত না করিয়া ময়ং প্রাণভ্যাপ করে না, ও নিকটে কোন জনা-শয় পাইলে ভন্মধ্যে দপ্তায়্মান থাকিয়া অনা-য়ালে শত্রুইতে নিক্তি পারে।

वस वहेता किशातता चन्ना नात्य ति-वस्त्रकातीत वनीक्ष कृता त्यासिन नात्व ति-विश्वाद्यम्, प्रक्रिक-चाह्यविद्यात् त्राक्ष्मश्य चादमक लावा किशत कृत्रक कृतिया वादकः चाराता श्रादक वाद्य श्रिष्ठाव कृतिया सम्बद्धिक श्राक्त वाक्षेत्व श्राक्षणम् कृत्रक विश्वाद्यम् वाह्य

नाष्ट्रबाग मृष्टि (वाथ इस किहा कि तित्व के नकत अन मनुद्रात वावशादत श्राह्मण इस्टिंग शादत ; जातवस्नादर्श के नकत अन विद्याय श्राह्मणीय।

ডেবিড্ হেয়ার সাহেবের গুণবর্ণন।
(মৃত ডেবিড্ হেয়ার সাহেবের মৃত্যু-দিবদীয়-বার্ষিক-য়ভ্রশমীপে পটিত হয়।)

দ্য মৃত মহাত্রা হেয়ার সাহেবের অনুক্রিয় দিবর উপস্থিত। সংবৎস-**** वाट्ड श्नताः यम् यागता ब-স্থলে একত্র উপবিষ্ট হইয়া সেই মহানুভাব পুৰু-বের ওণকীর্ত্তন করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছিল অদ্য তাঁ-হার গুণ ম্বরণ করিয়া ভক্তি ও কৃতজ্ঞা-রুদে यनः चार्म् हरेएएए। कि काल कि श्रकात जैं-হার গুণানুবাদ করিব স্থির করিতে পারি না। তাঁহার গুণ সকল অসাধারণ ও আশ্চর্য্য। এমং वक्राम्टम कथनरे प्रिथिए शारे नारे। विटम्मीय হইয়া ভিন্ন-জাতির কল্যাণার্থে এতাদৃশ-কঠোর-তর-পরিশুন-কর্ত্র। অতি-দুষ্পাপ্য; তিনি আমা-**पिराग्त मञ्चल-मन्नापिनार्थ ও मानमिक-उज्ञि**-সাধনার্থ যে কত পরিশ্ন-কত ব্যয়-করিয়া नियाट्टन, তाहा दर्नन कता यात्र ना; त्र नम्छ व्यात्नाचना कतित्व व्यामानित्रत व्यक्षक्षत्वत्व क्रा-হার প্রতি প্রতি ও ভক্তির উদয় হয়। আং-महा उद्धन। य जाराह निकटण अक अक्छन थान-भारम वस चाहि, मण्णूर्गनाम कि ठाहासह-एक कथन शतिमुक्त हरेएक शांतिव? स्वयनहे सहस्रा षामता अवरल जामानिरगत चासतिक क्रकारा हिस् श्रकान कहिएहि महि। ान दररनात प्रवचा म्यान कतिरम् वर्षारम् (क्ष

য়ার সাহেবই অতিপথাকঢ় হয়েন; তাঁহার মনো- হয়! কিন্তু এই পরিবর্ত্তনের "মুল-কারণ হেয়ার যুক্ত-বচনাবলিম্বারা এদেশের মঞ্জ-সম্পাদনার্থে বক্তা করিতেছেন, তথন হেয়ার সাহেবকেই নেই মঞ্লোদেশে/র প্রধান কারণ বলিয়া বোধ হয়। যথন দেখি দেশীয়-ভ্ৰাতৃগণ একত্ৰ ছইয়া। ब्रांत्नाकिम्रिशंत मूर्थजा-मित्राकत्व-क्रम्। कण्यमा कतिएक एक, वा कित्रवित्रहिशी-विश्ववामिरशत मू-দাৰুণ-বৈধব্য-যন্ত্ৰণা-দৃষ্টে কাতর হইয়া তাহা দুক্ত করিবার উপায় চেষ্টা করিতেছেন, তথন ছেয়ার **নাহেবকেই তাহার প্রধান কারণ বলিয়া** বোধ হয়৷ ফলতঃ যথন দেখি হিন্দু যুবকের৷ জননা জন্মভূমির রোগ-প্রতিকারের নিমিত্ত মনঃ-সমপণ করিয়াছেন, তথন হেয়ার সাছেবকেই जाहात अधान कात्रव विलया (वाध हम्। यथन দেখি এতদেশস্থ কোন কৃতবিদ্য ব্যক্তি চি-কিৎনা-বিদ্যা-বিশারদ হুইয়া বহু-প্রাণীর প্রাণ-রক্ষণ করিতেছেন, তথন হেয়ার সাহেবকেই তা-हात প্रधान कातन विनया (वाध इया वाखिक पिना जुष्मानक यथम स्व अस्त स्य किंह विना বৃদ্ধির পরিচয়-প্রদান করিতে দেখি ক্য়োর সা-**ह्निक्** जाहात प्रधान कातन वित्रा विश रुष, जान्यर नारे।

ভারতবর্ষের পূর্বতন অবস্থা ক্ষণমাত্র অরণ করি-बा विथान कि अब बाकर्या भदिनर्सन श्राक्षीक

हत्र मूर्जि चामानिशत मानम्भाष्टे काज्ज्वामान- नात्वित्तक कहित्क इत्तक। अहे वस्तिम अक-कारण श्रकिष्ठ इया कि विम्रा-विषया, कि खान- कालीन निविष-चक्कामान-कूरण निकिष्ठ हिन। विষয়ে, कि धर्म-विषया, य कान धकारत এত- চিরমূর্যতা এদেশে আধিপত্য করিও, বছ-সন্তা-দেশীয় লোকের প্রাবৃদ্ধি হইয়া থাকুক, ছে- নেরা কুসংক্ষার-পাশে বন্ধ থাকিয়া নিভান্ত য়ার সাহেবই তাছার অদিতীয় কারণ। তিনিই অমানববৎ ব্যবহার করিতেন। কঞ্ণীকর ছে-আপনার যতু ও পরিশুমদারা তাহা নিস্পন্ন যার সাহেব আমাদিগের তাদৃশ হীনাবস্থা দে-করিয়াছেন। যথন দেখি এতদ্দেশীয় কোন ব্যক্তি। থিয়া অতিশন্ধ-দুঃথে সম্ভপ্ত হইয়া তাহা দূর-করি-কোন সভা-বিশেষে উপস্থিত হইয়া সুযুক্তি- বার নিশিক্ত তৎপর হইয়াছিলেন। বিশেষ-পরিশ্ন-প্রুক তিনি এই হিন্দুকালেজ সংস্থা-পন করেশ্র মেডিকেলকালেজ যদ্যারা সহসূহ প্রাণির প্রাণঃরক্ষা হইতেছে, তাহার উন্নতি-সা-ধনেও তাঁহার অভিমাত্র সাহায্য ছিল। তাঁ-হার প্রণীত বিদ্যালয়, যাহা অদ্যাপি তাঁহার নামদারা আখ্যাত আছে, তাছাতে তাঁহার কত পরিশুম ও ব্যয় হইয়াছে: বন্ধভাষরে অনুশ্-লন-নিমিত্ত যে একটি পাঠশালা সংস্থাপিত হয়, তিনিই তাহারও সূত্র-পাত করেন। এই বিদ্যা-লয়সমূহে যে কত শত ঝক্তি সুশিক্ষিত হইয়া-ছেন, এবং হইতেছেন, তাহা গণিয়া শেষ করা यात्र ना।

> হেয়ার সাহেতের অসাধারণ দয়ার কথা কি कहिव? जिनि चालन विद्यावाय पतिषु पूःथा अवः चन्यामः वालकिष्णिक विमा विज्ञत्म वि-म्रा-मान कतिएकनः जानामिश्राक शृक्षकामि अ चनाना প্रয়োজনীয় বস্তু প্রদান করিছেন, এবং नगरा २ वर्ष नाहाया कतिराउ वित्र हिर्मन না৷ তিনি ৰজদেশৰ দুঃখি বালকগণে পিডা-ঘৰাণ ছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে কত লভ পি-ত্মাতৃহীন বালকের। পুনরার প্রভৃহীন হইয়া व्यमाथ रहेग्राहर जीरात यदन शक्तिगानिक क লিকিড হইয়া কড শত খাডি খাৰ বালখালঃ ভ

मोजागापि मक्षयं कवियाएन! अञ्चलनोयं जानक ব্যক্তি তাঁছার সুেহ ও কঞ্গা রসের আত্থাদন করিয়াছেন; এই সভায় উপস্থিত অনেক মহা-শরেরা হেয়ার সাহেবের ছাত্র। তিনি এতদ্দেশস্থ লোকদিগের যে কি এক প্রিয়ব্জ্ব ছিলেন, তাহা वहमाजीज। याहारज चामानिरगद्र विमा वृक्ति मङाका वृक्षि इस, व्यासदा सम्या मसारक साना ও গৌরবান্ধিত হই, এবং সর্ব-প্রকার-সুথে সুখী হই, হেয়ার সাহেব যাবজ্জীবন তাহারই চেষ্টা कित्रशाहितन। ठाँहात वर्ष नामर्था यामाहित्यत्वे কল্যাণার্থে সমর্পিত হইয়াছিল। বোধ হয় তিনি क्वित वामापिरगत्र मञ्जनबाधान जन्मगुर्व कति-शाहित्न। किन्न शांशः जात्करभत विषय अह যে তিনি কিছু কাল জীবিত থাকিয়া আপনার পরিশুমের সাফলগানুভব করিতে পারিলেন না যে তাঁহাদারা কি প্রর্যান্ত এদেশের বর্ত্তমান সৌভাগ্যাভিবৃদ্ধি স্বচক্ষারা দর্শন করিতে পা-রিলেন না। ছা বন্ধো ছেয়ার সাছেব। তুমি अक्र (१) कोविक थाकित्व व्यामाहित्रव मुश्व (मो-ভাগ্য যে কতগুণে বৃদ্ধ হইড, তাহা বলিয়া প্রকাশ করা যায় না। হা মাতঃ বন্ধভূমি। যা-হারা তোমার মুমুর্-বস্থার-প্রতিকারের নিমিত্তে যতুযুক্ত হয়, তুমি কি ভাহাদের ভারবহনে অস-मर्था? राम्न! अक्तरन ज्ञामरमाहन ज्ञाम, याँहारक প্রস্ব করিয়া তুমি জগৎ-মধ্যে ধন্যা হইয়া ছিলে, সে মহাত্মা এথন কোথায়? বিদেশীয় সাধুলোকেরা ঘাঁহারা ভোষার পোষ্য-সম্ভানের ন্যায় হইয়া ভোষাকে মাতৃবৎ জ্ঞানে ভোষার मित्रा सम्बादा कार्निक वासीय स्टब्स् हिटलम, उँशिक्षारे वा अथन काथावर कि बाम्ठर्य यांचात्राः त्रामात्रः कथानं-लय हिन्दाः करतम्, जीरातारे कि चानु स्थानात नकरहेर करा-

হত হইয়া কৃতান্ত মন্দিরের অকবৃদ্দি করিতে গমন করেন! হায়! তাঁহারা সকলেই বিলুপ্ত, সকলেই অন্তৰ্হিত হইয়া গিয়াছেন। একণে তো-मात्र व्याचा-मञ्जान वा (পाय/-मञ्जानगरनत मरव) তোমার প্লতি যথার্থ প্রেমিক ব্যক্তি না দে-খিতে পাইয়া আমার চিত্ত ব্যাকুল হইতেছে! কবে ভয়ঙ্কর জাত্যভিষান, বিষময় কৌলীন্য-প্রথা, কুৎসিত সামাজিক রীতি নীতি, যাহা लामात क्रम्य विमोर्ग कतिए जल्ह, करव कि श्रकारत কাছার চেষ্টাদারা তুমি তাহাদের হস্তহইতে পরিত্রাণ পাইবে, কবে বিদ্যা বৃদ্ধি সভ্যতা স্থা-ধীনতা জ্ঞান ও ধর্মের আলোক চতুর্দিকে পরি-ব্যাপ্ত হইয়া তোমার অন্তঃকরণ প্রফুল হইবে, তোমার মুথপ্রী উজ্জ্ব হইবে, কবে ভোমার পূৰ্ব-গৌরৰ পুনঃ স্থাপিত হইয়া তুমি ধরাতলে পুनরায় মান্যা ও গণ্যা हहेरव? *

विनि व्यामानिशंत अमे शिश महाशकाती विषु हिलन, व्यामानिशंत कलागि-माधन याहात कीवहनत अक माज वुष्ठ हिल, अ य वुष्ठ
छेनाभानत-निमाल जिनि यजू, धन, अ मातितिक क्ष्मा, विम्मूमाज वज्जो तारथन नाहे। व्यमा जाहात वितहर प्रजूपिक मूना प्रिथित्वहि, मनः व्याकूल माकमाशस्त निमम हहेशा कानकरणहे व्यात माखुना श्राष्ठ हहेत्वहि ना। जाहात व्यहादव व्यामानिशंत मूथनानमा प्रतिकार्थ हहेत्वहि ना।
जाहात म्जून मस्त्र मस्त्र व्यामानिशंत मूथनित्र प्रवास वित्र हहेशाहि। यिन्छ व्यामानिशंत मूथनित्र प्रवास कर्मा हिला व्यामानिशंत व्यामानिशंत प्रवास व्यामानिशंत व्

^{*} যে সকল-প্রবন্ধ-পরিশেষে লেথকের যাক্ষর বা চিক্ত থাকে, এতৎপত্রের সম্পাদক ভদুক্ত অভিপ্রায়ের দায়ী নছেন। বিগুল, সং

হুইভেছে না; যেহেতুক আনাদিগের চেষ্টার প্রতি-পোষক হয়, এমৎ বন্ধু অতিবিরল। স্বার্থ-मूना इहेशा शतकाठित सकत व्यव्यय करतन, अञाष्ट्रम सन्दर अकरत मूल्युम्पर। यांबादा चा-মাদিদের বন্ধু বলিয়া পরিচয় দেন, তাঁহাদিগের আন্তরিক অনুরাগ সে প্রকার নছে; সুভরাং ভাঁছাদের যজপ যতু ও আগুছ প্রকাশ করা উচ্চিত্র, তাহা না করাতেই আমাদিগের মনো-हथ किक्र हे पूर्व इहेट उट्ट ना। उपिद्र कार्वेत-পরিবর্ত্তনের সময়ে ছেয়ার লাচেবের বিরহ আ-गामिरणत मख्य-कार्य शूनककीशन क्हेग्राह्। कित यपि अयथ नगरत वर्जभान था किर्कन, उरव কি আনাদিগকৈ আর কিছু আক্ষেপ করিতে **इरें ३** जित्व कि व्यामामिट शत कि कू व्यक्तारान থাকিত? তিনি আমাদিগের দেশীয়-ভ্রাতৃগণের সহযোগা হইয়া যাহাতে আমাদিগের সমস্ত দৃঃখ मृत इ.स. এব॰ याकाएक **आमता मन्नारनत शर**न সংস্থাপিত হই, তাহা অবশ্যই করিতেন। তাঁহার **छेना** ब ভाव हैह। न! कतिया कथन निवृत्व हहे छ না; কিন্তু হতভাগ্য ভারতবর্ষের বুঝি এরপ মন্ত্র কথন উপন্তিত হইবে না। আমরা বুঝি চিরকাল আক্ষেপ করিয়া জীবন হরণ করিতে জন্মগৃহণ করিয়াছি।

यिनि अञ्चलने त्वाकि निर्म विका वृद्धि अ নভাতা বৃদ্ধির নিমিত্ত এত পরিশুম ও বায়করিয়া গিয়াছেন, অত্ত্য স্ত্রালোকবর্গও বিদ্যাবতী হয় ^{ইহা} তাঁহার অভিপ্রায় **ছিল, সন্দেহ নাই**। ভবে যে তিনি তাহার বিশেষ অনুষ্ঠানে প্রবৃত্ত इरहान नाइ, जाहात चानक कातन हिला श्रका-শ্যৰূপে অবলাদিগকে বিদ্যা-শিক্ষা দেওয়া হয়, ভারতবর্যের তাদৃশ সময় তথন হয় নাই।

ভीष्ठे **चरम**∕रे मि**स** कतिरजन। **चामता** य अक्रर० নানাপ্রকার সাংসারিক রীতি নীতি এবং কৃপ্রথা नकल পরিবর্ত্তন-করিবার চেষ্টা করিছেছি, এবং ক্রমশঃ সভ্যতা দোপানে আবাঢ় হইবার উপায় দেখিতেছি, হেয়ার সাহেব এতদ্ষ্টে অভিশয় আহাদিত হইতেন, এবং যাহাতে আমরা কৃত-कार्य। इहे, छाहात विलक्षन मह्याणिका कति-তেন। তিনি জাবিত থাকিলে বঙ্গভাষার অনেক উন্নতি ছইত, এবং বিদ্যা-প্রচারের সুন্দর প্রণালী मः इोशिक इहेक।—विताक कि व्यामता नर्दे धका-ति मुथी इहे जाम।

षात कि विनव, क्रडरे वा बात्क्रश कतिव, কতই তাঁহার গুণ স্মরিব। যতই তাঁহার গুণ व्यवन कति, उठडे विष्ट्रमानन भूनकमी इश्। मत्नित्र कि मशीसमी मिक्कि निवाद ६ (दाध हरून, यन (र्यात-नारहत अहे मजा-गृरह श्रातम किन-লেন, এবং প্রবিষ্ট হইয়া যেন তিনি আমাদি গকে गत्नुह-राहत खालाशास्त्र-श्रमाम क्रिक नागितन

শ্রিপ্রতি মুখোপাখ্যায়।

किनका जा।) न। जून, ३৮৫8 मान।

वनी अ यवबोर्ल हिन्दूषर्य-भहादात विषय।

তদেশীয় লোকদিগের সংস্কার আছে

বি ভারতবর্ষ পরিত্যাগ করিয়া ভিষ 🕉 🖟 🔆 💥 (मार्ग शमन कड़िल का जिल्हें स्रेटिक হয়; কিন্ত পুরাব্ভানুসন্ধানভারা ভত্তবাধিনী পত্রিকায় ইহা স্পষ্ট প্রভীত হুইছেছে, বে পূর্ব-তনকালে হিন্দুরা অনায়ানে অপর-দেশে গ্রামন अकर्ष किनि कोविक पाकित्व काँहात सहम- कतिर्वन, अवश् शासाक्षममहरू वस्तिक कति-

न्त्रा व्यवस्थि कतिराउट्टन; * वाँशाह्य देश অবগত নহেন, তাঁহাদিগকে অবগত করিবার मिसिन्ड चामना वनी ७ यवबीरशत प्रतक छेपा-পদ করিলীম।

वनीषीलञ्च हिन्मुमिर्गंत महिन ভाরতবর্ষীয় লোকদের এত লাদৃশ্য--ব্রাহ্মণক্ষত্রিয়াদি-বর্ণবি-ভাগ—তাহাদের উৎপত্তি-বিবরণু--ব্রাহ্মণদিগের च्यनामान्य-मन्यान, এবং मिथा त्राथितात विरमय প্রথা-সমান-বর্ণের সহিত বিবাহ-অসম-বিবা-হে বর্ণসঙ্করের উৎপত্তি—চণ্ডালজাতি—গোবধ-প্রতিষেধ – মৃত-পতির অনুগমন—মৃতশরীর-দাহ --ব্যবস্থাদি-প্রচার বিষয়ে ব্রাক্ষণের অধিকার-नानाविध-ছाम्पत्र नाम-(वम, त्रामाय्य, महाजा-রত, বুন্ধাণ্ড-পুরাণাদি গুন্ধ-সময়-বিভাগ-বা-রাদির নাম—অঙ্কশাজ্ব—এই সকল-বিষয়ে উভ-व्रकांकि अब नमजावाशम, (य वनोषीश-मन्त्र-র্কীয় তত্তবিষয়ের বিস্তারিত বিবরণ হিন্দু পাঠক-**मिराब भरक वाञ्चा (वाध इहेर्ड भारत।**

ধর্মবিষয়ে তথায় এখানকার ন্যায় নানাপ্রকার मञ প्रविच नाहै। टेमवधर्य वनोधीलङ् लाकपि-গের ৰজাতীয় ধর্ম; তথাকার বৌদ্দিগের সঙ্খ্যা অতি অপে। ইহা অতি আশ্চর্য্য তথাকার ব্রান্ধ-(नहां डेनवीं खांतन करतन मा। इंहात कांत्रन कि? তাঁছারা কি পবিত্র-ব্রাহ্মণবংশীয় নছেন? অথবা তাঁহার। তথার গমন-পূর্বক আদিম নিবানী-দুের শহিত উদ্বাহাদি করিয়া কি উপবীত ত্যাগী कतियारहरू ? अरे नकत श्रात्मुत्र छेखन्नहारस चा-महा नमर्थ महि। तुःकार्यका कर्म, जानाता भूख-निकात श्वा करतम मा; किन्न बनीबीरलत मध्-रित्न रिवर्जनित वर्जमाम जारह हिल्लिग्रारम रव * के कार्राविनी अधिकात अविषय के कात्रक बुंगान श्रहाद चारह ।

वाह्याशि वह मूद्र-पारमा हिम्मुनसा- वक वक हैशामना-सान थारक, जाहारक रकान দেবপ্রতিশা নাই। তথায় এথানকার न। সায় সল্পা-मो नकल पृष्ठे इस ना। वाक्य पिरणत थापा-मधा **क्रिक ऐफिड़ारे प्रभन्त। পূর্বে অভিহিত হ**ই য়াছে যে বলীদ্বীপে গোবধ প্রতিষিদ্ধ আছে; 'কিন্তু ব্ৰাহ্মণব*্*তীত অপবাপর জাতি গো ভিন্ন খন্য কোন পশুর বিচার না করিয়া প্রায়ঃ সর্ব-প্রকার জন্তুর মাংল অবাধে ব্যবহার করে।

> वनीषीरं कवि * नारम अक ভाষা আছে; তাহা সংক্তেরই তুলা ৷ কিন্তু অধুনা সামানা কথোপকথনে তাহার ব্যবহার নাই। পাঠকদি-গের সুবোধ-জন্য উক্ত ভাষায় রচিত বারত-যুধ (ভারতযুদ্ধ) নামক গুন্তহ্ইতে একটি শ্লো-कार्क উদ্ধৃত कत्रा याहेटल्ट् ।

পিতরাকুল্প সুবেং নুপতিকর্নে মূলুৎমূরিলে।। ইরিকা গটোৎকচ হ্রুমান্ নিষ্যা স কিও গগন॥

কবি-ভাষায় রামায়ণ, নীতিশান্ত, অর্জুনবিজয়, এবং নানাবিধ আগম-গৃত্ত লিপিবদ্ধ আছে।

े **পूर्वाक्षन इ-होभवानी** ता अकवाक। इहें हा करह, যে ক্রিন্স (কলিন্স) দেশহইতে ভাহাদের দেশে সভ্যতা, ধর্ম, এবং ব্যবস্থা আনীত হুইরাছে ৷ প্রথমতঃ যবদ্বীপেই সে সকল আনীত হয়, তথা-ছইতে চতুর্দিকে পরিবাপে হইয়াছে। ভারতবর্ষীয় লোকেরা শস্যাত্যভাপ্রযুক্ত যবদ্বীপকে শুেষ্ঠ জ্ঞান করিয়াছিলেন৷ ১ শকান্দে ত্রিতৃষ্টি নামক এক জন ব্ৰাহ্মণ বহুলোক সমভিব্যাহারে যবদ্বীপে গমন করেন। তাঁহারা দ্বীপের দক্ষিণতটে উত্তীর্ণ হইয়া মেক-নামক পর্তমূলে প্রথমতঃ বসতি করিয়াছি-লেন। যবদ্বীপে অধুনা যে শক প্রচলিত আছে

^{*}ভাষার নাম ''কবি " অতি আকর্ষা নছে; প্রাচীন বৌদ্ধ-मिलाइ छाषात नाम "गाथ।"; প্রাচীন বৈদিক-সংস্ততের নাম "ছন্দ্", এবং তাহার অপভূৎদে পার্দিদিগের ভাষা "মেন্দ্র" मारम विश्वाह जारह।

ভাছা ত্রিতৃষ্টি নানা এক প্রাচীন রাজা স্থাপন कात्रम, उर्दीमा वे मक व्यक्तिमक-मारम अनिष আছে৷ যবদ্বীপের বর্ত্তমান শক ১৭৭৬৷ যব-बीटल व्याप्तिम हिन्दू लेलिनरविन्तिकिरिशंत नाइथा। कं इनि, ठाइ। विवास मगत्र यवदी भवानी बाकि मकन धक-वाका सर्वन; किन्न ১৯० পরিবা-রের অংশকা অধিক বলিয়া কদাপি কেছই কছেন ना। हेहा व्याक्टर्यात विषय वर्षे, य खेलित्व-मिकरमंत्र मर्था चर्मक जी ও শিশু हिन। बि-जुष्टि बकीश जी প्रथमिशक नम्बिन/श्रिशी कति-য়াছিলেন; তাঁহার সহধর্মিণীর নাম ব্রাহ্মণী-কালী, পুঞ্জের নাম মনুমান্স, এবং মনুমাদেব। ক্রা-কর্ড দাছেব অনুমান করিয়াছেন, যে যথন তা-हाडा ची-পূঞ-পরিবার লইয়া यवधीरে প্রস্থান করে, তথন তাহাদের বৌদ্ধ হওয়াই সম্ভব। কিন্তু তদ্ধপ করিবার বিশেষ বলবৎ প্রমাণ দেখিল। তিনি ও তাঁহার অপতে/রা কিয়ৎকাল তথায় রাজ'র করিয়াছিলেন।

ে শক-পর্যান্ত যবদ্বীপো আনক উপনিবে-শিকের সমাগম হয়। কভিপয় বিখ্যাত ব্যক্তির নাম এই: যথা,

শেলপ্রবন্ধ, ১০০ শকে গমন করেন।
যোটক

মৃবিল, ৩১০ ,

হুতম, ৩৩১ ,

তিসদী ও তৎপুঞ্জ দশবাস্থ ৩৫০ ,

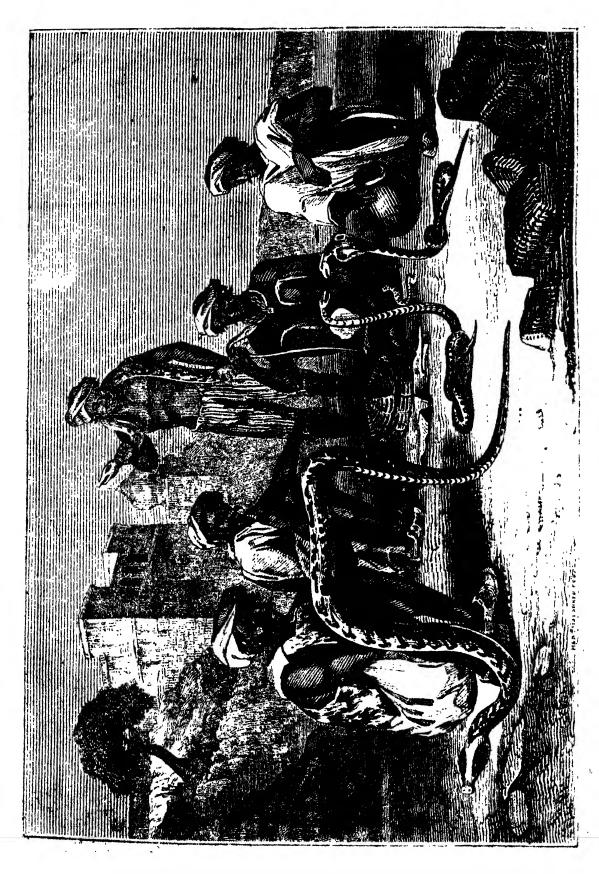
৪৮০ শকে কভকগুলীন পশুত (শৈব?) ম্বগিপে গমন করিয়াছিলেন; কিন্তু তাঁহাদের মতের
নহিত যবদ্বীপ্রান্দির মতের বিভিন্নতা হইবাতে তাঁহারা দুরীভূত হইয়া ভথাকার রাজা
ভিতদামের শর্ব-গুহ্ব করেন। শুত্দাম তাঁহাদের মভাবলহা হইয়াছিলেন।

যবদীপবাদীদের মুসল্মাম-ধর্ম-গুৰ্ণ-করিবার কিয়ৎকাল-পূর্বে কভকগুলীন লৈব তথার গমন করিয়া মজপহিৎ শমক-ছানের শেব রাজা বুবিজারের আগুলুয় প্রাপ্ত হয়েন। মজপহিৎ রাজ্য বিচ্ছিন্ন হইলে তাঁহারা বলাদ্বীপে পলায়ন করেন; ভাঁহাদের অধিপতির নাম চাহুরান্ছ। বলাদ্বীপে এক্ষণে ১৭৭১ শক চলিতেছে।

সর্পের বিবরণ।

नारित्न अठिन जिन्न श्रावीय 🥞 🗨 🎥 ধর্মশান্ত-দর্শনে ইহা সুস্পষ্টরূপে প্র-্লীপ্ৰাৰ্থ কাশ হইতেছে যে ভিন্ন২ দেশীয় ও জাতীয়েরা মৃত্যু-প্রদ অতিভয়ানক ব্যাপার-मन्नाहक मर्निएश्व नश्रक विष्यं मुकायुक হইয়া তাহাদিগকে কেবতাবোধে প্রাণানুরোধে পূজাদি করিয়া পাঁকে. এবং তদ্গুণ-বিদয়ে নানামত-প্রযুক্ত ইহাদিগকে কেছ্**২ মঞ্ল**-नमृत्हत, किह्वा शृथितीय यावनीय व्यवकात. মূল জ্ঞান করে। মিসর-দেশে সর্প-জাতি অত্য-छ मान्। हिन। उथाकात्र लाटकता मन्पित-यरधा-প্रতিষ্ঠিত দেব-মৃত্তির সমীপে সর্পদিগকে गर्नमा मः ज्ञालिक क्रिया छत्तम २ (छाक्।-(ल-য়াদি দুব্য ভোগদান করিত: এবং রাজা, পুরো-हिन्छ ଓ वनीकत्रव-(वर्खामिरगत्न चीत्र १ गरि चिन (एक-कार्तिक महामरहाक्त्राद के गर्लब्र श्रृक्षा कतिछ; एवा छाराजा नगरक शहूत एक करनत विक क शृथिदीत निवास कतिका कामिक। विकि**०**-नाविष्रा । वर्षे " वक्ष शहेन वाशिक्ष " वर्णवाहा विकिछ इरेशार्ड । मरन्त्र भूक् कार्यराह स्थान नृज्ञाकारत नः कथ कतिह्य बार्ण इक्नाकृष्टि गठेन





নিশার হয় তাহা তাহারা সৌরপরিধি অর্থাৎ
চক্রাকৃতি সূর্য্-মন্তল এবং মনাদি অনন্ত পারমেশ্বরী নিত্যভার মনুরূপ বোধ করিত। অম্মদাদির শান্তেও এই প্রকার উক্তি আছে, এবং বোধ
হয়, তজেত্কই মনন্তদেব সর্পাকারে বর্ণিত হন।
যে২ প্রকার বিরোধ বিসন্থাদাদির ঘটনা সম্ভব
হয় সে সকলের প্রবর্ত্তক সর্পাণ ইহা ঐ মিসরজাতায়েরা কহিত, অপর তাহাদের বোধ ছিল যে
ফিউরিন্ নামা বিবাদাধিষ্ঠাত্রী-দেবী-ত্রয়-নর্প লাইয়া কশারূপে ব্যবহার করিত।

টিগ্রিস্-নদী-ভারস্থ প্রাচীন কাল্ডীয় জাভীয়রা সর্বাপেকে৷ অণ্ডে এই চল্লিগণের উপাসনার বি-ধান প্রকটিও করে; তদনস্তর তদৃষ্টাস্তে অন্তুত প্রতিযোপাদক উক্ত মিদর্দেশীয়ের৷ তৎপ্র-চার পূর্বক পল্লবিত করে; পরিণামে আশিয়া ও আফ্রিকার যে২ ভানে ঐ দেশের বাণিজ্য-বি-वर्य मः मर्भ हिन जथाय अत्नकात्नक अः म ইজ প্রচলিভ হইয়া ফলপুষ্পাদিশ্বলৈ ব্যাপ্ত হুট্যাছে, বিশেষতঃ ভারতবর্ষে ইহার প্রচার मन्त्रन राष्ट्रता। तीथ इस य वजावर वकः অত্তর অন্যান। অবৈধ কুসংস্কার ও মিথ্যা-क्वारनत चाकत द्यान मिनत (मन, किन्न अक-षियाय गुक्कि-नव्-कन्मान-वाकोक **काव कान** প্রকার প্রমাণ পাওয়া সুকঠিন। এই হেতু ঐ দকল মত এই ক্ষণে ভারতবর্ষীয় রূপে বিখ্যাত व्याष्ट्र। सिमत्राम्भोग्निम्पत्र नाम्य अहे छात्र छत्र नश दिल्लादवडा वर्षां मागूरफ वरनक वारह; তাহার৷ আপনাদিগকে অন্যনিরপেক জাতি ক-রিয়া বোধ করিয়া থাকে। ভাছাদের এভাদৃশ। অভিনান আছে যে বশীকরণ-শাজোক সর্গমজের এমত মোহিনা শক্তি আছে যে সেই মজোচ্চারণ-নাত্রেই নৰ্গেরা বশীভূত হইয়া এক কালে জড়াব-

স্থায় পরিণত হয়; এবং তদবলম্বনে তাহারা উহা-मिशक नृज्य कहासः याश क्वतन व्यन्त्राम-मूलकहे বোধ হয়। অধিকন্ত ভাহারা কহিরা থাকে যে यामृग विवधाती नर्भ रुषेक छए: भन कल रहेए छ তাহারা প্রাণ রক্ষা করিতে পারে, এবং ঐ সকল দর্গকে কিছু মাত্র ভয় করে না। ইহা সর্ব-সাধারণ বিদিত আছে যে এই ব্যালগুহিরা বনহইতে সর্প পুছণ করিয়া তাহার বিষ-দস্ত-সকল সমু-লোৎপাটন-পূৰ্বক ইতন্তত ক্ৰীড়া করায়। অতএব बै पञ्ज-होन-मर्श-महीरत इंखोर्गन कहाय (पाय नारे, किन्नु रेश मध्रमां। चाष्ट्र य चित्रिनंदर् নর্পণাহীও অগ্রে দর্পের বিষ-দম্ভ ভথ করিয়া তৎপ্নকৃথিতি না জানিয়া হঠাৎ তৎসূপ-দং-শনে প্রাণে বিনষ্ট হইয়াছে। সর্পের দম্ভ ভথ করিলে পুনশ্চ পাঁচ হয় বার সে স্থানে দন্ত হয়, তাহা স্বরণ রাখিয়া তদুমূলনে যতু করিতে ह्य, नरहर श्रीन-मः नरम्य मस्याननाः व्यामना अछ-জ্জন্য পাঠক মহাশয়দিগকে অনুরোধ করি যে ভন্নব্রকদিগের বাক্যে বিশাস না করিয়া সর্প-স্পর্শ-रिषएय डाँश्वा यथा नाथा नावधान थारकन।

অন্যান্য-দেশের ন্যায় ভারত-থণ্ডেও অলোকিক সর্পের ইতিহান শুনা গিয়া থাকে; এবং
এতজ্ঞপ অভুত ইতিহাস অনেক শুত আছে।
কিন্তু তাহাদের স্পাই-ব্যক্ত-অলীক্ষ লক্ষণসন্ত্রেও
যে তদ্বিষয়ে অনেকের বিশাস হয় ইহা পরমাশুর্মা। অনেকে কহিয়া থাকেন যে তাহার রাজবং
ব্যবহার ও রাজ চিক্তে চিক্তিত গাত্র এবং রাজ
মুক্টোপশোভিত মন্তর্ক। উহা অপর-মর্পরণের
সাহত বিচারাসনে বসিয়া বিচার করে, এবং রাজবদনুমতি করে। তৎপ্রজাবর্গ ভাহাকে আহারদান করে, তাহা উপস্থিত বা করিতে পারিকে

আপনাদিগের এক জনাকে তাহার ভোজনার্থে। রণ লক্ষণ বলা যায়। মৎস্য জাতির ন্যায় এই विन करल श्रमान करता आमितिका ও अन्। में থণ্ডে অনেক-দর্পের মোহিনী-শক্তি আছে. অর্থাৎ তাহারা যে প্রাণির প্রতি দৃষ্টিপাত করে সেই প্রাণী ভৎক্ষণাৎ উহার দিকে আকর্ষিত হয়, তত্ত্র-ত্য লোকেরা এমত বিশ্বাস করে; কিন্তু অত্তেত্যরা व्यानिक है जोहा चीकांत्र कार्त्रन ना, अव॰ वर्ष्ट সুবিজ্ঞ পণ্ডিত ঘাঁছারা অনেক সর্প দেখিয়াছেন ভাঁহারা কহেন যে ইহা সম্পূর্ণ সমূলক।

मर्लान প্রায়ঃ পৃথিবীর সর্বাংশেই প্রাপ্ত হওয়া যায়, কিন্তু দেশ-ভেদে ন্যুনাধিক ও জাতি-ভেদ इय अहे माज विस्मय।

শিগেল্-নামক গুম্বর্ত্ত। সর্পজাতি নিরূপণ-विषयक बीय भूष्ट्र मर्शनशत्क मिर्वेष (छटन দুই বর্গেতে প্রথমতঃ বিভক্ত করেন। অনস্তর নির্বিধ-বর্গকে ছয় শেুণীতে বিভক্ত করেন, এবং ভাহাদের অবাস্তর-ভেদে দুই শত ছয় প্রকার জাতি হয়। সবিষ-বর্গকে তিন শ্রেণীতে ভিন্ন করিয়া অবাস্তর-ভেদসহকারে তাহাদিগের অষ্ট-পঞ্চাশৎ জাতি নির্ধার্য্য করিয়াছেন। অতএব উভয়-বর্গের জাতি সমুদায়ে দুই শত চতু:-यष्टि-श्रकांद्र इहेन। मर्भकां कि सन ও इन উভয় স্থানে বাস করে, একারণ ইহাকে ভূজল-**एत कहा यात्र; किन्छ हेशाएनत नकत्वह छेछ-**शबनम्य-मरबु ६ हेशानिगरक म्हलक ও क्रलक এই দুই প্রকার ভিন্ন ২ করিয়া বিভাগ করা যায়। অপর ইহাদিগের পরিমাণের যথেওঁ ভেদ चाए। किर्र चित्रीर्घ अवः वनवान, किर् বা ভুৰ এবং প্ৰাপ্তক্তদিগের সহিত তুলনায় প্ৰায়ঃ यहां होना

छेत्ररमत्रा व्यक्षानाम 'निनिष्ठे मीर्याकात

জাতি দশলক। ইহারা প্রত্যঙ্গ হীন; এবং **शक्षत मांबरे हेरारम्त रमरहत व्यवस्थन। अर्** পঞ্জর বহু-নত্থ/ক, এবং মেরুদণ্ডের সহিত অসাধারণ-ক্রেণ সংলগ্ধ থাকে। এই জাতির গতি উর্মিবৎ; তদ্বারা তাহারা অত্যস্ত বি-यम-ध्रतां छल । वन-मर्था नमरवर्ग हिला छ পারে। ভিন্ন ২ জাতীয় সরীসৃপগণের অন্তরি-্ন্দুয়ের যথেষ্ট বৈলক্ষণ্য আছে; কিন্তু বাহে্য-ন্দ্রের বহুংশে সমতা দৃষ্ট হয়। অপর জা-তিভেদে মেরুদণ্ডীয় থর্বান্থির অনেক ন্যুনাতি-রেক দেখা যায়, এবং এক জাতির মধ্যে ব্য-ক্রিভেদে ৩০ বা ৪০ খণ্ডের ন্যুনাভিরেক হয়। (मक्दरक्षत चाक्के-शृक्र-शर्य) स ममूनाय वादित সত্থ্যা ১০০ অবধি ৩০০ পর্যান্ত অবধারিত হই-য়াছে, পরম্ভ শতের নূ/ন ও ৩০০ শতের অতিরিক্ত প্রায়ঃ হয় मा। পুচ্ছদেশীয় মেরুদণ্ডের থর্বান্তি-বিষয়েও উক্ত ভিন্নতা দৃষ্ট হয়। কোন সপের কেবল পাঁচ থণ্ড মাত্র আছে কাহার বা সাজ শত-সভ্খ্যাবধি দুই শত-সভ্খ্যা-পর্য্যন্ত নির্ণীত **हरेशास्त्र**।

शूर्व डेक श्रेयाष्ट्र य नर्शिएशत देविक পরিবরাপেকা দীর্ঘতা সর্বতোভাবে বৃহ্ৎ। অধি-কম্ভ তাহাদিগের শারীরিক-গঠনে এতাদৃশ কৌ-শল আছে যে তাহারা ম্বদেহের ভিন্ন ২ ভাগ चनाग्रारम् स्वक्षाक्रास कीठ क्रिट भारत, मुख्ताः खाराजा बारायका पृहः वख-नकल मह-**(करे** गुन कतिएं नमर्थ रुग्न। এই कोमन नर्ग-भाव्यित्रहे मछक् विरमय करण मृष्टे हन्ना। ज्ञ-अार्विपिरागद्ग मखरकद অস্থি-मकन शद्गम्भ-রের সহিত দৃঢ়তরকপে বন্ধ থাকে, কিন্তু সর্প-**हरेग्रा थात्क, अकात्रव छाहारे छेशात्म्त्र जाथा-** मिर्टात छक्तन मा हरेग्रा करत्रक मासकाव्याहरू

অস্থি ব্যত্তীত স্কলই নমনীয়-শিরা-দ্বারা মি**লিত | প্রত্যেক-দন্তের কিয়দণ্শ কোঁপরা অপর** ভাগ হয় তাহাতে তাহারা অনায়াসেই আপনাপন দেহ প্রসারণাকৃঞ্চন করিতে পারে। হনুর निक्त नमा-মাংদাণেশীর কব্জার ন্যায় হওয়াতে বিস্তার कारण मुभवानान इया करे अव पर एएइत मारम-পেশার বিপ্লব ও তাহাদের শিরা সকলের দী-ঘত্ব-প্রস্তুত সর্পদিগের বিশেষতঃ সবিষ্দিগের তত্তৎ স্থান অপ্রয়ানে প্রসারিত হয়।

উরগজাতির ঘাুাণেন্দ্র বলবান্ নহে: ভাহাদের নাবিকার উপলব্ধি প্রায়ঃ হয় না । চকু অভিকৃদ্ হইলেও পরিষ্কার উজ্জ্ব ও অতিতীক্ষ হয়, এবং জাতিভেদে তাহার অবস্থানেরও ভেদ দৃষ্ঠ হয়৷ নপাদগের **ক্ৎপিণ্ড তাহাদের মন্ত**কের নিকট থাকে, তথা ভাৰারা অতি চতুরতার দহিত কুণ্ডলী-ভূত চইয়া অন্তঃকরণকে বিবিধ-বিপদ-গ্রামহ্ইতে রকা: করে; ভাহাদিগের জিহর৷ অতি **মাণ্দল** ও দুকা তথা দিভাগীভূত। ঐ জিজাকে তাহার। मरमार्डे रहिनिंदक्रिश करत, वित्मषठः क्वाधा-বিপ্ত হুইলে অনবরতই এবং অতি সম্বরে তাহাকে বহির ভ্রংপ্রয়োগ করায়। **সপাজাতির স্বভাবানভিক্ত** श्चानदक अञ्चारमञ्ज जिस्ता प्रियश सीठ इन, अवः त्नाध करतन (य छेडा**ই नियमग्न अवः निया**-কর, কিন্তু বস্তুতঃ তাহাতে কো**ন আপদ না**ই। তাহাদের জিহার গঠন এমত যে তদারা নি-গিলনের নহকার কিয়া আয়াদগুহ কিছু মাত হয় ন : কেবল স্পাশেন্দ্রির কর্মা নিষ্পন্ন হয়. এবং তল্লিকিন্ত হাত। নর্দ। সঞ্চালিত হয়। অনেক জাতীয় দপগণের জিলা মূল পৃথক্থ বোধ হয়, किन्न नकत्वद्रदे जिल्ला भन्दिनीय व्यक्ति नमा এव॰ भीर्घ भित्राचाहा म॰लभ थाएक यमुाद्रा अ যন্তের সঞ্চালনে বিশেষ কৌশল জম্ম।

निद्रिष्टे। किन्न हैकी हर्दन कर्या निष्णुरशास्त्रीश সর্পদন্ত তাহাদের অবয়ব ও ছিতির কৌশ-ল-ক্রমে দংশন, ও দংশিত-বস্তুর ধারণ, তথা তৎসহকারে কপোলম্ব গুদ্ধিহইতে নিঃসৃত লা-লদার। ভোজা দুবা লেপিড হওত গলাধঃ-कद्रश्निर्याति इया शूर्दीक-म्ख-वाजीज नर्ग-জাতির চতুর্থাংশের এক প্রকার বিষদস্ত হয়, যদুরা দংশিত ক্ত-মধে*।* এই বিষধর-জাতি ভাহাদের অনিবার্যা বিষ নি**কেপ** করে। এই ভরানক-অক্সের সত্থ্যা দুই, এবং ইহার প্রত্যে-কের মধ্যে এক ছিদু থাকে যদ্বর্যভারা বিষ নিঃসৃত হয়। ইহাদের স্থান উর্দ্ধ-মাড়ির প্রাক্-পাশ ভাগ, এবং তল্লিমেতেই বিষাধার থাকে। এই দন্তের পঙ্ক্তিতে অন্য-দন্ত হয় না, এবং ইহাদিগকে কদের মাড়িতে কোষের ন্যায় আবর্ত্তন করে। কিন্তু তদ্যারা অন্য দন্তের ন্যায় ইহারা রক্ষিত না হওয়াতে কোন কারণ বশকঃ ভথ হইলে পরম কাঞ্নিক পরমেশ্বরেচ্ছায় পুনঃ২ এক স্থানে ছয় বার বিষদন্ত উঠিয়া থাকে।

अङे करा मरस्रत नक्रनहाता मनिय निर्विष সর্প নিরূপণোপায়-বিষয়ে উরগপরীক্ষক ডা-ক্তর রসল সাহেবের রচিত উপদেশ উদ্ভূত করিয়া উপসংহার ক্রিতেছি। রসল সাহেব ক্**হেন** যে, "इहा खद्राव दांचा कर्द्धता स्य चिह्नक मर्लगरनद উপর মাড়িতে তিন পড়ক্তি সামান্য দম্ভ থাকে, ত্মধ্যে এক পঙ্ক্তি বহিঃস্থিত ও অপর দুই পড়্ক্তি ভালুকাভ্যস্তরবর্তী। সবিষ সর্পের বহিঃ-ন্তিত দস্ত পঙ্ক্তি নাই। যথন উপর-মাড়িতে বাহ্য দন্ত পঙ্ক্তি পাওয়া যায় **তথ্ন আর বিষ**-দত্তের অবেষণ করিবার আবশ্যক নাই। যে ছলে সর্পালাতির দস্ত ঈয়ছক্র এবং তীক্ষ্, এবং অভাস্তরন্থ-দ্তা-পাঞ্জিত্ব দৃষ্ট হয় সে ছলে বিশ্ব-

দস্ত যদি স্পষ্টিও না দেখা যায় (কারণ কথন ২ নাংস-ছেদ না করিলে বিষদস্ত দৃষ্টিগোচর হয় না) তথাপি অবশ্যই জ্ঞাতব্য যে সে জাতি হিংসক সর্পা, ইহাতে কোন সন্দেহ নাই"।

इः त्रांकि ১৮৫० चरसद मञ्रान्वरहरू উদ্ভ।

বৃষ্টির বিবরণ।

শিলাভাপে যে২ প্রকারে দেশীয় প্রাক্তর্বাছে, পরস্ক তদ্বারা কি প্রকারে জল বাজ্পরাছে, পরস্ক তদ্বারা কি প্রকারে জল বাজ্পরাহে, পরস্ক তদ্বারা কি প্রকারে জল বাজ্পকরে, ও পরে কি নিয়মেই বা তাহা পুনঃ একত্র হইয়া
হিম-শিশির-বর্ষাদিরপে পৃথিবাপরি বর্ষিত হয়, তাহার
উল্লেখ হয় নাই। এই প্রকরণে তাহার সহক্ষেপে বিবরণ লিখিতবা।

তাপদার। বকল পদার্থই ক্রমশঃ স্ট্রীত বা প্রসারিত হই-তে থাকে, ও তদভাবে সঙ্চিত হয়; পরন্ত সকল পদার্থ সমভাবে স্টাত হয় না। কচিন-পদার্থাপেক্ষায় তরল-পদার্থ অধিক স্ফাত হয়, ও তদপেকায় বায়ু অধিক। কটিন পদার্থ ক্রমশঃ তাপাপিকো দুব হইয়া যায়, তদনন্তর তাপের বুদ্ধি হইলে বাক্ষারপে তাহার পরিণত-হইবার সম্ভাবনা। দাগারণতঃ তরল পদার্থ কচিন-পদার্থাপেক্ষার শীঘু বা-স্পরপে পরিণত হয়। এই বাস্প-হওনের তা**প-প**রিমাণ निर्मित আছে, मिन निर्मिष्ठ-পরিমাণে উত্তপ্ত না হইলে কোন পদার্থ বাস্পাভূত হয় না। পরস্তু কোন ২ পদা-র্থের এক বিশেষ ধর্ম আছে, যৎকর্তৃক তাহার উপরি-ভাগের পরমাণু-সকল অন্তর্ভাগের পর্মাণুর তাপ-সমা-হরণ-করত, বিশেষতঃ নিকটম্ উত্তপ্ত বায়ুর তাপ-সমাহরণ-করত, বাক্প-ছওনোপযুক্ত তাপসমূহ করিয়া ময়ৎ বাক্প रहेशा यात्र। এই প্রযুক্ত মদা, কপ্র, আতর প্রভৃতি করেক পদার্থ সর্মদাই বাক্লীভূত হইয়া থাকে। জলও এই প্রকারে ৰাষ্পাভূত হয়। প্রাতঃকালে কোন প্রশস্ত অগভীর পাত্রে কিঞ্চিৎ পরিমিত জল রাথিলে বৈকালে তাহার সমস্ত পাওয়া যায় না; কিয়দ°্শ ৰাক্ষা হইয়া ৰাষুতে মিশ্ৰিত रत्र। वागूर्ड चार्व्य एक-रहेवाव अरे माज कात्। नम्मानि-कनामत्रहरेल अहे श्रकारत स शतिमार। कन अजार बाका रहेता चाकारण डिविड रह, जारा प्रतन

ক্রিতে হুইলে বিষয়াপন্ন হুইতে হ্য। অনুষিত হুইমালে, প্রতিবর্ষে ২,০৫,২০,০০,০০,০০০ দুট শঙ্কু পঞ্জ নি-থকা দুই থকা মন জল আকাশহইতে বৃষ্ট হটৱা পৃথি-ব্যুপরি নিপতিত হয়, এতন্তির কোটি ২ মন জল হিম-निनित-निना-(काग्रामा-প्रভৃতি नानावग्रत बाकानहर-তে পড়িয়া থাকে; তৎসমুদায়ের আদিকারণ বাকা। আদৌ ভূমিহ্টতে আকাশে বাফারপে জল না উচিলে তাহার কিছুমাত উৎপন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই। অত-এন ইহা মুখ্ট পুতীত হইতেচে যে প্রতাহ পৃথিবীহই-তে ১০,০০,০০,০০,০০০ এক নিথর্ম মন, তথা প্রতি-ঘণ্টায় ৪,১৬,৬৬,৬৬,৬৬৬ চারি অব্দ মোড়শ কোটি ছেম্ডি লক্ষ ছেষ্টি সহসু ছয় শত ছেষ্টি মন জল বাকণ হইয়। উচিয়া থাকে: তভিন্ন নিয়মিত-পরিমাণে বৃটি হইত না। এই বিষয়েজনক পরিমিত-জলের কিয়দণ্শ প্রাণিদিনের প্রস্থাসহইতে তথা বৃক্ষাদির পত্রহইতে * ও দক্ষ-স্ওন-**সময়ে কাঠাদিহইতে নি**গতি হয়, অবশি**ষ্ট দ**কল জন ब्रोनुषाता आकर्षिक इनेगा थाएक।

হিম-শিশির-বর্ধাদি আকাশাগত বারিমাতের কার্ণ বাবলা; ভন্তির ভাষার কিছুই উৎপর হয় না, সূর্র্ণে সে **সকল কারণে** বান্দোর বৃদ্ধি হয় তাহাতে বৃদ্যাদিরও আৰু विका इस । अ वाका चाउठ-स्वाताः शकात कनावृक्त स्वात अधिक जत्म. ও य जल नाका रहेता रुफ्छ किश्र दि शह ঐ জলাপেক্ষায় উষ্ণ থাকিলে নাপা শীঘু উৎপন্ন হয় : গভীর-পাত্রাপেক্ষায় অগভীর-পাত্রে ও বাষ্ট্র শাস্ত্র ৰাক্ষা নত্ত্বে উথিত হটতে থাকে। এই পুযুক্ত উঞ पूष कर्किन भोजन कहिटन इंडेटन अन्डाम्सीसा (पर्वि-নীরা তাহা গভার বাদীহইতে অগভার পরালিতে ঢালিয়া **धारकन, जनजिल्ला**श अ^ह रर गजीत-भारत मृश्क्षेत स অংশ শীতল-বায়ুর দহিত সংস্কৃষ্ট হয়; অগভীর-পাত্রে তদপেক্ষার অধিকাৎশ বায়ু স্লুশ করিয়া শাযু শাতল হইবে; ঐ পরালির উপর বাতাদ করিলে দুয়েরে আ-ন্দোলন ছইয়া তাহার দক্ষতি বায়ু ক্লুৰ্ণ করে, তথা শীতকার্যাও শাঘু সম্লন হয়।

অপর জল ও বায়ুর উফতা তুলা হইলে, তথা জল অপেক্ষায় বায়ু ১৫ তাপাণ্শহইতে অধিক শীতল হইলে

^{*} বৃক্ষদিগের নিখাস প্রখাস আছে; তাতা প্রভারা ভারণত ও বহির্গত হয়; এবং প্রখসন সময়ে বারুর সহিত কিঞ্ছিং বাজ্প নির্গত হয়য় থাকে।

ৰাক্ষোতির অভ্যন্ত লাগন লয়। বায়ু বাক্ষো পূর্ণবিজ * ১১০ বুরুল; উত্তর-সমমগুলের বাক্ষা-পরিমাণ ৩০ বুরুল, इहेरल 3 तामन जलियात शानि हत ; अहे अपूक वया- वृक्ति-शतिमान 03 वा oc वृक्त इहेरवक। कारण खंडाह्म सामन क्यारा शास्त्र।

লেহে ভালার জল গৃত্তিকাদারা শোষিত বা নদায়ার প্রশাহিতি কা ভড়ালাদিতে সম্ভূতিত না হউলে, তৎভানের মঞ্লে ভ্রির পুক্ত-পার্যে অধিক; ইছার কারণ, উক্ত মঞ্ল-মাল্ড 🚁 কি ৩০ বুলল গভার হট্যা মদুহিত থাকিত। নাক্ষকাপ পরিশার হউয়াছে, উহাউ জ্বাতবা।

অংশ পান্ডে ভারের করে।

(४) आन्ड्रेट्ट (म) श्रीमाद्य विक्ति छिलास करत कथात्र । তদৰ্ৱপ ৰুফি নিপতিত হয়: মুত্রাণ গ্রায়ামগুলে সে পরিমাণে রুক্তি হয়, সমমগুলে তাদৃশ হয় না, ও সমমগুলের বৃত্তি হিম্মণ্ডলের বৃতিখ্টতে অনেক অধিক। অনুমিত **ষ্ট্রাডে, গ্রীষ্মমণ্ডলে গড়ে প্রতির্মে ৮০ বুরুল গভীর**্ জল বাক্ষা হয়; ও ভথাকার বৃষ্টির বার্ষিক গড় ১০০ বা

প্রত্যেক মণ্ডলের সর্বতে সমপরিমাণে বারি পতিত হয় ় রাষ্ট্র সালের ও বৃষ্টি-পতনের পরিমাণ-করণার্থে না। কেতাদি-নিমু-স্থানাপেকার উচ্চ-স্থানে বৃষ্টি অল্প, পদাধবিদ্যা- বিশার্দ পভিতের নানা উপায় শ্বির করি- ু কিন্তু কেতাদি সমভ্মিইইতে পর্বতের ঢালে, বিশেষতঃ য়াছেন। এ শছপে আছার পরিমাণ প্রসিক; বিলাতে, ঐ ঢাল অসম অতি উচ্চ পর্বতের পার্ছে ভিত ছইলে, ভম্পানেরকে অন্যান্য যন্ত্রদারা বাক্ষা ও রুফি নিরুপিত বৃফির আধিক্য হয়;---কারণ বাক্ষপূর্ণ বাবু পর্বতা-হয়। কোন সেশে নিপতিত বৃষ্টি মৃত্তিকাদার। শোষিত ও ভিমুখে গমন-সময়ে তৎস্কর্শে শীতল হওত বৃষ্টিরূপে নিপ-ভড়ালাদিনে সমুখিত না হইয়া ঘদ্যপি উক্ত দেশের উপ- তিত হইয়া থাকে: এই প্রযুক্ত হিমালয়ের ঢালু স্থানে রে সমান সমলাবে বিষ্ণুত থাকিত, ও তদ্ধারা ঐ বৃষ্টজলের । বৃষ্টি অধিক। অধিতাকায় বৃষ্টি অল্প, এবপ উপতাকায় যে গভারতা হউতে পারে, উল্লেখিত বৃত্তিমান-শক্তে তাহা। অধিক: তদ্বীন্তে ইরাণ দেশ; তথায় প্রায়ঃ কদাপি। ভানালালে নিক্পিত হয়। এই প্রকার বাজ্পা**নান-মন্ত্র**় মেখ দৃষ্ট হয় না, তথাচ ভারিকটান্থ মাজেন্দ্রান-প্রদে-প্রচারিত আছে, **তদ্**ারা যে পরিমিত জল বাজারপে লো প্রচুর বৃ**টি হ**ইয়ে থাকে। সমুদূতটে বাজা অসিক, পরিণত তথা, তাহার গভীরতা নিরুপণ করা খায়। ঐ তথা বৃশ্ভিও অধিক। বৃহভূমিশ্বণ্ডের মধ্যভাগে অপিক গন্ধ-দৃষ্টাখোলুলারে কোন স্থানে ২৫ কি ৩০ গ্রুল বৃষ্টি বাক্ষের সন্থাবনা নাই : মুতরাশ বৃষ্টি অল্প : কিন্তু স্থান-গ্রস্থানে বলিলে এই জাত্রা যে উক্ত স্থানে যে বৃষ্টি পদি- ভেদে এই নিয়মের অনেক **অন্যথা ছইয়। থাকে। সম**-মন্ত্রলে ভূমির পশ্চিম-পার্গে অধিক বৃটি হয়, ও গ্রায়ু-बराद नायु: श्रोबामध्यन वाशिकातास्त माक्रारण वाक्य-৩০ স্কল বংকে জটয়াছে বলিলে ৩০ বুকুল গভীর জল পুনুবায় আদিয়া পূজাতটে উৎক্ষিপ্ত হয়, সমমগুলে বায়্র গতি তাদৃশ নহে, সূতরাণ বৃষ্টিরও অনাথা ঘটে।

শীরকালে বায় অত্যন্ত ভাষ্ক থাকে: এই প্রযুক্ত তথ- । স্থানভেদে বৃষ্ঠি-হইবার কালের আনেক ভিন্নতা হইয়া কালে প্রতুর রাজ্য জরিয়া থাকে; **গ্রীষ্ম-বায়্র উন্ধ-** থাকে:কোন স্থানে বার্মান্ত কিঞ্ছিৎ বৃ**ষ্টি হয়;কোথা**ও ভাষও ভাষিক বাস্পে হওদের উপায় হয়; কিন্তু তৎকালিক , বর্ষের সমস্ত বৃষ্টি দুই তিন বা চারি মাদের মগে নিপ-ৰায়ুকে শতিৰাসকাত ৰাম্প নিজ ৰাখিয়া তভোধিক ৰাম্প - তিত হইয়া যায়; কোথায় শতিকালে বৃষ্টি হয়; কোথায় হলাৰ দেৱনা, এট কাৰণৰতঃ শাহকালে যে প্রিমানে গুলিয়া, কোথায় হেমন্তে, কোথায় বা নিয়মিত বর্ষা-্র ছাগানি ক্ষু হয়, গ্রীয়ে জন্ত্রপ হয় না। পরে শীত ও কালে বারি রুক্ট হয়। গ্রীয়ামণ্ডলে নিরক্ষর্ত্তের উত্তর-भीय डेलह-अर्का ह वारकः वार् भृतिक इनेटल, वाका- छाता उन्नायन-ममस्य, उ उन्निक्त पक्तिगायन-ममस्य হাওন-সংখ্যা প্রায়ত হয়, ও বায়ু-মিজিত বাজপ বৃষ্টি- বৃষ্টি হয়; ফলতঃ পৃথিবীর স্থানে ২ যে নিয়মে বৃষ্টি इय, उम्दि वर्षाकानरक अठूत प्राप्ता भाग करा ध्यायः বোগ হত না। শীত গ্রীষ্ট ঋতুর প্রধান, অপর-সকল डाहात मिक्क्सानमाज। स्निन, शहूनान, अव व हेडालि-(मण-मकरमञ्ज मक्रिन्छारभ, उथा निमिल ও মেদেরা घौरभ, ও আফরিকার উত্তরভাগে, তথা গ্রীদ-দেশের দর্ভতে, ও আসিয়াথণ্ডের উত্তর-পশ্চিমাঞ্চল, শীতকালে বৃক্তি হইয়া থাকে; অতএব ঐ দক্তল স্থানকে, "শাতকালিক বৃটির प्रश्न" विनास वना शाहा। आहा-शर्वाकृत विकरणांश्य कर्रनि-रवण, कुल्लारमात्र शूर्खणात्र, विवद्गन्त श्रारमण, मूड्रे-

^{*} যাহাতউতে অধিক সিষ্ণ হউতে পারে না তদবস্থার মান **्रधीमका**नश्र

জর্লগু-দেশের উত্তরভাগ ডেনমার্ক এবং উরাল পর্বতের পূর্ব্ব দিবিরিয়া দেশ পর্যান্ত সকল স্থান গ্রীয়্মকালে রুটি প্রাপ্ত হয়। অতএব তাহা "গ্রীয়্মকালিক-বৃট্টিমণ্ডল" নামে বর্ণিতবা। তথায় শীতকালে প্রায়ঃ কিছুমাত্র বারি বর্ধিত হয় না। ইউরোপএণ্ডের পশ্চিম-পার্যন্ত সমস্ত দেশ তথা ব্রিটন আদি তত্রতা দ্বীপ-সকলে বর্ষাকালেই বৃট্টিপাত হয়, সূত্রাং তত্ত্বদেশ "প্রাবিট বৃট্টিনগুল"। আফরিকার দক্ষিণভাগে ও অক্সেলিয়া-দ্বাপে বর্ষা ও শীতকাল বৃট্টিপাতের সময়; পরস্ত প্রতিদ্বাদশ্বর্ষান্তে ক্রমাণত তিন বংসর তথায় কিছু মাত্র বৃট্টি না হইয়া অকাল উপস্থিত হয়।

भूटर्स উक्त इडेशास्त्र शुक्षाप्रशत गर्सात्भकार अधिक বৃষ্টি হয়: কিন্তু ঐ বৃষ্টি পড়িতে অধিককাল আবশাক হয় না: তথায় দুই মাদ-মধ্যে যে বৃদ্টি নিপতিত হয়, ছিমমঞ্জে দুট বৎপরেও তাহ। সন্তুপ নতে। জট্লভের निकड़े मिष्का-नामक-ष्ठी पार्यत 80 निवम पात्रश्लात থাকে, অপর প্রতাহ বৃষ্টি হইয়া থাকে, অথচ কলিকাভায় বর্দে যে পরিমিত রুফি ২ইয়া থাকে, তাহার চতুর্থা শ-পরিমিত বারিও তথার নিপতিত হর না। চেরাপুতি-প্রদেশে যে প্রকার প্রচুর বৃথি হয়, ভূমগুলের আরে কুতাপি তাদৃশ বৃষ্টি ঘটে না; তথায় ৮০। ৮৫ দিব-দের মধ্যে ৪**৫০—৫৫০ বৃহল বৃ**ফি প্রপতিত হয়, অথচ তথার বর্ষের ২৮০ দিবদ পরিষ্কার থাকে, কোন মেঘ বা বৃষ্টি দৃষ্টিগোচর হয় না। দেউপিতদ্র্গর-নগরে প্রতি সপ্তাহে কিঞ্চিৎ ২ বৃষ্টি পড়িয়া বর্মের ১৬৯ দিবসে ১৭ বুরুল বৃটি প্রপতিত হয়। অন্যত্রেও এই প্রকার অনেক ভেদ আছে, এবং তদ্যে ভূগোলবেক্তারা গ্রাম্ম-মণ্ডলকে "দাময়িক বৃষ্টিনগুল", ও তাহার উভয় পার্মস্থ श्रानतक, " हित्रुसिमछन " नत्य विधान करत्न।

শাময়িক-বৃত্তিমণ্ডলে ক্রমাণত দুই তিন বা চারি মাদ মধ্যে ২ বৃত্তি হইয়া ৫০—৬০—১০০ বা ভতোধিক বারি বর্ষিত হয়; অবশিষ্ট কাল অনাবৃত্তি থাকে। চির্বৃত্তি-মণ্ডলে বৃত্তি অল্প, কিন্তু ভাহা বর্ষের সর্ক্র সমরেই কিঞ্ছিৎ ২ পড়িয়া গাকে।

जात जरार्स (मोमूनि बायू त श्रापूर्णाय-श्रयूक उथाय वृद्धित- शृद्धीक निव्रम तका शाव मा, अवन्य जिल्हा उथाय वृद्धि मा इहेश (शोगुमानुशांद्ध वृद्धि हम् । अधिरकागीय (मोनूम-समस्य, मझवांद्र उटि ७ देशांच-रकागीय (भोगूम-समस्य, मझवांद्र उटि ७ देशांच हहेशां बारक।

খাটপর্বতের বাধায় সমুদের বাজ্পপূর্ণবায়ু দক্ষিণদেরে। সর্বাত হইতে পারে না বলিয়া তথায়ও আঠি-ভিন্ন ঋতুতে বারি বর্ষিত হইয়া গাকে।

গুরিমণ্ডল-সমম্ভলাদিতে যে প্রকার বৃষ্টির ভেদ বিশিষ্ট ইইল, উক্ত প্রত্যেক মণ্ডলের প্রত্যেক হানে প্রায়ত ডল্ল প্রত্যেক আছে; অতএব স্মর্ত্রতা যে প্রের্জাক্ত বর্ণনা কেবল স্কুল জ্ঞানের নিমিত্ত লিপিবন্ধ ইইয়াছে। সূক্ষা ব্যোধের নিমিত্ত প্রত্যেক স্থানের বৃষ্টির পরিমাণ জ্ঞাত হওয়া আন্বশ্যক। করেক প্রধান স্থানের বৃষ্টির পরিমাণ নিম্নেনিদিন্টি ইইল।

स्टानंद नाम,	বার্ষিক গড়।
চেরাপুঞ্জি,	. ৫০০ বৃরুল
আরাকান্,	>@•
मार्जिनिङ्	· ১২৫ .,
त्वाश्वाहे,	. bo .
भान्ताक,	·· 8 } ,,
কাশী,	cs
মথুরা,	২৭?
क्लिकांडा,	146
年期 , • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	10
্যান্ লুই মারান্হো, •••••	160
দেণ্টভোমিশ্বো দ্বীপ,	380
্রুণাজা দ্বীপ ়	552
রোম,	٠٠ ٥٥ ,
निवत्रभून,	os <u>.</u>
লগুন,	
পারি,	85
নেউসিটন্রগ,	
অপ্সল,	
: কোন ২ দেশকে ভ্ৰোলনেবলের "বি	

কোন ২ দেশকে ভূগোলনেতারা "নিস্ব" বা "বর্ষাবিহীন" দেশশবেদ বগন করেন, কারণ ভত্তদেশে বৃষ্টির
প্রচার নাই। তিকতেদেশের অপিত্যকা, পারস্য-দেশের মগ্যভাগ, মেকোলিয়া, গোলি-মকভূমি, আরবদেশের
উত্তর ও মগ্যভাগ, মিসনদেশ, সাহার্যা-মকভূমি প্রভৃতি
স্থান এই প্রকার; তথায় বৃষ্টি নাই, এবং প্রায়ঃ নডোভাগ মেঘাছ্র হয় না; তর্মধ্য কোন ২ স্থানে ২০।০০
বংশরের মধ্যে দুই এক পদলা বৃষ্টি হইয়া থাকে,
কোথায় বা বর্ষে দুই চারি পদলা হয়; অপর কোন ২

স্থানে কদাপি বৃহ্টি হয়। না:। মিদর-দেশে বৃষ্টি নাই ; পরিণত হয়। অপরাণ্শ নভোভাগে শীত-বায়ুর সণ্-সভাপ তির্মরণীয়, ত্থায় মেহণজন ও ব্রিপাত তজাপ उल्लामा मात्रभीम अमार्थित घरधा तथा उल्लाह्य । नाहि-मा शामरणाह (नारकहा करम्) में भवाकि ३७७२ व्यक्त । ১०३ क्लाइं फ़राम প्राप्त ४ होत मध्या भारत १९४० जार्ख, उद्देशाह ५१६१ जार्ख, ८८% उद्देशाह ५৮०० আৰ্থ্য ১৯মে আপ্রেল দিবদে মেহগজন হট্যাছিল। দেখা মায় নাই। লিকদেশের নিমুভাগন্ত মনুষ্যের। নধ্যে ১ বিদ্যুৎ দে-দের প্রায়ন বোধ নাল, কালে শতবদের মধ্যে তা- তিছিবরণ পরে বক্তব্য। अफ़िलात (१९८५) मूले अकवात तृति इत् । यक तृति माहे বলিয়া ভাষারা কাণজের অরের ন্যায় এতাদৃশ কণভস্ত , হয় ; ও কথন ২ ঐ পাচন-সময়ে শীতাধিকা হইলে ্স নিমিত করে যে ভাষা দুই এক পদলা বৃতিতেই বি-क्ष्में हरू : बहै श्रमुक्त 2018 वहा co दब्मतारम देनताब मूहें नाम श्रमिक। खे देनव मिमा-श्वरनत कातन तिमूखः, নেরি দিন সুটি হইলে, ভত্তদেশে ভয়ানক উপদূব ঘটিয়া। তাহার সাংখ্য ভিন্ন শিলা হইবার সম্ভাবনা নাই। গ্রাকে। পরেন্ত্র্তির পরিবত্তি তথায় গ্রুষ্টা নামক এক প্র-কার কোয়ানা আছে; কোন ২ দিবন পূজাকে তাই সমস্ত ः छ। प्रश्नन आफ्रिन कतिहा तार्थ, दश्कारन मुगाप्तर प्रस्मुह भारत (ताम बस् । शहत तकनीटयांटम वे कारोंना श्रहूड শৈশিররূপে স্ফালেশপরি নিপতিত হয়।

श्रुरक्ष है एक इत्याद्य श्रीयारशकाय माटकारन व्यक्ति ্রক্ত উপ্তান করে। ঐ বাংকার বিয়দ্পশ মেঘরপে। বেছামতে ব্যবস্থ হটাবেক।

ভিদিনিময়ে শ্লেট্রপান্নাথে বর্ষেই নীল-নদীর বন্ধা স্থানি ঘনীভূত হইয়া শিশির বা কোরাসারপে ভূমিতে হুটয়া থাকে এ বলার কলে ভূমি সিকা হুট্যা শ্সা- নিপতিত হয়; শীতের প্রাথ্যা হুট্লে তাহা হিম বা শালিন। 🕬 । উত্তরামরিকায় মেক্লিকোর অধিতাকা, তুষার রূপ ধারণ করে। দেশীয় উষ্ণভার বর্ণন-সময়ে গোলালালা এবপ কালিফণিয়া প্রদেশে বৃষ্টি নাই। উক্ত হইয়াছে, গ্রীয়ামণ্ডলই সর্বাপেক্ষায় উষ্ণ, তথাহইতে দালবান বিলাল পশ্চিম-পার্যে বৃষ্টির এতাদ্শ অভাব ্যত কেন্দ্রাভিমুথে অগুবন্ধি হওয়া মায়, ডভই শাভের দে আন্তর্তিরে দেশে ৩০ শালের বন্না কি ৭৬ নমন্তর বৃদ্ধি হয়, সূত্রাণ ইহা অনায়া**নেই অনুভূত হ্ইতে** পারিবেক, যে ঐ শীতপ্রধানদেশে শিশির পতন-সময়ে শীতাগিকো হিম * রপে পরিণত ছউবেক। ঐ ছিম হ্ওনের সীমা পৃথিবার উত্তরভাগে ৩০ আক্ষাণশ, তা-সার দালিণে হিম পড়ে না। পৃথিবীর দক্ষিণভারে হিমদীমা ৪৮ অঞ্চাণ্শ তাহার উত্তরে হিম পড়িতে

পরত্ত এই নিয়ম সমভ্মির সম্বন্ধেট প্রমাণীকৃত হ্য থিতে পায় কিন্তু মেখগজ্জন কাহাকে বলৈ ভাষা তাহা- | পর্বতে ইয়ার অনেক অন্যথা প্রভাক হুইয়া থাকে:

> বাফা শীত-জনে ঘনীত্ত হটয়া বৃষ্ঠিরপে নিপাইত অত্যন্ত ঘন অর্থাৎ দৃঢ় হউয়া মাল, এবং তাহা শিলা-

> ্ তিহ শব্দের প্রাকৃত ঋর্ম আকাশাগত "সরফ"; কিন্দু অন-खिळ श-तमार्थ छात्रा गिनित-छाश्रमार**र्थं तातक उ**त्रेशा थारक; এট পুডে আমদা ঐ শদ প্রকৃত অর্থে সারকত করিলাম। उप्रांशांतित अल करिया (य नृष् भागार्थ इय, अला तबक गत्क জ্যাপন করিব। ফলবং উৎরাজি "আইম্" ৪ "রে।" শবের ছে एम, आधता विभ ও तदक मास्य भाव छान निभिन्ने कविनाम তিমের প্রয়ার "নীচার" ও "তুষার"; উলার অন্যতম শব্দ

विविधार्थ-मञ्जूर,

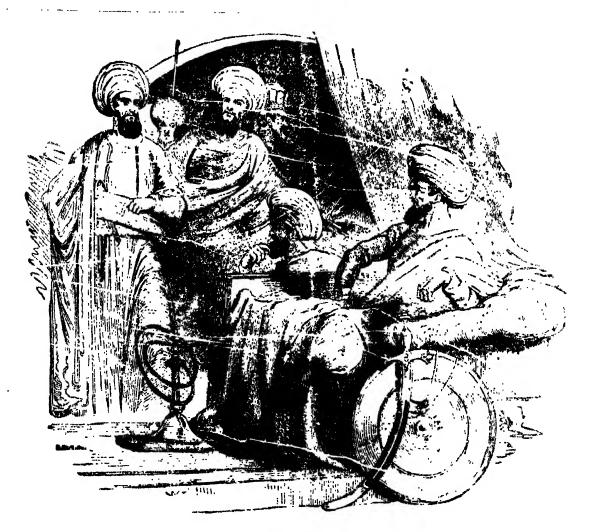
वार्थ†६

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিল্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পতা।

० भई]

नकाक ३११७, मुख्य।

|२२ थड़।



निन्नु-(मणोश्रनिरगत उभाश्रान।

9000000 मू-नाम डेडश-उठेक जूमि नि हात श्रेष्ठगंछ।

্লুচিন্তান্ দেনের অভান্তরত্ব সমত ভূমি তা-

क्षूरमण मारम विश्वाक। चार्के अहे अरमरमात आकृत-धर्म महें जूना नरह; নগরহইতে সমুদু-পর্যান্ত ভাছার টাটা করাচি প্রভৃতি সমুদু-নিকটস্থ ভূমি শিলা 0000000 विकास, अवर बाक्षवांता । व- । वालुकामस, श्रासः क्वव्यापि विकास अवर

অস্বাস্থ্যজনক। সিল্লু-দেশীয় লোকেরা ঐ স্থানের "बात" नाम विधान करहा

লার-প্রদেশের উত্রে ছাইদরাবাদের চতুদিগ্-वर्डि कान "विकादना" नात्म अनिक। जा-हार जनगिन जनक छेर शह हय, अवर वृक्षा-দিহুও শভাব নাই; তথায় অনেক বিখ্যাত নগংকিও আছে।,এই খণ্ডে বহুকাল নিজু-দে-रमत ताजभाषे हिल, এवः अधुना हेः ताकि पिरात **७८५-मामनकडी डाजপुरुरवडी उथाप्र दाम**े করে, এই প্রযুক্ত অন্য ভাগাপেকায় তাহার সৌগুৰ অধিক। সিজু-নদের বন্ধায় তথায় मरदार व्यानक व्यनिष्ठ यिष्टिया थारक, किञ्च अ বয়/ায় দেশের শদ/দম্পত্তি এ প্রকারে বৃদ্ধি লয়ে যে লোকে ভজ্জনিত অনিষ্ট অনিষ্টই জান करत स. !

বিলোলোর উত্রস **নেচবান্ লাখান্ খয়েরপুর** পুড়ুজি আনের <mark>সমষ্টি নাম "সিরো"। তথায়</mark> नमूल नायुत প्राप्तत नार, मुखता वर्षत नम् मान क्रमाधक अमहः भीत्यत आपूर्कीर थात्कः ক্ষিত্র বেলুচিতান ও ভাওল্পুরের মকভুম্যা-গত দিল্ম-লামক প্রাণদংহারক উঞ্ বায়ু আ-भिशः कत्नव नैलमुव घटे।हेश्रा थात्क, उৎकातः लड्युन, रर्यन् इडेरन्डे किथिए इष्टे, न्राहर प्य-তাত্ত কেশ নহা করিতে হয়। অপর **নিন্দ্** দেশে অধিক বৃধি হয় মা, ত**ংপ্রযুক্ত মধ্যে ২**্ কিঞিৎ চইলে ভনগৰে ভাষাকে ক্ষন্তান্ত প্ৰিয় उच्चित्र बात किष्ट्रे पृष्ठे इस ना। शब्द निद्धाः । हात्र श्रमश्मा विवृद्ध-साविष्यक्**रे वार्णः किष्**र

প্রদেশে প্রসিদ্ধ নগর অনেক আছে; এবং তা-হাতে প্রজারও অভাব নাই। বরুর, সকর্, রোহার, লার্থানা থয়েরপুর প্রভৃতি নগর-দকল निखू-प्रत्मेत वह अप्तर्भ चित्र। त्मरवाक द्रान व्यम्प्राणि बाधीन व्याष्ट्रः हैः ब्राह्मकर्ज्क मिस्नू-দেশীয়দিশের পরাজয়-সময়ে তাহার পরাজয় হয় नारे। जानপूत-वःभोय भीत चानि-स्मावाम् वर्धना वे उरम्ब मामुख्य क्रिटक्स।

সিলু-দেশের প্রধান অন্ধ সিলু-নদ: ভাহা **উक्ट-(म्म-नयस्त्र द्राज्यय, जनमञ्ज वरः मम**्-माजा। ज्री-मकल नाशिक्र-माधनार्थ जाहात গর্ভদিয়া ভুমণ করিতেছে, দূরদেশস্থ বন্ধু পর-म्भात-नन्धर्भागात्र जाहाहहेट आध हहेट-ছে; তাহার বয়গায় ভমি শৃস্পালিনী হই-তেছে; তথাকার প্রাণি সকল ভজ্জলে জীবন-ধারণ করিতেছে। চৈত্র অবধি ভাদু পর্য্যন্ত মধ্যে ২ সিন্ধু-নদের বয়্যা হুইয়া থাকে; তন্ম-ধ্যে চৈত্র ও ভাদেুর শেষে যে বন্ধ্য হয় জা হাই অভ্যন্ত ব্যাপক।

প্রস্তাবিত দেশের আদিম প্রজারা হিন্দুধর্মা-वनशे हिन; किन्न वङ्कान यवन-नःमर्ग जाहा-দিগের ধর্ম চ্যুত হইয়াছে। এইক্ষণে তাহাদিগের चिधिकाश्म (मामन्यान्; अवः वर्गमहत्र मन्-যোরা যে প্রকার দুর্দ্ধি হইয়া থাকে ডজপ অধম। পরস্তু তত্ত্রত্য বেলুচ-জাতীয় ব্যক্তিরা এই निमात ভाজन नरहः छाहारमत करनरक भईरङ काम करतः। मिरता-श्राप्तरम मिक्षु नामत उठेष्ट् वाम कत्रु यथात्याग्रा-वृश्वाम-नश्काद्ध व्या-जुमि केरोता अन- जरमक छेम्रानाभिएक शहिरमा- अन २ काश्चिक-भोष्ठव मूठाकंबारण वाफाइँडा ভিত, কিন্তু ভড়িন সকল স্থান মঞ্জুমি-প্রায়ঃ; থাকে; এবং মৃগয়া-যুদ্ধ-বিগুছে কোন মতে कान छात्न (करण आफेरन, कान छान राजू- नामान) नरह। है:आक्रक के निष्-तारकात जान-कामयः क्षायां वा ज्व-होन निनामय शर्वज, इत्रव-नमस्य स यूष-विश्रुहानि हहेग्राहिन, जा- আছে তজ্জাতীয় তাবং লোকেরা যুদ্ধ-সজ্জার উপযুক্ত কাল পাইলে ইংরাজদিগের পদ্ধে নিজু-রাজ্য গৃহণ-করা কঠিন হইত।

মোসল্মান্ সংসর্গে সিন্ধিদিণের বর্ণ যে প্রকার সঙ্কর; তওঁকারণ তাহাদিণের ভাষাও সেই প্রকার সঙ্কর হইয়াছে। উক্ত ভাষার মূল সংস্কৃত; ব্যবহার-দোষে সংস্কৃতের পরিবর্ত্তন হইয়া যে প্রকারে প্রাকৃতাদি-ভাষার সৃষ্টি হই-য়াছে, ইহার ও উৎপত্তি তদনুরূপ।

দিবিদিগের আহার ব/বহার প্রায়: অন্যান্য মোনল্মান্দিগের তুল্য। যে বোন অংশে পা-থক্য আছে তাহার সমুদায় বর্ণন করিবার অবকাশ এই পত্রে সম্ভবে না; অতএব ভদ্বিয়ক কতি-পয় প্রধান লক্ষণের উল্লেখ করিয়া এই প্রস্তা-বের উপসংহার করিতে হইবে।

হিন্দুদিগের ন্যায় নিব্বিরা কন্যা অপেকার গুপ্রকে প্রিয় জ্ঞান করে, এবং বেলুচ জাভীয় প্রভৃতি কোন ২ জাতীয়েরা রাজপুঞ্জিপের অবস-প্রথানুগামী চুইয়া জন্মিবামাত্র কন্যাকে অহি-কেণ নিগীলিত করাইয়া অথবা দুধো নিমগ্ন করাইয়া বিনণ্ঠ করে। পরস্তু প্রস্তাবিত দেলে कना-विनारभव वीजि वसवर मरहः अवः कना-জন্মকালে তৎপ্রতি অবছেলা করাও ব্যবহারসিদ্ধ নছে। পূঞা কন্যা উভরের জন্ম-সময়ে প্রসূতি-कात्र व्यक्तिय कृष्ट्रिया जूला-व्यानम-प्रकाम-पृतंक जारांत भृत्र गोछ-बाम्। कि चानम्य मृहक वर्गाणांत-मुवनावरनाकरन छर्भात इत्र, अवः গৃহকর্ত্তাও यथानाध्य मूथ मिष्टाझ ७ जवाकू रिया चाजिया-नायन कतिता चारकन। अन्िकातः चात्रीया उ क्ष्रेषिनीया अपर्णनार्थ आश्रमन-ममस्य नव-श्रम् एत निविध किकिए र पूर्य चामग्रम कहा वि-विष्ठ **कान**्यक्ष । करमायात्र समस्यागनादस्त

সম্ভাবনা। এই জন্মোৎসব ক্রমাণত পাঁচ দিন থাকে; তদনস্তর যন্ত দিবসে নব প্রসুতের নাম-করণ-সংকার বিহিত হয়। তাহার কোন বিশেষ লক্ষণ নাই, অতএব এইক্ষণে আমরা তদায় বিতীয় সংকারের উল্লেখ করিতেছি।

विভोय मःकारवद नाम "व्याकिरका" वर्षाः চূড়াকরণ; জন্মানন্তর তিন ুমাস অবধি এক अकि मूलक्ष (सयक सामल्यान्पिरगत अविति छ বিধির অনুসারে বধ করিয়া তাছার মাণ্সহইতে **চর্ম, ও পরে অভিহ্ইতে মাংস, পৃথক্ করিতে হয়; এবং তৎকালে অভি্যাহাতে আহত বা** ভक्ष ना इस उन्दर्ध दिस्मय नाद्यान इउहा কর্ত্তব্যঃ কারণ ঐ ব্যাঘাত হইলে পরে অনিষ্ট **इहैरांत्र मंडारना। পृ**थक-कृष्ठ मारन चाञ्चीय-কৃটুম্বদিগের অবহারার্থ পাকশালায় প্রেরিড হয়, ও বালকের মত্তক মুগুত হইলে মুগুত কেশ ও পূর্বোক্ত মেষাহি মেষত্তকে আবৃত করিয়া श्रुकारत व्यथवा नमाधि-छात्न (शित्रुकारन) ্রোথিত করিয়া রাখে। নিঞ্জিদিগের ধ্যাশাস্ত্র-गटि चटर्स भगति शर्थ देवलिकी नमोत दाना-शबा अन्मित्र नाम्नी अक छएकती नमी चार्छ; **এক অ**তিসূত্ম-নূত্রের দেতুদিয়া তাহা পার ছইতে হয়: এ সুত্রোপরি অতি সাবধানে পদ নিক্ষেপ না করিলে তল্লিমে নরকে পড়িবার मछानन। किन्न व्याकितका गश्कात यथाविहिङ দিন্ধ হইলে এই আপদের নিরাকরণ হয়, কারণ वह नही-शांत-इलन-हिन्दान शूर्वाक स्मयाहि ও চর্ম সুন্দর অখাবয়ব ধারণ করত বঙ্ দম্বচ্ছে আকিকো দংকার বিহিত হয়, তাহাকে প্টেষ্ঠ লইয়া ৰচ্ছদেৰ নৃত্য করিতে ২ নৰ্যৰ্ভৱন্ कत्रक बर्गाद्वार्व क्दा।

সিন্ধিদিগের তৃতীয় সংক্ষার বিদ্যারস্ত, ও চতু-र्थ मः कात मूत्र । उपनस्त विवाद्य उपार्श **क्हेजा था**टक । धनतान् निक्तिता क्लिमुन्टिशत कर्म्य बोज्ञानुत्रादः दि॰मण्डि-व॰मद्भव मध्याहे উषाह বন্ধনে নিবন্ধ হয়; কিন্তু মধ্যবিত গৃহত্ত্রা ২৫-०० वध्मातत शूर्व विवादकत छेरमार्ग करत मा। मिक्किरिश्व यहेक "डेकीन" मारम विथान ; ভাগ্রে৷ বাক্পট্তায় তাহাদিগের বলীয়-ভ্রাতা-দিগভাইতে কোন মতে ন্যন নছে। উভয় দেশেই তাহারা পাত্র-কম্যার প্রশংসায় গদ্গদ্চিত্ত, ও প্রলোভ-দশনে তুল্য কুশল; এবং দিগের বাক্টের বায়ু-জুলা দার্চাতা উভয়-খা-तिहे नमान। विवादकत कण्णन। इहेर इ अथम इ ঘটকৰ্ত প্ৰভাব শুৰণমাত্ৰ বিবাহ দিতে ৰাকার कतः निकिमिरगत (वार्य निष्या नर्गः अहे প্রযুক্ত উলাহ-প্রস্তাব স্তনিলেই সিন্ধি কন্যাকতা-हा बहीकार कहिया अंग्रिटि गर्नेक्टक विभाव कर्त्रमः जपमञ्जूत अक माम जाजीठ इहेला घटेव কন্যাকভার নিকটে দ্বিতায় বার আগমন-পূর্বক নানালির ভূমিকার পর পুনরায় বিবাহের প্রসঙ্ক করে: ভাছাতে কমাকের্তার বিরাগ থাকিলে चिनि (म नियासत धानक कतिएक निरम्भ कादन ; नक्दा कालन मयाचि-श्रकाम-कत्रगार्थ व्यक्त-मका चिन्हक (काम दोक) कहिया थार्किन। अ विक-যের এক প্রচলিত বাক্য এই: "ঈশ্বরের নিব-ন্ধন প্রান্তার মতে; কিন্তু এইকাণে আমাদিণের কন্য-দানে অভিকৃতি নাই''। এই প্রকারে আখ-নিত হইলে বয়ক্ত ও তৎপত্তিবায় পুনং ২ ভাবি কুটুম্বদিগের বহিত সাক্ষাৎ করিতে যায়। ও ভাবি কুট্দেরাও আপন সভ্যতা-প্রদর্শনার্থে काशास्त्र वाणे नर्वमा याजायाच करता अह मभएस अस्वितानिक्षः वत्रयाजीय-स्वादक्षत्र लाएक

পাত্রকন্যার প্রশংসায় বিরত হয় মা, সুভরাং অপ্পকাল-মধ্যেই বিবাহের কপেনা ছিরীক্ত হইয়া উঠে।

অভঃপর বিবাহের দিন হির করা আবশ্যক; তল্লিমিত্ত আমাদিগের ন্যায় কোন পত্র লিখি-বার প্রয়োজন হয় না। বরকর্ত্তা সপরিবারে যথাসাধ্য বজালকার ও কিঞ্চিৎ পিষ্ট মেহ্দি-পত্র লইয়া মহাসমারোটিং কন্যাকর্তার বাটী আগমন করেন: তথায় জ্রীপুরুষেরা পৃথক্ ২ সভা করিয়া আগত জ্রাদিগকে জ্রীর সভায় ও शुक्यमिशतक विश्विष्ठि नमामत-शूर्वक **डेल**-বেশন করায়। ভারতবর্ষের সর্বতেই বিবাছ-সম্বন্ধে নাপিত ও নাপিৎনী প্রধান আল: তা-হাদিগের অনুপরিতে বিবাহ টোপর-বিহীন-বি-বাহের নায় বোধ হয়। সিলুদে**শে** নাপিত चरलकाय नालिक्सी अधानाः तम शरदात हि-বল, পাত্রের বাটীহইতে তৈল-হরিদার প্রতিনিধি বজ্ঞালক্ষার-মেল্ডি-প্রভৃতি আনয়ন-পূর্বক কম্যা-क नूजब्बी कृष्ठा कहा जो मिरशह में बा-मर्था डेल-বিষ্ট করায়; ও ভদনস্তর এক বৃহৎ-পাত্তে কিঞ্চিৎ দুখা লইয়া বহিৰ্বাটাতে ব্রক্জার সম্মুখে ভাষা ন•স্থাপিত করে।

বরকরা গুভাশাংপুরংসর ঐ দুধা সভাভ সক-লের সহিত পানকরণপূর্বক উপস্থিত মিষ্টায় বেন্
বন করত অবশিশ্ব মিষ্টায় জাদিপের সভায় প্রেরণ
করেন। অতঃপর কান্যকর্তা বিবাহের দিন স্থির
করিলেই সভা ভঙ্ক হয়।

বিবাহের পূর্বে পাত্র কন্যার সাক্ষাৎ হওয়। প্রসিদ্ধ রীতি, নহে; পরস্ত আফগানদিগের ন্যাত্ত অনেকে গোপনে কাবিজ্ঞার লাক্ষাৎ করিয়া থাকে; এবং কথন ২ বিবাহের পূর্বে কল্যা অস্তুঞ্-সন্ত্রা হইতে দুষ্টা হইয়াছে। निष्कु-(पर्ण गांज्रश्तिम् तां गांगाना नारः)
नारः; कनाक् जांत्र ग्रं विवारः प्रामाधिक कालरुरे जे जे रुप्त शांत्र रुप्त, अवः जर्काल यावर
श्राज्य विवारः विवारः प्राप्त यावर
श्राज्य विवारः विवारः विवारः यावरः यावरः
नाणिर ने माधान्मादा यर्णदानाणि श्राद्रम्मान्माद्व वर्णदानाणि श्राद्रम्मान्माद्व वर्णदानाणि श्राद्रम्मान्माद्व क्रिण्येन, मण्डत्मान्मार्थ्य त्रवाण्ये त्रवाण्ये जर्मान्माद्व जे श्राप्ते व्याप्ते व्याप्ते विवारः व्याप्ते विवारः विवा

বিবাহের দিবদে সিলিরা কোন বিশেষ যজ্ঞাদি করে না: সমস্ত দিবসাবধি রাত্রি দুই প্রহর পর্য্যন্ত কেবল অঙ্গরাগ স্বাভীষ্টানুরূপ সাধনে নিযুক্ত থাকে। বেশভূষা হইলে পর পাত্রের সূহহইতে দুই ব্যক্তি কন্যার নিকট গিয়া এক জন তৎপক্ষীয় কর্মকর্ত্তী (প্রতিনিধি) নিযুক্ত করিতে তাহাকে অনুরোধ করে। স্থাজাতি স্বভাবতঃ লজ্জাবতী; বিশেষতঃ উদ্বাহ-দিবনে অত্যস্ত লভ্জায় সক্ষুচিতা থাকে: সুতরাং প্রতিনিধি-নিয়োগের অনেক বিলম্ব হয়। অবশেষে তাহার পিতা কি ভাুতা কি অন্য কোন আত্মীয় তৎপদে নিযুক্ত হটলে পুরোক্ত দুই ব্যক্তি পাত্রের গৃহে নমাগত মোলা প্রভৃতি সভাস্থ সকলের সন্মুখে সাক্ষিতা দিয়া কহে, " कूँशां (कना) चम्करक প্रতिनिधि नियुक्क कड़ि-शास्त्र "। वहे अकारत अिंकिनिध नियुक्त इहेरल পর মোলা ঐ প্রতিনিধিকে তিনবার জিজ্ঞাসা করে-न; जूमि चमूक चमूरकत कन्छा, चमूरकत शोजी

আমুককে, অমুকের পুঞ্, অমুকের পৌঞ্র, মন্ককেদান করিতে স্থাক্ত আছ্"? ও সে স্থাক্ত ভালে পূর্বোক্ত বাক্যানুরপ বাক্যে পাত্রকে জিজানা করেন ও নে বিবাহ করিতে স্থাক্ত হইলেই বিবাহ নিম্ন হইল। তৎপরে কন্যা জীখন-স্থলপে (দেয়ন—মোহর) কত টাকা প্রাপ্ত হইবে, অলক্ষানাদিতে তাহার স্বত্ব হইবে কি না, ইত্যাদি বাক্যের চুক্তিপত্র লিখিত হয়, ও তদনন্তর মোলা উলাহের মাহাত্মসূচক * অনেক-বক্তৃতা-করণপূর্বক আন্থার্মান করত বিবাহ স্বন্পন্ন করেন। তৎপরে জীআচার-ব্যাপার; তদুল্লেখে অনেকে কৃত্ত্হলা হইতে পারেন, কিন্তু এই পত্রে তম্বণনের স্থানাভাব।

দিক্ষিদিগের শেষকার্য্য অন্ত্রেপ্ট ক্রিয়া, তাছা মোসল্মান্দিগের প্রচলিত-রীক্যনুসারেই সম্পন্ন হইয়া থাকে। অতথব তাহার বিস্তার-করণ বা-হল্য।

পূর্বেই উক্ত হইয়াছে, নিজিরা মোনল্যান,
অতএব তির্বিষ্টের ব্যাখ্যান করায় প্রায়েজন
নাই; পরস্ত ধর্মবিষয়ে তাহাদিগের এক আশ্চর্যা বিশ্বাস আছে, তাহার প্রবন্ধ কর করব্য।
তাহারা কহে, ইশ্রানগুহ-প্রাপ্ত ধার্মিক বাক্তি
জনগণের যে প্রকার উপকার করিতে পারে, তাহার গোরহইতেও সেই জাপ উপকার সন্তবে। এই
প্রযুক্ত বিদেশায় কোন ধার্মিক ব্যক্তি তাহাদিগের দেশে আগত হইলে, তাহাকে বধ করিয়া
সদেশে গোর দিয়া রাখিবার চেপ্তায় সাধ্যান্সারে জুটি করে না। মিমোহরি নামা এক ব্যক্তি
মুহতানি ককারকে এই অভিপ্রায়ে বধ করিবার
উদ্যোগে কয়েক জন সিন্ধি রজনীযোগে তাহার
অনুপস্থিতে তাহার শিষ্যকে বধ করিয়াছিল।

^{*} दितिशाधिक > चाट्य >२४ शृष्क देशात किथ्यिय उद्माय जाएक।

श्हेमत् यानि।

(बिडीय ६) ११ ११५ ११५ ल्रुडेस्टेंस्ट क्रमान्डा)

####### # র*জদিগের সহিত এই গুরুতর-স-🎅 ^G 🏽 জ্বাম-পরিশেষ-করণের কিয়ৎকাল 🚵 🖄 পরে হাইদর্ হররাজাপেক্ষা স্থার এক প্রবল শনর নহিত সম্থানে প্রবৃত্ত হন। মহারাষ্ট্রী-रहता बारवाहा ७ ७ अन्। नः यूक्तविभावम रमना-नीत अधीरन कार्नेपरवत रेमरनात विश्वन मध्याक अक मन रनग नहेशा जाहात तारका अरदम कहिल। कार्रेमन् शूर्वर श्रोष्ठ नगदानि विध्य ক্রিয়া ভাষাদিগের দুরীকরণে বছবিধ যতু পাই-तम, किन्न कि**ष्ट्रिके क्**ठकार्य। इहेरक शाहि-**्वन नाः पूर्णास्त महाता द्वीरश्रत। এ**एक २ च हिंदत সমূদ্ধ স্থাকিত দুর্গ ও নগর আক্রমণ-পূর্বক कालगानिस्थत कत-भट कतिरु वाभिन; अ বিজ্ঞানীপ্রিস্টাচরণ-প্রদেশব্দারা বকলের হৃৎ-याला अंतिराङ वाशिन। काम मूर्गाङ्ग देमन्। াং বিলার স্থিত **যোৱতর যুদ্দ করাতে মহা-**ব্যন্ত্রীয় কেন্যাথ্যক ভংগ্রাচফল-স্বরূপ ভাহা-জিলের নালিকা ও কণ্ডেম্ম করাইলেন, পরে পুণ এফল লেনপৈতিকে তাকিয়া জিজান। করি-ে ে শ্রুমার এই রপে শাস্তির যোগ্য, ইহা ভোষাৰ বোধ ২১১০৩ কি নাংশ? সে উত্তর কালে, এডাগ্ডে জ্যোর শত্ত হানি মাত্র, কিন্তু চেলের ৰুপ্র অপ্যশ**্** এই **স্**তুরের **মতি**-धार निष्ठ मणाताष्ट्राय निमामीत समाय धारतमा বলিল, ও লে দেৰাপৰিল প্ৰতি ২তেতেবালন না कि है। 'आहाटक मुख-माईटित शमन कतिएक चानू-মতি দিল। অভংশর মাধোরাও পাড়া প্রযুক্ত ুল্পে জনজ হওয়াতে এ। স্বক্ষামাকে সেনাপতি-পাদে বিশুক্ত করিয়া স্বয়ং অবস্ত হইলেন।

शहेरत् चीय ब्राजधानीत्य वहे चिचित्र तमा-পতির প্রবেশ অবরোধ করিবার নিমিত্ত কতি-পয় পাৰ্বত্য পথে আপন সেনা লইয়া দণ্ডায়-মান রহিলেন, কিন্তু কিছতেই তাঁছাকে বিমৃথ क्तिएक शाहिरलम मा। व्यवस्थिय तक्रमीरयारभ तिनामङ् बाक्रणार्षे प्रज्ञानार्थे याज। कविवाव **छेरम**ाभ कतिरनम। **७३ ममर**प्त **डाँहात अ**क জন रेजनगाधाक पूर्वुकि निष्ठः अकृषा रुक्त ध्नि করাতে তদাকণ্ন মাত্র শত্রা ভাহার দৈনে/র পলায়ন-ব্যাপার অবগত হইয়া ভাছাদের উপর অক্রিমন করিল। ছাইদর্ প্রতিদিন নিশাযোগে य क्र भारक मुदा स्वन क्रिडिन, अहे ता-ত্রিতে ভয়ানক বিপদাপন্ন হইয়াও তাহা গুহণ করিতে এটি করেন নাই: অর্থাৎ তিনি সুরা-পানে বিলক্ষণ উমত হটয়াছিলেন, সূত্রা चयः रेनन/फिशंदक बक्का कितरक व्यवाहक इते অপর তিনি তৎকালে বিবেকশ্ন, (वन; হইয়া আগন পূঞ্র টিপুকে যৎপরোনান্তি ভিন্ন-স্কার ও তাহার পৃঠে অতিশয়-বল-পূর্বক বে-ত্রাঘাত করিলেন: তাছাতে টিপু রাগান্বিত ষ্ট্য়া শপথ জরিলেন, যে তিনি সে রাত্রি-তে শত্রবিকদে कमाशि चज्रधात्र कतिर्दन ना। हार्रेष्ट्रद्रद्र टेभरनाद्रा अहे कार्प समापिट বিধীন হইয়া শত্ত্ৰকত্ত অনায়ানে ইতত্তঃ তা-ড়িত তইল।

शदा यथन महाता हो दिवा जी हात मुवामि न्छेन कत्र वि वा उ हिन, महे मूर्याश हा हेम त् कर क्छ-शाभी क्राचालित चारताहन कतिया क्षितक लखरन ममागंड क्हेलन ! हिं लूड कर हिन्दू रकत राम धा-त्रव कतिया मञ्चलता मधा निया चलति हिडकरल ध्रिया कतिरान । क्षा क्रिया क्षित्र चालनारम त्र করতলে আনয়ন করিতে পারিলেই হাইদর্কে রাত্তা-চুতে করিতে পারিতেন, কিন্তু তিনি এই বৃহৎ
কার্য্যোপযোগী বৃদ্ধি-কৌশল সম্পন্ন ছিলেন না।
তিনি সম্মুথ যুদ্ধে তাচ্ছীলা করিয়া প্রায়ঃ মাসাবধি
অনর্থক কর্মে কালহরণ করিতে লাগিলেন; এই
অবকাশে হাইদর সৈন্য-সমূহ ও যুদ্ধের অন্যান্য
উপকরণ প্রস্তুত করিতে সচেপ্ত হইলেন। পরে
আপেনাকে পূর্ণ ক্ষম তীবান, দেখিয়া শত্তুদিগের
তাড়না করিতে লাগিলেন। এই প্রকারে প্রায়ঃ
সাদ্ধ্রৎসর গও হইলে হাইদর মহারাষ্ট্রায়দিগকে স্বীয়-রাজ্যের উত্তরাংশের অনেক ভাগ ও
নগদ ১৫ লক্ষ টাকা দিয়া পরে খারও ১৫ লক্ষ
মুদ্রা দিতে বীকৃত হইয়া তাহাদের সহিত নিধ্বি

अहे युषा हे॰ तारकता शूर्व-मसान्त्रादि हाहे-मत्रक किछूरे माहाय। करतन नाहै। कातन अरे যুদ্ধারম্ভ-কালে কোম্পানীর প্রধান কর্পকীয়েরা মান্দুাজন্ত্র সমাজের প্রতি একপ আজ্ঞা দিয়াছি-लেन, তাঁহার। কর্ণাটস্থ যুদ্ধবিগুছে কোন প্রকার मः भूत ना तात्थन, वित्मथ ७३ १। देनत् व। यन। কোন প্রদেশস্থ রাজার পক্ষে কিছুমাত্র সহা-युका ना करतन; मुक्ताः हारेमत् यथामादा महा-রাষ্ট্রীয়দিগের হস্তহ্টতে নিক্তি পাট্যা আপন প্রজাদিগকে বশাভুত করণে উদ্যুক্ত হইলেন। প্রথ-म जिनि मलतात-श्राप्तरम श्रादम कन्। जिमकातत षात्रयं के प्रकृतिक वाक्य करते । अहे स्रान সম্পূণ অর্ক্তি ছিল, সুতরাং তাহা অনায়াসেই তাঁহার হন্তগত ছইল। হাইদর্তথায় আপন बर्गे अविश्वासी क्षिया व्यापन स्थान निश्रुतवভाবের এক দৃষ্টাস্ত প্রদর্শন করিয়াছিলেন। जिनि ज्वजा श्रक्षांक्रित्र छेर मामनकरण्य जाहात्र निक्छे य क्रम् नत्रम्थ चानम्न क्तिरव ठाहारक

প্রত্যেক মুপ্তের ৫ টাকা পারিতোষিক দিবেন বলিয়া আপন দৈন্যদিগকে তাহাদের দক্ষা রাথে উৎসাহ প্রদান করেন, ও স্বয়ুও রাজাদনে উপবিষ্ট হইয়া ছিল্লমুও-সকল গুহুণপূর্ক যথা-নিয়মে তাহার নির্দিপ্ত পুরস্কার বিতরণ করি-তে লাগিলেন। এই প্রকারে বিতরণ করি-তে লাগিলেন। এই প্রকারে বিতরণ করি-প্রোননাশ করিলে পর তিনি এস্কাপ পরম সুন্দর মুখ্প্রীবিশিপ্ত দুই মস্তক দেখিলেন, যে তদ্দনে তাহার পাষাণ অপেক্ষাও কঠিনতর হাদয়ে অভ্তপূর্ব কাফ্যার্সের স্থার হইল। তথন তিনি নরহত্যাতে কান্ত হইতে অনুমতি করিলেন।

কুর্গের পর হাইদর্ কালিক্ট অধিকৃত করেন।
তৎপরে তিনি মহারাপ্লাইদিগতে আপন রাভেরে যে থণ্ড দিয়াছিলেন, তাহার পুনরুদ্ধারার্থে
নচেপ্ত হন। তদভিপ্রায় স্মিদ্র করণার্থে তাঁহার অনেক সুর্বাথা হইয়াছিল। ১৮২৯ সংবৎসরে মাধোরাওর মৃত্যু হয়, ও রঘুনাথরাও
(যিনি রাঘোরা বলিয়া খ্যাত ছিলেন,) মহারাপ্লীয়দিগের প্রেমি-নেলানা-পদে আকাদ হযেন। কিল মহারাপ্লীয়ের এক মত হইয়া তাঁহাকে ঐ পদে বরণ করিতে সম্মত হইল না।
ইহাতে রাজ্যমধ্যে ঘোরতর বিবাদ বিসম্বাদ
উপস্থিত হয়। ঐ সুযোগে হাইদর আপন
পূর্বাধিকারের অধিকাংশ প্রায়ঃ অবাধে গুতুণ
করিলেন।

মহারাষ্ট্রীয়দিগের হস্তহতে আপন রাজ্য উজার-করনারতার হাইদর গুতি নামক এক প্রধান
দুর্গ অবিলম্বে আক্রমণ করেন। এই দুগ মুরারারাও।
নামা এক জন অতাব পরাক্রান্ত মহারাষ্ট্রীয় দস্ত্রকত্ক রক্ষিত ও কতিপয় গিরিমধ্য-স্থিত হওয়াতে
দুর্ভেদ্য ও দুর্পম্প্রায়ঃ ছিল। দুগস্থ সৈনের

হাইদরের সহিত ব্যাপককাল যুজ করিয়া অব- তুণবৎ অগ্রাহ্য করিলেন। তিনি বিবেচনা করি-শেষে বহু সন্তথ্যক-মূদ্র-প্রদানে জ্ঞাকার করিয়া निक्क প्रार्थना कतिन। हाहेम्त् डाहाट नम्ब হইয়া ঐ প্রতিজ্ঞানানের প্রতিভূমবাণ এক कर युवा शृङ्घक सीय भिरित्त बहेश शिलन। ঐ যুগালে ডিনি যথেষ্ট অভ্যথনাদিদ্বারা পরি-जुङ कडिए। उत्हात निक्रे निक्व प्रार्थनात निग्र ভাংপয়া কোশল-পূৰ্বক **জিজ্ঞান।** ক**রিলেন। নে** ভাছাৰ কপটতা না বুঝিতে পারিয়া নর্লভাবে শুক্ত করিল, যে দুগে ত্রিদিবসোপযোগি মাত্র भागेत केम कि नक्षय चाहि, **ब**े हिन्हें म्-शास्त्रक जिंक् कतिकात **मानम करतन। इ**डिनत् এই সন্ধান পাইবামাত্র শবিলপ্তেই একটা ছল করিথ। পদরায় যু**দ্ধারন্ত করিলেন।** ভাহাতে মুরারিরাও অগতা সম্পূর্**রণে পরা**ভূত হ্ইয়া ত হোর পদানত হইল।

ই াজের। ভাহাদের পূর্-প্রতিজ্ঞানুসারে তাহাদের এই প্রস্তাবে অভ্যস্ত ক্ষ হইয়া তাহা কোন বিপদই আলকা করে নাই, প্রক্যুত

लिन, य यथन है बाकि मिराब माहाया जाहांब অত্যন্ত প্রার্থনীয় ছিল. তথন তাহারা প্রতিশ্রুত থাকিয়াও তৎপ্রদানে সম্পূর্ণ কার্পান্য করিয়াছে; এখন তাহাদের বহায়ত৷ নিতান্ত নিপুয়োজন জানিয়াই তাহারা মৃক্ত-হত্তে তাহা দিতে বাগু হইয়াছে। অপর এই নময়ে ইংরাজ ও করা-नीम फिरगत मर्थ। विलाट जञ्जाम छेल डिठ इंड-য়াতে করাদাদেরা ভারতবধে ইংরাজদিগের ক্ষতি-क्रबर्गाण्यास शहेम्द्रब मिह्र यात (एड-मित मानम कतिल; ७ शाहेमत् उ०काशर जा-হাদের স্থিত ইংরাজদিণের বিক্সের এক সন্ধি-পত্র স্থির করিলেন।

ইংরাজের ভারতবর্ষে ফ্রাসীস্থিতের অধি-কৃত সমুদয় স্থান ধৃংদ করিতে ডির-প্রতিচ্ছ হুইল। প্রথমে তাহার। পশ্তিচরি হুত্তগত করে। হাইনর তাহাতে কিছু আপত্তি করিলেন না, হাইদর যথন মহারাষ্ট্রায়দিগের কর্ত্তে আক্রান্ত বরং মৌথিক আছ্রাদ প্রকাশ করিলেন। কিন্তু क्षराम, ज्यम छोकारक गरेमराग उक्का करतर उदशरतके यथम के तास्कता मलातस्य महीपूर्व माहै: कार्यन शहेदत निर्दिष्ठमा कहिरलम, य काल्मार्भत छेद्र्यांग कतिल, उथन जिनि वे িরাজনিগের দলিত বন্ধুতা ভদু নহে। প্রত্যুত_় ভান নিজ-রাজ্যের অন্তর্গত বলিয়া ভাহাদিগকে তিনি আপান সোলাগ্রেপ-উদ্যানে তাহাদিগ- ্তৎপ্রতি হস্তনিকেপ করিতে নিষেধ করিলেন; া বিষম্য কণ্টকবৃক্ষন্ত্রমূপ ভাষে করিয়া তাহা- কিন্তু ইংরাজেরা ঐ দুর্গ করাগীদদিণের প্রতি-দিগের সন্লোভগাটনে এক্গুড়িক ছইলেন। গ্রাপিত জানিয়া তাঁছার বাক্যের প্রতি কর্ণপাত মহাগাছুলগেরাও এই সময়ে কাইদরের সহিত করিল না, ও অবিলয়ে তাহার বিনাশার্থে শঞ্ত-পরিষ্যার সভিত সৌহাদ্দ-শৃত্ত- এক দল সৈন্য প্রেরণ করিল। **হাইদর্ তাহার** থালে বদ হইল: ও ইংরাজ্দিগের বিপাকে রক্ষার্থে সাধ্যমত চেষ্টা পাইয়াছিলেন, কিন্তু গ্রুদ্রের স্থিত এক ষ্ট্রন্ত করিল। এদিকে কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই। কথিত আছে, माल्यक्ष वाज्यक्रायवा वाव्यवत निव्य नेष्टा नेष्टात । य देश्वारक्षत अ मूर्ग नवनाविध जीवारित्र করন প্রির করণাথে ভীহার সভিত পূর্যবৎ সন্ধিন প্রতি হাইদরের অন্তঃকরণ অভ্য**ন্ত আভাবেশাধ** তাপন জন্য এক দূত প্রেরণ করিলেন। হাইদর ইইয়াছিল, কিন্তু ইংরাজেরা ভূমজানে তাঁহাছইতে

তাঁহার সহিত সন্ধি করণার্থে এক দুত প্রেরণ कतिशाष्ट्रितः हारेपत् के पूट्यत यथष्टे नमापत করিয়া তাহার হস্তে এক খানি পত্র সমর্পণ পূর্বক বিদায় করিলেন। ঐ পত্রে ইংরাজেরা তাঁহার যে সকল অনিষ্টের প্রতি কারণ হইয়া-ছিল, তাহার আনুপূর্বিক লিখিয়া অবশেষে তিনি এইৰূপ ভয় প্ৰদৰ্শন করেন যে "এখনও আমি ইহার প্রতিকার করি নাই, ভবিষ/তে যাহা হয়"। ইংরাজেরা ইহাতে गলির আশা পরিভাগে না করিয়া পুনরায় জনৈক নাছেব-কে তাহার সমাধা-নিমিত্ত ছাইদরের নিকট প্রেরণ করে; কিন্তু ছাইদর্ ইংরাজদিগের শঠ-তা-সার্ণ-পূর্বক ক্রোধসহ্য করিতে না পারিয়া উপস্থিত ব্যক্তিকে এই বলিয়া বিদায় করি-लन, य "जात मित्रा कि कन? **শংবৎসরের যে দল্ধিপত্র স্থিরীকৃত হয়, ইংরা-**জেরা তাহার প্রত্যেক নিয়ম ভঙ্গ করিয়াছেন; তাঁছাদিগের প্রতিজ্ঞানুসারে আমার বিপক্ষ মহা-রাষ্ট্রায়দিগকে দমন করা তাঁহাদিগের উচিত हिन; जाहा ना कतार्ज्य वामि नर्वचाछ हरे-য়াছিলাম, ইছার পর তাঁহাদের আর অন্যার্য্যে-লেথ করা অপ্রয়োজনীয়"।

मित्र कप्पमा अहे प्रकारत गार्थ इहेटन हाहे-मत् हे श्वाक्षिमित्रत महिक मञ्जामार्थ अक विश्व रेमन। প্रस्तु क्रिंडिंग मागिरलम्। हाहेम्बावारम्ब निकाम महत्रम् आणि अञ्चिषय है दाक्रिनिगटक জ্ঞাপন করিয়া উপস্থিত গুৰুতর বিপদের ঝটিতি পরিত্রাণের উপায়-করণে তাহাদিগকে উত্তেজিত করিয়াছিলেন, কিন্তু ইংরাজদিগের উপায়াভাব ও রাজপুরুষদিগের পরস্পার মনাস্তর থাকা-প্রযুক্ত কোন সদুপায়ের চেষ্টা হইল না। অপর

দিগকে বারম্বার বিপথগামী করিয়াছে, তত্ত্বব তাঁহার অমূলক কথা শুনিয়া হাইদরের দভিত श्नदात्र विद्वाध कता कर्डवा नरहा अमिरक हाहेम्ड এক দল অন্এন-নবতি-সহসু-সঙ্থাক সংহসিক रेनना, उपितिक চाরि-শত-ইউরোপীয়-পদা-তিক সমভিব্যাহারে এরঙ্গণত্তনহুইতে চাজামা নামক স্থান-দিয়া কর্ণাট-দেশে উপনাত হইলেন, ও আপন নিদ্ধক্ণ-বিক্রম-প্রকাশ-পুরঃসর তথাকার প্রজাদিগের সর্বনাশ করিতে লাগিলেন। ইংরা-জেরা তখনও নিৰুদ্ধেগে বসিয়া ছিল; কিন্তু যথন शहेम्दात रेगना कर्क य जकन गृह-मक्ष इहेरठ-ছিল, তাছার ধূম ও অফিশিখা মান্দাজ-নগরের চতুদিলৈ • দেদীপামান ইইল, তথন দিব্য-চক্ষারা আপনাদের সম্পূর্ণ বিপদ্ অবলোকন করিয়া সশব্যত্তে তৎ প্রতীকারের উপায়-চি-खरन नियुक्त रहेन। প্रथरम ठाहाता मूश-मकन আপনাদের অধীনে আনিবার নিমিত্ত চেষ্টা পা-हेल, किन्न पूरेण। पूर्ण नाजित्त्रक ज्यलब मक-ल**रे শ**बू **मगा**कान्ठ हरेशाहिल। **ইংরাজদিগের সেনানায়ক সরু ফেক্টর মনরো** मार्ट्रित अधीरन बाह्य मन, ड कर्नन् ट्रिनत व्यथीरन व्यश्व अक मल. এই मुट्टे मरन गर्वश्रक ৫२ ॰ योका हिल। जे উভয়ের সংযোগ इहेत हे॰ ताक्षिरितंत शक्क मञ्जल इहेर्ड शांतिक, किञ्च হেক্টর সাহেব অবিবেচনা-পূর্বক বেলি-সেনা-পতির সহিত সদৈনে। মিলিত না হইয়া তাঁছার माहायगार्थ >,००० याचामाळ ८९: वन कतिरलन ! অত্প দৈন্য লইয়া বেলি-নাহেব হাইদরের সহিত युष्फ প्रान्थन-(एष्ट) कतित्व शताज्ञ रहेत्वक ইহাতে বিচিত্র কি? হাইদর্ ভাঁহার দৈনে র অধিকাংশ বিনষ্ট করেন, ও অবশিষ্ট ২০০ ইউরো-তাহারা মনে করিল যে মহত্মদ আলি তাহা- পায় ও অপর কতক্ণুলি দেশায় পদাতিককে

वस्त कतिया शिवदालावान वहेया यान। उथाय वे यूष्त हाहेनत् मन्नूर्वस्त नामूण हायन, তিনি ঐ বন্দীদিগকে যুহকিঞ্চিৎ কদল আছার, ও সেস্থান ত্যাগ করত স্থানান্তরে গমন করেন। প্ৰিত হইয়াছিল।

न्गं आक्रमन कतिलन। हेडिमस्य कलिका-ভাত গ্ৰণ্ড হৈছি সু সাঙ্গেৰ মান্দুজের উক্ত म्भण्यात गःचीम श्राष्ठ ≠ेशा डाहात•नित्रोकत्वन-নিমিত্ত অরায় আইর্কুট্নানা এক জন বিখ্যাত সেনাপতিকে তথায় প্রেরণ করিলেন, ও যুদ্ধাথে कर्माला जेन्द्यातं कतिएक लागिएनमः।

कृषे नास्त्र मानुद्रिक कानिया युष्कत किष्ट्रे मुर्वाची (पिचित्वन मा। छांश्रद अवीत्म १,००० मांज যোদা ছিল, ভয়াবে সম্ভদশ-শতের অধিক হউরোপীয় প্রাতিক ছিল না। অবিকন্ত হাই-দর্ মান্দুজের নিকটত প্রদেশসকল মকভুমি-প্রায়ং করিয়া রাথিয়াছিলেন; তথায় কিছুমাত্র শ্বা-প্রাণ্ডির সন্তারলা ছিল শা; ইহাতে ভংরাজ-্ৰনাপতিকে বৈন্যদিগের আহারায়-সামগ্রী-প্রা-করিতে হইরাছিল; সূতরাং পদে ২ দুর্ভিক্ষের राष्ठीतिक इहिल ; किन्नु नार्शिक कृषे भारत्य अहै । इहेशा व्यक्तिताय भरेनात्म इन्ड हरेर्सिन। ন্দ্র ক্রেশ নহা করিয়াও শ্রুদ্**নন্-করণে আ**-क्ट्रेटक इहार उहास्त्रि उहाम अ शहरमकिन नामक

অপকৃষ্ট বাস ও অন্যান্য শারীরিক কুেশ প্রদান । যুদ্ধের পর ইংরাজ-দেশাপতি ওয়াস্তিওয়াস্ করিয়াছিলেন: ও তদ্যাতনায় ভাহার৷ অনেকেই ও বোলার নামক দুর্গ শত্তুদিগের হস্তহইতে নাঃঘাতিক-রোগে আক্রান্ত ও সেই রোগের কিছু-। উদ্ধৃত করেন। এই সকল লাভ সৌভাগের চিহু माञ्ज िकिन्या ना इवद्यार विकास मृजू भूरथ वरहे, किन्न करत का करत का करत की नन कारन পতিত হইয়া ই॰রাজদের বিস্তর ক্ষতি হইয়াছিল। অভঃপর হাইদর্ ইংরাজদিগকে পরাজয় করি- করেল্ বেুখ্ওয়েট্ সাহেব ২.০০০ যোদ্ধা লইয়া য়া অনায়াদেই আরকট্ দুর্গ অধিকৃত করত টান্জোর-প্রদেশে আধিপত্য স্থাপন করিতে প্রে-কণ্টস্থ অন্যান্য কতকগুলিন্ শতি প্রধান ২ রিত হট্গাছিলেন। ঐ প্রদেশে ছাইদরের শ্বধি-कांन्स देनना वर्डमान-थाका ध्रयुक्त कर्वन् नादह-বের তথায় অবস্থিতি করা অকর্ব্য ছিল ; কিন্তু তিনি মান্দুাজস্থ লাহেবদিগের অনুমতি বাতি-রেকে তাহা পরিত্যাগ করিতে অশক্ত হইলেন। হাইদ? ঐ অবকাশে আপন বেতনভুক্ কতকগুলিন लाकरक मान्नुाकरुहेरठ चात्रक पृत्रवर नाकाहेश ইংরাজ-দেনাপতিকে মিথ্য-সংবাদদারা অভয় প্রদান করিতে লাগিলেন। ইহাতে কর্ণেল্ নাহেব जाननारक निवानम जानिया बच्हरम वनिया तहि-লেন। ইত্যবদরে হাইদরের দৈন্য তাঁহার ঢতুঃ-शास्य पारानरलत् नगात्र (दक्षेन कतिरंड लाभिन। তথাকার এক জন প্রজাকর্ক সাহেব আপনার प्रम्भून विश्वपद्ध विषय छा । इहेशा इहेपटा চরদ্বারা একাপ বিভাত ছিলেন, যে সেই সংবাদ গিঃ নিমিত্ত কেবল মান্দুাজের উপর নির্ভর অমূলক জ্ঞান করিলেন। অবশেষে তিনি আপন रंगगारभका मन्धन वृह्द रेमनाकुक्क चाकाञ्च

राहेम्त् এই यूट्स कर लाख कतिया जालम প্রন প্রাণপণ-চেতা নিয়োগ করিলেন, ও শত্ত্ব- বিশেষ সেভোগ্য-বোধে হাইচিত্ত না হইয়া ভাবি বিপদের আশক্ষায় উ**দ্বিশ হন। তিনি** দুই দুর্গের পরিত্রাণ করিলেন। পরে কড়েনুর-না- দেখিলেন, যে ছেষ্টিংস্ সাহেবের বড়যন্ত্রারা নক স্থানে তাইদরের সহিত তাঁহার এক যুদ্ধ হয়। মহারাষ্ট্রায়ের। তাঁহার পক্ষ পরিত্যাগ-পূর্বক ইং- রাজনিগের সহায় হইবেক, ইহা প্রতিশ্রুত হইয়াছে। অপর কল্লবার-অঞ্চলে ইংরাজকর্তৃক তাঁহার
এক দল সৈন্দের প্রতিঘাত হওয়াতে তিনি নিতাস্ত ভথাশ হইয়া কর্ণাট-পরিত্যাগ-করণোমুথ
হইয়াছিলেন। এমত সময়ে তিনি এক সহসু
করাসীস যোজার সাহায়্য প্রাপ্ত হইয়া তিনি
যয়ে কান্ত হইলেন। করাসাসের। প্রথমে কড়েলুর
দুর্গ আক্রমন করে। ঐ স্থান সম্যক্ রক্ষিত না
হওয়াতে তাহা অপ্পায়াসেই তাহাদের করতলন্ত
হইল। তওপরে ওয়ান্তিওয়াস্-নামক প্রথান
দুর্গে তাহাদের হস্তক্ষেপ হইবামাত্র কূট্ সাহেব
তাহাদের সহিত সমুথ-সন্থামে প্রস্তুত হইলেন, ও
ভাহাদের পশ্চাৎ ২ ধাবমান হইয়া আর্ণি-নামক
স্থানে তাহাদিগকে সম্পূর্ণক্রপে পরাভূত করেন।

३७६ शूर्वाविध हाहेम्दात स्वश्वाद्य मिन १ वृक्ष इट्टिह्नि। अक्ष्य ताखिरिका हेक-नामक समाधा व्याधिक उ्क शीष्ट्रिक हहेश किन ১৯৪५ मण्य-मदा क्रमान स्वीधि दर्ग दश्व हहेश मान्यतीला मध्यक क्रमा

হাইদরের জন্মাবিধি চরম পর্যন্ত অবস্থা বিবেচনা করিয়া দেখিলে চমৎকৃত হইতে হয়
তিনি কি নাচ-অবস্থাহইতে, যথা-কথপ্পিৎ লেথন-পঠন-জান-বিজ্জতি হইয়াও কি বিস্তার্ণ রাভারে অধীশ্বর হইয়াছিলেন। অপর ঐ বিপুল
রাজ্য অধিশ্বর হইয়াছিলেন। অপর ঐ বিপুল
রাজ্য অধিশ্বর ও শাসন করণে তিনি কি অসামান্য-বৃদ্ধিনিপুণসা ও কৌশল প্রদর্শন করেন। গে
নমর-নৈপুণে ও রাজ্য লাসনে, বোধ হয়, তাঁহার তুল্য বিচক্ষণ মনুষ্য তৎকালে কেন্ট্
দক্ষিণ-দেশে ছিল না। প্রতারণা—কপটতা—বিখাস্যাতকতা—বিজ্ঞাতীয় নিস্কুরতা—প্রভৃতি কুল্রিথার তিনি বিরক্ত ছিলেন না বটে, কিন্তু তাঁহার আচরণ বিচার-করণ-সময়ে ইহা ক্ষরণ রাখা
তাঁ

কর্ত্ত অসম্ভব ঐশ্বর্য ও একাধিপত্য প্রায় হইতে অসম্ভব ঐশ্বর্য ও একাধিপত্য প্রায় হইলে—বিশেষতঃ তদবস্থায় অমূল্য বিদ্যাজ্ঞান-বিশিষতঃ তদবস্থায় অমূল্য বিদ্যাজ্ঞান-বিশিষতঃ তদবস্থায় অমূল্য বিদ্যাজ্ঞান-বিশিষতঃ তদবস্থায় করিয়া রাখিবেক, ইহাতে আশ্বর্যা কি? তাঁহার তুল্য অবস্থা প্রাথ হইয়া অনেক সদ্বিদ্যান ব্যক্তিও বিষয়-মদে মুথা হইয়া অনেক সদ্বিদ্যান ব্যক্তিও বিষয়-মদে মুথা হইয়া তাঁহাহইতে অধিক দুক্ষিয়ায় মথা হইয়াছে। অতএব বিদ্যা-বিহান হাইদরের পক্ষে দুইাচার হওয়া অসম্ভব নহে, তিনি যে চৌকিদারের গৃহে জন্ম লইয়া পরে চৌকিদারি কর্মের ম্থাকৃথিঞিৎ শিক্ষা প্রাথ হওত বৃহদ্যুক্য উপার্জ্ঞান ও সুকাক্ষরপে তচ্ছাসন করিয়াছিলেন ইহাই পরমাশ্বর্য।

प्त न। ठाः পार्थु जिल्लाचा हो।

বিজয়নগরের ইতিহাস:

রে করের নেকেঞ্জ নাম। এক জন
হিন্তাল অতি প্রদিদ্ধ হইয়াছিলেন:
তিরুত্ত তিনি ক্রমাগত ৩০ বৎসর তথ্যমি
নির্ক্ত থাকিয়া বিপুল-বায়সহকারে হিন্দুদিগের ধর্ম ইতিহাস ও সাহিত্যাদি বিষয়ক অনেক পুত্তক ও দেবদেবীর মুর্ত্তি—তথা স্টোলিকা
দেবভবন প্রভৃতি অনেক প্রাচীন পদার্থের চিত্র
সঙ্গুহ করিয়াছিলেন। অপর তাহার অনুজ্ঞান্ন
ও পরিশুমে অনুগন ৫০ থানি ব্যুদাকার সংস্কৃত ও
পারবি পুত্তক ইংরাজিতে অনুবাদিত হইয়াছিল।
তাহার সহযোগি কাবেলি বেণ্টক বোরিয়া নাম।



ক্ষেত্র সাহেত্রের পশ্চিত। কাবেলি বেণ্টক বোল্লিরা। কর্মেণ্

এক জন ব্ৰাহ্মণ সপ্তশতী চণ্ডী ইংরাজিতে অন্-তামুশাসন প্রভৃতি অনেক বীজক পাঠ করিয়া वाकापिरगत পূर्वकालीन वः भावली निकाशन क-রেন। ঐ প্রদিদ্ধ পুরাবৃত্তানুসন্ধায়িদিগের প্রতি-ৰূপ পূৰ্বপৃষ্টে মৃদুত হইল; বোধ করি তাহা भाक्रकिपात प्रभागीयं **रहेर्दैक।**

রের বর্ণন করিয়াছেন, তক্মধ্যে তৃষ্ণভদ্যু-নদীর ন্দ্রিজ্নটিভূত একটি প্রতাবশিষ্ট-নগরের উল্লেখ হইত। তত্ত্ত রাজার ৯০০[©]হস্তী, ২০,০০০ অস্থারোন পশ্চিমদিকে নগরের প্রধান-মন্দির-সকল স্থা- বিজয়নগরাধিপত্রির অধিকার-ভুক্ত ছিল। পিত ছিল। তন্মধ্যে একটি মন্দিরে বিতলদেব থোদিত বিংশতি-হস্ত-উচ্চ স্তম্ভোপরি স্থাপিত। ঐ স্তম্ভ সকলের প্রভ্যেকটি অথপ্ত প্রস্তর। ্রম্পপতি-দিয়া তাহাতে প্রবেশ করিতে হয়। ইংরাজ রাজ-शूक्टयता (मार्चे मन्दित्र कीट्यां कात कतिया था-কেন। বীরভদু ও গণেশের নামে প্রতিষ্ঠিত অধার দুইটি বিখ্যাত দেৰায়তন প্ৰস্তাবিত নগৱে বৰ্তমান আছে; ভশ্মধ্যে শেষোক্তের নিকটে ২০ হস্ত উচ্চ अक नद्गनिंह मूर्डि मृष्टे रहा। द्राष्ट्रांत चिका, হস্তিশালা, এবং তুক্কভদ্যা-নদীর উপর একটি সেতুর ভधावस्थित अन्। शि वर्डमाम आरह

১৪৩৮ শকে বর্ষেশ-নামক এক জন ইউরো वाषिक करतन; जानत अक इन वाकान आठीन शीय भूद्यकात विक्यनगढ़क मृविखीन, वर्षका-कीर्व, এবং धनशान।-शूर्व विनया वर्वना कविया গিয়াছেন। ভংকালে ভথায় দেশজাত হীরক, ভারত-নম্দের মৃক্তা, পেণ্ডর পদারাগমণি, চান s मिकन्मद्राचारण्य शांखे s किम्थाव ; मिर्गाक স্থানের বনাৎ, নানা দেখোর পার্চ, ক্রিফেন, উক্ত মেকেঞ্জি সাহেব অনেক প্রাচীন-নগ- চন্দন, মুসরর, এবং কপ্র; মলয়বারের মৃগদাভি ও মরিচ ইত্যাদি বিবিধ দুবা উক্তনগরে বিক্রীত আছে; পূর্বকালে তাহা বিজয়নগর-নামে বি- হী, এবং বহুসঙ্থাক পদাতি ছিন। রাজ। খ্যাত ছিল। ঐ নগরের উত্তর্দিগে অনতদ্দ এবং অমাতেরী প্রস্তর্ময় সুর্ম্য নিকেতনে বাদ বা হস্তিহরী নামক উপনগর এই ক্ষণে নগর করিতেন: ফিস্তু অপর লোক মৃত্তিকা-নির্মিত বলিয়া থ্যাত আছে। প্রকৃত বিজয়নগরের ভ্রমাব-্ সামান্য গৃহে নিবস্তি করিত "। বর্ধের লিপ্য-শেষ বন জন্পলে পরিপূর্ণ; অধুনা তাহা কেবল নুসারে বোধ হয় তুলুদ, কানারা, চোরমপ্তল, বানরের আবাদ হট্য়াছে। নদীভারবর্ত্তি বর্জের তৈলন্ত, দুর্গিড় ইত্যাদি দেশ কোন সময়ে

विজয়নগরের ভাপন-বিষয়ে দাক্ষিণাত/দিগের নামে প্রতিষ্ঠিত বিজ্যু-মূর্তিবিশেষ আছে। ঐ মধ্যে নানাবিধ কিংবদন্তী প্রচলিত আছে। মন্দিরের ছাদ প্রস্তর নির্মিত, এবং উত্তমকপে: কোন জনজত্যনুসারে নাধব্বিদ্যার্ণ্য-নামক अक राकि देग्वानुकम्लाय धनला छ्लू**र्वक विम्रा**-নগর-নামা এক নগর স্থাপন করিয়া রাজত্ব করি-বিৰূপাক্ষ-নামে একটি মনোহর মন্দির আছে, এক : য়াছিলেন ; সেই নগরের নাম পরিবর্ত্ত হইয়া স্দীর্ঘ, সুপ্রশন্ত, স্তম্পুনিদ্বারা সুশোভিত বর্ম- বিজয়নগর হইয়াছে। অপর প্রবাদ্ধারা জ্ঞাত হওয়া ুবায় যে মাধ্বাচার্য স্বয়ণ রাজত্ব না করিয়া বুক্ত নামক-ব্যক্তিকে রাজপদে স্থাপন ক্রিয়াছিলেন। সে যাহা হউক, এই সকল কিংব-मखीबाद्रा व्याय इस व्याविकातत्वाद्र माहात्वा বুরুও ছরিছর নামা ব্যক্তিদ্বয় বিজয়নগর স্থা-পিত করিয়াছিলেন। .

> विकारतथ साधवांगाया जासांक्रिशत नाटन বিশেষ প্রনিদ্ধ আছেন; তিনি স্থৃতি—ব্যাকরণ—

আছেন। ক্ষিত আছে যে মাধ্বাচাৰ্য্য বঙ্গম- কোন বিভিন্নতা নাই"। রাজাল মজী ছিলেন, ও সত্তমরাজার অধিকার । ভিলঃ সম্মের পুঞ বুরু ও হরিংরের রা-জন্ত সময়েও মাধবাচার্য্য অভিহিত পদে বৃত कित्नन।

নাতিশয়মাত্র বোধ হয়; সম্ভবতঃ তিনি ফল্যাণ বা বেলাল রাজাদির অধীনত এক জন যুদ্ধপ্রিয় ভাগ স্থাবিকারত করিমাজিলেন। তিনি বীর-ভুরামী ছিলেন: তাঁথাদের পাতনের পার সঞ্ম কিন্তা তাঁহার পুঞ্জের। ক্ষমতাদম্পন্ন চইয়া বিজয় শশংর পূত্রপাত ক্রিয়া থাকিবেন। জনশ্রতালু থাবে বোৰ হয় ১২৫৮ শকে এই নগর সংস্থাপিত कहर, छिल। उपकारनत किश्वित शुर्व गुनन्गान्-क एक मधीमूब-अध्यक्षीय (वद्यान-डाब्लाप्टर ताक-ধানা কাক্রান্ত হয়, এবং অন্ধরান্ত্য বিনষ্ট হয়; মত্রৰ তংকালে বিজয়নগরের উন্নতি বিলক্ষণ ४६% इहेशा**हिल हेहा (नाथ इहे८४८ह**।

शायार अपनित्र हाकानुमामन शाख वृक्त-हार्डाट '३ दिङ्गर्मभद्धद श्रम-ना चाह्न। वृक्त মন্ত্রী বিদ্যারণ্য শৈবাচারবিশিষ্ট, এবং ইকাগুপু শ্যালে।কে কালের গ্রামে পতিত হইয়াছিলেন।

ও অধ্যাত্মশান্ত বিষয়ে অনেক গুতু রচিত পুরোলেখিত শাসনপত্রে দৃষ্ট হইয়াছে যে তিনি করেন। ভালার পার নাম সায়নাচার।। এই একবার এই বলিয়া জৈন ও বৈফবদের বিরোধে নামে তিনি বেদের ভাষ্যকভা বলিয়া বিখ্যাত মধ্যস্ততা করেন, যে "এই দুই প্রকার ধর্মের

বুক্ত-রাজের পর কড়িগয় শুপ্রদিদ্ধ রাজা বি-मिलिन निर्माण्य ଓ भूई-ममुम्-भर्मान्त পরিব্যাপ জয়নগরে রাজ্য করেন। তদনন্তর তৈলম্বরাজ नत्रिंग्ट् नामक उँ९ैकल मिनीय डाङ्गाकर्क বিজয়নগরের রাজসিংছাসন অধিকৃত হয়। নর-সিংক বিজয়নগরের সমাক্ প্রাকৃদ্ধি করিয়াছি-নক্ষ-রাজের বিস্তার্ণ-রাজ্যের কথা কবির বর্ণ- লেন। তিনি দক্ষিণ-দেশের মুসল্মান্-রাজাদের বিকানে অপ্রধারণ করিয়া দক্ষিণ-দেশের অনেক नविति । अ कृष्णान्य नामक मूर्वेष्टि शृष्य द्रा-থিয়া লোক।ন্তরিত হয়েন। কৃঞ্চেব স্বকায় जुल्हात अधीरन (म ७३१) नी कर्ण कतिराजन। दीत-नदिनि॰ एवं किन्छि भूखः; अष्टूक, ममानित, এव॰ जिमन। इंशापित रेमानवराश्चयुक क्छाप्यक क् রাজকার্য্য নির্বাহ হইত। বস্তুতঃ থীরনর**লি**•চ জীবিত থাকিতেই কৃষ্ণদেব রাজকার্য্যের ভার গুহণ করিয়।ছিলেন।

क्छ-রায়-চরিত্র-নামক গুস্থানুসারে কৃঞ্দেব এক বারবিলাসিনীর গর্ভে জন্মিয়াছিলেন। নর नि॰ एइत পाণिशृशिकी जिलका, बकीय পूज वीत-শানিষ্ট্রের চাতুদাল শাতাকের শেষ-ভাগে নর্দিংছের রাজ্য-প্রাপ্তির প্রতি ব্যাঘাত জন্মিবে, धार्वित इवेदाकित्वमा विनि এक উদ্যমশীল এই আশকা-নিবারণার্থ, কৃষ্ণদেবের প্রাণ হনন উৎলাজাধিত নৃপতি ছিলেন, এবং বহু-দূর পর্যন্ত করিতে স্থামিকে অনুরোধ করিয়াছিলেন; কিন্ত অংপনার ক্ষতা প্রচার করেন। যুদ্ধবিগুলাদিতে কৃষ্ণদেব প্রমাত্যদিগ দ্বারা রক্ষিত হয়েন। নর-সর্দ। তিনি অনুক্ল থাকিতেন। বিশেষতঃ সর্ব- । সি॰ছ আপেন-মৃত্যু নময়ে কৃষ্ণদেবের জীবিত-থা-প্রকার থকের প্রতি দেয়শূন্তা প্রযুক্ত তিনি কিবার বিষয় শুবণ করিয়া ভাঁছাকেই উত্তর্ধি-অনেক বিষয়ে লককাম হইয়াছিলেন। তাঁহার কারী নিযুক্ত করেন; ইহাতে বীরনরসিংহ নৈরা-

নামক এক জন সেনাপতি জৈনধর্মাবলম্বা ছিলেন। কৃষ্ণদেব বিজয়নগরাধীন রাজ্য সুদঢ্রপে

স্থাপিত করিয়াছিলেন। তিনি আদিল্শাহী রাজা- তিদবধি মুনল্মান্দিগের দৌরাজ্যে িজ্যন্থর দিগকে পরাজিত করিয়া কৃষ্ণানদীর দক্ষিণ-তীর-পয্যন্ত রাজ্য বিস্তৃত করেন; পূর্বদিগে কন্দবির ও বার†কুল প্রদেশ জয় করেন: এব॰ উত্তরে কটক-পর্য্যন্ত আসিয়া গজপতি-নৃপতির দুহিতার পাণি-গুছ্ণ করেন। দক্ষিণে 🖄 রঙ্গণত্তন ও কামেশ্র-নগর তাঁহার কর্মচারিদ্বারা শাসিত হইত। পো-र्जुजीम्-शुक्रकक्षीता **लात्थ "य गान्र**म्हेन्सीलाङ রাচোল নামক স্থানও তাঁহার অধান ছিল"। त्राथ क्केटउटक्, मलवात प्रत्मत तासा ७ जीकात প্রাধান্য স্থাকার করিয়াছিলেন। ফলতঃ কৃফরায়ের : অধীনে বিজয়নগর-রাজ্যের দীমা ও ক্ষমতা যাদৃশ উল্ল'ত হইয়াছিল তাদৃশ আরি কখনই হয় নাই।

কৃষ্ণরায় বিদ্যার উন্নতি-পক্ষেও যতুবান্ ছি-লেন। তাঁহার সভাত আট জন পণ্ডিত 'দিল্পজ্' নামে প্রনিদ্ধ; ভরাজে খনেকে তেলুগু-ভাষায় शुद्ध तक्रमा करतनः (कवल व्यक्ताः मीकिक-मामकः এक জন मः कुछ-भुष्ठक छ। ছिলেন।

প্রস্তাবিত রাজ। পরম বৈক্ষব ছিলেন। তিনি উদয়গিরি-দুর্গ জয়-করণপূর্বক তথাহইতে এক ় ক্ষ্পপ্রতিমূর্ত্তি আনয়ন করিয়া ক্ষ্ণপুরে স্থাপিত করেন; ও ভাছার ব্যয়াদি-নির্বাহ-নিমিত্ত সাত-খানি প্রাম প্রদান করিয়াছিলেন।

কৃষ্ণ রায়ের পুঞ ছিল না; এবং নিকটভম উভরাধিকারী অচু/ত অনুপক্তিত থাকাতে স্কায় জামাতা রামরায়কে তত্ত্বাবধারককপে নিযুক্ত করিয়া সদাশিবকে রাজত্ব-প্রদান করেন। পরস্তু অচ্যুত প্রত্যাবর্ত্ত্র-পূর্বক ৰকীয়-রাজ্য অধি-ক্ত করিয়াছিলেন; তাঁছার মৃত্যুর পর সদা-শিব রামরায়ের সাহাযে। রাজত্ব করিতেন।

मूजल्मान-ध्यादनिष आफ्रिल्माहि-द्राक्तापि-

उदमन इरेशाष्ट्र।

कार्वेविषाण।

🏸 🥍 ু ি তি হুছের। কতকগুলিন পশুলে 💆 🛂 📝 विषयी नात्म निथान करहन; का-ি_{০০০০} তরিণ তাহাদিগের মুখপুরোভাগের

প্রত্যেক মার্ভাতে দুইটি করিয়া ছেদন-দস্ত পাকে। ইন্রদিগের ঐ সুতীফুদন্ত প্রনিদ্ধ আছে; সজাক শশক ও কাঠ্বিড়ালেরাও ঐপ্রকার-দন্তবিশিট: এই প্রযুক্ত উল্লিখিত পশু-সকলকে এক বগান্ত-গত কহা যায়। এতডিল বিবর্থভৃতি অপর কতকগুলিন পশুরও দুই ছেদন দন্ত-থাতে: অত-এব তাহারাও এই দিদন্তি বর্গমধ্যে নির্নীত হয়।

এই পশুদিগের এক প্রধান লক্ষণ এই যে ইহা-**ता भाग्ठाका-शरष्रदश्राश**ति ऐसरन्यन कर्क श्रुतः-পদ-সহকারে অনায়ানে আহারাদি, করিতে এক রে। কাঠ্বিড়ালেরা এই অবস্থানলদে জরিতে অ-ত্যন্ত তৎপর, এবং আছার-করন মন্যে মর্দা তা-हा धारनकतिया थाटक। टक्टन भारामा अनेकाटल **উপবেশনে পটু नटः:** दाद इतः, जारतिशताब গাঁত্ত শলাকাদকল ঐ পপট্ডার ফারণ চক্ষেত্র

নমন্ত গিদন্তি-পণ্ডর বর্ণন এক গ্রেডাবের কভি স্থানি নহে, আইএব এই •খণ্ডে ক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰি-জালদিগের বিবরণ লেখা মাইতেছে। ঐ পায়-দিগের সরল গাত্র, চিত্রিভাঞ্চ, কোমল-কেশ, ও ক্রাড়াতৎপর চঞ্চল মভাবপ্রযুক্ত ইহারা অনে-কের প্রিয়। ইংলগুদেশে অনেক বিলানবভীরা এই পশুকে বিড়ালাদির ন্যায় প্রীতিপাত্র-জ্ঞানে প্রতিপালন করিয়া पारकन। দেশব্যবহার-বশী-भित्र मिक्ठ यूर्य द्वामद्वारम् मृजू। इहा; এवः । ভূতা এতদেশীয়া वनि ठाता द्वसनेभानीय विवृत्ता,



গ্রিয়ণও-পর্নান্তর স্বক্ষা-বিহ্না, ভত্তাপি ক্তক্তলিন কাঠ্বিড়াল পক্ষবিশিষ্ট এবং ভংসহ-^{এর বাহ} । বাহুলোকের প্রতি বিরক্তা **নহেন, এ**বং डेकाटन चाम्हरा, कि?

কাঠবিভালের অনেক মাজিভেদ আছে। কতক্- ভাল ভারতিবর্ষে দৃষ্ট হইয়া থাকে। পলি কাঠ্যিড়লে ছু**লিডে বাদ করিয়া শশকা-**ু ্রিকা পণ্ম্য ইত্যাদি প্রসিদ্ধ আছে। এতডিয়া কাঠ্বিড়াল দৃষ্ট হইয়াছে।

কারে উভ্ডান হইতে সক্ষম হয়। তাহারা "থেচর" भाष करेता वार्रिक हात्वा প्रक्रिणानिका क्वेद्रम सत्य भगा। बहै भगवाय श्राप्तः भकामक काकि নিনীত আছে; তন্মধ্যে ৩০৷৩৫ জাতি কাঠ্বি-

অবয়ব এবং বর্ণবিষয়েও কাঠ্বিড়ালের অনেক দিবং নটর ছোলা প্রভৃতি ভন্গেরিস্ত উদ্ভিদ- 'ভেদ আছে; রে**থাচতুষ্টয়বিশিষ্ট দামান্য কাঠ**-लम् (भारत कहार कीवन-इका करते; जाका- विज्ञान, वात्तरकत व्यालकास कृष्ट्रकास (अम्बोशुत्र, দিগকে ''ভূচর-কাঠবিড়াল'' শব্দে কহি। অপর আরাকান, দাজিলিং প্রভৃতি স্থানে তাহাহইতে ক্তকগুলিন সর্বাণ বৃক্ষোপরি কাল্যাপন করে, দশগুণ বৃহৎ,—প্রায়ঃ ঝুমরি কুকুরের তুল/—কায় তাহার। সূত্রা ক্রমতর; ও ভল্লিমিভই কাঠ্বিড়াল কাঠ্বিড়াল অনেক আছে। অপর কুদু কাঠ্-মাত্রের নাম সংক্ত গুত্তে বৃক্ষমকটিকা বৃক্ষশা- বিড়ালেরও অভাব নাই; নেঙ্টি ইন্দুরের তুলা প্রতাবিত-পশুদিগের বর্ণগত অনেক ভেদ আছে। কোন ২ পশু ক্ষেবর্ণ, কেছ বা শুকুবর্ণ, কেছ ধুমুবর্ণ, কেছ তামুবর্ণ, কেছ শুকু-কৃষ্ণ-রেখা-বিশিষ্ট, কেছ ভস্মশুকু, অথবা কৃষ্ণ ভস্ম ইত্যাদি বর্ণের রেখাবিশিষ্ট। পরস্তু সকল বর্ণই রম্য বটে।

বৃক্ষমকটিকাদিণের পুক্ছ অতি সুন্দর, এবং তাহার আকৃতিহইতে এই পশুদিগের নাম "চমরপুক্ত " হইয়াছে। থেচরপর্নমুগদিগের পুর-পদ
ও পাশ্চাভ্য-পদের মধ্যবর্ত্তি-স্থানে এক প্রকার
ক্রক হইয়া থাকে, তৎসাহাযে। তাহারা জনায়াদে উড্ভান হইতে পারে। ঐ অগুপরি কোন
পালেক নাই, এবং তাহার আকৃতিও পর্কার ভানার
তুল্য নহে। এই পক্ষবিশিষ্ঠ পর্নমুগেরা নিশাচর, অর্থাৎ দিবসে নিদ্তি থাকিয়া রক্ষনীযোগে
ভাপন ২ থাদ্য অন্থেষণ করে।

ষভাবতঃ এই পশুরা অত্যন্ত চঞ্চল, এবং
সর্বদা ধাবন উৎপুবন ও ক্রতিয়ায় তৎপর থাকে।
কিনারিরা কছে, যে কাঠ্বিড়াল এতাদৃশ সত্বরে
দৌড়িয়া থাকে, যে তাছার গমন-সময়ে তাছাকে বন্দুকদারাও মারা অসাধ্য,ফলতঃ নয়নও তাছার গতির অনুগামী হইতে পারে না। ছোয়াইট্
সাহেব লেখেন, যে বিড়ালীরা কাঠ্বিড়াল-শাবককে অত্যন্ত প্রিয়ক্তান করে, এবং প্রাপ্ত হইলে
স্যত্রে স্তন পান করাইয়া আপন-শাবকের ন্যায়
ভাহাদিগের পোষণ করে।

মোহমদের জীবন চরিত।

রাজি ৫৭০ অফে ১০ই নবেম্বর বা কাহারো মতে ৫৭১ সালের ২১ সে ক্তিক্রের এপ্রল্ দিবসে মোহমাদ মক্তানগরে জন্ম পরিগুদ্ধ করেন। ডিনি পিতার একমাত্র পুঞ্ ভাহার পিতার নাম আব্দুলা। বিখ্যাত হাসেম

বংশহইতে তাঁহার উৎপত্তি হয়। এই বংশ ক্রেন্
জাতিরই এক শাখা। এই জাতায়েরা আরব-জাতায়দের আদিপুরুষ ইন্সাইল হইতে আপনাদের
উৎপত্তি কহিয়া থাকে। অন্যান্য ঘনিপ্ত-জাতিদের উপরি ইহারাই কর্তৃত্ব-প্রকাশ করিয়াছিল।
বহু বাণিজ্যব্যাপার কুশল কুরেস জাতায়েরা
খনাচ্যতা ও সভ্যতাবিষয়েই যে কেবল বিখ্যাত
ছিল এমত নহে, কিন্তু তাহারা আরব-জাতির
সাধারণ প্রাচীন উপাসনা স্থান কাবার নিকট
বাস করত পুরুষানুক্রমে তথাকার তাবংকার্য্যের
সম্পাদক ও অভিভাবক হইয়াছিল। পৌরোহিত্য-সম্বলিত মে স্থলের আধিপত্য দার্ঘ-কালপর্যান্ত তাহাদের হস্তগত থাকাতেই তাহার। তথাকার একপ্রকার সর্বপ্রধান হইয়া উঠিল।

মুদল্মান্ গুস্তকারেরা ভুরি ২ আছুত ও অলৌ-কিক ঘটনাদারা মোহফদের জন্ম সুশোভিত ক-রিতে স্থতু আছেন। তাঁহারা কহিয়া থাকেন, উছার জন্মকালীন পারসাহিত গৃঢ়ানল সহসা নিৰ্বাণ হয়, এবং সৰ্বতোদেদীপামান এক তেজো-রাশি ছার। স্মুদায় আরবদেশ ব্যাও হয় "। সে যাহা হউক, আমর: এতাদৃশ লোকাতীত তদ্-গত গুণ্গাম তাঁহার উন্নত্তবং শিষ্ট্রম্পুদায়ের ক্ষীণ-বিশ্বাসসাগরে বিসভ্জন করিয়া চলিলাম। অতি শৈশবাৰস্বাতে মোহমদের পিত্যাত্ বি-য়োগ হয়। মোহমাদ দুই বৎসর বয়ঃক্রম হই-লে তাঁহার মাতা আমিনা লোকান্তর যাত্রা করেন। উক্ত কাবার প্রধান পুরোহিত নিজ বৃদ্ধ পিতামহ আবদুল মত্লিব্কত্ক জিলি তৎকালে প্রতিপালিত হইয়াছিলেন। আব্দু-লের মরণান্তে মোহম্মদ নিজ কনিষ্ঠ পিতৃবে/ব্ল অধীন হইলেন। ভাহার নাম আবুতালিব। মো-হম্মদ্ ঐ পিতৃব্যের সহিত অনেক দেশ পরিভূমণ নগরে যাভারাত করিয়াছিলেন।

ति अभिन्दय-दश्रक्**रभत नमय (मारुसम महा-**चीव 🔻 🕆 टाजिमिर्गंड शार्थय-वञ्च-लूकेन-लाल-সায় আড্ডায় ২ সমাগত অপহারক জাতি-গতের প্রতিকুলে যাত্র। করেন। এইরূপ পরি-ভুমণ ও দমর করণে তাঁছার তর্থকমে নির্ভি-শয় সাহস হইতে লাগিল; এবং তাহাই তাঁহার ভবিষ/ হচিত্রীয়ার একপ্রকার অভ্রে চইয়া-ছিল। ইত্যুক্তাশে বিশ্বাম ও ধর্মটিভার নি-মিত তাহার নিজন স্থান বাদের আবশ্যক হয়: এবং তাঁচার মনে ২ এমত সত্ত্রপ উদয় হট্যাছিল্**. যে স্থনমকালীন উপা**দ্ৰস্থ মন্ত্ৰায় গিষা যাদৃশ নিষ্টুর-ভাবাপল পৌতুলিক-বল ও क्रमञ्ज्ञ-कर्य-मकन कार्या भारतन, जाङ्द रियर्य বৈশেষ কথা জান। তাঁহার মুখ্য দৈদেশ। ছিল অসুরোধে পড়িয়া কাবার মন্দিরের পুন্নবী কর্ণ-নদায় তাহার ভিতিতে প্রাণিত একথানি কৃষ্ণ পা-াণ তাহাকে পুনঃ স্তাপিত করিতে হইয়াছিল।

লগোৱার মঠাখাক বছেবিয়া-নামক এক **জন** নেষ্টোর মভাৰলয়া প্রথমতঃ যুবক **মোহ**-অদের অলোকিক ব্লিম্ভার নিগ্রুভর **জানি**-তে পারিইছিল। **দে ঠালার নত্নে ধর্ম বিষ্**-য়ক অধোণকণৰ করিয়া ভাছার পিতৃব্য আৰু ভালিদের নিকট যাইয়া এইকাণে ভাবি ঘটনা কহিলা দিল যে যদি যাতুক যিহুদীদিগের যড়-यख-महाक्ष्माहरू (भारुधानरक क्ष्मानकारम রকা করা যায় ভাছা হইলে এ ভবিষাতে এক মহামতিম ব্যক্তি হইয়া উঠিবেক, নন্দেহ নাই।

श १६ दि: क्षांत उर्ध-तक्षः **क्षा य- नगर**त् साक्ष्यम थमी-

বিশেষতঃ অণ্বনানেও কএক বার সূরিয়া ও হইয়া কিছুকাল-বিলয়ে তাহার পাণিগুহণ করেন। দেমাফ্রেনর মেল্যে, এবং বাগ্দাদ্ ও বসোরা তিৎপরে তিনি ক্রমাগত পঞ্চল-বৎসরকাল মনোগত-সাধনে স্যত্ন হ্ইয়া বারংবার অদূর-বর্ত্তি ভূধরের গুহাতে কথন বা সুরিয়া কদাচিৎ ব। আরবের দক্ষিণাঞ্চলে গমনাগমন করিচেন। এই নকল পরিভূমণ-নময়ে আপন-অবস্থানুসারে যত হইতে পারে তৎপরিমাণে নর্ব-বিষয়ের নমা-চার লইতে তিনি ত্রুটি করিতেন না ৷ কথিত আছে তিনি এক দিন কতিপয় স্বিজ্ঞ থিচ্দা ও খাছি-য়ান-দিগের সহিত যৎপরোনান্তি আনুগত/ভাবে কথোপকথন করিয়াছিলেন। তন্মধ্যে বিখ্যাত র্বি আবদুলা ইব্ন সোলম, এবং ভাষার শালক য়াছে। উহাদের অভিমবরক আদে স্বজাতীয় नाना परवाशामनाय तत थाकिया उद्धात शूर्वक यिक्ष मेश्च-धर्मादलयन करतन, श्रीतरमारम जाहार छ। অশুদ্ধা-পূৰ্বক থাষ্টধৰ্মে সমাসক্ত হইয়া ভন্ধৰ্ম-পুত্তকের আদি ও অন্তভাগের সূচাক্ষর্যাপ্ত হয়েন।

> हर्डातः भवर्य-व्य**ात भाश्यम ভবিষ**। बकुछारद আর্মায়-রজন-জ্ঞাতি-কুট্রবগের মধ্যে আপ-নার মত ও অভিপ্রায় প্রকাশ করিতে লাগি লেন। তাঁছার পত্নী খদিজা, বরক্ আবৃবেকঃ, তংপিতৃন্যপুঞ্জ আলীবিন্ আবু তলিব এবং অন্যা-न्। 'ठ९ शतिवातयः (लाक-मकन प्यविनायः उप-ভোপদেশকে ধর্মোপদেশ এবং তাঁহাকে (আলার) ঈশ্বরের প্রেরিভ দূত বলিয়া স্বীকার করে এবং তাহাতেই তাঁহার প্রাথমিক উদ্যমনকল সর্বতো-ভাবে नकन इहेन।

মোহমাদ অতিথনিষ্ঠ **স্বদম্পর্কীয় বন্ধুবান্ধব**-विवरण अञाप्म धर्माभरमम-श्रराष পণকে ক্রমাগত বর্ষত্রর ব্যাপ্ত থাকিয়া একদা নি-জা-নামুল ধনবর্তা বিধবা যুবতীর নহিত পরিচিত কালয়ে হালেমবংশীয় মান্য ব্যক্তিদিগকে নিম-

জ্ঞান করিয়া পাঠাইলেন; এবং একমাত্র অদ্ধি- আনুশয় করত তাহাদিগকে পরাৎপর পরমকাক-তীয় পরাৎপর পরমেশ্বরের অকৃত্রিম উপস-नात প्रচात-कर्न-मानरम नाना-एए वाभामनामृहक পৌত্তলিক-ধর্ম-পরিত্যাগের মন্ত্রণা সম্পূদানপু-र्वक व्याणामत्रमाथात्र मकलाक याविशासीत! **बहे विद्धार्गन कतिराम रय 'किर्**ट्रम् नामक একমাত্র প্রমেশ্বরের দূত স্বর্গহ্টতে অবতার্ণ हहेशा खागाक वह भातस्यतिक अजारम्य কহিয়। গিয়াছেন যে তুমি নিরতিশয় যতুনছ-কারে স্বদেশীয়গণকে জগদীশ্বরের অমূল্য প্র नाम विভরণ করিবে; ভাছাই ভাছাদের কেবল পর্ম-কৈবলে।র নিদান হইবেক সন্দেহ নাই"। মোহমাদের মুখহইতে এই কথা শুরণমাত্র তং-স্থানোপস্থিতা জনতা তাঁহার মত-গুছ্ণের কথা দূরে থাকুক এককালে সবিষ্যয় ঘৃণারমে নিম্প श्रेन। किरन चानी-**नामक উगा**न-প्राग्न **चानी**-গণ্ড এক বালক মহম্মদের সমভিব্যাহারী হইবার জন্য তাহার পাদানত হইয়া পড়িল। তাহার পিতা আবুতালিব সহজে অতি ধীর ও मृদ্ষভাব, করেন কি? অতি গন্তীরতাভাবে মোহমদকে এই অডুত কম্পিত অভিপ্ৰায় হইতে ক্ষান্ত হইবার পরামর্শ দিলেন। মোহমদ কি সে কথায় কাণ্দেন? তিনি উত্তর করিলেন, "(मथ, हम् ७ मूर्य) कि चन्थ्रहेट नताहेट চাহিলে কি কেছ কৃতকার্য্য হয় বোধু কর?" অপর আত্মীয়-মজনের বাধায় ভীত না হইয়া, বরং তাহার ইচ্ছাবৃত্তি আরো উত্তেজ হইয়া উঠি-ল। ইহাতে জিনি সর্ব কর্ম-পরিত্যাগ-পূর্বক প্রতিনিয়ত মক্কার প্রকাশ্য ক্লানে যাতায়াত এবং कन-नमारक कर्णनोश्वरतत अक्ष-मः याभनामृहक বজ্তা করিতে ও তৎসমাপনাস্তে তাহাদের क्ञिश्वं लोखिक धर्मावनच्या यदशासासि

ণিক পরমেশ্বরের অকৃত্রিম উপাসনায় প্রবত্ত হই-বার পরামর্শ দিতে লাগিলেন; এবং কোরানের কোন ২ অংশ উদ্ধৃত করিয়া কাবার মন্দিরের দ্বারে খোদিত করিয়া রাখিলেন। কথিত আছে, তিনি মহাকবি লেবিদ্-নামক এক ব্যক্তিকে এইকপে স্বনতে আনিয়া মহাসম্ভুম প্রাপ্ত হই-য়াছিলেন। এ বাক্তি তাঁছার বুদ্ধির মহো-য়তি ও ধর্মকথা প্রচারে মত্যন্ত যতৃশীল **ছিল।** প্রজারা এই নীতিজ্ঞদের উপদেশ শুনিতে লা-গিল। এবং বক্তৃতাব**লে মনে** ২ আকৃষ্ট ছইয়া তা-হাদের অত্যত্প লোক পুরুষ-পরম্পরাগত চির-প্রচলিত ধর্ম ক্রিয়াকলাপাদি পরিত্যাগ পূর্বক অচিন্তনীয় অনিৰ্বচনীয় আন্ম-ধৰ্মাবলম্বনে মনস্ত করিয়াছিল। মোহমদের সমিধানে তাহারা ভূয়ো-ভূয়ঃ প্রার্থনা করিতে লাগিল, ' আপনি এই দৈব-প্রতাদেশ কোন ২ অভুত ঘটনায় সুদৃঢ় কৰন "। কিন্তু তিনি অতি বিজ্ঞ চা-পূর্ক তল্প-র্মের আন্তরিক গুঢ় সভাতারই প্রকাশ করিতে नाशितन, এবং प्रशिष्टिधारन कहितन, "आ-শ্চর্য্য-ঘটনা ও শুভ-লক্ষণ প্রভৃতি কেবল শুদ্ধা-ব্দ্তির ন্যুনতা সম্পাদন করত নাত্তিকতাকেই সতেজ করিয়া তোলে।

মেহিমার অনেকানেক অন্তুত কার্য্য করিতেন, তন্মধ্যে মক্কার মন্জিদ্ হইতে যামিনীযোগে যি-ৰুশালম্ নগরে যাত্রা ও চন্দুকে অক্সদারা দ্বিথণ্ড করা তাঁহার ভক্ত শিষ্যেরা প্রোটোক্তিতে বর্ণনা कतिशा थारक। अहे विषया जाहारमत य जानीक কথন সে অভিঅসম্ভব, সুভরাণ এই স্থলে ভাহার উল্লেখ করণের আবশ্যক নাই।

মোহমদ নিজপত্নী থদিজার লোকান্তর-গম-নের পার অবুবেকরের একমাত্র দুহিতা আয়ে-

সা-নামী যুবতীর প্রাণিগুহণ করেন। তদুপলকে। ভব্যবক্তার সমিধানে উপস্থিত হইয়া যথাসন্মানে শ্বস্তর জানাতায় অতিশয় প্রতি জন্মে। ঐ আ-**वृत्वक**द्विव वृत्तां सम्बन्धन व्यावृत्वदेवमा, इसका, ওথ্যান, উমার প্রভৃতি কতিপয় প্রধান ২ ভদু সন্তান মেছকদের মতেই মত নিযোজনা করি-ल। उथालि **द्यम्टेनककाल मस्द्रा** अहे नव-धर्म-প্রচারের কিছু উন্নতিই হয় নাই। ফলতঃ যদি! কুরেশ জাতীয়ের। হাসেম বংশীয়মাত্রের প্রতি-क्ल मा हरें ज जाहा हहें ता हे होत अक कारन লোপাপতি হইবারই সন্তাবনা ছিল। মোহমাদের কএক জন অনুচর অতিশয় যাত্রা ও তাড়নায় প্রাড্যমান হুইয়া আবিসিনিয়া দেশে প্রায়ন क्षिशिक्ति दएहे, उथाणि जाशास्त्र भरन 🗟 বিবাদানল প্রজ্ঞৃলিত থাকিতে ক্ষান্ত হয় নাই। অংশেয়ে মকান্থ নমস্ত লোক ঐকবাক্যে মোহ-ন্দ্যে প্রাণ সংহারে কৃতনিশ্চয় হুওয়াতে তিনি প্রফল বেশে যাভরেব নগরে পলায়ন করেন। लाह व नगत छवारकार नगत (मिना-नाम খ্যাত ১০। ই ৬২২ সালের ১৬ই জুলাই ও বিক্রমানিতের ১৭৮ সংব্ররের **শাব্র মানে এই** মোচলাদের ভিজারা নামখা কবা প্রচলিত হইয়া আসিভেছে। ম্ফাহইতে প্রত্যবৈদ্যান যাত্রিগণ श्मिष्मि। रागिरम्त वृष्ति- वृष्टि करेष्ठ धर्म वीक বপন করাতে ভাষারা ভৎক্ষণাৎ ভাষা, মত-প্র-চারকের শক্ষাবলম্বরপ জলাভিষেকে অস্কুরিত ক্রিভে মন্ন ক্রিল। ইতিপুর্বে বিশেষ ২ কা-স্টোপ্রভো মোহ্মদকে তাহারা নিমন্ত্রণ করিত এবং কহিত, '' ভোমার কাহারো প্রতি বৈরনির্য্যা-তনের অবেশ্যক্তা হুইলে আমরা যথাসাধ্য বাহায্য করিতে জুটি করিব না "। ভাহার। এভা-

বিজ্ঞাপন করিল, "আমরা আপনার এই অভিনব-ধর্মের প্রণালী বলপূর্বক প্রচার-করণে যৎপরোনা-ত্তি সাহায্য করিব, কোন মতেই তুটি করিব না "। এবংপ্রকার উৎনাহ প্রাপ্তিমাত্র মোহমদের মানাকাঙ্কা-বৃত্তি আরে। পৃথীয়দী হইল। তা-हां मदन चोय रमववानीत गुरहा जावियदय चरनक আখান জন্মিল। ইহাতে তিনি ঐ উপস্থিত यिमिनाव। निर्मिशास्त्र छे शरम्य द्विष्ठा कि हितान, "लो इनिक ध्यावनश्रीमिश्तत विकास बज्जधात्र করা এই সনাতন ধর্মের অনুসারে যুক্তিযুক্ত; অত-এব প্রতিক্তা কর অদ্যাবধি আরবীয় ও অন্যান্য প্রতিবাদিনী জাতিরা যাবৎ অকৈতথর্মের অব-नम्न ना करत, ७व॰ चामारक देशतरप्रतिक वनि-য়া না মানে, তাবং পর্যান্ত তাহাদের শোণিতে সং করবাল আরক্ত করিতে ভুটি করিবে না "।

साइच्यम अहे शकात अवावनामानए हरेल পর কুরেশ্ জাতির সহিত তাঁহার তিনবার যুদ্ধ হয়। উক্ত জাতির। আবু সোকিয়ানের অধান; তিনি মোলআদের ও হাসেম বংশের ব্যাপার ঘটনা হয়। এ পলায়ন দিবন হইতেই। অভ্যন্ত শত্রু। আবুভালিবের লোকান্তর গমনের পর মক্কার প্রধানতা তাঁহাতেই বর্ত্তিয়াছিল। मुर्तिया (कर्म (य नकन धनाछ) विश्वतिका शमन করিত তাহাদের রক্ষা এবং মোহঅদের সাহ-সিক দলকে আক্রমণ করিবার আবুসফিয়ান এক সহ্ৰু সময়দক যোজা সঙ্ করিয়া রাথিয়াছিলেন। মোহম্মদ ভৎকালে ভিন শত याका वर्षा मिन्न इहेट कान-मरेनक পথ অন্তরে বেদর নামক এক পর্বতের গভরে মধ্যে শতুরমাগম্ প্রতীক্ষা করিতেছিলেনঃ পরে শতুগণকে সমুপাগত জানিয়া তাছা-দ্শ পূরক্ত প্রতিজ্ঞানুসারে একদা ঐ নির্যাসিত দিগকে আক্রমণ করিলেন। ভাছারা কৰৈক

নিত হট্য়া পর বৎসর হিজরি ও অবেদ আবু-করেন। তথায় উভয় পক্ষে ওহদ্পর্ভের নিকট এক তুম্ল সন্থাম হয়. তাহাতে মোহমদ অ-ত্যস্ত আহত হন। শতুপক্ষীয়েরা এ যাত্রার জয়া হইল, কিন্তু মোহমাদ অবিলয়েই বিছিন্ন দৈন্য দলবদ্ধ করিয়া রণক্ষেত্রে পুনর্বার উপ-স্থাপিত করিলেন। এই তৃতীয় সম্ভূম কেবল महारल পরাক্রান্ত আলীরই বাহ্বলে পর্যঃ-বসিত হয়। এই সময়ে মেদিনা নগর জ্মাগত দশ দিন শতুকর্তৃক আক্রান্ত থাকে। সমনন্তর উভয় পক্ষের ঐকমত্যে দশ বৎসরকাল যুদ্ধ বিগুহ স্থগিত রাখাই নির্ধারিত হইল। ইত্যব-কাশের মধ্যে মোহম্মদ নকলের মত প্রত্যাবর্ত্তন कतिएक किन्ना टेकनका अ, काटेत्रथा, निधत, टेकवात् প্রভৃতি প্রধান ২ যিহুদীয় জাতিদিগকে পরাজয় করিতে প্রবৃত্ত ছিলেন।

मनुभान्भयुक यिश्मीमिरात इखश्हेर पूर्ग ও নগরাদি অকেশেই অপহাত ও লুঠিত হইল। দুর্ভাগ্যবান্ প্রজারা জেতার নবধর্মাবলম্বনে অনি-চ্ছুক হইবাতে অতি নিধুরতাপূর্বক দেশহইতে म्बोक्छ, ७ विविध याजनाम क्रिष्टे, अवः इछ इहेटछ वाशिन। अहे काल पिनीय कांकि नकरनत प्रमन रुरेनार्ड भार्यापेत **भ**ताक्रम **७** श्रायत्मात रेयुडा রহিল না। কোরেশ জাতীয় প্রাচীন ধর্মাবলম্বীরা কিছকালের জন্য সমর স্থগিত রাথিবেক কহিয়া-ছিল, কিন্তু পারে তৎপ্রতিজ্ঞা ভঙ্গে তাহারা কৃতো-माम हहेल; अञ्चव स्माहस्म उरक्तार मन

যুদ্ধ করণান্তর সর্বতোভাবে পরাজিত হইয়া স্ব ২ | সহসু যোদ্ধা সঙ্গুহ পূর্বক হিজরি ৮ অন্দে মক্রাভি-অর্থসম্পত্তি কেলিয়া কে কোথায় পলায়ন করিল। মুখে যাত্রা করিলেন। বিনা বাধায় নগর আক্রান্ত তাহার নির্গয় হইল না। এই পরাজয়ে অপমা- হইল। মোহমদীয় অদৈতথর্মের জয় পতাকা উত্তোলিত হইল,দেখিয়া প্রজারা যে ভব্যবক্তাকে সোকিয়ান ভিন সহসু যোদার এক দল নমভি- ইতিপূর্বে টপত্ক বাসস্থানহইতে নির্নাসন করি-ব্যাহারে লইয়া যুদ্ধার্থ মেদিনার অভিমুখে যাত্রা য়াছিল ভালাকেই ঐকবাক্যে মকার অধীশ্বর বলিয়া তাহার শরণাগত হইল। মোহমদও যাহা-দের হইতে পূরেঁ এত অপমানিত হইয়াছিলেন তাহাদিগকে নিজ মতাবলম্বা দৈখিয়া তৎক্ষণ-भार् के यार्जना कशिएक बुर्षि कतिरलन ना; शर्त কাবার চতুর্দিক্ত্ ৩৬০ থানি দেবপ্রতিমা ভম ও চুর্ণ করণপূর্বক পৌর্লিকধর্মের চিহ্নমাত্রও না দেখিতে পাওয়া যায় এমনি ভাবে সকল বস্তু নষ্ট করিয়া ফেলিলেন; এবং ঐ সকল ভান এক অদ্বিচীয় পরাৎপর পরমেশ্বরের ভল্**নালয়ে** সুশোভিত করিয়া দিলেন। তদবধি ঐ স্থান মহাতীর্থ ৰূপে খ্যাত হইল৷ তথায় যাত্রিরা যে সমস্ত ধর্ম চচ্চা ও ধর্ম কর্ম করিয়া আসিতেছে সে সকল তাঁহারি ভজনা ও উপাসনার দৃষ্ঠান্তম্বরূপ।

মোহমদকর্তৃক মক্কার পরাজয় ও তৈরফের দুর্দ্ধর্য দুর্গের নিপাত দেখিয়া আরবীয় সমস্ত পৌতুলিক ধর্মাবলম্বী জাতীয়েরা অবিলম্বে আসিয়া তাছার অধীন হইল। সমীপত্ত দেশবর্তী প্রধানেরাও তৎকালীন সমুপাগত হইয়া জয়শাল ভব্যবকু মোহম্মদের নিকটে বিবিধ জাভায় উপহার প্রদান পূর্বক অকপট বন্ধুত্ব সম্বলিত সন্ধি প্রার্থনা করিতে লাগিল। সম্ভুমলিপ্সামদে মন্ত হইয়া মোহমাদ পারনারাজ থোক্র পরবেজ্ ও আবিদিনিয়া-দেশের রাজা হিরাক্রিট্স্ ও হাই-জানটিয়নের নিকটে গন্তীরকাপে ভয়প্রদর্শনপূর্বক এই বলিয়া দুত পাঠাইয়া দিলেন যে, "ভোমরা হয় অধৈতধর্মের অবলম্বন কর, নয় আমার

রা. না. বি.

সহসু মোশ্লেম যোদা বস্হীত হইয়া পালাস্-र्षित्व शर्वमीमा जाज्यन कतिल; अवः अह যাত্রায় পশ্চিমাঞ্জেরে নানা দেশীয় বিবিধ-জাতিসকল কেছাপূর্বক আদিয়া মোহক্ষদের বশত। খালরে করিল। খাপ্তিয়ানবর্গের উপরি চল্লা ব্রক্তাশ করিয়া মোহম্মদ তাহাদিগের **হটতে** মংকিঞিৎ কর গুছ্ণ করিয়াই ক্যান্ত হইলেন। এই यक्त युक्त याजाहरेट প্रक्रावर्टन कहिया ভিনি আর একবার জন্মের মত তথিচড়ামণি মরাতে যাত্র। করিয়াছিলেন। অনন্তর তথাহইতে ্নাহমদ নেদিনায় ফিরিয়া গেলেন, এবং তথায় দুই স্থাধ্কাল জার রোগে প্রীভিত হইয়া তত্ততঃ শিঘাগণকে মহাভয়সাগরে নিম্ম করিয়া পর-লোক যাত্র) করিলেন। এই ব্যাপার ইং ৬৩২ েকের ৮ই জুনে ঘটনা হয়। তথন তাহার বয়ং-ক্রম ৬০ বৎদর ছিল। মোহমদের মরণানস্তর ত্তির বিহাত্রহ শিহাগেণ সম্ভিত্তির ওমরের ম্লে দ্য প্রবৃত্তি চইল যে মোহমদের মরণ ক্ষাটে ভইতে পারে না। এ**তাদুশ অসম্বত প্রত্যে**য় প্রভাষনার বিস্তার **ধারসভার স্বিজ্ঞ আবুব-**लाहर यथभारवामा**न्छ श्रमान श्राहान मर्मावेटड** হটাছিল। িনি তত্রস্থিত **ক্ষিপ্তব**ং **জনতাস্থি**-ধানে উচ্চে হলে কভিতে লাগিলেন, "তোমরা যাজাকে উপাদন। করিয়া থাক তিনি কি মোহমাদ किय स्मारकार के श्रह अयम्। इ दलिए इइएक ভাষ্টে ইবঃ: মিনি ভাষ্টার ঈশ্বর, ভিনি কথন মরেন নাঃ কিন্তু মোহমাদ ভীখার প্রেরিভ ব্যক্তি; चारात सहय **७ जनन व्यामात्मत नाम्यहे इहेर्दक**, ेब्राज मास्क कि ??

নোহ্যাদের বুজিগৃত্তি অন্তুত ও তীকু ছিল, বিশ্বাদ না করিলে কেহই মুসলমান্ হইতে পারেনা। किन अग्र को मन कित्रशिक्तन, य उर्धनी क

নহিত যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হও "। এ দিকে তিন । ধর্মের গুঢ়মর্ম কি, তদ্ধিষয়ে কেই কোন তক क्रिल ना; তথাপি শতाकीत मध्य नम्हाय আরব, সুরিয়া, আসিয়ামাইনর্, পারস, মিসর, এবং আফরিকার কিয়দংশের মধ্যে তাঁহার জয়-পতাকা উভ্ভীয়মান হইল। বর্ত্তমান সময়েও দেখা याहर उद्म नुक्त नृत्य कि को विष व्यादन विक् महा-गাগর পর্য্যন্ত সর্বত্রে এক শত কুড়ি লক্ষ মনুষ্যে-রও অধিক বাঁক্তি তাঁছার মত গুহুণ করিয়াছে। মোহ্মদ প্রণীতধর্মের নাম অদৈতধর্ম বা মো-निम् धर्म। काहार्व नामक भूष्ट्र के धर्म मूर्वाक चारक्। याक्यम स्थः वे गुन्न तहना कतियाक्तिनः এবং কহিতেন যে ঈশরের দত আসিয়া ভাছাকে এক ২ দিন এক ২ অখ্যায়ের উপদেশ দিয়াছিল। এই ধর্মের দুই অন্ন, ''ইমান্" ও ''দীন"। মত-প্রকাশকের প্রতি যে বিশ্বাস তাহার নাম ইমান: ও তৎপ্রণীত ধর্মের প্রতি শুদ্ধার নাম দীন। এট धर्मित मर्ग এडे या शतस्यत এकमाल, অদ্বিতীয়, निका, मईगकियान, मईछ, अस्रवामी, लात्रमकाक-ণিক। কেবল ভাঁহারি উপসনাদিই শ্রেরঃনাধন ও সর্বচোভাবে করব।। তাঁহার মহিমা প্রতি-নিয়ত দেবদৃতে সর্বত্র ঘোষণা করিতেছে। এই পরিদৃশ্যমান নচরাচর বিশ্বনং নারই তাঁহার সৃইব ও নিয়ন্তুহের একমাত্র নিদর্শন স্থল। তিনিই জগ-তের কতা, তিনিই জগতের পাতা, তিনিই জগতের শাস্তা,তিনিই জগতের ভাগ্যাভাগ্যের নিয়ন্তা,তাঁ-হারি ঐশ্বিক শক্তি ও আদেশে মানবাদি জাতি नकल जनन मत्रशामि आश्व रहेरज्य । এই धर्मावल-विकिट्गत वीक्रमञ "ना हैनाहा हैनिन्ना माहयम রসূল আল্লা " অর্থাৎ ঈশ্বর এক ব্যতীত দিতীয় नाहे, अवर स्माह्यम जाहात्र (अतिक। अहे वारका

हिम-विवत्र ।

শীতল হয়। তাপমান-যন্ত্রদারা ঐ উঞ্জা-নিরপণের প্রযুক্ত যে সকল-স্থানে গ্রীয়া-পরিমাণ ৩২ তাপাণ্ড 📜 त। उद्यान, उथाय जल तत्रकत्रात्र शतिगठ थारक। दिध-কেন্দ্রে স্থিকটের উফতা ৩২ তাপাণশত্টতে অনেক নান: ডঞ্চা কোন ২ স্থানে গ্রীফকালেও ঐ সংগাং অতিক্রম করে না: তৎতাবৎ স্থানে তরল জল দ্বি-গোচর ১৪রা কটিন; সমস্ত জল বার মাস বরফরণ সারণ করিয়া আছে। তথার শিশির ও বৃষ্টির পরি-বত্তে মাখার পড়িয়া থাকে। অপর যে মকল স্থান তাপাংশ অপেশ্বায় শীতল হয়, তথায় জল শীতকালে বরফ রূপ ধারণ করত গ্রীয়ে দুবীভূত হুট্রা হায়। সম-मछालत जानक खारन उ शिममछालत मर्काल अने घरेना घिता थारक। मामञ्जलत (कांनर खारन भोठकारलत पूर्वे ठाति मिन भाज ७२ जाना०म नियाय डेक्टन इहेगा থাকে, তথাৰ বংগ ঐ অল্পকাল মাত্ৰ জল জমিয়া থাকে। গ্রীয়ামণ্ডলে শীতের লাঘর, তথা জল জমিবার অসম্ভাবনা। কলিকাতার অভান্ত শীতের সময়েও বাগ্র উষ্ণতা ৫০ তাপাংশের ন্যুন হয় না, মুতরাং এথানে কদাপি ভূষার নিপতিত হয় না, এবং জল জমিয়া বর্ফ রূপ भारत करत ना *।

পৃথিবীর উত্তরত্ব সপ্তম অক্ষাণশের উভয় পার্ম্বে জমশঃ যে প্রকার শীতের বৃদ্ধি হয়, সমভূমিহইতে উর্দ্ধ-দেশেও সেই প্রকার শৈত্যাধিকা বোধ হয়; ফলতঃ প্রাকৃত-ধর্মবিষয়ে গ্রীষ্মগুলস্কু-পর্বতের মূলভাগ গ্রীষ্ম-मधनवर, उमृत्व कियम १ मममधनवर, उ उ उमृत्व रिम

মণ্ডলবে । भगामू । शक्ति, मीशांत्-शटन, काशिक-१८१७त, পুভৃতি বিষয়ে পৃথিবীর মণ্ডল-ভেদে যে প্রকার ১৯৮ ্রামেশার্থ কর্ম তা বিষয়ক-প্রকরণে উক্ত হুইয়াছে হয়, পর্ততের উচ্চতান্সারেও সেই প্রকার ভেদ ঘটিয়া 🗸 🏅 পৃথিতীর উত্তরম্ভ সপ্তম-অক্ষাৎশ স্থান স্কান থাকে। গ্রাম্মাঞ্লম্-প্রতের মূলভাগে বর্ফ জ্যে না पूँ । কুলিন্দ্র প্রকার উক্তঃ তাহাহ্টতে উত্তর-দক্ষিণে চদুর্গে শীতকালে ত্যার পড়ে, গ্রীয়ে তুষার বা বরক ক্রমশঃ উষ্ণতার হাস হট্যা কেন্দু-নিক্টর স্থান অভার ্থাকে না: তদুখেঁ প্রতিযুত্তলে চির্কাল ভুনার ও বর্ফ বর্ননে থাকে। সময়ওলস্থ-পর্বতের মূলভাগ উপায়ও তথায় বণিত হ্টয়াছে ৷ উক্ত ঘজের ৩২ তা-ং সমমণ্ডলবং, তদুংৠ ক্ৰার, হিমমণ্ডলস্≁পদতের সদাঁএই পাণ্শ-পরিমিত উঞ্জায় জল কমিয়া বর্ফ হয়; এই হিম্বিশিকী ! কুমেকুসরে ইরিবস্-নামক দশ-সহসু-হস্ত-উদ্যাএক আহেছে প্ৰসাধ আছে, তাহ্য মধ্যে ২ দুৰীভূত ध्यस्य खरामक-१८१६ ७०/६५% कतिसा धारक, उ पिता-রাজি ধ্য উন্ধারণ নারতেছে: অথচ তাহার স্কাহ ভতিষ্ণ হিমশিলায় মণিত, বুত্রাপি এক মৃষ্টি, মাত্র মত্তিকাও দ্ফিগোচর হয় না।

शुन्धं तनवान् गारत (तात्र कनैटक शास्त्र स्य शुोध्या धना इ পক্ত মাতোতনী তিন মঙলের প্রাকৃত সমা প্রতাক স্ক্রিয়ে, কিন্তু ভাষে। যথাপ নহে।। যে দকল প্রস্তু ভাষ্ট্রে ট্ডা ভাষ্টেট ঐ ঘটনা দ্টিগোচর হর, নিনু পদতি ত্রে: অন্ভূত তর না। ফলতঃ নিরক্ষ্যুতের নিক্টিছলতে স কেন্দু পাণার সেমন ক্রমশঃ উষ্ণতার হাস হয় পর্বারে: উফ্ডাব্রারে সেই মত ক্রশঃ **উত্তেপ**রও লাখৰ ১৯ইচ থাকে। হিমালয় পর্যতের ৪—৫ সহসু হয়েছি প্রায় ভ্লার দৃষ্ট হয় না, এবং তথাকার শীতও সমভ্মির শীতের জুলা; তদুর্দ্ধে ক্রমশঃ শীতের ও জুমারের বুদ্ধি কালে ৮৬ সহসু হয়, উচ্চ স্থানে বর্মের ৮।১ মাস শীত ও মিলার থাকে, তদুর্দ্ধে আরও শীতের বৃদ্ধি হট্যা ছলেশ-১০নৃ-১্নু **উচ্চ স্থানে শীত বা নী**হ্যরের বিজ্ঞান হয় ন_া ডংভ্যুন **অবধি হিমালদের অ**গুড়াগ প্রচাম ফলত চৈতেল নীহারারুত থাকে, গিরিরাজ ঐ খঞ্টোপর বসংগ্র চুত হন না। অপর মনুর্মেখাক টোপর ধারণ করলে य श्रकारत प्रमुख ७ (जायरतह प्रिचन म्हारन (जायरतत দীমা জ্ঞাপক রেখা অবুডুত হয়, তেমনি ঐ নিরিশিখরে ও চির্মাহারের সামানিরপক রেখা নিদিউ আছে: গ্রীমু-काल भारत (तथात निमु इ। नम् मकल नीकात गलिया यात, किन्छ मिहे द्रियात उधिन मीशत विकृष्ट इस मा।

के द्विथारक " कित्रीहारत ते मोमा " मटक कहि। शृथि-वीत मधन एउट अर्थ उट्टिम ये गीमात स्नात् स्ह्रा থাকে। হিমালয় পত্রতের দক্ষিণ ভাগে ঐ দীমা ছাদশ

^{*} छननी-अरामा अनुकात-मृष्पाद्ध सन ताथिया गौउकारस বরফ প্রক্ত করার রীতি ছিল; কিন্তু ভাহাতে আমাদিগের উতির কোন বিরোধ ছটবে না; কারণ ঐ বর্ফ প্রস্তুত করণের প্রথা ৰঙর, বায়ুর শীভঙা ভাহার প্রধান কারণ নছে।

অবস্থিত। আল্লুস পর্কার তাহা নব সহসু হস্ত উচ্চে ও উরাল পরতে 🐃 দংসু হন্ত উচ্চে ছিত। পুর্ফোক্ত ইরিবস্পাকতের মূলেই ঐ চির্নীহার মীমা ভিত আছে। প্রস্তাবিক প্রনীলারদীনার নিমে চির্নীহারের বাত্ষরপ কোনাং ভানে বুছদাকার নীছারের রাশি পদ্মান হট্যা থাকে: ভাষা চির্নীযার্থই বার মাস দৃঢ় থাকে, কদাপি ! हुर कर गा। अ लग्नान नीरावराष्ट्र विश्वाणि नाम ! ্লাসিমর্"। বঙ্গভাষার ভাহাকে "চিরনীহারবাহু" শকে 🖁 शास्त्रक अर्थन्तर । प्राध्मन निकटी तीन मारहत अक वृह् প্রথম কাপ শত পর উচ্চ।

উপত্রে উক্ত জ্লল যে অতান্ত চালু স্থানে চিরনীছার-वाहा कारक २११ उथकातम भोडकारन उथ्हारन रन मकन াচার সঞ্চীত হয়, প্রীয়োর প্রানুর্ভাবে ভাচার মূল ভাগ দুব হইয়৷ ঐ নীহারপিও স্বস্থান হউতে উপত্যকা

সহসূহস্ত উচ্চেও উজ্ল ভালে চতুদ্ধি সহসূহস্ত উঠ্ছে। মধ্যে আসিলা পড়ে। এই প্রযুক্ত পার্বতা পথ বা সঙ্কীর্ন উপত্যকা দিয়া ভুমণ করা অত্যন্ত ভয়ঙ্কর ; তৎস্থানে वार्त यांचारां प्रायः शांक ना, नकनर सुद्धाः আছে; ঐ পথ দিয়া গমনসময়ে শব্ধে বা গোলযোগ কর। নিষিদ্ধ, কারণ তদ্বার। পতনোমুথ হিমশিলা-দকল শিথরাগুহুটতে ছিল্ল হুট্যা তৎক্ষণাৎ শব্দকারিদিনের মঙ্গলৈপরি নিপতিত হয়। শামান্য লোকে এই ঘটনাকে मानवकीर्नि विलया वर्गन कविया थारक। कि॰ वन्छी আছে কামরা দেশীয় এক জন রাজগুল্ল মহীপাল পঞ নিগান করিব। পর্কাতের কুদু উপত্যকা মধ্যে বা দুই সহসু স্বজাতীয় অকুতোভয় **বলদল সমভিব্যাহারে** গণ্ডশেলের মধাস্থ নিমু ভানেই প্রস্তাবিত চিরনীছার- কিম্মার দেশের পার্মে পাচানদিগের দমনার্থে যুক্ষণাতা বাল বভাগান খাকে, সুতরাণ ঐ নিমু স্থানের আকা- করিয়া পথি মধ্যে হিন্দুকুশ-পব্বত্তর এক গিরি-সঙ্ক-৪°রুলারে ছির্নালারবাল্র আকৃতির ভেদ হয়। কোন টের ছারে উপনীত হললেন। তথায় তাঁহাকে লোকে িচর নাহ⊹রবাহ্ অভাকার, কেছ দীর্ঘ নদাবং, কেছ বা ুকহিল। যে ঐ গিরি-সঙ্কট এক জন দানবের অধীনঃ ত্রগাবং। এই সক্ষরকার চির্মাহারবাহ্র উপরিভাগ ভাষার সন্মান রক্ষা কর্ত নিমুদ্ধভাবে ঐ পার্শ্বভাপথ-ৰত্ন, এবং ক্ৰমাণত তাহা অগুৰতী হইতেছে ৷ গ্ৰাফু- : দিয়া গমন করাই তদু, নচেৎ **ঐ দানৰ পৰ্যভাকা**র কালে ঐ গাতদারা প্রতাহ চিরনাহারবাত ১:৩ হস্ত বৃহৎ হিম্পিলা-প্রকেপণ-পূর্মক দকলকে বিন্তী করি-গ্রাস্থ কয়। শীতকালে ঐ গাউর কিঞিৎ চ্যুদ হয়। বৈক। তিনি কহিলেন, "আমি রা**জপুত্র, স্ব**য়ৎ দেবতা, কিন্তু কণাপি গমনে নিরেম হয় না। পরন্ত কোন ২ চির-। আমি কোন্দানবের ভয় করিব। রাজপুত্র শরীরে নিচ∷র বাজ জনশং হুয় হটয়া লুঙ হটয়াছে, বিশেষভঃ ভয় পদার্থ কদাপি বজে না, এবণ আমিও জাতিগম পে মকল চির্নালারকাছ অধিক চালু স্থানে স্থিত তাহা নিট্ট করিবার পাত্র নহি।" অপর ঐ অভিপ্রায়ানুসারে শাঘু বিনয় করে। পর্যের পার্স অতায় গালু হউলে তা- তোপ ও ডফ্লাঞ্চনি করিতে হ তিনি পার্স্ত্রগাথ প্রবেশ ৪। তে চিরনীছারবাজ তিভিতে পারে না। এই প্রযুক্ত করিলেন, এবং অনতিবিলম্বে হিমশিলার পতনে দবৈনা দক্ষিণ আমরিকার আন্দিদ্ পর্বতে আশিলার কুকস্বদ্ধ তন্ত্রাগো প্রোথিত রহিদেন, এক ব্যক্তিও প্রত্যাগমন করত প্রতে, পাণ্ডাই পর্ত্তে ও উরাল পর্ত্তে চির্নাহার- , তদ্বার্ত্ত কহিতে জীবিত্রান রহিল না। এই ঘটনাহইতে বাল বালা। হিমালয়ের দক্ষিণ পার্ষেও কোন চিরনী- প্রস্থাবিত পর্বতের নাম হিন্দুকুশ্ অর্থাৎ হিন্দুহন্তা হউ-গারশত দট্ট হয় না। পরস্থ তাহার পশ্চিম ও উত্তর ! য়াছে। তিমত-দেশীয় পার্ম্বতা পথে এই প্রকার ঘটনা পালের অন্তর্ন ভিত্নালাকবাজ বর্ত্তমান আছে; কাম্মার সর্ব্বদা ঘটিয়া থাকে; এবং ভুত্রতা লোকেরা তদারা দানবের অস্তিত্ব প্রমাণ করে ; ত্রিক্ততঃ পতনোমুথ হিম-্তবনাহাকরছে পেভিয়াছিলেন; তাহা প্রায় অর্জ কোশ শিলা সকল শব্দের বেগে কল্পিড হইয়াই পড়িয়া থাকে। कान २ द्यार अहे शवननील हिमनिनात अकि २ গণ্ড দুই তিন সহসু হন্ত বৃহৎ হইয়া থাকে, এবং তাহার পতন সময়ে পথি মধ্যে পর্বত শিধরাদি যাহা কিছু উপস্থিত থাকে, তৎসমূদায় ভগ্ন হইয়া পড়ে এবং ভং-मभारत अग्रह्मत तज्व भीय इहेशा श्रीति ।

বিবিধার্থ-সঙ্গুহ,

ভাপাত

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যাতক মাসিক পত ।



লাগুরিত দীপরাদীদিনের সভিত কাপান কুকের নাক্ষাৎ।

माखितिह् बीभा

থাকে, উক্ত সমৃদে তাদৃশ জলের উথিতি হয় ना, उथाय कन आयः नर्वना नमजादन थादक। निরাথতের পূর্বস্থ সমৃদু "ভির- ঐ স্থির জলে প্রবাল-কীটেরা অনায়ানে নির্দিয় नमूनु" मारम विश्वांज, कांत्रव जानाव जावांत्र निर्मात करते, बदः ले जावांत्र मा नमूरमु खाद्रारतम नमरप्त नकन क्रमणः करनाकु जारत निश्मृ करेमा बील-य नण प्रन छेष्ट्रनिष्ठ इहेंग्न। करण भित्रवेष्ठ इग्न। वहे श्रकारत द्वित-नमूर्ण्

ধিক हो । একত্রে মণ্ডলীভূত আছে, তক্মধ্যে যে । ভাব নাই। ১৮৮৯ সংবহদরে পাদরি এলিস্সা-টা প্রধান তাহারই নামে অপর দ্বীপ গুলিন হেব অনুমান করিয়াছিলেন যে তথায় ১,৩০,০০০ নিখ্যাত হয়। ভূগোলগুল্পে ঐ সকল মণ্ডলীভূত ব্যক্তি প্রক্ষা আছে। যে সময়ে কাপ্তান্ কুক্ हील " हीलनमर्छि." " हीलवृत्र," " हीलमञ्चन " े जे हीएल जमन करतन, उৎकारन उपाकात दा " श्रीभमञ्जूर " नास्म निष्छि चाहि।

क्षिक्षपुर्शनन ज्यन्यामित्व विशेन। हेरारम्ब माधार्य नकन घोला मनुष्राचाम आरङ्, जाहा भन-স্পার অপেকাকৃত বৃহৎ, এবং ডাহাতে ফলপুস্থা-দিরও অভাব নাই। পরস্ত তত্ত্ত মনুযে/রং অ-্ ত্যন্ত অধ্যা, এবং য**ংপারোনান্তি অসভ্য। লৌহাদি** ধাতুনির্মিত অন্ত ব। দাপানবন্ত প্রস্তুত করিতে কেচ্ই সক্ষম নহে: অনেকে বল্কেল ধারণ করিয়া পর্বকুটারে দিন্যাপন করে; কেহু বা দিগম্বরাব-লম্বন-পুরক বৃক্ষকোটরাদিতে কা**লকেপ করি**য়া थारकः क्षिकर्म (कर्डे ज्थात नर्डः नक-(करें द्रम) कहा मन ७ मृशश होता **कीवरनाशाय** डेल।डाज करता

পূর্বকালে এতদেশার ও ইউরোপীয় মন্যের। .

বহুসঙ্খ্যক দ্বীল উৎপন্ন হইয়াছে। ভূগোলের মাই" বা "ওছিছি"। ভিরসমুদের মধ্যভাগে मानिहित्व पृष्टि कहित्त व्यनादारम वाक इहेरव, नित्रक्षवृत्त्वत मित्रकरि >११ प्रिम-मधाङ्ग-त्रथात्र যে স্থিন-সমূদে যত দাপ আছে, পৃথিবীর আর 🖟 ঐ দ্বীপ বর্ত্তমান আছে; তাহার চতুর্দিগে অপর কুত্রাপি তক্ত নাই। ঐ সকল দ্বীপের অধি- দশ বার টি দ্বীপ আছে; তাহাদের সমষ্টির নাম কাংশই অভিকৃদ্; ভাহাদের ৫।৭ টা বা ততো- "সাগুবিচ্ দ্বীপ"। ঐ দ্বীপসম্ভিতে প্রজার অ-্মনুষ্টেরা তৎপ্রতিবাসি অন্য ছীপবাসী অপে-এই সকল ছাপের অনেকট নিজন, এবং তক্মধ্যে কায় সভা ছিল; তাহারা ভূমিকর্যণ, বলকলের वज निर्मान, मानूबतूनन প्रकृति कार्या ७६-পর ছিল, এব॰ দেবে পাসনায়ও উৎসুক ছিল; পরস্তু নরবলি প্রদানে বিমুখ ছিল না, এবং শত্ৰ-পক্ষায়-নরমাণ্স বিশেষ পর্বদিবসে ভক্ষণ করিত।

> তৎकाल कृकुत मृकत उ रेन्द्रत छिन्न अनः कान পশু তথায় ছিল না, এবং তাছারা সকলেরই थामा मरधा भवा हिला नातचानु, नातिरकन, নানা প্রকার কদলী এবং ইক্ষুও প্রচুর ছিল। তারো এবং রোটিকাফল নামক অপর দুই প্রকার কল প্রস্তাবিত ছীপে অনেক, এবং তদ্বলঘনেই তত্ত্ব-ত্য লোকেরা জীবন ধারণ করিত।

कृक नारहरवत वध व्यवधि ३৮०० म॰व भन्न এই সকল ছাপের কোন বিবরণ জ্ঞাত ছিলেন না। পর্য্যস্ত উক্ত ছাপে কেই গমন করে নাই। অশীতি ব্য হটল কুক্-নাম। এক জন অতি- শৈষোক্ত বৰ্ষে কাছবর্ সাহেব তথায় গমন প্রনিদ্ধ কাপান (পোতাধিপ) পৃথিবীপ্রদক্ষিণ করেন; এবং ভদবধি বাৰিজ/ানুরোধে অনেকে করত ভির-সমৃদের অনেক দাপাদির বিবরণ জন- ! তথায় যাতায়াত করিতেছে; বিশেষতঃ আ-সমাজে প্রচারিত করেন। ঐ প্রসিদ্ধ নাবিক মরিকাহইতে চীনদেশে আগমন করিতে ঐ ধী-पूरे दाह खित-ममूम् चुमन कतिशाहित्वन, बदः (शत शार्धिमशा शमम कतिता वित्मव मुवीषी দিতীয়বার ভত্তত দীপত্ব এক অসভা জাতীয় হয়; এই প্রযুক্ত মার্কিন-দেশীয় অনেক বিশিক্ কত্ক বিহত হন। উল্লিখিত দ্বীপের নাম "হাও- । ঐ পথ দিয়া গমনাগমন করে; এবং আপনাদি-

দিগের যে প্রকার সভ্যতার উন্নতি হইতেছে, পাদরিদিগের পরিশুমে ধর্মবিষয়েও তদনুজ্ঞ পরিবর্ত্তন হইয়া উঠিয়াছে। তথায় বাঙ্কুবর্ নাহে-বের গমনের পর বিংশতি বৎসর মধ্যে রিওরিও নামা এক জন ভত্তত্য রাজা খুঁান্তিয়ান-ধর্ম গুহণ-পূর্ক এক মহাসভায় আপন পূর্বধর্মের নিষিদ্ধ দুব্যাদি ভক্ষণ করত আপন জ্রীদিগকৈ তাহা ভক্ষণ করান। প্রক্রারা ঐ ধর্মত্যাগী রাজার শাস-नार्थ विरमुश्चित्रन कतिशाष्ट्रिन, किन्छ देश्ताक-দিগের সাহায্যপ্রযুক্ত কোনমতে তাহার অনিষ্ট করিতে পারে নাই। ঐ রাজা সন্ত্রীক হইয়া বি-नार्ज शमन कतियाष्ट्रिलन: ज्याय উভয়েই হান রোগে আক্রান্ত হুইয়া প্রাণ ত্যাগ করেন। উক্ত রাজার পিতা তামেহামেহা মদেশের অনেক উন্নতি সাধন করিয়াছিলেন। তাঁহার রাজত্বের शृद्धं मार्खिदह-फ्रोल-मञ्चर्हत প্रक्रिक घीरल अकर প্থক্২ রাজা ছিল; তিনি তৎসমুদায়কে পরাভূত করিয়া আপন অধীনে আনয়ন করেন।

প্রস্তাবিত দ্বাপে অধুনা চন্দন-কাণ্ডাদি দুব্যবহুলের বাণিজ্য আছে; এবং বিদেশীয় অনেক
জাহাজ তথায় যাতায়াত করিয়া থাকে। ইংরাজ, করাসিস্, এবং মার্কিন দেশীয় রাজারা
তথাকার রাজার স্বাধীনতা দ্বীকার করেন, এবং
তাঁহার রাজসভায় স্থাপন ২ দূত সংস্থাপিত
রাথিয়াছেন। সম্পুতি হাওয়াই-দ্বীপে হোনোলুলু নামক এক দুর্গ নির্মিত হইয়াছে, তাহার
বপ্রোপরি ষপ্তি ভোপে আছে, এবং রাজার অধীনে
১২—১৪ থানা জাহাজ আছে। প্রধান-নগরে
মুদ্রায়জ সংবাদ-পত্র এবং বিদ্যালয় অনেক

গের সভ্যতা-প্রদর্শন-পূর্বক তাহাদিগের পূর্ব- বর্ত্তমান আছে। বিদ্যালয়ের সঙ্খ্যা দুই শতঃ অসভ্য-আচরণের অনেক পরিবর্ত্ত করাইতেছে। তাহাতে অন্যূম-চতুর্দশ-সহসু বালক বিদ্যাঅপর বিদেশীয় বণিগ্দিগের সংসুবে দ্বীপবাসি- ভ্যাস করে। বাণিজ্যদ্বারা তত্ত্বত প্রজারা সমৃচিত্ত
দিগের যে প্রকার সভ্যতার উয়তি হইতেছে, অর্থোপাজ্জন করিতেছে, এবং ধর্মার্থে অনায়াদে
পাদ্রিদিগের পরিশ্বে ধর্মবিষয়েও তদন্ত্রপ প্রতিবর্ষে ২০,০০০ টাকা ব্যয় করিয়া থাকে।

মোহ্যদের মত্বিবরণ।

ूं इचारमत माठ अहे या मनूरमत चाला বিত্য। মরণামন্তর মন্য।মাত্রেই আ-🎎 अक्षरेशक्षा 🎎 পন ২ কর্মানু সারে ওভাগত কলের ভাগী হইবেক। পাপিরা, নাডিকেরাও পৌতল-কেরা অন্তে অজ্জনসাব্ত ও প্রজ্ঞনিত-ছতাশনপূর্ণ নরককুণ্ডে নিপাতিত হইবেক। ধর্মশালীরা অনন্ত-মর্গসুখভোগ, ও পাপাত্মারা অবিচ্ছিন্ন-নরক্ষাত্রনা সহন করিবেক। এই ধর্মনিষ্ট ইতিকন্তব্যতা কলা-পের মধ্যে প্রতিদিন ৫ বার করিয়া মক্কার মসজিদে উপাদনা করাই প্রধান ও মুখ্য কর্মা উপাদনায় পরমেশ্বরোপস্থানের অদ্ধেক পথ অতিক্রম,উপবা-নে তাহার প্রানাদের দ্বার প্রাণ্ডি, সহসূষ্ট ব্যক্তি-দিগের প্রতি দয়াও বদান্যভা প্রকাশ করাই তাঁ-হার সামীপট লাভ**ৰূপে কোরাণে বর্ণিত আছে: এব॰** দেহশুদ্ধি ও ভূয়োভূয়ঃ আরাধনা দৃঢ়কপে আজ্ঞাপ্ত **হ**ইয়াছে। প্রতি শুক্রবারে নসজিদে যাইয়া **ই**শারো-फिट्न कार्य। करा विधिरवाधिक इहेब्राइ । करेब्रक-धर्मित जग्रज्भिकार मकानगरत अञ्चलः जीवरनत मध्या अकवात्र या वशा छे किछ। लारकद्वा नृत्व সঙ্খ্যায় চারি বিবাহ করিতে পারিবেক। কো-রাণে জ্ঞানকৃত বধ, লাম্পট্য, পরাপবাদ, মিথ্যা-नाकामान, व्यवहा-श्रमान, कदाई निद्धावाद शा-लमस्या পরিগণিত হইয়াছে। কুদীদ পুহণ, मूण्ड- शिमाहे शुन्छ हिन न।।

খাস আছে যে শব সমাহিত হইলে, সে প্র-প্রেরিত দূত, বলিয়া মানিত কি না তাছা পরাক্ষা করিবার নিমিত্ত স্বর্গীয় আত্মা তাহার भसंहरः मुहे म्वमृत्र ध्यात्र कतिशा थार्कन। তাহারা গিয়া জিজানিলে যদি সে মীকার করে, তবে सभीश नुश्र खळ्क नराष्ट्रांश कहिए समर्थ इस, নতে অভিনবিচারদিবস অবধি আপনার চরস दिछात शयाच ठाङ्गांक महानद्रकयाचना प्रद्रा करिएड हरा। सुनन्सारन्त्री करू, सद्देशकारन सद्देश-দৃত (হন) আধিরা মুন্ধুর দেহহইতে আতা পৃথক করিয়া লইয়া হায়ে কিন্তু ভবিষ্যদক্তগণের আত্রা সদেহে সংগ সংস্থাপিত হইয়া থাকে। ক্ষ্যভাত আন্মন্ত্ ব্যক্তিদিগের ক্র্যানুনারে যাতনার ভারেত্নে, সংক্রিকত হয়।

कोड़ा, मम्रशान. ७ मृदद-मा॰म-ভाজन७ चि शिक्तमित्क मूर्य्यास्य, धूमाण्डस श्थिती, मसूय নিষিদ্ধ কর্মা। মোহমুদ নিজে সপ্তদশ নারীর বাক্য ভাষি পশু-পক্ষী প্রভৃতি অনেক ২ অশুভ পাণিগুৰুণ কর্য়াছিলেন। তাহারা সকলেই বি- ভিয়ানক চিহ্ন দৃষ্ট হইবেক; কিন্তু মোহমদের নি-ধবা, কেবল এজমাত্র আবুবেকরের কন্যা আ- জের কথা এই, "পুনৰুপান দিবদে এই দৃশ্যমান ়সমস্ত পৃথিবী পরমেশ্বরের এক মৃষ্টিমৃত্তিকা ও মোলফার্নায়ের। বিশ্বাস করে যে পৃথিবীর শেষ স্বর্গ বর্ত্ত্রাকােরে তাঁহার দক্ষিণকরস্থিত হইবেক। क्रिट्र गात्रस्थत এक स्थानका कतिया नस्य क्रानीः क्रिक्नि इटेर्टिक, क्रूर्लाक **ए** মন্যাকে সমাধিহইতে পুনৰুপাপন এবং সক- ষলোকন্ত সমস্ত ব্যক্তি এককালে ধুংস হইয়া যাই-লের দোষ গুণ বিচার পূর্বক যথাবিহিত পুর- বেক। অনস্তর দুন্দুভি পুনর্খ্যাত হইলে নকলেই ক্ষার ও দণ্ড প্রদান করিবেন। ঐ দিবনের গাত্রোতান করিয়া ঈশ্বর-দশন করিবেক। কোরাণে নাম "চরমবিচারের দিন"। তাহাদের দৃঢ় বি- বলে "পর্যেশ্বর আপনিই তাহাদের বিচার করি-বেন; এবং যে শরীরের যে আত্মানে তদনুরূপ মেশর একমাত্র অধিতীয়, ও মোহমদকে তৎ- পুরকার তাঁহাচইতে প্রাপ্ত হইবেক। নাস্তিকেরা একেবারে নরকগামী ছইবেক। আভিকেরা স্বর্গ সুখভোগ করিবেক "।

কোরাণে অনেক প্রকার নরক বর্ণিত চট-য়াছে। শিষ্য ভয় প্রদর্শনার্থ মোহমাদও পাণ-ভেদে নরকভেদ সংস্থাপন করিয়া গিয়াছেন। नकत्वत भव्यः मृत्रमाखि शामुकाविद्दीनशाम অথিতে সংস্থাপন করা বিহিত। দগ্ধ-তৈল-পূৰ্ণ-কটাহে প্ৰক্ষিপ্ত হইয়া ভঞ্জিত হওয়া নাত্তিক-দের দণ্ড। অগ্রে নাস্তিক থাকিয়া পশ্চাৎ মোহ-মদীয়ধর্মাবলম্বন করিলে পর তাহাকে অগ্রে প্রায়শ্চিত্তস্বরূপ নরক যাতনা ভোগ করিতে হয়, অনন্তর তাহাহইতে মুক্ত হইয়া স্বৰ্গে অধিগ্ৰ-পিত হুইয়া থাকে। উক্ত ৰগ ও নরক না-काम दिवन मनाधिक इंटिक की वाकाद है खान कहें- सक मूर्थ पृथ्या लाखद स्था खात खाता का ना-বে ভাষার প্রচার নাই। মোহমাদ শিষ্যদিগকে নক এক লোক **বিশেষ ভাছে। যাহাদের** জানাইয়াছেন যে আমি পুন্কথান-বিষয়ে দেব- পাপ পুঞ সমানাংশ তাহারা ঐ লোকে দূত কিবরেলের সন্নিধানে প্রশু করিলে পর তিনি গিয়া অবস্থিতি করিবেক। **নরকের উপরি ভাগ** এ বিষয় 'জানি না' বলিয়া উত্তর দিয়াছেন। দিয়া 'পুল্নের্ড' নামক এক সেতু আছে, मुनल्मारनद्री वटल वे চत्रमविচादित श्रीक्कारल जाहा किनविध मुख, अ मृत्रधातारभक्ता अधिक তীক্ষা সকল মনুষ্যকে তাহা দিয়া গমন করিতে হৈব। যাঁহারা ধার্মিক ও সৎ তাঁহারা অবলীলাজমে চকিতের ন্যায় পার হইয়া যান; এবং যাহারা পাপিষ্ঠ ও অসৎ তাহারা যাইবার উদ্যম করিবামাত্র ঐ সেতুর নিমুস্থ অতলম্পার্শ মহাঘোর নরকে পতিত হয়।

মোহমাদ মুর্গ সপ্ততল বলিয়া ব্যবস্থাপিত করেন! তাহার উপরিস্থ সপ্তম তল নিরতিশয় সুথধাম; তাহা মোহক্ষদের আবাদ স্থান। ইহার षादि भारमान्वाभी-नामक এक कल्लद्र উৎস चारह। साह्यमीरव्यत वर्त (य व वाशीव वक চমস জল পান করিলে জম্মের মত এককালে পি-পানা নিবৃত্ত হইয়া যায়?। স্বর্গীয় ভূমি কেবল ক-ख़्ती कुक्रुममया मुका ও याकू पित उथाकात প্রস্তরন্থানীয়। প্রাসাদের ভিত্তি সুবর্ণ তত্ত্রত্য ও রজত বিনির্মিত। বৃক্ষসকলের কল্পাদেশ বর্ণময়। তন্মধ্যে প্রধান বৃক্ষের নাম "তুবা" অর্থাৎ সুখ-তৰু। বোধ হয় অন্সদাদির শাক্তোক্ত কম্পতক এই সুথতকর আদর্শ বরূপ, তদ্বর্ণনা শুবর্ণানন্তরই তাহার কম্পেনা হইয়া থাকিবেক। ঐ তব্দ মোহখ-দের প্রানাদ স্থিত। দাড়িম্ব থজুর, আমুর প্রভৃতি। উত্তমোত্তম ফলভরে ঐ বৃক্ষের শাখা-সফল অব-নত হইয়া মোহমদীয় ধর্মাবলম্বাদিগের প্রত্যেক ব্যক্তিরই বাসস্থল শোভিভ করিয়া বিস্তৃত আ-ছে। ঐ বৃক্ষের মূলাবধি অনন্তক্রোশ পর্যান্ত पूष, सम्।, मधूश्रक्षि नूरमञ्ज पुरव। इ सम-तकन প্রস্তুত হইয়া রহিয়াছে; ইহার সোতে মোহ-মদের বাপা পরিপ্রিত হয়। মরকত হারকাদি শণিষারা ঐ হুদের নোপান-নকল দির্মিত হই-য়াছে। যে সমন্ত ৰগীয় শোভা বৰ্ণনা করি-লাম সে সমস্তই অধ্যুদ্ধাহিগের মোভাহইতে व्यथतीक्षः। मार्यपन्त धर्यविश्वानीता मार् नकत

অপুরোগণের সহিত সুথ সম্ভোগ করিয়া থাকে। **माह्यम बीग्न धर्म व्यवनयन क**राहेदात करनः नियामिशक अरे अत्राचना मियास्न, य अरे **धर्म विश्वाम कदिल ऋख अर**र्ग गिया पूथा কেণন্যক্ত অপূর্ব শ্যায় শ্রন ও নানা জা তীয় অলৌকিক স্বাদ্দম্পন্ন কল ভোগ এবং অপুরোগণের সহিত বিষয় সুথ সম্ভোগ করিতে সমর্থ হইবে। কোরাণে বলে "অতি নিক্ষ ওণ সম্পন্ন ধর্ম বিশ্বাসীও ৭২ জন সর্গের অপুরাভোগ নিমিত্ত প্রাপ্ত হয়। তচ্চতাত তাহাদের মত্যলো-কীয় বিবাহিতা জীরা তথার উপস্থিত থাকে। বে বাদার্থ এক মণিময় আবাদ ও ভক্ষতার্থে লোকা-তীত সুৰাদু ভোজ্য দুব্য প্ৰাপ্ত হইবেক। ভাহার **অবস্থার গতিকানূসারে** তাহার পরিজ্ঞার গৃহা-লঙ্কার দুব্যজাত প্রস্তুত হইয়া থাকে। অপর সে ব্যক্তি এ সকল বিষয় রসের আশ্বাদন জন্য অপ-রিমিত ক্ষমতাশীল—অনস্তকালস্থায়িনী— যৌহন-দশা প্রাপ্ত হয়। তথায় প্রতি বিষয় কামনা করি-বামাত্র তাহ। তৎক্ষণাৎ পূর্ণ হুইয়া থাকে।

নোহমাণীয় স্বৰ্গ তাঁহার স্বকপোল কল্পিত নহে। ইহার অধিকা॰শ যিহুদী, পার্মি, ও ছি-দুদিগের এবং কিয়দ॰শ খুষ্টীয়ানদের মত হইতে তথকত্ক উদ্ভ হইয়াছে। রা. না. বি.

সিয়াগোষ।

তীয়পর্বের ২-৭ পৃষ্ঠে আমরা বিভালি ভালাদিপশু-শুনার সাধারণ-লক্ষভালি ভালাদিপশু-শুনার সাধারণ-লক্ষভালা পাঠকবর্গ অনায়াদে এই পশু-শুনাকে
ভালা-পশুশুনাইত পৃথক করিতে সক্ষম ইইবেন।
উক্ত শুনার প্রধান পশু সিংহ; ভালা দেশ



मित्राद्धां व

বর্ষায় এবং শক্ষরিকা-দেশজ। ভারতবর্ষায় **দিংহ ও বর্ণাদিভেদে পাঁচ সাত** উনিথিত-শেণীত ছিতীয় জাতির নাম "পুমা" সিয়াগোষের অবয়ব য়ৰ সিংহের জুল্য, কিন্তু ভাহার কেশর। হয় না। দৈর্ঘ্য-পরিমাণ নাসাপুষ্টতে জাতিকে নানাবিধ চিতাব্যাঘু নিৰ্ণীত আছে। हरेश थाउँ।

ও বণভেদে দুই দলে বিভক্ত আছে; ভারত- এই পশু দেহদৈর্ঘ্য, পুক্ষাবয়ব কর্ণ গুল্ছ, পাত্রণ, ও অফ্রিকাদেশজ সি॰হ কটাবর্ণ। আছে। উপরে মুদ্ভি-চিত্রে এতদেশপ্রসিদ অথবা শুমার্কিন বিশ্চাল; ঐ জাতীয় পশুর অব-্ব পশুর অবয়ব বৃহৎ-কুরুরাবয়বের তুলা; ইহার তদীয় তৃতীয় জাতির নাম ব্যাঘু,; চতুর্থের নাম ১৮০ হস্ত; উচ্চতা ১ হস্ত। দেশ ও পাতু-िछ। उपलब्धत शक्षमान्धि विश्मविख्य-शर्याख्य । उत्पाद इहात वर्गाख वास्मा एक एरेमा शास्त्र, व्यक्ताल-श्राम-रम्हण देशास्त्र वर्ग श्राम একবি॰শতিত্ম অবধি কএক জাতিতে বিড়াল শুকু, এব॰ দেছে এক প্রকার চিত্র সুস্পাই বনবিভালাদি কএক পণ্ড নিনীত হয়; এবং বোধ হয়; কিন্তু প্রিয়াদেশে ঐ বর্ণের গাঢ়তা ख्दशकाद "विश्वारभाष" कर्याद "क्कक्वं।" खिन्ना म्गाबद् वा खरक्किक स्विम स्कि खे शब्दारज्ञ कर्नार्यु क्करकरणत अकर शक् हा यात्र, अव किल्लाकत विकास का शलरम्मः अवश् अस्मारमा अकुः नारमः विश्वा পুচ্ছ কটাবর্ণ এবং তাহার হানে ২ অজুরীয়কবৎ কৃষ্ণ রেখা দৃষ্ট হয়।

शृईकारन बहै शरुवियरय जरमक चनीक भण्य প্রচরিত ছিল। বিলাতীয় মনুব্যদিগের বোধ क्रिन य निवारिंगिय अये ज मूच्यम मी य म प्रेखता-দির ব্যবধান থাকিলেও তাহার অপর পারের বস্তু দেখিতে পায়। কেহ ২ কহিত যে ইহার मृत्व मिन्यूकारि सर्वा। अञ्चलनीय मन्त्राता, वित्मयण्डः मूनल्यात्नद्रा, करण् स्य निद्यारभाष হতার মন্তিক ভিন্ন অন্য কোন বস্তু ভক্ষণ करत नाः अवः -छ० श्राश्च / रर्थ इस्त्रोत मस्तरकाशित আরোহণ করত প্রথমতঃ তাহার নয়ন বিদার্ণ করে, ও তদনন্তর মন্তক ভগ্ন করিয়া ভদস্তর্গত মেদঃ ভক্ষণ করে। অধুনা বলদেশে জানা-লোক এ প্রকার বিভাবিত **হ**ইয়া**ছে যে এই সকল** বাক্য যে কেবল মাহাত্ম্যুচক তাহা বর্ণ-করি-वात आंद्र প्रारम्भन नाहे; शाठकमहामारमञ्जा के वाका भुवनमाबहै छाहा व्यनायात्महे व्यनूखव করিতে পারেন।

विज्ञान-(मुनी ह शख्या द्वित है नयम चि छेडडून। वह श्रयूक वक्षी नामाना श्रुवान चारक् या, ''ताद्व विज्ञारनत हक्षू करन।" निम्नारभारवत नम्म विज्ञानानित नम्म चरणका ह विरम्य छे-ख्वुन, वाच क्य, चना काम शख्य नम्म वज्ञा-म्म উड्डून नरम, मुख्यार- छवर्गन या चानीक भारत्भेत श्रहात हहरव हमा काम मर्ड चाक-या नरम।

निशारिशास्त्र बंधार विशासकः रिशिष्ट मृष्, किन्न हैश छेन्द्रम्भ सनूर्यात वसीवृष्ट इत नाः किन्निः हिः मृष नर्वात्र छमानतः वर्धमान भारक। विशासाम नाम अस्ति सक्ति स्वार्थमान नाम्यिकशास वा- হার কনিও নছে। ঐ পশু সিপ্তকে দেখিয়াও ভীত হয় না; অনায়ানে অকুতোভয়ে তাহার নিকটে শিকারদারা থাদ্যদুব্য আহরণ করে। বোধ হয় অকেশে বৃক্ষারোহণদারা সিণ্হহ্ইতে ত্রাণ পাইতে পারে বলিয়াই ঐ সাহস হইয়া থাকি-বেক; কারণ বৃক্ষতর-চিতাকে সন্মুখে দেখিলে রিয়াগোষ তাদৃশ সাহসিকতা প্রকাশ করে না।

বিয়াগোষ শিকার করিয়া থাদে।র-সন্তুহ করে, **७वः उमर्थ** दश्युविङ्कामिव**ः तक्ष**नीर्यारग বন-ভুমণ করিয়া থাকে। নক্ল, রেজি, কাঠবি-ড়াল প্রভৃতি কুদু গণ্ড ইহার প্রধান থাদ।; তদাহরণার্থে নিয়াগোষ ব্লেচ্ছ ভুমণ করি-তে অভ্যস্ত পটু। ছাগ, খেষ, ছরিন, শশ-কাদিও প্রস্তাবিত পশুর অথাদ্য নছে, এবং হংব কুকুটাদি পক্ষাও তাহার নুগাদ্যমধ্যে भग ; कलकः निश्वाभिष मुथाना मार्न शाहरनह ভক্র করে, কিছুই বর্জন করে না। অপর কা **কৰা অভ্যন্ত কুধিত হইলে স্ব**জাতীয় পশুকেও পরিত্যাগ করে না। কথিত আছে যে মেয-माः नार्ट्य এই পশু नूष्ट्र थमन कविश्वा मिय-भारि अरवंभ करतः । এवः वृक्तमून ७१ का उनामी পশুর ক্ষে বৃক্তইতে নিপতিত ত্ইয়া তাত্যর मःशाज्ञ करत्।

बहे भछता चलाछ (मानिक्रिभागृ, बदः क्रीवहिश्मा कृतिया चारमे जाहात (मानिक भाम कृतक
भारत कृतात केरमुकानुमारत माश्म-कृक्ष करतः;
चलाछ कृतिक ना हहेरल (मानिक-भारतहे मुख्य
थारक, माश्माहारत केश्मुक हत ना। या महन्न
परित्म मिश्रहत चार्षिका चारक क्राकात किश्माहिक कृतिया ना कृतिया मिश्रहत चार्षिक हारमान बन्नः मृभन्ना ना कृतिया मिश्रहत चन्निया
हर्गा कृतक काहारक चामाम्यामा मुख्य कृतिया
यात्र, अवश्माहारकत क्रुकावरम्य मुख्य कृतिया **(रहें (मर्ड)" अनिक इ**रेशाहि।

সিয়াগোষের চর্ম এবং লোম অতি কোমল, অত্যস্ত সুন্দর; ধনী ব্যক্তিরা তাহার পরি-অনেকে এই পশুর সংহারে নিযুক্ত আছে.;় ৮--- সহসু সিয়াগোৰ-ত্ৰ বিক্য়াৰ্থে আনীত इहेडा थाटक।

গলিবরের ভুমণ বৃত্তান্ত।

ভূভীराधि।य ।

্রুবকার কর্ডুক লিলিপট দেশীয় সামাত্য-সমভা-সমুক্তিত মনোনীত পথ্যতিতে আকর্ষণ করণ। ভত্ততা সভার সমালেছে পূত্রকৈ বিনোদ বর্ণন। কোন বিশেষ নির্নে বৰ করিয়া প্রস্ক্রাকে স্থাপনিতা প্রদানের বিবর্গ।

শ্রম্প্রাক্তির বিভিন্ন বেল বিভিন্ন বেল বিভিন্ন বেল বিভিন্ন বেল বিভিন্ন বেল বিভিন্ন বেল বিভাগ বেল পরিতৃষ্ট দেখিয়া বোধ করি-涔涔漭 লাম আমার অবিলম্বেই বন্ধন মোচন হটবেক, সন্দেহ নাই; কিন্তু এতাদৃশ অবস্থায় তাহাদের মনে দৃঢ় বিশ্বাস জ্ঞাইবার জন্য यथा-নম্ভব আর কএকটি প্রণালী ব্যবস্থাপন করিভেও ত্রুটি করিলাম না। আদে তদ্দেশবাসিরা ক্রমশঃ मन्द्रक रहेशा व्यानिएड अदः निर्दिष्यं व्यामात निक्षेड्रेट हिन्दा याइट नामिन, कथन २ আমি ভূমিতে শয়াম হইলে ভাহাদের গাঁচ ছয় खन जागात मछक चारतार्ग शूर्वक मृद्धाः क्रिक। श्रित्माम वानक वानिकांश क्रीफ़्राइस

दिन्याशन करतः , अहे निमिछ हेरात नाम ''निः- भागात क्याकारन श्राविष्या नुकाशिष्ठ रहेरछ नागिन। उৎकारन चामि ठाश्रापत प्रभोग्न छा-যায় কথোপকথন বুঝিতে ও কহিতে এক প্র-বিশেষতঃ শীতলদেশবাসি-সিয়াগোষের লোম কার পারক্ ছিলাম। ইতিমধ্যে এক দিবস রাজা আমাকে কোন দেশীয় কৌতুক দেখাইয়া সম্ভষ্ট क्टम मी उकारन वावश्रंत करतन। अहे कातन कतरात मानरम महाममारताह कतिया हिरलन, किन्न আমার মনে ভাহার কিছুতেই পরি তুঞ্চি হইল এক হছ্সন্-উপসাগরের ভটহ্ইতে প্রতিবর্ষে না। তমধ্যে এক প্রকার রজ্জুন্ত্যের ন্যায় কৌ-তুক হইয়াছিল। তাহা তাহারা ভূমিহইতে প্রায়ঃ সার্দ্ধ হস্ত উদ্বেধিক গাছে সৃক্ষ শ্বেত রজ্জু বিস্তার করিয়া সম্পন্ন করে। এ বিষয়ের বর্ণনায় গুল্পের किथि वाङ्गा कतिए मानन कति পाठेकवर्ग ञ्चित्रिक्टिञ्ज भाठे कतिए व्यवरह्मा कतिरवन ना।

> যাহারা এ রাজ নভায় বিশিষ্ট প্রকারে কৃপা-ভালন হইয়া উচ্চ পদ প্রাপ্তির প্রার্থনা রাখিত তাহারাই এ সমস্ত ব্যাপার ষহত্তে সম্পন্ন করিয়াছিল। বাল্যকালাবধি ভাছারা এ বিদ্যায় नूर्निकि इरेश थाकिए। ये मकन वाकि श्रायः मदः भक्ता ७ अधिमा इहें ना। कान ब्राक्कीय কার্য্যালয়ে কোন রাজকার্য্যচারির মরণ বা অপ-त्राथ विरमयु निवस्ता **७९**९म मृन्। इहेरल खे नकन नर्वकिता कार्यार्थीताक्रमभीरभ कर्य था-র্থনা করে; ভাহাতে রাজা ভাহাদের মৃত্য বিষয়ে পরীক্ষা লন। সর্বাপেক্ষায় যে ব্যক্তি অধিক উদ্রে नाकाहरू भारत ताकाकात्र (महे ब/कि उर्भार অভিষিক্ত হয়। পাছে:ভুলিয়া থাকে এই আল-কায় প্রধানামাত্যেরা উক্ত বিষয়ে ৰ ২ সৈপুৰ্য প্রদর্শন করিতে আদিই হইত, এবং তাহারা যে তাবৎ পর্যান্তৰ ভবিষয় বিক্ষত হয় নাই, ইহা ब्राक्तिक मुनिधिक क्षिक। क्षित्रमाण मानक एका-नाभारकः शक्ति अस वहत हुन्तू वेशक्षम क्रियाह जन्मकि एतः अवियदत्र द्वारकात्र अस्तिक कृतिक

इहेरल जाहान लन्क चल्रलः कक तृक्त चिथक पृष्ठे হইল। আমি ভাহাকে এক গাছা রজ্জুর উপরি দিয়া একোদ্যমে বারংবার মাতা ঘুরাইয়া পড়ি-তে স্বচকে দেখিয়া আসিয়াছি৷ হয় পক্ষপাত इक्टेरवक, विलाख कि, वामाई मट्ड प्रधान ताक-कार्याद्राक वामात उज्जा अक सन वस् (तलाजु-मान व विषया वे कायाधारकत नीरा इह-লেন। অবশিষ্ট প্রধান ২ অধ্যক্ষেরা তাহাহ্ইতে উদ্বৰ্তিয়া গেল।

এতাদৃশ কৌতৃক করণ সময়ে কথন ২ আক-ज्ञिक विशम् अविद्या थाटक। अकना चामि सहस्क मुहे जिन जन जामृन को जूकीक ज कत्र न मरः হস্ত পদাদি ভাঙ্গিতে দেখিয়াছি। এতাদৃশ ব্যা-য়াম প্রদর্শনার্থ যথন অমাত্যবর্গের প্রতি অনু-মতি প্রদত্ত হয় তথন তাহাতে ভাহাদের পকে পূর্বাপেক্ষায় আরও অধিক বিপদ্ঘটিবার সম্ভা-वना इरेशा উঠে। विकिंगीयावृद्धित वनोजूङ इरेशा পরস্পার বিরোধ করত তাহারা এত দূর রজ্জ্ব-লঙ্ঘন করে যে অন্ততঃ একবারমাত্র অধঃপতিত না হইয়া কেহই নিষ্ঠি পায় না, বরং ততোখিক হইয়াও থাকে। আমি নিশ্চয় অবগত হইয়া-ছিলাম আমারই উপস্থিতির দুই এক বৎসর পূৰ্বে ফুন্ৰ্যাপ্ নামক কোষাধ্যক্ষ এই ব্যা-পারে নীচে পড়িয়া গিয়াছিল, ভাগ্যে ২ রাজার শয়নের একটা গদি যদি ভূমিতে কেলিয়া না प्रथम या**रेज, जारा रहेला (म ज्यश्रीत रहे**म्री যাইত, **সম্পেচ্নাই**!

তথায় আরো এক প্রকার খেলা আছে, তাহার को पूक क्वन नमम विटनाय बाजा, बाखी, अवः र्थानामाज्यक्रे स्थान काम। छाहार जाका म्बार्क देशकि मोस, इतिए, इस अरे जिम

শেষ অনুগৃহ ভাজন করিয়া পুরক্ত করি-তে রাজা মনস্থ করেন, তাহাদিণের জন্যই এ সকল সূত্র প্রস্তুত করা যায়। এতাদৃশ মহতী ক্রিয়া রাজধানীর প্রধানালয়েই সম্পন্ন হইয়া থাকে। কাৰ্যাৰ্থির। তথায় যাইয়া আপন্হ গুণাগুণ বিষয়ে পরিক্ষিত হয়, জুহোতে কাছার কেমন ক্ষিপ্রকারিতা তাহা সুব্যক্ত হইয়া উঠে। এ ব্যায়াম পূর্বাপেক্ষায় নিতান্ত বিভিন্ন। আমি ইহার একাণ্শগত তুল্যতা আর কোন ব্যায়ামে प्रिय नाहे। वे द्वारन ताका सहरत अक यहि वातन कतिया थारकन, जाहा पूरे पिरक **नमान** ও বরল, কিছমাত্র সক মোটা বোধু হয় না। পদপ্রাথির অগুসর হইয়া ক্রমে ২ কখন বা তাহা উল্লেখন কথন বা তাহায় নাচে দিয়া স**ক্চিত** শরীরে ভূয়োভূয়ঃ অগু শশ্চাৎ ভাগে যাতায়াত করে, লাটি গাচটি তুলিয়া নামাইয়া ধরিলেই তাহাদের উক্ত দুই প্রকার গতির অবলঘন করিকে হয়। কথন ২ এ যতি রাজা এক দিগে ও প্রধান मती व्यन्। फिरक धांत्र। करत्न। कथन व ठार **ष्माधात्रवक्ताय म**जिह्ह खंड थोटक। हेहारम्ब खं ব্যক্তি সতর্কতা পূর্ক ঐ কার্য্য সমাধা পর্যান্ত সেই যায় বারণ করিয়া পাকিতে পারে তাহায় পूतकात ऐक नोनवर्न मूब अम्ब रुग्न हि রম্ভ, এবং ভৃত্যক্রে है अथानगात के मजाम या रोत किएमिन छाम्म मूख मूरमाভिउ ना वि

बबद व्रक्तिहे चश्रतिका। रेजनारमञ्ज । ब्राक्षमणुदात स्वाहेक सक्का श्राह्म नियुष्ठ भागात नमूर्थ উপनी छ हरेतार छ। हात क्रामर निः मझ रहेश छेठिन। बनिए कि पानर त्राचत्र किम नाहा मक्ष त्राध्यमः। याकारक १ वि- कामून शर्म प्राह्म एवं प्रकृति हम्सा स्टेश

আমার পাদের নিকটে ২ আসিতে লাগিল। আমার মতে সমত হইলে পর আমি তাহা-(तक, भ याहा इंडेक, आबिख अक मिन मो-ভাগ্ত্রেনে হাজাকে অতি অভুতরূপে নম্ত ্বতের মত মোটা দুই পাদ লয়া কএক গাছা : नाहि जानावेट कहिनाम। लाहाट जिनिए তদণুসারে বন্য লোকদিগকে ভাহা স্থানিয়া উপান্ত্ত করিতে আদেশ করিলেন। পর দিন প্রভাতে ছয় জন বুনো লোক প্রত্যেকে আট ২ ষোড়া যোতা এক ২ গাড়িতে দেই দকল বেত্র ्वाकाहे कहिया **चामा**त निक**ট ल**हेया **चाहेन।** লামি ভাষাক্টতে নয় গাছা যতি **লইলাম।** এবং ডৎনমুদায় ভাড়াই পাদ চতুরসুকোরে मृप्रकरण ভূমিতে প্রোথিত করিলাম। অনন্তর শার চারি গাছা লইয়া প্রোখিতপূর্ব লাটের ভূমি हाकः मूरे भार डेफ बाक्षित नात्र कात्रर ের বাধিয়া বহা পোতা ঐ নয় গাছ। লা-र्वे के किया है। किया है। किया है। किया है। किया है। इस के किया है। किया के कि हारक्त्र हारन्त्र मञ चार মাভূলি চারি গাছা যতি ঐ ক্**মালহইতৈ পাঁচ** ুকল উচ্চ হইবাতে চতুর্দিকে **ঢিপি ঢিপির ন্যায়** वाव ६३८७ वाशिल। अहं कर्य मात्र इहेटल लंड यामि डाजाइ निक्ठे किश्वाम मन्त्र २८ सन ্ৰিন্থ অশ্বাৰাট্ নৈন্যকৈ ভাষার ভিতর যাইয়া (अना क दिए पारम्भ ककन। छार्राष्ट्र बाक्रा

যথম আমার হাত ভূমিতে পাতা থাকিত তথম দিগকে একে২ হাতে করিয়া তুলিয়া লইলাম। প্রধান ২ অখাবারেরা ম ২ অখকে আমার সেই তথন তাহারা আমা প্রে আকচ্ এবং নায়ুখ कां वाह्याक्टि निका पिछ। अकमा नमारिक किला तीजिमक अकब क्रेनामां जाराता पूरे এক জন শিকারী প্রকাণ্ড এক শিকারের যোড়া দলে বিভক্ত হইয়া পরম্পার মিথ্যা ভড়াছড়ি চড়িয়া পাজামা ও জুতাগুদ্ধ আমার জন্তযা, করিতে ও ভোঁতা তার ছুড়িতে এবং নিচ্চোষ ডिक्नाइं> हिल, कल का এ सहालक्क विलास क्रे- : व्यनि लहेशा (क्र शलायन (क्र काशांदा) शक्का-कारमान हरेए वाशित। चन्छिरिवास छाहा-रित युक्त वियस्य अ**ञामम निश्**वा श्रकाम शहन করিয়াছিলাম। আদে আমি ভীহোকে নামান্য হৈ বুঝি তেমন আর কোথাও কথন না দেখিয়া थाकिय। পোছা ২ यष्टि পুতিয়া मक्षनाकात्त वृष्टि দেওয়া গিরাছিল বলিয়া তাহাদের স্ব ২ সো-টক সহিত অধঃপতনহইতে নিস্তার হয়। এতা-দুশ অজুত ব্যাপার দর্শনে রাজার মনে ২ এমন আনন্দ জ্বিল, যে তিনি সেই উৎসব ক্রমা-গত किছু দিন চালাইতে আদেশ করিলেন: এবং পরম সভোষ পূর্বক এই আদেশের কথা বৈৰ্যদিগকে শুনাইবার জন্য আপনাকে বেড়ার উপরি তুলিয়া ধ্রিতে আমাকে কহিলেন, তথা यथा यथकिष्धिश्वाल बाब्बीत्व धारताचना मिर्ज লাগিলেন; "তুষিও উহাকে দিয়া চৌকী শুদ সোমাকে তুলিয়া ধরিতে দেও, হানি নাই; **ाश इहेत्व याहा किছू अ इत्य इहेट उट्ट नक-**লেই সর্বতোভাবে দেখিতে পাইবে"। কি স্মা-नमः ! अञाप्ना कृत्र्रातत नमात्र, य कान पूर्य-টনা ঘটিভেছে না যে আমার পরম সৌভাগ্য বলি-য়। মানিতে হইবেক। কেবল একটি বার মাত্র এক क्न कारश्रानद्र अकृष्टि गर्डक याजा चिर्वरात त्यहे (वःहाग्न (वष्टेन कदा) चामात क्यांक अक शहाबाक कविशास्त्रिया। **काहारक छर कर नाज** ভাষার পা ভাষাতে বিশ্ব ক্ইবয়তে শ্রীকার নহিত ৰেটকটি উত্তালপাদ হুইছা পড়িয়া সেল।

আমি তাছাদের উভয়কেই অবিলমে তুলিয়া সুস্থ হিনতে সহসাধিক হস্ত অন্তরে হয়ে লেউট সাহেত ১৪০ করিলাম। পরে সেই ছিদুটি এক ছাত দিয়া হস্ত উচ্চ কতকন্তলি তক দেখিয়াছিলেন, রখ্যভাবে এন আছাদেন করিয়া সেনাদলকৈ অপর পথ দিয়া আন্থা হইয়াছিল, কিন্তু তাছার উদ্ভেদিকা শক্তির বিশেষ বাহির করিয়া দিলাম। রা. না. বি.

भाक्उ-ज्राणा।

मिশভেদে উদ্ভিক্তা-ভেদ।

शमीयतीय অতুना कक्षात वर्गनार्थ উखिन्द्र-🗲 🚟 वश्चत्र जात्नाघ्ना नित्नय कनमास्नि। 🗳 ্রস্তুর প্রতি দৃষ্টিপাতমাত্র তাহার অনু-ক্ষ্ণার কত বিষয়েজনক প্রমাণ প্রতীত হয়! সীবের আহার-নিমিত্ত তিনি বসুজরাকে কি আশ্চর্যা উৎপাদন-ক্ষমতা প্রদান করিয়াছেন ! ঐ ক্ষমতা-প্রদাদে কত কোটিশঃ তরুলতাদি প্রতাহ উৎপন্ন হইতেছে! যে স্থানে নয়ন-निश्काल कदा यात्र उधायह उँछिछ-शनार्थत मुकि हय। গ্রামা-মণ্ডলের উত্তপ্তবায়্হইতে হিম-মণ্ডলের চিরমীহার-প্রান্থ, তথা সমৃদ্রের লোক প্রসিদ্ধ-অতলব্লার্শ-রার্ভ-হইতে, অত্যুক্ত পদ্ধতের শিশুরাগ্রপর্যান্ত, কোন স্থানে তরুলতাদির অভাব নাই। মেলিল্-ছীপে, যথায় বর্ষের দশ মাদ ভয়ানকশীতের প্রাদুভাব থাকে এক যতেতা বারবা-উষ্ণতার বার্ষিক গড় ২ তাপাৎশমাত্র, তথারও তৃণ, শৈবাল, মাদা, গোলালা প্রভৃতি অনেক 🖏 হইয়াছে: কাপ্তান্ পারি তথার এক সপুকা রাষ্ট্র कुलम् उक् पिथियाष्टित्नमां स्टा९ ताथ इस्ट शाद्व ষে চিরনীহারাবৃত-পর্বত-শিখরে কোন উদ্ভিজ-পদার্থ নাই, কিন্তু সে ভুম মাত্র; সোস্সূত্র লাহেব লপ্রা ক্রিয়াছেন, যে চির্নীহারের উপরে এক প্রকার ছাউ সূত্ম শৈবাল জিমিয়া থাকে, সামান্য নয়নে ভাছা প্রভাক্ত হয় না, কিন্তু এই নীহার দাবিত করিলে তাহা পায়ু-वर्षर वास इश।

জ্যোতির অভাবে তরুলতাদির অত্যন্তাভাব হয় না; থনি ও গুহার মধ্যে নানা প্রকার ছতাক (কোঁড়ক ব্যা-কের ছাতা) ভেশীজাত পদার্ঘ জ্যিয়া থাকে। দক্ষিণ অমরিকার কুমানা-প্রদেশে কারিপু-গুহার মধ্যে ভদারু হইতে সহসাধিক হস্ত অন্তরে হয়ে। লড়ট সাহেন ১।। হয় উক্ত কতকগুলি তক দেখিয়াছিলেন, রশ্মাভাবে ৫০-হার পত্র-সকল স্তর্ন্ধর্ণ ইইয়াছিল, এবং অন্যনের ও অন্যাধ্য হইলাছিল, কিন্ত ভাহার উদ্ভেদিকা শক্তির নিশেষ হানি হয় নাই। কল-মধ্যে লড়াদি ক্মিতে সকলেই দেখিয়াছেন, শরন্ত ইহা অভি আশ্চন্য যে কোন ২ ঐ জলজলত। ভানক অভি রুছ্ৎ রুক্ষাপেক্ষায়ও দীয়া। আহলান্তির মহাসমৃদ্যের মধাভাবে এক প্রকার শৈষাল শতাপিক জোশ স্থান নাপের। আছে; দূরহইতে ভাহা জল প্রানিত ক্ষেত্রে নামে বেলার হয়। অনেক জলজলতা ১৫০ হস্ত জলের নিম্মুল্যকরপে ভর্নিতেছে।

কেবল উষ্ণতার দৃক্ত জ্মিবার ছানি হয় না। ভা-রতব্যে আইন্লভ ধ্পে তথা জনাত্রে জনেক উষ্ণ-প্রসূত্র (দীতাকুণ) আছে, যাশ্রি গণ এমত উষ্ণ ফে ভাষা ল্লাকিরিলেট হার দল্প হত্যা লায়, এবং তা-হাতে তথ্য নিকেপ কাতেশ শীৰু অল প্ৰয়ত হয়; অথচ তন্ত্ৰলে নানাবিধ বতা জনিচেছে। **গন্ধেও তরুর বিশেষ হানি হয় ন।। জনেক আংগ্রেড-**পকতের গদ্ধকপূর্ণবাচে কএক প্রকার ভল্ল অনাহাদে <u>क्रिया थात्क। कन्द्रः भूत्याक्रमानुष्रं भ कन् भावत्न</u> উভিজ্ঞা तञ्ज मनल कारन कांग्राट পारतः, रकतन জলাভাবেট তাহার উৎপত্তির হানি হয়। নাস্বা এবণ গোবি মঞ্জুমিটে জলের অহাস্তাভাব: তথায় বৃষ্টি, মেছ, হিম, শিশির কিছুমাত্র দক্ষ হয় না; ক্রমাগত **মারাত্মক উফ ওল্প,** বাযু বহিতেছে, এবণ ত**ন্থা**র। তত্তে**ত**), **অগ্রিকণাবৎ তাল্**কা-সকল সঞ্চালিত হইয়া **সকলেরই**ু প্রাণ সংহরণ করিছেছে; জী

বোধ হয়, সম্ভাই উদ্ভিদ্ধ বস্তুর অবস্থিতি আছে।

পরস্থ নকল দেশে এক প্রকার তরুলভাদি জন্ম নার্ দেশীয়-প্রাক্ত-ধর্ম-প্রদক্ষে উক্ত হইয়াছে, যে উৎপত্তি-বিষয়ে প্রভোক দেশের আবাস্থরিক ভেদ আছে; কোর দেশে ধানা, কোথাও গোধ্ম, কোথাও কানাবা-কাল কোথাও রোটিকা-কল, কোথাও ব্যক্ষা, কোথাও থাকি কোথাও কাভিয়া, ইত্যাদি দেশভেদে বিবিধ হয় কিছে। কাল্ড কোন এক দেশের পুরা অন্যান্তিকং উৎপত্ত ভবতি দেখা সার ম_া বহুদেশে ধনাস জীসন্ধার, অথচ হিমপুদান উত্তদেশ তালার নামমাত্র পুচার নাই: ভিরম্নুত্র-ছাপেও প্রা প্রাপা নাই। সমম্বলে দুক্তি-ফল প্রচরতাপ করে, কিন্তু গুরামধ্যেল তাই। কুরোপি দক্ষিণাচর ২২ না। দলত (ধ সকল কারণে (দশ্রে প্রেক্ত-সংশ্বে (৪৮ ৬৪) তাহাতে **তত্তা সুক্র**-লক্ষাদিরত সমাগ (ছিদ এরসু) থাকে।

গুৰ্কত-সন্ধান্ত্ৰ প্ৰাম কৰ্ত্ৰ উষ্ণতা; মৃত্ৰাণ উমত: উ ছেজ-ভেদেরও প্রধান কারণ হরিয়াছে। পুরুষ বৃণি দা এই সাইছে, ব্যা **৭ উত্তর জাগেলের উভয়পালের** জে ্বার আনহার লাগ্র হল সম্দু-জলদীমাহনীতে উন্থিও উফারণত কেই পুকার লংঘর হুইয়া গাবেক, এরপ ঐ প্রযুক্ত গ্রীষ্মন্ডলর্ উচ্চলক্ষতে সর্ক-মণ্ডলায় ঋতুর সন্মোগ করা ভেদ শ্রীবেক, ফলতঃ ভাছাই বাট।

্লিয়া-চংলক আঞ্চিন্-পর্কাচের মূলে কদলী এবং তাল-রাক্র পাদুলার তদ্ভালো ওক্ ফর্, পার্ন, পাল্ড রউদ্বাপকাপ্তর উত্তরভাগ্র কৃক্ষ জন্মিল। থাকে। নির্ক্ত-ব্যব্য নিব্ধটি প্রেটের ও স্কুসু হস্ত নিয়ে ওক্-রুজ কৃতি ২৮ 🕞 সাম্পত অভিনার ভালের উল্লাম ১৫০০ াস্কুত্র চিদুক্তি নামি গৈ সংক্রেমিনাক (পানিন্) শেলী সুক্রের कृत्यत् अष्ट्रावः तम्यत्त् ३०,००० कत्त्राक् अद्वः সেবল প্ৰবাস মাত দ্বী হয় আনা কোন টাড়জ বউ 1 有图 27 1

গত্ৰতেম এই বিল্লাই স্কুলস্থাদি শ্ৰেণীরূপে স্থাপিত ্পাপ্তিক কেনেকি-ছালেক কেনেকিক-পদ্ধতে এই প্ৰকাৰে MARY MERTINES : MARY CONTRACTOR THE STREET

中央大學 · 中国中央 · 中国中国 চলুপ্তেশ্যত ব্যক্তিনাক্তি এক পুক্তি কুদু তকঃ ভন্তে পঞ্চাপ্তাণীতে হুল। ডেনেটিক পর্যন্ত ৭৫০০ এফ টাচ, মৃদ্যেকৈ উহায়ত ভূক অস্ত্রিট শেষ_া ইডার তি ০ কালিক প্রকাল ভাগের ভপার লাভিকেন নামা रेश्वर ए एकी करेक, अवध उस्तर्भ कित्रवीकांत्रस्र रेशवाल !

্গনাৰৰ্ভয়ন-মধাত্ৰ-ভাবে উঞ্চার বাৰ্ষিক গড় জাতিশার বৃদ্ধানির ভেদ ছ্য়; যে সকল স্থানের উষ্ণ-ি ভুল্ন বাধিক গত তুলা, সে সকল ছানের বৃদ্ধণভাদিও

তুলা: যথার উষ্ণতার বার্ষিক-গড়ের অন্যক্ষ তথায় বৃক্ষাদিরও ভেদ হয়। কিন্তু সমমগুলে 🎉 📆 মের বাতিক্রম দৃষ্ট হইয়া থাকে। তথায় বার্তিক ভার পরিবর্তে গ্রীয়াকালিক উষ্ণতানুদারে বৃহ্নাদির ভেদ হয়। লাপ্লগু-প্রদেশে এনটেকিন্-**যানের উঠি**-তার সামিক গড় ২৭ তাপাণ্শ, এবণ তারিক মা-জিরো-ছীপের উষ্ণতার বাষিক গড় ৩২ তাপাশ্ম, অথচ এনপ্টেকিম্-ছাপে সুদীর্ঘ-বৃক্ষের বন আছে; এবং মাজিরে। ছাপে পত্রপুলপারহান অতিকৃদু আগাছা ভিন্ন কিজুল দুক্ত হয় না। ভাহার কারণ এই যে গুরিকালে এনড়েফিন্-প্রদেশে যে প্রকার উন্তাপ ছইয়া থাকে, মাজিনে: দ্বীপে ভদ্ৰপ উত্তাপ হয় না; এনটেকিদ্-প্ৰদেশে গুীয়াকাণিক উফ্ডার গড় তেয়াও ভাষাংশ, এবং মা-*কিরে-নীপের গ্রীষ্মকালিক উষ্ণতার **গড় ৪৬৸০ তা**– কণুত্ত করতে পারে, ভদার ফলপুক্ষানিরও ভদ্রপ । পাৎশ। হিন-নগুলের অভায় শীভল-ছানে ভকুলভানির ারিরল প্রচার : পরস্ত তথার গ্রীয়াকালে মত শীখু উন্ভিদ্ পদার্গ জন্ম অন্যত্র ভদ্রপ শীঘু জন্ম না। তথাকার উদ্ভিত্ত সম্ভু প্রাসান্যতঃ প্রস্তের দ্বিশপার্থেই জ্যািয়া গাকে: ত্রতা কুজাদি অতি কুদাবরুব। ত্রতা উদ্ভিজ্ঞের মধ্যে কএকপ্রকার শৈবাল ও আগাছা, কত্রকপ্রকার লক, এবং কুদু ত্তুট প্রধান; অন্য কিছুট জলো না; কেবল লাপ্লপ্ত-(দশে ভাষার কিঞ্ছিৎ অনাথা আছে; তথার রাই নামক শদ্য এবং ক্রকপুকার দিম পৃষ্মিক শসাও * উৎপন্ন হট্যা থাকে।

সমমগুলের তাত্যমুশীতলভাগে দেবদারুশেশীষ্ কৃচ্ছে-রই ্রাহলা; তদনভুর ওক্, এল্ম ও বাঁচ, রুক্ষ; তদনভুর **मिन्द्र,** काडे ५व॰ कार्क् दृक्षः; मिरशाकः स्नात्म नागद्रव প্রভৃতি উত্তম নিয় এবং ভৃষ্বতের ও প্রদূর্ভাব আছে। ৩০ অবধি ৫০ জকাৎশপ্যান্ত-মান দাক্ষার জনাভূমি: 🛰 গোপুন তথাকার প্রপান থাদা; পরস্ক গোধুন উত্তর-দক্ষিণে ৬০ অক্ষাৎশপ্যান্ত বিস্ত আছে.।

উভিজ্ঞ-বস্থুর পুগান আকর গ্রীয়ামণ্ডল; তথায় গানা, ইকু, আমু, কাওয়া, নারিকেল এজ্বুর, দারুচীনি, জয়তি, মরিচ, কপুর প্রভৃতি বিবিধ উপাদের দুব্য উৎপন্ন হইর। মনুদোর সুথ সংবর্জন করিতেছে। তথায় কোন বৃক্ষ সুপেয়

^{*} যে সকল বৃক্ষের ফল সিমের ন্যায় অবয়ব ভাষাকে "সিম-श्रीकंक' नात्क करि। शहेद नहि, जिथ, चाहरह जान, शिना श्राकृति অংনক বৃক্ষ এই ত্রেণাকে মিণাত আছে।

পুটিরনক-খন্য-পুদান-পুরঃগর কুদার শান্তি কোন বৃক্ষ মগুর-ফলছারা রসনা দমুপ্ত করি- ७क कप्रभीय श्रुकाषाता नगरनिसुर्यत— (कश् ্ব। ছাণেন্দ্রিরে—স্বার্থ দাধন করিতেছে। मृत्म कममी-वृक्षानुत्रथ এकश्रकात वृक्ष আছে, কাও ছিদ্তি করিলে অনারালে এক-

ঘটাপরিমিত সুস্বাদু জল প্রাপ্ত হওয়া যায়। দক্তি-ণামরিকার অপর একপ্রকার বৃক্ষ আচে, তাহা দে-थिएक बहेबुक्तवर: ठारात পायमकन हरमात नाात স্থুল; প্রস্করোপরি তাহার জন্ম এবং তাহার নিকটে ' অনা কোন বৃক্ষ দৃষ্টিগোচর ২৪ না। গ্রীয়াকালে ক্রমা-গত বত্রমানের অনাবৃদ্তিতে তাহার শাথা-দকল লম্ম-কাষ্ঠ-প্রায়ঃ বোদ হয়, অথচ তাহার কাণ্ডে ছিনু করিলে ভদ্ধার। প্রচুরপরিমাথে একপ্রকার দুগ্ধ নিগত হয়: ভাষা পুঞ্জিনক ও সুস্বাদু, এবং দেখিতে বটদুয়ের ভুলা। উক্ত স্থানের কাফরির। এই বৃক্ষকে "গাতী-কৃক্ষ" কছে, এনং আনেকে প্রকাহ প্রাতে পাত্র লইয়া अडे मुक्काइत्र नार्थ माजा कतिया थारक। अडे प्रधल নম ও হিম মন্তলের বৃক্ষ লতাদিও দুক্ষ্যাপা নহে; তত্ততা উচ্চপর্যতে ভত্তাবৎ অনায়াদে প্রাপ্ত হওয়া যায়। সর্যা-(भक्तात भीर्य-नर्कारभक्तात कृत-नर्कारभक्तात मुन्दत-मरखा थ कृष्ठे छ विनिष्ठे — উ छि छ न स यापृत्र शाहरण अ डे মগুলে জ্বায়। থাকে, তাদুশ আর কুতাপি দৃষ্টিগোচর হ্য না।

উদ্ভিজ্জ-বিদ্যা-বিশার্দ মহাশয়েরা অনুমান করেন, পৃথিবীতে দুই লক্ষ ছাতীয় বৃক্ষ আছে: ভন্নধ্যে তাঁ-হার। প্রায়ঃ এক লক্ষ জাতীয় বুক্লের বর্ণন করিয়াছেন। ঐ লক্ষ ভরু ৮৯৩৫ শ্রেণীতে বিভক্ত, এবং তাহার প্রায়ঃ অন্ধাণ্শ গ্রীয়ামগুলে স্থিত।

পুনঃ ২ উক্ত হউড়াজে, যে দেশতেদে বৃক্ষাদির ভেদ বাবহারসিদ্ধ-দেশের উল্লেখ হয় নাই; প্রাকৃত-ধর্ম-ভেদে যে দকল স্থানের পার্থকা আছে, তাহাই আমা-দিগের উদ্দেশ্য। শোপুর-নামা এক জন প্রসিক্ক উভিদেত্তা এই বিষয়ে ভুমনিরাকরণার্ছে সমস্ত-পৃথিবীকে ২৫ উদ্ভি-জ্বপ্রদেশে বিভাগ করেন। ঐ প্রত্যেক প্রদেশের বিশেষ বিশেষ দক্ষণ আছে ; দৃষ্টিমাত্তেই তাহা প্রতাক হয় ৷ যে

পুরুক্ত পিপাদুর ভূফা-নিবারণ করিতেছে: ব্যক্তি অনেক বন ভুমণ করিয়াছে যে কোন এক বিশেষ বন দেখিবামাত্র কহিতে পারে; "এই বনের লক্ষণ অমৃক-দেশের বনের তুলা"। ঐ লক্ষণ কোন এক বিশেষ রক্ষের বাছলোই ঘটিয়া থাকে। ভারতবর্ষের সমুদু-নিকটে নারিকেল ভাল ও এজ্রুরের আধিকা; মধ্য-দেশে অংগ্রের বাহলা। মেরেন্-নামা **এক সাহে**ব দেশীয়-উদ্ভিক্তলকণ বিশ্বশতিপ্রকারে বিভক্ত করিয়া-ভাষার বণদানুসারে কো**ন দেশ ত্**ণব**ত্ল**, অথাৎ কথান ধাননাদি কুল দা বংশের আধিকা আছে ৷ कान (मन कम्ला-क्ट्रल . उथाय उथाय कम्ली आमा ষ্ঠিদ্র। আরোকট প্রভৃতি বৃধ্বের আধিকা আছে। কোন দেশ কেয়া-বছাল। কোন দেশ আনার্গ-বছ্ল। ্দেশ স্থরুফারি-বছল। কোন দেশ, তালি≁ वङ्गा (काम (मण भाम-वज्ञा (काम (मण वावना বহুল। ইতাংনি।

श्वेष्णनाठावृक्षापि-विसस्य (मण-एडस्स स्य क्राप्त एडम् इ**हेश्रा** থাকে, থাদ্য-দুত্য-নিধয়েও তদনুরূপ ভেদ আছে। সুমেরু-मखलीय कारने मनुषानातत श्रेपान थोषा-पुना **ताहै-नामक** শদ্য; তথার পান)দি কিছুই জন্মে না; তৎপার্থে গোমুম; ফ্লি-দেশের দকিল্পানার সকতে চাহাট মনুষ্যের জীব-নাবলম্বন। উক্ত স্থানের দক্ষিণে গোগ্নের অপ্রাপ্তি হয় না, পরস্ত ক্রান্স-দেশের দক্ষিণভাগহইতে অয়নান্তবৃত্ত-পর্যান্ত-স্থানে গোধুম মনুষ্যের একমাত্র থাদ্য নছে; যব, ভৃত্তী, যই (उष्टे) এব॰ शानाउ उथाए न्यर्गात थाना म्हा भूधानवर्भ গণা। এই সীমার দক্ষিণে দক্ষিণায়নাম্ভ-বৃত্ত-পর্যান্ত সমস্ত स्ति धार्तात जालयः, उधाय जनानाश्रकात न्ना इहेया शांकः, भत्रु धानाङ उधाकात श्रधान थानाः, नकरमङ् जनवनश्रात (मर्थात्र वर्त्त । हेक्ट्र, काउरा, नाहिरकन, থক্ত্র আমুদি দুবাও এই মগুলের পদার্ঘ; এভচিন্ন অনাত্র তাহা উত্তমরূপে জম্মে না। এলা, লবঙ্গ, দারুচীনি, জায়ফল, মরিচ, কপ্রাদি দুগন্ধ-দুবা ও মশালাদকল আলিয়া-থাণ্ডের দক্ষিণ-ভাগে নিরক্ষ-বৃত্তের নিকটে বিশেষভঃ ভারত-সমূদ্রের উত্তরাঞ্চলয়-ছীপব্যুহে জল্মিয়া খাকে; তদনাত্র কুত্রাপি উৎপন্ন হয় না। দক্ষিণামরিকায় এবৎ তন্নিকটস্থ কোন ২ দ্বাপে কোকোয়া-নামক এক প্রকার তক্ষ কল কলে, তাহাও অনেকের জীবনাবলম্বন বটে ; পরস্ক তাহা ধান্যগোধ্মাদির সহিত তুলনার যোগ্য নহে 4 जीवनावनस्त्र प्राप्ता शानाहे श्रशान, उन्नहुद्ध शीध्य,

[বিবিঃ

उमनस्तृत यत् उदशक्ताः इष्टेः १४९१-११६ तार्वे, उदश-*Sie क्यांकांगः वर्गः अमनवर नार्छ।

হিমালদের দ্ভিত্পাশ্যনিতে তীন-দেশের শেষ্যীমা-পর্যাত্ত সম্রাত্র চা-পাতের দেশ তথ্যামার বহিভাগে চা करम् सः ।

कुक्सभारत क्यायार-विभाग याहा किछू डेक रहेन ত্ত্তি, কেবল ভ্ৰমান স্বভাব-শিক্ষ-ধ্যাক্তাপক, মনুসাক্ত্ৰ জ্যালয় দল প্রতিপালেন-বিনায়ের কো**ন উদেশ তাহাতে নাই** ৷ करमञ्जूदराज-मोमार वर्षणांधा य**ानक शान** प्रात्मात इस इत्हा प्रभागक्षमत कमनी-तृक है ५न छ जस-কের ্যার্থন স্প্রাণ্য, এবং শীতপ্রসাননেশের পাইন্-ছাতার বৃষ্ণ গ্রাম্মন্তবে অপ্রাপ্তা নতে; পরস্তু তৎভারৎ ! प्रभूषात्रहरू ५०: शिष्ठ इङ्गाष्ट्रः **अ मकल वि**ष्णित्र **स्था**न अमा भिड दक्ष-मकरमञ् सञ्चात्रमिक अस्ट्रीय गरहा।

ালে । ব্যাত্র কুলাপি ভাষার প্রাপ্তি হয় না। কোন্ধ্ छ-लिंग कठि मृतद मूरी (मरण १५)शी, उत्राशीक काना (मरण श्राश्वता महरू, राभर कडक ह निम दिन हाति (मर्ग्ण श्राशा, द्यशत कठक ए निम পृथिनीत मकलम्याम भाउरा यास। अहे अकामभकात्रपानः, पिरमणकाश्यान का वक्रमणकास्यान वुक्तरर्श कि शकारत सम्बद्धल रियुष्ठ इतिहास्य शमार्थ-বিদ্যাবিশাহদ এখাশয়েত্য এত্যিসয়ে অনেক তক্ৰিতক ক্ষিয়া ডিম নত 'চেবিড ক্ষিয়াটেন। লিনিয়স সাচেব অনুয়াম করেন, পদ করেলা প্থিয়ার কোন এক দেশে भवन श्रापी १ नुकारागद मृचि करा, उधाककेट क-মশ্য ভ্রন্তালর দর্মতে ভাছাদের বিস্কৃতি হট্য। তা-मिट्डरक होसार क्रासम्बद्ध के खड़्दाड-स्मा शीक्षा-মধ্যাত্ত ডেলের ৯৫৮) এন অত্যাক পরতে আরিছ: দেই পর্যাত্র মূল্যাস্থ-সন্তুপ্যান্ উষ্ণভার প্রভেদে মুরে ১ প্রান্টী সমন্ত্র পদার্থ ক্রাপিত হর; পরে नार्य कलरमान्ध अन्य श्रामिष्यात् नार्याया जामाः স্তানাম্বরিক চন্যা পালী আপিয়াছে। কোন্থ পাতি-। ৬বং কংলন্ প্রথমতঃ **প্রত্যেকজাতীয় বৃক্ষ আনেক** স্থান এক ক'লে কলিয়াছিল; পরে ঐ একাধিক भाकतरहरेट बनाटक निकुछ रहा। वाशादत करहन स्य ए कारन (ध क्रम मृहिता ७ वन ७ उसका उथारा ভদন্তপ রুফাদি জয়িয়। ভূম**ওলের সক্তাৎশ এককালে** एकनजामित्र गमाकोनं कविद्याद्यः, अकर स्वारम अकर

জাতীয় বৃক্ষ ক্ষমিয়া পরে বিস্তৃত হয় নাই য়ের অনুসন্ধান তাদৃশ ফলদারী নহে, পরস্তা পোষণাথে যে সকল প্রমাণ প্রযুক্ত হইয়া ধা কিঞ্চিৎ লেখায় পাঠকদিনের সমুপ্তি হইতে পা

যে সকল উভিজ্ঞ-পদার্থের অবয়ব অভিশ্ অসমপুণ-অন্ধ-প্রভাস্ত্রিশিষ্ট তৎতাবৎ পৃথীর বাাপ্ত আছে। অব্যক্ত পুশ্পক * উদ্ভিজ-গীৰ শৈবাল কোঁড়ক (ছত্তক) প্রভৃতি বস্তু ভূমগুলের অনেক खारन कूला। অख्रिलिया-बीर्ण स्य मकल लाहरकन्-नामा শৈৰাল দৃষ্ট ছইয়াছে, ভাহাৰ অধিকাশশ বিলাতে মুপ্ৰা-পা। অপর ফরণ্-তরুর মে একশত-জাতি তথায় প্রচার শাছে, তর্মো ১৮ প্রকার তরু পৃথিবীর অন্যতে जनागाम भावशा गांग।

এক পত্তোৎপত্তিক 4 বৃক্ষ নহ্পদেশ ব্যাপিয়া ক হম গুলিন । ট'দ্ধি-পদার্থ একমাত দেশে বস্তমান । আছে। চুণাদি ইউরোপ ও অক্সেলিয়ায় প্রয়েও ভুলা। মার্কিন এবং ইউরোপ খণ্ডে ও ত্ন-বিষয়ে তুলাতা আছে: ফলতঃ তৃণ প্রায়ঃ কোঁড়কের (ছত্তকের) তুলা সমাত্র-ব্যাপি। ব্লেণ্-নাম। এক জন উভিজ্বেত্ত। অন্তেলিয়া-প্রদেশে ৪০০ ছাতীয় অবাক্তপুষ্পক বৃক্ষ ৮১০ জাতীয় একপাতাৎপত্তিক বৃক্ষ, এবং ১৯০০ কাতীয় দ্বিপত্তোৎ-পত্তিक वृक्त (मिथाছिलन। औ एक्मकलाइ मधा ३२० প্রকার অব্যক্তপুদ্ধক কৃষ্ণ বিলাতে স্বতঃ ছবিয়া থাকে: ৮৬০ জাতায় একপজোৎপত্তিক বৃক্ষের মধ্যে ৩০ টি জাতে দিলাভে প্রাপা, এরণ, ১৯০০ জাতীয় দিপত্রোৎপত্তিক বুক্ষের কেবল ১৫ টি জাতি বিলাতে দৃষ্ট হয়; অপর সক-नश्रील अरञ्जलिश घोरण स्रज्ध निका मिकिनामतिकात মধ্যভাগে যে দকল দিপত্তোৎপত্তিক বৃক্ষ আছে, তৎ-সমূদায়ত তদেশ-ভিন্ন অনাত দৃষ্টিগোচর হয় না।

[ा] मान्य छोत्रक्ष्यत्वातक मृत्रे खार्ण विकाश कहा मान्नः अथित. বাহাদিগের পৃষ্ণ অনায়াদে দৃষ্ট হয়; যথা, আগু শকুলাদি, विशेष गागामत भूका मृकित्याहत हम ना, यथा, रेलवालानि । ঐ প্রথমাশ্লের নাম "বাকুপ্রথক", ও কিউচ্ছের নাম ' काराक्षभूक्षभूकः''।

क्रेडक्छिनिन दीव अथ्य व्यक्तिक व्हेशा अक्कारण मुक्की ं भक्र धार्य करत, गया, काघु, मिह्, श्रीह, शालार, दरन, सूथि প্রভৃতি; ভাতাদের নাম দ্বিপজোৎপত্তিক। অপর কডকঞ্চলিন বৃক্তের বাঞ্চইতে আদৌ একটি পতা কাক্রিক চয় ও পরে এক ২ টি পত্র করিয়া প্রসরিত হয়। ভাষা**দের নাম এক পরোৎপত্তিক** मातिरकम अञ्जूत जुन जाम कममोद्यामि अहे तरमत तृकः।

আফরিকার মধ্যভাগের তরু-ধকলও তদনুরপ। শে-ধোজনদেশের পূর্ত্ত-তটে যে দকল কৃষ্ণ আছে তাহা ভারতবর্ষের দক্ষিণ-তটেও মুপ্রাপা; দক্ষিণামরিকার পূর্ত্ত-তটের কৃষ্ণাকলের কতকগুলি অফরিকার পশ্চিমে জন্মি-য়া গাকে।

স্থিকসমূদ্রে দ্বাপদকলের মধ্যে যে ওলিন আসিয়া-গণ্ডের নিকটস্থ তাহাতে আসিয়াদেশপুসিদ্ধ বৃক্ষই দৃষ্ট হয়, এবং যে ওলিন অমরিকার নিকটস্ত তাহাতে প্রাধানাতঃ অমরিকার বৃক্ষই জন্মিয়া থাকে। গেঁ দকল দ্বাপ দুই মহাজ্যিগণ্ডের মধাভাগে স্থিত, তাহার বৃক্ষলভাদি উভয়-থণ্ডের হলা। এইপ্রযুক্ত মাল্টা এবং দিসিলীদ্বাপে ইউরোপ এবং অফরিকা এই উভয় স্থানের বৃক্ষ প্রচরিত আছে।

দ্যুদ্- হাটস্ত-বৃক্ষের এই সামান্ত-দ্যে স্থাইই প্রতীত
হল দে সমুদুস্থেতে এক-ভটের বৃক্ষণীজ অপর-ভটে
নাপ ইইয়া ঐ সামান্ত্র ঘটায়। তভিন্ন বায়ুলহকারেও
আনক বীজ একদেশহইতে আনাদেশে নীত হয়। আপর মনুষ্য-পণ্ড-পক্ষিদ্বারাও একদেশের বীক আনাত্রে
চালিত ইইয়া থাকে। কাকের উদরে অখণ্ড-বৃক্ষের বীজ
কি প্রকারে চালিত হয় ভাহা আনেকেই জ্ঞান্ত আছেন।
নূতন সভূত দ্বীপে প্রথমতঃ শৈবাল জন্মে; তদনন্তর সমৃদ্শ্যোতে সমাগত বীজ অঙ্কুরিত ইইয়া বৃক্ষাদি সম্ভবে; পরে
এইরণে ক্রমণঃ আনানা বৃক্ষের উৎপত্তি হয়। অপিতৃ
প্রায়ঃ আনেক দ্বীপে তালার হতঃনিক এক বা তত্তাধিক বৃক্ষ দ্বী হলয়া থাকে; ইহাতে বোধ হয় প্রত্যেক
স্থানের এক বা তত্তাবিক বিশেষ তরু নির্দ্ধিই থাকিবেক,
পরস্থ অধুনা ভাহার অধিক আলোচনায় স্কুহা নাই।

ইলেক্ট্রিক্ টেলিগ্রাফ্ অর্থাৎ তাড়িত-বার্ত্তাবহ যন্ত্র।

পার্থ করি আলোচনাদ্বারা যে বোধ করি, অন পার্থ করি অন্তর্গ ও মহদুপকারি বস্তু ও ধর্ম জ্ঞাত হ উদ্যাবিত হইয়াছে, তম্মধ্যে বাস্পা-থক্ত বিত্ত হইয়াছে, তম্মধ্যে বাস্পা-থক্ত বিত্ত হইয়াছে, তম্মধ্যে বাস্পা-থক্ত বিত্ত বার্তাবহ-যন্ত্র সর্ব-প্রধান। তৎসাহাযে। মনুষ্য অদ্ভুত দৈবস্ত্তি "একপ্রকার অ প্রাপ্ত হইয়া অসম্ভাবনীয়-কার্য্যনকলও অব- "নামতাড়িত।

रहनाम मिणान कतिराज्या गर्माक गुण्य तथानि मिनायान-भगार्थनकन वाष्ट्रावास्थाना গভার্থ হইয়াছে। জীতদাস অপেক্ষায়ও উত্তম चाक्तावर रहेश উक्रयज यनू र छ। इ कर्म्हे क्रिटिंग अधीकात क्रा मा। विवादि वा-পায় যন্ত্ৰ জল তুলিতেছে, কাষ্ট্ৰ কাটিতেছে. প্রভুকে ক্ষকে লইয়া দেশভুমণ করিতেছে, বঙ্জ वलन कतिराउछ, जिलानियम्न कतिराउछ, जृति-कर्षन कित्रटाइ, थाज-थनन कित्रटाइ, जन्म-চন করিতেছে, খনিহইতে ধাতু উত্তোলন করি-তেছে, লৌহাদি পিটিতেছে, শর্করা প্রস্তুত করি-তেছে, তরি-দঞ্চালন করিতেছে; ফলতঃ এক বাষ্পযন্ত্রদারা, সিবিকা-বাহক, নাবিক, তন্ত্রবায়, মোদক, কর্মকার, তৈলকার, কৃষাণ প্রভৃতি সকল ভূত্যের কর্ম সম্পন্ন হইয়া থাকে। তাড়িত-বার্তা-বহু যন্ত্র বাস্পীয়-যন্ত্রের তুল্য উপকারি মহে; পরস্ত যদ্বারা সহসুক্রোশ-দূরস্থ-বন্ধুরা ক্ষণে পরস্পার আপন্থ স্বাক্ষরিত পত্র আদান প্রদান করিতে পারেন তাহার ক্ষমতা নামান্য বলা যায় না। কলিকাতাহইতে আগরা এবং তথা-হ্ইতে বোম্বাই-পৰ্য্যন্ত একটি তাজ়িতবাৰ্ত্তাবহ যন্ত্র সংস্থাপিত হইয়াছে, তদ্ধারা একদপ্তকাল-মধ্যে বৌম্বাই-নগরের নংবাদ কলিকাভায় আ-নিতেছে। এ পরমাশ্চয্য-যন্ত্রের নঙ্কেপ-বিব-রণ পরপর কতিপয় পঙ্ক্তিতে লিখিত চ্ইল; পাঠকবৃন্দ মনোযোগপূৰ্বক তাহা পাঠ করিলে, বোধ করি, অনায়ানে এই অন্তুত যদ্ভের লক্ষণ ও ধর্ম জ্ঞাত হইতে পারিবেন।

পদার্থবিদ্যানুসকায়ীরা নির্ণয় করিয়াছেন যে
"ভূমণ্ডল ও ভদুপরিস্থিত বায়ুমণ্ডলের সর্বভাবে
"একপ্রকার অভিসূক্ষ পদার্থ আছে, ভাষার
"নামতাড়িত।

"এই পরমাশ্চর্যা পদাথ সচরাচর প্রত্যক্ষ

'হয় না, কিন্তু কথন কথন কোন কোন বস্তুহইতে

'অতিশায় সূজ্ম জেনাতিম্বয় পদার্থ স্বলপে আ
'বিভাত হয়! বিদ্যুত ও বজু-ধুনি এই পদার্থের

'কাষ্যা আর কাচ, রেশম, তৈলক্ষটিক, গন্ধক,

'ধ্না, কমেক প্রকার রজু ইত্যাদি কতক গুলি দুব্য

'ঘষণ করিল, তাজা হইতে অপেকাক্ত অপপ প্র
'শ্বান তাজ্য প্রকাশ করিতে পারা যায়।

লেদি কাচ অথবা লাক্ষা শুক্ক হস্তে অথবা লোমল বস্তে ঘৰণ করিয়া কেশ, সত্র, পালক, শুকাজ, অথবা অন্য কোন লঘু দুব্যের নিকট শুবা ঘায়, তবে ঐ লঘু দুব্য সেই কাচ অথবা শুলাক্ষা ভারা আকৃষ্ট হইয়া ভাছাতে লগ্ধ হইয়া শুকো কিন্তু অভ্যাপ কাল সংযুক্ত থাকিয়াই শুকিষ্কু হইয়া পড়ে। এ উভয় ব্যাপারই ঐ শুভাছিত নামক পদার্থের শুণ; একারণ ভাছার শুহা গুণ লাবা লঘু বস্তু কাচ অথবা লাক্ষার শুন্তিত সংগ্রু হইয়া থাকে, ভাছাকে ভাছি-শুভাষণ বলে এবং যে গুণ লাৱা ভাছা হইছে শুলামণ বলে এবং যে গুণ লাৱা ভাছা হইছে

ত্তাতিতের আর এক গুণ এই, যে যদি এক

শঙ্কানে অথিক থাকে, এবং তাহার নিকটবর্ত্তি

শঙ্কান জানে জন্স থাকে, তবে প্রথমান্ত জা
শঙ্কার কিয়দ শো শোষাক্র ভানে আসিয়া উভয়

শঙ্কানে সমান হয়। যদি এল খান মেয়ে অথিক প্র
শঙ্কান কাছিছ থাকে, আর এক মেয়ে অন্স প্রমাণ

শথ্কে তবে উভয় মেয় পরস্পার নিকটবর্ত্তি

শঙ্কিবার সময়ে প্রথমোক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ

শঙ্কিবার সময়ে প্রথমোক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ

শঙ্কিবার সময়ে প্রথমোক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ

শঙ্কিবার সময়ে প্রথমাক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ

শঙ্কিবার সময়ে প্রথমাক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ

শঙ্কিবার সময়ে প্রকাশ ও ঘোরতার মেয় গর্জন

"এই পরমাশ্চর্যা পদাথ সচরাচর প্রত্যক্ষা 'হয়; লোকে তাহাকেই বিদ্যুৎ ও বজু-খুনি "হয় না, কিন্তু কথন কথন কোন কোন বস্তুহইতে 'কহিয়া থাকে। পৃথিবীহইতে মেয়ে, অথবা 'অতিশয় সূক্ষ জ্যোতিম্ব পদার্থ স্বরূপে আ- 'মেষহইতে পৃথিবীতে তাড়িত প্রবেশ করিবার 'বিভাত হয়। বিদ্যুৎ ও বজু-ধুনি এই পদার্থের ''সময়েও এই রূপ ঘটনা ঘটিয়া থাকে।

"এই তাড়িত পদার্থ কোন কোন বস্তুদারা।
"এক স্থানহইতে অন্য স্থানে দ্রুত বেগে সঞ্চা'লিত হয়। এই নকল বস্তুকে তাড়িতপরিচা'লক কহে। অন্য কতক গুলি বস্তুর পরিচাল'ফতা শক্তি এত অণ্প, যে কোন স্থানে তা'ছিতের সঞ্চলন নিবারণ করিতে হইলে ঐ সকল
'দ্ব্য ব্যবহার করিতে হয়। এ সমস্ত বস্তুকে
"অপরিচালক করে।

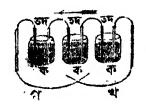
"সমুদার ধাত্ই প্রবল পরিচালক। তদিয় "অঙ্গার, লবণাক্তলল প্রভৃতি আর কতক গুলি "দুব্য আছে, তাহারাও পরিচালক বটে, কিন্তু "ধাতুর ন্যায় নহে। কাচ, গন্ধক, ধুনা, পরি-"শুদ্ধ বায়ু, কান্ত, কাগন্ধ, কেশ, রেশম, পা-শ্লক, পশুলোম, এ সমুদায় সর্বতোভাবে অপ-"রিচালক" *!

এই তাড়িত বা বৈদ্যুৎ-পদার্থ চুম্বনলোহেতে
সর্বদা বন্তমান আছে; এবং তাহাহইতেই উক্ত
লোহের আকর্ষণ-শক্তি উৎপন্ন হইয়া থাকে।
দুব্যদ্বয় সংস্পৃষ্ট থাকিয়া নুগ্রাধিক উত্তপ্ত হইলে
অথবা দাবকাদি-পদার্থে দিমজ্জিত থাকিলে ঐ
তাড়িত-পদার্থের উৎপত্তি হইয়া থাকে। পরস্ত
চুম্বক-লোহের তাড়িত, (চৌম্বক তাড়িত) আকাশাগত বা কাচাদি-ঘর্ষণদ্বারা উৎপন্ন তাড়িত
(বৈদ্যুত তাড়িত) ও দাবকাদি-দুব্যক্রাত তাড়িত
(রাসায়ন-ভাড়িত) এই তিনের কিঞ্চিৎ অবাস্তর
ভেদ আছে; অতএব ঐ তিন প্রকার ভাড়িতই
এক অহিন্তি সাধনার্থপ্রযুক্ত হইতে পারে না।

य उक्तरवाधिमी लाखका : ३ -२ म**्या** ३०৮ पृ**ष्ठे**।

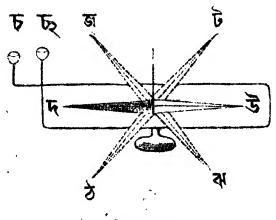
ব্যবহার হয়। ঐ তাড়িতের উৎপাদন করা অনা- ত্রের গ, চিহ্নিত তারের সহিত নিলিত হট্যাছে। য়াস-নাধ্য। এক কাচ বা মৃৎপাত্তে (টম্বল প্লানে)। **अ**काश्म शक्षक-पावक ও দশাংশ *ख*ल गिन्ति । করিয়া তম্মধ্যে এক খণ্ড দন্তা ও এক খণ্ড তামু ভূবা-ইলেই ঐ তাড়িত উৎপন্ন হয়। পরে ঐ ধাতৃথণ্ড-ঘয়ের বহিত লৌহ বা ভামু বা অন্য কোন ধাতুর তার সংযুক্ত করিয়া অনায়াসে বহুদূর-পার্যান্ত ঐ তাড়িত লইয়া যাওয়া যাইতে পারে। প্রস্তানিত : কোল্পানের উত্তরভাগের নিকটে আনীত হই- ভেদে আক্ষিত বা প্রতিসূত হইয়া থাকে। লে উভয়ে পরস্পার প্রতিসৃত হয়; এবং দক্ষিণ- নিমুত্ত চিত্রে প্রস্তাবিত বিষয়ের বিশেষ পরি-ভাগকে আক্ষণ করে; তথা দন্তা**জাত তা**ড়িত জ্ঞান হইবে। এই চিত্তের নাম তাড়িতমান-যন্ত্র। দক্ষিণভাগকে প্রতিসৃত করিয়া উত্তরভাগকে আকর্ষিত করে। প্রস্তাবিত-পাত্তের তামু ও দস্তা। বৃহদাকার করিলে অথবা তজপ তিন চারি বা ততোধিক পাত্র একত্র করিলে এই আকর্ষণ-প্রতি-সরণ-শক্তির আধিকা হয়। পরস্ত**ন্তে** যে চিত্র মুদ্ভি হইল, তাহাতে তিনটি-পাত্রবিশিষ্ট-ষজ্ঞের অবয়ব প্রদর্শিত হইয়াছে। ঐ চিত্রের ক, ক, ক, हिट्ट मुनिक पूर्व काहलाब, उ, उ, उ, जामुश्रव, এবং দ, দ, দ, দন্তার পত্র। প্রত্যেক পাত্রের দন্তার পত্র অপর-পাত্রের তামুপত্রের নহিত পিত্তলের তাহার নির্মাণার্থে একটি তামুতারকে দীর্ঘচতু-

বার্ত্তাবহ-যন্ত্রের নিমন্ত রাসায়ন-তাড়িতেরই চিহ্নিত তারন্ধারা অপর পার্শ্বীয় পাত্রত তানুপ-



গ্রানিটোৎপাদক মন্ত্র।

এই যন্ত্রের তামু'ও দস্তায় যে তাড়িত উৎপন্ন যন্ত্রের ধাতুদয়হইতে যে তাড়িত জম্মে তম্মধ্যে হয় তাহার পরস্পার আকর্যন-শক্তি শত্যস্ত বেগ-তামুজাত তাড়িত দন্তাজাত তাড়িতকৈ আকর্ষণ বতী, পরস্পারের মিলন-নিমিত্র তাহা এক নিমেষ-করে; এবং অন্য তামুথগুজাত তাড়িতকে প্রতি- মাত্রে সহসূহ ক্রোশ প্রান ভূমণ করিয়া থাকে। স্ত করে; কলতঃ চুম্বক-লৌহের যে শব্জিতে চিত্রের থ, এবং গ, চিহ্নিত ভার যত দূরপর্যান্ত এক ভাগ উত্তরদিনে ও অপর ভাগ দক্ষিণদিনে। লইয়া যাওয়া যায়, তত দূরপর্যান্ত ঐ তাড়িত আক্ষিত হয়, প্রস্তাবিত যন্ত্রজাত তাড়িত সেই নিমেষ্মাত্রেই ভুন্ণ করিয়া থাকে. এবং ঐ শক্তিবিশিষ্ট: তাহার তামুজাত তাড়িত চুম্বকের ভুমণনময়ে ঐ সমস্ত তার চুম্বক-লৌহের ধর্ম উত্র-ভাগের তুল্য,এবং দন্ত জাত ভাত্তি ভাত্রর প্রাপ্ত ত্য়; সুভরাং ভৎকালে ভাত্রর নিকটে দক্ষিণভাগের ভুল্য। অভএব তামুদ্ধাত তাড়িত কাম্পাদের কাঁটা থাকিলে ভাহার উত্তর-দক্ষিণ-



ভাড়িত্যান-যত্ত্ব।

তারধারা সংযুক্ত। এক পার্যস্থ পাত্রের দন্তা থ রুসুকোরে বক্ত করিয়া এক কাষ্টাদনে স্থাপিত

क्रबं जाहात मर्था अविके काम्पारमत की है। तिन जिंक जाकरतब मृष्टि करतम , अवर अ जाकद्ववाता मसवाता यूनाहेट इसा अहे यदा छेवतमकिटन टेन-र्घा**डारि वाथि**ल काम्मारमं काँहे। अमीर्यहरू वर्म-ভারাকতি এক ভাবেই থাকে। অতঃপর পূর্ব বণিত তাডিতোৎপাদক-যত্ত্রের যে পার্ম্ব দস্তায় শেষ ২য় তৎপাধ্যের তার (থ অঙ্কিচ তার) 🖯 আনিহা তাড়িতমান যন্ত্রের চ-চিহ্নিত স্থানে ও তামুপাদের তার / গ চিহ্নিত ভার : আনিয়া ছ-চিছ্তি ভানে সংস্থাই করিলেই ভামু-ভার-মণ্ডল চুম্বন-লোকের ধর্ম প্রাপ্ত হয়, এবং চুম্বক-লৌ-কের ধন্মবিশিষ্ট কোম্পাদের কাঁটাকে প্রতি[†] নৃত করে: তথা ঐ কটো ঘুরিয়া যায়, ও তা-হার উত্তরভাগ পূর্বাভিমুথ (ঝ- চি**ল্লের নি**-কটা ও দাক্ষণভাগ পশ্চিমাভিম্থ (জ-চিহ্নের নিকট। হয়। চ বা ছ চি হ্রত স্থানে তাড়িতোৎ- ' চিল্লিড ভার ভাজিতমান-যদ্রের চ-চিল্লিড করিলের তাড়িতমান যক্ত চুম্বার প্রাপ্ত হুইয়া काम्भारमङ कॅछिद मक्षानन कविश पाक: কিন্তু ঐ মবসায় উক্ত কাঁটার উত্তরভাগ পূর্বে না আনিয়া পশ্চিমদিনে উ চিত্তের নিকট যায়, এব- দক্ষিণভাগে পূর্বে ১-ভানে আইসে। এই की छोड़ अकालन विषया छामुम् छ। एउट वर्गक-क्रम इड्राइ काइनान्मसारम कानरक्रम कद्विवात व्यानमान माहे. श्रह ने वाजिकम् इहेर हरे वा-डांदरानंद डेलाग्र रुग्न, चज्बन बरे श्रेखाद्वत वर्ष গুৰুণাৰে তাহার বিশেষ স্মরণ রাখা কর্ত্তব্য!

পণ্ডিছের। এই की টার **সঞ্চলন্ইতেই, সাজে**

বার্ত্তাবহন কর্ম নিষ্পন্ন হইয়া থাকে। তাড়িত-বার্ত্তাবহু-যন্ত্র-চালকেরা সকলেই এক প্রকার সা-ক্ষেতিক অক্ষরের ব্যবহার করে না; অনেক স্থানে অনেক প্রকার সক্ষেতের প্রচার আছে; তৎসমু-मार्यंत विवत् । अहे कृपायुक्त-भर्ज *(तथ*। मस्व নছে; অতএব কেবল কলিকাতার যন্ত্রে যে২ সঙ্কে-তের ব্যবহার আছে, ভাষারই নিয়ম এই স্থানে লিখিতবা কলিকাতান্ত-যন্ত্র-পরিচালকেরা তা-ড়িতমানযন্ত্রস্থ কাঁটার উত্তরভাগ এক বার পূর্বা-ভিন্থ ध्हेरन च (A) अक्तरतत कप्शना करतन। কাঁট৷ উপযুঁতপরি দুই বার পূর্বাভিমু**খ হইলে** ব (🖪) অক্ষরের, তিন বার পূর্বাভিমুথ হইলে ন ((') অকরের এবং চারি বার পূর্বাভিম্থ इहेल म (1)) व्यक्तत्रत्न कप्शना क्रतन । काँगित পাদক-খন্ত্রের তারের বিয়োগ করিলেই তামু- উত্তর-ভাগ পূর্বে না আনিয়া পশ্চিমাভিমুখ হই-তার-মন্তলের চ্স্বকর লুপ্ত হয়, তথা কোম্পা- বে ল (L) অক্রের কম্পেনা হয়, কাঁটা এক ব্যর সের প্রটো ম্বডানে আসিয়া পুনঃ উত্তর-দক্ষিণ-া পশ্চিমে তৎপরে পূর্বে আইলেএ (E) অক্সরের মুখে স্থিত হয়। তাড়িতোংপাদক-যন্তের থ কম্পেনা হয়। ইংরাজি বর্ণমালার অপর সকল অ-ফর এই প্রকারে কম্পিত হইয়াছে, তাহার জ্ঞাপ-স্থানে ন॰মুক্ত না করিয়া ছ-চিছ্লিত-স্থানে সংযুক্ত নার্থে নিমে আমর। সমস্ত সঙ্কেত গুলিন লিখিতে हि; अक अक माँडिए अक अक नात्र काँगात नथा-लन लक्षिक इहेशास्त्र; उथा के मीज़ि चार्तु (के कान रुरेतन, काँगात উखत्रजान পूर्व चानियारह, जरः शन्दारक त्यांकान इहेरल काँद्रोत छेखन्द्राण श-मिक्टाम शियारक, **अहे (बाध कड़ा कडेंब**)।

সাক্ষেতিক চিহ্। 1 II III IIII 🚺 तका करा ভকা ব উপরাজি আক্ষর। A B D C AIII AIIII IZE

K

H IJ

I II III III 11 সান্ধেতিক চিহ্ন। 9 न वङ्गाकत्। P N M ই এরাজি অফর। 111 1114 7111 SIM उप्रे স त् T S $\cdot R$ Q मास्त्रिक विक्र। II 1 1 1 1 1 1 1 1 1 IIII नद्भाक्तर । Х है ब्याहि अकत्। W

य পाठक-महामारवृद्धाः এই প্রস্তাবের এপর্য্যস্ত মনোযোগ-পূর্বক পাঠ করিয়াছেন, তাঁছারা অনা-য়াদে অনুমান করিতে পারিবেন যে প্রস্তাবিত যন্ত্রদারা কি প্রকারে এক-দেশের সংবাদ অন্য-ত্রে অবিলয়ে পাঠান যাইতে পারে। ভত্রাপি এবিষয়ের স্পাঠপ্রকাশারেও ভারও কিঞ্চিৎ লি-খিত হইতেছে। এবিষয়ের জ্ঞানাভিলাষি পা-ठेकदृन्त मनन कबन य महीह পূर्द्शांक ठाफ़ि-তোৎপাদক যত্র একটি বারাণসীতে সংস্থাপিত আছে: এবং কলিকাতায় একটি ভাড়িত-মান-যন্ত্র বর্ত্তমান আছে, এবং ঐ যন্তের খা, গা, স্থানহইতে কাশীপর্যান্ত দুই গাছি লৌহতার मझिवस আছে। এই कार्ण यहां भि कामी इ मर বাদদাতা কহিতে চাহেন যে "আমি পাড়িত আছি", তবে তিনি সন্মুখে উপস্থিত তার্ত্বয়ের থ-চিহ্নিত ভার ভাড়িভোৎপাদক যন্ত্রের শেষ দস্তার সহিত এবং গ-চিহ্নিত তার শেষ ভামের महिल मः म्लूष्ट क्रिट्टन, जे मः म्लूनिमाद्व हे কলিকাতাস্ তাড়িতমান-যন্ত্রস্ কাঁটার উত্তর-ভাগ পূর্বে ঝ অক্ষরের নিকট আইসে; ওদ্ষ্টে কলিকাভান্থ দংবাদগুহীতা এক থানি প্রস্তর কল-क (जुटि) बकि हिङ्कातन, उपार्थ। १ ; ७९-शक्करव कामोच् मः वाषमाञा छेलायू। शक्ति पूरे वात

গ, চিছ্তিত তার তাড়িতোৎপাদক-যন্তের তামের নহিত এবং থ-চিছ্তিত তার দন্তার দহিত সংল্প্র করান, তদনুসারে কলিকাতান্ত তাড়িত-মান-যন্তের কাঁটা দুই বার পশ্চিমাভিমুথ হয়, ও তথাকার কর্মকারক প্রস্তর কলকে তদনুরূপ দুইটি চিহ্ন দেন, তদ্যথা য় : তৎপরে কাশীন্ত সংবাদদাতা তারদ্বরের উপর্য্যুপরি তিন বার পার্মপরিবর্ত্তন করেন, তাছাতে কলিকাতান্ত যন্তের কাঁটা একবার পশ্চিমে,পরে একবার পূর্বে, তৎপরে এক একবার পশ্চিমে সঞ্চালিত হয়: এবং তথাকার কর্মকর্ত্তা তদনুরূপ চিহ্ন করেন; তদ্যথা য় এই তিন চিহ্ন একত্র করিলে বান মৃত্যা গুলিন বার প্রান্ধি তদনুরূপ চিহ্ন করেন; তদ্যথা যুগ্র তান চিহ্ন একত্র করিলে বান মৃত্যা গুলিন হয় জন্ম কর্ত্তা তদনুরূপ চিহ্ন করেন;

তদনন্তর কাশীস্থ সংবাদদাতা তারদ্বয়ের জনমাঃ যথানিয়মে পার্শ্বপরিবর্ত্তন ও কলিকান্তাস্থ ব্যক্তি তাড়িতমান যত্ত্তম্ব কাঁটার গত্যনুসারে প্রস্তর্কলকে চিহ্ন দিতে থাকেন। সংবাদ শেষ হইলে তাঁহার প্রস্তর্কলকে নিমুম্থ
চিহ্নগুলি প্রত্যক্ষ হয়, এবং তদর্থে সংবাদদাতার
অভিপ্রেত বার্জা ব্যক্ত হয়।

চিহ্ন 1-\\-1\-1\-\/\-IIII-\ 1\আৰ্থা আ মুই প্ই ড্ই
চিহ্ন 1\-1-I-III-\ 1\
আৰ্থা ত আছে ই

উপরে যে প্রকার বর্ণিত হইল তাহাতে অনুভূত হইতে পারে যে সঙ্কেতদ্বারা একং টি অক্ষর
জ্ঞাপন করা এবং তাহাহইতে সংবাদ উদ্ভাবন করা
অতি ক্লেপ্রদ; পুরস্ত ইহা অরণ রাখা কর্ত্ব্য যে অস্ততঃ পাঁচ দিন ক্রমাগত দিবারাত্র বেগে
ধাবন করত কাশীহইতে সংবাদ আনা অপেক্রায়, দুই চারি মিনিট শুন করা শতাংশে শেষ্ট। অপর তাড়িতবার্তাবহ-যন্ত্রচালকেরা অভ্যাস-বশতঃ সক্ষেত-পাঠে এতাদৃশ পারণ হয় যে · আমি পাড়িত আছি" এই তিনটি পদ পাঠ করিতে অর্দ্ধ পল কালও লাগায় না। উত্তম मरक छ- लाठेरकता अव सिनिष्ठ-कान-मरश्र विश-শতি টি পদ পাঠ করিতে পারে। অপর পূর্ব-ব্যিত তাড়িতোৎপাদক-যক্তের তারের পাশ্ব-যন্ত্র প্রস্তুত চইয়াছে: তদ্যুৱা এক-বিপল-কাল-মবে, দৃহ ভিন বার তারের পার্শ্ব-পরিবত্তন हरें एक शास्त्र ।

निक गृशिकामि वक्ष ठाफ़िक-भमार्थंद भारत-ঢালক; এ সকল বস্থু তাড়িত-সঞ্চালনের তার ন্ত্লাশ ক্রিলেই ঐ তার্হইতে তাড়িত **স**ত-হ্রণ করত কন্যত লইয়া যায়, সূত্রাণ বার্তা-नकरमह नाधाक घरते। धरे माय निरातरात নিনিত প্রস্তাবিত বস্ত্র-নির্মাতারা ঐ তার সকল প্রথব। আকাশ-মাগ-দিয়া ঐ তার বিস্তৃত कर्तन। चर्णातकालक-अमार्थत मरदा धूना त-नम इसर् अवः शहाभाहा-सामक अक्ष्रकात टिम्ध मर्थानः এ কোন পদার্থদার। ভার আবৃত ক্ষিলে তাহাহইতে তাড়িত অন্তে যাই তে পারে ना। এই প্রযুক্ত কলিকাতাহইতে যোগাই-পদান্ত যে তার বিষ্ত আছে তাহা পটাপার্চাদ্ধরা মার্ড।

ক্থিত হুট্য়াছে যে তাড়িত-যন্ত্ৰারা দূর-দেশত ব্যক্তিদ্যু অবিলয়ে পরস্পারকৈ আপন হস্তাফার দেখাইচে পারেন; কিন্তু প্রস্তাব-বা-ঃ एका-च्या अधूमा **आहात वित्मय-वर्गमात्र विद्रण** इन्टिन इन्ता

পারস্য-দেশ-পুচলিত গোলেন্তান্-নামক নীতি-শাজের পুসক।

क्षेत्रेक्ष अक्षेत्र अक्षेत्र विविध-इत्सावरका शहर अ क अस्ति अस्ति विक शहरा न्विन-मानाइत तम-ণীয় উপাখ্যানদারা স্বীয় গুস্থ সুশোভিত করিয়া পরিবর্তন কাম্য অনায়াদে সাধনার্থে এক প্রকার পারস রাজ্যে তিনি অতি প্রধান গুতুকার বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছিলেন। তাঁহার শারীরিক বৃত্তান্ত সকল অতি অজুত ও ফলজনক হইলেও গোলে-স্তান্ প্রশংসা-ছলে এ স্তলে উল্লেখ করিলাম না : প্রস্তাবাহন্তে কথিত হুইয়াছে যে লবণাক্ত জল, উক্ত-গুন্তবিষয়ক কিঞ্চিৎ বিবরণ পাঠকবর্গকে অবগত করাই আমাদের উদ্দেশ্য

গোলেন্তান্ গুরু আট অধ্যায়ে বিভক্ত হই-রাছে। তন্মধ্যে প্রথমাধ্যায়ে রাজনীতি, দি-छीट्य नन्त्राभीनिरशंत नीकि, क्कीट्य मरस्राद्यत उदकर्या, ठाठुरथ स्मोनवृद्यंत कल, शक्षस श्रम ও योदन, यक्ष विभीनीवङ्ग ও छत्री, मधुरम অপারচালক পদার্থদারা আবৃত করিয়া রাথেন, বিদ্যার ফল, অন্তনে অবস্থাভেদে জীবন-যা-পনের প্রথা বণিত ও ব্যবস্থাপিত হইয়াছে। গো-लिखारनद लिशिष्ठा जूदी विद्युष्टमा कदिए इहेरन गुष्ठकारतत जनाधात्र तहनामकि विभिष्ठकार ने প্রতীত হয়। রচনা-প্রণালী ভুরিং অলঙ্কারে সমলকৃত হইয়াও সুকুমারতা ও প্রসাদগুণ পরি-उर्राश करत नारे। शातम-প्रनिष जनराना जन-ক্ত কাব্য-সমূহের সহিত তুলনা করিয়া একবে পারদিকের৷ ইহাকে নর্বোৎকৃষ্ট বলিয়া মানি-उद्ध । **ब**रे गुन्न क्षतमभास्त अञाम्म श्रामिक আছে, যে অধুনা তাছার দোৰ গুণ বা লক্ষণ বর্ণন করায় নৎসরভার প্রকাশ হইতে পারে, অতএব কয়েকটি সন্নীত্যাত্মক গণ্গ পাঠকবগের সুলোচরার্থ বছভাষায় আদুবাদ করিয়া বিবি- পাঠে গুম্বরুরি অভিপ্রায় ও নীতিশিক্ষার নিয়ম অনায়ানে জ্ঞাত হইতে পারিবেন।

সাধুসজের মাহাত্মা।

 এক দিবস সানার্থ আমি সানাগারে প্রবিষ্ট আছি, এমত সময়ে এক ব্ৰু আদিয়া একটি সৌরভময় আমম্ৎপিও আমার হস্তে প্রদান করিলেন। আমিও তাহা নমাদরপূর্বক পরিগুহ করিয়া কহিতে লাগিলাম, "অহে মৃৎপিণ্ড! তুমি কন্তুরী কি অন্য কোন সুরভি পদার্থ? তো-মার দোরতে আমোদিত হইয়া আমার চিত্ত মুধ্ব-প্রায় হইতেছে"। ইহাতে মৃতপিও উত্তর করিল, ·· সামি অতি সামান্য অপকৃষ্ট মৃ পিণ্ড, আমি কিছ্কাল দৌরভপূর্ণ গোলাব-পুষ্পের সমভিব্যা-शास वाम करियाधिनाम, এ कारण जाशा मो-রভ আমাতে সংক্রান্ত হইয়াছে। যদি আমার ठाएम माधूमझनाज ना इङ्ड, তाहा इहेटन था-मारक गामानः मृखिकाई शाकिर्ण हरेख"।

ताजन्की (सत् मानामा।

"একদা রাজ। নৌসেরবান্ মৃগয়া করিতে গিয়া বন্মধ্যে শিবির সংস্থাপনপূর্বক ভাছাতে পাচকদিগকে শীকার করা পশু পক্ষির মাংস পাক করিতে আদেশ করিয়াছিলেন। তথায় লবণের অভাব প্রযুক্ত রাজা ভৃত্যবর্গকে সন্ধি-ছিত গ্ৰামহইতে কিঞিৎ লবণ আনিতে অনুমতি প্রদান করিলেন, এবং কছিয়া দিলেন; "লবণের यथार्थ मृला-याहा इहैरवक, जाहा श्रमान कतिरु কোন মতে জুটি করিও না", ভৃতে রো কৃতাঞ্জলিপুটে **डाक्सनमस्क** किन्द्राना कतिन, "महादाकः। এ छुंक्ह विषयः तिमिल अजाम् न जानका किन इहेरल्रह? ইহাতে কি অনিষ্টই উৎপন্ন হইবেক ?" রাজা উত্তর করিলেন, "অপকর্মনাত্র অপেশ ২ আরক্ষ হুইয়া

খাথৈক-দেশে প্রচার করিতেছি: তাঁহারা তৎ-। এই বিস্তৃত জগতীমগুলে বহুলপ্রচার হইয়া থাকে। প্রত্যেক নূতন ২ দোষ কালস হকারে পরিণামে বন্ধ-মূল হইয়া উঠে। রাজা হইয়া স্বয়ং যদি কাহারে। উদ্যানস্থ বৃক্ষহইতে অন্যায়ে কোন একটি ফল পাড়িয়া লন, ভাছা হইলে তাঁছার ভূতে/রা তা-হার বৃক্ষ সমূলে উৎপাটন করিয়া কেল। যদি রাজা ভূত্যবর্গকে কোন প্রজার হণ্ম কুরুটের পাঁচ ছরটি ডিম্ব বলপূর্বক আনয়ন করিবার অনুমতি প্রদান করেন, তাহা হইলে কি তাহারা তাহা-দের সমত্ত পক্ষি আনিয়া শৈল্পকৃ কো-वाव। कतिरू कालवृशक करते र पूत्राचा ताका कमाछ मोयकाल ऋवश्वित्रि करत ना। किन्नु जा হার কুকায্যজাত অকীর্ত্তি দিগিদগন্ত ব্যাপিনী হইয়া চিরন্থায়িনা থাকে "।

ওক তর ভর ষর্ভরের নাশক।

এক রাজা এক জন বালক ভৃত্য সমভি-ব্যাহারে এক পোতে আরোহন করিয়া বসিয়া আছেন। ভ্তাটি জন্মাবিদ্নি সমুদু নয়নগোচর করে নাই: সুতরা সে পোডাদির গুণাগুণও জা-নিত না৷ একারণ সে বালক রোদন ও পরীতাপ कतिएक लागिल এवः ममूर्मुत कत्रक्रंमर्भात खरा কম্পামান হইতে লাগিল। রাজা তাহাকে যথেপ্ট नाइम ७ यद्भारतानां उना जुना श्रान कतिरवं । প্রবোধমানিল না। তাহার ক্রন্দনে রাজার কৌ-তুক-করণ-বিষয়ে মহাব্যাঘাত হইতে লাগিল,কিস্তু তদ্বিষয়ে কোন উপায় দেখিতে পান না। এমত সময়ে এক জন পোতস্থ দার্শনিক পণ্ডিত রা-कांत्र निक्टे निट्यम्न कतित्वन ; "मशताक, यपि অনুমতি করেন তাহা হইলে আমি উহাকে সান্তুনা করিতে পারি "। রাজা কহিলেন, "ইহার পর আরদয়ার কর্ম কি আছে"? দার্শনিক পো-जवार्रामिश्राक चाका क्रिलम, ''(जामना बहे दी-।

জ্জন্ হইতে২ যথন দে ভুবু২ হইবেক তথন তাহা-কে কেশে ধরিয়া গদর্গর পোতে ধর্ষণ করিয়া তুলি-ও ৷ তৎপর মর্লে ভাহার৷ বালককে তজপ করিয়া তুলিলে পর বে পোতের এক কোণে গিয়া নিস্তব্ধ হুইয়া ব্যালা রাজা ইহাতে পর্ম সম্ভুষ্ট হুইলেন, अव- कि: श्रानिद्वन, "अिक श्रकातः इरेव"। मान-নিফ উত্তর করিলেন, "প্রথমতঃ এ বালক জলম-জ্ঞনজন্য বিপদ্যটনা ও পোতাবলম্বনে তাহাহ-ইতে পরিত্রাণ পাইবার বিষয় কিছ্ই অবগত ছিল না। এই জনে ক্রেশে পতিত হইয়া পরে সুথজনক রসামাদন করত অনায়ানে তজ্জনিত সুথ অনু-ভব করিতে সমর্থ হইয়াছে।

•যে ব কির কুমিবৃতি ইইয়াছে তাহার ফলজ্-তে স্হা থাকিতে পারে না। পরস্ত যাহা তাহার দেখিতে অসুথকর আমার পক্ষে তাহা দর্শনমাত্র হাদয় প্রকৃল হর্য়া উঠে। স্বর্গীয় অপুরোগণের পক্ষে পাবনলোকও নর্ফ তুলা প্রতীয়মান হয়, কিন্তু নরকবাদিদিগকে জিদ্রাশিলে তাহারা কি সেই লোক স্বৰ্গত্ব্য করিয়া জানায় না ''?

शहबिनात बिन्हा।

भवामात यह १ ३३, वासि वाल। विद्याय विष्या-ক্র ছিলাম। আমি প্রতিনিয়ত রাত্রিযোগে যথা : নময়ে গাভোতান প্রংদর ভাগদীপ্রের উপাদ-তেছিলাম. এমত সময়ে দেখিলাম অপরপের স- আমা অপেকা সর্বতোভাবে শুেষ্ট বোধ হয় "। मछ लाक भागापित हर्ज़ार्य मित्र ६ निष्ठ হইয়া রহিয়াছে। ইহাতে আমি পিতাকে কহি- "একদা আমি যৌবনমদমন্ততায় অভী-

লককে সমুদের জলে কেলিয়া দেও, উন্মজ্জন নিম- বিই কথা শুনিবামাত্র মৎপিতা উত্তর করি-लেन, " वार्ष (इ! अहे बाल शहकीय पारवन উন্ডাবন না করিয়া যদি <mark>তুমিও নিদ্রিত থা</mark>-কিতা তাহা হইলেও বড় ভা**ল হইত "। আত্মশ্ৰা**-यी वर्डक न्यायात अव ७० रन वहन कावत्र किया আপনা ভিন্ন অন্য কিছু দেখিতে সমর্থ হয় না। যাহার দৃষ্টি পরমেশ্বরে সমর্পিত থাকে সে কি আপনাহইতে কাহাকেও অধিক দোষী বিবে-**इन। कद** ??

> পরের নিকটে উপকার্বশতা, স্বীকার অপেকা কারিক অন সহ্য করা ভেয়ঃ।

একদা কএক জন একত্র হইয়া হাতিমতা-ইকে জিজ্ঞাসা করিল, "আপনি কি কথন কা-হাকেও আপনহইতে অবিক নদাশয় দেথিয়া-ছেন "? তদুত্তরে তিনি কহিলেন, "এক দিবস আমি এক আরব-রাজনস্ত্রির সহিত কোন বনো-দেশে গমন করিয়া দেখিলাম এক কাঠুরিয়া কতকগুলিন কণ্টকযুক্ত ডালপালা একতা করিয়া वाया वाधिष्टा । जाशांक किन्द्रामिनाम, কেন এত ক্রেশ করিতেছ? ছাতিমের অতি-থিশালায় অনেক লোক গিয়া অনায়াদে আ-হার করিয়া আইনে; তুমি কেন তথার গমন কর না"। দে উত্তর করিল "যাহারা পরিশুম করিয়া দিনপাত করিতে সমর্থ হয়, তাহারা নাদি করিতাম: এক রাজি আমি পিতার সমাপে কেন হাতিমের অধীনতা স্বীকারে স্বাধীনত্ব চুত উপবিও ও বিনিদু ছটয়। ধ্র্পুত্তক পাঠ করি- । ছ্ইবেক ?? আমার বিবেচনায় সেই ব্যক্তিকেই

মাতৃপ্রতি ভক্তি।

তে লাগিলাম, •দেখুন ইহারা সকলেই নিদ্যুয় ভুত হইয়া জননীর প্রতি কঠোর বাক্য প্রয়োগ অচেতন ও মৃত্রায় পড়িয়া আছে, উপাসনাথ করিয়াছিলাম; ভাছাতে তিনি নিভাস্ত বিদ্য-কাছাকেও ভূমিপাতিতজানু দেখিতে পাই নাণা মানা ছইয়া গৃছের এক আতে বসিয়া রোদন

कत्र किहर नागितन, "है। त जाति य এত ক্রেশে বাল্যাবস্থায় পালন করিয়া এই তব্দ-ণভাবস্থা প্রাপ্ত করাইলাম, তাহার কি এই প্রতি-কল দিলি? এতাদৃশ মিষ্টুরতা প্রকাশের কি আর পাত্র পাইলি না? হায়! সন্তান বিংহবৎ পরা-ক্রমশালী হইলে বৃদ্ধমাতার কথায় তাহার চিত্ত আকৃষ্ট হয় না; পরস্তু তোর নিরুপায় শৈশবাব– স্থার কথা যদি ক্ষণকালের বিনিত্ত তোর মনে থা-কিত তাহা হইলে ফি কুট আমাকে এতাদৃশ কঠিন বাক্য কহিতে পারিভিন্? এখন ভোর বল পরা-ক্রম সিংহের ন্যায় ছ্ইয়াছে, এবং আমারও এই শেষ কাবস্থা।

कभागमाद्य भावपातक नियुक्त करा कर्डवा, उपनाथांग 正記句 多数十

 এক ব্যক্তি নেত্ররোগী চক্র যাত্রায় এক অশ্বচিকিৎসকের নিকট ঔষধ লইতে গমন করি-য়াছিল। উক্ত চিকিৎসক পশুদিগকে যেৰূপ করিয়া থাকে তজ্ঞপ ভাষার চক্ষেও ঔষধাদি দিল্লা রোগী ঐ ঔষধপ্রভাবে একবারে অন্ধ হইয়া গেল, অধিকস্তু রাগ্যন্ত হইয়া বিচারকের নি-কটে তাহার নামে অভিযোগ করিল। বিচারপতি এ হানির অভিযোগ গুহে। নহে। তুমি যদ্যপি चर्र गर्मा ना इहै ए जाहा इहै त्न कराठ व्यापन । নেত্ররোগের চিকিৎসা অশ্বচিকিৎসককে দিয়া করাইতে না"। এই গণ্পের তাৎপর্য্য এই যে य वर्णक कठिन कार्या नाध्यन व्यन्त्रप्रभौतिक नि-যুক্ত করে, এবং উত্তরকালীন পরীতাপ বিষয়ক চিন্তায় পরাঙ্মুথ হয়, বিজ্ঞ পণ্ডিতেরা তাহাকে 🛚 এক প্রকার মূর্থ বলিয়াই গণ্য করেন। যে ব্যক্তি कामो हुत्र त्व कथन धक्छत्र वर्गालादात छात्र कराह

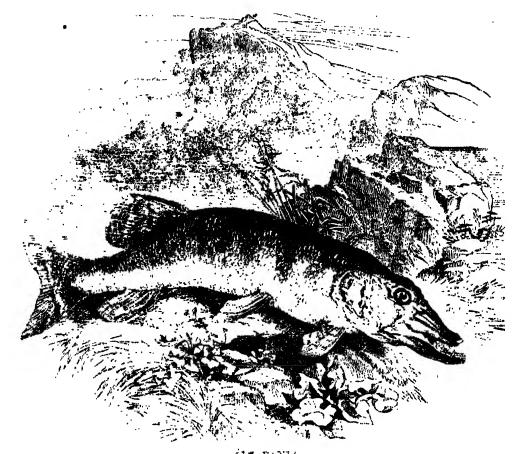
याशाता मामूत तूनन करत, जाशामिशक अक প্রকার ভদ্রবাপ কহা যায়, কিন্তু ভাহাদের হস্তে পাউ বস্ত্র বপন করিবার ভার বিশ্বাস পূর্বক কে नमर्भव कतिया शास्त्र?"

হিতকারির আদম কালে তাহার কথায় নির্ভর করা (अंग्रुक्त नरह।

ইছা বিশিষ্টৰূপে পরিজ্ঞাত আছে, যদি এক বালককে এক প্রচুর ভারবাহী সুশিক্ষিত উট্টু পৃষ্ঠে আরোহণ করাইয়া দেওয়া যায়। আর বালক यनि पूर्णम भक्षाकनक अथ निशा छाहा-क नहेशा याहेरठ চार्टः अवः टेम्वाय यान তাহার হস্তহইতে রাশরজ্জু মরিয়া পড়ে, তাহা হইলে ঐ উট তাহার চালনে মানে না. কেননা বিপদের কাল উপস্থিত ছইলে তথন ছিতকারীও নিতান্ত অহিত হয়। রা. না. বি.

কৃতিম মুক্তা।

भारत प्रकार क्षेत्र क 🏂 💥 🏋 প্রসিদ্ধ আছে; এবং মৎস্য প্রিয় ব্য-অনুমতি করিলেন, "তুমি দুরীভূত হও; তোমার জিরা ইহাকে ধৃত করণার্থে অত্যন্ত বাগু থাকে। জেসি নামা এক সাছেব লেখেন, যে "আমার প্রিয়পাত্র মধ্যে ব্রিক মৎস্য সর্বাপেক্ষায় বিশেষ की ज़ानुक, अवः जानम्युप्त । পृथिवीमश्रात देशा অপেক্ষায় অধিক চঞ্চল মৎন্য আর কুত্রাপি নাই; অপরাহে জল নিকটস্থ মক্ষিক। ও অপর কটি ধৃষ্ঠ করণে ইহারা যৎপরোনাস্তি তৎপর अवः नर्वनारे ठक्षन अवः हर्ययुक्त पादक।" शत्र स्र এই মৎস্য সুথাদ্য বা ভড়াগাদিতে দেখিতে সুন্দর বলিয়া তাদৃশ প্রসিদ্ধ নহে। ইহার শল্কের কোন সন্মান্য ব্যক্তির হত্তে সমর্পন করে না। নিম্মে এক প্রকার রক্ত-চূর্বং অতি সূক্ষ প্



দাথ থাকে, এবং ভাহ ই এই মংস্যের মাহাক্যা-ৰলিৱ প্ৰধান কারণ 🗷 পদাথ্ছইতে ভাহার এবং শিশ্পকারেরা ভড়ার, এচ প্রকার অভিসুন্দর কৃত্তিন মৃক্ত। প্রস্তুত করিয়া থাকে। এই পদার্থ-स्तिष्टि । जिस् नकन मध्या है द्वाप है छन्। यास, किन्न मुन्छ। नियानाराथं (काशाकेनेट्टने संस्टाग्र भारक नवेद्ययान, ७९ ९ १ ७ १ वृक्ति में ५ १ वर्ग में स्कर् এব॰ ভ্রমসন্তর রোচ এবং **ভে**ন্ * **মংসের শল্ক**। বীবংগলে এই সকল মংসঃ ধৃত করত ভাছার প্রক্র-সকল মুক্ত করিয়া লয়, এবং মুক্তা-প্রস্তুত-কারিদিগকে বিক্রয় করে। মুক্তা-প্রস্তুতকারীরা अं भारत नावधारन (थोठ कंद्र करन जिलाइसा हा था। पूरे जिस मिन खाल जिलिया थाकिता

* এই মংসাক্ষর (চল) বিলাগের ভিতায় **এবে মানুত আহে।**

রজ্বে চুণ পদার্থ শক্তেইতে পৃথক্ হয়: े अभार्थ कि. कि. शहिकात गरमत कन. वा শালক-সকল বৌপাবিৎ চাকচক,শালী বোধ হয়, শিরিস মিশ্রিত করত তাহাই ভবলকির ভি-ভরে বা উপরে লিপ্ত করত শুচ্চ করিলেই মুক্তা প্রস্তুত হয়। এই ক্রিম মুক্তা প্রস্তুত করণ-कार्य। चात्रक नियुक्त चार्छ, अव॰ अञहर्थ श्रेखा-বিত মংস্যের শক্ত টাকায় > বা সাং তোলক পরিমাণে বিক্রীত হয়। রোহিত, কাতলা, বাটা প্রভৃতি মৎস্য ব্লীক, ডেন্ প্রভৃতির সহিত এক শুণাভুক্ত বটে, বোধ হয় ভাহাদের শল্কে যে রজতবৎ পদার্থ আছে, ভাহাতেও মুক্তা প্রস্তুত হইতে পারে, অতএব তদিষয়ের পরীক্ষা করা কর্ত্ত-वा। य दाकि व विषय कृष्ठकार्या इरेदन जिलि অবশ্যই প্রচুৱার্থ উপার্জন করিতে পারিবেন।

विविधार्थ-मञ्जूर,

পুরার্ত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব 🕽



नू ऐका-जािज विवत्र ।

000000 (छ/क-कोर्वत्र व्यावान-निमित्र পৃথিবীর বিশেষ ২ স্থান নি-र्षिष्ठे चारह। कान की व नईएड 🕅 বাদ করে, কেহ দমভূমিতে খ-वस्म करत, कर वा अरात माया वाकिरबरे

নির্বিঘ্নে দেহযাত্র। নির্বাহ করিতে পারে। কেছ কেই উফ-খান-প্রিয়, কেই সাম্য-খান-প্রিয়, কেই वा मीजश्रधान-परम निवादनत्र इंक्ट्का धीर्न. উপভ্যকা, অধিত্যকাদি ভেদেও ভলিবাসি জী-त्वत एक रश। क्वन मन्या अरे निस्ता अधीन नरहः (न পৃথিবীর नर्वत वान कतिर्छ नक्षा ; रिममश्रालक चनरा भीक, वा निव्यक्तरहत्र निकरेष

मूश्मक्। भीया, किङ्गुटाई जाशांक जीव कतिएव পারে না। হিম্মপ্রনের স্থানে ২ এমত শীত যে তথায় ব্যের নয় মাস ক্রমাগত জল জমিয়া थारक, अध्यासा ना भनाहरल भारताभयुक पुर জল পাওয়া ভার: অথচ তথায় স্বস্থদে মনুষ্য বান করিতেছে। অপর সাহারা-মঞ্ছুমিতে এমত श्रीमा या मन्या महिला होरमुखारण उरकारार खक्त क्हेश थांग्र, **পठिवांत व्यवकाम थाटक ना**; किन्नु (न ज्ञान । निर्क्रम नरह। এই প্रকারে नर्ज वारम नकम दलिया**ই मनुरम्ब माहान्य**। करनक निर्काठ इन्हेशारए; शतु शृथिनीत नर्देख মন্য্য আপন কায়িক ও মাননিক ধর্ম সম-ভাবে রক্ষা করিতে পারে না। দেশভেদে **ন**নু-सात करमन ७ तृषिग**७ व्यानक एउन इरे**सा थारक। कृकसन्-भर्बज-निक्षेष्ठ पाजूना मुग्नत নারপুরুষ, আফরিকার কাকরি, সাপ্তবিচ্-দ্রী-পের অনভ্য প্রজা, মেদিনীপুরের ধাঙ্কড়, এবং অক্তেলিয়া ঘীপের অন্তির্মদার দীর্ঘকার নৃত্যব-রব, ইহাদিণের প্রতি দৃষ্টি করিলে তাহা অনা-शास्त्रहे मध्यान हरूटि भारत।

স্ব, এবং বর্ণ প্রায়ং ইংরাজদিগের তুল্য গৌ-

মনুব্যের তুলা বোধ হয়, ভাহাদিগের এক কদর্য্য দেশ-ব্যবহারের বশতঃ তাহার নিৰূপণ করা কঠিন। অপত্য জন্মিবামাত্র তাহারা মন্তকের উভয়-পার্মে দুই থানি কাণ্টকলক (তক্তা) এমত नवल वाश्विता द्वारथ, य ज्ञान्भवान-मृद्धाई वा-লকের মন্তক চিরকালের নিমিত্ত চেপটা ছইয়া যায়; আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে এবস্পূকারে মন্তক বিক্তাকার করায় ভাছাদের বৃদ্ধিবৃত্তির কোন হানি হয় না; সকলেই অসভ তোনুৰপ সুচতুর ও কর্মঠ, এবং আপনাদিগের প্রয়োজন-মত গৃহ-নৌকাদি-নির্মাণে তৎপর।

ইংরাজেরা ইহাদিগকে "নুট্কা-কলমীয়" नारम विथा । कित्रशास्त्र, शतु अ भव्म हेहा-দিগের দেশে প্রচলিত নছে। দলভেদে ইহারা व्याणनाहिशक किन्क्, क्रीऐनल्, खशकान्, मूल्छ-লোমা বা ক্লামুপ্ নামে বিখ্যাত করে।

बरे काठीय-मन्य/दिशंब अथाम शाम/मृव/ नामन् मर्ना। छक्छ-कन्ननार्थं देशाता नर्दमा वागु, **बवर मोट्डित श्राक्कारम नकरमहै बहै मर्**मा ধরিয়া শাতকালে ভো**জনের নিমি**ত্ত শুক্ত করিয়া উত্তরামরিকার পশ্চিম-৬টে "নুট্ক। কল- রাখে। এই মৎস্য-সন্তুহের শেষ হইলে পর সক-ষ্ঠায়" নামা এক জাতি আছে; তাহার। এই প্র-। লেই আনন্দে মহামহোৎ নব করিয়া থাকে; এবং ন্তাবের এক উত্তম প্রমাণ। ভাহাদিগের আহার তৎকালে কোন ২ দলপতি বনমধ্যে গিয়া অনা-ব্যবহার সকল সনুষ্যহইতে পৃথক। রকি-পর্ব- হারে ঐলুক্সালিক মন্ত সাধন করিতে থাকে। তের নিকটে অভ:ও শীতল ভানে তা্লাদিগের এ ভপা**রীদিগের নাম "তামিশ্"। নুট্কাদিগের** আৰ্সে, অথচ বস্থাদি-বপন-ক্রিয়ায় অক্ষম, বিশ্বান আছে যে তপ্সাা-কালে ঐ দলপতিরা সুতরাং তাহার। সর্ব। সলোম ভলুক্চর্ম ধারণ। "নৌলোক" নামা এক দেবতার সহিত কথোপ-করিয়া থাকে। ইহাদিগের অবয়র থর্ব অথচ। কথন করে, এবং ভদনুগুড়ে দৈবলজি প্রার্থ হয়। त्म याहा इडेक, इठाए अक र रिवन अक र अन রাজঃ পরস্ত দেশ-ব্যবহার-বশতঃ ইহার। দেহে ভামিশ্ দেহে কৃষ্ণকেশবিশিষ্ট চর্ম আছ্যুদ্দ শবং সর্ব। নানা প্রকার ম্ত্রিকা লিগু করিয়া রাখে। মন্তকে বক্তন-নিঞ্ভি রক্তরণ মুক্টাদি ধারণ করত ইহাদিগের মন্তকের প্রকৃত অবস্থব, অপরাপর গুম-মধ্যে প্রবেশ করে। তদুঙে আবাল-বৃদ-

বনিতা সকলেই পলায়ন করিতে থাকে; কেবল খারণ করিয়া থাকে, এবং মৃগয়া ছারা প্রাপ্ত ভল্লক-नाइनिक वा नाइम-मूथाणित चिलायी काम २ हम कि चमा काम मलायहर्य शाहेत उपाता পুরুষ তাহার সন্মুখে অগুসর হয়। তাসিশ্ অমত ব্যক্তিকে দেখিবামাত্র ভাহাকে ধৃত করত। দার ন্যায় এক-প্রকার কম্বল প্রস্তুত করিয়া থাকে। मखबात। जाहात वाह्रहरे पूरे जिन गुाम मार्ग मः भन कविद्या सद्या के मः भन-नमस्य देथर्ग्। जात-नवन-পূर्वक खक थाजार अनःमनीयः य वाकि তাহাতে অক্ষম তাহার অত্যন্ত নিন্দা হয়; তা-मिन् कनाशास्त्र अवः नीचु मःनन कतिश माःन ना बहुटक পांत्रिक्ट निन्मा इट्वांत मछावना। लारक প্রচরিত আছে, যে নুট্কারা নৃমাংলালী; পরম্ভ উল্লিথিত-প্রকারে যত মাংস ভোজন হই-য়া থাকে, ভড়িন্ন অন্য নৃষাংস ভক্ষণ করে না।

मूहेकानिरगत ভाষার लक्ष्म विद्युहन। कतिया দেখিলে বোধ হয়, তাহার। আজতেক * জা-তির শাথা হইবেক। ঐ উভয় জাতির ভা-यात व्यत्नक वाका "९ल्" वा "९ली" मास्म শেষ হয়, এবং উভয়ই এক অর্থে ব্যবহৃত; তদ্যথা, "আপ্কুইকুিংল্", আলিক্সন; "ভো-মক্তিক্সিৎল্", চুন্থন; "ছিত্ল্ত্জিৎল্", জ্-छन; " ९ जि ९ जि भ हे न्", शृषियो ; " जाग्रका-शांदन्", युवकी, तमनी, इंकामि।

ইহাদিগের আবাস কাষ্টনির্মিত, অভ্যস্ত অপরি-क्छ, बदः मर्गागरस পরিপূর্ণ। তন্মধ্যে कार्ष খোদা পুত্তলিকাদি অনেক থাকে। ১৪৫ পৃষ্ঠে মুদ্ধিত हिट्य पूरेणि व्हनाकात शूखिन मृष्टे हरेदिक। कथमर মৎস্য বরিবার সমস্ত ব্যাপার ভাষ্টের গৃহে অ-ক্লিড থাকে। ইহাদিগের আবাদ যজ্ঞপ অসভ্য हेरामिटगंत वज्र उपनुक्ला; कालीम वज्र माज শাই; বস্ত্র-বপদ-কর্মও তাহারা জ্ঞাত নহে, সক্-लाई शाहेमवृत्कत छाल-निर्मिष्ठ अक-श्रकात मामूत

में विविधास्थित र अस्थ, ३२७ शृष्टि और साजित विवत्न आह्य।

अ मामूरवद चन्छःशृष्ठ चावृ **करत्र। किहर म**लि-शूर्वरे डेक रहेशास्, य मूहेकाम्रिशंत श्रधान थाम।-मुवा मध्माः ले मुद्या जाहामिरगंत गृह

পরিপূর্ণ খাকে, এবং ভদ্গদ্ধে ঐ গৃতে প্রবেশ कड़ाई कठिन। मूछेकाड़ा अ मन्द्रमाड टेंडल शान করে, তদণ্ডদ্বারা এক-প্রকার রোটিকা প্রস্তুত করে; अवः भोडकारम एकम्परमात व्यवस्थान कीवम धातन करत।

নুট্কারা অভ্যন্ত অসভ্য, সূত্রাং তাহাদিগের বুজিব্তিও সুতীকু নহে; ম্গয়া ও মৎস্যধরন ভিন্ন অন্য কোন কর্মে তাহারা নিযুক্ত থাকে না; **ब**नः चार्रेन-विषयः बक्तनं इक्षेत्र नामा मार्किन দেশীয় বিখ্যাত-জাতিহইতে সর্বতোভাবে অথম।

कोजूकावर जाभए।

भन्म-ताष्ट्रात शास्त्रकारण वारसा-निय नामा अक सम धमाना विक् খ্রীপুর্বার্থী অস্ব-বাণিজ্যে দিন-যাপন করিত্ এবং তদ্যারা আপন সম্পত্তিরও বিশেষ প্রা– চুর্য্য জন্মাইয়াছিল। তাহার পর্লোক-প্রাপ্তি হইলে, তাহার এক মাত্র পুঞ গিুগোরিও বৈত্তিক-ঐশ্বর্য-অধিকরণ-পূর্বক পিতৃব্যবসায়ে नियुक्त रहेव। वानावकावधि रय-भन्नीका कना-তে তবিদ্যায় সে উত্তম পারদর্শী চ্ইয়াছিল, वरः नम्पांख ७ नक्यंग्रात नाहारकः नमस-प्रांख-বাসির প্রদন্ত সমাদর সম্ভোগ করিত।

তাহার পৈত্রিক-সম্পত্তি-প্রান্তির অন্পত্তার शदा द्वाम-नगदा अक महायादबार नव स्टेश्नाहिन इ

তথার অস্ব-ক্রয়-বিক্রয়াভিলাবে অনেক হয়-বণিকের সমাগম হয়, এবং গ্রিগোরিওও তথায় উপস্থিত ছিল। অশ্ ক্রয় করাই তাহার এক-মাত্র অভিপ্রায়, অভএব দে এক সহসু বর্ণমূদ্রা-নমভিকাহারে লইয়। তথায় আগমন করে; পরস্তু পুথম-দিবদের হট্টে কোন উত্তম অশ্ব উপস্থিত না-থাক-প্রযুক্ত সে সকল অশ্বের পরী-का করিয়াও কোন অশ্ব ক্রয় করিলেক না। ঐ शतीकः-कत्र-मगर्य **रुट्डि मग्रु क**भ्रुहे <mark>मन्</mark>र বলিয়া গ্রিগেরেও মনেমনে উদ্বিধ ক্টতে লা-গিল, পাছে অশ্ব-বিক্রেতারা মনে করে যে এ ব্যক্তি ভণ্ড, হ্য়ক্তয় করিবার ধন নাই বলি-য়াই যাবদীয় অশ্বের নিন্দা করিতেছে; এবং ঐ অপবাদের নিরাকরণার্থে মধ্যে২ আপন কটিদেশত্ব মৃদার উপর এই প্রকারে হস্তক্ষেপা कहिर्छ लागिल. याहार्छ निकष्ट राकिना অনায়ানে জানিতে পারে যে তাহার কটিদেশে व्यत्नक मुद्दा व्याहि। वे नमस्य वक पूष्टी जी ভথায় উপস্থিতা ছিল: বিমুধ্বকারী মুদুাধুনি ভাচার কণগোচর চইবামাত্র সে একেবারে क्ट्रेस्टा इक्तः वे मून् ना क्षेत्र इक्टन कान गएक काहोत मनः माछ इत ना, व्यक्थव म হাট ভাজিবামাত্র গিগোরিওর পশ্চাৎ ২ গমন कद्रक टाञाह कारारमह निर्णेष्ठ कहिरलकः; अव॰ ভত্ত্য ভূত্দিপের নিকট ভাষার নাম-ধামের পরিচয় লইয়া স্বাভিষ্ট-বিদ্ধি করিবার উপায় কপেনা করিতে লাগিল।

অন্ধাদবস হটে বৃথাশুমে শুন্ত হইয়া অপলাক্ত গিলোরিও বাসায় শয়ন-পরায়ণ আছে,
এমত সময়ে এক জন ভৃত্য আসিয়া কহিল;
শমহাশহের সহোদরা আপনার দর্শনোৎসুকা
হইয়া সদাশীঃ-পূরংসর আপনাকে আন্তান করি-

फिल्म "। शिर्गितिथ करिन; "शामात शिन् তার আমি এক-মাত্র অপ্তঃ, আমার সংক্ষেরা कि श्रकात नखरव ?" ज्ञा कश्विः " वर्गवानी व्यार्खानि**७ महानय ७३ मगरत वानकत्र**-कानीन আপনার মাতার পাণি-গুৰ্ণ করণে, এবং তাঁছার গর্ভে প্রথম এক কন্যার পরে আপনার জন্ম ছয়; আপনি ভূমিষ্ঠ হইবার পরেই আস্তোনিও মহা-শয় জ্ঞার সহিত বিবাদ করত জ্ঞা-কন্যা-ত্যাগ-পূৰ্বক আপন অপোগও পুথ লইয়া নেপল্য-রাজ্যে প্রস্থান করেন। আপনি সেই অপৌ-গণ্ড বালক, এবং আমি আপনার ভিপিনীর ভ্ত্যা" অতি শৈশবাবস্থাতেই গ্রিগোরিওর মাজু-বিযোগ হইয়াছিল, এব সে আপন মাত্-বৃত্তা-স্তুও কিছুই জ্ঞাত ছিল না; অপর সে শ্রুত হই-য়াছিল যে ভাছার পিতা কিয়ৎকাল রোম-দগরে বাস করিয়াছিল; অভএব ভূত্যোক্ত এই ও এব-ম্পুকার অন্যান্য বিশ্বাসজনক বাক্যে মুখা হইয়া তাহার সহিত সংহাদরা-দর্শনে যাত্রা করিল।

প্রাধিত জা এক প্রশন্ত অট্টালিকায় বাস করিত এবং তাহার গৃহে সুবেশা ঘাসী ও তৈঞ সাদি দুব্য সামগু কিছুই অপ্রতুল হিল না। তদ্ধ্রে গিগোরিও বোধ করিল, গৃহবামিনা অবশ্যই ভদু রমণী হইবেন, এবং ভাহার সহিত বাক্যালাপে মুথ হইয়া পরম বিশ্বস্ত হইল যে নে অবশ্যই ভাহার ভগিনা বটে, ভাহাতে তিলার্জ সন্দেহ নাই। অপর এ শঠজীও ভা-হাকে মোহিত-কর্নার্থে আপন সমস্ত বাগ্জাল প্রসারণ করিতে জুটি করে নাই। নে গিগো-রিওর দর্শনমাত্র সঞ্জানম্বল ও হে ছাতঃ, হে ভাতঃ" এই সংখাধন-পূর্কক ভাহার সলক্ষেত্র ধারণ করত মন্তকের আত্মণ ভাইন, ও মান্ত-পিত্র-পোক পুনক্ষ্যীপন হইয়াকে কলিয়া জন্মন করি-

তে नार्शिन। भण्डभात यथ्भातासि नगापत (जूर-विषयक-मामाविध-वाक्राणात्म किवाद-मान रहेल गिुरगिति वानाय याहेवात मानम প্রকাশ করিল। কিন্তু ঐ জ্রী তাহাতে সম্মত मा इडेशा कहिल; "आमि তामात महापता; আমার বাটীতে মদ্য আহার না করিয়া তুমি কি প্রকারে অন্যত্র ঘাইতে চাহ? ত্রিংশৎ-বৎসর-পরে ইষ্টদেবের ক্পায় অদ্য ভাুুুুাতার নহিত সাক্ষাৎ হইয়াছে; তাহার নহিত একত্রে ভোজন না করিয়া প্রাণ ধারণ করিতে পারিব না; অতএব তোমাকে অদ্য অবশ্যই আমার গৃছে ভোজন করিতে হইবেক।" গ্রিগোরিও কছিল; "বাসায় সম্পিরা আমার প্রত্রীকা করি-তেছে: चामि य পর্যান্ত ना याहेव म পর্যান্ত তাহারা আহার করিবে না; যতএব জ্বন্য জা-मारक क्रमा क्रव, यामि क्षा यानिया वशान ভোজন করিব।" ঐ বাক্য শুবণমাত্র বাক্চাতুর্য্যে অত্যন্ত-কুশলা কণ্পিতা ভগিনী অঞ্চ-নিক্ষেপ করিতে ২ কহিল; "ছে বিধাতঃ! আমার ভাগ্য এমত মন্দ। ভূমগুলে আত্মীয়-মধ্যে এক-মাত্র ভাতা, আমি তাহারও সুহপাত্র হইলাম মা: ভাই, তুমি আমাকে পূর্বে জানিলে আমার গৃহ ক্ত্যাগ করিয়া ভেটেরাথানায় যাইতে চাহিতে না। **राय!** কি দুর্ভাগ্য। আমরা এক পিতার সস্তাম, এক গর্ভে জাত, ও এক-মাত্-ন্তনে প্রতিপালিত **হ্**ইয়াও পরস্পর চিনিতে অক্ষম হ্ইলাম। গ্রিগোরিও, মা বর্ত্তমান থাকিলে তুমি কি এমনি করিয়া আমার মলোবেদনা দিতে পা-ब्रिट्ट?" **ब**दः बहे कथा दिनशा चडान्त कन्मन করিতে লাগিল। গ্রিগোরিও একান্তে অব্সৃত हरेक मा शांकिता अवटमटय इम्परविभागे खिशनीत निकार एका क्यार्थ अधिक।

দৈৰ বা কম্পিত ব্যাষাতে ভোজন-সমাপনে প্রায়ঃ ৯ ঘণ্টা ব্লাত্তি হইলঃ ছৎপরে গিগোরিও वानाय याहेवात প্रजाव कतारु उद्धिनी कहिन: "ভাুতঃ ৷ আমি বড় দুংখিত হইলাম যে আহার প্রস্তুত হইতে এত বিলম্ব হইয়াছে; কিন্তু একণে ভোমার বাদায় যাওয়া কোন মতে উচিত নহে। তুমি বিদেশী; রোম-নগরের পথ ঘাট কিছই জ্ঞাত নহ: এই অধাকার রাত্রিতে তুমি কো-থায় যাইতে কোথায় যাইবে তাহার হৈয়ত नारे; व्यथिकञ्ज अ नगत प्रमृत्य भित्रेशूनी; भ-कार्रात शत पात-विरुद्धिया योक्टिक हरेल श्रीरंगत আশা পরিভাগে করিতে হয়। আমি জানিয়া তোমাকে কি প্রকারে এনত নঙ্কটে প্রেরণ করিব? তুমি অদ্য এই খানে অবস্থান করঃ क्ना প্राप्त वामाय याहेत्व।" शिर्गादि अहे वाका উल्लंड्यन कतिया वामाय याहेवात जात्नक চেষ্টা করিল, কিন্তু কোন মতে মায়াবিনী ভগি-নীর অনুরোধ থণ্ডিতে পারিল না; অধিকন্ত চোরের ভয়ে বর্ণমূদুাগুলিন সর্বদা আপন কটি-**प्राथिल, लाहा महिल लहेश। इस्रोन-**যোগে দ্মু/পূর্ণ-পথে ভূমণ-করা কোন মতে শ্রেয়ঃ নহে, বোধ করিল; সুতরাং সে রাজি তাহার তথায় বাদ করাই স্থির হইল; এবং তাহার ভগিনী ঐ অবস্থানের বাতা **তাহা**র <u>বা</u>≁ সায় পাঠাইতে উদ্যতা হইল।

রাত্রি দশটার সময়ে গিংগারিওর ভগিনী তাহাকে সুসজ্জীভূত এক ঘরে লইয়া গিয়া কহিল;
৺ভূতিঃ দুঃথিনীর এই গৃহে অদ্য শরন কর;
রাত্রি-মধ্যে কোন দুবের প্রয়োজন হয় এই
উপস্থিত ভূত্যকৈ অনুমতি করিও।" এই কথা
বলিয়া এক জন ভ্তাকে সন্ধান রাখিয়া কে

গিলোরিও ঘরের চতুদিণ বিলকণ করিয়া যাহা হইবার তাহা হইয়াছে, এইকণে প্রনায়নঃ निश्लीकान कत्रक, मक्स बात भवाक सहस्य वस करूप-शूर्वक (मरुघड़ेएड जाश्रम रखारि रिमुकः: করিয়া শয্যার উপর স্থাপন করিল, ও একবার वहित्यां भारते हैं था भारत विद्या भारत ভ্তত্ত জিভ্যা**निन, "ব্দিদেশ याইবার স্থান** কোথায় 🕾 নে তদগৃহ-পার্ফেই এক কাষ্টের বারাগু দেখাইয়া দিলেন: কিন্তু গ্রিগোরিও তথায় যাই-বামাত্র ভাহার ভল ভাঙ্কিয়া গেল; এবং গ্রিগো-हिं उ उत्तिरम् এक मलकुर्छ निপ्रिं इंहेन। जे मक्रटि रन शुनः २ जुडाटक डाकिन, किंखु किंह উত্তর দিলেক না; করে কি? বছকটে কুল্ডইতে উঠিয়া রাজপথে আইল, এবং ভগিনীর ছারে: গিয়া উচ্চৈঃস্বরে তাহাকে ডাকিতে লাগিল; কিন্তু কেংই কোন উত্তর দের না; অবশেষে এক জন ভীষণাকার দম্যু গবাক্ষহইতে শিরঃপ্রশারণ করি-য়া কহিলেক, "কে রে, দ্বারে এত রাত্তে গোল করিতেছে? চৌকিদার, এ বেটাকে দূর করিয়া দেহা" গ্রিগোরিও কহিল; "আমি এই গৃহ-সামিনীর ভাতা: দৈবাৎ বারাণ্ডাছইতে পড়িয়া গিয়াছি: তাহাকে একবার ডাকিয়া দেহ "। मनूर कहिल; '' इ.च. नेराला, ठांत माठलांगि রাখ; শীলু দুর হও, নহিলে ইট কেলিয়া তোর মাথা ভালিক।" গিুগোরিও নমুভাবে অনেক मृषु कथा कहिरतमः किन्नु उपूछ्रत, कर्षेकार्षेत्र। ভিন্ন আরে কিউই উত্তর পাইলেন না; অধিকন্তু তাহাদের গোলে প্রতিবাদিরাও উঠিয়া অনেকে দুর্বাকা কহিছে লাগিল। এমত সময়ে এক জন পথিক গ্রিগোরিওর বিবরণ শুনিয়া কহিল; · তোমার ভাগ্য ভাল যে এই দন্যনীর গৃহে প্রাণচ্যত হও নাই; এ বেশ্যার পদ্ধী; এম্বানে এ

কর ৷" কলতঃ তত্ত্ত্য লোকেরা যে প্রকার তত্ত্বি গজ্জন করিতে ছিল ভাহাতে তথায় ভিষ্টৰ ভার ; न्जतः गिरगाविष अक महम् वर्गम्या ७ वकापि চ্যুত হইয়া-বিধা প্রলিপ্তাক্ষে তথাহইতে প্রস্থান করিয়া মনে করিল নগর-সম্মুখারা নদীতে সান করিয়া বাবায় যাইবে; কিন্তু এই অভিপ্রায়ে किश्रमृत याहेए ना याहेए प्रिथन, चार्याती দুই ব্যক্তি ভাষার দিগে আনিভেছে, এবং তদ্ঙে মনে করিল, যে তাছারা বুঝি প্রহরী ছ্ইবেফ, ভাছাকে ধরিতে আনিভেছে, সুভরাং ষ্ঠ্যস্তভয়ে প্রপার্মে এক নির্জন বাটার ভিতর नुकारे उ रहेन।

टेम्टवर अमनि घटेना खे वाकिषश्च के बाहीर मध्या প্रবেশ করিল, এবং ছারপ্রান্তে উপবিষ্ট हरूया शतम्भात कर्णानकथन कतिए २ अक व/कि कहिल; " साहे, बवाणीटा चमा वफ़ मूर्जन, रवाध হয়, পেৎনীটেৎনী কিছু আসিয়া**ছে";** অপর व्यक्ति कहिन; " छेहूं, जे পেৎनी मरह; जहैं-খানে কোথাও মল আছে; অথবা আমরা পথে विश्वा भाषादेशा शाकित।" अहे श्रकांत्र किषि-कर्णानकथरनद्र नात्र উछয়्य चानम २ क्रिएम-रुरंट नुकारेक मीश वारित कतिया महात गर्बेब चारवयन कतिर्घर पार्थ, जिर्ताबिक मननिष হুইয়া এক পাৰ্মে দ্ঞায়মান আছে। তাহাদের इटल ध्वाविष्वामाळ शिर्गावित मूम्ब्यामः হইয়া ভাহাদের চরণে প্রতিত হওত আপন मिछारगाइ विवद्यन-वर्गमशूर्वक शांत्रज्ञान आर्थना করিল। ঐ ব্যক্তিঘর কৃষ্ণি; "ডোমার শার **उत्र माहे, जूमि व्य के मूडे। जीव श्वाहरेट आह** नहेंग्रा कानियाहं देहाहे शहम आकः अहेलात व्यव द्वाप रामात क्ष्मा निम्न कार्य कार्य । व्यापादिक निम्न निम्न क्ष्मा विकास विकास खमा अ (मरणंत तांक्यां एवंत नमाधि इहेशारह, जाहात खरू खरनक वह मृता वजानकात खाल एहं; अक खमूती शरकत मृता है नह नृ वर्ग मृता; खामता शांतह है एड भव ज्वांति वे पुराणि नहें—वांत मानर याहे एड ज्ञां खामा पिरांत ना-हाया करिता कि थिए खामा पिरांत ना-हाया करिता कि थिए खामा पीटें छ थाता।

बइ भन्नामरण जिस स्तरन भानंत्रारन চलिल; কিন্তু পথিমধ্যে এক জন ডল্কর কহিল; "ভাই, আমাদের এ নজির দুর্গন্ধে বাঁচ। ভার, চল কোথাও লইয়া গিয়া ইহার গাত্র ধৌত করিয়া দি।" তদনুসারে ভাছারা নিকটস্থ এক কুপের কাছে গেল; এবং তথায় গিয়া কোন পাত্ৰ না পাওয়াতে গ্রিগোরিওর কটিদেশে রজ্জু বালিয়া जोहारक कृषमर्धा निर्माण कितलक; ७ এই मरक निष्पिष्ठ रहेन य गांज श्रकालनान उत গ্রিগোরিও রজ্জু নাড়িলেই তক্ষরেরা ভাহাকে টানিয়া তুলিবেক। এই ব্যাপারের কিঞ্ছিৎকাল। পরে এক জন পিপাসু প্রকৃরির তথায় আসাতে তন্ধরেরা অবিলয়ে পলায়ন করিল, সুতরাং গ্রি-গোরিও কৃপমধ্যেই নিমগ্ন রহিল, যত রজ্জ্ব नार्फ्न किছुटाई कि जाहारक छेकात कर्त्र ন। অন্ততঃ উক্ত প্রহরী আসিয়া কুপের রঙজু তুলিতে ২ কহিতে লাগিল; "পাড়ার ছোঁড়ারা कि मूर्छ; পাতकुशांत मिष् शाहां वि के वें।-धिया करन किना शियाह (य जिनाई जात; थाक, नव नामालारक काल थानाय लहेया यात्छि।" भरत त्रक्कु जूनिया पर्या, देष्ठरकत भतिवर्स्य अक দিগম্বর পুৰুষ উঠিল, এব॰ তদৃষ্টে ভূত বোধে অভ্যন্ত বেগে পলায়ন করিল; একবারমাত্রও क्तित हास्यात छत्रभा रहेल मा।

् भिर्माति अरे धिकाति कृपरहेट मृक स्रैता क्षत्रीच्याति सम्बद्धाः कतिरुद्धः, अम् अमस्य পূর্বোক্ত তক্ষরের। প্রত্যাবর্ত্তন করত তাহাক্তে সকল বিবরণ ব্যক্ত করিলেক, ও আপনাদিণের কির্থ বস্ত্র তাহাকে পরিধীত করাইয়া তিন জনে একত্রে গোরস্থানে গমন করিল।

রাজপুঞ্রের গোর ইষ্টকনির্মিত, অতিগভীর কুগুকার; তাহার অথোভাগে এক কাষ্ট্রের সিন্দূকে রাজপুঞ্-শব সংস্থাপিত ছিল, এবং গোরের মুখ বৃহৎ এক প্রস্তরদার। আচ্ছাদিত ছিল। তক্ষরেরা আসিয়া তিন জনে অনেক-ক্রেশে ঐ প্রস্তরের এক দেশ কিঞ্চিৎ উচ্চ করত একটা কাষ্ট্রের ঠেকুয়া मिलक: शाद खे भारत मस्या क धारवन कति-বে, এই বিবাদ করিতে লাগিল; ভূতের ভয়ে (कहरे उथाय याहेट ठाट ना। তক্ষরদায় ভাড়নার ভয়-প্রদর্শন-পূর্বক গ্রিগোরিও-কে ভন্মধ্যে প্রেরণ করিলেক। দে অগত্যা ভন্মধ্যে গিয়া শবের-বন্তাভরণ হরণ করত সঞ্চি-দিগকে তুলিয়া দিতে লাগিল; এবং ভংসময়ে কোন অংশ দিবেক না, অতএব আমার অংশ এই থানে লওয়াই উচিত"। এই বোধে শ-বের অঙ্গুরীয়কটি লুকাইয়া অপর সকল দুব্য তক্ষ-রদিগকে দিল। তাছারা অঙ্গুরীয়কের নিমিত্তে প্নঃ২ কহিতে লাগিল, কিন্তু গুপোরিত "যাই। কিছু ছিল, তৎতাবৎই দিয়াছি, আর কিছু नाहे", दिनशा প্रভाরণা করিতে লাগিল। अव-শেষে তক্ষরেরা কট হইয়া গোরাচ্ছাদন-প্রস্তরের ঠেকুয়া বিমুক্ত করত প্রস্থান করিল; সুতরাং জাবিত গ্রিগোরিও শবের সহিত গোরে প্রোথিত **हरेलन। उ**९काल जाँकात मानायाजनात आह ইয়তা রহিল না; কোথায় অখ ক্রয় ক্রিয়া আপনার সুখসম্পত্তি বৃদ্ধি করিবেন; কোগায় नर्वच पूर्ण रहेया शाननरम् भावम् रहेराम् ।

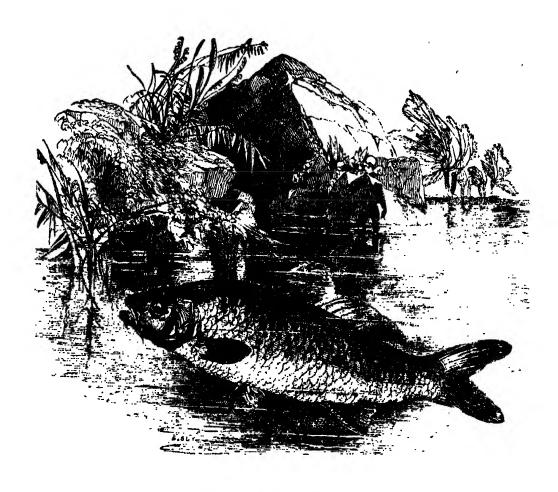
कम्मान कि मत्नार मनात नास्ति इस? गकनरे অব্যকার; নম্মথে শব; এবং গোরমধ্যে অনা-হারে মৃত্য উপস্থিত; ইহাহইতে ভয়কর ব্যা-পার আর কি ছটতে পারে? পরস্তু কি করেন? ভাষার এনাস শক্তি ছিল না, যে একক প্রস্তর ঠেলিয়া তুলিতে পারেন: অপর গোরমধ্যে শব্দ করিলে বাহিরে কেহ ভনিতে পায় না; আর গোটকানে শুনিবার লোকই বা কোথায়? অগত্যা : মুমুর্ব্রাই: হইয়া সজলনয়নে শবের উপর শয়ন ফরিলেন। তদবস্তায় প্রায়ঃ দুই ঘণ্টা কাল পত হুইলে ভাঁচার বোধ হুইল যেন কেছু গোরের প্র-ত্তর সঞ্চালন করিতেছে; এবং ভদবিলম্বে ঐ প্রস্তর एकीक्ड वर्ष ; अग्र नगर्य अक्षन कहिल, "ভাই, ভোমরা কেই গোরে অবভরণ কর; ইহার , এক জন মীনব্যাধ মুখ্য-ধরিবার উপায় ও गर्या जून कार्ष्ट, व्यामि उथाव याङ्य माण। इस्त्रग्र-मण्टनात चन्नाव-विषयक अवधानि मू-অপর এক জন কহিল; "তবে আমিও যাইব না, পাঠা গুল্পের রচনা করিয়া গিয়াছেন। তিনি রো-णात (कर या फेंक"; এই প্রকারে পাঁচ হয় ব্যক্তি হিত-সম্বন্ধে লেখেন, "এই মৎস্য নদী ও গোরের মুথনিকটে বিবাদ করিতে লাগিল; কে- পুক্ষরিণী বাদী; ইহার তুল্য আনন্দপ্রদ, সুচ-হই গোরে নামিতে হাক্ত হয় না; অবশেষে এক তুর, রসনা-বিমোহনকারী, আর কোন মৎস্য জন কহিল: "ক্রাজ্ঞা, আমি যাইতেছি, চোরকে মন্যের নয়নগোচর হয় নাই", কলতঃ মৎব্য-ভূচের ভিয় কি? কিন্তু আছি যাহা লাভ হই- ব্যাধেরা যে রোহিতের প্রশংসা করিবেন, ইহা বৈ ভালার বেলীভাগ আমাকে দিতে হট্বেক 🖖 আশ্চর্য্য নহে, কারণ ছাপে ধরিবার উপযুক্ত এই লথা বলিয়া সেই ব্যক্তি গোরমধ্যে একটি মৎস্য রোহিতের তুল্য কেছই নহে। याम आविष्ठे कतिरानक, किन्नु के नार्या शिर्गा-

कथन कन्मन वर्वे कात शकि नार्वे, किन्न कमवषाय अधान कतिन; अवः चाराटिके चार्यानिकात अरे डेलन्यारमञ्ज मिक्नास क्रेना

कार्भ वा विवाजि ज्ञाहिज मरमा।

क्षा अस्त्र । १५ व्या १६ व्या १ জ্ঞাসরেওালেক্স মনুযে রো তদপেক্ষার ন্যুন নছে। रुप्तरमञ्जूषात्मक करन होत् ७ कर्माम श्राप्त जर्फ-(मरु-निमधावद्यात्र ममख पित्रम याणम कब्र नम्हात नमस्य पूरे बक्ति मध्ना नरेया, কদাপি যথেপ্লিড মীমভারে পুলকিড হইয়া, কথন বা রিক্তহতে মুমূর্প্রায়ঃ হইয়া, গৃহে প্রত্যা-वर्जन कित्रा थारक। अञ्चल्हिन् नामा वह प्रकात

ইংলপ্তদেশীয় রোহিত মৎসের দাম "কার্প" রিও তানার পদ ধরিয়া এক টান দিল; ঐ পূর্বকালে ভথায় কার্পনৎসের প্রচার ছিল না। টানিবামাত্র প্রাণ্ডয়ে কে কোথায় যে পলায়ন প্রায়ঃ চারিশত বৎসর চ্টল, তাহা করাসিস্-করিল তাহার কোন উদ্দেশ রহিল না; গোরের দেশহইতে বিজাতে নীত হয়; এবং তহবধি মুখ রোধ করিবার অবকাশ কোথায়? সুতরাং ইংলত্তের নর্বত্র ঐ মংস্য বংক্ত হুইয়াছে; অ-াম্পিন্তের প্রায়নানস্তর গ্রিগোরিও অনায়ানে নেকে গণনা করিয়া দেখিয়াছেন, যে লীচ নের (5'रहर हेट किश्नुक इहेशा महत्र वर्गमूनुद्र शति- शतिमिक अवहि कार्यम्बर वर्ष प्राप्त वर्षि उनात्नात अविषि अस्तोयक नहेशा सहात्न कतिया शास्क, मुख्यार हेशा जन्मकान मर्दा



कार्भ ना निकाति (ताकि) हर

যে প্তরিগ্রাদি ব্যাপিয়া ফেলিবেক, তাহা কোন প্রাপ্ত হইলে অনায়ানে মনুষ্যের বশীভূত হইয়া মতে আশ্চর্য্য নছে। অপর এই মৎস্য অতি থাকে। এই-প্রস্তাব-লেখক কষ্টসত্-প্রাণবিশিষ্ট (কৃঠিন প্রাণী); অনায়াদে এক-মাসকাল স্থলে যাপন করিতে পারে। कथिक जाएक, अनमाक्रिमरभन्न मिटम भीवरतना রোটিকা এবং দুখা খাওয়াইয়া এই মৎস্যকে লৈ-বাল আৰু দন-পূৰ্বক মধ্যে ২ তদুপরি কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ হ খাদ্য দুব্য প্রাপ্ত হয়। कल निक्षन कत्र चनात्रारम (फ्र मान काल ক্তি হইবার আশক্ষায় তাহাদিগকে শক্তিত **रहेट इस मा; यथन हेळ्। ७ थनहे मधीन म**०मा विक्य कतिए भारत।

कार्ल बरः রোহিত মৎস্য প্রভাহ থাদ্য দুব্য

রোহিত-মৎস্যকে बरुट्युट गर्मा थाइट पिशास्त्र। या दिनीय तास्तिमिश्ति अक उड़ात्र आर्ड, তলিকটে ঘণ্টাধনি করিলেই অনেক কার্প মৎস্য ভটনিকটে একত্ৰ হইয়া থাকে; এবং প্রভাছ

कार्श-मः रमात काशिक नक्त वर्गन कता विकनः স্থলে রাথিয়া থাকে; সুতরাং মৎস্য পচিয়া পাঠক মহাশধেরা উপরে মুদ্রিতচিত্র-দৃষ্টে অনা-য়াদে তাহার অনুভব করিতে পারিবেন। এই মং-(मात्र शक्तिमान वान (नत्, तृष्ट्र स्ट्रेस्न किष्यु अन ता जि-उन इशः किन्न श्रायः यस मात्मा स्थिक इश्वमा।

भनिवरतंत्र चुमनवृद्धाः ।

তির বামকলে কিঞ্ছিৎ আঘাত

তির বামকলে কিঞ্ছিৎ আঘাত

লাগিয়াছিল, কিন্তু ঘোটকারটের

গাতাদি সত হয় নাই। আমি তৎকালে সেই

কিন্ন ক্লান্থানি এক প্রকার নাবন করিয়া প্রস্তুত

করিয়াছিলাম, কিন্তু ভাহার দৃঢ়তাবিষয়ে আমার

আতা হয় নাই, সুতরাং ভদবলম্বনে এতাদৃশ

ভয়কর ব্যাপার সম্পাদন করা সুদূরপরাহত

হইয়া উঠিল।

মুক্ত হইবার প্রায় দুই তিন দিন পূর্বে যথন আমি রাজভবনে এ সকল আশ্চয়্য ব্যাপার-দশনাথ নীত হট্যাছিলাম, তথন রাজসলিধানে জ্তবেগে এক দৃত আসিয়া এই সংবাদ প্র-নান করিল, 'মহারাজ আপনকার রাজের করক জন অস্থাক্ত প্রজা নগরপ্র*টে*নবাস-নায় ইতস্ততঃ পরিভূমণ করিছে২ পূর্বে যে द्यारम नदरेगन चानीठ इरुयाष्ट्रिन, उथाय जूमि-পতিত এক প্রকাণ্ড ক্ষরণ পদার্থ দেখিতে পাৰ্থা অতিশয় চনৎকৃত হইয়াছে। ঐ দুব্য দেখিতে অতি কদাকার, এবং নম্বতাযুক্ত মণ্ডলা-কার: তাতার পরিদর আপেনার শয়নাগারের জুল। হইবেক। ভাহার দীর্ঘতা মনুষে/র সমান। এ প্রজার। ইহা ঘাদের উপরি স্পাদ্ধীন পতিত খাকিছে দেখিয়া নির্জাবিক্স বোধে বারস্বার ইছার চতুর্নিকে ভুনণ করিয়া বেড়াইয়াছে, এবং এক জনের ক্ষকে এক জন তদুপরি আর এক জন আরোহণ পূর্বক তাহার উপরি উঠি-য়াভ দেখিয়াছে, যে তাহার উপরিভাগ পরি-সর্যুক্ত ও সমান। পা দিয়া চাপিয়া বেড়াইছে ২ তাহাদের বোধ হইয়াছে তাহার ভিতর শুন্য।

ইহাতে তাহারা অনুমান করিয়াছে, এ অবশ্যই महरैनारला काम वावक्षिं वस क्हेरवक, नरमक নাই। যদি মহারাজ অনুমতি করেন, তাহা হইলে তাহাদিগ-দারা পাঁচ অন্যে বোঝাইয়া ঐ বস্তু ताक छवरम **चानी उ एहेट ज शा**रत ''। अहे मकन কথা শুবনমাত্র আনার তৎকালেই সেই বস্তুর তাৎপর্য্য বোধ হইল, এবং তৎসংবাদ পাওয়াতে व्यामात मत्न मत्न यरपष्ट व्यारमान कविन। चनुमान क्रेन, चामारम्त (পाक ভগ্ন ও জলমথ क्हेनात भारत ज्यामात प्रथम उठेन्यान कतन नमस्य আমি এমনি অবসম হইয়াছিলাম, যে আমার নিদুত ছইবার স্থানে উপস্থানের পূর্বে আমার টুপিটি কোনৰূপে খুলিয়া পড়িয়া থাকিবেক, তাহা জানিতে পারি নাই। তাহা ফিতার সহিত আমার মন্তকে দৃঢ়ৰূপে বদ্ধ ছিল, এবং সমৃদুতরণ-নময়েও তাহা সর্বক্ষণ তরজে বাধিত হুট্য়া রহি-য়াছিল। অনুমান হয়, কোন কারণ-বশতঃ তাহার ঐ ফিতা ছিন্ন হইয়া থাকিবেক, তাহা আমার জ্ঞাত হয় নাই, একারণ তাহা সমুদ্রেই পড়ি-য়াছিল। যাহা হউক, তাহার উপযোগিতা ও গুণের পরিচয় দিয়া রাজার নিকটে তাহা অবি-नय जानाहेवात जनुमिक अनान कतिएक आर्थना করিলে পর তিনি তাহাদিগকে ঐ বস্তু আন-য়ন করিতে আদেশ করিয়া পাঠাইলেন। পর-দিন শকটবানের। দেই বস্থানিয়া রাজনভায় উপর্নাত করিলে দৃষ্ট হুইল, তাহা তথন অতি দূরবস্থ হইয়াছে; তাহারা ভাহার ধারহইতে তিন जल्लात मरथा पूरे शार्ष पूरे छिपु कतिया जारा-তে पूरे एक वाधिया ता**श्वितारह। के दूरे एरक पू**रे গাছা লম্বা রক্ষ্মাশ্রিয়া তাক্ষ্মান্তার কাজের नक्ष भक्त कतिया वाधियाहित । अहे बदन प्रामात নেই টুলিটি ভাহাছিগ-কর্ত্ক কিঞ্চিয়্নেগান- জোশ পথ আনীত হইয়াছিল। যে সময়ে ধরা- যে কথায় ও যে নিয়মে আমাতে শপথ করা তলে তাহা অবতারিত হইল, তথন তাহার সকলই ইয়া মুক্ত করিতে মনস্থ করিলেন, তাহা গে পিছা গিয়াছিল। সহতে লিখিয়া প্রস্তুত করিবার যতু করিতে লা

এই ব্যাপারের দুই দিন পরে রাজা বি-नारमास्थ हरेश जायन ताक्षधानी इ ठलू थींश्म इट्रेंड जारम्य कतित्वमः প্রস্তুত কারণ তিনি আমাকে যথাসাধ্য পাদ্ভয়ে নির্ভর করিয়া সরলভাবে দপ্তায়মান দেখিতে নিতান্ত অভিলাধী হইয়াছিলেন। অনন্তর আমি দপ্তায়মান হউলে ভিনি সলিছিত মদেকসহায় কাপন সেনানায়ককে অনুমতি করিলেন, "তুমি নরশৈলের পাদছয়ের মধ্য দিয়া এই উপস্থিত দেনানী লইয়া গমন কর", ভা**হাতে সেনাপতি** তৎক্ষণাঁ তাহাই করিলেন। সমুদয় সৈনে/র লঙ্থ্যা জিন সহনু পদাতিক, ও সহনু অশ্বা-ৰাঢ়। যৎকালে তাহারা আমার বঙ্কণের হাচে দিয়া চলিয়া যায়, তথন তাহাদের সবিস্ময়-হাযে।র আর ইয়তা রহিল না।

এই রূপে আমি স্বাধীনতা প্রাপ্তির জন্য
ভূরিং বিশ্বাসজনক ব্যাপার, ও সময়েং সবিনয়ে প্রাথনা করিতেং পর্য্যবসানে রাজার তৃপ্তি
জন্মাইলাম। তিনি সম্পূর্ণ সভা করিয়া তাহাতে
আমার যাত্রার বিষয় প্রস্তাব করিলেন। সকলেরি
মত হইল, কেবল আমার একমাত্র বিধান্যত
শত্রু (ফিরেল্ বান্গোলাম্) সেই মতে মত প্রদান
করিল না। ইহাতে তাহার উপরি সকল সভ্যের
সহিত একবাক্য হইয়া রাজা অভ্যন্ত বিরক্ততা
প্রকাশ করিতে লাগিলেন। রাজমন্ত্রী বা প্রদেশাব্যক্ষ বিশেষকাশ কার্যক্র ক্রিভি বলিলে ও বলা
যায়, কিন্তু নে কঠোরচিত্ত, ও বিষদর্শন ছিল।
যাহা হউক, পরিণামে লৈও সম্বন্ধ হইল, কিন্তু

ইয়া মুক্ত করিতে মনস্থ করিলেন, তাহা বে सहस्य निथिया প্রস্তুত ক্রিবার যতু ক্রিতে লা গিলা শপথ-করাওনের ধারা-সকল লিখিত হুইয়া প্রস্তুত হইলে পর (ফিরেস্ বান্গোলাম্) দুই জন महकाति व्यथाक ও व्यन्ताना डेफ्शमञ्च कठि-পয় ব্যক্তিকে সমভিব্যাহারে লইয়া স্বর্থ সশ-রীরে সেই পত্রসহিত আমার নিকটে উপস্থিত হুইল। আমার নিকটে ভাছারা দেই পত্র পাঠ করিয়া গুনাইলে পর গানি তলিখিত সমৃদয় বিষয় সম্পাদনে প্রতিশ্রুত হুইয়া শপথ করিছৈ উদ্যত হইলাম। প্রথমতঃ আমার স্বদেশীয় রীত্য-নুসারে, অনন্তর তাহাদের ব্যবস্থাপিত প্রথান্-नातः जागारक भाषाय कतिराज इहेन। जथाकात শপথকরণপ্রথা যে প্রকার তাহা গাঠকবর্গের मूट्गाहतकत्वार्थ श्रकाम कता याहेटहरहा आर्भु আমাকে বামহত্ত দিয়া দক্ষিণপাদ ধরিতে **এবং পরে দক্ষিণ হত্তের মধ্যমান্থ্রী দিয়া শি-**রোভাগ ও তাহার বৃদ্ধাঞ্গদারা দক্ষিণকর্ণের উপরিভাগ স্পর্শ করিয়া থাকিতে হইবা। তত্ত্রত্য ব্যক্তিদিণের এই রাতি নাতি ব্যবহারাদি স্পষ্ট-ৰূপে জানাইবার অভিপ্রায়ে প্রতিজ্ঞাপুত্রের লিখিত-নিয়ম-সকল অবিকল অনুবাদিত করিয়া প্রকাশ করা যাইতেছে, পাঠকবর্গ মনোনিবেশ-পূর্বক ভত্তাবভের মর্ম অবগত হুইবেন।

"প্রবল-প্রতাপ, জগদানন্দভয়ভাজন, বট্-কোশবিস্তারিতসামাজ্যপুরজয়য়াজয়াজ, দীর্ঘকায়-জিতপ্রজ, নিমুমধ্যতলপ্রপদযুগল, নিরুজদিন-করশিয়া, সঙ্কেতমাত্রসমুথভূমিপাতিতজানু-রাজ-বর্গ, বসস্তবন্ধনোহয়, নিদাম-বৎ সজোবক্ষ, শরম্বৎ কলভয়সম্পায়, শীতবৎ সকল-চিত্তসং-কোচক, প্রমহায়াজাধিয়াজ লিলিপটাধিনাথ স্বৰ্গকম্পান্যাক্তে ক্তিলোপনীত-নরশৈল- সন্নি ধানে এই প্রস্তাব করিতেছেন যে তাঁহাকে নিম্নে লিখিত নিয়ম পত্রিকার কএক ধারানুসারে শপথ 🗀 कतिएक इहेरिक।

ल कराह तोजगा ब्रह्म यावेटन भातित्वन ना।

त्वभवादः जावर श्रकारक नावशास दाशिए । भारमद द्वारकाद नीमाजुक चारम, नदरेगलरक হুইবেক, কারণ রাজকীয় প্রকাশ্য আদেশ না তিছা মাপিয়া তাহার মানচিত্র প্রতিমানে রাজ-পাইলে ভালার রাজধানীর মধ্যে প্রবেশের গোচর করিতে হ্ইবেক। ক্ষমতা থাকিবেক না।

পথেই গমনাগমন করিতে পারিবেন। শস্যা- জনপানের দুব্য উপযোগ করিবার ব্যবস্থা করা দির কোত্রে তাহাকে ভূমণ বা উপবেশনাদি যাইবেক। এই রাজ্যের ১৭২৪ জন প্রজার क्षित्व (१९४) यहित्य न।।

🕶 (८) चुम्बदालीम बाज्ञ श्वामी काम बाजः 🖟 कांश श्रीजिलालन श्रकाह महीरत, वा फालारनह অংশ, কিয়া শকটে তাতার দেহ স্পার্শ না হয়, अभन करण नदरेगनरक मान्यान व्हेश विनिरंजः হউদেক, এব[ু] তাহাদের বিনা অনুমতিতে **কা**-ছাকেও যহস্তে তুলিয়া লইতে পারিবেন না।

 ০ : যদি কথন কোথারও কোন আশ্চর্য্য নংখ্যাদবাহক প্রেরণের আবেশাক হয়, তাহা হই-লে ন_ৌশলকে ভাছাকে লইয়া যাই**তে হইবেক।** প্রতি শকুপক্ষেই এই ব্যাপার ঘটিয়া থাকে। গ্ৰস্থার ট সংবাদবাহ্ফ **পুরুষকে অন্থ সহিত** নিহিন্তু বছন করিয়া **আনিয়া রাজসমক্ষে উপ**— প্রাধিত করিতে হইবেক, ইছার অন্যথা না হয়।

* ১) শতুদিগকে আক্র**মণ করিবার সময়ে** नद्रदेशनक जामारम्य महायुका क्रिक हरेरवक ।

श्रीमञ्जीयुक्त मली जली । महामय नाशमूत सीय विनः आमानिशक जाकमन कतिनात निमिष्ठ व नकत यूक्ता ज्या जिल्ला वाकित्वक, नहरे महारक তত্তাবং এককালে বিনা বিচারে জলমথ করিতে रुरेदक।

''(৭) স্থপতিগণকে রাজভবনের ভিত্তি রচনার ে নরদৈল আমার রাজকীয় গুঢ়মুদুক্তি জন্ যে দকল প্রস্তরথণ্ড তুলিতে হয়, অবকাশ (थान जिल्हामाइतमञ्जलिक) अनुमिक्तिवा ना शाहे- शाहेल महत्निवादक जाहां पिशदक्ष उरकार्य ্ সাহায্য করিতে হইবেক।

🕶 😥 নর শৈলের আগমনকালান রাজ্যের প্র- 📁 "(৮) সমুদের উপকূলের যে সমস্ত ভূভাগ আ-

"এতাদৃশ নিয়মাউক প্রতিপালনে শপথপূর্বক * তে উক্ত নরশৈল কেবল প্রানিদ্ধ রাজ- ্ প্রতিশ্রুত **হইলে পর নরশৈলকে প্রতিদ্ধিন ভো**-ভোজ্য ও পেয় দূব্য নরলৈলের দৈনিকবৃত্তি **(** प्रदेश याहेरक । **हे**जि **काममी** जिथि। निनिश्रो রাজ্য প্রারম্ভাবধি একনবভিত্তম চন্দু"।

> আমার অহিতাকাঙ্কী (ক্ষিরেস্ বান্গোলাম্) প্রণীত ঐ সকল নিয়মের কতিপয় সম্পাদন করা আমার বোধে অপমানজনক হইলেও ততাবৎ दियश नम्नलिङ প্रजिक्काला लाइम नाखावशूर्वक স্বাক্ষর প্রদান করিলাম। ভাছাতে তৎক্ষণ-মাত্র অতিমাত্র বাগু হইয়া ভাহারা আমাকে ग्कुश्ध्यल कतिया बाधीम कतिल। लिलिनि। থিনাথ স্বয়ং মহাসমারোহে আমার সলি-হিত হইয়। নন্ধান প্রদান করিলেন। আমিও यथ्भातानाखि कृष्ठका बीकात भूर्वक मही-युत्री-विमीजित व्यवन्यस्य जाराह हत्रात वा-चारक नमर्थन कदिनाम। हैकारक छिति कि गमश्राचारव वागारक केंग्रेश नाना अकात वागु-

গুৰুস্চক বাক্য প্রয়োগ করিতে লাগিলেন। তৎপ্রকাশে অভিমান প্রকাশ হইবার আশস্কায়
তাহা এন্থলে উল্লিখিত হইল না। বিশেষতঃ রাজা
আরো কহিতে লাগিলেন, "আমার মানস হয়, যে
তুমি এই রাজসরকারে কর্মচারী হইয়া কালযাপন কর; সম্পুতি ভোমার প্রতি দয়া প্রকাশ
করা গেল, এবং ভবিষ্যতেও তুমি অনন্যজনসাধারণ রাজপ্রসাদভাজন হইতে পারিবে"।

আমার মোচনার্থ প্রতিজ্ঞাপত্রের শস্তিম নি-য়মে ব্যক্ত আছে, যে রাজাকর্ত্ক আমার দৈ-নিকবৃত্তি বিধানার্থ ১৭২ জন লিলিপটীয়ের খা-मा ও পেয় সামগ্রী আমাকে প্রদন্ত হইবেক, ইহাতে পাঠকবর্গের স্থাপাত্তঃ সন্তোয জন্মিতে পারে। কএক দিন গেলে পর আমি এক জন সভাকে জিজাদিলাম, রাজা আমার খাদ্যাদির পরিমাণ নির্ণয় কি প্রকারে করিলেন, তুমি ইহার किष्ठु जान? देशांटा तम किष्त, "ताजन जार কএক জন মহামহোপাধ্যায় জ্যোতির্ঘিদ্ পণ্ডিত নিযুক্ত আছেন, তাঁহারা প্রথমতঃ একগাছি লম্বা তার লইয়া তোমার শরীর মাপিয়াছিল। পরে সেই তারেতে এতদেশীয় বার ২ জনের দেহমান লইয়া এক ২ অংশের চিহ্ন দিয়াছিল। এইৰূপে গণনা করিয়া ভাছারা নির্ণয় করিল, ভোমার **(इ. १९२८ क्रन निनिभ**ष्टी एउँ ज्ञान । मुख्ताः তদ্নুসারে ভাহার। উক্তসঙ্থ্যক লোকের দৈ-নিক-খাদ্য-সামগ্রীতে তোমার ভোজনপান প-র্যাপ্ত হইবার সম্ভাবনা বোধ করিয়াছিল ''। পা-ঠক মহাশয়েরা বিবেচনা করিয়া দেখুন দেখি, তত্ত্ৰত্য প্ৰজাগণের কীদৃশী সুক্ষবুদ্ধি, এবং এতাদৃশ मर्गम्य निनिभिगिधितारकत्र कि श्रकात चरनी-किकी विक्रणा, उ यथायर्थ পরিমিত ব্যক্ষিত। ইতি তৃতীয়াধায় नमाध।

(प्रभाउप कीवराउप।

※※※※※

※ শতেদে উচ্ডিজ-বস্তুর যে প্রকার ভেদ 🚆 इडेग्रा थारक, कोव-मञ्चरक्ष अस्त प्रकात 🎇 বিলক্ষণ অবাস্তর ভেদ প্রতীত হয়। বোধ 🎎 💥 🎉 हरा. कृकतं अलाक-ब्रोटक अक ता ততোপিক নিদিয়ী স্থান আছে, ভণ্ডিন অন্যত তাহা. निर्तिष्यु (मञ्गोद्धा निकार् कतिएउ भारत ना। जीत-মপো ল্লাঞ্জানটি ও প্রবালকটি সর্বাপেক্ষার অপম; বহ-কাল অনেকের বোপ ছিল, যে ঐ কটিসকল উদ্ভিবন शनार्थ, कीय-प्राप्ता नगा नरम्; शतु काम्त्रता अश्व-বীর সর্বতি জয়িতে পারে না: সমৃদ্রে বিশেষ ২ স্থানে তাহাদের উৎপত্তি ছইয়া থাকে; অধিকস্ত সমৃদু-জলের উষ্ণতা-ভেদে ঐ কটিদিনের জাতি-ভেদ হয়: সুতরাৎ হিম-মণ্ডলের সম্পুদ্র যে যাদৃশ প্রবালকীট প্রাপ্ত ছওয়া যায়; ভারত সমূদ্রে তাদৃশ নহে। ব্রক্তিকাসয়্ত্ত্ত্বেও এই নিয়ম বলবৎ; প্রত্যেক স্থানের বিশেষ ২ স্তক্তিকা নিদিষ্ট আছে, তডিন অনা শ্বকিকা তথায় প্রায়ঃ উত্তমরূপে জন্মে না। মৃক্তার বিদ্বুক নিরন্ধ-বৃত্তের নিক্টস্ত সমূদ্রে প্রাপ্য, অন্যতে দৃক্তিগোচর হয় না।

পতঙ্গাদি-বর্ণের * তারিকাণ্শ জীর উদ্ভিজ্জ-পদার্থ

ওক্ষণ করে; মৃতরাণ্ গ্রীয়মগুলের প্রচুর-বৃক্ষ-লতাদিবিশিক্ট দেশে তার্গদের সমাণ্ বৃদ্ধি হইরা থাকে।

তন্মগুলন্থ প্রজাপতি-সকল যাদ্শ মুচারু চিত্রিত, তাদৃশ

আর কুত্রাপি সম্রবে না। তথাকার থাদ্যোতিকা-সকল

একং সময়ে সমস্ত বনকে এমত প্রভাসিত করে যে
বোর হয়, সর্মত্রে দাবানল প্রজ্লিত হইয়াছে। তথায়

অপর অনেক বিষাক্ত পতজাদি আছে, যাহাতে মন্ধারে মহদনিষ্ট কদাপি ইন্ট সিদ্ধুও হইয়া থাকে। ভিমকল, বোলভা, মধুমক্ষিকাদির নামোচ্চারণ করিলেই

আনায়ালে এ বিষয় সপ্রমাণ হইতে পারে। বল্লীকথারা

মনুষ্যের কীদৃশ অপকার হয়, ভাহা অনেকেই জাভ

আছেন। দক্ষিণ-আমরিকার বন-মধ্যে হানেং মশুকের

এ প্রকার প্রাচুর্গ্য যে দূরহইতে বোধ হয়, ভামন্ত হান

কোয়ালায় পরিপূর্ণ হইয়া আছে; ভথার মনুবার

^{*}ध्रवानवि, कड़ि॰, प्रक्रिका, त्रानवा, म॰न, प्रमंब, निशीविका, नृडां, देवनभाष्ट्रिका, প্रভृति कीय और यदन निर्धाष सङ्ग ।

िष्ठेन जमाधा। हिम्रहाल शब्द्रामि-नगीय कोटनत প্রাচুষ্যা নাই, পরন্ধ তথায় তাহাদের অভাস্থাভাবও নছে: গুনলও তাও লংগ্লন্ত দেশে গ্রীষ্মকালে এক-প্রকার মধ্য বিদ্যালয়কৈ, তাই। অত্যন্ত ক্লেশপ্রদা

মংখ্য ১৬।লে কোন মুখ্য হুদে, কেই বা নদীতে, অপুর ্টুত্রপি ঐ ৯৭ম প্রাপ্য লড়ে। ভূমধ্যলগেরে চারি ভাষ্ট কদাপি আপন নির্দিট কডিলেরপের্স্তত্ইতে প্রকার মংস্য আছে, ভাহাকে ল্লাকারলে দেহ ক্ষ্ণিভ । দূরে গমন করে না । কাকাছ্যা, নূরি, বাঙ্নু প্র-কটয়া উচে, কিন্তু ভালতে প্রাণ হানি হয় না। ভুতি ভক্তভায় পলীর জন্ম**-ছান ভারত-সামৃদ্রিক-**काञ्चत श्याम्भ्यान वाम विविधः शास्त्र, मम दः शिम- घोशशुक्त, कष्ठिरिप्यस्य कृताशि छाहाता मुख्या सरह। মণ্ডলে তাহার প্রচার নাই। কোনং মখনা ঋতুভেদে দক্ষিণামরিকার অনেক এক আছে; কিন্তু তাহার। ড়ান গরিবর্ত্তন করে। ইলিন এবং উপস্থী মখনা : একদেশীয় কর-ডাতিহরীতে পৃথক্। শ্বতরমূর্য-পঞ্চীর নর্মনা ভারত-নমুদ্রে বাস করিয়া খাকে, কেবল অন্ত- বাসভান ভারের এবং আফরিকা; কালোয়ুর্বি-পক্ষীর श्रमध-कत्व-कारल समी-प्राप्ता श्रातम करतः। क्रित्र-भन्भः शिनसम्प्रासि, किन्तु প्रशिवश्यत् अकर् नात् ৮ল্পক ইইর: সমমগুলের সমৃদুে অঞ্চ-প্রস্ব করিতে राजिया पारक, ७४% एडकप्र-मधाप्र ११८ल अञ्चारम । প্রভাবেরন করে। অপরাপর অনেক মুখ্যা এই প্রকারে रक्षात्र अक शारहरेट अनाव गावा कृतिसा थातः।

্ট্য-পদ্শে বিশেষ্ডঃ আমেরিকা-গণ্ডের উফা স্থানে, ২০ বৰগায় ৰ প্ৰাণীয় অভান্ত প্ৰচাৱ। শেশোক্ত ভানে ८ डिन सर १९ श्राहरानाम् छत्रकत् विस्पत् अभिका थाएक। কুমাল, চা বলে একং বেলেক্ষ্ত তথার অনেক আছে: বাহার ু কালে জনাগ্র তেন চারি মাব মূবমান চনত নিয়াদির বাচর খন্ধ-পানে প্রেমিত থাকে: বধার शाहरक राजित नमरन कोतम शाब्द सहैता सस निर्मित (४६का) । विशुक्त हर । मन् के ज्ञातनक क्रायत । मठ-नाका মধ্যে গাত ও গা্যা উভয়েই সূলা; জভাগ শীতে ছিলন**ও**শ লণ অনেক মান যে প্রাক্তে চাতি পাঁচ মনে ক্যাঘ্রত ভিপ্ত তেওঁ প্রতেরিকারে উষ্ণেডা**-প্রভাবেও কুয়ালা** দির সেই प्रति अभिष्ठः भारक। भीटकत द्वानुमारत मशानि-वशीय গালের বছল্যা অল্প হর, এবং নিষের ও বার্ষ্যের ছাদ

क मत् विभिन्न । পে ব । টিকটিনি, কুমা, গিগিট প্রভিত্তি প্রাণী मधाक्रियात्र अध्यक्ष

হয়। হিমমগুলে দর্পাদির দঙ্খ্যা অত্যন্ত এবং কেইই ভয়ক্কর বিষপর নছে।

উড্ডানশাল পক্ষারা অনায়াদে এক স্থানহইতে অনাত যাটটে পারে, তদ্ধ্যে অনেকের বোধ হটতে পারে মৎসা-বলেনত বিশেষ কান নিদিষ্ট আছে; কোন যে বিহঙ্গম-বর্গ সর্ব্যত ব্যাপি; তথা শকুন্যাদি অনেক পক্তিও পৃথিবার প্রায়ঃ সম্রত্ত দৃষ্ট হট্টা থাকে; ে স্ট্র গলিম থাকে। এক প্রকার বাইন-মংসা পরস্ত ইছা প্রিক্দিগের সাধারণ নিয়ম নছে; অপ-ভাছে, ব্যালক স্থাকরিবামাত অখ প্রান্ত ক্রল প্রাণ্ড ক্রাপর জাবদিবের নাায় তাহাদিবেরও জাতিভেদে কমিত কা াও ভূমিতে পড়িয়া তৎকণাৎ প্রাণ তাগে। বিশেষ ২ দেশ নির্দিকী আছে। কণ্ডোর নামক বৃহৎ করে, তাজার জাবাম দ্ধিণ-আমেরিকার নদী, অন)ত । বাজ যাত। অনায়াদে দুই কোশ উদ্ভে তিড়তে পারে আবাদ নুডনংগ্র এবং হোনা-পক্ষীর নিবাদ জাবা, স্মজে।, বোণিও প্রভৃতি দ্বীপা: ইহারা কেহই ঐ নিন্দিট ख्रानत जनाक अवस्था करत ना।

> अरगठ शक्ती कबुटअरम अवस्थान शतिलाम कत्र उनाव প্রকান করে। প্রতিবৎসর বর্ধাকালে ছাড়বিল পলা কলিকাত পরিতাগে করিয়া পরতাভিদ্ধে যায়, পরে বর্ণার নিবৃত্তি ছউলে প্রত্যাগমন করে, ইছা অনেনেট জাত আছেন। বনাহ্ৎস ও বনাকপোত-দকলও এই প্রকারে দেশ-ভুমণ করিয়া থাকে। বেলাতে বক্ষার্য, চাতক, পুভৃতি পক্ষারাও শীতকালে উপলও-(मन जाद्य कर्य काम डेक्टमरन यांजा करत्।

অপরাপর জীবহুইতে স্তনাজীনী পার প্রধান: তাহা-स्टित्त मुठाक कार्य, मम्पूर्व डेस्प्रिय, **এব॰ বৃদ্ধিন**ং**का-**রাদি আনা জীবহুইতে অনেকাংশে শ্রেষ্ঠ; অসিকন্ত ইহা-দিলের স্বভাবধর্মাদি মনুষ্যদারা উত্তমরূপে বিবেচিত হই-য়াছে, অভএব ভাহাদিনের আলোচনায় প্রাকৃত-ভূগোল-নম্রার প্রাণিবিদ্যার সম্পূর্ণ উপকার সম্ভবে। ঐ পন্ত-দিগকে "সূন্যনাবী" শব্দে কহি, কারণ ইহারা সকলেই বাল্যাবস্থায় মূন-পানছারা পোবিত হয়। মনুষ্য ইছা-मिरशत मरशा श्रथान ^{[™} वानत, इस्रो, नि°र, वाायु, अङ्शी প্রভৃতি প্রধান ২ পশ্ত ঐ স্ভনাজীবিদিগের অন্তর্গত।

অশ্ব, गर्मछ, कुङ्कृत, त्या, प्रम, ছाগ, শূকর, এবং বিড়াল গৃহপাল্যিত-পশুর মধ্যে গণ্য; তাহারা মনু-ষ্ট্রের সহবাদী; মনুখ্যের সহিত পৃথিবীর সর্বতি ব্যাপ্ত **इ**डेशांस्ड। (यर स्रांत प्रनूतगढ़ नमानम আছে, उथा-गर्डे बेमकल পर्छ जनागाम-श्रापा: (केरल शेष्ट অত্যন্ত্র-শতিল-স্থানে অবস্থান করিতে পারে না; ইয়ৎ-গ্রীয়া স্থানেই তাহাদিগের প্রাদুর্ভাব। অখের আদি জনুভূমি আশিরা-শণ্ডের মধাদেশ; তথাহইতে এই ফণে ঐ মহদুপকারি পশু ভূমগুলের মর্বাত্র ব্যাপিয়াছে। তিন শত বদ চ্টল স্লেমীয় মনুবোরা তাহাকে দক্ষিণামরি-কায় নীত করে; তদৰ্ধি তথায় তাহার অত্যন্ত কৃদ্দি ছট্যাচ্চে, এবন অধুনা তথাকার বনে বহুসছ্থাক অ-পালিত অখ চর্ন করিতেছে। আইস্লণ্ড এবং নর-গুলে প্রদেশেও অনেক অপ আছে, কিন্তু প্রথার-শীত-জনে চাহারে এককিয়ে,ও অন্য অখহটতে প্থগ্ভূত ছরসংছে। মনুষাহান-ছাপে শূকর ও ছান প্রারং দৃষ্ট ল্য না : ক্লিন্ত মনুষ্যের সমাগম হউলেই তৎক্ষণাৎ ঐ ! श्चक्रशत्त प्रवास श्रात इस्।

ट्यक्ताय वलवान् शय शृथितीव **शुक्षिप्रश्रलके निवान** করিয়া থাকে; পরস্তু প্রাচীন ও নূতন পৃথীখতে তদিসয়ে তথায় অনাধানে নিবাস করিছে পারে। অনেক ভেদ আছে। প্রাচীন-পৃথীথত্তের হয়ী, এড্গা, ভুলনা চকতে পারে এমত পশু নূতন-পৃথীথতে কিছুই ! নান। তত্তা স্ফাপেফায় বৃহ্ৎ পশু বাইসন্; তাহা এত-দেশীয় মহিষের তুলা নহে। তথাকার সিংহব্যাখ্রাদিও 🖯 প্রাচীন-পৃথীথভের ততৎপত্তহইতে অনেক অধম। মনোহর মহদুপকারি অম্ব: গো, ছাগ, এবং গর্মভ ও ইয়্লানীয়দিগের 🕴 যাতায়াতের পুর্বেন নূতন-পৃথীনতে প্রচরিত ছিল ন।

পত্তদিনের এই-লক্ষণ-দৃষ্টে প্রাকৃত-ভূনোলবেক্তার। পৃ-থিবীকে কতকগুলিন জীব-প্রদেশে বিভক্ত করিয়াছেন; ঐ প্রত্যেক প্রদেশের জীব অন্য-প্রদেশীয় জীবহইতে পৃথক্, এবং তাহার বিশেষ ২ লক্ষণ নির্দিষ্ট আছে! পশু শুক্ল-ভলুক, হিম-শ্গাল, রীণ-হরিণ, এবৎ সিস্কু-ঘো-हेक। পृथिवीत প्राहीन ও न्छन উछत्र थएछई अहे नकम পপ্তর সামাত্র আছে; তৎকারণ বোধ হয়, শীতকালে

তব্রতা সমস্ত সন্দু জমিয়া জোলে এক গণেওর পার পরা-शांदम जाना शेंदर अभन कतिशा धारक।

मप्रमाश्चम अक विरम्पत प्राणिपात , जाजात विभिन्ने পশু হিম বা গ্রীমানওলে প্রচরিত নাটা অধিকত্ত প্রচে চীন ও নূতন পৃথীক্ষতে এবিদ্যোৱ প্রচেদ ভারতে। নূতন भृथिवी-थरछत मेम्राछल स मकल भाष वास्त्रांच कारह. তাহার কিছুই প্রাচান-পৃথিবী-থণ্ডে প্রাণা নহে।

গ্রীয়ামণ্ডল চারি প্রাণিপ্রদেশে বিভক্ত; ১. গরেছ-वर्स, ४, बाक्रतिकात मधारमण, ०, मिल्पामिकिकार ५ छत-ভাল, ৪, ভারত-নামৃদ্রিক-দাপব্যং। বির্বম্নুর পাপুরা, নুতন গিনি, প্রভৃতি দ্বাপব্যয় এক বিশেষ প্রাণিপ্রদেশ; ততংপর অফ্রেল্যা ঘীপা তদ্মন্র সাফ্রিকার দক্ষিণ-ভাগ, অবশেষ দক্ষিণান্রিকার দক্ষিণ ভাগ ও পৃথক হ প্রাণিপ্রদেশ। এই সকল প্রাণিন্রদেশের প্রভোকে বি-শেষ হ পত্ব-পদ্ধ ি দিটে হাছে। ঐ সকল পত্ৰপদ্ধী-দিগের থাদা দুবা ভত্তদেশের 🐯ভ্রমরূপে জন্মে, এবং তথারক তার দের দেহবার। পারপার্টারপোনয়বে: মৃত-রাপ এক দেখা ভাগে করিব। সমাত্র গমন করে মা; পরস্ক সকাপেকায় বৃহৎকার, সর্বাপেকায় ভীষণ, ও সর্বান ' উভয়ের প্রান্ত পদা জ্লা ভটলে বা ইনিয়াত ভিন্ন इहेटलाउ এक (म्राग्त शास्त्रका) याना (म्राय कहेता (न्राक

যে দকল প্রাণিপ্রদেশ নিদিনী আছে তন্ত্রাস্যে আন্ত্রে-ছিপাপোটেমস, উট্টু, জিরাফা, গৌর প্রদৃতি পশুর সহিত । লিয়া সন্তাপেকায় বিমাধকনক। তথাকার পশু অপর সকল পড়ট্টতে পৃথক। অনেত প্রাণিচত্ত্তের বিশ্বাস ছিল যে চতুक्यम প্রথাতেই জরাযুক্ত এবং শুনাজানী, কিন্তু অফ্রেলিযায় ভাষার বিপর্যায় দৃষ্ট হউতেছে। তথার কতকগুলি পর আছে তাহারা মাতৃগুর্ভইতে হরিণ ও পরনবেনা নৃষ্ণার প্রচৌন-পৃথুরি পশু। মনুষ্যের । অপ্রাকারে প্রদার ই হটবা কিব্লিন পরে স্বাহ্ প্রকৃত দেহ প্রাপ্ত হয়; কদাপি স্তন্য পান করে না। তথায় অপর কতকওলি চতুক্সদ পশু আছে, যাহারা মাণ্-দপিগুর্থ অপ্রকৃত-দেহনিশিষ্ট শাবক প্রদ্র কর্ত य পर्याप टारा প्रकृषावद्या ना श्राप्त रह जनविध উদরের নিকটয় এক কোষমধ্যে ধারণ করে; ফলতঃ जारामितात पूरे गर्ड बाष्ट्र विशाल वला याता। अह জীব প্রদেশের প্রথম প্রদেশ হিমমণ্ডল; তথাকার প্রধান। দিগর্ভ-পশুর মধ্যে কলার-পশু প্রধান। দক্ষিণামরিকায় অপোদম-নামক এক পত্ত আছে, ভশ্তির আমরিকা বা ইউরোপ বা আফরিকার কোন স্থানে षिগর্ভ পর নাই।

দেশভেদে যে প্রকাশে জীবলাতির ভিন্নতা হয়, উচ্চতা ভেদেও ভক্তপ ঘটিয়া থাকে। মাৎদাদ পক্ষী-সকল প্রায়ঃ আত উচ্চ স্থানে বসতি করে। দক্ষিণামরিকায় কণ্ডোর-শবুনী ১১,০০০ হন্ত উচ্চ স্থানে ভুমণ করিয়া शास्त्र। उश्वाकात्र व्यक्ताना निकृती उ तोका शाहः उक्ता । উট্টেরাপ এবং আপিয়া এতে অনেক মাণ্লাদ পক্ষী উচ্চ পার্যাত বাদ করে। হংশেরা জলপ্রির, মুতরাণ অতি উচ্চে ভাগানের গমন নাই। তৃণজীবী পর্তমধ্যে মেষ্ ছাগ, এবং নমার-গো অভি উচ্চ পর্যান্তবাদী। শেষোক্ত পত্ত প্রায়ঃ টির্নীহারাবৃত ভাবে বাদ করিয়া থাকে: वैधन-देशहान जानील इंडेलिडे उपकर्गाय प्रतिशा गाग्। দ্কিণ্মারকায় স্লামা পশুও পর্বতপ্রিয়, এরণ গ্রীয়ু-কালে তাহারা আভিষ্পরতের চির্মীহারের সীমার নিকট নিবাস করে। উট্টু মরুভূমিতে স্বচ্ছদে কাল-সংপ্র করিয়। থাকে: তুলপূর্ণ নদীম্থাগুর্ভুমিতে নীত হতলে পাড়িত হয়। অন্যান্য পশুপক্ষি-সম্বন্ধেও স্থেদ্শ विषया निवास উত্তমক্রে প্রচারিত আছে : ফলতঃ জন্ত-পিতা প্রত্যেক-দেশের প্রাকৃত-ধর্মানুসারে বিশেষ ২ क्षेत्र कित्रवाष्ट्रम्। उप्तम का उपमूत्रभ श्राकृष প্রমানি শিক্ট দেশ ভিন্ন অন্যত্ত তাত্ত্ব জীব নির্বিচ্ছে দেখ-হাত, নির্ভাচ ক্রিতে পারে না।

আদি। দীব সকল এক স্থানে উৎপন্ন হইয়া, পরে পৃথি
ত সতি সতি সালি সকল এক স্থানে উৎপন্ন হইয়া, পরে পৃথি
ত সতি সতি সালি স্থানিত এই এক কালে অনেক স্থানে উৎ
পন্ন ভটাগা জিল, এবিসায়ে প্রাণিত জ্বাজ্ঞরা অনেক তর্কবিতর্ক বিসাথ থাকেন, কেন্তু এই পুল্ল তাহার বাস্লা প্রচার করায় ।

কল (চাস। বৃংক্তর প্রচাল-বিষয়ে সে মীমাৎসা ইইয়াছে, *

লেও স্থা শীস-বিসায়েও তাহাই সন্থাবনীয়া এক ২ দেশে

এক ২ সংগ্রাস প্রার প্রচার দ্যে ইইয়ের অন্যথা মনোনীত

অস্না, পণিবার স্থানা হ বে সকল পশু নিদিন্ট আছে পুর্নে গ্রাহার অন্যান ছিল। অনেক শীতল স্থানে হস্তানি গুলি মন্তলার পশুর আহি প্রাপ্ত হওৱা নিয়াছে; তদ্যৌ স্থান মন্তলার পশুর আহি প্রাপ্ত হওৱা নিয়াছে; তদ্যৌ স্থান বেছে হয় কে পুরুলালে ঐ সকল ভান অতি উফ ছিল, অথবা ঐ পাত্রা কংকালে অন্যানে অভ্যন্ত শীত সহ্য করিছে পারিছে। ঐ অন্তি মকল এই কলে পাসান হইয়া নিয়াছে; দন্তৌ অন্তর হয় ঐ প্রান্তিত অন্তি পূর্বে কলে কারণের ভারদেহের অব্যান্ত ছিল।

প্রধান ২ জীব-জাতির সমষ্টি-সঙ্গ্যা ও কোন দেশে কি সঙ্গ্যায় প্রচার আছে তাহার বিবরণ নিমে নির্দিষ্ট হইল।

, ,	প্রাচীন পৃথী।					নুতন পৃথ্য	সর্ক সয়
জ্ঞীতের নাম।	कामिका,	क्रांट्राभ,	শাকরিক্ট,	आख़िल व	भावित्व[मङ्गा बोम्	बागदिका,	(a)
লাস্ত্লবিশিকী বানর;	লা তি.	জা ডি,	ক্লাভি,	স্থাতি,	লাভি,	ছাতি.	1
চনুমান্ প্রভৃতি।	63	,,	8.	,,	,,	٠,	23
লাকুল চীনবানর উল্লুক, ননমানুষ প্রভৃতি।	٤>	,,	82	,,	,,	,	७२
সাপাড় ও সাজুই কানর।	,,	,,	,,	,,	,,	۵۵	22
দ্বিগত পশ্ব ; কঙ্গাক অ- পে'ছম প্রভৃতি।	*: G	>;	,,	> a	21	২ 9	224
স্বহান আশ: ব্রুকার পিদালিকা-সূক্প্রভি	. >	,,	5	ċ	,,	ગ્ર	85
चृलाठकाः रुद्धीः;	,	,,	>	-,	, ,,	, ,	. 3
शङ्गी :	0	,,	8	,,	,, •		9
শূকর-জোণীস্থ পদা।	b	>	Œ	·	·	,,	>8
ভাষ ও গ্ৰন্থ	†	,,	3	,,	,,	*>	2
হিপপটেন্ন।	,,	2,5	2	"	1,	,,	١ ٦
८७ भर्।	,,	,,	,,	,,	99	5	0
भिकारि।	•,	,,	,,	,,	"	8	1 8
वामुङ (कोंग्राम)	3>	82	23	>	۵	•,	200
राष्ट्र (कक्षात्र)।	२०	,,	٥٠	>	>>	99	228
মাণ দাদ পশা, বাাঘু, স্কু- ল্ক,কুবক্র,জোসজ্,নে- উল, জুচা, প্রাভৃতি।	२৯१	>>>	>20	. 3	ર ૧	224	¢>8
উষ্ট ।	> ;	,,	2	,,	,,	,,	٤ ا
শ্রামা।	,,	,,		,,	"	8	8
भूग रा ।	•	0	2	,,	,,	ર	>8
দেশ।	٩	>	3	.,,	,,	2	>0
(शय ।	>@	8	0	,,		1	२३
ছরিণ।	55	٩	>	,,	,,	20	94
সার।	9	7	940	-,,	-,.	>	84

^{*্}ভারত দীপবৃাহ, মালাকা।

† উউরোপ-থণ্ডে অনেক অম ও গদঁত আছে, কিব ডাঁছা
আাসিয়া-থডীয় অংশর অপতা।

[ा] आहे भरावत ५७८ लुटक ट्रांब्स ।

এক ২ জাতীয় পশু দুই তিন প্রদেশে প্রচরিত থাকাতে পূর্ল-পৃষ্ঠয়্ব নিদর্শন পত্রের প্রত্যেক ম্বন্ধে যে দকল জাতির নিদ্দেশ আছে, তৎসমুদায়ের সমষ্টি করিলে দর্ম-সমষ্টির মৃদ্রে যে অঙ্ক আছে তাহাহইতে অধিক হয়; কিন্তু আমরা তাহা না করিয়া শেষ স্তন্ধে যে দকল পৃথক্ জাতীয়পশু মনুসোর গোচর কইয়াছে কেবল তাহারই সঙ্খ্যা করিয়াছি। পত্র-বাহাল্য-ক্ইবার ভয়ে এই নিদ্দর্শন পত্র অতিসংক্ষেপে শেষ করিতে হইল।

ক্ষিয়া-রাজ্যের ইতিহাস।

কিয়দিন ইউল ক্ষিয়াধিপতি তুর্কদেশের পরাজয়কল্পে অন্ত ধারণ করেন। ঐ অত্যাচারের শাসনার্থে
সম্রতি উৎরাজ ফরাসিস্ ও তুর্ক দেশীয়েরা সসজ্জ ইউয়া
উক্ত ক্ষিয়াধিপতির সহিত তুম্ল সম্প্রামে প্রবৃত্ত ইউয়ালেন। অপুনা কলিকাতায় সকলেই ঐ সম্প্রামের আলোনো করিতেছেন, অতএব এমত সময়ে অজ্ঞাত ক্ষদেশের
উতিহাস অনেকের পজে আনন্দ্রনক ইউমে বেথে এই
প্রমাব উপদেশক-পত্রহাতে উদ্ভ ও সংস্কৃত করা ইউল।

স্ক্রিমান-কালে প্রিবাস্থ তাবৎ

প্রমান উপদেশক-পত্রহাত উদ্ভ ও দ স্কৃত করা হইল।

বিজ্ঞান-কালে পৃথিবীস্থ তাবৎ
বাজ্যের মধ্যে ক্যিয়া-নামক রাজ্য
নর্বাপেক্ষায় বিস্তঃ কলতঃ ইউরোপ ও আশিয়া নামক দুই মহাদ্বীপের প্রায়ঃ
দমস্ত উত্তরাংশ তাহার নামান্তর্বর্তী; কিন্তু
কেই অঞ্চলে অভিশয়-শীতপ্রযুক্ত অভ্যাপ্প
মন্ধ্য বাস করে। সেই রাজ্যের প্রজা সর্বশুদ্দ
মন্ধ্য বাস করে। সেই রাজ্যের প্রজা বাক;
অবশিষ্ট দুই কোটি ফুদ্দে পরাজিত পোলগুপ্রভৃতি নানা-দেশ-নিবাসি লোক।

অতিপূর্বকালে ক্ষীয়-লোকেরা অতি অসভ্য ছিল; প্রায়ঃ একসহস্ বৎসর হইল খ্রীপ্টি-য়ান নামধারি গ্রীক লোকদের ধর্ম তাহাদের মধ্যে প্রচলিত হইতে আরক্ষ হয়। খ্রীষ্টের মহতা মরিয়ম প্রভৃতি প্রকৃত ও কণ্পিত সাধুগণের ছবি পূজা এবং উপবাদাদি বাহা ধর্মকর্ম মেই মতের
সার। তদবলিদ-লোকদের ক্ষরিকাশন খুইেধমবিষয়ে অতি অক্ত; ক্ষরিয়া-দেশীয় গ্রামলাসি
পুরোহিতগণেরাও এই মপাবাদের পাত্র: বিশেষতঃ
তাহাদের অনেকে মদ্যপানে এমত ক্ষমক্ত যে
তাহাদের প্রতিবাদি কৃষকেরা পাছে দেই দিনেও
মদ খাইয়া পরদিন রবিবারে গ্রীজা-ঘরের প্রার্থনা
প্রভৃতি আরাধনা করিতে অপারক হয়, এই ভয়ে
প্রতি শনিবারে প্রাভঃকালাব্ধি তাহাদিগকে
আপন ২ গৃহনধ্যে ক্ষম করিয়া রাখে।

এই বর্ত্তমান-কালেও ঐ রাজ্যের সামান্য-লোক-দকল অতি অক্ত। জমাদার-লোকদের কেবল ভূমিতে অধিকার আছে এমত নহে, কিন্তু আপন ২ ভূমির সামান্তর্নানা ক্যক-লোকদি-গেতেও অধিকার আছে; ফলতঃ কৃযকেরা কৃত্ত-দাসের মধ্যে গণ্য; তাহাদের মধ্যে কোন ক্যক জমাদারের অনুমতি-ব্যতিরেকে স্থানান্তরে গিয়া বলতি করিতে পারে না; এবং সেই অনুমতি পাইলে যদি কোন প্রকার ব্যবসায় করে, তবে যথা সন্তব লাভানুসারে প্রতিবৎসর ঐ অনুমতির নিমিত্তে উক্ত জমাদারকে নিয়মিত পারিতোষিক দিতে হয়; তাহা না দিলে কিন্তু। অন্য কোন প্রকারে জমাদারের অসম্ভোষ জন্মা-ইলে সেই ব্যবসায় ত্যাগ করিয়া পূর্ব-বাসস্থানে পুনরায় কৃষিকর্মা করিতে তাহারা বাধ্য হয়।

ডেড় শত বৎসরাববি ক্যিয়া রাজ্যের নিত্য উম্নতি হইতেছে। সেই উম্নতির আদিকর্ত্তা পিতর নামক রাজা। তিনি ইংরাজি ১৬৭২ শালে জ্যোছিলেন। তাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা ক্যিমনর মরিলে পর ইউয়ান বা যোহন-নামক ভাহার দ্বিতীয় ভ্রাতা রাজ্যের অধিকারী হইল; কিন্তু সেই বাজ্যি জড়মতি হওয়াপ্রযুক্ত রাজ্যের কুলী-



নেত্র দ্বান্থয়ন বিষয়ের বিনারের ভগনী সকায়।
আপনি রাজ্য পাইবার আশাতে রাজদেহরক্ষক
দৈন্যদিগের নাহায্যদারা আপনার সহাদের ইউরালকে রাজ্য করিলেন। রাজত্ব-পাইবার সময়ে
কেই জভমতি যুবা সহাদেরীর অভিশ্রের না বুবিষয়ে বেনাদিনের নাজাতে স্পর্রৈপে কহিলেন,
শতোমর যদি আমাকে রাজা কর,তবে আমার ভ্রা

ण शिजहरक यूनद्राक्ष कतिया भागात मन्नी कत्"। टेमरमाता के शिखारय मण्ड इन्द्रार धृता हाछ-मस्मिनी जाहाद श्राज्याधिनी हंहेर्ज शाहिरणम ना।

পিতর অতিশয় তাকুবুদ্ধি ছিলেন; বাল্যকালা-বধি পরাক্রম-বৃদ্ধির উপায়-চিন্তা করিয়া লেকর্জ নামা এক জন বিদেশি লোককে আপনার শিক্ষকরূপে নিযুক্ত করিয়া তাহার নিকটে যুদ্ধ-বিদ্যা ও ভূগোল বৃদ্ধান্ত ও দুই এক বিদেশী- ভাষা শিখিতে লাগিলেন। পরে আপন গুমের সমবয়ক্ষ বালকদিগকৈ একত্র করিয়া আপনি পদাতিক হইয়া দৈন্য-সামন্তের নায়ে যুদ্ধাভাঙাল করাইতে লাগিলেন। প্রথমতঃ বোধ হইল যে ইছা তাঁছার খেলামাত্র, কিন্তু ঐ সকল বালকেরা ক্রমে যুবা হইয়া পূর্বৎ কর্মা করাতে অতি উত্তম সুল্মিকত হইয়া উঠিল। ১৯৮৯ শালে ঐ সকীয়ার সঙ্গে বিবাদ হইলে পিতর আপনার সেই সমবয়ক্ষ দৈন্যদলের সাহায্যে তাঁহার ধরিয়া এক মঠে কৃদ্ধ করিয়া আপনি প্রকৃত রাজত্ব করিতে লাগিলেন, কেননা তাঁহার জড়মতি ভাতার যে রাজত্ব গে নামমাত্র ছিল।

আপনার রাজ্যে ইউরপীয় বিদ্যা প্রচলিত করণাভিপ্রায়ে পিতর আপনি বিদেশে যাইয়া গভা লোকদের আহার ব্যবহার দেখিতে মনস্থ क्रतन। তাঁহার এই মান্সে প্রাচীন লোকা-চারাসক্ত অনেক ব্যক্তি সাতিশয় অসম্ভুষ্ট হই-য়। তাঁহার প্রাণ-নাশার্থে কুযুক্তি ন্তির করত যে রাত্রিতে আপনাদের অভিপ্রায় সকল করিবে, নেই রাত্রিতে কোন বিশেষ অত্যালিকাতে একত্র হইল। পিতর কোন মতে তাহার সমাচার পাইয়া রাত্রি একদেশ-ঘটিকার সময়ে সৈন্যদারা ঐ পৃহ বেষ্টিত করিবার আজ্ঞা এক জন সে-नागि उक्ति कितनः भागि जागिन जिल्ले है সময় বিশাত হইয়া এক জন ভূতে র সহিত দশ ঘটিকার নময় তথায় উপস্থিত হইলেন, তথা গৃহের বাহিরে কাহাকেও দেখিতে না পাওয়াতে সৈ-নেরা ভিতরে গিয়া থাকিবে, এমন অনুমান कित्रमा वे गृरह अरवन कितिन। उथाय बक्जो-ভূত কুমন্ত্রণাকারিগণ যেমন তাঁহার দর্শনে ত্রাসযুক্ত হইল, তেমনি ভাহাদের দশনে তি-निष প्रथम जानयुक रहेत्वम वर्षे, किन्न भोचु

देश्या वान् इरेश अन्ध-वन्ति कहित्वनः " यामि পথে যাইতেছিলাম; আলোক দেখিয়া বোৰ এই স্থানে কোনহ লোক আ-মোদ প্রমোদ করিতেছে: অতএব নিদু বা-ইবার পূর্বে তোমাদের বঙ্গে কিঞ্ছিৎ ভোজন পান করিতে আইলাম "। এই কথায় ক্মন্ত্রণা কারিগণ ভয়হইতে মুক্ত হইয়া তাঁহার সহিত মদ্য পান করিতে লাগিল। ফিঞ্চিৎ পরে তাহাদের मस्या এक क्रम शृह्लिंछित कर्ल कहिल, "ভाই (ए, नगश क्रेल"। श्रमिति ऐखत कतिल, " এখ-न उ इस नाइ"। इहाट बाज। नम्बधनानपूर्वक উঠিয়া ভ্রুৱ-তুল্য-স্বরে কহিলেন, "কেমন? তোর সময় হয় নাই? আগার সময় হইল"। ইহা বলিয়া ঐ গৃহপতিকে মৃষ্ট্যাহাভদারা ভূ-নিতে নিপাভিত করিয়া উন্মত্তের ন্যায় দারের দিগে মুখ করিয়া ডাকিলেন, "রে সৈন্যগণ, এই বেটাদিগকে ধরিয়া বাহ্ম । তৎক্ষণাৎ একা-एम घन्छ। वाजित्व शृद्धिक (मनाश्वि ও उँ।-হার অধীন নৈন্য উপস্থিত হুইল। তাহাতে কৃমন্ত্রণাকারিগণ কৃতাঞ্জলি হইয়া কৃপা প্রাথনা कतित्व देगरमात याषाता जाशामिशरक वाश्विता लहेशा भिन्। विदुश्यकः छाहारम् सर्पा जिन জনের অতিশয় ভয়ানক দণ্ড হুটল; ফলতঃ ভা-হাদের দেহ চারি ভাগে ছিন্ন হইয়া নগরের এক ২ দারে এক ২ খণ্ড টাঙ্কান গেল।

অনন্তর পিতর রাজমন্ত্রিগণের হত্তে রাজ্যশাসনের ভার সমর্পণ করিয়া রাজদূতের বেশধারণ-পূর্বক জর্মণি-দেশ দিয়া গমন করিয়া
হোলগু-দেশের আম্প্রদাম নামক অভিপ্রসিদ্ধ
বাণিজ্যভানে উপস্থিত হইলেন। সেই মহাদগরে অপ্প-দিন-অবস্থান-করণানস্তর তিনি নিকটবর্ডি সার্দাম্ নামক গুমে গিয়া জাহাজ্ঞ-

নির্মাণ-করণ-ব্যবসায় শিথিবার অভিপ্রায়ে শা-শান্য সূত্রধরের বেশ ধারণ করিয়া ছুভারের কর্ম করিতে লাগিলেন: ফলতঃ প্রতিদিন প্রাতঃকালে বাইশ কর: ৬ পুর্তি অক্স ক্রেয়া অন্য ছ্তা-*(इ.*त. श्राहरू कर्यञ्चातन <u>जा</u>निएकन, श्राहर ममस्र **किन** चितालकः ब्हेश क्या-क्सशानखन देवकारल সকলের থেয়ে বাদাতে ফিরিয়া যাইতেন। উক্ত গুঃমে ভিন চারি মাদ পর্যন্ত এই রূপে কাল-যাপনানত্ত তিনি আষ্ট্রদাম্নগরে প্রত্যাগমন করির। নেই স্তানেও দুই তিন মাস পর্যান্ত ছুতা-রের ক্স করিলেন: পরে রেখাবিদ্যা অঞ্চবিদ্যা প্রভৃতি নান: বিদ্যা উপাজন করিতে লাগিলেন। তদনত্তর তিনি ইংলপ্ড-দেশে গিয়া লপ্তন-নগরেও ইংলপ্ত-দেশহইতে কএক জন নাবিক, দেনাপতি, গোলন্দাজ প্রভৃতি লোকদিগকে আপনার রাজ্যে পাঠাইরা আপনি যুদ্ধবিদ্যাভ্যাস-করণাথে জর্ম-বি-দেশের বিয়েনা-নগরে গমন করেন। এই স্থায়ে তাতার রাজ্যের প্রাচীন দেশাচারে আ-সক্ত লোকের: পুনরায় উপপুব করে। তিনি ভাহার সমাচার পাইবামাত্র অতিশয় প্রচণ্ড জোধাবিও হইরা মদেশে প্রত্যাগমন-পূর্বক ঘইটে নৃচ্চাধিক একশত মানুষের শিরশেছদন করিলেন: এবং তাহার ভগিনা স্কীয়া সেই রাজ-দ্রোহ-দোলে সম্মতা হইয়াছিলেন, এই কারণ তাঁ-হার কারাগারের বাভায়ন-সন্মুখে প্রাণদণ্ড-প্রাপ্ত-বিলুপ্রিদের মধ্যে দুই ভিন শত মনুষ্যের শব করিতে প্রস্তুত আছে, ইছা শুনিয়া উক্ত চালস টাক্সাইয়া ঐ রাজনন্দিনীর মৃত্যুপর্যান্ত অর্থাৎ আপনার ৮,০০০ যোদ্ধা লইয়া তাহাদিগকৈ আ-পাচে ধ্যুসর খুলাইয়া রাখিলেন।

করণানতঃ পিতের তাহাদিগকে সভ্য লোকদিগের যুদ্ধ করিয়া কাল্কেমে বাল্ভিক সমুদ্রের উত্তর-রাতি গুল্প করাইতে মনস্থ করেন। আদে সমৃদু- ভিটস্থ সমস্ত ভূমি আপনার **অধীন করেন। পরে**

जीतङ वाशास्त नामक नगरत यूरकालरयाना জाहोक-निर्मा। कतान, उथा चनाना हे उताशीय त्रभरकात मरथा रेमनामामरखत य नियम हिन, निश्मानुमात चालन बारकाब रेमनामास প্রস্তুত করিলেন; এবং দাড়ি রাখিতে তথা দীর্ঘ পরিচ্ছদ পরিধান করিতে নিষেধ করিলেন। যে नामाना लाकिता पाछितिनिष्ठ इहेन्ना धना পछिछ, তাহাদিগকে বলপূর্বক ক্ষৌর-কর্ম করাইতেন, এব• मीर्च পরিচ্ছদাখিত পুৰুষদের পরিচ্ছদের অদ্ধেক ছেদন করাইতেন। ধনি-লোকদের মধ্যে যাছারা माछि वा मोर्च शतिष्क्म ताथिएं ठाहिक, जाहारमत निक्षेट्टेंट वायिक अल्क गुर्व क्रिएंजन। ज्था বজ্রের উপযুক্ত আকৃতি সকলকে জানাইবার নি-নেই প্রকারে কিছু কাল যাপন করেন। পরে। মিত্তে প্রতিনগরের প্রবেশদারে দর্বনাধারণের চকুর্গোচরে তাহার আদর্শ টাঙ্গাইয়া রাখিতেন। তৎकारन कविया-तारकात পশ্চিমে সমৃদ্তोत्रभ অঞ্জল-मकल सीमन-दारकार्द व्यथीन, अवः मिक्तरन সমৃদ্ভারস্ত অঞ্চল তুকক রাজ্যের অধীন ছিল। পিতর ঐ পশ্চিমদিক্স সমৃদুতীরের অধিকারী হই-বার নিমিতে পে|লণ্ড-দেশের আগষ্টস্-লামক রা-জার সহিত মিত্রতা করিয়া স্বীদন-রাজ্যের বিক্জে যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। তৎকালে চার্লস্-নার্মা আঠার-বর্ষ-বয়ক এক যুবা স্বাদন-দেশের রাজা ছিলেন; তিনি যুদ্ধেতে অতিদক্ষ ছিলেন, এবং তাঁহার সৈন্য অতিশয় সাহসিক। অতএব না-রবা নগরের নিকটে পিতরের ৮০,০০০ যোগা যুগ ় ক্রমণপূর্বক সম্পূর্ণৰূপে পরাভৃত করেন। কিন্তু এতাদৃশ-জ্রক্রপে বিদ্যোহি-প্রজাদিগকে দমন- তিন-বৎসর-পরে পিতর ঐ অঞ্চলে পুনরায়

ब्राक्यांनी ज्ञांशन कित्रवांत मानम कित्रवन ! (नहें স্থান নলবনে পূর্ণ, সুতরাং তথায় নগর-স্থাপন-করা সাতিশয় কষ্টনাধ্য ছিল। তথাকার ভূমিকে সমভ্যি-করণভিপ্রায়ে তিন-শত-ক্রোশ-দূরহইতে শজ না থাকাতে তাহারা আপন ২ অফুলিদারা দিগকে অতি ভৱানক দপ্ত দিলেন, সুতরাং অল্প-कालमर्था है क जिनव नगर वह कन-नमाकीर्ग इहेल। সম্পূতি উক্ত নগর অহীন সুন্দর, এবং তক্মধ্যে **পঞ-बकाधिक (बाक वाम कतिरुट्ड)**।

পিতরের জে/ই পুঞ আবেক্রিস প্রাচীন-দেশা-চারে আসক্ত হওয়াতে পিতর তাঁহার প্রতি এমন : জ্ঞান করিয়া ইটালি-দেশে পলায়ন করে। কিন্তু পিতা ভাঁহার আশ্রন্থান অনুসন্ধান করিয়া পুন-নেই রাজকুমার তাহা শুনিবামাত্র নাঙ্ঘাতিক পকথনানন্তর কহিলেন, "তুমি আমার সম্পে আ-

তথাকার নেওয়া-নামক নদীর মুহানার নিকটে পীড়াতে পীড়িত হইয়া শব্দানের মধে ৮১৭১৮ পিতর্ন্-বর্গ (অর্থাৎ পিতরপুরী) নামক নুত্ন শালে) প্রাণত্যাগ করিলেন। বাদ্ধক কালে সি তর নানারোগদারা অতিশয় যাতনা পাইয়া অব-শেষে ১৭২৫ শালের ৮ কিবুয়ারি ভারিথে প্রাণ-ত্যাগ করেন। তিনি ক্ষিয়া-রাজ্যের উন্নতি কার ক हिल्लन वर्षे ; किन्नु नईमा ताशानिष्टे ६ भहालारश দ্যুখি-প্রজাদিগকে বলেতে আনয়ন করা যাইত। লিপ্তথাকিতেন বলিয়া তাঁহার নানোদ্যান্ত করিলো তাহাদের কোদালি চুপড়ি প্রভৃতি কোন অন্ত্র- অদ্যাপি জ্ঞানি লোকের মনে ঘুণা জ্ঞায়। থাকে। পি হরের মৃত্যুর পরে কথোরীণা নাম্বী তাঁহার মৃত্কি তুলিয়া আপন্থ বজ্ঞে করিয়াবহন করি- বিধ্বা জ্ঞাী রাজত্ব করিছে লাগিবেন; ুকিন্ত ভা এইৰপ-কেুশ-প্ৰযুক্ত ভাহাদের লকা২ লোক ভাহার রাজন নামনাত্র, কেননা৴ মেন্সিকফ্ অকালে মৃত্যুমুখে পতিত হ্ইতে লাগিল, কিন্তু নামা রাজ মন্ত্রী প্রকৃত শাসনকর্তা ছিলেন। তাছাতে নগর নির্যাণের কোন হানি হইল না, কা- উক্ত মেন্সিকফ্ বাল্কেলে অভিদরিদু ছি-রণ ভাহাদের পরিবত্তে পুনঃ২ লুতন-লোক বলেতে । লেন: রাজধানীর পথে ২ বেভাইয়া পিউকাদি অনায়ানে আনীত হইতে লাগিল। এই**রাপে ১৭০০ : মিপ্তার** বিক্রেয় করিতেন। ভাহার অতি স্শাব্য শালে কএক মানের মধ্যে ঐ পিতরপুরীনামক নগর স্বর থাকোতে অনেক লোক তাঁহাকে ডাকিয়া নির্মিত হইলেপিতর আপন রাজ্যের নানা অঞ্চল তাঁহার নিকটে মিটায় ক্রয় করিত। একদা কোন নিবাসি বণিক্ও ব্যবসায়িও ভদু লোকদিগকে। প্রধান সাংহবের ভ্রাগণ ভাছাকে ভাকাইয়া অ-সপরিবারে সেই নগরে গিয়া বদতি করিতে আজা টালিকার রক্ষনশালাতে তীহার গাত শুবণ করি-করিলেন; যাহারা যাইতে মর্থাকার করিল, তাহা- তেছিল এমত সময়ে গৃহ্যামী স্বয়ং আনিয়া পাচ-ককে কহিলেন. " এই যে বাঞ্জন ত্মি প্রস্তুত করি-তেছ, ইহাতে বিশেব মলোযোগ কর, কেননা আনি নহারাজকে ভোজনের নিমন্ত্রণ করিয়াছি: তিনি এই ব্যঞ্জন অতি ভাল বাদেন"। এই কথা বলিবার নুশয়ে পাচকের দৃষ্ঠির অগোচরে পাক-পাতের মধ্যে বিষ শিক্ষেপ করিলেন। মেন্সিকফ্ निर्मय वावहात करतन य (गरे यूगा ठांश अवहा उन्मनानस्त्र सक्कारव श्रःहान करतन; शरत ভোজের নিকপিত-সময়ে পুনরায় সেই পথে-আসিয়া মিন্টাল্ল-বিক্রয়-করণার্থে গান করিতে রায় তাঁহাকে ম্দেশে আনমুন করেন, পরে তা- লাগিলেন। মহারাজ পিতর তাঁহার সুশাব্য রব হার বিচার করিয়া তাঁহার প্রাণদণ্ডাক্তা করিলে। শুবণ করত তাঁহাকে ডাকিয়া নানা প্রকার কথো-

এমত সময়ে মেন্দিকফ গোপনে তাঁহাকে নালের শেষে পরলোক-প্রাপ্ত হইলেন। বলিলেন, "অগ্রে আমার কথা না গুনিয়া আ-ক্ষ্নিয়া মহারাজ উঠিয়া তাহার বহিত এক- 🕆 পার্শ্বে গিয়া ফল্গে-ক্ষণ-পর্য্যস্ত কথোপকথন করি-लम। शर्वः श्नदाप्त निकामरन উপবেশनशृद्धक গ্ছের করাকে কহিলেন, " আপনি অণ্ডে এই ব্য-क्षरनंत्र काश्वाम लडेन, कामि शरत लहेव "। हेहार ह নে ব্যক্তি নানাপ্রকার আপতি করিলে মহারাজ (महे वाक्षन निक्षेवर्खि अक कुक्तुत्रक मिलन। কুরুর তাহা খাইবামাত্র অতিশয়-খন্ত্রণা-ভোগ করত প্রাণভ্যাগ করিল৷ তদববি তিনি মহা-রাজের প্রিয়-পাত্র হইয়া ক্রমে ২ ধনবান্ও উচ্চ-পদাখিত হইলেন, এবং মহারাজের মৃত্যুর পরে বাস্তবিক রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

इंश्हां अ१२१ मारलं स्य मारन काथादीना द्वा-নীর মৃত্যু ইইলে মেন্সিককের যতুদার। পিতরের পোল অথাৎ প্রাণদপ্তাজার ভয়ে মৃত মালেক্মি-নেৰ প্ৰ বিভায় পিত্ৰ নানে ক্যিয়া রাজেৰে লি-৯: ক্লারোহ্ণ করিলেন: ও রাজকার্য্য **সমস্ত** মন্ত্র ক্রানেরাখা অসহ্য বোধ করিলেন। এমত ব্যায় একদা মহারাজ ভগিনীর নিকটে টাকা প্রেরণ করিলে মেন্সিকফ্ দূতের **হস্তহ্ইতে সেই** টাক লইয়া সাপনি রাখিচেছেন, ইছা শুনিতে পাটয়া ভাঁহাকে পদচুত্ত করিতে তির করিলেন, এবং ফবিলম্বে দেশের রাজ্যনুগারে মেন্লিক-২কে নগরিবারে ভয়ানক-শীতযুক্ত নিবারি-

সিয়া ভোজনের সময়ে আমার পরিচয়া। কর্ম। য়া-প্রদেশে প্রেরণ করিলেন। পথের মধ্যে তাঁ-মেনস্ক্ষ্ এই আদেশানুসারে বাটীর ভিতরে হার ভার্য্য অনবরত ক্রন্দন্দারা অহা হইয়া গিয়া ভোজনশালাতে মহারাজের পশ্চাতে দণ্ডায়-। প্রাণত্যাগ করিল। পরে ঐ দেশে তাঁহার এক মান রহিলেন। পরে গৃহের করা এ ব্যঞ্জনের আ- কন্যাও মরিলে তিনি ক্লেশ ও শোকপ্রযুক্ত নির্বাক্ খাদন লইতে মহারাজকে সাধ্যসাধনা করিতেছেন : হইয়া আহার করিতে অখাকার করিয়া ১৭২৯

এই ঘটনার ত্রত্পকাল পরে, (১৭৩০ সালের পানি ইছা থাইবেন না "। বলেকের এমন কথা জানুয়ারি মানে) দ্বিতায় পিতর বসস্তরোগে প্রাণভ্যাগ করেন, ও ডল্গঞ্কি-নামক এক জন প্রধান-লোকের যতুদারা প্রথম পিতরের ভাতৃকন্যা আমা রাজত প্রাপ্ত হন। উক্ত ডল্-গৰুকি মেন্দিকফের বিশেষ শত্রু, ও তাঁ-হার পতনের আদি কারণ হইয়াছিলেন, কিন্তু উक्ত ১৭৩० नात्वत यस्या जाननिष निष्ठा छ ছইয়া নিৰ্বারিয়া-দেশে নীত হইলেন। যাছারা তীহাকে লইয়া গেল, তাহারা মেন্সিকফ্ ও তাঁহার পরিবারকে মুক্ত করিয়া ফিরাইরা আ-নিবার নিমিতে রাজাত্তা পাইয়াছিল। আন্না **उल्गक्किक मृतीकत्र अक्षेत्रमान अ मूनिक नारम** पूर्वे कन क्रमान गार्क्विमिश्क उष्रभाम नियुक्त করিয়া আপনি রাজত্ব করিতে লাগিলেন, কিন্তু বস্তুতঃ তাঁহার অতিপ্রিয়পাত্র বিরণনামা সাহে-বের আদেশানুসারে সকল কর্ম নির্বাহ হইত। মুনিক নাছেব প্রধান সেনাপতি ছিলেন। ১৭৩১ नावाविध ১१७२ मान পयान्त जिन जूकक ला-কদিগের সহিত যুদ্দ করেন, এবং বার ২ জয়ী হন, তথাপি অবশেষে সন্ধি-করণের সময়ে জয়ের উপযুক্ত ফল প্রাপ্ত হন নাই।

> ১৭৪০ সালের ২৮ অক্টোবর তারিখে আলা রাণীর মৃত্যু হইলে বিরণের চাতুরীতে সেই রা-ণীর ভগিনীর দৌছিত্র ইওয়ান বা যোহন নামা (७७-वर्नद्र-वस्क वानक द्राक्षश्राप्त अ७

বিক্ত হয়। কিন্তু অন্প দিনের মধ্যে বিরণ ও বর্দা মথ থাকাতে প্রজারা অতিশায় দোরাক্স। ওষ্টরমাণ ও মুনিক এবং শিশু-মহারাজের পি- ভোগ করিতে লাগিল। বিশেষকঃ কোন বাচাল বিসম্বাদ জন্মিয়া ঐ বালকের পদচুটিত ও প্রথম : কেরাও কশ্যোতে প্রহারিত হটত : কিয়া তাহা-পিতরের কন্যা এলিজাবেথের রাজপদে অভি- দের জিলাক্রেদন-পূরক তাহাদিগলে নির্বারিয়া-থেক হয়। ইছার বিশেষ বৃত্তান্ত এই।

হার নিকটে আসিয়া এক খণ্ড কাগজ দেখা- তাঁহাকৈ উপহাস করাতে এলিলেবেথ সতিশয় ইলেন। সেই কাগজের দুই পৃষ্টে এলিজাবেথের। জেলধাবিত হুইয়া হাহার বুলি যুদ্ধ করিয়া অপ-প্রতিমূর্ত্তি চিত্রিত ছিল। কলতঃ এক পৃষ্টে তিনি। বাদ আছোদনের চেল, এরিয়াজিয়েন। ১৯৬২ নারে রাজমুকুটে বিভূষিতা রাণীকণে, অন্য পৃষ্টে বন্ধু-্ এলিজবেথের মৃত্যু হয়। তমন্তর ভূতীয় পি-গণের মৃতদেহ্মপ্তলে বেপ্তিতা দাসাক্ষপে, চিত্রিত। তির নামক ভাগার ভাগিলের রাজাই প্রাপ্ত হব। ছিলেন। हेश मिथाहेवांत नमस्य চिकिৎमकः चिकि खे ध्रियसः हार्ट्य विद्यार वर्ष हिल्लमः ভাছালে কহিলেন, "এই দুয়ের মধ্যে আপনি এই ছেতুক তৎক্ষণাৰ টাননাবিপতিনিগের নি-কোন্টা মনোনাত করেন, তাহা শাঘু নিশ্চয় কক্ষণা এলিজাবেথ রাজত্ব মনোনীত করিয়া দুই এক বৈনাদল আপনার পক্ষ করিয়া ভাষাদের नाक लागका । १९८० मारला लाट्य बार्कामश्रामन তাপন অধীনে আনয়ন করিলেন। তাঁহার আ-জ্ঞাতে উত্তয়ান নামক রাজশিশু কারাবদ্ধ হুইল; ুরাতে সামান্য লোকদের, বিশেষসং, বৈনাগণের এবং যদি কেছ্ ভাষাকে মুক্ত করিবার চেপ্তা করে, जात व्यक्तितास (महे वालकरक दश किंद्राज इहेरव, ' এমত আজ্ঞা ভাষার রক্ষকদিগকে প্রদান্ত হইল, এবং তাহার পিতা মাতা ও মজ্ঞিগ দিবীরিয়া-দেশে প্রেরিত ১ইল। তিন বৎনরান্তে প্রাপ্তক লিষ্টক-নামা চিকিৎনক কোন শত্র ছলেতে তাঁহাকে কশাঘাত করিবার আজা দেন, এবং তাঁহার রক্ষকেরা তাঁহাকেও বধ ফরিল। হিষা অভিঘূণার্ছ কুকর্মে ও কাম্পানিক ধর্মকর্মে । তাহার মৃত-স্থানির বিশেষ বন্ধু ছিলেন, ও তাহা ।

তা মাতা, এই সকলের মধ্যে পরস্পার বিবাদ : জীলোকদারা অপবাদিত হইলে অভিযান লো-্র দেশে গ্রেরণ করা যাইত। তাৎকালিক প্রযিয়া-একদা লিইক নামা তাঁচার চিলিৎসক ভা দেশের রাজা এলিজনেথের লম্পটভা-প্রযুক্ত বারহ करि वहे कास्त्र ट्राइन कि लिन, अट्टायहा अ-माविध योहात दिशाक 🖓 🖫 कतिएक, व्यक्ति লম্বে তাঁহার পক্ষ হর্যা তাহার নাছায়। কর্ণ। **এই পিতর** কোন ২ বিষয়ে সম্প্রশালী ছি-লেন; কিন্তু কিঞ্জিৎ স্থানতি ও একস্ট্রা হও-यमस्याय जनावैद्याहित्वन: नवः काथादाना-নামী আপন ভাষ্টার সহিত অতিশয় মন্দ ব্যবহার করিতেন; তাহাতে নেই কাথারীন। রাজন্ব পাই-বার উপায় দেখিয়া কতিপয় দৈন্দলকে সপক্ষ कत्र व्यापन सामोरक ध्र उत्थ कतिरलन। अह घठेनात पूर्वे वस्मद्राप्त श्रामाक कातावक वे उद्यान-মহারাণীর অসভ্যোষের পাত্র হয়; তথা রাজ্ঞী নামক যুবরাজের মোচনাথে কেই চেষ্টা দেখাইলে

অবশেষে তাঁহাকেও দিবারিয়া-দেশে প্রেরণ, এবম্পুকারে ১৯৬২ সালের জুলাই মাসে দ্বিতীয়া করেন। তদবধি বেষ্টুচেফ্-নাম। ভীহার শত্রু কাথারাণা রাজস্ব প্রাপ্ত হইয়া প্রায়ঃ চতুস্তিংশৎ-প্রধান মন্ত্রির পদে নিযুক্ত হওয়াতে, এবং রাজম- বিষ-পর্য্যন্ত দেশ-শাষন করেন। প্রযিয়ার রাজা

ভোগ করিতে ভর্মাছিল, এই অনুমানে রাজমহি-ষী তাঁলার বিক্জে বুজ করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি-লেন: কিন্তু কিন্তুদিনসানন্তর তাঁহার সকল-পত্র-পাঠ করণগারা ও অনুমানের মিথারি প্রকাশপা-डेटल बीजात महिए मिखा करतन।

জ্বিত দেশের দক্ষিণ পশ্চিম অঞ্চলে "ক-महत्व माभव (वारकता याम करता जाहाता मछ। ब्रह. कृष-क्यारिशका यु**रक अधिक अनु**त्र । কাহাদের সুক্ষাশ কৃদু, কিন্তু অতিশয় চেত্যামী ও বিশ্বস্ত। সেই লোকেরা পৈতৃক দেশাচারে ভাতি আলকু কোথাৱীণার কর্মকর্গণ মজ্ঞানতা-প্রযুক্ত ভানে 🛎 বিষয়ে নেই দেশা চারের ভান্যথা 🖯 করিতে প্রবৃত্তি চইলে তাছারা সকলেই অসম্ভুষ্ট মরা তাছার ক্তিপয়-প্রদেশ আপনাদের মধ্যে হইয়াছিল। ভাষাতে পুগাছেক-নামা তাহাদের বিভাগ করি: তাহাতে তাহার বল ভঙ্গ হইলে মধ্যে এক জন স্থাপনাকে মৃত পিঁতর রাজের প্রতিবালিরা নির্ভয়ে থাকিতে পারিবে।" এই তল্যাকৃতি জানিয়া স্থাতীয় লোকদিগকে ক-্তিকোরে ১৭৭২ নালে পোলণ্ড-রাজ্যের দুই কুদু হিতে লাগিল, "পিতর নামক মহারাজের মৃত্যু- ৷ অংশ ঐ রাজধয়কর্জ, এবং অভিবৃহৎ এক ন্মাচার গণ্যমাত্র। তিনি মৃত না ছইয়া পলা- কংশ কাথারীণা-কত্ক অপহাত ছইল। অবশিষ্ট মুন করিয়াভিলেন। আমি সেই মহারাজ। আ- তিংশের রাজ। সম্পূর্ণকূপে কাথারীণার অধান টস, জাষার লাহায়। কর, আমি ভোমাদের। হুইলেন। প্রায়ঃ বিংশতি ব**ংসর পরে দেই** দেশ করল করিব:" তাজার এই কথাতে সর্বনাধা- কোর লোকেরা তাঁহার দৌরাল্ম্য আর সহ্য র-ের বিশান জনিলে অপ্রকালের মধ্যে লক্ষ্ ২ ক্রিতে না পারতে রাজ্যের অপর এক অংশ कड़िल् । इ.१८६१ का का ब्रह्म धार्या प्रमुख कड़िटलंग ।

চাতুষ্য-সংবহার করেন; কলতঃ প্রথমে আপনার । দৌরীক্ম্য-প্রযুক্ত অভিশয় অসম্ভই মাছে।

রইপরামশানসারে ক্থারীণাকে অনেক দৌরাআ । অভিলয়িত ব্যক্তিকে সেই দেশের রাজা কর্নারে ज्याय देननागनटक (श्रुत्रव क्रिट्रामा श्रुट्रत (मह रिट के बार्या विकास किन, जमाता लोकरित অ্লৈক্য নিত্য ২ বাড়াইলেন। তাঁহার এইৰূপ वावहारत जगसुष्टेमरणत लारकता जूककरमत मा-ছাব্য-প্রার্থনা করিলে কাথারীণা ভুৰুক-রাজ্যের সহিত যুদ্ধ করিতে লাগিলেন। সেই যুদ্ধে বিদ্যুহি প্রজাদের অবিশ্বস্ততাপ্রযুক্ত, এবং ছেন্সি-নামক उत्तन्तु निकटि नाविक रेमत्नात शताकश्वाता जू-ককলোকের অধিক ক্ষতি জন্মিল। তাহাতে অস্ট্রিয়া-দেশের রাজা, এবং প্রষিয়া-দেশের রাজা অস-त्याय श्वकाम कतिल काथात्रीना कहिल्लन, " अहे পোলপু রাজ্য মিত্রভেদের কারণ। আইস, আ-লোক বালার কনুগামী হট্য। কাথরীণার বিক্জে ক্ষিয়ার ও প্রয়োর রাজদ্বয়ের মধ্যে বিভক্ত মুজোলাখ ১য় কিন্তু দুই বৎসর পরে ধনাভাবে তা- । হইল। পরে পুনর্বার ভয়ানক মুদ্দ হইলে ১৭৯৫ ছার সৈল। ব্রান পাইল, ও ডাছার অনুগত লোক- নালের শেষে সেই দেশের অবশিষ্ঠ অংশ ক্ষিয়া বের মারেটিক জন পারিকোষিকের লেভে তা- ও প্রযিয়া ও ওপ্তিয়া, এই তিন দেশের রাজ-হাকে থার্যা ব্রাক্তরালার লোকদিগের হতে সমর্পণ। গণের মধ্যে বিভক্ত হইল। এইৰপে পূর্বকা-িলের অভিবৃহৎ পোলগুয়-র ফেনের পঞাংশের এছ সালাব্ধি কাথারীবা কবিয়ার পশ্চিম। চারি অংশ ক্ষিয়া-রাজ্যের ভাষাৰ হৃইয়াছে। নীৰ জিল পোল্ড-নামক রাজ্যের প্রতি অভিশয় সেই দেশের লোকেরা অদ্যাপি ক্ষীয় লোকদের

विविधार्थ-मञ्जूर,

পুরারভেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিপ্প-মাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব]

मकाक ३११७, कांन्कि।

ভরতপুরের ইতিহাস।

कार्य अब श्रीमक (एम আছে; कार्य भागन-वः मीय पित्त/धि-

পরে তাঁহার বংশ অবিরোধে ৪০ বৎসর কাল ভরতপুরের রাজ্য শাদন করে। ১৮৬০ সংবৎ-পরার পশ্চিমাংশে ভরতপুর সরে তাহার পোত্র রণজীৎ দিংহ ইংরাজদিগের শহিত এক সন্ধি স্থাপন করেন; তাহাতে উভয়ে পরস্পারের শতুদমন-নিমিত্ত অস্ত্র ধারণ করিতে পতিদিগের উন্নতাবস্থায় তাঁ- প্রতিশ্রত ধন: এবং রণজাঁৎ নিংহ তদ্বারা हामिरावरे अधीन हिन: किन्न जाहामिराव शिनुष्टे- सीय साधीनय উख्यकारण जन्दालन करतन, अ হওন-সময়ে জাটদিগের হন্তগত হয়। উক্ত গোয়ালিয়রের রাজাকে বার্থিক-কর-প্রদান-ক্রিয়া জাট জাতীয় ব্যক্তিরা প্রথমত মুল্তান প্র- হইতে নিফ্তি প্রাপ্ত হন: অধিকস্ত তাঁহার রা-দেশে বাস করিত; প্রায়ঃ দুই শত বৎসর জ্যের সীমা-নিরূপণ-সময়ে সল্ধিকারিদিণের কৌ-हरेल उथाहरेट आनिया आयंगवर्डित नर्वे शत्न जाहात आधारन र्कि हयः कि**स अहे नकल** ব্যাপন করে। আর্য্যাবর্ত্তে আদৌ তাছারা কৃষি- লাভ সত্ত্বেও ভিনি তাহার পর বৎসর ইংরা-কর্মে নিযুক্ত হয়, কিন্তু অম্পকালের মধ্যে জদিগের শত্রু হইয়া হুলকারকে দীঘপুরস্থ বলবার্য্যের কৌশলে ছলের পরিবর্ত্তে থড়গ- মহাদুর্গের সন্মিকটে শিবির সংস্থাপন করি-धार्वभूर्वक कामनापिरात निमिष्ड कानक द्यान एक पिरलन, अवः करभारत वे द्यान है ताकपिरात वाक्षिमिः हामन कारान करता ् थे मकन वाक्ष- | रेमना ও छ्नकारवद रेमनामरथा जूमून मञ्जाम নিংহাসন-মধ্যে যাহা ভরতপুরে স্থাপিত হয়, উপস্থিত হইলে দীঘের দুর্গহইতে তিনি ইংরাজ-তাহাই দর্বপ্রধান; তদুপরি সূর্য্য মল (সুরজ্ সৈন্যের বিনাশ-নিমিত্ত কামান ছুঁড়িতে লা-मक्) नामा এककन कां प्रथमणः बाधीन इहेश। शिलन। এहे अमद्यादहाद है शास्त्रता अलाख আরোহণ করিয়াছিলেন। ১৮২০ সংবৎসরে তিনি | কষ্ট হুইয়া তাঁহার দৈন্যকে পরাস্ত করত তাঁহার **षिद्याधिशिष्टित (मनानायक नक्षक् थाँत महिए इन्डर्हेट होय नगत जगक्र कतिया नय, जिल्ह** मणूथ-मणुरम लाकाखत्र याळा करतन। ७९- निरमत मूर्ग-धूरम-कत्रवार्थ छमू छ इत्। त्रविद

and a grant of the second of t

ভরতপুटिः एएर्ग अक्ब क्तिल्**न**।

लिक् नाष्ट्रव मन-नहन् योषा लहेश ले पूर्णत अधीन थाकिए, बीकांत करतन। विकारक उथा पूर्वा याकामिर्गत व्यक्त विकारक रेमना श्राह्म किता किता किता কোনগড়ে কগুদ্ধ হুইয়া কৃতকার্য্য হুইতে পা-मनम हो (क लाशिन।

রণপর্যাপ্ততা প্রকাশ করিম্ছেলেন, এবং তাঁহার रमनाच वादगृक्रायह यथाथ धर्म-প्रविभावन-পূর্বক প্রাণশণে স্থামির মঙ্গল চেষ্টা করিয়া

निः क क्रवकाश (प्रविद्यंन, देः ताक्रांप्यत व्यव्य | नाहार्या जिनि वस्कान देः ताक्षिर्यत निक्क গোলাহইতে দীন রক্ষা করা অসাধ্য; অতএব যুদ্ধ করিতে পারিবেন, বিশেষতঃ তাঁহার আপন ও তলকাঞের সমস্ত সৈন্য আনিয়া দুর্গে যে সকল খাদ্য দুব্য সন্তুহীত ছিল, তা-हात त्मय इहेटल नाशिन; हे बाटकता पूर्णत উ নুল অতি নাৰ্থানে অনেক ব্যয় ও বুদ্ধি- চতুদ্বি বৈষ্টিত করিয়া রাথিয়াছিল, দুর্গ-বহি-াছকারে এ প্রকারে নির্মিত হইয়াছিল, যে দেশিহইতে খাদ্যদুব্য আনিবার উপায় নাই, क्ष्या । जाहात एक कतिए नक्षम हहेवात नहि। मुख्ताः ममुही थारि। त स्मि हहेराह उभवाम তাহার চতুদিগে প্রশস্ত ও অতি গভীক এক সম্ভাবনা। অতএব ইংরাজদিগের নিকট সন্ধির থাত ছিল, তাতার অবতরণ করা নিরতিশয় ক- প্রস্তাব প্রেরণ করিলেন, এবং তৎসম্পাদনার্থে ভিনা কথাৰ তংপশ্চাতে ৪০ হস্ত স্থলা, ও অত্যুক্ত। অত্যন্ত ব্যুগু **হইলেন। সন্ধি করিতে ইংরাজদিগের** এক নৃৎপ্রাচার ছিল, তাহা কাষানের গোলায় মনন ছিল, সুতরাং উভয়ের অভাষ্ট অব্যাজে ভ্ষ হয় না, সুতরাং ঐ দুর্গ-ভেদ-ছওয়ার কোন বিদ্ধ হইল। সন্ধিপত্তে রণজাৎ সিংহ ইংরাজ-স্ক্রবন ছিল না। ই-রাজদিগের সেনাপতি দিগকে ২০ লক্ষ টাকা দিতে ও ইংরাজদিগের

েল-করণার্থে যৎপরোনাস্তি প্রয়ন্ত্র করিয়া- । এই ঘটনা অবধি ভরতপুরের রাজ্য নির্দিঘু ছিলেন; কিন্তু ক্রমাগত চারি মাস ঐ দুর্গোপরি চলিতে লাগিল, রণজীৎ সিণ্ট্ এবং তাঁহার পুঞ প্রাতিট্ কালের বর্ষার ন্যায় গোলা বর্ষিত করি- । রণধীর আপনাদিগকে ইংরাজহইতে দুর্বল জা-্বাভ ভাষার খুংস করিতে পারিলেন না; প্রভুত্ত । নিয়া সর্বদা ভাষাদিগকে সম্ভুষ্ট রাখিতেন, এবং পুগ্রন্থ প্রন্তুক মধ্যে ২ আক্রমিত হুইয়া কোন মতে কাছার সহিত বিবাদ বিস্থাদ করেন দিন ২ ক্রিবল হইতে লাগিলেন। এই অবস্থায় । নাই। ১৮৭৩ সংবৎসরে ইংরাজেরা পিগুরিদিগের তিনি বলপ্তক দুগ-প্রবেশ করিবেন মানলে দমনার্থী চ্ইলে রণধীর সিংচ্ ইংরাজদিগের महिदात मृश बाक मन करतन; किन्न पूर्णत श्राणीत निम्मीकार्य जल्माहारया अक मन व्यारताहि

১৮৮০ নংবৎসরে রণধীর নিংহের মৃত্যু হয়, রিলের কা সুতরাং অবশেবে সন্ধি করিবার এবং তাহার ভাতা বলদেব সিংহ ভরতপুরের রাজ্য-ভার গুহণ করেন, কিন্তু তাহা বহুকাল যদিত রাজা রণজাঁও সিংক দুর্গারকায়ে উত্তম বছন করিতে পারেন নাই; দুই বৎনরের মধ্যেই তাঁহাকে পরলোক যাত্র। করিতে হইল। তাঁহার ছয়-বৎসর-বয়ক্ষ এক মাত্র পুথা ছিল; তাছার नाम दलवन्छ नि॰इ; नाजानुनादत छत्रज्ञात्रत ত্তশভ্রে নিজ্মাম করিয়াছিল, ভতাপি তাঁ- রাজ্য তাঁহাকেই অশে, এবং ইংরাজেরা তাঁহাকেই হার এমত ভর্বা ছিল না, যে তাহার দৈন্ত- রাজা বলিয়া স্বীকার করেন; কিন্তু তাঁহার পিতৃব্য-

পুঞা দুজ্জন শাল * পিতৃষাত্ত্ব অপহরণাভিলাবে | হইয়া তাঁহার সহিত যুদ্ধ না করিয়া দুর্গমার তাঁহার বিরোধী হইল। ই॰রাজেরা তাহাকে তা- | হইতেই গোলাবৃষ্টি করিতে লাগিলেন। ই॰রাজের। দৃশ কদাচরণ্ছইতে নিরস্ত ছইতে পুনঃ২ উপ- তাছাতে কোন মতে ভীত না ছইয়া দুর্গ-বেইল দেশ দিলেক, কিন্তু তাহার কিছুমাত্র আকর্ণন পূর্বক দিবারাত্র তন্মধ্যে গোলা-মিক্ষেপ-করি প্রাপ্ত্যর্থে সন্ধি করিবার কম্পনায় ইংরাজদিগের প্রতিনিধিষ্করণে দিল্ল্যধিপতির সভায় উপস্থিত क्रिति श्राप्त ६३ए७ हम्र वहे ज्या, जाहाता निरयध कतिरलन। वे व्यवकारम मुर्क्कनमाल যথানাধ্য দৈন্য শামন্ত সন্তুহ্ করিতে তুটি করেন नाहे, এব॰ মনে ২ করিতে লাগি**লেন যে অভে**দ্য ভরতপুরের সন্মুখে ইংরাজেরা কদাপি আসিতে পাहिरवक ना: किन्न जिल्लाकान-मर्थारे छोराह त्म जुम मृतीकृष्ठ इरेन। रेंश्ताकि मिर्शत (मनाशिक नार्छ कथर्ममञ्ज २०,००० (याका व्यव श्राप्तः पूरे শত কামান সমভিব্যাহারে লইয়া দুর্গসম্বুথে উপ-पूर्जनमाल पूर्शहरेए निर्शेष्ठ श्विष्ठ इहेरलन।

ना कतिया तम ভরতপুরের দুর্গমধ্যে সৈন্য-স- বার মান্সে তানে২ বৃহৎ২ কামান স্থাপন মাহরণ করিতে লাগিল। তাহার বোধ ছিল করিয়া দুর্জনশালকে এই বলিয়া দংবাদ পাঠাই-যে ইণ্রাজেরা ভরতপুরের দুর্গ-ভেদ করিতে লেন যে "যুদ্ধের সময় দুর্গ মধ্যে জ্রীদিগকৈ রাখা এক বার অক্ষম হইয়াছে, আর ভাহার সমূথে কর্ত্তা নহে: ২৪ ঘণ্টা কাল আমরা নিরস্ত আসিবে না, সন্ধি করিয়া তাহাকেই ব্লাজা স্থী- থাকিব, তন্মধ্যে জীদিগকে অন্যত্র প্রেরণ ক্র "। কার করিবে; অপর দল বল সমাহরণের অবকাশ- দ্র্জন ঐ পরামশ গুহণ করিলেন না; সতএব প্রদিব্দে ইংরাজ-সেনাপতি প্নরায় তজ্ঞপ নিকট দত প্রেরণ করিলেন। এতৎসময়ে জেন সংবাদ পাঠাইলেন; কিন্তু ভাছাও নিযুল হইল: রল সর্ ডেবিড্ অকুলোনি সাহেব ইংরাজদিগের অবশেয়ে ইংরাজ-দেনাপতি কামান ছুড়িতে অনুমতি প্রদান করিলেন। এই আজ্ঞানুসারে ছিলেন। তিনি দুর্জনের গুঢ়াভিপ্রায় জানিতে কএক দিন জমাগত গোলাবৃষ্ঠি হইতে লাগিল, পারিয়া কতকগুলি যোদ্ধা একত্র করত ভরতপুরে কিন্তু ভাহাতে দুর্গ-প্রাচারের কোনই হানি হইল যাত্রা করেন, কিন্তু গবরনরজেনের**ল্ আমহ**র্ভ**ুনা, অতএব কম্বর্মি**মুর্ সাছেব ইণ্রাজি ১৮২৫ সাহেব, পাছে কুদু-দল-বৈন্য-নহকারে যুদ্ধারস্ত শালের ২০ ডিসেম্বর দিবদে (নংবৎ ১৮৮১) भू एक थनन कतिर जन्मि कि कितिन । ১०—১२ मिनरनत यदशरतानान्ति शतिशुरम वे मुख्य पूर्ग-প্রাচীরের নিমু-পর্যন্ত পৌত্ছিল: তথন তথায় এক বৃহৎ গুহা প্রস্তুত করত তথ্যধ্যে বাৰুদ পুরিয়া তাহাতে অমি সংযোগ করিবামাত্র ভয়ানক ধুনি করত তথাকার কিয়দংশ প্রাচীর ভগ হইয়া গেল। এই প্রকারে ক্রমশঃ প্রাচীরের কএক স্থান ভগ্ন করত ই॰রাজি ১৮**২৬ অবে**র ১৭ই জানুয়ারি দিবলে সলৈনে কমরমিয়র সাহেব দুর্জন-भारतत टेमना महिल पूरे घन्टाकान लूमून **দস্থাম করণানন্ত**র ঐ ভগ্রস্থান দিয়া দুর্গ-প্রবেশ করিলেন; এবং তথায় দুর্জনশালকে সপরি-वादत वस्ती कतिया, श्रयारण श्रिवन कतिरलन; তথায় অদ্যাপি তাঁহারা কারাকন আহেন। ।

^{*} ब्रव्ही शिर्ट्ड हार्डि शृष्ट, द्रश्वीत मिर्ड, बलामव मिर्ड, লক্ষাণ সিৎছ এবং পূর্থা-সিৎছ। ওল্পানে রণধার এবং পৃথ্বী দিৎছ নিংদভান ছিলেন, বলদেবের পুত্র বলবন্তদিৎছ, এবৎ কাৰমণের পূজ দূ*হ*রন শাল।

রোবে রাজা করিয়া, পরে পরস্পার দুই তিন একারণ প্রভিদিন পরস্পার দাক্ষাৎ-হওয়ার কি-বার বিবাদ করিয়াছিল। ভাছাতে ইংরাজকর্ক ছুমাত্র বাধা জন্মিত না। কনপ্তান্শিয়া থিও-অম্তক্ৰাঃ৷ রাজ্যভার হইতে যুক্ত হন এবং ভোশদের মনোহর-ৰূপ-লাবনেরে মাধুট্য-দর্শনে দিবান ও ফে'জদারের হত্তে রাজ্য সমর্পিত হয়। ৬ সুখাময়-বচন-বৈদ্যান শুবনে নিভান্ত মুখা ভ্যা এক জন ই রাজ প্রতিনিধি এবং কএক দল হুইয়া আপনাকে চরিতাথা ও তাহার নিকট বিনা-ইংরাজ পদাতিকও তথায় স্থাপিত হয়। ১০১৮। মূলের জীতা করিয়া মানিলেন। সে স্বয়ং ও নংবংসরে বলবন্ত প্রাপ্তবয়ক্ষ হইয়া সদাচরণছার। নৌন্দর্য্য বিষয়ে কোন অংশে তাহাইইতে নূন है आक्रिमिगरक मञ्जूष करतन अवः जनविध नि- हिस्सम ना, विस्मय कः काशत मरनत साव नई-র্বিয়ে স্বাধীনাবসায় হৃহত্তে রাজকার্য্য সম্পন্ন তোভাবে কাপট্যহীন ছিল. একারণ বিনাবিলথে कद्विएए हिन्।

विख्डाशम् ७ कन्ध्रीम्निया।

নিবিশাদ সুথসন্তো কাৰণাৰতী যুৱতী ছিলেন; তাঁহার নিবিবাদ সুথসন্তোগের নময়ে ঐ প্রিয়ত্য ও প্রেয়-পিডা বিচাঙ্ধ-প্রমানু-সহকারে অপরিমেয় ঐশ্বর্য**্ সীর জনকেরা কেছ কুলাভিমান কেছ ধনাভি**মান সমুখ্ করিতে তংলার ছিলেন। কি কাপে অর্থ প্রকাশ করত এক অপ্রতিবিধেয় বিষম বিবাদ উপাত্তিত হউবেক কেমনে তাহার রক্ষা হইবেক, উপস্থিত করিলেন। উভয়ের যৎপরোশান্তিবৈর-কি প্রকারেট্ বা তাছার বৃদ্ধি হইবেক, ইত্যাদি ভাব প্রকটিত হইতে লাগিল। ইহাতে কন্তান্-বিষয়ে সর্দা চিন্তা ও অনুশালন করত তিনি শিয়ার পিতা মকীয় প্রতিমন্দ্রি উপরি কোপ-জ্মবিশ্লাচ বলিয়া পরিগণিত ছিলেন; ধনের প্রকাশ-পূর্বক তৎপুত্র থিওডোশস্কে নিজভবনে

এই ঘটনার 🕫 দিবস পরে ইংরাজ-সেনা- । ব্যক্তি বাস করিত। তাহার পুঞ্রের নাম- থিও-পতি বলবার বংহকে ভরতপুরের রাজ সিং-। ডোশস্। তিনি নীতিবিদ্যায় অতিশয় পণ্ডিত, হাসনে সংস্থান প্রক ভাইার মাতা রাণী অমৃ- ও সভ্যতা দয়া দাক্ষিণ্য প্রভৃতি অন্যান্য গুণ-তক্ষারাকে (ইম্রৎক্র্রর) কর্মকর্ত্ত দিবান রতে মণ্ডিত ছিলেন। যৎকালে তাঁহার বিংশতি জবালা লাল এবং ফৌজদার চুড়ামণ্ এবং বর্ষ বয়ংক্রম তথন তিনি পূর্ণ-পঞ্চদশ-বর্ষীয়া োবিদ্যরামকে রাজকার্যের নির্বাহ করিতে নি-। কনষ্টান্শিয়ার সহিত পরিচিত হন। তাঁহাদের যুক্ত করেন। এই কএক ব্যক্তি কিয়দিন অবি- বাসন্থান কেবল ক্রোশার্জনাত্র-ব্যবহিত ছিল, থিওডোশ্যকে তাহার অকৃত্রিম-প্রণয়-পাশে ्रक रुरेट रुरेल ्कन्ड উভয়ে উভয়ের सनः रुत्र कितलन। প্রতিদিন তাদৃশ প্রণয়ের নব ২ ভাব উদিত হইতে লাগিল। যাহা হউক তা-প্রার্থ-নির্দ্ধার কর্মান্ত্র এক অসাধারণ- হাদের তথাবিধ প্রতিভাত কর্মান্ত্র ও চির-विकास की व व्यत्नाक-मामाना-क्रान- क्रामिनो क्रेवात छेलयुका क्रेमा छेठित। बठाम्न পরিদালন ব্যাচাত আর কিছুডেই তাঁহায় সুখ- আসিতে বারণ করিয়া নিঞ্পায়া কনষ্টান্শিয়াকে বোৰ হটত লা। ভদ্যিগুলা সলিহিত গুলা- ভাহার মুখাবলোকন করিতে নিষেধ করিলেন। শতি সভংশজাত দান-ভাবাপার এক নিবেধ করিলেন বটে, কিন্তু নিজতনয়া কনউনিশি-

শ্বণ করিয়া কন্ষ্টান্শিয়া ভয়েতে কিছুই উত্তর ভূত হউক "। দিতে পারিলেন না, সুতরাং তাঁহাকে মৌ- ঐ দিন সন্ধ্যাকালে পত্রথানি কনষ্টানশিয়ার

(लग। यथा,

য়ার প্রাণাধিক প্রিয়তমের সহিত পুনর্বার মিলনের । ইহাই কি আমাকে জীবদশায় থাকিয়া প্রতিত आशांत चाह्य ভाবে वृक्षिण शांत्रश जिनि बक हरेन ? य नकन मही छटि, य य श्रीखरत. य महास् মানধনকুলসম্পন্ন নবযুবককে নিজতনয়ার পা- কুঞ্জমধ্যে, সামরা একত্তে কথোপকথন করিভান, ণিগুছণের পাত্র স্থির করিয়া এককালে শুভ- এক্ষণে গেই দকল দর্শন করিতে গেলে আমার বিবাহের দিনাবধারণ করিলেন, এবং অবিলম্বে ছাদয় বিদার্গ ও অনিবার্য্য-দৃংখানল-প্রভালিত উদ্যোগ ও প্রয়োজনীয় দুব্যাদি আহরণ করিয়া হইতে থাকে; তিতিক্ষায় জীবন বহনও ভার कमक्षेम् मियारक कहित्वन, "वर्म । তোমার বোধ इইডেছে। केम्बन-मियारन প্রাথনা করি শুভবিবাহকাল উপস্থিত, তিন সপ্তাহ পরে তুমি পৃথিবীতে বহুকাল পর্ম-সুথে অবস্থিতি সুপাত্তের হত্তে তোমাকে সমর্পন করিতে মনস্থ কর, এবং পিওডোশস নামা কোন ব্যক্তি এই করিয়াছি "। পিতার মুখহইতে এতাদ্শ বাক্য ভূমগুলে ছিল এ কথা তোমার স্থরণহইতে দরী-

নভাবেই থাকিতে হইল। তদর্শনে সম্ভটননে হত্তে আগতমাত্র তিনি অতিমাত্র সবরা হইয়া পিতা তাঁহাকে অশেষ প্রশংসা করিয়া কহি- তাহা উম্মোচন পূর্বক পাঠ করত তম্মজ্জানে লেন; ওভাল ২, ইছা উচিত বটে, বিবাহের জ্ঞানশূন্য-প্রায়া হইলেন, এবং অতিকটে বিভাবরী-কথা-প্রসঙ্গে কুমারীদিগের মৌনভাবে সক্ষতি- যাপন করিলেন। পর্দিন প্রাভাকালে প্রকাশ প্রদান করা বড় ভদুতা বলিতে ছইবেক", ইছা হইল যে নিশীথ-সময়ে থিওডোশস একাকী গৃহ-বলিয়া তিনি বিবাহের উদ্যোগে রহিলেন। পরিভ্যাগপূর্বক কোন স্থানে প্রস্থান করিয়া-এদিকে লোক-মূথে কন্টান্শিয়ার পাত্রান্তরের । ছেন। ক্ষণকাল-বিলম্বে তাঁহাকে অম্বেষণ করিতে দহিত বিবাহের সংবাদ থিওডোশদের শুবণ- দুই তিন জন লোক কন্টানশিয়ার পিতৃগৃছে গোচর হইবামাত্র তিনি মনে ২ যৎপরোনাত্তি আগমন করিলে পর কন্তান্শিয়ার ভয় ও ব্যাকুল হইতে লাগিলেন। তাঁহার তাৎকালিক শোকের নীমা-পরিশেষ রহিল না। পূর্বদিন থিও মনোবেদনা ভদাভিরেকে অন্যের ব্যক্ত করি- ভোশস্কে তৎপরিবারবর্গ উৎকণ্ঠাকৃতিত দে-বার সাধ্য নাই। পরে তিনি ধৈয্যাবলম্বন-পু থিয়াছিল, একণে অম্বেশকারিদিপের প্রমুখাই র্বক ক্ষণকাল তাদৃশ ভাব সম্বরণ করিয়া কন- তাদ্ধয়িণী কোন বার্তা গুনিতে না পাইয়া क्षेन्मियाक अक পত निथिया थ्यात्र कति- ''ना कानि थि उट्डामान् कि नर्दनामारे घट्टारुया-ছেন " ইহা ভাবিয়া নিতান্ত ভীত হইতে লাগি-"এত দিন তোমাকে চিন্তা করিয়া আমি লেন। কনষ্টান্শিয়া ভাবিয়া দেখিলেন যে অপার আনন্দ অনুভব করিতেছিলাম. কিন্তু "আমারই বিবাহের কথা শুনিয়া থিওডোশ্স্ এক্ষণে তোমাকে চিন্তা করিয়া আমাকে অসহ। এ পর্য্যন্ত করিলেন; আমিই তাঁহার সংসারসুখে বেদনা ও মহায়সী যাতনায় পরিপীড়িত হইতে জলাঞ্ললি দিবার মূলীভূত কারণ হইলাম ? 1 হইতেছে। এত দিনের পর তুমি অন্যের হইলে; ইহা ভাবিয়া তিনি অপার-শোক-পারাবারে

নিম্থা হইলেন, এবং উলিথিত বিবাহের প্রসঙ্গে। অভিপ্রায় জনক-সন্ধিধানে ৰাজ্ঞ, করিলে পর শাস্ত ও স্তর্ভাবে কল্পাত করিয়াছিলেন বলিয়া আপনাকে আপনি কোটি ২ ধিক্কার দিতে ও শ্বনুতাপ কৰিতে লাগিগেন। অধিকন্ত প্রস্তাবিত-भाजरक विकासितंत मः शांत्रक्षका वाध করত মনে ২ এতাদৃশ সঙ্কল্প ভির করিলেন ·· णामारक अञ्जू शनरक कनरकत क्लां**स**ाकन हरूया अलात वालनाम जीवन-यालन कतिए ह्य, ভাহাও ৰাকার, তথাপি এলপ অমহল পাপ-ময় বিবাহ করিতে আমি কথনই সমত হইব मा"। इंहा जारिया जिमि शिवृत्रयोत्श-विवाह ব্রুবের অনিজ্ প্রকাশ করিলেন। ভাছাতে ভৎপিতার অসম্ভোষ না **হ**ইয়া বর° ইউনিদ্ধি বোধ ছইল। পাকে প্রকারে থিওডোশস্কে यम्। कद्रा इहेन, अथष्ठ छेशञ्चालिक शास्त्र आशास्त्रकः कन्।-नन्त्रुनान कतित्व इहेत्त (य গ্রহত ধন বায় করিতে হইত ভাষাওরকা পা-मध्यानिमः इहा हित्रकृषाती-दुक-পतिभुद्दक

তৎপিত। সাংসারিক-ব/য়লায়বের বিলক্ষণ সম্ভা-বন! বোধ করিয়া নিডান্ত বিরুক্তি-প্রকাশ क्रितालन मा। फिनावधाइन इक्ट्रेल जिनि मह चारलाक-माधात्रवल्यान्यावन्। क्ली मन्त्रावन-বর্তা পঞ্বিংশতি-বর্ষীয়া কনস্তান্শিয়াকে আ-পনি नमভিব্যাহারে লইয়া অদূরকর্ত্তি-ধর্মমঠে গ্ৰনপূৰ্বক চিরকুমারীবুভধারিণী সম্নালিনী-দিগের দলমধ্যে প্রবেশিত করিয়া প্রভ্যাগমন क्डिक्न। जान्म वुक-পরিগুর্নের প্রথা বা नि-ध्रमान्त्रादः यांचात्रा जन्त्र्रात अवर्यमान इनेक তাহাদিগকৈ ভত্তত্য প্রধান যোগির দরিধানে ममुमाय व्याचामरनार्वमना-विकासन-शूर्वक कमा প্রার্থনা করিতে হইতা কন্টান্শিয়াও সেই রূপে श्रुप्रदेश योजना-मकन याशित निकृषे चारम्।-शास्त्र वर्गन कतिए वामना कतिएन।

अम्रिक स्व मित्र थिअरणामरमत व्यक्षम ইল, সুতরাং এমত অনুকূল ঘটনায় তাহার অস- হয়, তদিনে তিনি কন্টান্শিয়ার নিবাস-মগরে खाय প্रकारणत वियम कि? मानानी आवारक े छेलाविच इहेश बक कुश्यत व्यथार हितकू मात-तुक-ব্নার অসমতি জানাইয়া আপনার নিজেষতা- ধারি সম্যাসির মঠে অধিষ্ঠান-পূর্বক তলতা জ্ঞাপনপূর্ক নিরস্ত করিলেন। সে তো প্রাতিবদ্ধ যোগিগণের সনিধানে আপনার নাম ধাম গো-दिवादार्थी नरह रकतन धन-वार्ड्ड बोकाइ था- शरन द्राधिवाद छन्। श्रार्थना कदिया, य पियम ইয়াছিল, বিনা আপোৰতেই কান্ত হইল। কন- 'তাঁছার সপতেরুর বহিত কনষ্টান্শিয়ার বিবাহ প্রনিম্পর্ ভারিরা দেখিলেন যে " ধর্মানুষ্ঠান হইবেক **গুনিয়াছিলেন তদিবলে প্রস্তাবিত** এ পরমার্থাত দু জি রন ব্যতিরেকে আর কিছুতেই বিবাহ **সম্পন্ন হইয়াছে অনুভব করিয়া, মনে ২** া যাতন। লাভ ভট্টবার নহে, অভএব আমাকে : প্রতিজ্ঞা **করিলেন " আর আমি কন্টান্শিয়ার** জগদাশ্বরের খালাধনায় মনোনিবেশ করিতে। কোন কথাও কথন মুখে আনিব না। " অনস্তর কইল 🔧 মনে ২ এই যুক্তি ছির করিয়াও তাঁছার । থিও**ডোশন্নিজোপার্কিত-প্রগাঢ়-বিদ্যার প্রভাবে** ্ষ্ট শোকাংশ্য সম্বর্ণ করিতে কএক বৎসর যাবজ্ঞীব**ন ধর্মানুষ্ঠান-করণে মর্বভোভাবে মনো**-লাগিয়াছিল। পারে ভিনি রোমায় ধর্মমঠে নিবেশ-করণার্থ সম্বা**লধর্ম অবলম্বন করিলেন**। उँश्वित अक अमाधात्व कम्या क्रिय, य क्रिकामू भ्या-अवास्त्रित वनिष्ठ-कोवन-याशन क्रित्रात नक्षम अनामाक्रिकगर्वत क्रिक्क विका

काम । हिट्डानिएमचब्रक्तन वीकं दनम क्रिया তাহা অবাধে ও অবলীলাক্রমে অঙ্কুরি চ, পল্লবিভ, कूमुमिछ, कनिछ कतिएछ शातिएछम; विरमयछः তাঁহার সভাবের সাধৃতা ও ওজতা হংপরোনাতি ছিল। ঐ সকল অসাধারণ গুণ্ডাম-প্রভাবে কতিপয় বৎসরমধ্যে তিনি বিজাতীয की खिमान इरेशा हिएलन। मठा चिका वि अमाध क ব্যতীত তাঁহার নাম ধাম কল অন্য কেহ অবগত ছিল না, তথাপি কমন্তানমিয়া সেই সহত্র বি-খ্যাত যোগিবরের সল্লিধানে আত্মনের বেদনা नकल वाक कहिएक ध्रवृक्त रहेरनमः। **अर**करण যোগিবর পূর্বতন থিওজোশন নাম গোপন করিয়া ক্রান্ত্রিস নাম গুলা করিয়াছিলেন, ভা-হাতে আবার দীঘ্যক্র প্রস্তুতি অগুরু গো-গিবেশে সুশোভিত, সুচরাং তাঁহার তাদুশ-ভাবে পূর্বের বৈষ্যিক ভাব উপলব্ধ হইবার বিষয় কি? ফর হঃ তৎকালীন তাহাকে চিনিবার কোন সন্থাবনাই ছিল না।

কালে মঠে বিদয়া আছেন, এমন সময়ে কন
ত্তান্ত্ৰিল তাত্ত্ব সনিধানে উপনীতা ও রীতিনত

ভূমিপাতিত-জাল হইয়া আপন হৃদয়ের অবস্থা

নকল প্রকটিত করিতে লাগিলেন। প্রথমতঃ স্বীয়

পরিশুদ্ধ নিধানা জাবন বৃত্তান্ত আদ্যোপান্ত বর্ণন

করিয়া আবিরত-বিগলিত-জ্লখারাক্ললোচনে এ

যোগিবর যে উপাখ্যানের স্বয়ং বিষয় ছিলেন

আদৌ তাত্তাই বর্ণন করিতে প্রবৃত্ত হইয়া কহিল
লেন, "আমাকে কোন মহোদয় নির্ভিশয় প্রীতি

করিতেন, বোধ হয় আমারি অপরাথে তিনি

করাল কালগুনে পতিত হইয়া থাকিবেন। তিনি

গৃহস্বাবস্থায় আমার হৃদয়ের অমুল্য নিধি ছিলন

লেন, এক্ষণেও ভাঁহাকে স্বর্ণ করিয়া আমি

व्यमहर्नाम् वित्रहानत्व प्रथ ও বিচেত্ৰপুস **रुहेर इति : जीरात अजार कामा**द कामान यांजना मकल क्वित महीखर्यामी क्विमीक्वि **बारिनन्य केन्स्रीमि कहिएक २ जान्तर्वाच्या बार्** करा-क्षेनिश्यात कंशेयस्त्राध इरेश उठिन। তিনি অঅপূর্ণনয়নে যোগির প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া দেখিলেল দিনিও তাপিত হইয়া **নম**।ক্-अकारत नाष्ट्रिष्णि**न्छ कतिएक भारतिएक्स मा, क्वतन** यन २ मीर्यनिश्वान-अतिकाशन-शूर्वक शम्श्रम 📽 অপরিষ্কৃটকরে এক ২ বার তাহাকে মাখ্যা-য়িকা নমাপন করিতে আজ্ঞা দিতেছেন: কান-क्ष्मिया श्रमाद्रव मस्य याचना दाख्न कतिला পর যোগিবর শোকে নিতান্ত অধীর ও কাতর भरेशा উटेक**्यस्य स्तापन कतिरः नागित्नन**। कन्छे मिनिया जाविरलन " मामावर म्ध्य म्ध्यिक হট্য়া ও মংক্রপাপের আভিশ্য্য অন্তব করি-য়া ইনি এইবাপ গোদন করিতৈছেন"; পরে তিনি नगविकिष्डियानिका श्रकाम कत्र बक्छ पुक्-ভলোচন ও থিওডোশদের নাম-অরণ-ফরণ-মা-नत्य (याणिवतमञ्जदोत्न वित्रक्यातीयु कथात्व कति-বার বাসনা বিজ্ঞাপন করিলেন। ইহাতে যো-গিপ্সবর প্রযত্নহকারে রোদন সম্বরণ করিয়া अक्रवात जामत्म नमामीन हहेत्वन, किन्नु **जाहा**ड প্রতি অমন্যজ্বয়া কন্টান্নিয়ার অচলা প্রাতির প্রবলতা-বশতঃ এতাদৃশ অপার যাতনা ভোগ দর্শন করিয়া ও তন্মুখহইতে স্বকীয় পুরাতন নাম-শুবণ করিয়া নম্নবারিতে পুনর্বার তাঁছার বক্ষঃছল প্রাবিত হইতে লাগিল। অধিক বাক্য-প্রয়োগের मामया हिन भा. उथानि-विश्वर्खामञ् भाक मञ्जू -श्वमा कन्डान्भिशाक श्राताध-मानहस्य अक र বার আজা করিতে লাগিলেন, "শেক সম্বর্শ কর, আর চিন্তিত হইও না, তোখার ভয় কি 🏞

জগদীশ্ব-সমাপে তোমার সমস্ত দোষ মা-জিত চইতে: ভূমি নত অনুভাপিত **চইতেছ** ৰাজ্যিক ভূষ কোনা ন্ত, ইছাতে এত অধিক শোকাত ক্টালা বিষয় কিট্ম ইত্যাদি লানা-প্रकात প্রবেষকাল্যের প্রয়োগদারা যোগিবর ভাবে কন্ত্ৰিয়াও কিঞ্চিত বৈষ্য ক্ৰলম্বন করিলেন। তথ্য যোগিবর রীতিমত তাঁছার দোহ কলেন করিলেন, এবং কনষ্টাননিয়া যা-হাতে চিন্দ্ৰাৱীৰত-প্ৰতিগালনে থতুৰতী হয়েন ভিছিনতে ভালাকে সাহস ও সুমতি প্রদান করিবার জন্য পরদিবস প্রাভঃকালে পুন-র্বার আবিটে আদেশ করিলেন। কনপ্রান্শিয়া তদিবস তথাচইতে প্রস্তান করিয়া প্রদিন প্রাতংগালে পুনরার ভাষার মঠে আমিয়া উপ ष्ठिত ब्हेरनन, এবং যোগিবর**ে ছীয় প্রা**থন: বিজ্ঞাপন করিলেন। যোগিভাবাপন্ন থিওডোশন্ বিখ্যাসভূত্তে ও তবৃজ্ঞানে আপনার ক্ষয় পরিপুণ করিয়া প্রণয়িলা যে পথাবলম্বিনা হইতে शामना कविद्वारक्षन, जाशादेक उरमध्याक्ति জারিতে মথান ২০ উৎসাহ-প্রদানে ত্রাট করি লেল না এবং যে **সকল অনুলাচ শক্ষায় তাঁহা**র জন্ম আৰুত ছিল, নে ৰক**ল তাঁহাহ্ইতে দূর** লাক্তে উপদেশ দিয়া সর্বশেষে তাঁহাকে কহি-লেম, প্রামি ভোমার নিকট প্রতিশ্রুত রহি-লাল, ভূমি চিঃক্মার্ডি-অবলয়ন পূর্বক নি-भ्रमाणनारह प्रमापहरकाल व्ययन्थ्रेम लाहिनाइ করি এ আমি ভোমাকে নর্থে ২ উপদেশ প্র-मान विविधा अकाम्य मस्याजवरणेत निव्यम ध्र-ভাবে লেমার নহিত আমার আর নাজাৎ হওয়া णमञ्चव ध्रीतात कामाता मुक्सलाप्परम नेश्वरतत ্নিকট প্রাথন ও ভূয়োভুয়ঃ পত্রদারা ভোষাকে

সদ্পদেশ প্রদান করিতে আমি কিঞ্চিন্মান্তও কুটি করিব না। একনে গমন কর, যে সনাতন চিভপ্রসাদকর ধর্মময় প্রথের পথিক হউলে তাহাতে প্রফল্লিড়েভ গমন করিতে থাক, অনতিবিলপ্তে এমন অপূর্বশান্তি ও আনন্দ লাভ করিবে, যে এট অসার সংসার মধ্যে কুল্রাণি তাহা
প্রাপ্ত হওবা দুর্ঘটি''। যোগিবরের এবস্তুত উপদেশবাক্ত শৃবনে কনপ্রান্শিয়া মনে ২ এমনি
প্রসাহ হউলেন, যে পরদিনই সেই বুভাবলম্বন
না করিয়া কালাভিপাত করা তাঁহার পজে আদবিন বোধ চইলা। ইলাতে ভিনি ভদ্বিস বুভগুড়দ
ও তদ্পযোগি ভাহার ইতিকর্ত্বভান-কলাপ সমাবন-প্রংসর একান্থে ইপ্রিপ্তা আছেন, এমত
মধ্যে ঐ মঠাধিকালি তাগ্রি হাত্ত এক পত্রিকা
আনিয়া প্রদান করিল। ভাগার গাত্ত এই,

"তুমি যে পরম-পথ্যবল্পন পূর্বক অপরি-সীম সুথ ও শান্তিৰূপ ফল হাত করিলে, তা-हात श्रथम कलश्रक्ष (ठामारक अटे दिन्हालन করা যাইতেছে, যে তোমার থিওতোশ্য অদ্যা-পি এই পৃথিবীমগুলে জীবিত जारहम, यागात লোকান্তর প্রাপ্তি ছইয়াছে বোব করিয়া তুমি অপার শোস-পারাবারে নিম্ম চট্যাড় তিনি अथन भर्गा छ । कालगारनत वदन इस नाई। যে যোগির-নিকটে আসিয়া ত্মি আয়মনো (दमना **मकल व्यक्त क्रिया** शियां है, शिनिहे (डॉ-মার শোকের নিদানকাপী খিওজোশন্। বিবাত। व्यामापिटशत श्रमश मकल रहेट पिटलन मा, কিন্তু তাহা বিকল হইয়াও কোটি ২ ভণে সুখ-कत इड्डा जिनि आमानिशिष्ट्र च २ डेव्हानूनाती कतिया मृष्टि करतन नाहे वर्ते, किन्न जामापिरान भद्रम-भूक्याध-नार्ड्य উभाष्र कतिहा मिलारी **এशन मत्न कह यम त्रीमात्र थिएएणामम् ग्री**-

বিতাবস্থায় নাই, জুান্সিজ যোগাই তোমার শুভাকাঞ্ফী হইয়া অহরহঃ ইপারের নিকট প্রা-র্থনা করিভেছেন।"

কনস্তান্শিয়া উপস্থিত-পত্রের অক্ষর ও মর্মের সহিত কান্সিজ্যোগির উপদেশাদি-বাকের উপন/াস-কালান স্বর ও শোকাবিছার প্রভৃতির ঐক্য করিয়া ক্ষণকাল ভাবিতে ২ নিশ্চরবাণে জানিতে পারিলেন, যে এই পত্র ফুান্সিজ্যো-পির স্বহস্ত লিখিত, এবং তিনিই আমার হৃদয়-সর্ব থিওডে;শ্স, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। এতাদৃশ নিশ্চিত-জানপ্রভাবে মথানন- : প্রবাহা কনষ্টান্শিয়া বাস্পাকুললোচনে কহিয়া ; উঠিলেন, "আর আমার চিন্তার বিষয় ফি? ২, আমার থিওডোশন্তো জাবিত আছেন, এখন भरममुर्थ जोवनयाजा-निर्दाष्ट-शृदध्मत ध्रामान्ड-চিত্তে পরলোক-যাতা করিতে সমর্থ হইব, ভয় नाइ "। এই कारण চরিতাথা হইয়া কনপ্রানশিয়া সন্নাদিনাভাবে भटठ দশ-বৎসর-কাল অভিবাহিত করেন: অনন্তর দৈবগত্যা সেই স্থানে এক মহামারী-ভয় উপস্থিত হয়, তাহাতে কনপ্রান্শিয়া থিওডোশস্ উভয়েই সাঙ্ঘাতিক हिर्गिकां छ ब्हेंग्रा श्रीयः वक नगर्यहे कत्नवत् পারত্যাগ করেন। কন্টান্শিয়ার বাসনানুসারে তথায় উভয়ের শব একত্রেই সমাহিত হয়!

কনষ্টান্শিয়ার নিকট থিওডোশসের প্রেরিড উক্ত পাত্র ও দময়ান্তরের প্রেরিড অন্যান্য পাত্র সকল কনষ্টানশিয়ার মঠে অদ্যাপি সংরক্ষিত রহিয়াছে। তত্ত্বত কুমার কুমারীগণের মনে যান্ত্র-গুণ ও সুমতি উত্তেজ করিয়া দিবার বাসনায় মধ্যেৎ সে সকল গাত্রাদি ভাছাদের সমীপে পঠিত ছইয়া থাকে।

ক্ষে, মো, ভ,

উদ্ভিজ্নের চৈত্রণ উষ্ণতা পুত্তি আশ্চর্য ধর্ম।

£\$\$\$£₹\$\$\$ फिड्ड स्वत-अमार्थ-मध्या गवा, अहे প্রযুক্ত অনেকের বিশ্বাস আছে যে ্ৰি তাহাতে চেডনার সম্ভামনাও নাই; ्रेड्रेस्ट्रेस्ट्रेस्ट्रे किन्न डेडिएबन्डामिरगत अनुमकात्म নে বিশ্বাদের অলীকতা প্রকাশ হইয়াছে। **জগ**ৎ-ফতার বননানীত কৌশলে বৃক্ত সকল প্রায়ঃ বুদ্ধি-मान् शृक्रस्यत नगाय ज्याशन देशेनिष्ठे जनुसृह করিয়া **মন্দের প**রিবজ্জনপূর্বক **মন্ধ্**লের গৃহ্ণ করিয়া থাকে। তাহাদিগের প্রধান মঙ্গলাস্পদ রুস এবং আলোক, সুতরাং তথ্যসভাকেই ভাছাদের চৈ-তন্য ব্যক্ত হয় কোন বৃক্ত্বের এক পার্মে সার-খীন মৃত্তিকা ও অপর পার্ম্বে উত্তম মৃত্তিকা থাকিলে, তাহার শিকড্-সকল সারহান-পার্শ-ণরিত্যাগ-পূর্বক সসার-স্থান্দিগেই গমন করে। কেহ ২ কহিতে পারেন যে সমার স্থানত দিক-ড়ের শীঘু বৃদ্ধি হয়, অসার তানে তাদৃশ বৃদ্ধি न। इत्राटक ठ्वका निक्छ नगात स्निमित्र গিয়াছে, বোধ হয়, বস্তুত তাহা যথার্থ নহে; किन्न गावधारम के अञ्चाविष्ठ वृत्कत मृत्र निहीक्क করিলে ব্যক্ত হয়, অসায়-পাম্থের সিকড় বক্ত ছইয়। দুসার-পার্মাভিমুখে গমন করে; শিকড়ের हेष्टानिष्टे छान ना धाकित्व कि श्रकाद्ध के वक হওন সম্ভবে? যে কোন ব্লেন্ত্র শাখা অধােন্থ করিয়া রাখিলে তাহার অগ্রভাগ প্নরায় উর্দুশ্ र्थ, এবং যে স্থান ৰুদ্ধ থাকিবাতে বক্ত হুইতে পারে না, তৎস্থানের পত্র সকল ঘূর্ণায়মান হইয়া তাহাদের অধঃপৃষ্ঠ অধোদিকে এবং উদ্ধপৃষ্ঠ উদ্ধে আনয়ন করে; অপর বাধাপ্রযুক্ত তৎকর্ম निष न। रहेरन ठाहारमद्र, वृद्ध नकन शाकान¹



इश्। लटाइ व्याकिष्ठ-नकन या **फिरण हा**स्रा तिहे क्टन याहा य वटा प्राप्त होनू भाष टाकाइ कानायं श्रीकाशिक्षयं; याशाता देवकाटन होने প্রিমাভিমুখ হইয়াছে, ভাহাতে পশ্চিমে রৌদু অফুর উদাভিমুখ হয়।

পুষ্প চইতে পারে এমন ফানে আনিলে ছরায় ভাগার সমস্ত আঁকড়ি পূর্বাভিমুথ হইয়া যায়। গৃহমধ্যে কৃদু বৃক্ষ রাখিলে তাহার অগুভাগ পায় চাঙার আকড়ি পূর্বাভিমুথ হয়। অপর যে গৃহের প্রাক্ষদিলে অগুসর হয়। বীজমাজেরই গতার পাকড়ি-সকল প্রাতে ভৌদু প্রাপ্ত হইয়া উল্টা রোপন করিলে তাহার মূল অধোমুথ এবং

্ৰভাৰে উভিজ্ঞ-বিশেষে গতি শক্তি ও চে-खना मामाध्यकारक राज्य हेत्र । वाख्यका वाह अहे শক্তি অতি প্রত্যক। তাহা স্পর্শ করিবামার जाहात शब-नक्न मकूठि**छ हत्र, ब**वर भाषा शब नकत्वहे मण हहेया शास्त्र। वनहासान उक्क এই প্রকার, কিন্তু তাহাকে স্পার্শ করিবার আবশ্যক নাই। দিবাভাগে মেঘাচ্ছন না হইলে তাহার পত · किन वाह्य काव्रव वर्षी उठानि उहरे एउ पारकः এবং কথন ২ ঘূর্ণায়মানও হয়। অপর কারো-লাইনা-দেশস্ ডায়োনিয়া মিউনিপুলা অর্থাৎ মক্ষিপাশ নামক ভকবিশেষেও এই শক্তিম্বয় অতি স্পষ্টৰূপে দৃষ্ট হয়। এ তৰুর পত্রদল **স**-্ কল সন্ধিদারা সংযোজিত এবং প্রত্যেক দলো-পরি এক ২ কণ্টক-শূেণী আছে; এবং ঐ পত্র- লালুকলতার মূলে কিঞ্চিৎ মহিকেণ মিশ্রিত দিগের উদ্বৃত্তি এক প্রকার মিট রস জন্মাইবা-প্রযুক্ত ভলোভে মঞ্চিকারা তৎস্থানে আইনে; উথিত হুইয়া মক্ষিকাকে তৎক্ষণাৎ চাপিয়া বিনাশ করে। দলমধ্যে তৃণাদি নিকেপ করিলেও ঐ গতি প্রহাক হয়।

কতকণ্ণি নামুদ্ধিক শৈবাল আছে, তাহার শৈবালকে অনুবীক্ষণ যন্ত্ৰদারা দেখিলে প্রত্যক হয়, যে যে পাত্রে তাহা রাথা যায় তাহার এক-স্থান-পরিত্যাগ-পূর্বক তাহ: অন্যত্র গমন করে। স্থাবর পদাথের এই গতি-শক্তি অতি আশ্চর্য্য-खनक : शास्तक शूर्टणार ७७ धरे शिक्शिक मृष्टे इहे-য়া পাকে: ব্যুমকা পুচ্পের এবং ফণিমনসা-জাতীয় পুষ্পের গভকেশর ঘূর্ণিত হইয়া ক্রমে ২ সকল

পর অনেক বৃক্ষ কাছে বাছার পতা রজনীযোগে मुक्तिक इसः अवस्थितिक विक्तिक इसः। व्यानक भावत करे विश्व करक वृद्धक विद्या विद्या वर्णमा करतमा क्वान १ शूलाव अहे अकारत ता-खिटच मूनिङ **ও निवदन विक्तिङ रहेग्न**े थाटक।

বৃক্ষের চৈতন্য আছে, ইছা পঞ্জি-মহাশ-(युद्र) जात्नरक विश्वाम करतन ना, এवर करहन যে পত্রপুষ্পাদির গতির আদিকারণ চৈতন্য নহে: পরস্ত ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয় य मन्य। व्यक्षिक वापि मामक मुदा छक्तन कतिरन य श्रकारत टेम्चना भूना हरा, बदः व्यधिक थाईरल महिया यायः; द्कं ७ (मई প্রকারে মাদফ-দুব্যের ক্রম ভোগ করিয়া থাকে। यन निर्दा, वे नजा जाकंग होकान मर्था (इन्हा-শ্না হয়, এবং তাহার পত্র নকল মৃদিত কিন্তু এই নিও রন স্পান করিলেই পাত্রদ্বাদ্ধর ইয়া, তংপারে বছক্কণ পার্যান্ত রৌদুর্গির উদ্ভাপ ্পাইলেও তাহার পত্র আর বিক্ষিত হয় না ; कारात, पूरे का दिया क्यां पर के जनराम করিলে ঐ জতা মরিয়া যায়। কোরোফরম্ নামক এক প্রকার ঔষ্ধি আছে, তাহার ঘানে সমন্তদেক ত্রিত হটয়া শাকে। অপর কতকগুলি : মনুষ্য অচৈতন্য হয়; লাজুকলতায় ভাহার বাষ্ণা স্পানা করিলে ঐ লতাও অচেতন হয়, অধিকস্ক উক্ত লতার এক শাখার নিকট ঐ দুবের বালা আনিলে ভাষা তৎক্ষণাৎ নৃপ্ত হয়, অপর नकत भाषा তেজোবন্ত এবং জাগুং থাকে। वा-खुक ज़बाद किकिए (Don) मा थाकिटन **ब**हे यहेना कि श्रकात र छति।

অপর, পণ্ডর দেহে যে প্রকার উষণ্ডা অনুভূত त्रकारकमात्र म्मामं करते। (पुकिया हैनाशिका मा- इस, त्रक उज्जाश व्यन्षु इस। त्रामिक, श्वन्त्र মক এক প্রকার মার্কিনদেশীয় আগাছার পত্র হণ্টর্ প্রভৃতি প্রসিদ্ধ পণ্ডিভের। পরীক্ষা করিয়া স্পূর্ন করিলে তৎক্ষণাৎ তাহা মুদ্ভি হয়। অ-। দেখিয়াছেন, যে শীতকালে চতুর্দিগস্থ বাস্-

হইতে বৃক্ষমাজেরই উঞ্জা জনেক অধিক, এবং কচু পুষ্পো গুীয়াকালের অপরাক্তে আলোক দে-शुोग्रकारल नामुन प्रथन जारलकाय जाला रया। वियाद्या। जलत, (वुजिलारम्भीय मनमारम्वीय বৃক্ষের আয়ত্তন ও মূলের দীর্ঘতান্সারে ঐ ইউফর্বিয়া কক্ষোরিয়া নামক বৃক্ষের রস সন্ধার উষ্ণভার ভারতমা তইয়া থাকে। বৃক্ষ পুলিত- ∮ সময় উজ্জ্ব বোধ হয়। এতদেশে একপ্রকার ছওন-সমতে এই উফডার বিশেষ বৃদ্ধি হয়। একপাত্রিক বৃক্ষ আছে, তাহার মৃত্তিকাখঃস্থ কাণ্ড काम र नगरम अप्य-निकमिल-राख्य-कारन पृद्धाः । कारन मिल्ल कितिरन है ज्यारनाकशूर्व हरेशा छैटे; উক্ততা এত বিদ্ধিত হয় যে বায়ুর উক্ততাপেকায় পরে জল শুক্ত হয়লেই তাহা পূর্ববন রশ্মি-বি-তাকার উষ্ণতা তাপমান-যন্ত্রের ২০ আংশ অধিক হিন হুইয়া যায়। তানেকে এই আজুত ঘটনার নিক্পিত হুইয়াছে।

আছে, যদারা ভাষা রজনীযোগে প্রদীপ বোধ : হয় নাই; সুভরাং অধুন, কেবল এইপদার্থ জ্ঞাপন एए। पुरुष्त नामा अक छन पुरुषकर्ता लायन कितिहाई अहे প্रशास्त्र छेणमः हात कविए इहेन। থে অক্সেলিয়া-দ্বীপে স্থান-নদীর তটে তিনি এক প্রকার ছএক (বহের ছাতা) দেখিয়াছিলেন, তাহ। রাত্রিতে এমত উজ্জ্ল হয় যে তৎ-। তি নিগত হয়৷ ডেুন্ডন্নগরে কয়লার আ- অদ্যাপি মিদ্ধ করিতে পারি নাই, এবং দ্ধায় করে ডিলাইন সাহেব কোন ছএক দেখিয়া- সাহা কলিচার্থ করিবার উপায়ও দেখি না; খনত উডিজ্জাবত। লিনিয়স্ নাহেবের পুঞ্ **ম**াচুল-ন্যায়ে ভাহার বিজ্ঞাপন বরাই বিহিত িথিয়াভেন যে নপ্তরশিয়ম পূজা ও কয়েক প্র- ব্যেথে এই প্রস্তাবে নূতন-গুন্তের নাদ্মাত্র প্রক-কার সেদ। পুসা সভাগার সময়ে উজ্জ্ব লোধ টিভা করিবাম। ভবিষ্যতে অবকাশান্সারে ইছার क्षा भाग मार्क्सवतः नृधामुकी-शूरणा के इन- क्यान र शुरुद्धत खनको इन इटेंड शास्त्र। थहः-भूरण कदानिम शामास अवः अक्प्रकाहः

े छ होते गाम वाकार्य करा सामान्य हो।

কারণানুসন্ধানে নিবুজি হইয়া নানা মত প্রচার কোন ২ উডিজের পার এক আশ্চন্য ধর্ম করিয়াছেন, কিন্তু অদ্যাপি তাহার কিছু বির

নূতন-পুস্থের সমালোচন।

নাহায়ে: অনায়ানে তিনি পুস্তক পাঠ করি- ্তি হার বহুদিবসাধি মানস করিতেছি তেন। দক্ষিণ-মুমরিকার বেজাল-দেশে এক প্র- ্তি বি মধ্যে ২ নূচন-পুরের মহিমা-কার ছ্এক 💌 আছে, ভাহাইইতে খদ্যেতি- 🔆 📿 ্র বিষয়ক প্রস্তাব বিবিধাণে প্রকটিত কার আলোকের ন্যায় ঈষদ হতিদ্বর্ণের জোন করিব, কিন্তু অবকাশাভাব-প্রাযুক্ত দে কংগনা ছেন, তালাচইতেও আলোক নিগতি হয়। বি- আছিএব নূতন-গুস্তের গুণ-কার্তন-পরিবর্তে অম্ব-

> ১। মৃতন-গুম্ব-মধ্যে প্রীযুক্ত বাবু শ্যামাচরণ-मध्यात वाक्रमा वज्यकत्र नर्वेट्याम। श्रीकृष्ठ-ভাষায় ভাদৃশ সূচাক ব্যাকরণ আর নাই। তং-পাঠ-ভিন্ন বজভাষার যথাথ মুর্ম কোনমতে (बाध इहेटल लाइत मा। चल्बन चामता चन्-

[্]যত লক্ষণ সভাল কে মিট্টে সূত্ৰ। পাড়জ্বৰাম মেট মিয়ে পঞ্চ রতম রত্মের, ইয়া, আমে এই সেবার্থম **প্রতিন্যান এই প্রকারে**

রোধ করি, যে সকল মহাশয়েরা सদেশ-ভাষার অনুরাগ করেন তাঁহারা জরায় ঐ গুছের আলো-**हना** ककन।

২। বর্জমানাধিপতি মহারাজের অনুমত্র-नूनाति वान्तीकी बामायर व वक मृजन चनुवार প্রকটিত হইয়াছে। অনুবাদকদিণের কণ্পনা ছিল যে ক্রিবাস-কৃত রামায়ণ হইতে পরিওজ ভাষায় মহাকবি বাল্মাকের শ্বিতীয় কাব্য ভা-যাস্তরিত করিবেন; কিন্তু কেবল-সংস্তৃত্যম্বের প্রয়োগেই উত্তম. কবিতা জন্মে না; কৃত্তিবার্না রামায়ণের রস অভিনব গুল্ভে সুদ্রাহ্ প্রাপ্য।

ত। পতিবুভোপাখ্যান। এই গুন্ত পূর্ণচন্দ্রো-**एक्-यान्त्र सृष्ट्रिक इटेशाएह: किन्तु व्यासता व्यम्।** পি তাহা পাঠ করি নাই।

৪। খ্রী লামচন্দ্রে জীবন চরিত্র। ভবানীপুর-নিবাদী খ্রীযুক্ত রাখাল দাস হালদার মহাশয় **ब**हे कुनु भुद्ध इहना कविशास्त्रन ।

৫। মনু সংহিতার প্রথম দুই অধ্যায়। গুল্তে মন্ত মূল কুলুক ভট্তক্ত টাকা, আনন্দ-চন্দু-বেদান্তবাগীশ-কৃত বাঙ্গালা অনুবাদ, এব <u>जानम मारका कुठ इंश्वां जिल्लाम बकरत</u> মৃদ্রিক কটিয়াছে। দূংথের বিষয় সম্পাদকের: অনুবাদ-দ্বয় উত্তমক্রণে বংশোধন করিতে যতু करतन नाहै। जान्न नारहरवत जन्तर्ह प्रथम মব্য বাগুর ন্যায় ভকিয়া ছেলান দিয়া খ্যানে ব্যাহাছেন, লম্পাদকেরা তাঁহাকে ভদবস্থাহইতে यवश्रु कित्रल श्रमभ्मनीय इहेक *।

৩। মানিক পত্রিকা। এতদেশীয় শুভানুধ্যায়ী ব্যক্তিষয় হিন্দু-ধনিতাদিগের উপদেশার্থে উক্তা-খ্যায় এক থানি কুদুপত্ৰ-প্ৰকাশে বৃত হই-

शास्त्र। महत्य छेखम, এव॰ ভत्ना कृति महत्व হইবেক। পত্তের লিপি-প্রণালার আদক্ষ বজন্ নিম্বে কতিপয় পঙ্জি উদ্ধৃত হইল।

"মদের আদ্রুত শক্তি' যে ব্যক্তি পান করে বে पूर्यक जन वरन ७ जनक पृथ वरन। कनिका-ভার কোন বুনিয়াদি মাভালের বাটীতে ভাঁছার চাকর প্রাণুব করিতেছিল, মাতাল বাবুর মতকে পড়িলে তিনি জিজ্ঞাসা করিলেন, "আমার মা-থায় কি পড়িনা"? পরে শুনিলেন-প্রশাব। তথন উত্তর করিলেন, "তবে ভাল: আমি বোধ করিয়াছিলাম জল "।

 ক্থিত আছে যে জন্য এক বৃনিয়াদি মা-তাল বাবু মদে মত হইয়া দশগার দিবস अভिया-निमर्खन-कालीन मोकाइइएड (दापन করিয়া বলিলেন, - শব্দরে মা চল্লেন রে – মার नस्य (क्ष कि याति मा? व्यामहा नकत्व वास. অরে বেটা ঢাকি ভূই যা" এই বলিয়া ঢাকিকে ধাকা দিয়া জ**লে** কেলিয়া দিলেন।

"আর ভনা আছে যে কোন মাতাল ভোজন করিতে বনিয়াছিলেন, তাঁহার পান্ধে জলের ঘটা हिन ना, करेंगे विख्ना विविधाहिन। याजान करनत घटा मरन कतिया विज्ञानरक धितरनन। বিড়াল মেয় ২ করিতে আরম্ভ করিল। মাতাল विनित्तन, भन्धाना करनत यही जुहै स्म ७ २ कतिशा শ্রোকে যোগি প্রধান ভগবান মনু অনায়ানে । কি বীচবি, ভোকে অগ্রে থাবুই । পরে বিড়া-লকে মুশের কাচে তুলিলে বিড়াল আঁচড় কা-মড় ক্রিয়া পলারন করিল।

> "স্থার এক ভক্ত-মাতালের কথা শুনা আছে, তাহাও বল। याइँटिए । अ माजात्नद्र नाम-निः इ। আপন বাটাতে পূজ। হইবে, ষণ্ঠার রাত্রে উঠি-या প্रতিমার নিকট যাইয়া কোণেতে পরিপূর্ণ रहेरान ; निःहरक विलालन, " श्रात (विक्रिक्ट,

^{*} Manu sat reglined &c. Verse L.

जुहाँ मकत नि॰ इ. आमि आमत नि॰ इ, जुहे विणे মার পদত্তে কেন্দ্র এই বলিয়া সিংহকে ভা-ক্লিয়া আপনি চাদৰ মুডি দিয়া সিংছ হই-लान । हार कारत शुद्धाकिक जानिया मिश- अवः मन यन जानवानता जानिए थारक। লেল লাগাঁর । ই লিংহ হুইয়া রহিয়াছেন। তিনি कार विकास र श्वितिम, ''महासम् अथारिन किन । विष्ठ याकार है कि गर्नभाग ना इन्नेट छाइ? जारन-মহাশ্র ৬পাবে কেন ?" কর্ত্তার নেসা ছুটিয়াছিল, কে সাৰ্ডইংজ ভাৱেছ ২ **উঠিয়া অধ্যেদ্থে বৈ**- 🔻 চক্ষাবার গিলা যসিলেন। গুরু প্রোছিত সক-तः विताय वाशित्वयः "कर्डा वष्ट **उक्त, ना श्र**व (mag. शिव्दातः का । "

विनाह-वियम् क अहामभीम कुनुशा।

প্ৰতি প্ৰাৰ

ি কৈব বুলিবৃথি মাজিত না হওয়াতে 🔑 💢 🧓 এখানে যে কডপ্রকার কৃৎবিত কর্ম প্রচলিত চইয়া এহিয়াছে—কভ কৃকর্ম যে কত মতে . ্ৰেমাকে দুক্ৰাপেয় করিজ রাথিয়াছে—ভাহা আরু বাল্যা শেষ করা যায় না! যে সমস্ত উপস্থিত হয়। প্রায়া এদেশীয় অনেককে যে অন্তর্ভাষে দেশের নামকে একগালে ভুগ্ন করি-২০ নেয়, এদেশে তাছার কোন কর্ম আরি অন-প্রিক কটণড় অপেকা নাঠ, এড়া বি বাণিজ্য, কি इफ्किन्य, कि गुरुकार्य), श्राम्बि (य भक्त दि-श्रद (१८०४ सक्तायकित महोचन चार्छ, ১৭ প্রতিবন্ধকে ভাষার একটি বিষয়ও পরিশুদ্ধ-ৰুকে: সম্পান্ন হউৰাই উপায় নাই। যাতার निवय यथन आत्नाठना करायाम जाहारहे ৰিনিত্ত তথান অসম্ভৱ কা**কেপ করিছে হ**য়; চিভাতে আকুল চইয়া একেনারে ছতাশ হই-ে ছয়, এবং বিশাদবাগরে মথা ভইয়া দীর্ঘ-

নিশান ত্যাগ করিতে হয়। এদেশের এক উদ্বাহ-भारतंत कथा मान इकेटनके कटनावत व्यक्तिकार হইয়া উটে, শোণিত শুদ্ধ হইতে আরম্ভ করে, এদেশে বা। লাবস্থায় বিবাহ इंहेनात शेकि अइ-াকে বিবাহ করিয়াও যাযভ্যাবন উদাধ-সুখে विकिञ थाकिश महाकर्ष्ट दिन्यालन कतिरहाह। 'এদেশে দম্পতির মধ্যে যে সক্ষর কপ্রানয়, কলহ, এবং বিরক্তির ভাব দেখা যায়, উক্ত রী-তিই তাহার এক প্রবান কারণ বলিয়া পন্য इंटेंट शांदा। अफ्नीम (लाटकत इंडनार्य) ছইবার **এবং শা**রীরিক ও ভৌতিক নিয়ম ্ল্প্যন-পূর্বক ন নাপ্রকার দেরে শোক ভোগ করিবার এমত গ্রবল কারণ আর দিতাগু দৃঃ ু দাবে অভাব হেড়ু এ দেখায় লো- হয় না। এই রীজিব নিমিত্ত এদেখায় বলেক-वानिकामिधात अनुभाषुक-काद्य मदनश अस्तास्त्रः वृहेशा अदः हेन्द्रियद भाष्ठना एक्या काश्रामित्रः अक्फ-मुख्जामाधन र शृष्टिवकारेनत शरक वरा-भाठ कत्य, बदः विमा-भिका। श्रीत राष প্রথম-সন্তানের শোক সহ্য করি ত হয়, এই কৃ প্রথাই ভাষার এক প্রণল কারণ। পুরুষ নুক্রাঃ এক-বংশজাত নম্ভানগণ উত্তরোত্তর ক্ষাণ হইটা বংশ-লোপ হওয়াও এই কু**পছ**িয়া এক প্রধান अफ्टल विवय महिमुखा ध्रदिन क्रिशाोक्।

সম্ভানের কোন যোগ। তা-কোন উপাজন শক্তি ना দেখিয়া তাহার টভাহ পরে আমোদত হইয়া অনায়ানে তৎকর্ম দশ্যম করা কি ভাগানক কু कर्ष ? टेममवावञ्चात्र शूथ यथन निजानी वालक, নিভাস্ত অবোধ, যথন ভাছার কতিপথ বর্ণরি-

চয়মাত্রই জ্ঞানের সীমা, এবং দৈহিক কার্য্য- অম্পাবয়ন্তা কন্যার উদ্বাহ-কর্ম সম্পান কলিতে অপর ব্যক্তির ভার-গুছন-করা দূরে থাব্দুক, সে প্রাপ্ত অন্ন উত্তমরূপে ভোজনু করিতে অশক্ত, ! य अपनाक मोखाण लाखिक कतिएक इटेल कि अपनामत कथान कलाम आहरू? —মহত্ত্বে মণ্ডিত করিতে হট্লে —এই ক্ণণেই এমত ইহা সিদ্ধান্তীক্ত মত। যে পিতা-মাতার

मांबरे किवन कर्डवा वाथ, या मगन्न छारात्र भातित्वरे जाभनादिगरक थना ଓ চরিভার্থ বেশ্ব करत,— उद्यावद काम मझरलंदर मञ्चायमा म है। **बहै विकल-(ध्रत्रशानुमारत क्रांस डेडरत्रावत डेड** পরিধেয় বন্ত্র সূচাক্তরূপে ধারণ করিতে অপটু, কুপদ্ধতির এপ্রকার বৃদ্ধি হইয়াছে যে এদেশীয় এবং সামান্য বিপদ্হইতে আপনাকে রক্ষা ক- ভিদুকুলের কোন ২ প্রধান শূেণার মধ্যে গর্ভত্ রিতে অক্ষম;—যথন দে সন্তান মূর্থ হইবে. সম্ভানকে কন্যা লক্ষ্য করিয়া তাহার বিবাহের কি পণ্ডিত হইবে, ধনী হইবে কি দ্রিদু হইবে. সম্বন্ধ স্থির হইয়া থাকে, তাহাতে সে সন্তান সাধু হইবে কি অনাধু হইবে, তাহার কিছুই সজীব কি নির্জীব-–বিকলান্ধ বিবৃতাকার 😭 নির্দেশ করিবার উপায় হয় না. তৎকালে পিতা কৃৎনিত কদাচার ইত্যাদি কি প্রকার অবস্থায় মাতা জ্ঞাননেত্রে ধূলি প্রক্ষেপ করিয়া, এবং **হাদ-**াগে ভূমিষ্ঠ হটবে, ভাহার বিষয় কি বরকুল-য়কে পাষাণদৃশ অঠোর করিয়া সেই সন্তানের করা, কি কন্যাকুলকর্ত্ত। কেছই কিছু থিবেচন। সহিত ছত্পবয়কা কলার পরিণয়-কাম্য সত্পান করে না। কুলম্মাদা বংশম্ম্যাদায় মলোনীত क्रिति (क्रम ना উভ্রোভর দেশের দরিদুতা-वृष्णि हरेलारे जाहाता এই क्रम मध्य निवक्ष क्रिटिं ছইবেক। অতএব বিলক্ষণ প্রতিপন্ন ছইতেছে, মহাবঃগু হয়। এপ্রকার কৃৎসিত-ব্যবহারণত্ত্

অনর্থকর কুরাতির উচ্ছেদ করিয়া প্রাপ্তবয়দে শরীরগত ও মনোগত যে সমস্ত দোষাদোৰ থা-পাণিগুহণ করিবার মন্থলাজর নিয়ম স্থাপন কে, তাহাদিগের সন্তানের প্রাকৃতিক নিয়মা-করা আবশ্যক। কিন্তু এদেশীয় লোকের প্রগাত নুসারে অবশাই ভাছার কিছু না কিন্তু প্রাপ্ত ভ্রান্তি-হেতু, না উক্ত কুরীতির অন্যথা করিবার হয়, অতএব যদি কোন জাতিবিশেষের কোন উপায় আছে, না দেশের দুদাশা দূর হইবার স্বাভাবিক দোষের নিমিত্ত ক্রমাগত তাহাকে कान नथ चार्छ। य नर्यास अजस्मनीयकन- चार्यानामी इन्टेंच इय, जत्व जनमाई जस्माय-গণ মহাজুমে অবা হইটা শিশু বালকের সহিত বর্জিত কোন ভিন্ন জাতির সহিত যিবাহ প্র-অত্যণপ বয়স্কা কন্যাদিগের পরিণয়-ক্রিয়া নদাধা চলিত করিয়া তজ্জাতির উক্ত দোয পরিহার করিয়া থাকে, পরিণামে যে, ফি দর্বনাশ হইবে, করা সর্বচ্ছোভাবে বিবি, এবং ঐ বিধির অনু-তথন তাছারা সে বিষয়ের প্রতি একবার নেত্র- সারে কার্য্য করিয়া অনেক কদাকার কুৎ্যিত পাতও करा ना, क वा वम कन्याक छत्र । भाषन छाछोत्र । लाकिता मः मात्रमध्य अकरा मूठाम क्रिया कि वा उड़्जांक मसानगनक नीमम । अ मुम्ब विद्या गन्। इहेट्टकः स्थानक इनिवन পালন ও রক্ষণাবেকণ করিবে, তাহার ঝিয়য় ক্ষাণমতি জাতির সস্তানেরা মধাবলবান ও বুদ্ধি-अकरात माज । তাरानिरागत मान केम्य क्यांना, मान् क्रेया मूर्विकोनं त्रास्मात करिकाती क्रे-क्विन विक्रमणः कारतत विभागाणम हरेसा अउ। य । सारहः आत्मक हर्विग । किन्य हाव कार्यिक

লোকের নিতট যেপ্রকার অধ্য এবং অগুংছা জাতি বলিয়, বণিত ২ইডেছে, ছীপান্তরীয় इहें इक्हिरा**ङ्, এव**ः **भाशनाम्टिशः साधीन**ाः করিতে বাধ্য হইতেছ, পুরুষানুক্রনে তাহাদিগের मञ्जानभारक छ । अजन-विषयः (भन्ने मात्र इरेटा) হইবেক: কিন্তু তথাপি দেশ-ব্যবহার-পাশে বন্ধ পাকিয়া ,এদেশায় লোকে বিহিত-কালে বিবাহ প্রচলিত করিয়া ভাহার কোন পূর্ব-প্রকীকার করিতে উদ্যোগী হয় শা।

স্বকায়-সাধন উদেশ করিয়া এদেশের প্রতি করিয়া রাখে। क्ट्रेरकार करवा बरमनीय ब्याकिम्ट्रित वक्त्र व्यक्त्र पर्वे कार्या कतिया थाटक।

महावीर्यवान् ଓ माहनी विविद्या शक्ष इहेटक्ष्यः मछव। धर्म-क्षुखिर बधानकात्र मनुर्यात खान-এতদেশীয় বর্মান পুক্ষেরা একণে যেজপ অগ- চক্ষু এমত দুর্বল ছইয়া রহিয়াছে, যে আপনা-ন্য ও হেয় চইয়া ইহিয়াছে, অপরদেশীয় সভ্য- দিগের নিকট উপস্থিত বিপদ্কেও তাছারা ক্ষণ-কালের জন্য দেখিতে পায় ন।। এদেশের যে ममछ (लाटक এই বিৰুদ্ধ-नः कारतत वन जाना মনুস কভুক পলাজিত হইয়া আপনাদিগের হইয়া স্বজাতির হতবল হতবীয়া কন্যা-পুঞ্রের গৃহস্কপ জন্মভূমির আবিপতেঃ যেকাপ বঞ্চিত সহিত উদাহ-ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া ইচ্ছাপূর্বক আপনাদিগের কুলনাশক কালকে আহ্বান করিছে-রাপ নহারভুকে যে প্রকার অপ্পান্তো বিক্রয় ছে। দেশীয় জনগণ নধ্যে কেন্স্ই একাপ নির্দোধ नहरू, य जे क्ल अदेवध विवाह कना तम नकदा গর্বনাশ ঘটিবার সন্তাবনা এবং পূর্ণবয়ক সবল गटका खाशूकरमंत्र महिक विवाह हहेता व्य অনুপম সুথ মৌভাগ্য সমূহ হইতে পাঃ যুক্তি ও তর্কের দারা অনায়াদে তাহার অন্ ভব করিতে না পারে, পরস্তু প্রগাঢ়-ব্যবহাঃ-যদিও ভিন্ন-দেশীয় লোকে দয়া করিয়া কি ভুন্তি আসিয়া তাহাদিগের জ্ঞান-পথকে ক্র

নগরে নগরে— প্রতি গুমে গুমে—পল্লী পল্লীতে— বিবাহ-বিষয়ে এদেশে আর যে এক প্রকান মহামহা বিদ্যালয়-ভাপন দারা বিধিমতে জ্ঞান- কুরাতির অনুষ্ঠান হট্যা থাকে, ভাহাতে করিয়া বিভালের প্রচার করে, তথাপিও এদেশায় কিমিনকালে আর দেশায় মনুযেরে মন্তকোতো মন নস্তালগদ ২লবুদ্ধি-বিষয়ে ভালাদিগের পূর্ব- করিবার সাধ্য হইবে না, এবং ভাছার নাম করিটাক পুক্ষাদগকে ক্ষিন্তালে সম্প্ৰতে অভিক্ৰম হৃদয় বিদাৰ হয়। মনুষ্য নিতান্ত নিদ্যু—নিড়াই कड़िएड शाहित्वक ना। कार्या-कार्यन-मृत्व नक निष्ठ्य-ना क्ट्रेल, अक्काल कृत्यत्क शायानिक প্রতিষ্ঠ অবস্থাই তাহাদিশের পিতামাভার কঠোর না করিলে এবং বৃ**ক্ষ পর্বতাদির** ন্যায় শার্লারক ৬ লান্দিক দকল দোষ ভাষা- অচেতন না হইলে যে কর্ম করিতে পাসুর না, দিগকে কিঞ্ছ কিঞ্ছি অধিকরণ করিতে, উক্ত কুরীতির অনুসারে মহামহা বিচক্ষণ/ভাকে

रक्ति । हो हिक अ नार्वातक अदछ। इहेंश्रा (कान् तृष्तिमान् वाक ना **पीका है। हिर्दिन** রহিষ্যেষ্ট, এবং বৈজাত্য-বিবাহের প্রতি এদে- যে যৌবনাবস্থায় জ্ঞার বিয়োগ হয় পুক-শাষ লে'তেও তাপ্রকার বিক্রন্ধ দ-স্কার আছে, বিষয় যে মত পুনর্বার দারপরিগৃত্ কার্ট্রিপর-ভাগতে হিন্দু-মন্তানগণের আর জ্রীকৃদ্দি হওয়া মেশ্বর-প্রবীত শারীরিক নিয়ম পার্নী, করা লার খাত্ক হিন্দু নাম অচিরে লুগু হওয়াই লিখি, দেইমত অপেবয়ক। জা∕দণের শুনী হত

প্রক্র-স্ভাবানুসারে যেমন ভাহার মনের ঢা-ু পঞ্চইতে নিৰ্নিপ্ত থাকিয়া সমস্ত জাবন মান্ত পন করিয়া যাওয়া স্বত্যস্ত কঠিন ছইয়া উটো; **দেই মত বালবিধবা নারীদিগেরও** ভাবশ্য*িচ*-ভের শহিরতা হইতে পারে এবং আপনাদি-ণের সতীত্বের রক্ষা করাও দুংসাধ্য হয়। এ-७९मः नाटत जोविहोन शुक्यम्टिशत मट्या चरन-কের চেপ্তায় যেমন অভ্যন্ত কুংনিত ও ভয়া-্ নক পাপের অনুষ্ঠান হইয়া গিয়াছে এবং অদ্যা-পি হইতেছে, নেই মত প্রিহীনা রম্ণীর মধ্যে অনেকে অধৈয়া ছইয়াও অনঙ্থা অত্যা-চার উৎপাদন করিয়াছে এবং করিতেছে। কিন্তু अप्राप्त कि विभावीं होिज्य वनवर श्राह ! পুরুষের যত বার জ্ঞা বিয়োগ হয়, প্রচলিত দে-শাচারানুসারে দে তত বারই বিবাধ করিতে পারে, এবং এক জ্রী সত্তেও যদি পুরুষ অন্য-জ্রীর পাণিগুত্ব করিতে ইচ্ছা করে, ইস্থানুসারে ভাছাও ভাহার করিবার অধিকার আছে, কিন্তু जीत्नारकत अक राज सामी मृठ हहेता जाहात 🐃 ুলাণিগুহণ করিবার বিধি নাই। পূর্বেট উক্ত হা যে ক্রীতিকপধুমে অস্ব হইয়া এদেশের ला शक्षमवर्यीया कनात्र विवाह श्रमान ক্রেড যদি সেই কন্যার উদ্বাহ-ক্রিয়া সাত্রিক না হইতে তাহার পতিকে অক্সাৎ কাৰ্টে ছিন্ত পতিত হইতে হয়, তথাপি তা-হার ভীবনের মধ্যে আর কাহার ভার্য্য হইবা 📆 🗓 থাকে না। দেশ-ব্যবহারের নিয়- ভাহাকে নিরম্ভর পতিবিরহে কাতর হইতে দে-

হইলেও দ্বিতীয় বার পাণি-গুহণ করিয়া শারী- মানুদায়ে অবশ্যই তাহাকে ফারজ্জীবন অবশ্ রিক-ধর্মের রক্ষা করা সর্বতোভাবে কর্ত্ততা বৈধব্য-বন্ত্রণা ভোগ করিতে ছউবেক। এবি-প্রথম-বয়দে পুরুষ দ্রাহীন হইলে, যদি সে ক্তু ধর্মশাক্রমধ্যে বয়দের ভারতম্যান্তা-ব্যক্তি আর অন্য জ্রার পাণিগুহ্ণ না করে, ভবে বিষ্ণাদিগের আচারব্যবহারের কোন ইত্যা विस्मय कता नाइ; পूर्वस्मका कान खीत लिक ঞলা জন্মে, শরীরের ভাবান্তর হয়, এবং পাপ বিয়োগ হইলে, শাস্তানুবারে তাহাকে যেমত বেশভ্যা-ৰজিতা হইয়া সময়ে সময়ে উপবাস অপোহার করিয়া দুঃসহ-শারীরিক-কষ্ট-चौकात-श्रवंक भारतक्त करोत-निमय-नवन भा-লন করিতে হয়, পঞ্বর্যীয়া কন্যারও দুর্জাগ্য-यमाज्य देवधवाएमा कङ्दल, छोहात প्राक्ति भारे-মত ব্যাত নিয়ম পালন করিবার বিধি আছে, এবং পিতামাতাও বিষমভূমে অন্ধ হইয়া অনা-য়ানে মেই বালিকা দুহিতাকে যোরতর যন্ত্রণা-প্রদান করিতে প্রবৃত্ত হয়েন। এদেশীয় লো-কের এত বিপুল অজ্ঞানতা যে ব্রাহ্মণ ও কায়স্থ বণের মধ্যে কোল নিয়মিতদিব**দে পিতামাতা** यि वानविश्ववा कन्णारक डेलवारमङ करहे वा मार्क-िलामात्र क्ले अक क्वेंगा धान-जान করিতেও দেখে তথাপি আপনাদিগের ধর্মভূম দূর করিয়া ভাছাকে যৎকিঞ্চিৎ আছার বা জলদান করিয়া ভাষার প্রাণরক্ষা করিতে পারে না। ব্রাহ্মণ काञ्चल वर्णित सरका अञ्चलनावङ्गा अ विश्वना-**फिराब गुथमर्था जनश्रमानशृर्वक श्रागमान क**बि-তে নিষেধ আছে। কি আশ্চর্যা। কি মূঢ্তা। কি মহাভূম: এ আচার-দৃষ্টে কথনই বোধ হয় না, যে ইহারা বিধবাস্ত্রীদিগের কোন मकीव প्रानी निवशं अपन करत, यरहरू दृषि-চৈচন্যবিশিষ্ট লোকে কোন পশু পক্ষির প্রতিও अञ्चलात निष्ठूत-वावश्वत कतिए**ण शा**रत ना । विश्ववा कना वश्वश्राश्वा इहेटन निजामां । यकि

থেন, শারীরিক-বিকারে অধৈষ্ট হইয়া পাপে হইতে এই সকল ভয়ষ্টর-অত্যাচার-মূলক কুরী-জাণ্ছত্যা প্রভৃতি ভাকর পাপ-সকল আচরিত ভাগ্য হুইবার সম্ভাবনা আছে? করিতেও দেখেন, তথাপি ধন্মানুরোধ ভ্যাগ-পূর্বক (नह कमाप श्नदीत विवाह पिया छैक অস্যাচার-সকল নিরাকরণ করিতে শক্ত হয়েন নাঃ এদেশীয় এই কুর্গতির প্রভাবে ভারত-ও মানসিক গুণসমূহ অধিকার করিয়া এই পণ্ডিত চটটে পারিভ, আছুত আছুত কাষ্ট করিয়া সৃষ্টিঃ খন এখা উপকার নম্পাদন করিতে পाडिए, अय- शास्कृत्वत ५ साम्राम्यान कोन्द्रि-পতাকা-ৰন্ত্ৰ হুইড, ভাল্রা ত্মিপ্ত হুইলে, কি জानि नकन (नारकत घुनाई कोरन, शांत कारन नभ्ध्यादश्च व्याकनिन्द्व, स्र माङ्ग्याख्न । इत्र क्रिट्व এবং কাহারে। বিকল্প আশুর না পাট্যা। অন্নাচ্ছা-মণের কেশা পর্করে এবং গিতৃকুল ও লাতৃকু-होतः अपनिक्ष माज्याद नरे हर्याद्य। प्रमान-पूर्क काम चन्नाज-विवसी

तं इहेट एम्ट्यन, अव॰ व्यवस्थिय मठोखनामा छित्र छेट्डम ना इहेटल कि कथनहे एम्पात स्मी-

পুরাণ-পাঠ।

ক্ষ্য যে শারীরিক-বিকারে অবৈষ্যা হইয়া সন্তা-্করি, ছবির আদাবে তৎক্ষণাথ ভাহাতেই হতা-ননাশ পুড়তি অসম্বা অদ্যুত পাপের সৃষ্টি শ হইতে হয়। এ পর্যান্ত যে দকল ছবি কড়িয়াজে, এবং কুলভয় ও লজ্জায় জলাঞ্জলি এতৎপত্তে প্রকটিত হইয়াছে, তাহার অধিকাং-দিয়া বাঁভিচারিণা হওয়াতে পিতৃকুল ও ভূাতৃ- শই বিলাভট্টতে আনীত ছইয়াছে; সুভরাং ক্লের মাননাশিনী হট্যাছে, ও কত নর্হত্যা আমর৷ যে 🖟 ছবি প্রকাশিত করিতে মানস প্রভৃতি ভয়ক্ষর অত্যাতারের কারণ হইয়াছে, করি, তাহা না হইয়া আমাদিণের বিলাওস্থ এবং আদ্যাপিও হইতেছে, তাহা বর্ণন করি- সাহায্যকারি যাহা পাঠান, ভাহাই প্রকাশিত या भाग कहा यात्र ना। अहे कूशेठित छन्। कतिएठ इकेएए**एए। कियुफ्रियन** ए**हेन,** अठएकरण প্রার্থনীয় ক্লোডির অনেক সন্তান যাহা- কি প্রকারে কথকেরা কথকতা করিয়া থাকেন, তা-রা জাবিত থাকিলে পিতামাতার শারীরিক হার ও তংশোডাদিগের এক থানি ছবি পাঠাইতে আদেশ করিয়াছিলাম, তদুত্তরে অপর পৃষ্টে মৃদুত সংখ্যার ক্রমারারণ ধাদম্পান এবং অধিতায় ছবিখানি প্রাপ্ত হইয়াছি; তাহার প্রতি দৃষ্টিমাত্র পাঠকমহাশায়েরা জামিতে পারিবেন যে আমা-দিগের মানস কি পর্যান্ত গকল হইয়াছে। কো-थाश यामागनाकृ ভेषाचार्या भुहान शाह क-विष्ठ २ लाएक**র भन मूज क**ित्रदन, काणा कारन দূলওয়ালা খোঁপাবাঁথা উপুড-হইয়া-মৃতি উপস্থিত! পরস্ত কি করি? এতদেশীয় মনুষ্ঠো তল্প-বিদ্যায় মণের কুশা পরেটের এবং পিতৃকুল ও লাতৃকু- না হইটেছেন, ভদ**ধ্যি মধ্যে ২ এ শিক্ষা** বিলিক্ষ কলক্ষরজাপ ত্রবৈ, এই আশালায় তা- করিতে হুইটো; এবং তৎকারণ পাঠকা ছিবি-



भूताब-५१:४ ।

থনা করিতে হইবে।

না দিয়া আমাদিগলে তাঁহাদিগের মার্জনা প্রা-াগুরুপাঠে কনুরক্ত, তাহার বুদ্ধি প্রতিদিন : প্রথর। হইতে থাকে, কুকর্ম চ্ইতে গরীদা মন পরস্ত ছবির দোষে গুস্ত-পাঠের মাহাত্ম্যবর্ণনে বিরুত এবং প্রকরণবসাং সমাগত করুণা দু বিম্থ হওয়া কর্ত্তব্য নহে। এতদেশীয় প্রাচীন তাদি রদে নিম্ম হয়। শ্যোতারাও পূবণ-প্রভা-ঋষির। গুরুপাট ও তাজুবণে সর্বদা আদেশ করি- বতঃ রদিক ভাবৃক সচ্চরিত্রানিত হয়। গুরু-তেন: তৎকর্মের মাছাজ্যও নামান্য নছে। তদ্য- পাঠের আছুত শক্তি। তদ্যার। পাধাণজদম ব্যক্তি-রা ধর্ম অর্থ নাম ও শোক্ষ এই চতুর্বগের সংধন ্রাও শুবনমাত্তেই তৎক্ষণাৎ পুলফিডসর্বাক্ষ বিগ-হুইতে পারে। গুরুপাঠ করিলে তদুলিখিত বাজি-। লিডহাদয় গদ্গদচিত তুইয়া যায়। অন্য পরের গণের জান দেয়ে অবণত হওয়া যায়, এবং লোকে কা কথা, সর্বদৈব ক্রীড়াভৎপার- বালক পাঠ-তদ্টার্ভের তন্পমন করে; তনন্তর নিরন্তর স্থানে উপস্থিত হইলে ক্রীড়ায় নির্ভ্ত হইল নীতি-আন্ত্রের অনুশীলনদারা দোবাংশ পরি- শুবণে মনোভিনিবেশ করে। ইহাতে পাস্ত্রেশ जान करिया नम्भरणत ভाकन इस। य वर्णि (गत् अनायात् कम् का विलाट इहेरवक: स्य বিভিন্ন-কচিনিশিষ্ট আনালবনিতাদিগকে বিবি-ধোপাখনে বিষয়ক বাকচাতুরীবারা বিমুগ ক-রেন। দেখুন, এতদেশীয় কথকনখাশয়েরা কি অবলীলাক্রমে মন্যাতে বিমুগ করিয়া ইচ্ছা-নুসারে কথন কদিত কথন ছবিত, কথন বা প্রেমপুণ করিতেছেন

কথন হার প্রনালী দেশভেদে বিভিন্না হই রা থাকে, বন্ধদেশীয় কথকদিগের সরমাধ্রা, এবং বাক্চাত্রাদি বিলক্ষণৰূপে থাকে, কিন্তু বর্ণো-চারণের উত্তম স্পষ্টতা নাই। শাস্ত্রেও ইহা উক্ত আছে, যে '' উচ্চারণানভিক্তাঃ খলু বন্ধাঃ '' অর্থাৎ বন্ধদেশীয়ের। উচ্চারণ-নিয়মের অনভিক্তা। হি-লুসানায় কথকদিদিগেরও ৭, ন, শা, ম, ন, ব, ব. ইত্যাদির যথান্তান পৃথক্ ২ উচ্চারণ করিতে প্রায়ঃ ক্ষমতা নাই, এবং শ্যোভাদিগকে বিমুগ্ধ করিতে বন্ধদেশীয়দিগের তুলা নহেন। উচ্চারণবিষয়ে দাক্ষিণাত্যের কথকমহাশয়দি-গকে অন্ধিটার বলিতে হইবে; বেদপাঠে সুপণ্ডিত উক্ত কথকের৷ যে প্রকারে প্রত্যেক বর্ণের পৃথক্ ২ উচ্চারণ করেন ভেমন এতদেশীয় কোন কথক

্ষরমাধ্যা-বিষয়ে সর্বভ্রই সমান; বাক্চাতুর্যা এক পাঠপ্রবালা দেশভেদে বিভিন্ন আছে। বন্ধভাষাত্র সংখ্ত-মিশ্বিত হওত বাক্চাত্ব-র্যোব বিশেষ চাতুর্যা বোর হয়; পরস্তু শ্বো-ভাদিগের স্ব২ দেশায় স্বরমাধ্র্যা বাক্চা-তুর্যাদিভেই অভি সম্তুত্তি থাকে, কারণ উপা-খ্যান এক থাকিলেও ভাষার প্রভেদ হওয়ায় বোরসমা হয় না। দক্ষিণদেশে প্রতি দিন ক্ষিত্রলে বাদ যার্মহকারে দপ্তায়মান হট্যা গীত-বিজ্ব লিবাধানের গানপূর্বক পাঠকরণের প্রথা আছে, এই কালী, বৃদ্ধাবন, মথুরা প্রভৃতি অন্যা- না দেশেও প্রায়ঃ প্রতি দিন ব্যাখ্যা উপলক্ষে গুন্তুপাঠ হুইয়া থাকে। তাহার মধ্যে বক্ষামান দোব পরিত্যাগ করিয়া পাঠ করা শুয়েঃ; যথা,

> "শক্তিও ভাতম্দ্যুক্তমব্যক্তমনুনালিকম। বিশ্বরং বিরুদ্ধের বিশ্লিক্তং বিষমাহ্তম॥ কাক্ষরং শির্দিত তথাস্থানাববর্তিম। ব্যাকৃলং ভালহানক্ষ পাচদোমাশ্রুদ্ধা॥ সঙ্গীতং শির্দঃক্ষুম্প্লকগ্রমবর্তকম্"।

हेशह अर्थ अहे य मझायुक हहेशा उकाहिल, जाल हाल हहेशा उकाहिल, मुथलियन शूर्वक उकाहिल, अथलियन शूर्वक उकाहिल, अथलियन शूर्वक उकाहिल, अथलियन शूर्वक उकाहिल, अथलिय श्राम्य हाने का निक्षा हा स्वाप्त का निक्षा हा स्वाप्त का निक्षा हा स्वाप्त अथलिय स्वाप्त का निक्षा हा स्वाप्त हा स्

मुतर्गत जात्र जर्मां य थनी।

ত্তি বর্ণের প্রচার লাছে, এবং বেদাদিত্রুল্প প্রচার প্রচার লাছে, এবং বেদাদিত্রুল্প প্রকালের গ্রান্দেশায় লোকেরা ভারচবর্ষের কোন হ অংশকে 'সুবর্ণদেশ " শবে
বিধান করিত, এবং বছকালপর্যন্ত ঐ স্থানহইতেই পৃথিবার সর্বত্ত ঐ মানাছর ধাতু প্রেরিত হইত: কিন্তু এই ক্ষণে ঐ প্রথার অন্যথা হইয়াছে। আমরিকা-দেশের কালিকর্মিয়াপ্রদেশে এবং অজেলিয়া-ভাপে যে ফাঞ্চন
সক্ত্রিত হইয়া থাকে, ভাহাতে প্রায়্কঃ অপর
সকল থনী হতাদর হইয়াছে। এই ক্ষণেও ভর্তঃ

थनीत প্रচাत नाहे; व्यवका श्रीयः ममस् नूवर्गनिने তটে প্রাপ্ত হওয়া যায়। আসাম-প্রদেশে প্রায়ঃव∙ি। নদীর বালুকায় সুবর্ণ লব্ধ হইয়া থাকে, তক্মধ্যে দী-দাং, কাকুই, কদম্, সোম্দির্না, স্বরাদীজু, ভৈরবী, 🖔 জোংলুং. জাজ, এবং দেশই এই ফয়েক নদীতে উত্তম পরিশুদ্ধ ও প্রচুর স্বর্ণ প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ বে-श्व-श्राप्तरमा (माप नभी, विदाद-श्राप्तरमा महा-या পাত্रস্থ অবিকাংশ নিকেপ করিলে, জলের সহিত বালুকাদি লঘু পদার্থের কিয়দংশ নিক্ষিপ্ত হয়; অত্যন্ত গুৰুতাপ্ৰযুক্ত ৰণ পাত্ৰের তলভাগে পড়িয়া থাকে। পুনঃ ২ এই প্রকারে বালুকা-মিশ্তি সুহণ ধৌত করিলে অনায়াদে वालकाम्हिकामि श्रीनशमार्थहरेट मूदरवं श्थक् कत्रा याहरा शारत। शृर्वाङ नर्ग ब्रेप्ट् मनूरमाता এই নিয়ম জ্ঞাত থাকিয়। তদনুসারে মর্ণ সঞ্চিত क्रिया पारक।

আসাম-প্রদেশের সূবর্-সমুহকারিদিগের নাম "भागान". भो क्वांटन महीद्र छन अप्श इह-লেই ভাহারা স্থাপুঞাদির সহিত দলবদা হইয়া म्बनमञ्जूरक् अवृद्ध इस्र। त्नानानिम्पात अप्राज्य

অনেক স্থানে স্বৰ্ণ প্ৰস্তুত হয়। পরস্তু এতদেশে উত্তম । দলে এক জন পাটুই (প্রধান) এবং চারি জন शही (कर्यकातक) **थारक।** खेमन नमी हीरतह स ফান সোতোবেগে ভথ হইয়া পড়িয়াছে, তথ সম্ধে আলিয়া সোকালি নামক তীকাগু বংশ-দারা বাল্কা খনন করিয়া পরীক্ষা করিয়া দেখে: यमाणि वाल्हात मिक्क कविक शास्त्र करत থাকে, তাহা হইলে বালুকায় স্বৰ্গ আছে নিশ্চয় জালিয়া এক খানা বাঁশের চেয়াড়িতে (বাঁশ नमी, शक्षात्व विशामा नमी, कात्याधाय शामर्छ। । हाला। वे वालुका वहेशा जाहार कि शतिमात्व নদী প্রভৃতি ভটিনীদিগের ভটেও কিঞ্ছিৎ হ কা স্থন আছে, তালা নিরূপণ করে। যদ্যশি এ ঞ্চন সম্পূর্ভাত হুইয়া থাকে। ঐ সকল কাঞ্চনের চেয়াড়ির উপর ২২।১৪ টি সুবনকণা দেখিতে আকর পর্যন্ত থনা। নদার সোতোবেগে ঐ পাত, তাজা ছইলে নিশ্চয় নোথ করে যে তথায় থানীছইতে সুন্ধ বৌত ছইয়। বালুকাবৎ অব- মথেও স্থারেণু আছে, এবং ভলিকটে পাণক্টীর য়বে দূরে নাভ হট্যা যায়, পরে সোতোবেণের নির্মাণ করিয়া তথায় আপনাদিণের আবাস-হাস হইলে নদী চটত্ বালুকার সহিত নিপতিত । সংস্থান করে। সতঃপর নদাগতে এমত করিয়া इन्हें शा थारक। अन-गुहिरकहा जे वालुका धील वांध वार्य, याहारण नवांत कल भूवर्गिनिष्ठ করিলেই অর্ণ প্রাপ্ত হয়। সূবৰ প্রাটিনা ভিন্ন , স্তান দিয়া বাহিত হইতে পারে। দুই তিন দি-সকল পদার্থইটতে গুরু, এই প্রযুক্ত সাম্য পদা- বন ঐ জল বহিলে উভ স্থানের উপরিভাগের থের সহিত মিশ্রিত সুবর্ণ-চূণ জলে বিলোড়ন করি- বাল্কা খৌত হইরা যায়, এবং নিমুস্থ স্বর্ণপূর্ণ गालुका वाक रहा। जाहा रहेटनरे माभारनता বাব ভান্দিয়। দেয়, এবং নদীর জল ঐ ধৌত স্থান পরিভাগে করিয়া নদীয় গর্ভ দিয়া বাহিও চ্ই-তে থাকে। এই অবকাশে সোনালেরা কান্তনি-আিত কোদালদারা বালুকা থনিত করিয়া তটে উত্তোলিত করে, এবং তথায় সাল্তি নামফ নৌ-कांत्र नग्रम ० इन्ड नीर्घ, बदः बंक इन्ड श्रन्छ, ও অর্দ্ধ হস্ত গভীর এক কান্ত পাত্রোপরিস্থ এক ছাঁকুনির উপর নিক্ষেপ করে। উক্ত কাপ্তশাত্রের নাম দুক্ণি—(দুোণা?) এবং তাহার এক পার্মে এक हिंदू थाटक। यथालतियान तानूका हाँकूनित উপর স্থাপিত হইলে তদুপরি একচ্সদারা হল ও অপরহস্তবারা বালুকা-বিলোড়ন ঢালিতে

कतिए इस्रा अहे अिक्साबाता अखत-थय-नकन हाँकृमित जिलात थारक. बदः चर्न ও वालूका ও জল দ্ঞ্ণির মধে: নিপ্তিত হয়; অপর দুঞ্ণির পান্ধে এক ছিদু থানাপ্রযুক্ত তদ্যারা অধিকাংশ वानुका ७ आयः नमछ जन निर्गठ इहेया यात्रः কেবল কিঞিৎ পরিফ্ত বালুকা ও স্বর্চুর্থ মাত্র शास्त्रत निमुहार्श अव**निष्ठे पारक। এই धकार**त ৪০--৫০ ঝুড়ি বালুকা থৌত করিলে যে অবশিষ্ট रानुका पूर्वाव मध्या थात्क, जाहात्क त्राना-লের: "শিহা" শব্দে কছে। ঐ এক শিয়া বালু-कात अक ति भूदर्भ भाख्या याय, कथन र সূবর্ণের পরিমান ভাহা ছইতে অত্প হয়, কথন বা ভাহার দ্বিওণ অধিক হইয়া থাকে। ঐ পরিমিত বর্ণ গুনিতে অপ্পা, কিন্তু বস্তুতঃ তাহা ক্ষনায়ানে ২০।৩ শিয়া বালুকা প্রস্তুত করিতে পারে। তাহাতে। আনা বা ।/ আনা সুবর্ণ नज्य र्य।

থাত বালুকা সোনালের। কোপাত-বৃক্ষের
পত্রে বালিয়া রাথে, এবং বালুকা-থৌত-করণ
কার্যের সমাধা হইলে তৎসমুদায় একত্রে দুক্তনি মধ্যে ঢালিয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ পারা (পারদ) দিয়া সমস্ত বালুকা জলদারা পুনঃ থৌত
করিতে থাকে। ঐ প্রক্রিয়া-সময়ে মর্ণচূর্ণ পারার সহিত মিশ্রিত হয়, ও বাল্কাহইতে পৃথক্

ইয়া পারার সহিত দুক্তির তলভাগে থাকে,
এবং জল ও বালুকা দুক্তির ছিদু দিয়া নির্গত

হইয়া বায়া

ক্রান্থার শোণালের। বন্মিশ্রিত পারার তালটি একটি শস্থকের মধ্যে পুরির। নাহার-কাষ্টের অমিতে তাহা দক্ষ করে, তাহাতে সমস্ত পারা ধুম হইয়া উভিয়া যার; শস্তুক চুর্ল হইয়া याम्न, अवर उचार्य। मृवर्ग शृद्धिक इहेमा थारक।

जे । मृवर्णन वर्ग उड्ड्न मा इहेरल ठाइगट
उन्होंने मार्टि श्र व्यक्तिक वर्ग विम्ना ठाइग शृमः

मभा कता व्यक्तिमान: छाड़ा इहेरलहे काक्टरमझ
वर्णन पीछि इम्र।

সূবন প্রস্তুত করিবার যে প্রক্রিয়া বর্নিত হইল দেশভেদে তাহার কিঞ্চিৎ ইতরবিদেষ আছে; সন্ত্রাদির নাম ও অবয়বেরও কিঞ্চিৎ যাতদ্রে আছে; পরস্তু স্থল-প্রক্রিয়া নর্ব-ক্রই তুল্য; আদে ধৌত করিয়া বালুকাহইতে যর্নের প্রক করা, পরে পারদ্ধারা তাহার পরি-শুদ্ধ করা।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে; সুনর্গের আদিম স্থান পৃথিবীগর্ভ তথায় কটিক-প্রস্তরের সন্ধিত সুবর্ণ अकरक थारक; नमीत (वरंग के जान कथ इंहरन वे अखड़ वालुकाकाल बवर वर्गपूर्वकाल श्रीवनक रहेशा अकटल थनीर्हेटल चित्रत প्रक्रिश हर, সুতরাং ইহা অনায়াদেই অনুভূত হইতে পাঙ্গে, य ननोत य चारनत वालुकाम चन्त्रं आरह, তাহার কিয়দূরে সুবর্ণের আকর আছে। অনেংক এই অনুস্বানে অভিশয়-কাঞ্চনপূর্ন বৃহৎ এনী প্राপ্ত इरेग्नाष्ट्रन। त्याच इग्न, त्यान-नार्वेत छेद-পত্তি স্থানে ঐ প্রকারে অনুসন্ধান করিলে বাছার-প্রদেশে সুবর্ণের আকর প্রাপ্ত হ'ওয়া যাইতে পারে। আসামেও এই প্রকারে মর্গ থনীর তত্ত্ব कर्ता कर्खित्र। धनीय मूदर्ग हिन्दर नहर, शतुष्ट कश्रमा कि चन्यामा शर्मार्थंत्र नगाः कुन्निएउउ প্রায়: পাওয়া যায় না। অজেলিয়া-ঘাপে বাথর্ট-গ্ৰামে এক বৰ্ণপিও প্ৰাপ্ত হইয়াছিল, তাহা দেড यान वारभक्ताम किथिए अरू, शत्र उद्धार मृहर পিও পাওয়া অতি কঠিন। থনাত্ব'ৰণ অতি কুদু ২ लिख প्राथ इन्हा बाब, बनः छाहारक श्रखन-

হইতে পৃথক-করণার্থে প্রথমতঃ বৃহৎ ২ লোহ উদ্থানে এ প্রস্তর চূর্ণ করিতে হয়, পরে জনে থোত করত অবশেষে পারা মিশ্রিত করিয়া অমিতে দথা করিতে হয়।

पृष्ठी छितिन्तु ।

ইনাশের মূলীভূত বৈরিকে কদাচা কুদু জ্ঞান করা উচিত নহে, অথি-কুলিক পরিমিত হইলেও কি ক্ষণ-কাল মধ্যে তৃণরাশি ভসারাশি করিতে সমর্থ হয় না?

বীর হইয়া যদি পরাক্রম প্রকাশ না করে, ছাছা হইলে তাহাকে কেহই ভয় করে না, চিত্রা-পিত ব্যাঘু লইয়া কি বালকেরা জ্রীড়া করিতে বিরত থাকে?

রাজার প্রবল প্রভাপ থাকিতে রাজ্যমধ্যে কদাচ দৃষ্ট লোক বাস করিতে পারে না, সুর্য্যের তেজঃ বিদ্যমান থাকিলে অন্ধকার কি প্রকারে অবস্থিতি করিতে পারিবেক?

সময়ের হলাবল বিবেচনা করিয়া যাহারা কাষ্য করে ভাহাদের কাষ্যই কলজনক হয়, দাঁব (লক্ষ্য) বৃষ্ণিয়া খেলিতে পারিলে কি কখন হারি (পরাজয়) হইয়া থাকে?

ি বিধির লিপি খন/থা করিবার ক্ষমতা কা-ছারও নাই: অগাধ সলিল সমুদু পিতা ছই-য়াও কলকযুক্ত নিজ ভনয় চন্দ্রের কলক কালনে সক্ষম হইল না।

শনুশীলন করিতে ২ জড়বৃদ্ধিও ভাক্তা প্রাপ্ত হয়, খনবরত রজ্জ্র যাতায়াত হইলে কি পাষানে রথা পড়িতে অবশিষ্ট থাকে ? ভাল করা বড় কঠিন, দন্দ অনায়ানেই করা যায়; গৃহ রচনা করিতে অনেক বিলম্ব লাগে, ভালিতে অকুনে ও অন্তিবিলমেই পাল যায়।

পণ্ডিতেরা বলেন আপেন দুব্য যদি আপেন সন্নিহিত থাকে তবে আপেন বলা যায়, পরহত্ত গত আপেন পঞ্জিকায় দৈবজ্ঞের কি ফল দর্শে?

রদের কথাই কন্তক বা রোবের কথাই কন্তক কিছুতে শত্রুকে বিশাস করিবেক না, কল পড়ি-লেই অমি নির্বাণ হইবেক তাহা শীর্তন চ্ট-লেই কি এবং উষ্ণ হইলেই বা কি?

প্রক্তের কিঞ্ছিৎ ভেদহইলেই অনেক হয়, দেখ, সত্য ও মিথা। উভয়ের মধ্যে চারি খা-সুলী মাত্র অন্তর, অথচ দেখা বিষয় সকলোই সত্য বলিয়া মানে শুনা কথা কেহই বিশাস করে না।

(অর্থাৎ চক্ষুঃ কর্ণ পরস্পার চতুরস্থল ব্যবহিত্য)

ভাল হইতে মন্দ ও মনদেইতে ভাল বস্তুর উৎপত্তিরূপ ব্যভিচারও কথন ২ দৃষ্টিগোচর হয়, দীপজ্যোতিঃহইতে কজ্জল ও কর্দ্দাহইতে কমল উৎপাঃ হওয়া অভিপ্রাদিদাই রহিয়াছে।

দাস একান্ত সাধু প্রভুপরায়ণ হইলে সাধু প্রভুর দুক্ষর কার্য্যও সাধিত হইয়া থাকে, অঞ্চদ ও হনুমানদারা জ্রীরামচন্দ্রে জানকার উদ্ধার তা-হার এক নিদর্শন স্থান।

বজ্জন মিলনের সূথ দুর্জ্জন সন্ধতি হইলেই বিলক্ষণ জানা যায়, নিশ্বপত্র চর্বণ করিলে ইফুর মিষ্ট আয়াদন সুচাফরণেই ব্যক্ত হয়।

योहात गहि मिलन हरेल मूर्थापत हत, ठाहात विरक्ष पूर्थना हरेत। यात्र ना; मूर्यात मूथावटलाकरन कमरनत विकास ও তদ্যতিরেকে তাহার সংকোচ দেখিলে আর প্রমাণ চাহিতে হয় শা। তাহা সময়াস্তরে উপকারে আইনে, শন/কেত্রে প্র- ্রোধ করিয়া থাকে? गमला व शमाथ मकल विनिमुक्त इवेदनवे मू- कितिदा कि वाका व्यक्त मनिन कितिए जुिक केदत ?

न्धिः अन्वन कलित शानि कता।

ाधकरेट पृथ्यत डेस्शिव श्रीमक् चार्छ, কিন্তু ওণ্চইটেড দুল্ম প্রাপ্তিও দৃষ্ট হয়; শ্রণ-। গুচু পূর্য়ক কেছ অভিফোণ মাইতে প্রনৃত্ত ছইত দা। মনে হর-মধুরভাষা শুক্লক্ষির পিঞ্রবন্ধন ইহার पता छ उन ।

ভাল মন্দ সকলেই মহতের আশুয় পায়, দেখ छन्म, मर्था, छल, ज्याधि, इहाता (स्वरत्व सहा-দেবের আ**্রিল্ড হট্যা রহিয়াছে।**

বিনা অনুরোধে অন্যের আশা প্রণ কর। নাধু ব্যক্তির ধর্ম, প্রত্যেক গৃহ বিভিমির করিয়া

অতি তৃত্ত পদার্থ মতুপূর্বক রক্ষিত হইলেও | প্রকাশমান করিতে কি সূর্য্যদেবকে কেছ অনু-

ভিশ্বপিত 🐤 ময় পুঞ্জ দেখিয়া মৃগ মহিষাদি 🍴 নীচের সহিত সম্ভাষণ কিছা সংবাস কোন-পলায়ন করিলে কি ক্ষকের ক্ষতি নিবৃদ্ধি হয় না? মাতেই কর্ত্তব্য নছে, প্রস্তর্থণ্ড কর্দমে নিক্ষিপ্ত

চ্ফে সম্পন্ন কাৰ্য্য বলা যায়, অভিবৃত্তি অনা- ামিউ২ সকলেই কহিয়া থাকে, কিন্তু মিউচো ेव खे भरहः यनिष्ठ शिल প্রবৃত্তিকেই মিট বলিতে হয়, মহিলে মিছরি প্রভৃতি পরিত্যাগ করিয়া আ-

> विना ভোগে अक्षय कतिएन (म धन होसाउडे পর্যাপ্ত হয়, তাহাতে সাঞ্চায়কের কর মদন করিয়া মঙ্মফিকার ন্যায় কেবল অনুভাপ করিতে रूझ ।

> उँ कुट निम्ता भीष्ठना इधेरमङ सोकः इहेरल তাহা গুহুণ করিবেক, অপবিত্র স্তানস্থিত কাঞ্চন शृहरन क विधिष्ठ इहेशा थारक?

প্রাকৃত-ভূগোল

ज्यश्यलत रेनमर्जिकातजा वर्गन विषयक गृहा।

ইতিপূর্বে এতৎপত্তে প্রাকৃত-ভূগেশল-বিষয়ে যে সকল প্রস্তাব প্রকটিত হট্মাছিল, অধুনা তাহ একরিত করিয়া কুদু পুত্তকাকারে মৃদুত হইয়াছে, এবং তাহার বিশেষ পরিজ্ঞানার্থে এক থানি দ্রোলের মানচিত্রও প্রাস্তুত হইতেছে। উক্ত মানচিত্রে ভূমণ্ডলের অব্যাব, ও পর্বভ, দেশ, নগর, স্মৃদ্, নদা প্রদৃতি সকল প্রধান পাদার্থের নাম অঞ্চিত থানিবেক, যপর প্রথিবীর কেন্ ভালে কি জি বৃক্ষ ও পশু আছে, কোন্ দেশেই উফতা কি প্রকার, কোথায় কি পরিমাণে বৃষ্টি হয়, কোন্ প্র-দেলে কি বলের মন্ত্র আছে, কোথায় কোনু সময়ে জোয়ার হয় সমুদের দ্যোতঃ কোথায় কোন্ দিগে व-केंट स्टक्क, के क्यांकि विविध विवर्धत दिवेतन किन्न वर्णाकित विन्यारम श्रीकामीकृष्ठ क्वेट्य । वक्राप्तरम এতাদুশ মাত্র চিত্র কদাপি প্রস্তুত হয় নাই। বিদ্যার্থিগন এই উভয়ের সংহাদেও ভূণোনের প্রাকৃষ্ণা-ৰতার বিবরণ অনায়াদে বিজ্ঞাত হইতে পারিবেন। অদ্যাপি মূল্য নিক্সিত হয় শাই; নোধ করি উভয়ের মূলঃ ছয় টাকার অধিক হইবে न। \

विविधार्थ-मञ्जूर,

তাৰ্থাৎ

পুরার্ত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিণ্দ-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

भकाक ३११७, जगुरुश्वत।

वूँ (पना पिरगत विवत् १)

🗡 তি-জ্ঞারামচন্দ্-তনয়কুশের বংশ-🥽 জাত কচবহুদিগের বিষয়ে বিবি-প্রি)))))))) ধার্থে কয়েক প্রস্তাব প্রকটিত। বুঁদেলাদিগের কোন উল্লেখ হয় নাই; অধুনা ড্ছি-ষয়ে কিঞ্চিৎ লিপিবদ্ধ করা যাইতেছে।

কুশের পুঞ্জ হরিবুক্ষ ; তিনি উত্তরকালে পিতৃদত্ত অযোধ্যার আধিপত্য প্রাপ্ত হইয়া মহীপাল-নামে খ্যাত হইয়াছিলেন। তৎপরে তৎপুঞ্জ উদিম, ও **उन्मस्त छन्नत्र इनमान ताक्याधिकांत करतन।** তাঁহার উত্তর।ধিকারী বিমলচন্দু। তিনি যুদ্ধবিদ্যা, সাহন, মহিমাদিতে অদ্বিতীয় ছিলেন। তাঁহার মরণানন্তর তাহার পুত্র ছত্তপাল বিংহাদনে আ-রোহণ করেন। তৎপুঞ্জের নাম যোধপাল। তিনি বিহল্পরাজ বা বিহল্পশের জনক ছিলেন।

রাজা অনুক্রমে অযোধ্যায় আধিপত্য করিয়া উত্তরাধিকারী रहेश

estanti della Carti. Come Promissione (C. C. Alexandria े शूर्वक वातानशेष्ठ हास्वधामी ज्ञालन তাঁহার রাজ্য-শাসন-বিষয়িণী ন্যায়-পর্তা ও <u> ২০০০০০ র্থাবংশাবভংশ অযোধ্যাধিপ- অন্যান্য সদ্প্রধারে বশন্দ হট্যা প্রয়ারা</u> এমত সম্ভপ্ত ও সুখী ফ্ইয়াছিল, যে রাফার প্রতি ধন্যবাদ ধ সন্তোশ-প্রকাশ ব্যতীত ভা-হাদের মুথে আর কিছুই শ্রুত হইত না। সেই হইয়াছে; পরস্ত তাহাতে কুশবংশের অপর শার্থা। সময়াব্ধি যিনি২ কাশীতে রাজা হইয়াছিলেন, नकत्वर कामीयत डिलाधि श्राथ इन। कामी-প্রদেশের এক প্রধান রাজা গুছিরদেব। তৎ-পুঞ মহাবল-পরাক্রান্ত বিমলচ্দু। তাঁহার তনয়ের নাম গোপীচন্দু; তিনি যুদ্ধবিদ্যায় অভি নিপুৰ ছিলেন। তদনন্তর তৎপুত্র তিহিনপাল সিংহা-সনে অধিকাঢ় হন। তাঁহাছইতে ক্ষেত্রধর্মের বিশিষ্ট উন্নতি হয়। তৎপুঞ বিক্সৱাজ। তিনি বিজ্ঞানশাস্ত্ৰ ও শিল্পানাস্ত্ৰে বিশিষ্ট পাৰদৰ্শী হই-য়াছিলেন। তথপুত্র নুনিকদেব। তাহাদ্য পুত্র বে-**रिभरित । जना प्रक कर्ड्ड्न्न्यूका । दोत्र**ङ्खत ठाँदात পুঞ। ঐ বীরভূথরের দুই জী। ভাছার একের গর্ম্ভে মহীপালাবধি বিহন্ধরাজ প্যান্ত কাত জন চারি পুঞ জম্মে। তাহাদের নাম জ্ঞাতসার নহে। चलरतत्र अकृषि शृथा जाहात्र नाम लक्षमा छेउद्र-यान। जमनखन्न कानीताल टेशक्क अत्याथात कारल खे कनिष्ठ ताल-निःशामान आरम्भन তদ্ধিকার-পরিত্যাগ- করেন। পরে তাঁহার ভাত্তত্প্র চক্রাস্ত করিয়া

করিয়া ভাছার: এক২ ভাগ লইয়া শাসন করে। কথিত আড়ে, পঞ্চম ভ্রাতৃদিগের অত্যাচারে कत्र हरामीत अशिवनास नियुक्त हन। जे আরাধনায় কিয়ৎকাল গত হইলে পর তিনি একপাদে দপ্তায়দান থাকিয়া অনাখারে দি-वाहाज विकालांगिमांत प्राप्त निमध हहेता नह দিনৰ যাপন ক্রিলেন, তথাপি কোন ফল দৰ্শিল ' না; অভএব দেবীর প্রতিত্থে আত্মহতায় ক্ত-তেছেন, এমত সময়ে দেবা সাক্ষাৎকার হইয়া তাঁহাকে দদাশীঃপূর্ক কহিলেন, "আর তো-মার ভয় বাই: এই ফণে তোমার নকল মঙ্গল হুটাবে: ভূমি এই খড়ুগ থানা ন্যতে রাথিও: ইহা হইডেই ভোমার সর্ব্র জয় হইবে "। অপর তাঁহার গলদেশমইতে যে একবিন্দু শোণিত নিগতি হইরাছিল, ভদুপরি অমৃত সিঞ্চন করত তা-ছাকে এক শিশুরূপে জাবিত করিয়া বাৎ-मन/ভाবে उनशान कहावैदान। 🖒 (मानिक-বিন্দুজাত ভালকের নাম বীর্কিছ্ এক শোণিত-বিন্দৃহইতে ভাষার জন্ম হইয়াছিল বলিয়া তাঁ-हाह दहन ''दिन्तृ क्यानः'' क उप्तराहुः (न ' वूं-দেল: " নামে বিখ্যাত হয় :

এই গণের নিগৃঢ় তাৎপর্য্য কি, তাহা নিক-পিত কর দুঘর: বোধ হয়, পঞ্চম পার্বর: कान इम्बारक दिवाइ कहिया बक्कि शूख উৎপাদন কংলেন: তাজাকে লইয়া ডিনি বি-ক্ষাপ্রতের নিজটে এক রাজ্য ভাপন করেন, এবং जाहाहे देसनथड नारम धानिक हम।

॰ নূতন-স্থাণিত রাজ্য অতি অত্প দিনসংখ্যই। হইবার যোগ্য নহে। পিতাপ্তের শৌর্যগুণে ও সৎশাসনে উন্নত

তাঁহাকে রাজ্যচুত্ত করত রাজ্য চারি ভাগ হইয়া উঠিল, বিশেষভঃ পুঞ্জীর রণপাণ্ডিত্য আহি স্থাসংশনীয় ছিল। তিনি পূর্ব অঞ্চল পরা-জন্ম করিয়া নিজ রাজ্যের বৃদ্ধি করেন; অন-ঐহিক-সুথে দিম্থ ছব্য় বিস্বাচলে আরোহণ তির উত্তর দক্ষিণ পশ্চিম রাজ্য-সকলও অধি-কার করেন। পরে তিনি আবগন্জাতীয় সন্তর-নাথকে আক্রমণ করিয়াছিলেন। কালিঞ্জরের দুগাও তৎকর্ত্ত আক্রমিত হয়। তদ-নম্ভর তিনি মোহিনীতে গমন করিয়া তথায় নিজ ताक्यांनी उपान करतन।

তাঁগ্রে পরলোক-যাত্রার পর তাঁছার পুঞ্জ কুরণ প্রতিজ্ঞ হুইয়া আপেন গলদেশে অভ্গাঘাত করি- : রাজ্যাধিকারী হন। কুরণের অপর নাম বলবস্ত। ঁ ঠাহার প্ঞ অজ্লেদপাল ও পৌঞ বিহিনপাল। ঐ সিহ্নিপাল হরসড়ের ধূণ্য করিয়া কৈত্রে বহু-कान दाङ इ कदिशाष्ट्रितन। छोशद नमन गर-জেন্দু, তয়ন্দন নুনিকদেব, তাহার আত্মজ পৃথিবী-हाक। इति ভূম छल् প्यू ताकात नगर नगरानत उ यमका रुवेदाहितन । वेदात भूटवा नाम तामहन्। তিনি তত্ত্তানে জনকরাজের সমান, সুখ্যা-তিতে যথাতি তুল্য, ও মহদ্যণে প্রিয়ম্বদরাজার সদৃশ ছিলেন। তাঁহার পুঞ মেদিনামল: জনুনয় মিলকুহান। তৎপুত্র কদুপ্রতাপ। তিনি উচ্চা-নগর তাপন করেন। তাঁহার দাদশ পুঞ জন্ম। ৰুদুপ্ৰতাপ অৰ্থি কুলনন্দন প্ৰয়ন্ত কয়েক পুৰুষ अविवादन वैदननथरछ ताका करतन, किन्न जी-হাদিগের রাজ্যকালে কোন বিশেষ ঘটনা হয় নাই; অপর কেছ বিশেষ খ্যান্ত্যাপন্নও হন নাই! কুলনন্দনের চারি পুঞা, থড়গরায়, চন্দু, শোভন-রায় ও চম্পতিরায়। তাহার। সকলেই মহাবল-পরাক্রান্ত; বিশেষভঃ চম্পতরায়ের অনৌকিকী ্কীর্ভি ও অলোকসামান্যগুণ্যাম বর্ণার আরুং

প্রবলবলদর্গিত রাজ। চম্পতরায় শাৰ্জান

বাদশাছের সমকালে বর্ত্তমান ছিলেন, এবং দশনৈ প্রধান হ বীরদিগেরও হৃৎকম্প কইড: ক্রি প্রিত্যে যশোলাভ করিয়াও ঐ ভ্রাতারা কেছট চম্পাররাযের গৃছে অবতার্ণ হইরাছিলেন।" হ্রশালের তুল্য হইতে পারেন নাই। ঐ ছ্রশাল

তাহাকে রাজস্ব দিতে অসমত হন; এই প্রযুক্ত কিন্তু ভ্রাতৃদিগের অসাধারণ গুণ ও প্রয়ত্ত্ব সহজাকে উक्ত यदनतीक व्यमध्या दलपल ममिख्याहारत जाहात महीयमी मर्यापा ଓ कीर्खि छैन्नि जिला लहेश **मिलीहहेर७ या**जा कतिशा मरेनरना ठीहात हहेशा छेठिशाছिल। कन्छः नमीमकन संভाव 🖘 রাজধানী আক্রমণ করিলেন। আদৌ উছার সময়ে ২ পাবিত হইয়া ভূমিকে উর্বরা করত দুর্গ অবরুদা হইল। তদনন্তর নগরস্থ প্রজা- লোকের কুশলবৃদ্ধি করিলেও ভাগীরথার স্থিত বর্গের ভবন সকল উৎসন্ধ ও তাহাদের সম্পত্তি 'মিলিতাবস্থায় যেমন তাহাদের মহ নাম ও ৩৭ मकल ल्थिड इडेटड लाशिन; किञ्ज हम्भाउताप्त ल्थायायः इडेया अदारमत नाम ७ ७८० थाउ তাছাতে ভীত না হইয়া বহুসঙ্থাক দৈন- হটয়া উঠে, তেননি ঐ ভ্রাতারা সোদর ছব-সামত্তে পরিবৃত হইয়া তুমুলসম্ভামের উদেনাগ শালের অনুযায়ি হইয়। তভাবাপর হইয়াছিলেন: করত নমর কৌশলে ঘবন্দিগকে পরাস্ত করত তাহাদের পরস্পার কিছ্মাত্র বিভিন্নতা ছিল জল্পাকালমধ্যেই শতুহইতে মুক্ত হইয়া পরম- ন। ব্দেলথণ্ডের ইতিহাদলেথকেরা ভাছাদের সুথে রাজা করিতে লাগিলেন। তাঁহার পুঞ একাভাব দৃষ্ঠান্তদারা এই দপে নিষ্ণায় করিয়া সারবাহন, কঙ্গদরায়, রতুশাহ, ছত্রশাল, এবং গিয়াছেন, যে "যেমন ত্রিপথ গামিনী গঙ্গার তি-গোপাল। ইহার: সকলেই পিতৃবৎসল। ধর্মা- ''ধারা হুগ মর্ভ্য পাতাল গতা হুইয়াও প্রক্ষার নুষ্ঠান, সাহস, মহত্তু প্রভৃতি প্রধান ২ ওণ- "ভভেদকপে প্রভীয়মানা হয়, তেমনি ছত্রশালের গণে ভাঁছার। সুশোভিত ছিলেন। ভাঁছাদের শুভুত্চতুইয়। প্রতাপ-বিষয়ে তিনি স্টাদেবের মধ্যে রত্নশাহের প্রতাপে শত্র্যকল পর্বতীয়- সমান হুইয়া পিত্রাজ্যের তমোবিলাশ করত স্থানের আশুয় লইয়াছিল। তিনি উক্ত পর্বচার- প্রজাবর্গকে সং ধর্মে নিযুক্ত করিয়াছিলেন। দুর্গের অধিকার প্রাপ্ত হইয়া পরাজিত রাজ্য- বুদ্ধিমত্তায় তিনি দকলের উপরি গুরুত্ব প্রকাশ সম্দায়ে নিজাধিপভা, স্থাপন করিয়াছিলেন। জ- ফরিয়া গিয়াছেন। যেমন ভূতভাবন ভগযান বিঞ্র পর তিনি অঙ্কদরায়ের সহিত একবাকা ছইয়া অব্তার আদিতা ও রামচন্দু, কশাপ ও দশরথের মুছব:-মগরের নিকটে এক তুমুলসঙ্গুমে যবন- গৃছে জন্ম পারিগুছ করিয়া তাহাদিগবে পিতা দিগকে পরাজিত করিয়াছিলেন। পরস্তু রণপা- বলিয়াছিলেন তেমনি ভগবান বিষ্ণু ছব্রশাল্**রণে**

मस्थानकमारज्ञहर जन्मविषयः जातोकिक শিপে এবং যুদ্দ বিদ্যায় তৎকালে অদি চীয় গণে প্রচারিত ত্ইয়া থাকে, তথা ছত্রশালের विवास १९११ इन्हें साहित्वन, मोजिनिमास अविद्यान- कियावियस जाहात जाहात नाहै। अधियस अल्य শাজেও অতীব নিপুণ ছিলেন। তাঁহার প্রধানত। আছে, যে যে সময়ে চম্পাতরায় শাহ্জহানের ও বিজ্ঞতা দেখিয়া ভ্রাতারা তাঁহাকে যৎপরোনাতি প্রতি ক্ষবজ্ঞা প্রকাশ করিয়া যোরতর সম্পুরেম সন্মান করিতেন। সন্থামকালীন তাঁহার অলোক- প্রবৃত্ত ছিলেন তৎসময়ে ভাহার নর্জে/। आজ-সাধারণ সাহস বীর্য পরাক্রম প্রভৃতি গুণগুমন কুমার সারবাহন চতুদ্দিবর্ষবয়ংক্রমের বাইক

रुहेशा यद्शासास्ति भहाक्रम, वीहच, द्रग-চাতুরী প্রভৃতি মহদ্রণ প্রকাঞিত করিয়াছি-লেন। রণভগ্নাতে তিনি বিহারাথ থেলতহারে যাত্রা করত তথায় ব্যন্তগ্ৰ-স্মভিব্যাহারে অন্ত-শস্ত্র-পরিভ্যাগ-পর্বক নারি-বিহার-করণে প্র-वद्यान इहेहाएइन, अयु नयस जाहाद अकाक इक्टेन १व उठ्यानशुरम यवनरेमना निविद्यमः छापन করিয়া ওছিলাছে। তৎ সময়ে তাহারা প্রানাদ-हरें । माहदाश्यां अधाया विस्था मध्याम भानेक दिना कालवारक भई छोत्र भथ मिया যুবরাজের শিবিরের সল্লিহিত হইয়া ভাঁহাকে আক্রমণ করিবার জন্য অগুসর হইল। সার-বাহন তাহাদের উপস্থিতিমাত্র জলহুইতে উঠিয়া ভারতিত তত্ত্ব-শত্তাদি গৃহণপূর্বক আত্মরক্ষণার্থ প্রস্তুত হুইলেন। অতিশয় প্রলম্বাকার বিকট-मृद्धि रेमध्रम এयः श्वाकशास्त्र निक्रेशिष रहेन দেখিয়া **নারবাছনের দক্ষিরা ভারে কাডর ছ**ইয়া । शवासम कहिल, किस गाहराष्ट्र कज्बधर्यं अनू-গাণা হইয়া শালুসম্মুগতইতে পলায়ন করি-লেন না; বরং জলবিখারাদির ব্যাঘাত হও-য়াতে বৎপরোশান্তি জোবপরবশা হইয়া শত্র-দিগের উপরি উপর্যুপরি বাণবর্ষ। <mark>করিয়া তা-</mark> ' হাদের অধিকাংশ নিপাত করিয়া ফেলিলেন, वि व भन्तार्य पूर्विभारक এই युष्कार उन्ने जिनि এর্ত্ত্রালা সম্বরণ করিতে বাধ্য হইলেন।

সার্বাহ্নের মর্নসংবাদ শুবন্নাত্র চলপতরায়

১৯০৮ শোকাকুল হুইলেন; হাঁহার ছীও এল
নালে শোকনাগরে নিম্মা হুইলেন, এমত সময়ে

ক্রমা সেই শোকসম্ভণ্ডহন্যা রম্না রাত্রিযোগে

নিচিতাবভায় মুপো দেখিলেন, যেন নার্বাহ্ন

চাহার নিকট কহিতেছে; "না মা! আর

ক্রম্পক শোক করিও না, আমি পুনর্বার তো-

मात शर्दा व्यवणेन हरेग बदः निष् समारिशकाय समास्रत ज्ञामात मर्ग नास्ति ७ मृथ श्रमान कतिया निष्ठितत्विर्याण्टन ममूण्डि थण् कतित।" युक्तिमणी तासमहिषीत निष्ठाण्ड रहेल जिनि नप्राय स्नृत्वास व्याप्तानास वर्गना कति-लान, बदः एष्ट्रवर्ष मकलारे विकाशानास हरेन। व्यनत शिक्षी यथाकारम बक भूक्ष श्रमव कति-लान। त्यरे भूरद्यत नाम एक्नामान ।

व्यापन टेमनामारखंद भंताहर मःवारम मार জাহান পাদশায় অভ্যস্ত ক্রেছা হইটা চপ্পাত-রায়ের দমনার্থে পার•পর দুই ডিন পান্ডে/ছারা टेमना-१र्द्धान । अ. सग्नः पूज-याका कहियाहितन, কিন্তু করিয়-ধর্ম-প্রতিপালনে অংশর চম্পত-রায় কিছুতেই পরাভূত হইলেন না; বরং দিন ২ **উग्न**ठ **इ**हेर्ड लागित्नन: वित्मध्छः रेएम्ल्यख-প্রদেশের ও তন্মিকটন্থ সমস্থ হিন্দু রাজার করম্বৰূপে আপন্থ রাজ্যের উপসভু হইতে एजूर्थाः न भूषं जाँशास्त्र भूमान भूवक जाँशाह श्वर्धीनङ! स्रोक्षात्रा कहाएड, क्षेत्रहात वन 🤏 क्षेत्रह ्रयोत अष्ट्रद्धि । इहेल । तक्यल शाहास्मिश्ह নাম' তাঁহার এঞ জন জুটে তাহার নৌভা-গ্য-দৰ্শনে मञ्जूष হয় गाइ, এगং প্রকাশে। বন্ধুতার ভাষ দ্র্ণাইয়া শান্তরে ভাছার বিনা-শের চেষ্টায় নিখুক্ত ছিব)। একদা সে রাজা **চम्প उद्गायाः विमक्ष** । कश्चिमा छाध्रुवमाथ्य विष-প্রয়োগ করিয়াছিল, বিজ ভাগতে কৃতকাষ্য ह्य नाहै; लात अक्ष एक्षामा क्रीनोरयादन जा-হার গৃহমধ্যে প্রবৈশ্পুর্যক তাঁহার বিনাশের চেষ্টা করে, তাহাও/বার্থ হয়; পরস্ত রাজ মাতা এই জাতিশ্লিতায় ভীতা হইয়া চল্পত-

ক্তিয়শাল (কথাৎ ক্তিয় প্রধান) শবের অপভ্যাশ ভ্রশাল শব উৎপন্ন হউরাছে।

রায়ের অনুরোধ করিলেন, যে "এইক্ষণে শায় জহান পাদশাহের সহিত সঞ্জিকরা ভোষায় বুরায় ভোমার অমহল ঘটিবে।" রাজাক এ পরামর্শ গুভি করিয়া দিলীরাজধানীতে দুত-প্রেরণ করত বুদ্ধিকৌশলে অনায়ালে দিল্লাধি-পতির প্রাদভাজন হইলেন, এবং তদবস্থায় কিন্নৎকাল সুথে যাপন করেন।

১१১८ मःवर्मात मार्ह छहान शाम्मार्ह्ह মৃত্যু হয়, এবং তাঁহার পুএচতু ইয় পিত্রাজ্য লইয়া তুমুল বিবাদ উপস্থিত করে। সেই বিবাদে চম্পতিরায় রাজকুমার আওর**স্কজে**বের সপক হট্য়া আপন রাজ্যের সম্যক্ দৃঢ্তা-স্থা-পন করেন। কিন্তু রাজপ্রনাদ অতি অপ্সক্ষণ व्याध्यक्रकारवय महिल प्रभय क्रिया व्यविमायहे জ্ঞাত হইয়াছিলেন। শাহ সুজার সহিত আ-ওরক্সজেবের বিবাদসময়ে আওরক্সজেবের সঞ্চিত চম্পতরায়ের বিচ্ছেদ হয়; তদৰ্ধি দুই তিন বৎসর তিনি দিলাধিপতির সৈন্য সহিত যুদ্দে शुन्ध २ अशो **इहे**श **हित्तन, किन्ত व्या ७ तक्य रज**त्य त প্রসাদলালসায় সুজনরায়নামা এক জন প্রধান ও व्यनताना व्यत्नक दूँरमलाज्ञा क्रम्भावज्ञारमञ्जलकारी इहें या जाहारक अ श्राकांत्र कीन वन कविरनक य তাঁহাকে পলায়ন করিয়া নৈন/রক্ষা করিতে হই-ল; পরস্তু পলায়নাবস্থায় কত কাল যাপন হইতে शास्त्र यवनद्रारकद्र टेमन्य-मामरखद्र अकार हिन না; তিনি পুনঃ ২ নৃত্য-সৈন্য গ্রেরণপূর্ক অণপ-कालमार्था विकास कार्या महामार्थ कार्या विकास किया তাঁহাকে ও তৎপুঞ্জন্নকে বীৰভাগ্য পূহৰ কন্নাই लन। बाबीब अपवदाप्रहै छै। हाब बार्की बरका-অজ্ঞাৰাত করিয়া মানবলীলা ম্বরণ করেন।

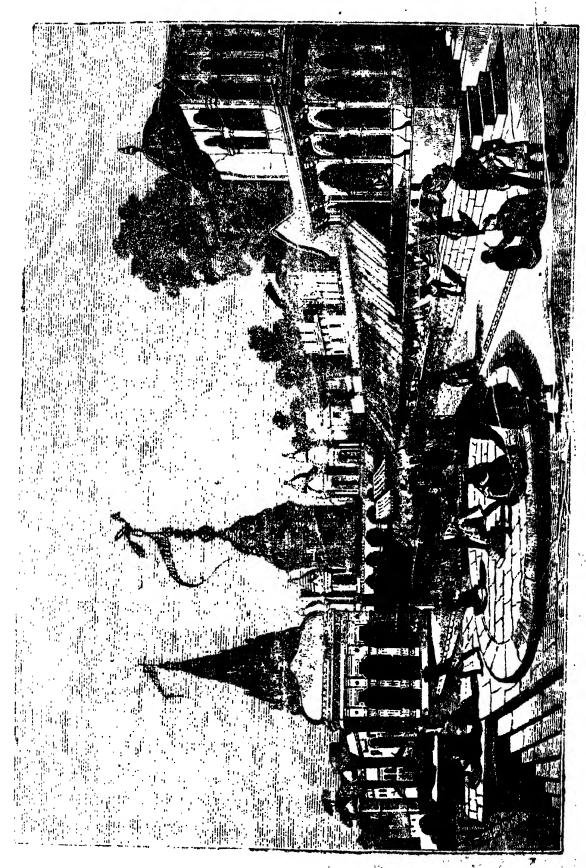
ঐ সময়ে চম্পতরায়ের অপর পুএ জড়দ হায়, হত্রশাল ও বলভ মাতুলগ্ছে অব্ভিত कर्खन, नजूना काणिनिरताथ । बाकिनिरतारथ हिल्लम। उथायहे जाहामिरणेत शिकृतिरयान সংবাদ সমাগত হয়। তৎশ্বণমাত্র সকলেরই মন शिक्-माक्रातिक **मस्य ७ महा**व/रक्न २३३१ ছিল; বিশেষভঃ চল্পতের প্রাশ্বিদ্ধোগে নকল শত্রাজারা দর্বত হইতে মস্তক তুলিতে লাগিল, जम्र्रं जाहात वः स्थात मकरलई अककारन हरान रुरेशा পড়িলেন; পরস্ত নিরুপায়, কি করেন; সুতরাং সংসারের অনিভ্যতা দর্শন করিয়া ক্রমে ২ म्राम किश्वि देशर्यावनयम कतिए नानिस्नम ।

इज्ञान एम्ह्याज्ञ-निर्दार्ट्ड उलाय-विहीन इहेशा भारत मामार्ग्य कर कि शिष्ट व्यर्थम् दूर করিবার বাসনায় দক্ষিণপ্রদেশে রাজা জয়-স্থায়ী ইহা প্রসিদ্ধই আছে; তাছা চম্পতরায় বিংহের উপাদনা করেন, ও তথায় এক দল গৈন্যের অধ্যক্ষতা প্লাপ্ত হন। পরে ওাঁহার অপর ভা্তারাও পিতৃসম্পত্তিচূত হইয়া ছিন্ন-ভিন্ন হওত সকলেই কমলার প্রসাদাভাবে বিদে-শগত হইলেন; চম্পতরায়ের নামরফার্থে কে-হই বুঁদেলখণ্ডে উপস্থিত রহিল না! পরস্ত 🖪 অবস্থা বহুকালস্থায়ি হয় নাই; অণ্পদিনমথেই ছত্রশাল বিশিষ্টকাপে পিতৃবৈরনিখ্যাভনপুর**ঃসর** পৈতৃকরাজ্যের উদ্ধার করিয়াছিলেন। এ বিবর্গ স্থানাভাবপ্রযুক্ত এতৎপত্রের অন্য কোন খণ্ডে প্রকাশিত করিবার মান্স রহিল।

वात्रागनीत घाष्टेविवत्रगः।

🍇 😘 😘 वर्गमी वाजानमात्र वर्खमानमञ्ज-जित्र माथा वांचे मन्मित এव॰ वृष्ट् अस्मितः भगशीत वर्जमानावद्या वर्णम अस्मित्रभाष्ट्रिक कतिएण क्रेटिन अथमकः जे जिल्हाम्ब वर्गनरे मस्टब, बदः उजारमे घारे, अञ्चल कर





প্রস্তাবে ঐ অবিমুক্ত-নগরীর মনোহর ঘট নক-লের কিঞ্চিৎ বর্ণন করিব।

কাশী-নগরীর আয়তন অতি অপো; ঐ অপো-श्रात वल्मस्थाक मित्रानय अ चाउँ निकामि আছে; অপর তত্ত্র পথসকল অতি নঙ্কীর্ণ ও বাটীসকল অত্যস্ত উচ্চ, সূতরাং নগরী-মধ্যে পরি শুদ্ধ-সমারণ-সঞ্জানের কোন উপায়ই নাই। অধিকস্তু পথ ও পয়ঃপ্রণালী পরিফ্ত রাথিবার मुज्रथा ना थाका अयुक्त ममछ नगरी मूर्गस्व পরিপূর্ণ থাকে: এবং তথায় বান করা অত্যন্ত কেশকর। সমস্ত নগরী মধ্যে কেবল একমাত্র তান আছে, তথায় এ ক্রেশহইতে নিজ্তি প্লাপ্ত হওয়া যায়; দেই স্থান ভাগীর্থির তট। তথায় বায় নদীর বারিহিলোলে সুনিপা হইয়া তপন-ভাপিত নগরবামিদিগের দেহ শীতল করিতেছে; धर्मार्थी गक्त मिक्यनामिनी काश्र्वीत পांच्छ সলিলে অহরহঃ সান করিভেছেন: ধনাভিলাযির প্রদাস্ত প্রস্তর-সোপানোপরি উপবেশন-পূর্বক বা-<u> বিজ্য-ভ্যাপারের কথোপকথন করিতেছে; অল-</u> महा नमीक्टवें आक्ट्या-स्थाडा-मन्द्रभारत का-লক্ষেপ করিতেছে; গঙ্গাপুত্র-নামা ভণ্ডতথ-স্থীরা শুডাগুর্বক শুবোধ-ধর্মভীকদিগের অর্থা-পহরণ করিতেছে; ফলতঃ তৎস্থানে জ্ঞা, পুরুষ, नुम्न, वानक, मर, व्यमर, धार्मिक, नम्भावे, कर्मठे, ष्यलम, धनी, ও দরিদু, সকলেই দিবসের অধি-**কাংশ যাপন করিয়া থাকে; সুতরাং ভাছা সম**স্ত নগরীর বৈঠকথানা- বর্জা হইয়াছে। এই প্রযুক্ত ধার্মিক মনুষ্ঠেরা বারাণদীতে ঘাটনির্মাণে যা-म्य वाश्चान कतिहा थारकन, अखानिकामिन-मार्व छाम्म वाश करतम नाः छथा कामोत नमूर्थ यान्त्र इस् मध्याक वृह्द २ वाष्टे श्राहर, ভ বৰ্ত্তৰ কুত্ৰাপি আর তাদৃশ নাই।

ফলিকাতার যাত্রী কাশার সম্পুথে উপনাত হুটলে व्यादमी 'वाक्याहे' नामक এकि वृड्ट घाटित प्रभन करंद्रगः। अर्व्यावस्य छाहात कान विटनय माहा बा নাই, পরস্ত তাহা কাশীহইতে চন্তালগড়ে যাতায়াত করিবার প্রনিদ্ধ পথ, এবং দেখিতে সুপ্রশন্ত ও मरनाइस वरहे। वक्षना महीहइटङ इंहा व्यक्ति पृत নহে। এই ঘাটের অভ্যন্তরে "প্রহাদ ঘটে", ভদনস্তর " ফটকেশ্বর ঘাট", তদনস্তর " তেলিয়া " नारम প্রনিদ্ধ এক কুদু माना; তৎপাম্থে কতকগুলি ধানের দোকান আছে, তদ্ধেতুক তৎসমুথস্থ नर्ग छ । 'शालाघाष्ट्र' नात्म विश्वतं जास्य। अ গোলাঘাটের পার্শে ক্রমশঃ দক্ষিণে "ত্রিলোচন-घाष्टे " " सङ्थायां । " " वालावाह्याष्टे " " नीज-लाधाष्ट्रेण प्रजृत्वि कर्यकरो। धारपेत शह "दाक्रमान-जलारा" नात्म विथान अक मूठाककाल निर्मिष्ठ প্রস্তর পোস্তা আছে: তাহার দক্ষিনে কয়েক অতি প্রসিদ্ধ ঘাট দৃষ্ট হয়। তত্তাদে বুক্ষবাট, তাহা দেথিতে সুন্দর নছে, পরস্ত তাহা অতি প্রাচীন বলিয়া বিখ্যাত। কাশীগণ্ডে উক্ত আছে, যে काल नगरश मिरवामान नामा कान गराबारणत প্ৰাপ্ৰতাপে শিব-পাৰ্নতী-প্ৰভৃতি সমস্ত দে**ৰগ্**ৰ কাশা-পরিভ্যাগ করিয়া পলায়ন করিতে বাধ্য रुरेश'हितन: उৎकात वृका **एमारवर्ग मगन्नी**-মধ্যে প্রবেশ করত প্রস্তাবিত-ঘাট-সন্মুখে এ-কটি শিবমন্দির স্থাপন করিতে রাজাজা প্রা-র্থনা করেন। ধার্মিকবর দিবোদাস তৎক্ষণাৎ তা-হাতে সমত হইলে বুক্ষা স্বনাম-পবিত্র-কর্নান্তি-नात्य उथाय "जुद्धमध्र " नात्म अवि निर्वालक সংস্থাপিত করেন: তা**হাহ্টতেই** উক্ত **স্থানের** माशाका इरेशार्छ। पूरे माठ वस्त्र इरेन कान महाताश्रीय थनी প্रखाविक माटित कोर्द्शकात করান, ও তৎপরে কয়েক বৎসর হইল, পেশ্বা

বাজিরাও ভাছার পুন স-ক্ষার করান; ভদবধি ঐ ঘাট মহারাষ্ট্রভাতীয় জীবিগের সানার্থে পৃথক্ আছে; প্রায়ঃ জন্য কেছ তথায় গমন কারেনা।

व्याघारहेत प्रकारणार्थं "छात्रधनिश्लोषारे", उद्भारक "प्रशिवाह", उनमञ्ज " भक्ष ग्राम्थाहे"। जे घारहेन जेलात जक नृहद खान (कहेक) चारह, जमात' व घराष्ट्रे अयज्जन कतिरु इस्। भारक ইহার অনেক মাহাক্স বণিত আছে, বিশেষভঃ कार्तिक मारम के बार्ले प्राच्यान कहा विस्थान-शुवाजनक-रवार्य वामोवामी-नक**रन**ङ् ভথায় व्यागमन कहिया थाएकनः अवः अ याजिकनिरशत नूथरमदनार्थ उर्धमस्य उथाय करनक भाजनाना ন্তাপিত হুইয়া থাকে। ইহার নামে। পত্তি-বিষ্ট্রে কাশাখন্তে এক রমা গণ্প আছে; তাহাতে বর্ণন करत य शूर्वकारन धुरुशांशा नामी এक श्रद्धमा-मुग्रती तमनी ছिल्न ; তिनि निक्रमामी ध्रत्यंत महि-ত কলহ করিয়া তাঁহাকে অভিশাপ করত ন্দৰূপে পরিণত করেন; ভাছাতে ভৎসামী ও কোপা-নিত হট্যা আপন স্ত্ৰীকে অভিশাপ-প্ৰদান-পূৰ্বক প্রস্তরকপ ধারণ করান। গুভপাপার পিতা ঐ ঘট-নায় দুর্গিত হইয়। কোন কৌশলে এ প্রস্তরীভূতা দুহিতার কণান্তর করত চন্দুকান্তমণি প্রস্তুত करडम; से मनि छन्त्रारक्षात्क पूर्व इहेडा नदीकरण পরিণত খ্য়; পরে ঐনদীরূপা ধূতপাপার সহিত बन्दान वर्षात विवाह निका हहेग्रा উভয়েই ঐ छात्न अलिङ इया अलड कान कात्व मञ्जा-গৌরালামা মহামায়ার প্রাত্তে সুর্যাদেশ ঘোরতর ख्याः नाथ्य कडिएठ र यख्डि इस. ख्या वे यस नमीकारण शहिनक इवेदा 'कितना नमी?' नारम ারেশকভানে নমগেত হয়; এই ন্দীত্র গঙ্গা ও महत्रकीत निधित मिथिलिका इहेशा शक्षामात डेब्लिंड क्डेग्राइ

जे वारिक्केंटल दामवाहै भर्षा असल जान शृद्ध विनामाधवरमद्वत श्रीमन्मितः वशश्च हिनः व्याउत्रहरक्षय भाषमाह जै मन्दित्तं উৎসাদন করল তাহায় প্রস্তরাদিধারা তৎসানে मन्सिम अपिम कर्यम। जे मन्सिम् छाप्म मुम्मा मरहः किञ्च जाहात छ्छूपिरंग या कथ-কটি তত্ত আছে ভাহা অতীব সুন্দর। তাহাদের প্রত্যেকর মূলের ব্যাস ।।। হস্ত এবং দীর্ঘতা ১৮ इस : कना का का किना का व कर्षे दिया में मन-(मण्डे-नामक धानिक उष्ठहरेड अधिक **उ**ष्टा ' बेश्किमृत्थ रुजान हरेश। कथन २ बे खटछत অপুহইতে দুভাগা মনুষোৱা লক্ষ্য দিয়া ভূ-মিতে নিপতনপূর্বক প্রাণভ্যাগ করিয়া থাকে: बक्ता अक जन ककोत उथाइहेट बक अस्था, মরের উপর দৈববশতঃ নির্বিঘ্যে পড়িয়াছিল; **जम्**टि मामान/लारिक विकाशालन भहेशा छा-हारक विश्वदेश अनुगृह्णाज्यतास्य मानाशिश हिल-हात-श्रमान कतित्वक; अवः त्न वर्णक, त्वाध एय. আপন দৈবশক্তি দশাইবার নিমিত্ত তৎপাঞ্জ অন্তর্হিত হয়, এবং তৎসক্ষে যাহার বাটিতে সে বাদ করিত হোর কিঞ্ছিৎ তৈজসাদিও 'মন্ত ছিড रुदेशाष्ट्रित ।

मारधाताय-পোন্তার অব্যবহিত পরেই । महन।

গৌরার " ঘাট; তৎপরে একটা ঘোঁভার "।। শে

"চোরঘাট," তদনস্তর "রামঘাট।" নেই চানে

একটা বৃহৎ ঘোঁভার মধ্যে জৈন দিগের " জনমন্দিল" নামক উপাসনাস্থান আছে। ত পরে

কিয়দংশ তট জনদিগে দীর্ঘাভূত হইখাছে। এ

তানে "অগ্রাখরঘাট" " এখনস্তাত এখং
"গুলরঘাট" নামে প্রসিম্ম তিন বাট
তথ্যে অগ্রাখর ঘাটই প্রধান। করে

হল তথায় পেশবা বাজীরাক এক

দান্তিক পণ্ডিত বাস করিতেন।

ক্ৰিকা ঘাট "।

ণানস্তর শিবপার্বতী তথায় প্রজা-সংস্থাপ- এক চিত্র মূদ্রিত হইল। त्मत्र वामना करतन। जनमूत्रारत जगवान् शूक-যোত্তম কাশাতে অবতাৰ হইয়া ৰীয় চক্ত-বিষয়ে এনার এই বর দেন যে "যে কেহ তেন, তাঁহারই ব্যয়ে নন্দির গুথিত হয়; পরে

অট্টালিকা নির্মাণ করিয়াছেন, অপর তথায় পূর্বে কাশীতে প্রাণত্যাগ করিবেক সে তৎক্ষণাৎ প্রমান সদানন্দ ব্যাস নামা ভুবনবিখ্যাত কথক ও বৈ- খাম প্রাপ্ত হইবেক । যে ভানে বিফু প্রথম चवलीर्व इरेशिहित्सन, जाशांत नामरे চर्गणा অতঃপর কয়েকটি অপ্রনিদ্ধ-ঘাট-ব্যবধানা-। দ্কা; ফলতঃ তাহা বিষ্ণুর চরণ চিহ্ন। অপর নস্তর "ঘোসলাঘাট"। ধর্মসম্বন্ধে তাহার কোন এ চিহ্নের নিকট যে একটি পৃক্ষরিণী আছে. विस्मय भाक्षात्रा नारे. किन्नु मुठाक-त्रक्ता-वि- छाराई छत्रवान् विकृषाता (धापिक "ठळ-कीर्थ"। ষয়ে তাছাকে কাশার ঘটমধ্যে অদিতীয় স্বীকার এই নকল কথা শাস্ত্রসম্বত, ইহার কোন প্রমাণ করিতে হইবেক। নাগপুরাধিপতির ব্যয়ে তাহার দুর্শাইবার আবশ্যক রাখে না. পরস্তু পাঠক-मर्वत প্रख्तकाता व्यञ्रख-भागिहत्वाल तिष्ठ मधनी भूवता वान्धर्याचिष इहेटल शास्त्रन, य হুইয়াছে। তাহার উপরিভাগে এক অপূর্ব দার প্রাবৃত্তবিক্ত পণ্ডিতেরা চরণপাদ্কাকে বৌদ্ধিছিছ অ,ছে, তদ্বারা লক্ষ্মীনারায়ণদেবের মন্দিরে প্র-্বোধ করেন। তাঁহারা কহেন, যৎসময়ে तिमा कता यात्र। वर्षाकात्व निमोज्ञत्वत वृष्णि वृष्णत्मव निमान शास हन, १०० कात्व जाहात হুইলে, ঐ দ্বারন্ধ্যে অনায়ানে সান করা যা- উপাদকেরা স্তানে ২ তাঁহার পদ্চিক্ স্থাপন ইতে পারে। এই ঘাটের কিয়দূর অন্তরে "মণি- করিয়া তাহারই উপাসনা করিও; কাশীত সেই পদচিক একণে "চরণপাদ্ক।" নামে বিখ্যাত ঐ ঘাটের অনতিদূরে প্রস্তরনির্ঘিত এক চা- ইইয়াছে। বোদগুত্তে একথার অনেক প্রমাণ ভালের মধ্যদেশে একথানি গোলাকার শ্বেতবর্ণ শ্বাছে, এবং ইছাও প্রভাক্ষ ছইডেছে, যে কা-প্রস্তুর ফলকোপরি দুইটি চর্ণ চিহ্ন আছে; শী, গয়া, বুক্সদেশ, লঙ্কা প্রভৃতি যে সকল ভাছার নাম "চরণপাদুকা"। সমস্ত কাশীর স্থানে বৌদ্ধতের প্রাদ্ভাব হইরাছিল, বা এই মধ্যে ঐ স্থান মহাপবিত্র বলিয়া বিখ্যাত। ফবে প্রাদুভাব আছে, তথাগুই চরণচিচ্ছ পূজার পুরাবে কথিত আছে যে বারাণসীর সৃষ্টিকর- প্রবল-প্রচার। ১৯৮ পৃষ্টে কাশীস্থ চারণপাদুকার

स्विक्वित्रं प्रक्रित क्रम्यः "जनगर्षाठे", "द्राजदारजयदीयाएँ", " जिल्दरंखद्रवीयाएँ ", अ-দ্বারা এক পুষ্ণরণী থনন করত কঠোর তপস্যায় ভূতি কএকটি ঘাট আছে, কিন্তু রচনা বা পুণ্ নিযুক্ত হন। ভগবান মহাদেব নেই ভয়া- বিষয়ে তাহাদের কোন বিশেষ মাহাত্ম। নাই। নকতপস্যা দৃষ্টে বিস্ময়াপন্ন হছয়া এ প্রকারে কেবল রাজরাজেশ্বরী-ঘাটের উপরিস্থ নিশ্বন মস্তক मधालन करतन, य जाँहात कर्व्हेट मयस्य এक অভুত গণ্প-প্রচার আছে, ত**ং**শু-কুণ্ডল সুলিত হইয়া বিফুর নিকট নদীতটে পড়ি- বণে পাঠকবৃন্দ কৈ) তুকান্বিত হইতে পারেন। রা যায়ঃ শান্তানুদারে ইহাতেই তৎস্থানের নাম কথিত আছে যে ঐ মন্দির-নির্মাণ-ডালে তলি-" মান্ত্রিকা" হইয়াছে। অপর ভিনি ষয়ই কটে এক কুদু-গুহা-মধ্যে এক সিদ্ধ বাস করি- हाम-निर्धाय-ममरत्र बकि। वृहद किएकांश्व उद्धाপরি ভাপিত করিয়া শিশ্পারা দেখিলেক যে ঐ
कांश्व প্রিয়াজনার পরিমাণ ছইতে আর্দ্ধ হস্ত নূন, ও
কাদ্শ প্রয়োজনার দিল কাগ্ব তথার পাওয়া যায়
না; এতদার্থ ভাহারা নিজনার নিকট তাহার
সংখ্যা জানাইল; ভলাতাশ্বণে নিজজা মহাকাপ্ত হছ্যা ল কাগ্রোপরি দপ্তাঘাতপূর্ক কহিলেন,
শবে এটা হাকাড় জমল্মে ব্যতী এটো নহা বঢ়েগ্রীশা এবং এই তিরকার-বাক্য শুনিবামাত্র ঐ
কাপ্ত উৎক্ষণাৎ যথেপিসত দার্ঘ হইল।

ত্রিপ্রতেরবাঘাটের দক্ষিণে একটি প্রাচান বাটা দুষ্ট হয়, তাহা রাজা মানসি হ-কর্তৃক নির্মিত ছই-যাছিল বলিয়া 'মালমন্দিল' (মানমন্দির) নামে প্রাক্তির কাছে। দুইশাত বৎসর হইল রাজা জয়-বি হ চন্দুস্যা-নক্ষত্রাদির স্তান ও গতি নিক্তি-পণাথে তথায় কতকগুলি জ্যোহিঃশাস্ত্র-সমত যন্ত্র স্থাপিত করিয়া জ্যোতিঃশাস্ত্রের আলো-চনা-নিমিতে যথাঘোগ্য জ্যোতিঃশাস্ত্রের আলো-চনা-নিমিতে যথাঘোগ্য জ্যোতিঃশাস্ত্রের আলো-চনা-নিমিতে যথাঘোগ্য জ্যোতিঃশাস্ত্রের আলো-চনা-নিমিতে যথাঘোগ্য জ্যোতিঃক্রাদিগতে নিক্তুক করিয়া ছিলেন। ঐ মহৎকর্ম সাধুলাথে ভ্রমা তথায় আর কেইই নাই: কিন্তু ও যন্ত্র-সকল ভ্রমাণ্ডের কার্ডিখুজাফ্রপ অদ্যাপি বর্তুমান শ্রাছে।

নান্দান লাভত তে জনি লাজ মপ্যান্ত প্রয়াগ-ঘটি, শাভলাঘাট, দশাশ্বনে বঘটি, ল রাণা-মহল, গৌলিবও প্রভৃতি নানা ভাল আছে, কিন্তু তৎ সম্বাহ্ণ কিছুই আশ্বয়া বা মনোহর সংবাদ নাই কেবল হলুমান্যাটের কিঞিৎ অন্তরে কতক-গুলি বৃদ্ধ আছে, তাহাতে অন হুখা বাদুছ বাস করিয়া থাকে; এক স্থানে এত বাদুছ, বোধ হয়, লাভ ক্রাণি দৃষ্টিগোচর হয় নাই।

্রার বার্নারের ৬৬ পুরেছ এটা হার্নের এক টো মৃত্যুক্ত করেছ

রাজপুএ-ইতিহাস। পঞ্চম সঙ্খ্যা।

দ্বিতীয় পার্কের ১৮৩ পৃষ্ঠ ছউতে ক্রমাণত ।
(বারাণনীয় বর্ষটতে সমাগত)

তিংপর ১৪৭৫ সংবৎসরে কুন্তরাণা অবিবাদে পিত্রাসনে উপবেশন করেন। তিনি মাড়োয়ার-বংশের দৌছিত্র
ভূপতি তাঁচার পিতৃহত্যার প্রতিহিংসার-বিষয়ে
যথেই সচায়তা করিয়াছিলেন; বিশেষতঃ এতংসহয়ে মিবার-রাজ্যে যে প্রকার মহাবলপয়াক্রান্ত
ন্পতিরা ক্রমান্থরে রাজ্য করিয়াছিলেন, গে প্রকার-সংখা দৃষ্ঠিগোচর হয় না। অভ্যান ভদবত্রায়
হিল্প ধ্রাদ্বিষি য্রনবৈরীদিগকে মিবার-রাজ্যের
পরাভূত করা ক্রমায়সমাধ্য হইয়াছিল।

আলাটদিন কতৃক চিতেরেরাজ্যের আক্রমণা-যধি কুন্তরাণার কালপর্য্যন্ত প্রায়ঃ শতাধিক বৎসর करीत हरेशहिल; से नगरा छेक नगरी से पू-দান্ত্ৰবৰ-সম্পাদিত ভথদশা হইতে উদ্ভা হইয়া পুনরার বারমণ্ডলাতে পরিশোভিত। হটয়াছিল। কুন্মরাণা উত্তরপশ্চিমরাজ্যে যে যবনাধিপতিরা জ্ঞান ২ উন্নতি প্রাপ্ত হুইতেছিল, তাহাহইতে ৰ-(मन-तक्तर-त माना छेलाय कत्र नर्बे क्रियुक् इंदेश नमहिन्द्र अताकश्चन कार्गात निर्देश নিবারস্ রক্তবর্ জয়পতাকা ডড্ডায়মানা করি-शाहितन। ভाরতবর্ষ জয়কারী সহাবুদ্দিন্পোরি ৩ তৎসম্কালত সমর্সিংহ রাজার সময়াব্ধি কৃত্ত-রাণার রাজত্ব-কাল-পর্যান্ত দিল্লা-নগরাতে চতু-রিংশতি যবন নৃপতি ও এক রাজ্ঞী রাজত্ব করি-য়াছিল, কিন্তু আশ্চর্য্য এই যে উক্ত কাল যাবৎ শিবার-রাজ্যে একাদশ মাত্র ভূপতি বিংশাদনা-कए इहेशाहितन। भिनकि वश्मीय यवन क्राक्रांपि-

গের দুদশ্বস্থার দিল্লীশ্বরের রাজপুরুযের। ক্রমে ২ ৰ ২ প্ৰভুৱ অবমানকরত ষয় ্রাজ্যস্থাপনে প্র-বৃত্ত হইয়াছিল, তথা বিজয়পুর, গোলকগুা, মালব, গুর্জের, জউনপুর, এবং কাম্পোতে পৃথক্ষ নূপতি হইয়া উঠিল। মালব এবং গুডর্জর প্রদেশের ভূপতিরা অসম্ভব ক্ষমতাপন্ন হইয়া কুম্বের রাজ্যকালে ১৪৯৬ নংবৎসরে বৃহতী-সেনানী-সভকারে মিবারাক্রমণ করিয়াছিল। কৃন্তরাণা এক লক্ষ অস্পান্ধত্ ও পদা-তিক যোদ্ধা ও চতুদ্দা-শত হান্তি নংহতি লইয়া স্বদেশের প্রান্তভাগে মালহ রাজ্যের রণভূমিতে শাত্রদিগকে এককালীন পরাভূত করত মালবা-ধিপতি মহম্মদ থিল্জিকে ধৃত করিয়া চিতোরে আনিয়ন করেন। ভদনস্তর ঐ যবন রাজাকে বিনামূলে। বরং প্রকারপূর্ক মুক্ত করেন। তছি-यस भातमा-वेविवागस्य चार्वक्षल अव সন্থাম-বৰ্ণন করত কৃত্তের মহত্তার বিস্তার ব্যাখ্যা क्रियाछ्न, कन्छः हिन्द्रहित अञान्न गर्छ्र दिए: अध्वाधिक देवतीय तका कता ताक-পুঞা বারের শেুষ্ট ধর্ম, এবং তদ্ধর্ম দর্থা অভ্যন্ত সাব্যানে প্রতিপালিত হুইয়া থাকে। রাজপুঞ ইতিহাদবেতারা লেখেন, যে মহম্মদ **ছয় गाम या**न- **চিতোরে কারাক্**দ্ধ থাকেন, এবং মূক্ত হইবার সময় আপন মুকুট তথায় রাথিয়া আনিয়াছিলেন: বাবর নামক মোগল বাদশাহ কুম্রের উত্তরাধিকারি সন্ধার নিকট-হুইতে তাহার উদ্ধার করেন।

উক্ত যুদ্ধের পর একাদশ বর্ষ অভীত হইলে কুন্ত-রাণা ঐ মহাজয় চিরস্মরণায়-করণার্থে এক প্রকাণ্ড স্তম্জ নির্মিত করাইয়া মদেশ সুশোভিত করেন। ঐ স্তম্ভের নির্মাণ করিতে ক্রমাগত দশ বৎসর্ কাল লাগিয়াছিল, পরস্ত তাহার আয়তন দর্শন করিলে ঐ ব্যাপক কালও থর্ব বোধ হয়। অতঃপর কুন্ত যবনদিন্তের সহিত নানা নাদে জয়ী হইয়াছিলেন; একদা ঝুনুঝুনু নামত তালের দিল্লীস্থ নৈন্য পরাভূত করিয়া হিসার-দুর্গে নিন্দি জয়পতাকা স্থাপিত করেন। ই যুদ্ধে মালবলৈক্য তালার সহিত লিখালিত ছিল; পরস্ত তদানাল দিল্লীখরের ক্ষমতা অত্যন্ত থাই হইয়াছিল; আছ-এব এ জয় বিশেষ যশান্তর নহে; তৎকালে মাল-বাধিপতি মত্মত বোরীয় বংশীয় শোষ কাদ-শাহকে য়য়ং একত সমুন্মে গ্রাহত করিয়াছিলেন;

सिवातबाका-इक्स्वार्थ की तानि मूर्ग आणिव আছে, ভন্নবৈধ কুন্তরাণাকড়ক দাত্তিং**শত দু**গ প্রয়ত হয়; ঐ সকল দুগের মধ্যে তাঁছার নামে दिशाह "कृष्ठामक" नामदः पूर्व नार्वाष्ट्रक्षे। আবুশিখর শৃদ্ধেও তিনি এক দুর্গ ছাপ্ন করিয়া ভণার অবহিতি করিতেন। উক্ত দুশস্থ ভোপ-গৃহ ও নোটেখানা অদ্যাপি ভাঁছার নামে বি-খ্যাত, আছে ৷ রাজপু এমাত্রেই কুন্তকে যৎপবো-নান্ডি নমাদর করিত, এবং অদ্যাপি আবুপ্রদে-শে এক মন্দির-মধ্যে কুন্ত ও তৎপিতার ধাতু-ময় মুদ্রি দেবতার কায়ে অচিতে ইইয়া থাকে। তিনি আরাবল্লি-পর্তনিবানি অসভাজাতীয়দের অক্তিমণ্ডইতে হদেশরকাথে মার্টান দুগের নি-র্মাণ করাইয়াছিলেন, তথা জায়োর এবং পোনো-রাস্থ ভুষ্যবিকারি ভিন্নদিগকে ভয়গ্রদশনার্থে স্থা-নে ২ কুদু ২ দুগস্থাপন ও মাড়োয়ার এ মিবারের পরস্পর সীমা বিলফণ নির্দিষ্ট করাইয়াছিলেন। এতদতিরিক্ত ধর্মন ড্যটিত তাঁছার অপর কীর্ত্তির यमाणि वडमान चार्छ, उमाणा;--वावृश्यि-রোপরি কুন্তশ্যাম এবং মিবারের পশ্চিমদিক্ত निपुर्वादि श्री अवस्तरहत दोष मर्छ। स्मरवाक-कीर्खिनियारि कार्षि मून्। वाय रयः, जन्मस्या द्वावा अष्ठे वक मून्। अयः अनान कातन। निज्ज साना খিতিপ্রযুক্ত ঐ মঠ ধর্মদেবিদিগের হত্তে পতিত না হইয়া এক্ষণে পশাদির আশুয়ন্তল হইয়া-ছে। জয়দেবক্ত গাঁওগোবিশের টাকা প্রস্তুত করিয়া কুন্তরাণা কবিত্ব মর্যাদোও গুইণ করিয়া-ছিলেন: কিন্তু ইদানীং ঐ টাকার অপ্রাপ্তি-হেতুক তাছার দোষ্ডণ নিক্ষপিত করা দুকর।

মাড়োঘার বংশশেষ্ঠ মেয়তা-রাঠোরের দ্হিতা আদামবর্গগুণে এবং নৌন্দর্য্য বিভূমিতা মারাবাই নামী রমনা কুছের ধর্মপাড়া ছিলেন। তিনি ধর্ম-বিয়য়ে তংপরা, দেবদেবার পূজা করিয়া দৈব-শুলি তথা কবিত্বশক্তি-বিশিষ্ঠা হইয়াছিলেন। তাহার করিছা কবিতা ওচনার কিয়দংশ অদ্যাশি প্রতিভিত্ব কাছে। কথিত আছে, যে অন্যান্য সুন্দরী নম্ভিন্যভারে ঐ দেববৎসনা রমনা প্রক্রির গোপালম্ভি-অচ্চনার্থে যমুনাতীরাব্ধি দারকাপ্রান্ত মহত্র ইচ্ছাবিহারিনা হইয়া গমন করিতেন: সামান্য লোকে তাহা অনুভূত না করিতে পারিয়া তাঁচার অনেক অপ্রাদ করিত পরস্থ ভক্তমাল-গুছে তিনি ভক্তশেষ্ঠা বলিয়া বনিত আছেন।

কুজরাণা ঝালবার-রাজার তন্যা মন্তর রাজকুমারের নির্ধান্তিলা পত্নী হরণ করিয়াছিলেন।
এ রাজতন্য থিরহানলে প্রের্জিত হইয়া অপহৃতা রাঠোর সুন্দরার নহিত সন্দর্শনের নানা
, উপায় করত কোন সুযোগে রাত্রিকালে বন্দর্থদিয়া গমন করত রাজভননের প্রাচার উল্ভ্যনপূর্বিক রাণার গহে প্রেরেশ করিয়াও অবস্থায়ে
অভান্তিনিদ্ধ করিতে পারেন নাই, ইহাতেই কোন
স্তত্র কার শ্রেষাক্তিতে কহিয়াছিলেন 'মন্তর্র কার শেরাক্রিতে কহিয়াছিলেন 'মন্তর্র কার শেরাক্রিতে কহিয়াছিলেন 'মন্তর্র বিলান পত্রা পাইয়াও অবশেষে ঝালানী *
প্রাপ হইতে পারেন নাই'।

ाकाली साम रुक, अवर **आनाना साम वासवात है** प्रश्नी १८ १५ करता

এই বিপে অসম্ভূত-এশর্য্য-সম্ভোগপূর্যক পঞ্চাশত বৎসর অকাতরে রাজত্ব করিন রা কুন্তরাণ ১৫২৫ সংবৎসরে আপন তনম রা কুন্তরাণ ১৫২৫ সংবৎসরে আপন তনম রা কুন্তরাণ ১৫২৫ সংবৎসরে আপন তনম রা রাজ্যলোভে পিতৃহত্যা-পাতকে নিমাম হইয়া মদেশে ঘৃণাল্পদ হওচ পঞ্চ-বৎসা-যাবৎ রাজত্ব করিয়াছিল। দিল্লীশ্বরের সাহায্য পাইবার নিমিত্র সে তাহাংক কন্যাদানে সম্ভূত হয়াছিল। কিন্তু তদ্বিষ্যের কথোপকথনান-ভার দেওয়ানখানাহইতে সে বহিগত হইয়াছিল নেওয়ানখানাহইতে সে বহিগত হইয়াকে নাত্র তাহার মন্তকে এক বঙ্গাঘাত হয়, এবং সেই দৈবঘটনায় বাপণারাভালের বংশ বন্নাভিগমনকাপ দ্নিবার কলঞ্চইতে নিজ্ঞাত

রাজপুত্র-ইতিহাসলেথকের। ঐ নরাধমকে বি বারবংশের রাজশূেণীমধ্যে গণ্য করেন না। লোকে ভাহাকে অদ্যাপি ''হত্যারো" অর্থাৎ পিতৃহা বলিয়া সম্বোধন করে।

বুদ্ধের পুঞ রায়মল ১৫০০ সংগ্রনরে আ
পন পিতৃহা ভ্রাতাকে পরাজয় করিয়া রাজ্যাভিযিক হন; তথা ঐ পাপালা দিলীতে পলায়নপূরক তথায় পঞ্জ প্রাপ্ত হয়। ঐ ঘটনার কিছুকাল পরে দিলীশর উধ্বেরে পুঞ সহেসমল্ ও সূরজমলের সুর্যামলের) সমভিব্যাহারে মিবার রাজ্য
আক্রমণ করেন; কিন্ত তাহাতে তাহার কোন
ইট সিদ্ধ হয় নাই। রায়মল আবু এনং গির্মারাধিপতিদিগের নাহায্যে পঞ্চাশত অন্ত সহসু অখাকাল এবং একাদশ নহসু পদাতিক যোদ্ধা সমভিব্যাহারে লইয়া ঘাশা নামক স্থানে ঘোরতর সন্ত্রামে নদনদীতে শোণিত শ্রাবিত করত অবশেষে
দিলীশরকে সম্যক্ পরাভূত করিয়া মিবারহইতে
দুরাভূত করিয়াছিলেন।

রায়মল যদুবংশোদ্ভব স্থ্য নাম। গির্নারাধি-পতিকে এক দৃহিতা এবং সিরোহি নিবাসি দেও-রার ভূপতি জয়মলকে অপর দুছিতা অর্পন করিয়া উক্ত জয়মলকে আবু-নামক-প্রদেশ যৌতুক্যরূপ প্রদান করেন। অপর তিনি মালব প্রদেশের রাজা গয়াসুদ্দিনের সহিত পুনঃ২ সন্ত্রাম করত অব-শেষে তাহাকে দীনতা স্বীকার করাইয়া তাছার সহিত সন্ধি করিয়াছিলেন।

রায়মল্ল-রাণার তিন পুঞ্জ; জ্যেষ্ঠ সঙ্কা, মধ্যম পৃথীরাজ, এব॰ কনিষ্ঠ জয়মল। প্রথম পুঞ্জয় बानिनो-बाद्धीत शर्दकाङ; ভाहाता উভয়েই তুল্য-পরাক্রম ও সাহসবিশিষ্ট ছিল, এবং রাজ্যলোভে উন্মত্ত থাকিয়া দৰ্বথা কলছে কালযাপন করিত। একদা ঐ ভ্রাত্তায় আপন পিত্বা সুরজমনের সহিত রাজ্যপ্রান্তির বাদানুবাদে প্রবর্ত্ত হইযা-(छ्न, **এম इ. न्यर्श मङ्ग** नगर्द किट्**लन, "**याहि স্মানি যথার্থতঃ মিবার রাজ্যের উত্তরাধিকারী বটে, তথাচ নাহেরা-গুমেস্থিত চারণীদেবার পৌরহিত্যকারিণী দৈবশক্তি-সাহায্যে যাহা অ-দেশ করিবেন, তাহাতে নির্ভর করিয়া আপন স্বত্ত-পরিত্যাগ ক্রিতে স্বাকৃত আছি"৷ এই বাক্যে সক লেই সমত হুইয়া তথায় গমন করত পৃথীরাজ ও জয়মল প্রথমে মন্দিরমধ্যে প্রবেশপূর্বক এক সা-मान/ामत्न উপবেদন করিলেন, তথা मञ्चा ७९%-শ্চাতে প্রবেশ করত পৌরহিত্য ব্যাঘুচর্মাননে উপবেসন করিলেন, এবং সূরজমল তাছার একদে-শে পাদার্পণ করিলেন। অতঃপর পৃথীরাজ প্রমৃ-थार विवाप-वार्जी वं/क रहेवामाज উक्त टेमवक्का जे সিংহাসনত্ত 🛎 রাজকুমারকে মিবার-সিংহাসনাধি-कात्री, ও তদ্ক দেশস্থিত সুরজমল্লকে রাজ্যে। किश्रमः चात्रगुरु विषया वराश्रा कतित्वन। पृ

থীরাজ ঐ বাক্য শুনিবামাত্র থড়গ-নিফোবন প্রক্রিক সন্থাকে বিনষ্ট করিয়া দৈবাদেশ ব্যথ করিছে উদ্যেত হইলেন, কিন্তু সুরজ্মল তৎক্ষণাত্ত রাজকুনারের প্রতি নিজ্ঞিপ অন্ধ্র আপেন শরীরে পূহ্ণ করিলেন। অভঃপর বার-চতুষ্টয় পরক্ষার অন্ধানত জার্ভরীভূত হইলেন, বিশেষতঃ সন্ধা অন্ধান্থতে ও নেত্রে সরাঘাতে আল্রে বিদ্যান্য এক জন রাঠোরের নিক্ট আশ্রুয় গুহুণ করিলেন। তন্থায় অশ্বহতে অবভীন হইতেহেন প্র্যাহ সময়ে জয়মল সবেগে হ্রসঞ্চালন করিয়া ভাহার নিক্টে উপনীত হইল। উক্ত রাঠোর বংশীয় মহাবীর অভিথি রক্ষায় তৎপর হইয়া জয়মলের সহিত্য যুদ্ধে প্রাণ সমর্পণ করিলেন। এবং ঐ অবকাশে বুলা প্রাণ সমর্পণ করিলেন। এবং ঐ অবকাশে বুলা প্রতি তথাহইতে প্রস্থান করিলেন।

ইতোব্ধি নহা পৃথীরাজের বৈরভার আশকায় কিয়ৎকাল নানা উপায়ে অজ্ঞাতবাদে কাল্যাপন कतिशाष्ट्रितन, कल ३३ व यू वताक यिनि পরিशास्य লক্ষাধিক যোদ্ধা-সহিত তৈমুর বংশীয় ব্যবর বাদ-শাহের বিৰুদ্ধে মন্ত্রুমে বিরুত হয়েন নাই, তিনি किय़ थकाल शार्शामर शत नक्वारन शवापि छात्रन করিয়া কালযাপন করিয়াছিলেন; ও তৎকর্মে অপট্ডাপ্রযুক্ত গোপদলমব্যেইতে বহিষ্কৃত হই-য়াছিলেন, তথা কভিপয় গোধুম পিষ্টক প্রস্তুত করিয়া তাহার তত্ত্বাবধারানে অযতু করত স্বয়ং ভক্ষণ করাতে তিরক্ত হইয়াছিলেন। এতদ-বস্থার পর কতিপয় প্রভুক্তর রাজপুঞ্জ তাঁহাকে অশ্ব শঙ্ক প্রদান করত নকলে জ্রনগরের ভপতি প্রমর-বংশীয় রায় করিমটাদ মৃপতির দাসত স্বী-কার করিয়া ইভন্তত দেশপর্য্যটন ও পর্যুব্যা-প্রব্যারা দিন্যাপন করিতে লাগিলেন। একদা সন্ধা পথশাভ হট্য়া এক বটবৃক্ষতটে উত্তাৰ্হওত

^{*} সিৎছ আদন অর্থাৎ দিৎছ-ব্যাঘু-মূগাদির চক্ষ নির্মিত আদর্ম।

স্বীয় প্রভূগোপরি মন্তক-স্থাপনপূর্বক শয়ন করি-। গের মধ্যে " আছেরিয়া" নামক এক বিশেব তির মন্তকোপরি ধানে করিলেক, এবং কবি- গিয়া স্বয়ং নকোপনে নগরভারে করিয়া সম্বাকে আগন কন্যাদান ও ভাঁছার রাজ্য হত্তগত করিয়া ওঝা নামক বণিক এবং সোধ প্রাপ্তির সময়াব্ধি রক্ষণাবেক্ষণ করিয়াছিলেন।

অশ্বারোহি সমভিব্যাহারে গড়োয়ার রাজ্যান্তগত বেলিয়ো-নগরের অভিমুথে যাত্রা করেন; পরে ' পাথমধ্যে কিঞ্ছিৎ দ্বা ক্রয় করিবার আবশাক হওয়াতে তিনি জনৈক বণিকের নিকট আপন অস্-तीयक विकथ कतिए**ड यान: ऐ**न्वय्वेना अमनि इंडेन টি বিজয় ক্রিয়াছিল, অতথ্য সে তদুষ্টে তাঁহাকে রাজকুমার বলিয়া জানিতে পারিলেক, **এবং** তাঁ-হার ছদ্যবেশ-খাঃবের কারণাবগত হইয়া তাঁহার म्लङ इंट्रेंट वानना कड़िला ए० मगरप्र कटेनक मी-ভাষার নাগত चौकांत्र कतिदान। ঐ मिनापि- १५-छात्। इरयून नाई "।

· या चार्ट्स, ९ ठीशां चनुष्ठतस्य ভाष्ण चारसा- विधिक शर्व चारह, उरम्मस्य ताक्क्छावर्ग नक-জন করিতেছে, এমত সময়ে নিবিড় বৃক্ষ পত্রাস্তর লেই আপেন ২ গৃচ্ছে যাইবার অবসর পাইয়া हरेट अक ब्राम्य यातः जोशात जमत्म शिविष्ठ एर्- थारक। य रूप्यत शृथीताक ख्यास हिलाम, छंव য়াছিল, ও এক বৃহৎ দ্প তথায় সমাগত হইয়া ধের পর্বদিনে অন্যান্ত্ত্যবর্গের ন্যায় ডিনিও স্থ্যের উত্তাপে আপন কণ বিস্তৃত করিয়া নূপ- অবসর পাইয়াছিলেন, কিন্তু ভেঁছ গৃছে না কণাধ আবাঢ় এক ক্ষু বিহল্প ধৃনি করিতে করিয়া সহযোগি রাজপুঞ্গণকে দ্বায় স্বামীকে লাগিল: তদ্তে জনৈক গোপ সন্ধার সন্ধাধ বধ করিতে প্রেরণ করিলেন, ও তদনস্তর ঐ जन्मत हरेया ताजभर्गान-अनातम्बूक इया ७ यामी व्यथाताहरण शलायन कतिराउ **ए एथिया** পরে তাঁহার হামী শ্রীনগরাধিপতির কর্ণগোচর তাহাকে তৎক্ষণাৎ বিনষ্ট করেন, এবং মিনা-করে. যে তিনি ছত্রধারি রাজকতৃক পরিদেবিত দিগের গ্রামে অমিদংগোগ করিয়া অনেককে ভরতেছেন। উক্ত নৃপতি সে কথা সঙ্গোপন দথা করেন। এই কপে সমস্ত গড়ওয়ার রাজ্য গড়ের অবিপত্তি সোদা সোলাঞ্চিকে তদ্রাজ্য পুঞ্জিদেরে পরস্পার-বিরোধের সংবাদ রাণার সমর্পিয়া তিনি পিত্রালয়ে পুনঃ প্রত্যাগমন করে-कर्गाण्य इहेटन जिनि श्थीदाक्षरक मिणा- न। उৎकारन छोहात शिकात निकटि कान शुध ন্তুর করিয়া দেন। ইহাতে পৃথিবিজ পঞ্চ জন উপস্থিত ছিল না; সঙ্গা সঙ্গোপনে ছিলেন, এবং জয়মলের মৃত্যু হইয়াছিল, স্তরাং তাঁ-शाद शिका केंद्राटक क्र्यूक्शां क्या क्या क्या জয়মল্লের মৃত্যুবিবরণে রাজপুঞ্জিগের দেশ ব্যন-হার ব্যক্ত হয়, অভএব ভাহা এছানে বক্তব্য। কণিত আছে যে তিনি পাঠানজাভিকত্ক দেশবহিছেত या के रविकृष्ट शुर्स द्वाक मिश्रपारन राष्ट्र यासुद्रोयक- | मूद्रायान नामा अक द्वाक्र भूरश्रद्ध कन्या खादा दाहे नामो तमनीत পानिगुइनाजिनायि हरेबाहिटनम, ख ৰ্যাকার করিয়াছিলেন উক্ত রাওর রাজ্য উদ্ধার করি-या निका महे कनात **शांविश्व**र कतिरवन, किन्न রাজে/। साরের অপেকা না করিয়া একদা বল-নাজাতি প্রধান এতদঞ্লের নাড়োল নামক গ্রামে পূর্বক যুবতির অন্তঃপুরে প্রবেশ করেন, ও ভত্তে তু গাপন কুদুবিকারের রাজধানী স্থাপন করিয়া- কোপিত পিতৃকর্ক বিনত্ত হন; ইহাতেই কবিক-ছিল। পূর্থারজে নবাসহযোগী বনিকের পরামর্শে দিপত প্রকলে লিখিত হয়, "ভারা তাঁহার সৌভা-

জয়মলের মৃত্যুর পর কোন ২ রাজপুএপ্রধান পুঞ্ছত্যার প্রতিহিংসা করিতে রাণা রায়মলকে উত্তেজনা করিয়াছিল, কিন্তু ঐ ধার্মিকবর এইমাত্র প্রত্যুত্তর দিয়াছিলেন, "যৎকর্ত্ক পিতৃমর্য্যাদা অবজ্ঞীকৃত হইয়াছে, এবং ভৎপিতার দুরবন্থা অল-ক্ষিত হইয়াছে, সে বাজি অবশাই এমত অদৃষ্টের ভাজন।" পরে আপন বাক্যের প্রতিযোগিতার ঐ অপমানিত পিতাকে বেদ্নোর রাজ্য প্রদান করেন।

জয়মল্লের বিনাশহেতু এবং সন্ধার অজ্ঞাত-বাস-প্রযুক্ত পৃথীরাজ স্বদেশে পুনরাহ্বানিত হইয়া আপন ভ্যুত্কর্ত্ক অবমানিতা রমণীর পাণিপুহণ করিয়াছিলেন।

এই ঘটনার কিয়ৎকাল পরে তাঁহার পিত্ব সুরজ্মল রাজ্য-প্রাপনের আশা করিয়া লাক্ষারা-ণার বংশাবভংশ সারঙ্গদেবকে সপক্ষ করিয়া মা-वर्षात्र मुवाजीन् भाक्यकरत्त्र महाय्रजीय মারবাড়-রাজ্যের দক্ষিণ থণ্ড আক্রমণ করত কতি-পয় নগর হস্তগত করেন। রাণা তদমনার্থে যৎ-किष्धि॰ रेमन। बहेश शस्त्रीही नमोजीत याजा कत्त्रन, ও তথায় শত্তুদিগের সহিত সামান্য-ব্যক্তির ন্যায় যুদ্ধ করিয়া দাবিংশতি অস্তাঘাতে আছত হওত ভূমিতে পতিত হইতেছিলেন, এমত সময়ে পৃথীরাজ এক সহসু অখারোহি যোদাসহ সমাগত হইয়া যু-দানল পুনঃ প্রজ্ঞালিত করিলেন। তাহাতে শত্রুদল-চমকিত হইল, অপর্যাপ্ত বীরমণ্ডলী ধৃংস হইতে লাগিল; এবং সুরজমল ময়ং অজ্ঞাবাতে আচ্ছন্ন **रुटेलन; अञ्चरक्या इक्षनीव नमागरम पुरु मरल** বিশাস্ত হইয়া পরস্পার সগ্লিকটে অবস্থান করিল।

এই অবস্থায় পৃথীরাজ সুরজমলের সহিত সাকাৎ করিয়াছিলেন, তদিবরণ অতিবিষয়জনক।
উড্ সাহেব পিতৃবেরে ভ্রাতৃপুঞ্চনই সন্দর্শনের
বার্ত্তা এক অপ্রকাশিত রাজপুঞ্চ গুরুইতে সন্ধ-

লিত করিয়াছেন, তাছাতে ঐ সভ্য-জাতার্দিগের অপূর্ব সাহস ও অনির্বচনীয় মহর্তা ব্যক্ত হয়। অথিত আছে, পৃথারাজ বিপক্ষ-দলের মধ্যে ষয়॰ সাধাগত হইয়া দেখেন সুরজমল্ল এক কুদু শি-বির-মধ্যে দেহের অক্সাঘাতসমন্ত নাপিত-কতৃক নাবিত করাইয়া অন্ধ শামিত হইয়া রহিয়াছেন: তাঁতাকে দেখিবামাত্র গাত্রোখান পূর্বক যথা-যোগ্য সন্তাম্বনে অভ্যথনা করিলেন, তাহাতেই তাঁহার দেহন্ত কতিপয় ক্ষত স্থানহইতে শোনিত্ত ক্রণ হইতে লাগিল।

্পৃথীরাজ জিঙানিলেন, "খুড়া মহাশার, আপ-নার আঘাত সমস্ত কি ৰূপ আছে?"

সুরজমল। "পুঞা, তব দশনৌলানে তৎসমন্ত আরোগ্য হ্ট্য়াছে"।

পৃথীরাজ ' ' কিন্তু খুড়া আমি এখন পর্যান্ত দেওয়ানজিকে * দেখি নাট, সর্বাণ্ডে 'তোমার এখানে আসিয়াছি। আমি অভ্যন্ত ক্ষুধিত, ফ্-েথায় কিঞ্চিৎ থাদ্যোপত্তিত আছে কিনা ?"

অতঃপর তরায় খাদ্য দূব্য আয়োজন হইল,
এবং উভয় বীরে একত্র বিসিয়া এক পাত্রে ছোজন করিতে লাগিলেন। পরে গমন সময়ে পৃথীরাজ নিঃসন্দেহে খুলাতাত-প্রদন্ত তামূল লইয়া
ভক্ষণ করিলেন, এবং কহিলেন, "খুড়া আময়া
উভয়ে প্রাতেই যুদ্ধ-সমাপন করিব শ। খুড়া
প্রত্যুত্তর দিলেন; "ভাল, পুঞা, তবে কিঞিৎ
প্রত্যুত্তর আনিও"।

পরদিন প্রাতে উভয়দলে ঘোরতর নমর উপ-স্থিত হইল; সারজদেব নর্বাগ্যে রণ করিছে ২ পঞ্জিংশং আঘাত প্রাপ্ত হইলেন; চতুদ্ধিন অবিরত অস্ত বর্ষণ হইতে লাগিল; চারিদপ্ত-কাল-

^{*} রাজপুত্রদিগের বাবহারানুসারে দেওয়ানজি শঞ্চে রাণাজিকৈ জাশুস করে

মধ্যে অসম্বা হাজপুএদেহে বসুস্তর। আ- । ক অমানমুখে প্রভ্যুত্তর করিলেন, "ই। আ-ভূত দল আপন অভীওনাধনে নিতান্ত পরাধ্যাথ য়েরা অন্যার্থে যুদ্ধব্যবদায়ে কোন স্বানে না कदिशाहित्तन, थूला ठाउटक मिनात मत्या अक। अधिकष्ठ भागात केल्क हेर्कान भद्रकाता त्याचि ठ সূচ/গুনাত্র ভূমি দিবেন না। তথা সুরজমল[া]রহিবেক''। **ইহাডেই অজ্ঞান্তর**ন করিয়া উভয়ে প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন, তিনি ভ্রুত্পুপ্রকে প্রেমালিঙ্গনপুরঃসর এক্ত্রে উপবেদন করিলেন। চিতার উপযোগী-স্থান-মাত্র প্রদান করিবেন। পরে ভ্রাতৃপুঞ **জিজ্ঞানিলেন, "খু**ড়া আমার এই প্রতিজ্ঞানুবারে উভয়দলে সর্বদা যুদ্ধ আগমনকালীন কি করিছেছিলেন "? হইতে লাগিল। একদা বটুরো-প্রদেশের গহন- উত্তর। "ভোজনাত্তে শাতুলের ন্যায় বাক্র-বলে সূরজমল বৃক্ষ-পরিবেণ্ডিত এক নিভ্তস্থান- । ব্যয় করিতেছিলাম "। প্রস্তুতগৃর্বক তন্মধ্যে দৈন্য রক্ষিত করিয়া সকলে 📗 ভূতিপুঞ্ । "আমার ন্যায় শত্র্ মন্তকোপরি রাত্রিযোগে স্কীয় অবস্থার আন্দোলন করি- থাকিতে আপনি কিকপে ণিশ্চিত ছিলেন "? তেছেন, এমত নময়ে অশ্ব নমাগমের গাঢ় ধুনি 🍐 প্ডা। "বাপু, তুমি উপায় বহিত করিয়াছ, কর্নগোচর হইল। তথ্পুবণমাত্র সূরজমল ভটত এই ফণে কি করি? কোন ভানে না কোন ভানে टर्या किहालन, · • • श्रामात जाञ्जू । जिस मछक तका कति । इसे दिव ?) नाकाया क्षिया बच्चा क्षित्तन, ও जिब्रकात-शूर्वक त्रश्वाम छनियामाळ त्रम् अप्तरम ल्याद्रम क्षिया কহিলেন, "পূর্বের বিংশতি অদ্ধাত হই
«সুর্গায়ল শাক্ষের সঙ্কল সুর্জ্মল, ওংসঙ্গের সুঞ্জা, ঐ তেও এক্ষণকার এক মুপ্তি অধিক । সুজো শেষ শংখাই সুগায়ল খদেশে বিখ্যাত ছিলেন।

বৃতা চ্টল: প্ৰশেষে রাজবিদ্যেহিরা পরা- মার ভ্রাঞ্পুঞ-ছন্তাপিত মৃষ্টি হইলে তাহাই किं इहेहा अपनरण शलायम कतिल: अवः वर्षे १। अधिःशत मूका यूक निवातं । कतिया शृथी-পৃথীরাজ জয়গুজ হইয়া কাতদেহে চিতোরে রাজকে কহিলেন, "বাপু হে! যদি আমি হত প্রভাবেত্র করিলেন। পরস্ত তাহাতেও পরা- হই, তাহাতে দুংখ নাই: আমার রাজপুঞ তন-इडेन का, शिक्दा ७ ज़ावृशूध फेल्सिहे शत- कात द्वा**रिशानिस इहेर्द; किन्न** कात স্পার বিনাশে ব্যগ্র ছিলেন। পৃথীরাজ প্রতিজ্ঞা বিয়োগ ছইলে টিতোনের দশা কি ছইবেক?

আর কেচ নছে 😗 অপর ঐ বাক্য কহিতে না 🐖 পরদিব্য প্রাতে বিবাদ ভঞ্জ করিয়া নিজ-কচিতে পৃথারাজ নবৈনে এ জানে উপনীত টিস্মহাকালের মনিতের বলিপ্রদানার্থ পৃথারাজ হইলেন। তৎক্ষণাৎ সৰ্বত্ত কোলাহল ধুনি উঠিল, বুড়াকে আহ্বান করিলেন, কিন্তু তিনি আদ্রাতে প্রাধিট্কালের য্যার ন্যায় সর্বা**র অন্তর্প্তি হ্ইতে। অশক্তপ্রযুক্ত সারজদেব তৎপ্রতিনিধি** ট্**ইলেন**। লাগিল, কি শন্ত্র, কি মিত্র, কে কাছাকে বিনাশ । যথানিয়মে পূজা নমাপনানস্তর মহিষ বলিপ্রদন্ত करत ज्ञानात किन्नु रे एचं। इहिन मा। युवताक व्हेन; ए० शेरत अकरे। हाग विवाधार नकानीन मभारत्राच-मरद्या आराम लिए व्यारक लक्षा कतिया शृथीत्राक विकासित थाफ्रा करेया मा। करमरवर्य এমত আঘাত করিলেন, যে তাহাতেই তাহার মন্তকচ্ছেদ বারত ঐ অবিশ্বস্ত কুটুম্বের ছিল্ল-মন্তক िनात्मा मछादना हिल, किल माइकारिय ममरश् महाकाल मधीरण ममर्थन कतिरलम। भूदकमल के

তথায় আপন পণ সারণ করত আপন স্বত্তু সমস্ত সতজ-নদীতটে বাস করিত। ১৮১৯ সংবৎসরে সূরজমলের উত্তরাধিকারি শাসিত করিতেছেন।

করিয়া মানবলীলা সংবরণ করেন। তৎপরে তাঁহার পুত্র রাও রৈনমল্ কিয়ৎকাল রাজ্য করিয়াছি-লেন। তিনি তাঁহার পিতৃপুরুষদিগের তুল্য ছি-লেন না. তত্রাপি অত্যম্ভ বিবাদবিসম্বাদের সময়ে ताकमर्यामा यनाशात्म तका कतिया यत्थेष्ठ (भीत-বের সহিত সামাজ্য করিয়াছিলেন।

পতিয়ালার ইতিহাস।

४४४४४४४४४४४४ দ৴ কএক দিবসাবধি পতিয়ালার 🔆 মহারাজ কলিতায় অধিষ্ঠান করাতে 🏻 💢 💢 ৯নেকেই তাঁহার আদ√বিবরণ-শু-রণে উৎসুক হইয়াছেন; সেই অভিলাষ সিদ্ধ কর-্বাভিপ্রায়ে এই সর্ভাক্ত বিবরণ প্রকটিত হইল। যাঁহারা বিবিধার্থের পূর্ব২ থণ্ডে শিথদি-ক্ষৈর ইতিহাস পাঠ করিয়াছেন, তাঁহাদিগের অর্ণ बाकिए भारत य मुक्षा नारम প्रनिष्क अक विष्मय निधमण्यामात्र चारक, वे मन्युमात्र विजुक कृति-য়ান্ বংশজাত আলাসিংহ নামা এক জন শিশু

ভুমাদি ব্রাফাণদিগকে বিভরণ করিয়া এককা- কাবুলাধিপতি অহমদ শাহ অবদালি ভারভবর্ষ লে মিবার পরিত্যাগ করেন। পরে বিদেশ-যাত্রা- । জয় করিবার অভিপ্রায়ে পঞ্জাব-প্রদেশে আজমন কালে পথিমধ্যে এক নেকড়িয়া ব্যায়ের আজ- কিরেন তদ্তে আল্লানিংছ আদৌ নরছিন্দ প্রদেশের মণ হইতে এক ছাগ আপন শিশুকে রক্ষা করিতে- মুসল্মান রাজপ্রতিনিধিকে প্রিয়াস্ত করিয়া পরে ছে দেখিয়া তিনি তাহা শুভচিহ্ন বিবেচনা করেন, ভার্মদ শাহের সহিত যুদ্ধ করিবেন মান্সে সর-ও তিনি রাজ্যের কিঞ্চিৎ অংশ পাইবেন চারণী হিন্দ-প্রদেশে যাত্রা করেন, কিন্তু তথায় উপনীত मिबोद बहे जारिक स्वतिशूर्वक उथाय जावानदाम- ॑ हहेरांद्र शूर्वहे अहमा नाह ठाँहात नसूर्य **উश**-নির্দারণ-করত ভত্তত মিনারাজাকে পরাজয় করি-্ স্থিত স্ট্রা তুমুল সস্থামে প্রবৃত্ত হন। ঐ সস্থা-য়া প্রতাপগঢ় দেওলা নামক প্রনিদ্ধ স্থানের প্রান্ধ শেষল্যারা "; তাহাতে অগন্য শিখ্ থম পত্তন করেন; তদবধি ঐ স্থানের ক্রমশঃ উন্নতি । যোদ্ধার নিপাত হয়, এবং যে কেছ যবনদিগের হয়, এবং অদ্যাপি তাহা ব্রিটিস্দিগের অধীনতায় ভয়ক্ষর শস্ত্রইতে রক্ষা পাইয়াছিল তাহারা তদীয় হত্তে বন্দীৰূপে নিপতিত হয়। আলানিংহ ৰয়ং প্থীরাজ তাঁহার ভগিনীপতিপ্রদত্ত বিষ পান ্ ঐ বন্দি।দিগের মধ্যে ছিলেন, এবং যুদ্ধের পর্দি-বস অহমদ্ শাছের স্থাপে উপানীত হন। যবন-রাজ তাঁছার কালিক দৌষ্ঠব এবং বৃদ্ধির প্রাথর্য্য দর্শন কর্ম্য পর্য সম্ভুষ্ট হইরা তৎক্ষণাৎ ভাঁছার वस्त्रनरमाच्य-कद्रव-शूर्वक छाष्ट्रारक द्राका छेलाबि ও পতিয়ালা-প্রদেশের রাজত্ব প্রদান করেন। তদবধি ঐ রাজ্য তদংশের অধীন আছে।

> ৪৫ বৎসর হইল রণজীত সিংহ পতিয়ালা-রাজ্য আপন অধীনে আনিবার চেণ্ডা করিয়াছিলেন; কিন্তু ইণ্রাজের। তদভিপ্রায়ের বিরোধি হইয়া **শত**-জ্র-নদীর বামতটন্থ সমস্ত শিথ্-রাজাদিগকে আ শুয়-প্রদান করিতে ঘীকৃত হইয়া রণজীত সিংমের महिल मिक्क करतन; उपविध প्रक्रियाना-तारकः। কোন বিপদ উপস্থিত হয় নাই; প্রত্যুত সকল-বিষয়ের বিশিষ্ট উন্নতি হইয়াছে। ২৪ বংখর र्हन, हे॰द्रारकदा मूयायू-श्रद्धांटव यद्वानिन-रक्षांद्र जिमि गुमिश्रहानपूर्वक गेजियाना-बार्छा विकिष् रुहेर्फ निमन। পर्द छ शुह्न करतन।

शिव्यानात वर्षमान त्राकात नाम मरहेन्द्र मिरह ;

ইনি মৃত মহারাজ করম্পিংহের পুঞা; ইহার বিশেষ নাহায্য করিয়াছিলেন।

जन्तीद्व-क्वालनाट्यं यथाट्याना जेनाथि जिल्ल कथीटन २८०।। थानि ग्राम काटक, अवः जाहात তাহা উচ্চারণ করা কর্ত্ত। নতে; অতএব পাঠক- বার্ষিক আয় প্রায়ঃ ২৩,০০,০০০ লক টাকা। খ-দিগের জিল্লার কেশ্যজাবনাসত্ত্বেও তাহা লি- জাতীয় শিথ্রাজ্য-ধৃংস-করণে প্রভাবিত রাজা থিত চ্টতেছে: যথা, মহারাজাধিরাজ-রাজেশ্বর বিশিষ্ট উদ্যোগি ছিলেন, এবং শেষ শিথযুদ্ধ महावाका-वाकाना भरहम् मिश्ह नरतम् वाहापूत्राता नगरत है ताकापिशटक १८ वक छाका कथर्क पिशा



पहें डि

किल्ला अस्त्र मिक अक वृहर बील चारहः छाहा । छाहात व्यवस्य छैलात मृष्ट्रिक इहेन।

काकतिमिटगत व्यावान-इमा। ১৫० वर्मत रहेस, क्षेत्र तजनमूर्मत प्रकारन वाकतिका- त्नानद्राष्ट्र मामा बक कम श्रीमक शानिक बुद्ध वे बी-🐉 थरखंत शास्त्रं मामाशास्त्र नारम श्र- । शहहेर्ड अकिं चिंड चाम्हर्य संख चानिशाहिरननः

যাক্ত হইবে, যে তাহার দেহ কাঠবিড়ালের তুলা, ও মস্তক ও কর্ণ বাদুড়ের ন্যায়। কুবিয়র নামা বিথ্যান্ত প্রাণিতভুক্ত ভাহাকে কাঠবিড়ালের মধ্যে
পরিগণিত করেন, অথচ তিনি লেখেন, "যে ইহার
মস্তকের অবয়ব বিবেচনা করিলে ইহাকে বানরমধ্যে গণ্য করা কর্তব্য"। শিবুরর সাহেব
ইহাকে লীমর পশুর বংশমধ্যে গণ্য করিয়াছেন;
অপর কএক প্রাণিতভুক্তের মতে ইহা বাদুড়ের
মধ্যে নিবেশিতব্য; পরস্ত ইহা কোন্ পশুর ন্থে
গণ্য হইবে, এই বিবাদ অপেকায় বিশেষ আশত্যা এই, যে সোনরাট্ সাহেবের সময় অবধি
এ পর্যান্ত এক শত পঞ্চাশ্ব ব্রুমর মধ্যে অনেক
সাহেব মাদাগান্দর-দ্বাণে ব্যতি করিয়াছেন, কিন্তু
ভন্মধ্যে কেহই এতজ্বপ পশুকে দেখেন নাই।

যে পশুটি সোনরাট্ সাহেব আনিয়াছিলেন, তাহা দিবলে নিদ্যু যাইড, এবং রজনীযোগে পঞ্জরমধ্যে ইতস্ততঃ করিয়া কলমূলাদি ভক্ষণ করিত। তাহার রব "এইএই" শব্দবৎ, এবং তৎপ্রযুক্ত তাহার নাম এইএই রাথা হইয়াছে।

পার্দ

व्यक्ति क्रमाणातात नगात मोठन कित्र हिंदि निर्देश क्रिये क

দুব পারদ জলহইতে ১ তা। গুণ গুৰু; শীতদারা
পারা জনিয়া গেলে ঐ গুৰুতার আধিক্য হইয়া
তাহা ১৫।। গুণ গুৰু চইয়া থাকে। জল উত্তপ্ত
করিলে যে প্রকারে বাদ্প হইয়া থাকে, অনু্দ্রতাপে পারাও সেই প্রভারে ধূম হইয়া থাকে,
অর্থানপ্ত িচুই থাকে না; পরস্ত জল অপেক্ষায়
পারাকে ধুমকপে পরিণত করিতে অধিক উত্তাপোর প্রয়োজন। তাপমান যন্ত্রদারা নিক্ষাপিত হইয়াহে, যে জলকে বাদ্যাকণে পরিণত করিতে ২১২
তাপাংল ও গারাকে ধূমকপে পরিণত করিতে
১৬২ তাপাংল পরিমিত উক্তার আবন্যক।

অপরাপর থাতুর ন্যায় পারাও থানজ দুব্য;
থানমধ্যে তাহা রজত লৌহ বা গল্পকের সহিত
মিশ্রিত হইরা থাকে। কোন ২ থানতে অমিশ্রেত পরিশুল পারদ দৃষ্ট ইয়াছে, কিন্তু তাহার
পরিমাণ অত্যণপ। প্রায়শঃ পারদ গল্পকের
নহিত মিশ্রিত থাকে। এ মিশ্রিত পদার্থের নাম
'হিলুল"। বাজারে যে সকল পারদ বিক্রয়ার্থে
আসিয়া থাকে, তৎসমস্ত হিলুলহইতে প্রস্তানি

কৃত। মৃত্তিকান্তে বৃহৎ বৃক্তের শিকেড় যে শুত করিয়া এক তুলুরের এক পাথে স্থাপন শুর নালক তাতি প্রাচীন প্রশুর মধ্যে ঐ হিন্ধুল ভজাপে বিশ্ব চত্ট্য় থাকে। ভারতকর্ষে ঐ ছিন্ধু-कित थानि करिक बाहै. किदन तिशान-श्रीपारण हाह। प्रष्टे इति, प्रक्रिय-साम्बिकाः कृत्निन, शक्तिः ७३ भेडेक्स प्रस्कान स्थित थाति याहर কিন্ত ভাগ্তইতে অখিক হিন্তু উদ্ভ হয় না; বিজ্ঞানে যে সমাও পারদ স্তুহিত হয়, তাহার श्रीक्षः सम्बद्धी धास अदः **एक्षान् भागहरूएक आणिश** থাতে। ্শধোক্ত দেশের অপরাপর হিন্দুল থবি-गर्दा ''व्यान्याम्न् '' नगरतः थनि गर्दे अस्ति । প্রিষ্ট ত্রের ৭০০ বংসর পূর্বে গ্রীক জাভীয় মন্ যে রা প্রথমতঃ তথাহটতে পারদ নজুহিত করে: उन्दर्भ क्रभागंड ३००० वर्मन कांन शर्या छ उथा-হটতে প্রচর ভিত্রল উভোলিত করা হইতেছে, কিন্তু তথাপি তাহার সম্পত্তির শেষ হয় নাই। এই कर्ष उपाइहेट धूजिर्दर्य ५--५ महमु त्यान विञ्चल डेंटलालिक इस; এवः उपर्रथ उन्नार्धाः श्राचारकः ७०० मनुषा सूम कतिहा थारक। शृहकारन 🖰 में गक्त लोक थनियाला श्रादम कहित्तई वक কল রাজপ্রতিনিধি আনিয়া থনির দার রুদ্ধ ্রিত। পরে ঐ কর্মকারকের। ক্রমাগত পাঁচ ত্য নাম ভ্ৰান্ত কল থাকিয়া প্ৰচুৱ পরিমাণে িস্থ-সভুৰ করিলে পর এ আর বিমুক্ত হছত, একং তথ্য তাহার। ও ২ গৃছে যাইবার অব-াশ পাইত। এইকানে ও দৃশ নিষ্কুর ভাচরণ আর লাক্, পারস্থ ভিচ্নাল্ডান্থন্ম-আর্মা আচ্যাস্থ প্রান্তাল B. M. 121

पृथिकः विकृतने निक्क किसन्न लोक्**पृत सि-** विदाहे नाहे।

প্রকারে বিস্তৃত দেখা যায়, প্রথম ও দ্বিতীয় করত উত্তপ্ত করিলেই, ছিম্মুলের গন্ধকভাগ লৌছের সহিত মিশ্রিত হইয়া পড়িয়া থাকে; এবং পা-রদ পরিশুদ্ধরেশে পৃথক্ হট্য়া তুন্দুরের সর্বত্ত **ছড়ি**श পড়ে।

> পূর্বে লিখিত হুইয়াছে, যে এক আল্মাদনের খনিহইতে প্রতিবংসর ১০—১৫ সহসু মোন পারদ নিগত ছট্য়া থাকে। তৎশুবলে অনেকে বিন্দয়া-পল্ল হটরা প্রশ্ন করিতে পারেন, যে প্রতিবৎসর এত পারদের ব্যবহার কি? দপনপ্রস্তুত ও গি-ভিটকরিবার নিমিত্ত তথা ঔষধিপ্রস্তুত-করণাথে भारतम्ब कमानि এउ गएश क्हेट भारत ना? अहे প্রশোররে পাঠকদিগকে পূর্বগণ্ডের সুবর্ণ-সং-त्माथरमत প्रायात स्वादंश कदाहरू इस। उपरक्ष ভাঁছারা জানিতে পারিখেন, যে পারা বাতাত थनिজ-वर्ग कनाशास्त्र পরিশুদ্ধ हहेर्ट পারে नाः রজত সংশোধিত করিতেও মনেক পারদের আ-বশ্যক; প্রতিবৎসর যে নকল পারদ বস্তুহিত হুর, তাহার অধিকাংশ এ থাতু হয়-ন-শোধ-নের নিমিত্রই ব্যবহাত হয়; অবশিষ্ঠ এক कृपुःश्न याज उविधि, प्रशंव, अ शिविषेश निभिन्न প্রয়োজিত হইয়া থাকে।

শিল্পশাস্ত্রের উপক্রমণিকা।

ुक्क कृष्ण हु मूयाका जित्र मुथमम् कि-वृक्ति इहेवां। ক্রিক মনুয্যজাতিকে গৌরবান্বিত করি-ক্রিক্তার্যক্র বার যে সকল উপায় আছে, ভক্ষাধ্য এবল, এবং ভাষাতে অনেধার অকাল-মৃত্যু १३- । শিশ্পশাস্ত্র এক প্রধান উপায়। অতএব ঐ শাস্ত্রের আলোচনা গৃহত্মাত্রেরই সর্বাক্তব্য। তদ্বারা ভিস্তভ্টতে পরে পৃথক্ ভরা দ্কর কর্ম নহো_় যে পর্যন্ত মহল সম্ভাবনা এমত আর কোন বি-

य खान नाडक तिए भा ति जा मता चर्डा काठ वखत विकाद मता डिमड पुरा शिखा किति। का माना उठः तमहे खानत्व है निष्मखान भारत वूबाय। किस वस्तु निष्मिता नाना विभ, उद्याद कृत उप्याद में पूरे शिक्षान माथा। जिन्व कार्या, मूनुकार्या, डास्त्रकार्या, मूठीक से हेडा मि मूस्त निष्मे, बदः मृहा मिन्ने यखा मिनिसान, मृह्य विष्मे, मूनुकार्या, क्षा कार्या, मूठीक से हेडा मि मूस्त निष्मे, बदः मृहा मिनिया, मृह्य कार्या, मूनुकार्या, क्षा कार्या, मृह्य कार्या, मूनुकार्या, कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्य

সংসারমধ্যে এত প্রকার শিল্পবিদ্যা আছে, যে তাছার সঙ্খ্যা করা দুকর; ফলতঃ মনুষ্য-কৌশ-लित नामहे मिन्भविष्णा। मनुष्ण (य कौन कोनलि যত প্রকার দুব্য প্রস্তুত করে, নে সকলি শিপে-विष्या मन्नाच वला याहेएं शास्त्र, मूख्द्राः चलवि-জাত বস্তুর বিকারে কোন দুব্য প্রস্তুত করিবার মানব জাতির যত প্রকার কৌশল আছে, শিশ্প-বিদ্যারও তত প্রকার শাখা আছে। এই শি**ণ্**প-विकार मनुरमात अहिक-मूर्थंत श्रवन कातन, विना निष्णिकात मनुष्यात क्रीवनयाजा-निर्वाष्ट হওয়া কঠিন, এই নিমিত্তে পরমদয়ালু পরমেশ্বর মনুষ্যমাত্রকেই শিস্পবিদ্যা লাভ করিবার শক্তি **मिशार्ट्स, नकल मन्यारे (ठर्छ) कहिला (काम** না কোন ৰূপ শিম্পবিদ্যা শিক্ষা করিতে পারে। শুমোপাজ্জিত কল অধিক মিষ্ট বোধ হয়, এই হেতু জানাকর পরমেশ্বর প্রকৃতিজাত বস্তুতে म॰ मात-निर्वाद्दत मञ्जून डेल ह्यानिका श्रमान क-दिन नारे, किश्रमः म मिन्धितिमा अधीन व्राथि-शास्त्र। मनूषा यथकिषिय यञ्च कतिशा संजातक वखन गहिक (महे मिल्लिविन)। প্রয়োগ করিলেই আর সাংসারিক কোন সুথের অভাব থাকে না, मकिं पूर्व इस्

नःनात्रमध्य बचावकः य नमख मुका छेवः भन्न

হইতেছে, তাহার সহিত আমাদিপের শিংপাবিদ্যা সাহায্য না হইলো ব্যথমই সে সমস্ত দুব্য
আমাদিণের সুখদায়ক বাব্যবহারোপযোগী হইল
তে পারে না। সভাব হা এক ৰূপে ধান্য উৎপন্ন হইতে পারে বটে, নিজু যদি আমরা শিংপা
শক্তিছারা দেই বান্যের দিক্ষার না করি, ভবে
কথনই ত্যাধ্যক্তিতে হালা ভগুল প্লাপ্ত হইতে পারি না। এইৰূপে সংস্থেমধ্যে আনেকানেক দুবা উৎপন্ন হয়, গাঁচার সহিত শিংপাবিদ্যা সংযুক্ত না হইলো কথনই তাহা মনুযোর
ব্যবহারোপযোগী হইতে পারে না। সত্রব
বিলক্ষণ প্রতিপন্ন হইতেছে, গাঁ বিনিধ্য উপায়ছারা শিংপজ্ঞান উপাত্তন করা জগদীবারের
প্রস্তি সম্ভবননীয়া।

निम्पञ्जानाजादर योशानिकात एवं पूकर चौन মাণ্দ ভক্ষণ বা কল্মাত্র আহার করিয়া দিন-যাপন করিত, উক্ত জ্ঞান প্রভাবে তাহারাই এক্ষনে চৰ্য চোৰ্য লেহ্য পেয় চতুৰিৰ উলাদেয় দুৰ্য ভক্ষণ করিয়া সুখী হইটেছে:-- শিশ্স সানাভাবে যাছাদিগের পূর্বপুরুষ দিসলর হুইয়া বা বৃক্ষের यत्कल गतिवान कतिशः होदन-क्षणा कतिज, শিশ্পদ্ধান-প্রভাবে তাহার ই একণে প্রপূর্ব রম-ণীয় পরিচ্ছদ পরিধানপ্রিক বা চিজিত-মণি-মুক্তা-হারক-রত্যদি খচিত ভ্ষণে বিভূষিত হই-য়া অভিন্যিত নানাবিলাদের উপভোগ করি-তেছে: যাহাদিগের পূর্বপুরুষ সামান্য শ্যা প্রস্তুত করিতে না পারিয়া ধরাশাদ্মী হইয়া নি-দ্রাযোগে নিশা হরণ করিত, তাহারাই একণে অপূর্ব পর্যাঞ্চাপরি দুগ্ধকেন সদৃশ শয়ায় শয়ৰ क्तिया श्रममृत्थ यामिनीयाश्रम क्तिरक्रः ;— याहानित्रव পूर्वभूक्य अर्वकृषित वा उक्छनवानी

হইয়া বা ক্ষাণে পর্যত কামন ভুমণ করিয়া। নির্মাণ করিয়া দিংশক্ষে দুন্তর সমুদু পার চ যাবজ্জীবন প্রজেরাজ বৃধি ও উত্তাপ সহ্যকরি- । য়া নানাদেনের সহিত বাণিজ্ঞ কার্যনেরা । शास्त्रः তাহাদিলেরই এফনে অপূর্ব অউালিকা- সারের এবৃদ্ধি করিতেছে: অন্য দেশের রী स्था अन्माहिता अर्दास्त्य निवान इहेरल्ट्ह। नीजि अवश्रु इहेशा विविध-विषय ध्रवीन । শিলপঞ্জান বিহালভা-প্রযুক্ত যাহারা পদচারণ ্তেছে; ভিন্ন ং দেশের বিদ্যা দকল সঞ্জ কা मः कतित्व अकजानक्षेट्ठ जानाजानं श्राष्ठ **परमरम श्राप्त कतिरहरू, अमस्य**नीय ६ जा ছটটে পারিত না, নচেতন-জাবের অ**জ্পরি-। নুনীয় কার্য্যন্তল সম্পন্ন করিয়া দেশ্**বিশে চালন ভিন্ন গজিলজির শন্য উপায় জানিত : দেবতাবং মান্য হইতেছে।—ফলতঃ শিল্পা না, সংখ্যার উদয়ান্ত ভিন্ন ক্ষমপ্রেকারে দিগ্নিক-্দ্রা সংসারের নিতান্ত শুভকরী, এব মন্ পণ করিছে পারিত না, দিবা রাত্রি ভিন্ন অপর মাত্রেরই আদর্শীয়া। মনুষ্য এই বিদ্যায় ক কোন প্রকার কালের বিভাগ বা কালের পত্রি- ভিজা থাকিলে তাহার নকল বুদ্ধিবৃথিকে কালে মান করিতে জানিত না, কায়িক বল ভিন্ন অন্য তে পরিণত করিতে শক্ত হয় না, মনোগত কা কোন উপায় কোন শুমনাধ্য কর্ম সম্পান্ন করিতে ভাবে মনোমধ্যেই থাকে, তদ্যারা সংবারের 🕡 कम इहें ना, अवः मामाना वृद्धाति विद्या उपकात इहें भारत ना। क्वानित 'মতিফুদু সরিৎকেও উত্তাণ হইতে পারিত না, দিগের শিশ্পভানের সভাব থাকিলে কাষ্যান কেবল ৰভাবজাত বস্তুর প্রতি নির্ভর করিয়া এক তাছামেও অজ্ঞানীর মজে তুলনীয় চইতে হ প্রকার নরাকার ছিপদ পশু হইয়া কাল্যাপন শিল্পানিদ্যাদ্বারা দুলভকে সুলভ করা লায় ব করিত, শিশ্পজ্ঞান-গ্রভাবে তাহাদিগের শস্তা- ল্যকে পৃথুলা করা যায়, অন্পথ্লা ভুঞ নের। বিলা প্রতিক্ষপে-বিনা কোন জীবের। বহুমূল্য করা যায়। শিপ্সবিদ্যালয়ে। 🕬 ं जिमक्तित मारुरया-जिश्व ताष्ट्रांश-यांगादतारूटव । साधीन रूड्रेटज भारतः प्रतिमु धनी रुड्रेटज 🦠 অভ্যাপ্তালের মধ্যে বহুদূর সমন করিতেছে; এবং দেশের দুংখ দূরে গমন করে 🗀 🦈 निशियत माद्या कड कड मृह मिल्मह राखी छाउँ मिल्मिविम्रास्नित य कड कन, बर अस्त ভইতে পারিতে**ছে, দিগ্**নিদশক য**ন্ত্র-নাহাযে** অ- মনুয়ের কচ ইষ্ট নিজ হইতে পারে ১০০ ৫ कल-माण्य-मध्या दक्षसंत्यादभङ पिश्निवंश कति- त्नद्र बाठीक । য় বাঞ্চিত-পথে-প্রমন করিতেছে; অন্তুত ঘটকা যন্ত্র প্রত্তক্রিয়া ফ্**তি সৃক্ষানুসুক্ষরপে কালকে** : বিভাগ করিতেছে, কভ কভ বাস্পায় যন্ত্র স্থাপন করিয়া বিলা দৈহিকবলে অতিশয় শুমসাধ্য ব্যাপার-সকল অবলালাক্রমে সম্পন্ন করিতেছে; 🌋 এব॰ কড প্রকার কত ব্য**য়ের কত শুমের লাঘব**- . क्तिट अट्ट मनाद्यारम नः मादत्र कार्यानरयाशी

म. ह. अ

कम्लाबनक नाइन भः गः।

** मार्थियम्।-व/वनात्री शिख्टवत्र। न 🌮 🖁 উপায়দারা নিৰাপিত করিয়ায়ে ※※※※※ (य नामार्थ व्याकारम विम्र्राद-व প্रতीয়মান एय, তাर मझीर निर्कीय नकत र नाना प्रकात पूरा प्रस्त कतिरहाए; श्रकाय लाक छह वर्डमाम चार्ट, वर चरनक मरन कर



যে তাহাহইতেই নজার বস্তর গালিশা 📲 উৎ- গায়েল্য ারলালেছে এই বিদ্বাহ-পদাথ সর্দ भन्न इन्हें थारक। देकिएर्स डाफ्टिंड क्वांदिक देवान के . यारक श्रीकान-नमस्य दाष्णपूर्व যত্ত্রে বর্ণন-সময়ে (১ ৫ পৃষ্টে) ঐ ভাড়িত বায়ুধ সাহত গছা চাগত হয় বলিয়া তাহা পদার্থের কি২ বিশেষ ধর্ম আছে, ভাছ ব্লিভ ধৃত গো হায় লাচ গারস্ত লাভ-প্রধান-দেশে र्हेगारह। वे श्रेखारन श्नमकि कहिर नाक एवं काराह काल्किक रहेरन सनुवारम**रकार** रहेरत, य **তাভিত পদার্থ অত**্যন্ত ক্রান্ত করে ক্রিন নাল। ত**্সময়ে অনে**-**জল, সাজাপুন বায়ু ও ছাতু** দুৰা প্ৰাপ্ত জনাল কে: দেহত্ত ত বিস্নাথিয় নিগত ত্ততে দেখা भनाशादम अक निर्मियमाद्ध नथ्यू २ दकाम अस्म विश्वाल। जुडेमन अ नहस्रव अस्मान मीज-्गन कतिर जिल्हा । भक्ष एक माझू, भामा, धून । कारण एक वा प्राप्त हेगान मगरन करनक कीरका-कार, इसम, क्रम श्रामृति पुरवात छेलत पिश्चा किर्दा । विकार विकार विकार क्रमा চাহা কিঞ্ছিৎ মাত্র চলিতে পারে না; সূতরাং থাকে। ক্ষান্তায় ও অনাত্রে শীতকালে বি में रूप्ता काकृष किया ताथिएन काष्ट्रिक समा- प्राप्त कार हाठ यूनावेदन में श्रकात विमू प्राध पाम आयु करा माकेटक भारत। विकान वाकिता निग्र कहेटा रिथा शियारका अनेतानत कीव-उङ्गित्त वह वर्ष का वाकिया कान्र भगार्थ (म्ट्ब नाम ःकाटा विमूर्-माक स्था याद्रीक जोर वर्ज्यान चाट्य, करममूकाय निकालिङ कति- शादा। शतः वङ्गरम् दे छेदाल-एक्य वक

প্रकात महा मध्या वरः माकिन्-प्रमञ्ज वक श्र-় কার বাইন মুৎসা গুড়ীব আশ্চয়ান্ধনক। ষোক মংসের প্রতিমূর্ত্তি পূর্ব পৃত্তে মৃদ্রিত হইয়া-ছে; ভদ্টে ব্যক্ত শ্ইবে, যে তাহার অবয়ব এড-দ্বেশীয় বাইন মৎস্য **হ[া]তে** বিশেষ বিভিন্ন ম**হে**। प्रक्षित अविदिकार निर्माण के वाहैन मधन कानक আচে, এবং তথায় ভ হারা অপরাপর বাইন হত ात नाय शक्ष्माथ व्यवस्थिति करत, वावः ध्यम् ারে; ফলতঃ জনা বাইন মৎসাহইতে ইহার 🦮 ভাষ কোন মতে পৃথক্ নছে; গরম্ভ ইচাতে এক। व्यक्ताकृत माकि व्याष्ट्र, ७९% गृक त्य त्कान कीत এ নংব্যাক স্পান করে, ভংক্ষণাৎ ভাছার (*-াহর সমস্ত গৃত্তিতে থিল ধরিয়া যায়: জলা সে স্পান্দ রহিত হইয়া নিপতিত হয়। ঐ থিলংরা अञाम मञ्जानक या भन्या अककारत पृष्टे किल्हा মঙ্দাকে স্পার্শ করিলে মরিয়া আইবার সঙ্চা-ন্মা! ইচাকে স্পার্শ করিলে অস্থর **নিপ**তিত চইয়া থাকে, সুতরাং অন্য ফুদু পশু যে তৎ স্পার্শে ানুশ্বদাণ হইবে আশ্চর্য: নহে: বিলাতে এক প্রকার मझत मदमा चारह, ए हार्टिस बहे चक्र ह मिक् প্রভাক হয়, কিন্তু ঐ শ क তাদৃশ প্রথর নছে। ঐ শঙ্কর মথস্য স্পার্ম্ম করিলে হস্তে খিল ধরিয়া থাকে; কিন্ত তদ্বেত্ক পড়িরা যা**ইবার সন্তাবনা না**ই। · এই শক্তিতে প্রস্তাবিত যৎস্যাদিসের কি বিশেষ उपकार इश राहः निवाशिष्ट कडा पुष्पतः वाध , शाध नाई, तम भूव कथन कार्वाहरणत वनीक्ठ रुइ. जोटामिरशङ अञ्चलमा **स था**मा <u>मु</u>दा मक्रेट्ड निमिन् कंगदशाना नाशामिश्रक हे मानिर्दाशी করিয়াছেল; পরস্ত ইয়া স্পাই প্রমানাক্ত হট্যানাচ্ ह, त्य विष्ठ श्रमाण नर्वाकार गर्जमान श्राटक, छ।-ाइके व्याधित्का अके मानि छैन शह हुवे। बारक।

नीजिम्ङाश्यो ।

微淡紫淡紫 বারত্তে ক্ররারাধনা করিলে অবশ্য क्वारा उज्जयकरण मिश्व रहेरव।

डिका: अमान कतिरम क्रम मित्रम् 💥 🎇 হয় লা, দসু/বৃত্তিতে কেহ ধনী হয় ना, बर विश्वया थाकित्व क्ट्रा छात्री द्रय ना।

উ**রম** হা**নের কুলজীতে কি আ**ংশাক।

য়খ ে ত্রেখ জন্মে, তথ্ন তাহার কল ভাবা কৰ্ত্তৰ্য

ब्लिधिक भगन किएल अक दनदान् "जुरक দমন গরা ১ য়।

व्योगिविष्याञ्च मनुष्य साखिक इत्त. किन्छ गिनि शुभक्षिकाल दिमारा शाहनभी इहेद्राट्डन, जिनि व्यवनी हे व्यापिक हरेरवर:

ce । अरवंद्रव कद्र, उटव अभग्नानी हरेगः। **क्ष्मच्या मुद्रारभक्षा मन्मः काद्रभ हेहा धा**हः **এব॰ । শंक উভয়কেই মত** করে

য়ে ভার অবিবেচনাপূর্ত্তক কলে করা হইয়াছে, ভাছা देवराजा-প्रकारत रहम कहाई जान। যার্ব ছলে নাই, ভাহার ভাইপো অনেক।

शिकि कार्यमात करता हान करतन. जिनिहा हि 39 (FR)

मान्य ठाहे जगहीस्ट इत नकत चाड्याह अह कत्रा।

যে পুঞ্জ পিতামাতার নিকট কোন উত্ম শিক্ষা र्हेदव ना।

यिनि माखाय बांछ कतिबात अधिक वागना करत्त्व, जिनिहे नर्समा व्यमुद्ध ।

विविधार्थ मन्द्र,

ठा थे। ५

भूतावृत्क्षिणम-श्राविदिना-मिण्य-४ पृक्ष्यामि-म्मा एक गिलिके अख ।

० वर्ह 🕽

नकाक १५७, लिए।

न्तकशास्त्र त्खाः।

কিছুই িটেড পারে নাই। তিনি কাৠ-সমৰভা-্ বাপন্ন জান দীন ব্যক্তির তনয়ার প্রেমে আসক্ত হতত যথাকালে বিধিপূর্বক তাহার পাণিগুহ্ব কোন উপায় না দেখিয়া এবং দিন২ আপ্রার দীনতার বৃদ্ধি দেখিয়া কোন সময়ে আপন মধে-তে এই कथा अवधातिङ कत्रिद्यम, य "आमाप्ति-भित्र (मर्टमात य किर्निधनी । नित्रम रूड, (गर्वे र) कि है हिम्मू शान विश्व व्यक्तिक्ष चानशांत पूर्यमा मूत्र कत्व मूथमण्याखित चाक्रम रहेटल्ड; अछअव भागां । भन्तिविलक्ष हिम्-शाम भगन कहा कर्वा । शाका गरमागर्या वह

भड़ामनं **डिड कडिड़ा**ं अक किन चार्किताशत

্ৰাপুৰ পৰু বান্ধব আন্মীন সূ**হত**্পানুতি সক-त्याः कार्याः व कार्यं मानामा व व कार्यम তার-রাজ্যের পশ্চিম খন্ত-নি- বিজ্ঞান কর মুল/বর্গ বৎকিঞ্ছিৎ সর্থ সরে वानी चिटिद्रांगित उनुबर्टमा- वहें। चित्रविष्धअवट्य वाष्ण्यप्तिवाग्नेन चाणन **ृ** खन, थाका कार्यम् नामा अक निर्देश सम्बिनाहात हिन्तू आना जिसूका श्रहाने कि वानिधक क्षत्र क्षत्र वानिधक क्षत्र क्षत्र कार्यमधा कार्मश वालन ध्रविनीरक म कि विश्व व नीनज्ञावाशम हरेलाह्न । जा अवश्व वाद्यार कवारेया व्याशनि विश्वार्थ हात शिवासाका जाहारक यामृत्र खान व किमात शास्त्र शिंहक वा शिरला। छ०कारन विहितारमत শিক্ষা গ্রহণন করিয়াছিল, তাদ্ক ধন দর্শসতি জী গাওঁলতী পাকাতে বল্দরপর্যটো তাহার र्गरक का उक्टेनाया एकेश किलेन। याजाह मरक एम किसू वर्ण छिल, जन्मिन्स्त स्टब्स हे जाहात ्रवेत **रसं, प**क्वार जारात धक्किल ज्ञान **छन-**कतिशाष्ट्रितमः किञ्च छाष्ट्रात छत्रनरिशायन कतितात । किञ्च क्रेवार शू. वरे क्रीकार्क छिका। छास्रम किश्री कोवनबाहन युहिटा इन्हेल। 🕒 विटन रेडबूबवारमारक्त नाम्नेनिमरणत निवासकृषि हि-मुश्रास्त्र योगा, अकि जाजात-तारकात मीगा, अरे केहर भीगात ग्यावर्डी त्य चकि मृति-**फाइनाक्ष कान क्रि. थाका जिका क्रिट**े २ करम । वेहे कारन का का छेशडिक बहेरनन। तन अगठ मिद्र छहात्र हान, त्य ख्यारा मनू याद याकारा क कतियां ब्रेट्या विक्रमांक उ पृष्टिगावत रम ना। अञ्दर्भ कार्यानिट न कूट बिनानाम



歌から者 万ち よんかいひ から 一九日の 独に 日 成に

निवाहर्भत निवित्व अध्यत १ । इयद क्षा भूका एड विमामञ्ज भारतात नक्षाता किम जना छेर स নাই আইয়ানের বিশ্ম শক্ষণ উপস্থিত, পূব-रका महर कहिया सिहिट छ लाइन मा, अर् मबार्थ मिनिएउ मृजू व्यवस्थाकन कविश व्याप्तः रुहेराइ ७ एइमा रुस नाः

এই কণে কথার ভাছার। তিন দিন অনুস্থান কালহরণ করিল, ইলোমধ্যে আইয়াদের পুনুর প্রস্ব বেদনা উপস্থিত। তথন সেই অবলাগ্রা আপনাকে ভক্র দুঃখাগারে নিশভিতা বিষয়া ষীয় পাতিকে ভৰ্নন। কাইতে আইস্ক করিল। ক্ষি क्त अमन अञ्चलकात भाषा वह, बाह्र, बर्क, ४१-ন্ধব সমপ্ত পরিভাগে ১রিয়া আইলে? স্বোধান যদিও সহসু প্রকার 🐠 িল, তথালি প্রস্থাণ 🖯 ঠে। জীবিত ছিলাম, জেথার কবে 🗫 দ্থা ১ইবে কি না, ইছা নাৰ ক**িয়া কেন তুৰি** আ-পনার পূর্ব ভান পরিভাগ করিলে? এখন জনোর শোকি হইবে"। এই জুলিনা করিবার ক্ষণকার िवास बाहेशस्त्रत बालित्रममुख्यती वित्रविम्-ল্লাকার ন্যায় একটি কন্যা ভূমিষ্ঠা হইল। কি জানি যদি কোন ।থিকের সমাগম হইয়া विभ करम जारामितक महिन मामा है। এ প্রত্যাশীয় ভাষারা ঐপুক্তে কিছুকার ত थ ग्रे व्यापक कतिया अहिन; कि ह जारोसिट्न क

उंशाक्ष मार। भुरे दियस विश्व अस्य भार व्याहेश्वान् कमा रेक्टन छेलात ना लाहेशा तमना व्याक्त कहलीत स्मारहेट अञ्चल कतितन: कि इंशन डिलि अमड पूर्वल इत्साहितन त्य তাঁচার পদ্বিশেষ্ট্রার শক্তিমাত্রও নাই, এবং তাঁ-ছাত পত্নীও কু: শিপ'লায় কাতরা গ্রযুক্ত **অথে**নি भाग दिन थारिक कर्मका मूज्या वि नदम्मा का र कर्मात्व य ऋद्यां कि जर्भ कार्यन करन তাহার কোণ উপায় বা দেখিয়া ভাহারা যোর शक्टि शिक्ष बहुन: अन्याहित्क व्यानिद्व अ कारत मा, धारण कहिएछ लादित नार्र अकर বার বাৎ সভাবে মুধা হ্ট্য়া আদিবার অ-फिलाय कॅइटररक्षः अकर् नात निजाल निक-পায় দেখিয়া পরিভগগের মন্ত্রণা করিতেছে। অনস্তর ক্যাল জন্ত স্থিত করিয়া সেই কন্যাকে কংকগুলি এতাতে আবৃত করত এক ভক্তলে तो थहा व्याप्याता **अ**प्याप्य मञ्चलनग्रस्य श्रुष्ट्रांन 市[集輯] 。

আইয়াদের শ্বী ধাউতে> এক ২, বার পশ্চা-ভাগে নিরীক্ষণ করে: ক্রনে ক্রোশার্দ্ধ পথ অতীত হইলে ৰখন সেই অভাগিনী দুঃখিনী রম্ণী কন্য বা সেই বৃক্ষতল বা ভাছার কোন নিদর্শন আর দেখিতে পাইল না. তথন সে শো-(करंड चाण्ड्स रहेश) · हा करनः हा करना, ! এই বাকা উচ্চারণ করত সাধা প্রাহইতে ধরা-त्म श्रेष्ठामा वार्थ हरेल। तम्भमन साम नटह उटल शिवित हरेश मृष्टाणस हरेश। अहे व्यवसा य मिथात काम मन्त्रात नमापम इश्वा काम नमभीत थाला चलाख क्लक वोख স্থা यত অন্তাচলাবলয়ो रहेट लेशितन, उडहे समस्य পতीत निक्छेर्राई रहेटा आहारक मासुना তাहारिशित छत्र वाफिट लाशिल ला निविष् क्रिक्ट लाशिक्तन, "किस नाहे, क्रिक वित्र क्छ, वनः (त इता कतमूनामिषात्रा भूदात निवृण्डि देशन्। वन्यन कत् वानि श्राण्डा कतिरक्षि, कवि-एरेटन काच्-छङ्गामि माना शक्ति हानक सद्य जिलात कन्मक जानिया हिल्मु क्छिमिरगत निक्षे हरेए जान शाहरात स्वि । এই वाका खनिया मिरे व्यक्तासिनी श्राध-

সাবভার নিকট আনিয়া দিলেন। খালা আ- ্ছাকে একান্দৌল উপাই দিয়া আপনার शन खाँत निक्र के किलमरण श्रामक्रेकि कन्यात श्रीधान ताम द्वायाधारकत मध्यमान कतिरन्ता। व्यान्धर्याकरण द्रका शाहेदाः व्यानुष्टिक स्रांकि अन्धर्या। कारत रथ कि इद्य छाह। रक ত্তাস্ত কহিতেছেন, এমত সমন্ত অব্যয় কতক্ষণা বিশাহত পারে। ঘটনগরতে যে কি কথন ঘটিয়া পথিক আসিয়া উপস্থিত হট্ল; এবং উহাদিগের । উঞ্জি তাহা কখনই নিএই করা বায় না। অরব্য-पूर्णभारभरिन मूर्श्यक क्रेया क्रम्लाक्ति अक्षा स्था स्था स्था स्था स्थान्य या स्थानिक করত তাহাদিগের দুংথ হয়ণ করিখে অনস্তর थाका बोय পञ्जीत महिन्छ ना/ हैन क्लै 🖘 कर्म जारकात नगरत चामिश्रा डेर्गनोड क्ल्रेंबन

यक्कारम चारेवाम भीरहार-मध्दव छेशविक श्रृतिन जिल्लाल छेखा नगीत ममुद्दि चाक्रब-नार बाका क्रबन. १वः र्छ रात श्रवान मञ्जी भागकर्थ। नामक बढ़ उहिल त्राध्यविधादन छेल-चिक्र पाकिशा नर्वना हाक्काकार्या निर्वा**र** करिन তেন ৷ ঐ আদ**ক খার নজিত আইয়াদের** লোন দ্র সম্পক্ষ ছিল। তিনি আইয়াদের আগমন-राडी छाठ रहेश रखुठात उपयुक्त मर्जामा-পূৰ্ক ভাৰাতে স্থাপন হাটাতে আৰম্ম করি-लन; भर ठा**राद थांशन यशीरन नम**छ কাষ্ট্রের সংখ্যাদক্রাপে দিযুক্ত করিয়া রাখি-क्ति। राहेश्रान् च**विवरएड् नर्वविश्वास कानाः क**

টেড্ডন্সা হওড উঠিয়া বসিলা এদিলে খাজা মনোনীত ন্ইয়া উনিলেন। কিয়ৎকাল এই প্র-म्हें कमारिक कानिएक शिया रास्थ विस्प वि- कार्यः बांशम कतिकी श्रद्ध काम घटनाक्राम भए उलाइ इ. अक कालमर् भार क्यारक जीहात कार्या-क्यर प्रमाशहर रेनेशूना ७ भार-(रहेन कर्ष्ठ कार्शन कन। विद्**ष्ठ कवित्रा छा- ।** गरोत विषय त्राध्यक्त(गाठर क्**ट**शाद्ठ ताका হাকে গুলি করিছে উদ্যত হইগছে। কিছ জীব- ৷ তুওঁগুৰ্কি আহাকে বহনু-অত্যাধ্যক্ত পদে মান। পরিভাগেপুর্বক থাজা। খাক্রমণে বর্প । নির্ভ করেন। লবে কিছু দিনের মধ্যেই থাজ। ভয় পাটয়া এক বৃক্ষজোটন্ধ দ্বা প্রবেশ করি- আন্তেরের সকল গৃহকায়ের পর্ত্ত পদ প্রাপ্ত ল। ইত্যবকাশে খালা কন হেব' ভাতে হা- । হই। লন। অপর চাঁহার কর্মদক্ষ্য ও বিশ্বস্ততা ৰু করত অভিবেগে গমশগুর্বক ছাছাব গ্র–িদিন» অধিক প্রকাশিত ছভয়াতে রাজ। তাঁ-त्कांक्य, कानकृत्य त्र हे शहेशाम देवतीयवेमाचाड जाक्षेत्रवायद माध्य । प्रक्षेत्र अक श्रेषान वः नि इन्हें केडिन

> ४.४.४०/भाष्यः व्यार्थसारमञ्जातमः व्यापनाः अत्यापाः व्यापनाः । ्बर्क प्रशः **काक्द्र संय अमीकन्दनमा** * काविन ं कनाम भरण व नाम चिंह नुमक्षत्रे ত্রী (ছিল, কারণ ভারণ ভূমিতে চরুল। রুপটা व्याः त्करहे हिन मा। व्यारेशान व्यक्ति। 🖓 🎺 कः एक मानाविष्यः मिका-श्रम्भ किहान मुठा भोजनाया अवः हिलामि विभागः समीयः त्मना **व्यक्तिया रहेया उठिम। (म व्यक्ति** एक्ने मजावा किंद्र समय वृक्षिमची मिद्रेकामिनी क मुद्रमिका (क्यमि सहासमा हिन।

वक प्रित्न द्वाराणुव्य जनीम चाहेम्रात्वद्व गरिङ সাক্ষাৎ পুরিতে তাহার ভবনে গমন করিচা-हिस्सन। ७वाच जन्माना जानित उनती जान

[&]quot; वातीन वाको नी नांबक भू ४ अहे वाकि नवामध्यम नाध्य the sittle

^{*} जीव्यक्तिः क्षप्रानः

কেরও আগনন ছইয়াছিল। পরে যথন কএক ব্যক্তি প্রধান লোক ভিন্ন অপরাপর সকল নি-মন্ত্ৰিত ব্যক্তি সভাহইতে উঠিয়া স্ব ২ স্থানে প্রস্থান করিল; এবং সুগল্ধি মধুর মদিরা পা-নের সহিত পরস্পার মিষ্টালাপ হইতে আরিয় হইল, তথন দেশ-ব্যবহারানুসারে অবগুঠন-वर्जी महिलामधनी जर्माया ममान्जा इहेरजन। ताक भूख वे मखनी मर्थ। अमीक न्निभारक एन-থিয়া ও তাহার আশ্চর্য নৃত্য ও মধুর সঞ্জীত শুবণ করিয়া অধৈয়া হইলেন; ক্লিন্ত তথন কোন মতে অন্তর্ভাব সংবরণ করিবার নিমিত্ত সাব-ধানে রহিলেন; পরস্ত তাহার উৎফুল্ল-কনল-जूना भरोतनायना, मृहाक मूम्मा व्यक्त প्राचाक ও শরকলুসদৃশ মুখন্ত্রী मंसकात्म রাজপুত্রের মনে তাহার নৌন্দয়্য অদিভীয়ক্তপে বিরাজ করিতে লাগিল। যেমত রাজপুত্রের নয়নচকোর তাঢ়ার सोन्पर्यामुधानारन कानक रुहेश (नहे पिर्न थाविङ इहेरव, अगनि अभीकन्निंग। इनक्रास বদনহইতে লড্জাবস্ত্র নিক্ষেপ করত আপন অ-পান্ত-ভলিবারা রাজকুমারের মনকে এককালে विषा कविन। ও তৎপর ক্ষণেই সলজ্জ ও ব্যস্ত নমত হওয়াতে ভাহার ৰূপ আরও বর্দ্ধিত হই-য়া উঠিল। রাজকুমার সভা-ভঙ্গপর্যান্ত অচে-जनপ্रायः उस हरेशा कालगाशन कतिए नाशि-लन। अभोकन्निमा निम्ठशक्त ताककृमादित मन वृत्यवात छन। नाना यकात कथात को नव করিতে লাগিলেন, কিন্তু কোন ফল দর্শিল না। व्यनस्त (मिन में एक इरेन।

নলাম প্রেমেতে অন্তিরচিত্ত হইয়া কি করি-বেন, ইহাই চিন্তন করিভেছেন। এদিনো অমী-কন্নিসার পিতা-টকোমেনিয়া-নিবাসি আলি-কুলি শেরআফ্গান্ নামা এক ব্যক্তির সহিত

তাছার বিবাহের সম্বন্ধ স্থির করিলেন। বলীম
এই বার্দ্রাশ্রণানন্তর অন্য কোন উপাদ লা
পাইয়া উক্তা কন্যাকে বিবাহ-করিবার হৃত্যা
প্রকাশ্যক্ষণে আপন পিভার নিকটে ব্যক্ত করিলেন: কিন্তু তাঁহার পিভা এক জনের নির্ব্ধীভূত জ্ঞাকৈ অন্যে প্রদান করা অত্যন্ত অবিচার বোধে অতিকোধপূর্ষক তাহা করিকে অধীকার করিলেন; সুভরাং রাজকুমারকে সলা
ভল্ল ও হতাশ হইয়া প্রস্থান করিতে হইল:
ও যথাফালে শেরআফ্গানের সহিতই ম্মাকেন্
নিসার উদ্বাহ সম্পন্ন হইল।

রাজকুমারের অভিলয়িত বস্তু পরিত/ক্ত না করিয়া অমীকন্নিসাকে বিবাহ করাতে শেরআক্-গানের নৌভাগ্যের ভির পক্ষে অনায়াদে ব্যাঘাত मछावा, किन्नु गांवर अन्वत वाम्मात वर्जगाम ছিলেন, তাবৎ দলীম প্রকাশ্যরূপে ঐ আক্রাদের প্রতি কোন অভ্যাচার করিতে পারে**ন নাই।** পরস্তু রাজসভার অপরাপর কর্মকারি সকলে (मिथितिक, य शिविशिष ज्ञामिह ब्राटकाश्वत इह-বেন, এবং তাহাদিগের নকলকেও তাঁছার অধীন **रुटेट्ड रुटेर्टर, अड्डिंग मलीरमंत्र शतिर्डाशार्ख** সকলেই ঐক্য হইয়া সর্বদা রাজসন্নিধানে স্ক্রেল আক্গানের অলীক দোষ দশাইয়া ভাহার বি-পক্ত। করিতে আরম্ভ করিল। ইহাতে শীক্গান্ অত্যন্ত বিরক্ত হইয়া আগরা-রা**জধানা পরি**-ত্যাগ করিয়া বঙ্গদেশে প্রস্থান করিলেন। তথা-কার সুবাদার ভাঁহাকে বর্দ্ধমান চাকলার কর্ত্ত্ব-পদে অভিষ্ক্ত করেন।

অক্বর পাদশাহের মৃত্যুর পর যথন সলীম বয়ং নিংহাসনাবাঢ় হইলেন, তথন তাহার মনে পুনর্বার অ্যাকন্মিলার অনুরাগানল প্রজ্ঞালিত হইয়া উঠিল। অমীকন্নিসার ভাব তাহার মনে

রাখিয়াছিলেন; অতএব উভয়ের মিলনের শের আক্গান্ মাত্র প্রতিবন্ধক ছিল। তাহাকে দূর করণাভিপ্রায়ে দলীম শের আফ্গান্কে বর্জ-मानरहेट अध्यानीए बाज्यान कतिरलम, किन्नु ভাঁছার খনে মনে এই এক আশকা রহিল, যে : "कश्यः कि ध्रकारत **अभा**त्र लाक **ও** धर्म विकक्ष শন্বেধ করি?"

शाहितन। তिनि योत्र नाधनति निसिद्या-रिमाः গুৰুণ কৰিব। খান-খানান উপাধি প্ৰাপ্ত হয়েন।

জাগৃতই ছিল, কেবল পিত্রাজ্ঞায় গোপন করিয়া | অক্বর্ বাদশাহ বীরদিগকে অত্যক্ত আদর क्रिकिन, मूज्राः जाँशात्र निकृष्टे हिन व्यक्ता जामृष्ठ इहेरवम हेहा मकरलहे जम्माम कतिरुष्ठ भारतन । 🍋

জাহাজীর * যথন শের আক্গানকে আপন मिक्सारन जाञ्चाम करतम, उरकारन मिक्नीरा ठाँ-श्रंत ताकथानी हिन। त्मत ताकनिकटि छेश-কাৰে প্ৰবৃত্ত হই? কি ৰূপে এমত প্ৰধান এক ডিড হইলে রাজা তাঁহাকে অত্যন্তমৰ্য্যাদাপূৰ্বক ব্যক্তি আমীরকে স্বজ্ঞী পরিভাগে করিছে অভার্থনা করিলেন; নানপ্রেকারে সন্মান করিছে লাগিলেন। শের সহজেই সরলস্বভাব; রাজার শের অতুল ব্লব্টিয়ের নিমিত্ত লোকসমাজে এতাদৃশ অসকত আদর দেখিয়াও তাছার মনে অত/ন্ত বিখ্যাত হইয়াছিলেন। সকল লোকই কোন সংশয় জন্মিল না। তিনি মনে করিলেন, তালার প্রতি সম্ভূষ্ট ছিল। অধিকস্তু শের মভা াযে কালক্রমে রাজপুত্রের মনহইতে অমীকন্নি-ৰতই ভাত্যন্ত দুৰ্ণশাল, ও বাৰ্চ্চশালী, তিনি যে নার অনুরাগ অন্তর্হিত হইয়া থাকিবেক। কোন এমত লভ্জাকর ও কুৎ সিত ক্র্মাকার করিবেন, নতে বুরিতে পারিলেন না, যে রাজা তীছাকে এমত ক্থনই কেছ মনে করিতে পারে না; নষ্ট করা নিশ্চয় করিয়া অভ্যস্ত নিধুর ও নি-ফলভঃ হিন্দুখানে এমত ভদু লোকই বা কে দিত উপায়-দকল কম্পনা করিতেছেন। রাজা আছে, যে আপন প্রাণয়ত্বে আপনার পত্তাকে মুগয়া-যাত্রার নিমিতে কোন এক দিন নির্দাণ শরিভাগে করিতে পারে? শের অভি প্রখান রিত করত অনুমতি দিলেন, যে "কোন্ বনে ভদ্বংশায় এবং পূর্বাবাধ মহামান। তিনি ব্যাঘাদি হিংলু জন্ত আছেমণ কর"। া যাবৎ বৌৰনাৰতা কেপন করিয়াছিলেন: এক অতি প্রকাণ্ড ব্যাঘু আছে; ভাছা ভৎ-পারস-দেশে এবং সকাবিবংশায় তৃষ্যা রংক্র পার্শুবর্ত্তি জনপদের অত্য**ন্ত অনিষ্ঠ করিতে**-मार हैम्माल्या निक्षे चाठा । गाठिश्रा ह- एक, ७ मर्तमा श्रकामिरगत हान, स्मन, तन, পাছির বহিত বিষয় কথা করিয়াছিলেন। ত:- সকল নষ্ট করিয়া থাকে। রাজা আপন দলবল লার প্রানাম লাস্তাজিলো; পরে এক ওশেরণ: বৈদ্য সামস্ত ও শের আক্গান্কে সঙ্গে লইয়া অর্থাৎ ব্যাঘুটে এছটেও ব্য করাতে শের আফ্গান্ নেই ব্নাভিমুখে যাত্র! করিলেন। কিছু দুর থা-নাল প্রাপ্ত হরেন। জিন্দুস্তানে সকলের নিকট তিনি কিতে নুগয়ার্থিদিগের রীজ্যনুসারে চতুস্পার্শইইডে এ নামেই পরিচিত ছিলেন। অক্বরের যুদা- সেই বন বেষ্টন করিয়া সকলে একতে মিলিতে কালান তিনি অভ্তত আছুত কমতা প্রকাশ করিন আরম্ভ করিল। পরে ব্যাস্থ্র যোরদাদ করিয়া

क मसीटमत खेशादिक माम।

জুদা হইয়া উচিলে, রাজা দেই শব্দ শুনিয়া অতি-(वर्ग (नरे फिल्म हिन्दिन।

যথন সকল প্রধান বারগণ আসিয়া একত্রিত **इटेटनन, उथन जाका काहाकोत উटेन्द्रश्चरत कि-**छामित्नम, "जामामिरगत मरधा कर्माक क অগুসর হইয়া এই ব্যাঘুকে আক্রমণ করিতে পারে"? সকলেই অবাক হইয়া পরস্পার অবলো-कन कतिरं वाशिन। भरत नकरन स्नित व्याक्-গানের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেক, কিন্তু বোধ হইল, যে তিনি তাহাদিগের অভিপ্রায় বুঝিতে भारतम नाहै। ज्यदानाय भिरं योत्रहक्रहरू जिन জন উমরা ও অগুদর হুইড়া শঙ্কা-পরিভাগি-পূ-र्दक প्रार्थन। कतिन, य "महात्राक जामानि-গকে অনুমতি কৰুন, আমরা যে কেছ এক আন্তুরিক পৌৰুষ উচ্চুদিত হইয়া উঠিল। তিনি মনে করিয়াছিলেন. যে "এ দুংসাহসী কর্মে আর । কেছ সাহন করিতে পারিবে না; আর নকলে যখন অধাকার করিবে. তথন সহজেই আমি এবিষয়ের যশোলাভ করিব", কিন্তু দেখিলেন, যে তিন জন অগুসর হইয়াছে, এবং তাহারা श्रथरम च्यापुरविं इन्याटि विवरत पुर्वे इरेन, এক্ষণে ব্যাঘ্রের বহিত যুদ্ধে তাহাদিগের অধিকার জিম্মাছে, ভাঁহার যে পূর্বপ্যাতি ছিল, বুঝি তাহা এতদিনের পর দুর হইল৷ এই বিবেচনা করিয়া শের দর্বসমূথে কহিলেন, ''অজদারা কোন পশুকে বধ করা অতি অবোগ্য, এবং কা-পুরুষতা; পরমেশ্বর পশুকেও যেমত হস্তপদ म्डामि थ्रमाम कतिशास्त्रम, मनूष्रक् तन् मक भकन दिशास्त्र; অधिकन्तु मनूष्राक चनी-धातन-क्रमण-मानिनी वृषि चनित्रक धानन

অযোগ্য । শেরের এই কথা শুনিয়া অপ্রাণ্ড উমরাওরা ভবিকদে এই প্রভুত্তর করিলেক, বে "अनुवासाबहै वााचुहहरा पूर्वन, चाउवव जाहा-কে কেবল শন্ত্রছারাই পরাজয় করা যাইতে পারে"। শের উত্তর করিলেন, "আমি তোনা-দিগের এ ভূম দূর করিতেছি"। এই কথা কছিয়া আপনার অনিচর্ম-পরিভ্যাগপূর্বক নিরম্ভ হইয়া युरक्ष यादा कहिए छेम् ए इहेरलन।

যদিও রাজা ইহাতে শেরের নিশ্চিত মৃত্যু মনে করিয়া মনেহ অত্যন্ত আছুাদিত ছইলেন, কিন্তু বাহে৷ সে ভাবকে গোপন রাণিয়া এমত অসম-নাহনিক কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে শেরকে নিবারণ করিলেন। শের একান্ত দৃচপ্রতিক্ত ছিল, স্মত-এব রাজা লোকতঃ আগন ইচ্ছার **অভিশয়** ব্যক্তি এই পশুকে নষ্ট করিব"। ইহাতে শেরের ইচ্ছাস্বরূপ খনিড্যা প্রকাশ করিয়া সমত হই-लिन। मकलिरे चाम्हर्धायिक इरेन, कथन শেরকে মহাবীর বোথে মনে২ প্রশংসা করি-**ट्हा** कथन वा नर्दरभाडारव पृथ्माइनिक कारधः প্রবৃত্ত দেখিয়া আক্ষেপও করিতেছে; কিন্তু উপায় না দেখিয়া সকলে নিস্তন্ধ হইয়া রহিল। ব্যাছের সহিত শের আফ্গানের যে প্রকার যুদ্ধ **হ**য়, নে বিষয়ে অনেকে অনেক কথার বিন্যান করি-য়া লিখিয়াছে, কিন্তু দে সকল বিশ্বাসযোগ্য নহে। ক্ষিত আছে, যে ব্যাপক্ষাল যুদ্ধ করি-য়া অবশেষে শের জয়ী হয়েন। এ অসাধারণ কার্ফোর সম্পাদনদারা শেরের প্রতিষ্ঠা অভ্যন্ত বিদ্ধিত হইয়া উঠিল, এবং রাজার মন্ত্রণা বিক্ল ষ্টল। পরস্ত রাজার ইহাতে শের আফ্গান্কে নও করিবার ইচ্ছা নিবৃত্ত হয় নাই; তিনি উপা-য়ান্তরের চিন্ত। করিতে আরম্ভ করিলেন।

শের আফ্গানের শরীরে ব্যাত্মের নথদস্তা-করিয়াছেন। তাহাতেও পুনঃ অত্তধরা অতীব । ঘাতে যে সকল কত হইয়াছিল, তাহা সুন্দর-

 प्रे वक वलरान् इंडिएक मम्। शानहात्रा विमात्र इरेटनना উন্ত করাইয়া এক নজীন পথের মধ্যে দণ্ডায়- এই ঘটনার পর রাজা ছয় মান পর্যান্ত শের-মান কর; শের আফ্গান্ যেমত দেই পথ কে বধ করিবার আর কোন চেষ্টা করেন নাই। দিয়া গমন করিবেক. তুই অমনি ভাহার প্রতি ইহার কারণ কিছুই স্থির হয় নাই। কি রাজা অমা-হাতিকে প্রেরণ করিয়া দিশ্, ভাগা হইলেই কৃত কন্নিসার অনুরাগ স্বায় মনহইতে দুর করিতে कार्य इन्ड्या याहेरवक "। दाशांत मत्म हिन त्य किहा कहित्क हित्तन, कि चीय हित्वत श्रे हिन ে এ প্রকার ঘটনা প্রায়ঃ এদেশের মধ্যে ঘটিয়া পাত করিয়া এমত কুকার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে বিরুত থাকে; অভএব ইলাতে আমার প্রতি কেছ বড় नम्बर कतिय ना"।

মাহত রাজার আজানুদারে মেই প্রকারে ছব্তিকে দণ্ডায়মান করিয়াছে: এদিসে শোর শীয় যানালোহনে সন্থানে প্রত্যাগমন করিতে-ছেন, এমত কালে তিনি পথিমধ্যে মত্ত হতি ইভোনধ্যে হস্তি তাঁহার প্রতি ধাবিত হইতে ল্গিল। তদ্তে বাচকেরা পথ মধ্যে যান নি-किथ कहिशा धान्छत्व नकत्न शनायनं क्रिन् শের দেখিলেন, যোর বিপদ্ উপস্থিত: অত-এব ভংকাণ্য মানগ্ৰতে বহিগত হইয়া কটি-দেশস্ত্ৰি নিকোষ করত সেই হস্তির শুণ্ডে আঘাত করিলেন; তালতে হত্তির শুও এক কালে ছিল হইয়া গেল; ও হস্তি বৃংহিত ধুনি করত ধ্রাতলে পতিত হইব। রাজা গোপনে ছিলেন; শেরের অনামান্য পরাক্রম দেখিয়া কারের কার্য্য নির্বাহ করিতে লাগিলেন। তাঁহার

ক্ষে আরোগ ছইতে না হইতে তিনি রাজার । লভিজত ও চনৎকৃত হইয়া প্রস্থান কুরিলেন। সহিত সাক্ষ্যরণভিলাকে তথ্যমীপে আ- পরে শের রাজপুরে গমন করিয়া নিঃসংশয়ে গমন করিয়াজিলেন; তাছাতে রাজা তাঁছাকে সকল বৃস্তান্ত রাজার নিকট নিবেদন করি-অতিসমাদর করিলেন, সুতরাং ভাহাতে শেরের লেন। রাজা আপনার মনোগত ভাব গো-মনে কোন ভিন্নভাব বোধ হইল লা। রাজা পন করিয়া বাহ্যতঃ শেরের বলবীর্য্য বিষয়ে শেরকে ব্যু করিবার নিমিত্ত দ্বিতীয়-কুমস্ত্রণায় অনেক প্রশংসা করিলেন; তাহাতেই শের অভিগোপনে এক মাতৃভকে কহিয়াছিলেন, যে প্রসন্নচিত্তে দস্তই হৃইয়া রাজার নিকটহ্ইতে

इट्रेलन, তाहात किहुह निगंत हहेन ना।

শের আফ্গান্ ইত্যবদরে বস্তদেশে পুনরা-গমন করিলেন। রাজা শের আফ্গান্কে নষ্ট করি-वात (य नकल मञ्जा कतिशाष्ट्रिकन, ठारा नक-त्विति क्वाउमात रहेशाहिन: मर्बना मकन त्वादक अ कथा लहेडा व्यात्नानन क्रिका (य ब्राटका बाकाइ দেখিয়া বাহকদিগকে পর্ভমুখ হইতে কহিলেন, একাবিপত্য থাকে, দেখানে রাজাদিগের তো-यात्मातनत व्यञ्चात कि? तालात यथन याश रेक्श হয় ভথনি ভাহাতেই নকলে পোষকভা করে ৷ বহুদেশের সুবাদার কুতবুদীন এই প্রকার এক জন তোযামোদকারী ছিলেন। তিনি রাজার প্রিয় হইবার নিমিত্ত তাহার বিনানুমতিতেই শে-इत्क वंध क्रिवांत উদ্যোগी हहैत्वन, ও তड्डानः 8क जन मन्। नियुक्त करिया ताथितन। मानन, যে যথন অবকাল পাইবেন, তথনি লেরকে নষ্ট করিবেশ্ব শের কুতবুদীনের অভিপ্রায় অব-এক গ্রাক্ষত্ইতে এই সকল ব্যাপার দেখিতে- গত ছিলেন। তথালি নিঃসংশয়ে আপন অধি- ৰীয় বাহুবলে এত বিশাস ছিল, যে তিনি চতুর্দিগে বেষ্টন করিয়া ভাহাকে আক্রন্ত করি-মধ্যে প্রবেশ করিল।

लान। प्रमु/पिरगंत सर्था कथक वाकि लाइरक गरहत श्रहात कतिरन"। " वीद्रित्र माग्न कथा किसाह भ, अहे वाका बनिया **ए० जनार मयाहरूछ शाखाबान कदितन, छ** ভাঁহার পাশ্ব শাঞ্চি অবি শুহ্ণ করত গৃহহুর वक कारन मधात्रमान वक्रमान। मब्द्रा नक्रम

রজনীতে কোন ভৃত্যকে ভাহার ভবনে থাকিতে ল: কিন্তু স্বত্পকালের মধ্যে তিনি জ্ঞান্ত বলিতেন না। তাহারা নিদিষ্ট-নিয়মানুসায়ে স্ব ২ দুসুসিংগকে কভবিক্ষত ও শোণিতাক্ত-কলেবর গৃহে আসিয়া শয়ন করিয়া থাকিত, কেবল এক করিয়া ফেলিলেন। শরাজিত ইইয়া প্রাণ্ডয়ে জন প্রাচীন দারপাল শেরের শয়ন-মন্দিরের নিক- ক্মনেকে, তাঁহার পদ ধারণ করিয়া রহিল; টে অবস্থিতি করিত। দসু/রা দেশের বার্ত্তা বিল- 'মবিশিষ্ট অনেকে পলায়ন করিল। শের যীয় কণ্ট অবগত আছে; এদেশের লোকে কথন যে মত্ত্ব প্রযুক্ত কাহারে। প্রাণ বধ করিলেন কে কি করে, তাঁহা ভাহারা ভালই জানে। শের না; কিন্তু অন্তেরের অধিক দস্য তাঁহার আফ্গানের ভবনের বহিদারের দকিণ-পার্থে অন্তে আচ্ত হইয়াছিল। যে বৃদ্ধ তাঁহাকে জা-তাঁহার লিথিবার পড়িবার একটি গৃহ আছে, গৃড করে, দে আর পলায়ন করিল না। শের তাহা দিয়া তাঁহার শায়নমন্দিরে প্রবেশ করা ভাহার হত ধারণ করত ভাহার সভরিত্র জন্য যায়। যথন বিলক্ষণ অন্ধকার হইয়া আইল, তথন তাহাকে সাধুবাদ করিলেন, এবং কোন্ ব্যক্তি-দস্যরা বৃদ্ধ রক্ষককে অনুপস্থিত দেখিয়া বাটীর কর্তৃক এই কুৎসিভ ব্যাপার কম্পিত হইয়াছে, ইহার দবিশেষ ভাছার নিকটহইতে জ্ঞাত হই-নিয়মিত-সময়ে প্রধান ছার কদ হইলে পর য়া ভাছাকে যথেষ্ট পুরস্কার করত বিদায় করি-শের আপন প্রমদার শহিত পর্যাক্তে শগ্নন করি- লেন কবং কটিয়া দিলেন, "তুমি সর্বত্রে এ বি-

নিদ্ভি মনে করিয়া অপে ২ নিঃশব্দে তাঁহার । শেরের এই অদুভ বীর্ত্রের কথা সহত্র প্র-শয়ন-গৃহে প্রবেশ করিল। তাহারা সম্পূণ প্রস্তুত চারিত হইরা উঠিল। এই কথা শুনিয়া ইহার হইরা শেরের শরীরে অজ্ঞাঘাত করে. এমত সময়ে স্বিশেষ ভ্রাত হইবার মানসে শেরের নিকট তাহাদিগের মধ্যে এক ব্যক্তি অতি প্রাচান সর্বদা শত শত মনুষ্য আনিতে আরম্ভ করিল। मग्राय जामु इरेशा উटेंक्टश्वरत विलिन; " अस्त मित्र विदिन्न। कितिलन, "या जात जामात দুরাত্মারা স্থির হও, রাজা কি আমাদিগকে একনে এথানে * থাকা কর্ত্তর্য নছে; আমি এইরপ অনুমুতি করিয়াছেন? পুরুষের কার্য। আমার পূর্বাবাদ বর্জমানে যাত্রা করি। সেধানে कर्; 80 **ए हिना वा कि अकलारन अक जन मैनू**- शिया बक्क्र (शालन छारव अभोकन्नि शास्त नहें या ষের প্রতি-বিশেষতঃ এক জন নিদুত মন্- থাকিতে পারিব"৷ শের জ্ঞাত ছিলেন না, থৈ বে/র প্রতি—আক্রমণ করা কি উচিত "? এই কেবল তাঁহাকে নই করিবার উদ্দেশেই কুতবৃদ্দীন र्ड्मनाम त्नातत निम् एक रहेन, अरः जिनि वस्पारमात मुवामाने नम श्रान्त रहेगाए, अवह म कि कथन जालन প्रजूत डेप्सन्।-नाथरन कि-**८** महिर थाकित (कान केशात्रवाता भारत वह

कं द्वाजयश्ले।

করিয়া অবশেষে সৈন্সামন্তের সহিত বয়ং শের এতাদৃশ অযোগ্য কর্ম্য দেখিয়া অভ্যস্ত কথা শুনিয়া সুবাদারের মাভার্থনার্থে তিনি কে- কোষমুক্ত হইতেছে। তিনি অমনি তৎক্ষণাৎ यत पूर्वि छ्का मह्य वर्षा क्यादाहान का- क्वरात निक्षे याहेश कामाति छथ कंत्रक अक পনি অগুবর্ত্তী হইয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ অসির আঘাতে কুত্তকে মস্তক ছিন্ন করিলেন। করিতে গমন করিলেন। কুতবুদান শেরকে দে- কুপ্রবৃতির এই ফল! কুতব্পাপাচরণদারা রাজার থিয়া অতিবিনীতভাবে স্বাগত-প্রশ্নে ময়্যাদা- সম্ভোষ করিতে গিয়া অবশেষে আপনার প্রাণ পূৰক সম্ভাষণ করিলেন; এব॰ ভাঁচারা কিয়ৎ- **হারা**ইলেন। কেবল সুবাদারকেই বধ করিয়া কাল অশ্বারো**হণে উভয়ে উভয়পাখিবতী হইয়া শে**র নিবৃত্ত **হইলেন না। তিনি অপর প্রধান** ২ লাগিলেন। কিয়দুর এইকাপে গমন করিয়া কুত্র । ভাহাদিগের সংখারে প্রবৃত্ত হইলেন। এই যুক্ষে অক্ষাৰ তির হুইলেন: এবং নগর-দশন করি- ৫ মহনু অথের অধিপতি কাশ্ট্রেনিবাসি অ-বার উপলক্ষ করিয়া সুসজ্জিত প্রধান হতি মার আবা খাঁ প্রথমতঃ প্রাণভাগে করেন; ंक पृद्ध गमाया ए इट्सम, उथम स्मत शूर्ववर नाहे, याहात श्राण व्याक्तमन, फालादि व्यमनि

कहासास, कुछतूकोन हेश मरन २ जरनक विर्वितन। अधिहरेरे लाइ ध्राण्टन निर्वाण्ड इहेरकन। সুসজ্জিত হইলেন। প্রধান রাজধানী রাজমহল- ক্রোধান্তিক হইলেন; বুঝিলেন যে "ইহার প্র লগরে সময় কার্য্যক্ষের ব্যবস্থা নির্দারিত ভুর অনুমতি না থাকিলে কথালি এমত অন-করত মিনি কভিপয় প্রধান ২ কর্মকারিগণের স্তব ব্যাপারে ইহার সাহস হইত না: অভএষ সমভিব্যালের অধীনস্থ জন্যান্য কুদু২ চাক- স্পষ্ট দৃষ্ট হইতেছে, যে আমার প্রাণের প্রতি লার কাষ্যক্রম ভুদন্ত-করণের ছল্নায় যাত্রা করি- ভাষাত হয়, ইহার মধ্যে এমত কোন কুমন্ত্রণা লেন, এবং ঐ যাত্রার তিনি একেবারে বর্জনান আছে ''। এই বিবেচনা করিয়া তিনি সেই চাকলায় আসিয়া উপস্তি হইলেন। বাদশাহ শুল্পারিব প্রতি কোপদৃত্তি করিয়া কহিলের, জানীজার তাঁহার প্রতি শেরকে বধ করিবার ভা- : "ওরে তোর কি প্রাণের ভয় নাই"? দে রাপণ করিয়াছেন, তিনি একথা স্বীয় অমাজ্য- এই বাল্য-উচ্চারণ-সময়ের নিকৃতভাব দেখিয়া গণের নিকট গোপন রাথেন নাই। রাজভক্ত সভয়ে ধরাতলে পতিত হওত কৃষ্যঞ্জলিপূর্বক আমীর শের আফ্গান্ শুনিল, যে সুবাদার কৃত- পোরের নিকট ক্ষমা প্রাথনা করিল। এদিগে শের বৃদ্ধান বৰ্দ্ধাননগৱে আগমন করিতেছেন। এই তখন দেখেন যে চতুদিগ্রইতে শাণিত করবাল নানাবিষ্টের কথোপকথন ক্রিটে ২ চলিতে শৈন্যাধ্যক্ষদিপের উপরও অন্ত নিকেপ করত শংনিতে অনুমতি দিলেন। হস্তি আইলে সুবা– অনস্তর অপর চারি জন অমীরও নিহত মাৰ ক্ৰপ্তিক পারোহণ করিলেন। যথকালে কুভব্ ক্ইলেন। শেরের হতে স্থার কাহারে। নিভার भ्यारहाकी वर्षेश काँकात नवारथ मधासमान का- नःशत। क्रवानिक सामास (सरतत विकन ্লন : ইতিমধ্যে এক, ব্যক্তি শ্লধারী, শের দেখিয়া চমৎকৃত ও মধেন শভাস্ত ভাত প্রে মধ্যে দ্রাহ্মান আছে, এই ছল করিয়া হইল। পরে সকলে কিঞ্ছিতের সাবস্ত হওত ভাঃ ে অংকে এভাদৃশ আয়াভ করিল, যে শেরকে চফুর্দিনে চুক্রবং বেইন করিয়া একঃ

ভর্ননা করিতে আরম্ভ করিলেন, "ধিক্ কাপুরুষ! यमि তোদের পৌৰুষ থাকে, তবে আয়, একেং আমার সহিত যুদ্ধ কর্'। কিন্তু তথন শেরের কথা কে গাছা করে? শের ক্রমে আহত হইতে नाशित्वन; এবং দেখিলেন, যে তাঁহার আদর কাল উপস্থিত। অনন্তর তাঁহাদিগের তার্থস্থান মক্কার দিগে মুখ ফিরাইয়া সানাভাবে কিঞ্ছি খুলিগুহ্ণ করত মন্তকোপরি নিকেপ করিলেন; এবং সমস্ত অন্ত্র শস্ত্র পরিত্যাগপূর্বক যুদ্ধেতে বি-রত হইয়া ত্রিভাবে দপ্তায়মান রহিলেন। পরে তাঁহার শরীরের স্থানে ২ ছয় গোলা প্রবিষ্ট হও-য়াতে তিনি ধরাতলে নিপতিত হইলেন, কিন্তু यावर जाँहात परहरक श्रानवाय हिन, जावर कान याचा माइन कतिया जाइत निकटे याइत পারে নাই। তাহারা ঈশ্বরের নয়িথানে শেরের যশো-বর্ণন-বিষয়ে জ্ঞাপনহ'ইচ্ছানসারে জ্মনেক শোক্ষাগরে পতিত ইইয়া পাছে প্রাণপরিভাগে करतः किस ग्रह गित्रा (मर्थन, रेम यमोकन्निमा

কালে সকলেই তাহার ৯তি নানা অন্ত্রনিক্ষেপ ট্রের্যাবলয়নপূর্বক শোকসম্বরণ করত অবস্থিত করিতে লাগিল। কৈহ পুংখানুপুংথ বাদ-স- আছেন। অমীকন্নিসা এমত প্রগাঢ়ভোকের-कान कहिएउटहः (कह भान मून निर्काण कहि- विजाणादि छोहात चरमभीत्र जीपिरगद निर्वाह তেছে; कहर व। वर्षाकारलं वृष्टिश्वातांत्र नामा (नाम किना किला करतन मारे ; अवर के कित নহ্সু ২ গোলাগুলি-বর্ষণ করিতেছে; ইতিমধ্যে আত্মদোষ খ্যালন করিবার নিমিস্ত তিনি প্র-তাঁহার অশ্বের ললাটে এক বন্দুকের গুলি প্রবিষ্ট কাশ্যরূপে এই ছলনা করেন, 'বে আমার পতি হওয়াতে অশ্ব পতিত হইল, সুতরাং শের অন্য , আমার প্রতি যে আছো করিয়া গিয়াছেন, আমি কোন উপায় না দেখিয়া যোদাদিগকে এইৰূপে তাহাই পালন করিব"। তিনি ব্যক্ত করেন, যে "শের পূর্বইতে জহান্তারকর্তৃক আপনার বি-নাশ জানিতে পারিয়া আমার প্রতি এই অনুনীতি করেন, যে আনার মৃত্যুর পর তুমি বিনা আপ-खिटा कहाक्रीतित मठानुवर्खिमी इहेटव"। जिनि এই कथाव (य नकन প्रमान ও यूक्ति मर्गाहेतनन, তাহা িত্ত অগুহি ও অমূলক। তাঁহার কথা এই যে শের তাপন অভুত কাত্তির লোপ হইবার আশক্ষায় অপিন বনিচাকে হিন্দুস্থানের রাণী করিয়া ভাষার কীর্ত্তিকে চিরস্থায়িনী করিবার षण्डिनाय क्रियाष्ट्रिलन।

দিল্লীতে রাজা খার বিশ্বস্ত ও প্রভুতক্ত কুত্-বুদ্দীনের নৃত্যেশংবাদ ভাত হইয়া অভিলয় শো-কান্ত হইলেন৷ কথিত আছে, যে তিনি অমীকন্-নিবাকে পরমবিশানপাত্র কৃতবের মৃত্যুর কারণ . জানিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন, যে আর তাহার बोরত্বের অনেক প্রতিষ্ঠা করিল, এবং তাঁহার মুখাবলোকন করিবেন না; কিন্তু অমাফন্নিসার সৌন্দর্যা ও সদ্প্রনে তাহার মন শীঘুই পরিবর্ত্তিত বাক্য-রচনা করিয়াছিল। কুতবুদীন মৃত হইলে হইল। তিনি বহুকাল অমীকন্নিসাকে প্রধান যে দৈন্যখ্যক সেনার কর্তৃত্বদ প্রাপ্ত হয়, সে রাজনহিধী করিয়া হিন্দুস্থানের আধিপত্য করি-चित्रिक्ष स्थान कि स्थापन कि विकास कि स्थापन क তাঁহার মনে এই বড় আশিকা উপাত্ত হইয়া- নুরজহান * নাম প্রদান করেন। তথা এতদেনে हिन, दि कि क्वांनि योपि व्योक्षिम्बिमा वाशात जाहात नाम वित्रवातीय-क्रवािक्शात्य छ ...

^{*} ক্রাভের আলোক।

কালের প্রছলিত স্থানুদ্রতে নিম্লিথিত বাক্র সুনুত করাইয়াছিলেন। তদ্যথা,

> ا بحکم اثناه حربان یا دافست صداریور از بغام افور جهان اداد تداه ادیشم ازار

" জহাজীয়ের আজ্ঞায় মহারাণী নুরজহানের নামপ্রভাবে সুবর্ণ শতালঙ্কারে বিভূবিত হইল"।

>२५५ नाल, ६ काल्डन ।

मुदर्ग 'उ ल्लोट्ड विवाम।

कत्र-विषयक-अञ्चाद-त्र क्रमात्र-कत्र-विषयक-अञ्चाद-त्र क्रमात्र के छेज्य थाजूत यदमावर्गन किएल प्रा-मानिए त नामन इहेग्राहिकः; हेल्डा-मत्या जित्रयक निमुख श्राणीन श्रवक क्रान क्ला-गार्थात निक्षेष्ट्रेट अश्रिष्ठ क्रथाए जाश ममानद्र श्रक्षित कित्रमान। अधिकञ्ज क्रियर्थ क्रम क्रम हिन्मू हानी कित्र गाजूर्या-श्रमक्लार्थ हिन्न्नी-बक्राल जीवात श्रवक्रहरू क्रक्षि अन्त छेज्ज कता (अल। शाठक्रम जनायारमहे क्रान हहे-रवन, (य मूण्जूत कूलागार्थ) किनीत हमदकात स्थी-

যান্ত্রণ আপন রচনায় কোনমতে প্রকাশ করি-

তে পারেন নাই, নির্থক বহুশক্ত অনেকস্থানে

প্রয়োগদারা রনের অনেক ব্যতিক্রণ করিয়াছেন।

ঈশার উচ্ছায় শুন দৈবের ঘটন।
লৌছ-ছণে বিবাদ হইল যে কারণ।।
কৈলাশশিথার মধ্যে অস্ট্রধাতু ছিল।
তার মধ্যে লৌছ আসি স্বর্গকে নিন্দিল।।
"নির্ভণ হইয়া কর কাপের গৌরব।
সিমূলের ফুল যেন প্রকাশে সৌরভ।।
নির্ভণ হইয়া যেবা বাচে পৃথিবীতে।
উচিত না হয় তার মুখ দেখাইতে"।।

चनरा छाणित योका नरा नीहि हत। **उक्तरकत गृर्ध (यन ८७८क श्रहतत्र)।** वर्ग रतन " लोह जूमि होनवर्ग हु। আমার সঙ্গেতে যুঝ সমতুল্য নও। উত্তমে অধনে यদি হয় বাক্য ব্যন্ন। ज्ञथरम ছाড़िस्स माय উखमरक रमग्र।। উত্তমকে বাক্যজ্ঞালা মৃত্যু তুল্য হয়। व्यवगत्क अनावारक, (केंद्रम कथा कया। ত্রিভুবন **মধ্যে আমি উত্তম** ভূষণ। উত্তম বলিয়ে দবে করে আকিঞ্চন।। উত্ম স্থানেতে বলি উত্তম চরিত্র। আমার ধারণে হয় শরীর পবিত্র।। উত্তম আমার মূল্য, উত্তম সে জানে। 🤊 উত্তৰ নহিলে কেবা অধ্যে বাখানে :। তোশতে আখাতে চল সভামধ্যে যাই। কাহারে আদর করে বুঝিব বড়াই।। যাহ যাহ এথাছতে উঠরে একণে। পতঙ্গ, যুঝিতে চাহ গৰুড়ের সনে '' 🕕 अक्या खिनशा लोह, क्लार्थ **यह** काल। আগন গৌরব করি বর্ণে কিছু বলে ॥ " আমি যেই করে দেই ভোমার নির্মাণ। তেঁই দে সকলে করে তোমার সন্মান।। रम् डेन काकान चामि मीघ मद्भावत् । আমি নে খনন করি পর্বত শিখর।। অরণ্য কাটিয়ে **আমি নগর বসাই**। प्तथ प्रिथि कि अकाद्ध जन्मी बाबाई।। ष्यामाहर[®] मध नि**क् एएस्ट ७० लग्न**। পুরাণেতে গুন না রে, পাপিষ্ঠ জয়ন্য।। व्यामात्रं श्रकारव भैना मुझँकीरव थाता। चामाहर वर्ष लाक छटा जान भाषा। পর্ভত্তে শিশু খবে ভণিছিত হল। व्यामहिक महेदन क्दन ना ज़िक्क (इन्न ॥

मृতिका-मन्दि ब्राह्य चामाटक पूरादे । मुष्टे প्रावी नष्टे कारत कड़िट ना श्रास्त्र ॥ म्डाटनो**ह देहरल** (४थ का**न्द्रक व्यागार**त। षाकिकन कति जात्क धत्रस्त्र भन्नोति।। खीरनारकत हाएंड लोश नधना सकन। कम-मृजु/-काटन लोह পতিতপাবन।। कार्ष्ठत (लथनो (यह कति मूनियिं छ। বেদশাজপুরাণাদি হয়ত লিখিত।। 🦫 স্মামা ছাড়া কোন্ কর্ম আছে পৃথিবীতে? বিবেচনা করে বুঝ কহি রে ভোমাতে।। সভামধ্যে যেতে বল কোথা যাবে চল। সহজে দুৰ্বল ভূমি লোছাগাতে গল।। কিঞিৎ ক্ষমতা যদি থাকিত তোমার। না জানি কি নথে কিতি করিতে বিদার।। স্ব্বিণিক্ অব্কার বিক্পরায়ণ। टामात नःनर्ग जुष्टे इंग्ल पूरे करंग॥ একথা শুনিয়া ধর্ণ আরক্ত-লোচন। नक्षाकारक मृथं। यम लाहिज-दह्म ॥ चर्न दरल, "यूजथर्म्य मव देश्व इछ। नोठ देश्त डेक्टमामी डेक्ट देश्त नज ॥ चरान हरेन द्वान कृत्रकरक कन। পাপিষ্ঠের মুখে গর্ব গুনিতে গরল।। যাহারে দেখেছি পূর্বে অখ-পদতলে। (महे वाकि करें छेकि बामादा य वदन? **ভোমাতে ভামাতে দূর লক্ত্রৈক যোজন। प्रत्या-मस्टाक कामि मूक्**षे-छूवन ।। मन्य/-भन्नीरत आमि नाना अलकात। যতনে রাখিছে মোরে গলে করি হার।। मनि-मूका-प्रवानारि यठ इत् वाहर। व्याबारक काव्यक देश्दर केव्यव स्टाइर ।। बद्ध केन्द्र। पिट्ठ णामि (न द्रधान। षक्र मन्ति निकटहरू द्यारक पिन दान।।

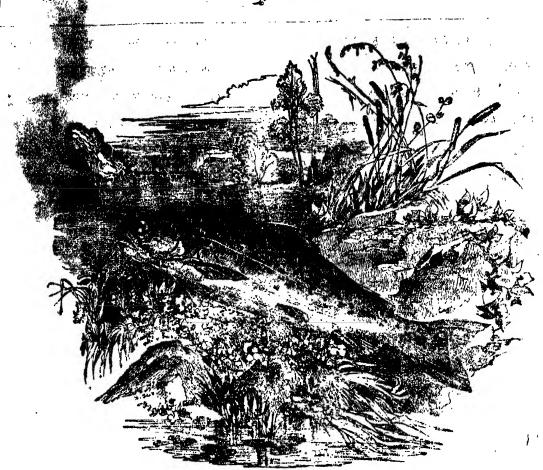
সূর্যোক্ত কিল্লন কৈতে অধিক বরণ। কেবা না দেশ্বে নোলে কিরায়া নয়ন আমি যার ষরে থাকি হইয়া সময়। আনার প্রবাদে তার দাক্লিদু পঞ্জা **সুখোর বাঞ্চায় यদি মোরে দাশ করে।** च्यमङ्था तरमञ्जू सर्ग जूटक्ष स्मर्थे नहाः।। कीवटन मद्रदेश सर्व नटव हैक् काम्। म्थाभि कारनट रतन 'वर्ग काया कान'।। যার ঘরে সুপ্রচুরে আমার বসতি 🖂 ঐহিক সম্পাদ ক্ষ**ন্তে মোক্ষ** তার গ**তি** !! তোমাতে আনাতে আছে গুড-শিষ্য-ভাব। ব্থা বাক্য ব্যয় ইথে নাহি কিছু লাভ।। भानगारम चर्रतथा नक्षीनातायन। 🦠 ক্ৰকের হাতে হৈল ভাহার মরণ।। ্লাহ ছাড়া কোন কৰ্ম নাহি পৃথিধীতে। কথনি কৰিলি ভূই আমার সাক্ষাতে।। শত্য বটে শিদ কাট ভক্ষরের করে। গোহত্যার হেতু আছ কনায়ের **যরে** ।। চন্দ্রকারগৃহে আছ নানা ভঞ্জ হৈছে। জাব-হিং**না-হে**তু আছ পৃ**থবা ব্যাপিয়ে**।। हिः नदक्त मूत्रवन्धा शरम शरम इयः। বেছায়া হিংসক তবু হিংসা ना ছাড়য়।। হিংসা পাপ ছাতি মন্দ কভু নহে ভাল। **हिश्मात्र,**कातर्ग कात वर्ग देशन कान ।। হিংসার কারণে তোর অণপামূল্য **হৈল**। **अष्टेशाजूमायः (कारत क्यनः) क्रिन** ॥ ছিছি রে বেহায়া লৌহ বেহারার চূড়া। মরা ভালে ডাক যেন কাক মাথামুড়া ।।। लोट्ड ब्लार्थंत क्या है असा कि पित ? कन्मर्श-निधान यथा इस्क्रिक्टनन् निय ॥ "इंडि माना यदद यादत ट्लोटन अक बान। সেই ব্যক্তি হ'তে হায় আমার সমান।।

স্থাপন ওজন দেই বুঝে যদি ঢলে। **উক্তম** বলিয়া তবে সকলেতে বলে।। वर्ग वाकित्व शृथी व्यनाशांदम वश्र। लो । । व्यक्तिल मही त्रनाज्**त योत्र**।। পটে যেতে তুমি ৰৰ্ণ নক্ষে থাক যায়। ३%। কি করিবে তারে প্রাণে বাঁচা ভার।। সামারে লইয়ে যাউক্, লিখে দিতে পারি। यिन जात विघु रह तथा नाम सति।। यर्गात बर्गएशंग व्याणीन राथान। কিন্তু নিলে হত মান তাহা কি না জান? ৰণ নি**লে** কুলক্ষয় পতিত-ঘোষণা। কতকাল ভোগে সেই পাপের যন্ত্রণা अरक कत सर्गवानि चाद्र चर**धानामी**। তোমার কি দশা হবে তাই ভাব্চি আমি " !! लोश नरल. ''श्लामात कमाता यत आरह। (मवानूत-नङ्गारम छ। विमित्र-स्टास्ट्_ग **बिजाम कानकी रुत हिल मणानन।** व्यामाहरू सर्वक्षा-तावन-निधम।। कृकवः मः धुः न देश्ल चामात (कशात) क्छी मुख बका शाहेल विशन-घटेरन !! আমি সে করেছি যত সমুদে বিজয়। जात्र शत करत्र**हिनाम् यपूरः भ-कार्य** ।। দুঞ্জের দমন করি মহতের হিত। সর্বকাল আছে মোর কুলে এই রীত।। সন্মুথ-যুদ্ধেতে যার মাথা কাটা বার। बनायारम बर्भवाम श्रुवारक्टक शाया। चम्ना चामात म्ना जूना रहेरव कि? (मनगर मिथ (माद्व **माथाज दार्थाए**त। व्यामाहरू प्रविद्राख हम विज्ञुधन । আমাহণতে শূলপাণি হণলেন শক্ষা 😿 💛 भागास्टिक চळलानि एवं कालेग्बन व 🐃 🕬 क ज़िप के वरण कारक बाइम नामका कि कि कि वर्ग

यामगणिक यामात्र विदेश वाम करता।
मूक्टर्समी मिश्रकते कर्मा मूक्टर्स मया।
स्थानमा शीर्त क्रम मूक्टर्स मया।
स्थानिम स्थ काम छाटक क्रिम् अस्म यात्र गः
स्थानमा क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् आत्र गः
स्थानमा क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् विद्या ।
विकृ यहन । भ्यात्र क्रिम् क्रिम् क्रिम् क्रिम् विकृत गामात्र देशन मूक्टम क्रिम् वामात्र क्रिम् ।
स्थान यर्ग विवाद क्रिम् क्रिम् वामात्र क्रिम् ।
मूक्टर्स क्रिम् क्रिम् क्रिम् वामात्र व्याप ।
मूक्टर्स क्रिम् क्रिम् क्रिम् वामात्र ।
मूक्टर्स क्रिम् क्रिम् विवाद क्रिम् वामा ।

* श्री वाममुक्ततः घष्टेकः

ী সুম্বন্ করে। গণেশকো ধরে। ভতানীভান। **डाटड मन निध् लाडेटन कविटका बीटड** छन्। न ब ষত্ত্রতা ছরিত ১ শ্রুটা অনিরে চতুর সুঞ্জন। क)। ८डा (आंहा कर श्रा कहा कहा कहा अस (मान : यगपः। लाह मान्यमें देवती वद्री हसाव। नाकीत्नाका द्यारमाएमं यह दकाम् उत्तम दकाव मान करी तांड, " लाह हाक्य प्रया: ष्यका शहिवात कुर्वेश् वनके शत्यका। मध्यः यही मान भूगा अधिक दरमधाः হমরা সন্মান্ মান করৎ জ্রাৎয়ে॥ होस्र देश भाग गण कहन बमासी। र्भोरने अगतकत् है। एक असी। হেরে লোহা ডেরি ভাগদ্ কেন্তী" 🛊 লোহ কহী বাভ " শুনরে সোনা। 🦠 **स्टब रम्प स्टब** किन्न मानव रकामान ज्रम हम माइकोन **तक्रक स्व**ना। আপন্কর ছোড় রকস্টরে দেবাঃ ट्टाइट लड्ड मार् मान बन्द क्रास्ट्रा । হমে তাম শুরু বীর চচ্চ কেন্দ্রের मुवा वेबहाद कांग्रे कीटन एउड़ी : 🗥 3 **● 37**0 (第一) (1 ● 8) このかけに 発展 लान् करो लाच (करो कीवड (थार्डी)। चड़ी कि अक जूरे जारन रहती।। र्जुरा बुद्धी व्यक्ति शक्ताक सुक्षी । 💛 🖂 🔻 क्यती करवान जीन क्यान बनाटर। बार्क मुक्कीर ब्रिज्ञांड सवादरेश हैं।



क्षीं यथ मा

ও ও পদির এক বিশেষ ধর্ম আছে

প্রিত্ত ভালারা বয়ঃপ্রাপ্ত হইলেই তা
হাদের শরীর যথোচিত দার্ঘ হইয়া

উঠে ; ভৎপত্নে नामाकात्र । नमाक । काहार मात्रीत

পালে হল সৃষ্টি বিধি নহে তুমারী।
হেরে পোহা জোর হলসে ভারী ।
পোহ কথা বাত, "অনরে সোনা।
ক ক ক *
মারী হম আছু ছার ২ হোগেই।
রাবনাতো মারকে বিভাষনে দই॥
কোপে লো দান ভেগ বাঁধে ছ্রারী।
ফুর্রে উড্জার কেন্তেক্ ধনুক্ষারী।
ফুমা যো ফুট পাট চল লগাবোঁ।
প্রনা সৃস্যার উর ছাঙ বনাবোঁ।
ক ক ক

ইননা স্থান হোত বর্থী বীড়া।
সোনা ল মানে পর লোহা কা জাতী॥

ভুল বা কৃশ হইতে পারে, নিজে কদাপি দীর্ঘে বিশিত হয় না; ফলতঃ যে জাতীয় পশু বা পশ্চির যে পরিমাণ নির্দিষ্ট আছে, তাহার জন্যথা হয় না। অপর, দেশের প্রাকৃত-নেষ্টিব-ভেদে ও থাদ্য-দুবেরর ইতরবিশেষে-ভূলতার ও দৈর্ঘ্যের কিঞিৎপ্রভেদ হয়; ঐ প্রভেদ ছাভাবিক দৈর্ঘ্যের তুল-নায় জত্যপে বোধ হয়, ভাহা ছাভাবিক শরীরের দিশুণ বা দর্শেক হওয়া কদাপি সন্তাব্য নহে। কেই বিলাতের বৃহৎকার জন্মক কুলাদেশে গিয়া থর্বহইতে দেখে নাই; তথা লুলাদেশের টাটুও বিলাতে গিয়া বিলাতি-জন্মের নায় বৃহৎ হইবে, ইহা সন্তবপর লহে। পরস্ত ইহা অতি আশ্চর্যের বিষয় যে জনেক মৎসের উক্ত মি-য়মন্ত্র দৃষ্টিগোচর হয় মা। রোহিত মৎসা এক দের-পরিমিত হইলেই অও প্রস্তু করিতে

আরস্ত করে, সূতরাং দেই ভাচার বরঃপ্রাপ্তা-রস্থাঃ অথচ দে ভংগরে ক্রমণঃ ২০১৩০ বা ৪০ अव बृह्द इहेना थारक। शूर्वभूरह य मदना मृष्टि इहेश्राह, लाहां अ अहे घटनात अक चा-म्हर्या पृष्टो छन्न ; अधिक ए जनामात्र-(७८ र अ ইছার পরিমাণের ভেদ হয়। কুদু পুকরিণীতে इंश्रांक वार्थाल हैशे पूरे जिन मादब विकि ह्य नाः वृह्द-क्रनाभाषा जे शतिमार्गत देवधना इश्वः नकीर्व कृषु नमीट ठिष्मुखन वा विश्वन হওয়া সভাবনীয়: তথা গলার ন্যায় বৃহৎ मरोरक दा व्यक्तिकीयं कुरम के मध्मा धाकिरम ৮१४० व्यनदेव ग्रंब ७० (नव वा अक स्मान शर्तिभव हरेया উঠে। **এই প্রকারে আবাস-**यान-ভেদে व्यन्। का जीरदे**त म**ीत ১৫ वा २० छ। वृष्ट बहेरज (मथा याग्न नाहे; अदः পণ্ডিটেরা এপর্যান্ত ইহার কারণও স্থির করিতে भारतम नाई।

व्यक्तियकोवी। कप्रेनश्च-(मर्टम "अश्राप्टेन् का-धेन"-गामक अक धानिक पूर्ण कान दास्कि अक-টা অর্জনের-পরিমিত ট্রেট মৎস্যকে কোন কুণ্ডের মধ্যে রাণিয়াছিল, ও তালাকে প্রত্যহ প্রচুর थामामुरा ध्रमान कतिछ। ये थामा-लाएं तिर মংস্য এমত বশীসূত হইয়াছিল, যে সে প্রত্যত্ প্রতিপালকের হত্তে আনিয়া ভক্ষণ করিত। কিন্তু २৮ वदमत्रवर्धान्य अहे श्रकाद्ध एकन क्रियान ভাষার শরীরের কিছুম¦ত্র বৃদ্ধি হয় নাই।

এই মংস্য অভ্যন্ত স্থাদু বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে ; বিশেষতঃ বৈশাথ-মাসে ইহার তুল্য মুখ-গ্ৰিয় অন্য মৎস্য বিলাতে প্ৰাপ্ত হওয়া যায় না। ইভার অপ্রপ্রাব-করণের সময় কার্ত্তিক মাস; अहे मर्ना चातात्र नाम वर्गात आहर**छ चर-** अञ्चल कात ना। हेरांत वर्। कम् मरमा, मधुक, कीव-প্रভৃতি कृष्ट्री जडरमदन द्वा-हिठ मध्ना धतिर् मम्दर्भ रुग्न, विवाद**ः होते मध्न**्य क्षण डेंदमूक इहेग्रा वारकः।

শিথ্যাতিদিগের সুধীনীকার্মর বৃত্তান্ত।

विशेष भव्यत् oe शृष्ट्रवेट क्रमान ।

के अक्षेत्र के क्षेत्र मृजू व किश्र कान निश-क पिट्रांड मर्द्या करहे यथान इरेश ** ** कर्डिशम वाइन करत नाहे, नक-कि आगडरा क्षिक्रण अवृत्त थाकिया मान र আপন ধর্ম প্রতিপালন করিতে লাগিল।

১१०४ थेष्टित्य यथकात्त नात्मत्रभाव आमिशा हिन्पुष्टान द्राष्ट्र। चाक्रमन करतन, এবং यে नमग्र দিল্লাতে মহামারী উপস্থিত হয়, তৎকালে শি-প্রস্তাবিত মৎসের নাম "ট্রেট"। ইছা থেরা পুনঃ দলবদ্ধ ছইতে আরম্ভ করিল, এবং चवकानभर अ बाक्रदेगमाब भथजान वाक्रि-দিগের দুব্যাদি লুটিতে লাগিল; অধিকম্ভ এত-(पमान याहाता वाममारहत मोतारकार-कानत হইয়া প্রাণভয়ে পর্বচান্তিমুখে পলায়ন করে. ভাছাদিগের প্রতিও আক্রমণ করিছে লাগিল। এই প্রকার পৌরাদ্ম্য করিয়া কোন দণ্ড না পা-ওয়াতে উত্রোত্তর তাছাদিগের নাহস-বৃদ্ধি हश, बदः जाहान्टिशंत अभिक धर्म-मटहादनव অমৃতদরের মেলায় তাহারা আর পূর্বৎ অপ্র-कामा कारण या जाया व मा क्षिया श्रकामा करलाई वक्व रहेर्ड चाइस क्रा

> তথায় গমন করিবার নময় যদিও ভাছাদিগের मर्था (कहर कुछ रहेन्र) यात्रागारत कव वा व्यतिवाता इंड क्रेंड, उथानि जाशास्तिगत अक

প্রাণীও আপন গৃহীক ধর্মের মাজন করিতে এবং জসাসিংহ কলাল-নামক এক ব্যক্তি ভাগদি-উত্তরাংশে আমিনাবাদে গিয়া করগুহণ ও সেনা-मञ्चूह कतियात উপক্রম করিল, তথন অনেকেই তাহা জামিতে পারিল। অনন্তর উহার। বহু-लाककर्व बाळान्ड इंटेन: উश्पिरित प्रनवन उाड़िक इहेल, अरः मन्तरीक इंक इहेन। अधिक्छ মোগলদিগের সৈন্য অবশিষ্ট শিশ্বদিগের পশ্চা-দ্বর্তী হইয়া তাহাদিগকে পরাজয়-করণ-পূর্বক ध्य कड़क बारहारत बहेग्रा काहेब, धरः छथाप्त তাহাদিগের অনেকেরি প্রাণনাশ করিল। যে স্থলে बे नकन त्नाकरक वध करत, (म उरनंत नाम '' म हीम शक्ष " दिनशा अम्। शि প्रिमिष चारह। खे ঘটনার সময় যবন সেনা নায়ক ভাইতাক সিংহ নামা এক ব্যক্তি শিথকে কেশমুণ্ডন-পূৰ্বক স্বধৰ্ম-গ্যের মূল।

बहे घछेनात किं फ्र्सिनामस्तत चम् छम् उमरत् तिक्र छ শিথেরা রামরাওমী-নামে এক দুর্গ নির্মিত করে; 👚 🛊 খালসাদলশক্ষেত্র করে সবস্থীয় শক্তি বা প্রভূতর :

পরাত্যুপ হয় নাই ঃ প্রত্যেত কভকগুলি লোক গের সর্বপ্রধান দলপতি হয়। ঐ জনাসিংহ শিথ-একত্রিত হইয়া ইরাবতী-নদীর উপরে দলিওয়াল-্ দিগকে "থালদা দল "" নাম দিয়া মহাবল প্রকাশ নামক স্থানে এক সুপ্র নিমিত করিল। ভাছাদি-। করে। তদ্প্তে লাছোরের রাজপ্রতিনিধি মীর ময় পের সে কর্ম সকলে জানিতেও পারে মাই, এবং তাছাদিগের ঐ দুর্গ ভথ, এবং দল ছিমভিয় मकत्त गुर्हा के कि हैं; शरत यथन कि होते कि दिया मूर्निइस्म ताका तका कि तिवात कि हो कि तिवा বহুসঙ্খ্যক লোক অক্তিত হইয়া লাছোয়ের ভাছাতে শিখগৰ কিঞিৎকাল পাকত মতভাবেই कानएक श करता अन्छत यथन भीत मज्जत आशन ষীকৃত ও নিদিও রাজকর অহনদ্শাহ বাদশা-হকে না দিবায় উক্ত রাজা দিতায়বার লাছোর আক্রমণ করিয়া ভাছার সন্থিত যুদ্ধ আরম্ভ करतन, तन उपनरक भिरयता श्रमदात प्रवन হুইয়া উঠিল: এবং রাজ্যের প্রতি নানা উপদূব করিতে আরম্ভ করিল।

भीत मजुत लाकाखरत गमन इहेल श्रद नारहा-রে পুনর্বার অভ্মদ্শাহের অধিকার হয়: ডিনি তথায় ৰীয় পুঞ তৈম্রকে সুবাদারি-পদে নি-যুক্ত করিয়া আপনি দিল্লা, মথুরা প্রভৃতি স্থাম জয় করিতে যাত্র: করেন। মীর মন্নুর কর্মাকারী ক্যা-দিনাবেগছার: রাজবিদ্যেছী শিথদিগকে শাসন ত্যাগ করিতে অনুমতি করিয়াছিল, কিন্তু কথিত কিয়াই রাজপুঞ তৈমুরের প্রধান অভিশক্ষি ছিল: আছে, যে তিনি তাহা অধীকার করিয়া এই মাত্র অতএব তিনি আদে নৃত্তধর জনানিংহ-কর্তৃক উত্তর করেন, যে শমস্তক-মুণ্ডন-করা আর মস্তক- নির্মিত অম্তনরের রামরাওনী দুর্গ আক্রমন ছেদন-করায় বিশেষ কি? অভএব এপ্রকার শি-। করত ভাছা ভগ্ন করিয়া কেলিলেন; অট্টালিকা রোমুণ্ডন-করণাপেক্ষা আমি ভাতাদপূর্বক প্রাণ- সমত্ত ধরাদাৎ করিয়া দিলেন এবং কতক্ গুলি ত্যাগ করিতে প্রস্তুত আছি"। শিশজাভিরা কি ইউক প্রস্তরের স্থামাত্র সেই শোভনশীল পুণ্ আশ্চর্য্য দৃঢ়প্রতিজ্ঞ। তাহাদিগের ধর্মেতে কি স্থানের কেবল চিহুমাত্র রাখিলেন। অদিনাবেগ একান্তিক বিশাস। কি আশ্চর্য নিষ্ঠা। এই বিজকুমারকে কিছুম।ত্র বিশ্বাস করিতেন না, নিষ্ঠাই তাহাদিগের স্বাধীনতা ও সকল সৌভা- অতএব শাদে শিথদিগের কিঞিৎ অনিষ্ট করত াপারে গোপনভাবে পর্বতে প্রস্থান-পূর্বক শিথ-

দিলের সহিত মিলিলেন, এবং রাজপুঞ তৈ-মুরের প্রতিহিংসা করিবার নিমিত্ত ভাহাদিপকে উৎসাহ দিতে ভারেন্ত করিলেন। তাহার। গুৰু-भारित्मत राका स्वतं क्रिया शुनर्वात मक्त মিলিতে আরম করিল; একবারে নহসু ২ শিথ শাশ্বাক্ত ভইয়া লাছোর বেপ্টন কহিল। রাজপুঞ ভাহানিবকে ফোনমতে নিরস্ত করিতে না পারিয়া অবলেয়ে আপনার সৈন্যামন্তম্ছ চিনা-প্রদেশে প্রস্থান করা শুেং নিবেচনা করিলেন। লাছোর কিয়ৎকালের মত একণে জয়যুক্ত শিথজাতিক তৃক য়াছিল, একণে মহাপ্রবল হইয়া উঠিল। অপর নে মোগলদিগের মৃদ্যেক্ত অধিকার করিয়া তদ্যা-बा न्जन होका मृद्धि कतिन, जाहाटक अहै বাক্য অঞ্চিত ছিল "জনাকল্লালকত্ক অহমদ-শাহ হইতে অপহত দেশে থালসাদলের প্র-ভাবে মুদুত হইল''।

ক্রমশঃ এই প্রকারে শিথদিগের প্রীবৃদ্ধি হইতে लाणिल; य नमछ कृमू २ शुग देशा शृद्ध चिथिकात कतिशाहिन. त्करम ठाघाटठ विनक्कन প্রবল চইয়া বনিল; এবং ডিল্লদেশীয় শত্-দিগের দমনের নিমিতে ভানে২ দুর্গ প্রস্তুত করিতে আরম্ভ করিল। ইহার মধ্যে রাজা রণ-জাতের পিতামহ চরৎসি-হ লাহোরের উত্রাংশে আপদার শভরালয় গুজরানওয়ালা-গামে এক অতি প্ৰকাপ দুগ নিৰ্মিত কহিলেন: অহমদ-শাহের প্রতিনিধি খাজাওবেদ এই সংবাদ জা-নিতে পারিয়া ১৯৬২ খুলিকের প্রারম্ভে উক্ত দুর্গ ভথা করিতে যাত্র। করেন; কিন্তুশথদিগের मनवन मिथ्या थाला चार्यमात ममस मुरापि-পরিভাগ-পূর্বক প্রাণভয়ে লাহেনরে পলায়ন

कतिरलन। अहे धकारत करम र मिरभंता महा-প্রবল হইয়া উঠিল; তাহাদিগের প্রদিশ তীর্থ অমৃতসরে গিয়া সকলে একতিত হইয়া মহা উৎनव कतिए नाशिस, अवरः शासमा-प्रसञ्ज मिनाता जल्लार्यवर्डी गुरिम महाद्योताचा कति-তে আরম্ভ করিল। পঞ্জাবের নানাস্থানে উ-हाता वराख हरेट लागिल. **এ**वः यवन**ता**खा-দিগের অধিকারের উৎসেদ-করণের উপক্রম क दिशा जुलिल।

১৭৬২ খুষ্টিকের শেষে যথন অহমদ্শাহ পুনর্বার অধিকৃত চইল, এবং থালসা-দলভুক্ত সেই জনা- ি গৈন্যসামন্ত লইয়া পঞ্জাব-শাসনের নিমিত্ত আ-গমন করেন, তথন আল্লাসিংহ শিথদিগের মধ্যে এক প্রধান দলপতি ছিলেন। তিনি কি প্রকারে অহ্মদের সহিত যলুথোরা-যুদ্ধে পরাত্ত হইয়া ब्राज्य पर्वी थ्रार्थ इन, जाहा প्रजियानात विवत्र (न ব্যক্ত ইইয়াছে *। দুর্দান্ত যবনরাজ অমৃতদরের শমন্ত মন্দির ভগ্ন করিয়া কেলেন: শিখদিগের পবিত্র জলাশয় গোরক্তে প্রাবিত করেন; দিখদি-ণের ছিল্ল-মন্তক-সমন্ত স্তভাকার করিরা তদার তাহাদিণের দেবমন্দির মপ্তিত করেন, এবং ভাছাদিগের কণ্ঠনিংসৃত শোণিভদ্বারা মন্দিরের ভিত্তিদকল থেতি করেন। দৌরাজ্যের আর নাম। রহিল না। রাজার জয়পতাকা সর্বত্ত উভ্ডীয়শান हरेन, बदः नियाता बक्काल मुख्यायः हरेन। কিন্তা শিথেরাই ধন্য! তাহাদিগের কি আশ্চর্য্য তিতিকা, কি অভুত শক্তি! ভাহারা এতাদৃশ चनामान। पूर्यमेनारच्छ किष्ट्रमाज विচलिच इहेन नाः क्रिकारलं क्रमा व वालमापिरणं प्रक्रिका-হইতে বুলিত হইবার ভাব প্রকাশিত করিল না; कानगरकरे खरभादनार ७ यजुन्त इरेन नाः अक्याल धर्मवद्यास वद्य पाकिया गर्नाना नकत्वह

* २०० मृत्य दाना

मज १८ अ वन नृषि कति उ उपगानी इहेन ; य-**(मर**मत अमृतार्ग अनुतार्गा इरेशा, अवः साधी-नजा-गर्वातजु तका कतिए उरमारी रहेशा. ভাছারা পুনঃ ২ ঘোর্ণস্থাম করিতে আরম্ভ ক-রিল; ও ক্রমে ২ রোছিলখন্ত, নরহিন্দ প্রভৃতি यमुनात उपेशयां उपानक द्वारन मुनल्यान् उ মহারাষ্ট্র দেনানায়ঞ্দিগকে পরাজিত করিয়া আ-পনাদিগের বিলক্ষণ প্রাকৃদ্ধি করিতে লাগিল।

"দুর্দশা অবগত হট্য়া পুনর্বার ব্যং সিজানদ পার হইয়া আগমন করিলেন; কিন্তু দিল্লীর দূর-বস্থা দিন ২ বাড়িতে লাগিল; তিনি আসিয়া ঐ नगत तका कतिए शांतित्वन ना। किह्र करह य তিনি পতিয়ালার আল্লাসিংহকে তৎপ্রদেশের শাসন-কর্ত্রপদে নিযুক্ত করিয়া অবিলয়েই স্ব-জ্ঞাত ছওয়া যায়, যে তিনি অমৃতদরে গিয়া শিথদিগের সহিত যুদ্ধ করত পরাস্ত হইয়া সৈ-ন্যবহ্ প্রায়ন করেন।

ভদ্মন্তর শিথেরা অক্রেশেই অহমদের নি-युक्तकता कावृणियल्लाक लाट्लाद्वत स्वामादीशम-**হ্ইন্ডে** দুরাকৃত করিল; এবং শতক্রে**হ্**ট্তে বি-তন্তা-নদী-পর্যান্ত সমস্ত দেশ আপনারা সকলে विভाগ क्रिया नहेन; मूनन्मान्पिरात मकन মস্জিদ চূণ করিয়া কেলিল, এবং শতশত য্বনকে লৌহশৃত্থলে বদ্ধ করিয়া न करत्त् রক্তঘারা সেই সকল মস্ফিদের ভিত্তি খৌত করিতে দিল। তদনন্তর শিথদিগের সুমস্ত প্রধান দলপতি অমৃতনরে একত্রিত ছইয়া আ-পনাদিগের প্রভূত্ব-প্রকাশ ও ধর্মের প্রচার করিতে আরম্ভ করিল। তাহারা আপনাদি-

একমন ও একবাক্য হইয়া দিন ২ আপনাদিণের গের জয়সূচক মুদ্র প্রচলিত করিল: তাহাতে **बहेराल (लथा हिन, "एक नानरकत निक**छे-क्केटक खकरगाविना 'दिक टिंग कटक' नाच करि-য়াছেন " # 1

অতঃপর দুই বৎসরকাল শিখেরা আর কোন যুদ্ধ করে নাই। তাহারা এতাবৎকাল আপ-নাদিগের মধ্যে জয়নন্ধ রাজ্য*সকলের* অধি-कात निर्फिष्ठे कित्र छिल, बेच् शतकारतत कर्त्वर निषाद्य ७ कारग/त म्ड्यना निवक क्रिट कर्ममणार महरित्मत ও पिलीत अरे मकल निमुक हिल। उदकारल भिरभता शतम्भात मक-লেই স্বতন্ত্র, কেহ কাহারো অধীন নহে, প্রতি वाक्तित्रहे नाधात्व तारकात श्रीठ ममानताश यथि-কার ও অধ্যক্ষতার ভার ছিল; কিন্তু তাহাদিগের প্রভ্যেকের বুদ্ধিশক্তি ও সম্পত্তির ইতর্বিশেষ থাকাতে তাহাদিগের মধ্যে যে সমভাব বিশুর দিন স্থায়ী হইল না: শাঘুই ভাবান্তর হইয়া রাজ্যে প্রস্থান করেন। কিন্তু শিখদিগের বর্ণনে গেল। কার্য্যকারণক্রমে এক জনকে এক জনের ्मान इरेट इरेलः चरुख जारामिरगत ताखा।का-योज मृङ्थला अहे श्रकात नियुष्य পति । इहेल, य अजागाउँ नकरन नगान, क्वन नेश्रहरू गर्ने प्रधान: धर्मावियात अक विश्वानरे छाहानि-গের প্রধান ঐক্যন্তল। সেই ঐক্য**তানুনারেই** তাহারা কি যুদ্ধ কি অপর কোন কার্য্য সকল कर्षा निवाह करिंछ। जागारा मकत्व श्रक्तिय-সর শারদীয় পূজার সময়ে অমৃতসরে একবার মিলিত হুইয়া আপুণনাদিগের অধিকারের ইউ-সাধনের উপায় চিন্তন করিত; এবং অধি-काश्म वाक्तित स्वानुमात कार्या निष्णन कति-ত। তাহার। যে সকলেই বার্থপরতাশুন্ত হইয়া সাধারণের হিত্যাধনে প্রবৃত্ত হুইত, ইহার প্রতি

^{*} অথাৎ প্রসাদ, শক্তি ও জয়।

অপর কোন কারণ নিদিষ্ট করা যায় না. কেবল অমৃতস্রের তীর্থে আগমন, এবং তথায় সকলে करा कवर्य यक्तन कराई हेहार श्रवन का-হণ বলিয়া গণ্য হইতে পারে। প্রবান দলপতি-দিগের সভার নাম তাহারা "গুরুমন্তা" রাখি-য়াছিল। ইহার তাৎপর্য্য এই যে গুরুগোবি-म्मित छेलारममानूम∤**रत**ङ् छ। हाता नक**रन** केक्ऽ-मर्ज मकन विषयः विषयः किता किता थारक। अह अर्थ-रमनाय य नमस् अधान वाकिमिरगत नमा-धम इङ्क, काहात मर्या (क्ट् काहारता अधीन [।] हित ना ; मक्ति सम्प्रधान ; ब्राक्तार्कार्या-वि- ! যয়ে যে কোন প্রস্তাবে সভাস্থ সভাদিগের অধি-কাংশের মত হইড, ভাহাই গ্রাহা হইড; কিন্তু সমর-সম্পর্কীয়-বিষয়ে আপামর-সাধারণ সক- দেশে ভায়ট-নামক সভায় যে প্রকার দলপতি লেরি মত নিয়মক্রপে পরিগণিত হইত। তাহা-निरंगत मर्था (य कान मरन य कान मन्य ও य | কোন স্থান জয় করিত, তাহা নকল দলপতিই বিধিমত তুল্যৰূপে বিভাগ করিয়া নইত। পরে जाशामिरभेत मर्था याशांत अधीरन यक मन था-কিড, সে পুনরার সেই প্রাপ্তসম্পত্তি ডভ অংশে বিভাগ করিড; পরে এক ২ দলভুক্ত সকল যোদ্ধা আবার দেই দলের বিভাগহইতে আপন্ত অংশ গুৰুণ করিত। এইৰূপে তাহার। জিত ও नक्ष मन्नानि मकन जानसामिरगत गर्या जः म क्रिया केका-स्थान क्रियाहिन। टेमनानृत्ति বলিয়া যে দকল প্রজা জয়লক-ভূমির উপস্বত্ব ভোগ করিত, ভাহারাই যুদ্ধকালে যোদ্ধার কর্ম নিস্মা করিড; এবং অপরাপর রাজকর্ম পূর্বোক্ত প্রকারে দলপতিদিগের সভাহইতে সম্পন্ন হইত। শিখদিশের এনিয়ুমকে প্রকৃত সাধারণ-তক্ত বলা यादेटड भारतः भवन्तु छाश्वाम्रिकत अलिश्रस्मत অনেক গোলযোগ ছিল, এবং ঐ নিয়ম পুন: ২

পরিবর্ত্তিত হইত। সমস্ত শিশুদলের মধ্যে যোদ্ধা-রা প্রকৃত ৰূপ দৈন্যবৃত্তিভোগা শব্দে উক্ত হইতে পারে না; কেহ ২ কেবল আপনাদিগের পৈত্রিক ভূমিরই অধিকারী হইয়াছিল, সুতরাং এই উভয় मन्त्रुपारयत **मर्था व्यधिकारतत्रत्र किश्वि** हेउ**त**ः বিশেষ ছিল। ফলতঃ জ্যুন্সরাজ্যে কি ইংলগু-प्रतात य धकात नाधात१- च्खा इहें शाहिल, हे हापि-গের সাধারণ তন্ত্র সে প্রকার নহে। তবে জর্মন্-पिटम अक्षरं य श्रकात पिटमत कान निवस স্থাপন করিতে হইলে তথাকার ইতরভদু সাধার-ণের মতগুৰ্ণের জন্য সর্বসাধারণের সভা হইয়া থাকে, রাজকার্য্যের নিয়মের জন্য অমৃতসরে ইহা-দিগেরও সেই প্রকার সভা হইত। কিন্তু জর্মন্-ভদুলোক ষয়ং ও ইতর প্রজার। প্রতিনিধিঘারা শভার কার্য্য সম্পন্ন করিয়া থাকে, ই্হারা যে त्म প্रकात कतिक, जाहात काम निष्मंन शा-अया यात्र ना। তবে ইहात मध्या अहे चाम्हर्या বলিচে হইবেক, যে শিখেরা কেবল একধর্মে বি-শ্বাস ও এক ধর্মবন্ধন ভিন্ন অপর কোন প্রকার छान्विमात माहाया चडारवं अक्रवकात अवज সুশিক্ষিত ও বিচক্ষণ বিদ্যাবান জাতির ন্যায় किय़ ६ काल- शर्या खु चाराना निर्मित मर्था केका-ভাব রাথিয়াছিল, এবং সাধারণ-তন্ত্র-স্থাপনা-षाता मकल श्रकात काया मूण्एथल करण नि-র্বাহ করিয়াছিল। কোথায় ইংলগু-দেশের এক্ষণ-কার উন্নতি, নানাশান্তের আলোচনা, নানা-জানবিজ্ঞানের প্রসঙ্গ, সভ্যতা, ভব্যতা প্রভৃতি नान। वियदम्ब चारन्यानमः আর কোথায় সে শিথদিশের পূর্বকালের অক্ষকারাবৃত্যবস্থা, বথন कान विष्णात चमूलीलम हिन ना, कान खात्नत नाम हिल मा, कान गर्छ। जात हिस्स हिल ना ! अ

हरा, उर्भारत्य (य ७ উप्य कार्लंड यन्रा ह মনে এক প্রকার ভাবের উদয় হইয়াছিল, 🔭 🤫 যেমন এক্সনে রাজার ঐকাধিপত্য থাকে বিস্ফেন मानिक (वाद करत मा, जाहाताय ताकाई अन्तर्धि-প্র: ভেমান অন্যায় বোধ করিত। কিন্তু মন্বের মন্ধা ষ্ডাৰতট স্বার্থপর ও প্রভুক্তিমা কিনে चालनात प्राधाना हरेत्क. कि डेलाइहात चाल-नात यमा (कोकरमत वृक्षि वहरवक, हेशहरे (क्षेप्र প্রতিমন্যোর মন সহদ। বিচরণ করে: সুতরংং मः माद्रमाद्रमा अस्मा अक्का नर्दमा द्रायम् छ यह। निजान्त कठिन। कतानीरमता व्यञान वनवान् वीयं। माली ७ द्किमान् इहेयां आश्रनामिर्गंत मर्द्धः नम्हात ও नाधाइन ठन्ज ङाशन करिए অঞ্চন হইল; যতবার যতু করিতেছে; ততবার ্নিরা "ফুল স্থা।" নানে প্রনিদ্ধ হয়। নিরাশ হইতেছে; অতএব অসভা শিথজাতির मर्द्या रहाकान (य रन ভाव द्रका भाइरव इंश কিছু দিনের মধ্যেই তাহাদিগের নাধারণ তম্র **ভुष्टे इ**हेशाहिल ।

শিখদিগের সাধারণ-তজ্ঞের সময়ে তাছারা ১২ मल विভক্ত इरेशाहिल; जारांत প্रकार मल वकर कन मनगांज हिन; किन्न नकनम स्नत শক্তি সমান ছিল না, এবং সকল প্রধান ২ ব্যক্তি-द्रां अर्दमा अकरत थाकित ना; ज्यापन इंज्यान **ভिন্নদলের সজে** যোগ অথবা **প্**থক্দল স্থাপন করিত। দলের আদিপুরুষের নামানুসারে ব বাসভানের নামানুকাপে কদাপি তাছাদের বিশেষ কোন লক্ষণানুসারে উক্ত দলের পৃথক্ ২ নাম हरेशाहिल। यथा, (১) अक मटलंब अधान काकि

উভয় অবস্থার তুলনা করিলে যে ভিন্নতা ২০০০ সর্দ ভাঙ্গ সিদ্ধি পান করিত এই প্রয়ন তা-हात मरनत नाम "उकी" दिन्दी असिक एत। (২) এক দলের অধিপতি কোন সময়ে প্রকাশ-भव काम्कर्यात विषय कात कि कारह । हेडावा विशे हिलान विनय डोहांत मरनत नाम निमान হয়: (৩) কেনে দলপতি ৰন্ধুতানুৱাগী ছিলেন প্রয়ন্ত উল্লেখন " সুখন" বলিয়া খগত হয়। (म. ऋश्रमद्ध तामच छ-मूर्ग-छा भक मलाधिरभत अस्य (क क्षक्रक क्षक क्रिया द्राधित्व शादत? । प्रायत न म अस्तास्त्री "। (क) नू क्या-नामक स्थानवानी पत्नात नाम अन्तिस्था ११ (७) त्यानु **अस**-লিয়া ভালে দলের নাম দ্বালওয়ালিয়া"। (१) এক ৮ংলর নং । । মনিয়া " অথবা । কেনিয়া "। (৮) কিজুল বুনি বি দলের লাম " কিজ্লাপুরিয়া?" व्यथव " नि॰ स् । १६ ११(२) मृकद्रकोक् निवानि एव " मृतः : "िक्शः" (...) (मना उन-ज्ञाम-स्वितिम मन "प्रति ४ शक्ष ". (১১) क्रोब-स्थळ-स्थान-निया-দিরা শক্তোর 🗀 (১৯১) এবং ফ্লকিয়:-স্থান-লিবা-

अहे फामन-मण्यात्यस **मर्ट्या कृ**लकिया-मण्यू-দায় ভিন্ন আৰু সভালই সভক্ৰ নদীর উত্তর্গেশ পঞ্জাব-প্রদেশে বাস করিত, এবং তাতাদিগের ष्ठेशावि '' मञ्चाः निःइ"। প्रायम् कः चन्नोत्वर् नर्द-প্রধান হইয়াছিল, পরে কনিয়া দল বিশেষ বল-यान् इश्व: व्यवस्थाय जुरुतको क्या-म्वा<u>च</u>ुक वन-ोठ निः इहे भर्दे थान श्रायन । পর**ন্ত ফুলকি**য়া দ**লের পতিয়ালা**র রাজ-গেনায়দিগ**ে**কট সকলে धार्थान विवास मान्य किति । निक्या मण कथनहे चेत्रकारण भाना क्वेरक शास्त्र गार्के।

७३ প্রত্যেক দলেরই অধি গর ভূমির সীমা উত্তমক্রণে দিন্দিই হইয়া**েল, কিন্তু এন্থ**লে काहात योष्ट्वा दर्गानत कान धारतासन पृष्टे ह्य ना। এই সাধারণ-তল্প-নময়ে শিথদিনের मूरे जिन तक अधादाशे याचा हिन, किन

কোন্দলে ক্লাভ যোদ্ধা ছিল, ভাষার কোং। র্বি সম্যাসধর্ম-গুৰুণ-করা, আল যুদ্ধকৃতিতে উদর निवर्भन भारता यात्र नः। उद्योगता नर्वात्भका व्यक्ति. ७ निकश म्हल व्यन्त्र योषा हिल, वह बाब निकाणिक क्रेशाएक। स्क्रीमाल शांध २०,००० ভালার যোদা ছিল. এবং ন্কিয়া-দলের যোদা ইছার দশাংশের একাংশ কইবেক। শিথমাজেই **জাখা**কঢ় হইয়া যুদ্ধ করিত; এবং ত'কাদিগের লে অলিফিতাব্ভায় স্থারোহিদিগের যুদ্ধ ক্তি ভয়ানক ছিল। কেবল কোন দুর্গ আক্রমণ করি-বার সময়ই তাহারা পদাতিক নিযুক্ত করিত, অপর যাবৎ কোন শিখ অখ্য**লু**ছ করিতে না পারিভ, ভং তাবংই সে পাদ্রাজ মুদ্দ করিত; सञ्जा अर्थ थाकिएक कथनहे न्थिरशक्षाता अन्। উপায় অবলম্বন করিত ন। শিথযোদার। অশ্ব-शृष्ठरुरेट फाएमात वन्तुक हेरे**ता** युक्त कहिए र অতি নিগুণ হইয়াছিল, তৎকাল ভাহাদিসেঃ মধ্যে কামানের ব্যবহার ছিল না।

শিশ্বদিগের এই সমস্ত দল ও দলপতি ভিয় ভাহাদিগের মধ্যহইতে কতকণ্ডলি লোক একত্রিত। इरेश " वर्गान" नाम अक अञ्च मनश्रस्त করিয়াছিল। তাহাদিণের তাৎপয্য ও মত এই যে তাহাদিগের সহিত ভৌকিক কোন বিষয়ের অংশ্র লাই; ভা**হা**রা পৃথিবীর কর্ত্য প্রভুত্ত কিছুই धार्यन। यद्ध मा, छाहाता देखदात हिस्टि याचा, এर॰ (म्वजानक व्यमता जाहाता हटउटक जोह-यलय ६ प्याम नोनवर्ग-वाज्यत পरिक्षम धातन क्रिड, এবং অপেমাদিগকে গুৰুপোবিন্দের সা- श्रश्नक्रेमभ ক্ষাৎ প্রতিনিধি বলিয়া প্রকাশ করিত। তাহাদিগের মতে সংসারআশ্য সমস্ত পরিত্যাস করিয়া অন্ত-दुखि**षात्रा को**विका ला**ङ क**हा **मनुरयाद कर्खना**। এই মত-প্রভাবে অকালিদিগকত্ক অবিলয়ে শি-अक्षर्य क्ष्यानक रुरेग्नाह्न। नःगात-शतिकाग्री-

পোষণ করা, উভয়ই তুল্য, এইমত ভাহারা লো-किमगरक विस्थय किहा त्याहरक किहा किहाल। वे अकालिमिरणत मरश्च याहाता किष्टु मूर्वल, जाहाता দৈবশন্দিরের কার্য্যাদি করিয়া উদর∹পোষৰ ক-রিতে লাগিল, আর যাহারা সবল সতেজ আহারা मिन्तुकेन कतिया चालनामिरात कोबिका काड করিতে আরম্ভ করিল। কিঞ্চিৎকাল পাকালী-नामक राज এইकार्श बाक्यमार्थः। पानक हेर-পাৎ করিয়াছিল; অবশেষে রাজারণজীত দিংছ কৌশলক্রমে অপর দলপতিদিগকে তথা অকা-লী-প্রভৃতি সকলকে শাসন করিয়া সমস্ত পঞ্চাব-ताषा जानात नत्रकष्ठ करत्र। धे वृहर दत्त-পার সম্পন্ন করিছে ভাঁহার অধিককাল গভ হইয়াছিল; কিন্তু ভিনি পঞ্জাবরাজ্য গুহুৰ করিয়া অফেন্সই ভাষার আবিপভ্য ভোগ করিয়াছি-লেন। তাঁহার জীবদশায় আর কেছ পঞ্চাবের অধিপতি হইতে পারে নাই। তিনি সিংহাসন্ত इट्डा अक मिरमत सन्। अ शक्रुक इराम माहे, বিক্লপ শৌর্য বীর্যে পরিশোভিত হইয়া রাজ্য করিয়াছিলেন। কিন্তু কালের করাল-গ্রানহইতে কাহারও নিস্তার নাই; "বীরভোগ্যা অধুবারা" এই প্রাচীন বাক্যই অতি যথার্থ! রুণজীত সিং-হের অত্যন্ত শুমলর গল্পাবর জা তাঁহার মৃত্যুর পর স্বন্ধালও তৎসম্ভানেরা রক্ষা করিকে পারে নাই, হায় কি অন্পকাল মধ্যেই তাহার

> যদুপতেঃ কুরাতা মথুরাপুরী, রঘুপতেঃ **ত্বগতো**ত্তরকো**শবা**। ইতি বিচিত্তা কুরুস্থ মনঃ স্থিত্ত ন সদিশ্ৰ জ্গদ্ভাৰধার্য 🚛

নীতিমুক্তাবলি।

সম্ভপ্ত মনের সহিত থদের তুলনা হয় না। প্রতারকের সকল বস্তুই বৈরী হয়।

পরের উপর নিরস্তর নিভর করা অতি কুনু ব্যবসায়।

ভোষার আপম দীপ নির্বাণ করিলেই তুমি ঈশ্বরের দীপ্তি দেখিতে পাইবে।

বানরও দৈবাধীন চিকিৎ নক হয়।

উফ্চদুব্যে দথা যে মাজ্জার সে শীতল ক্ষীর প্রশাস ক্রিতেও শক্ষিত হয়।

মত্ত বন্ধুর নিকট কোন উপকার অথবা আশুর আশা করা উচিত নহে।

(यगन कलाइ लोट्ड क्या घरा, (महे बाल हिल-मोग्न हिल्लक वाक्तित छ करा हता।

প্রতিবানির সুথে কেবল হিংসফ ব্যক্তিই শার্ণ হয়। যে ব্যক্তি অনেক অন্ধীকার করে, তাহার নি-কট কিছই আশা করিও না।

নকল খ্যাভিই বিপদজনক, সুখ্যাভিতে অন্যের দ্বেষ জ্বান্ধ, এবং অখ্যাভিতে মনুষ্য লজ্জিত হয়। যে ব্যক্তির মরণে ভয় নাই, তাহার কি কাপে অন্যের ভয় হইবে?

যে জন ভোষামদ-মভরণে ভূষিত নহে, সে ব্লাজসভায় কোন কার্যে/রই হয় ন।।

নির্বোধ জনের যত ধনের বৃদ্ধি হয় ওতই অজ্ঞানতা বৃদ্ধি পায়।

विष्कृति निक्कात्म छर्मना कत, बदः सम्मन्भारक श्रमःना कत्र। ইবর্য জিক্ত, কিন্তু তাহার কল মন্ত্রন্ত। রোগীর অর্থ থাকিলেই তাহার আরোগেট বি লম্ম হয়।

বৈদ্য কদাত ঔষধি দেবন করে।

শিয়মিতকালে আহার, নিয়মিতকালে শয়ন,

এবং লক্ত মন; এই তিন জন পৃথিবীতে সুচিকিৎসক।

বিদ্যান ব্যক্তি এক্লা থাকিলেও কথন নিজ্জন হয়েন না।

যে ব্যক্তি বাল্যালে দক্ষয় করেন, তিনি প্রাচান হইলে তাহা ব্যয় ক্রিতে সক্ষম হইবেন। .

যে দ। সগণ নিরস্তর আপন রিপুর অধীনে থাকে, তাহারাই মন্দ দাস। "

তোমার রিপুকে শাবন কর, নতুবা তাহার। তোমাকে শাবন করিবে।

মিখ্যা মত মনের কৃষ্টরোগ স্বরূপ।

যে বিষয় লেখা যায়, ভাছা কথন মেধা দে-বীর মন্দিরের বহিভাত হয় না।

যে জন ধর্মদেবার নন্দিরে ভূমণ করিয়াছে, ভাহাকে সম্ভূমের মন্দিরে আনিতে না দেওয়া কোন মতে উচিত হয় না।

দার্যায়ু ইচ্ছা অংশকা যত কাল জীবিত থাকা যায় তত দিন সাবধানে থাকা বিধেয়।

যাহারা কেবল মিষ্ট খাকে; মুগ্ধ করে, তাহার। কথন সেহ করে না।

নীচ লোককে যত প্রশংসা করা যায়, ততই তাহারা অসহ্যহয়।

যিনি পরিমিত ধনে তুও নছেন, তিনি কথন যথেট প্রাপ্ত হইবেন ন।।

মনুযোর মেধা জালের নায়ে অনেক বৃহৎ বস্তু-কে ধরে. কিন্তু কেবল কুদুকেই নিগতি হইতে দেয়। কেবল অরণকে আমাদিনের ভাতারি না করিয়া যাহা মনে ক্লাথিতে ইল্ছা হয়, তাহা লিখিয়া রাথা উচিত।

কোন ২ সময়ে ধনের প্রতি অবজেল। করিলেও অনেক লাভ জ্যো।

ধন সারের নার বিস্তারিত না করিলে কোন কল দশে না।

তানেকেই স্বীয় ২ ধনবার। কেবল দুঃথ এবং খেদ ক্রয় করে।

দিনকে দিন এবং রাত্রকে রাত্ত করিলেই নির্বিয়ে কালযাপন হইতে পারে।

্যে রাক্তি আপনি অন্ন পায় না, তাহার কুকুর-পালা বিধেয় নহে।

মন্দের সন্ধ অপেকা বনে গমন করা ভাল।
লোকে কেবল প্রশংনিত ভ্টবার নিমিত্ত অন।কে প্রশংসা করে।

যে মনুষ্য অহকার শূন্য তাল্যকেই যযার্থ খা-র্মিক কহা যায়।

থলতা বসন্ত রোগ অপেক মু**থকে অধি**ক নপ্ত করে।

সকল বিষয় কিছু ২ জ্ঞাত প্রাঞ্চ অপেকা এক বিষয়ে বিলক্ষণৰূপে পারদর্শী হওয়া বুজিমানের কর্তব্য।

দরিদু জনের ঔষধি ক্রয় করিবার ক্ষমতা না থাকাতে কেবল আশাই ভাহাতে রক্ষা করে। বিদ্যার গর্ম করাই মূর্থের চিষ্ঠা। भागामिट शत पृथ्यत गीमा क्रानिट शाहित है भागता এक श्रकात मुशी है है।

স্থ্যাতি সম্পদ-অপেকা প্রিয়তর্। লোভির সর্বদাই অভাব।

অনেক বিষয়ে মনুষ্যের সময় বায় করা অপে-কা ধন বায় করা উচিত।

सन्या जागारम्ब वस्तु, अवः मङा अन्यारमञ् दक्ष, किन्न जार्गु मङारक, मसान कहा विरक्षः।

দৃঃশির আশায় কাল্যাপন করা ভাল, এবং সুশির সাবধানে থাকা শুেয়কর।

যে জনের নাবধনতা নাই, তাহার ধর্ম কোথায়? থল বেধে করে থলতা ভিন্ন কোন কার্য্য সমাধা করা যায় না।

্বিদ্যা দুঃথির <mark>রজত, ধনির ছেম, এবং নৃপতিদের</mark> রতুষ্ক্রপ হয়।

জীবন শ্রোতের ন্যায়, নিরস্তর ধাবনান হই-তেছে, কথন প্রত্যাগমন করে না।

বীরগণ আমাদিগের শুদ্ধার পাত্র, জ্ঞানিগণ স্থামাদিগের সম্ভূমের পাত্র, কিন্তু দাতারাই ক্ষেবল আমাদিগের প্রতির পাত্র হয়েন।

সুজনত। কোন রাজাজার মধ্যে নাই, তথাশি তাহাকে নকলে কেন দূঢ্**রণে পালন ক**রে?

> আ. ন. ঠা. পাথুরিয়াঘাটা।

বিবিধার্থ-সঙ্গুহ,

তাপাৎ

পুরারভেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব]

नकाक २११७, गांघ।

ু এর পঞ্জ।

ভূল্কর-রাজ্যের বৃত্তান্ত।

পূর্থক তাহাদিগের পথ-রেখে করিতে উদ্যত
ভইলেন। পেশওয়া তাহার অসম্ভত সাহস ও হুইলেন। পেশওয়া তাহার অসক্ষত সাহস ও SQUULUU व्यवत-वः त्मात्र आपिश्रुक्य मन् वीया नम्मर्गत महाजुष्ठ हरेश जाहारक कहि-অনুনারে মেষপালন করিত; এবং মেষলোম- হইয়া অনুমান ১৭২৪ খ্রীষ্টাফে পেশওয়ার দারা কম্বল প্রস্তুত করিত। সে নীরানদী- দৈন্য মধ্যে ভুক্ত হইয়া একশত অধ্যের অধ্য-তারস্থ হল-নামক গুনে বাস করিত বলি- ক্ষতা পদে নিযুক্ত হন। তৎপরে শাঘুই তাঁ-য়া লোকে তাহাকে হল্কর কহিত। মল্হর হার পদের উন্নতি হইয়াছিল, কার্ণ ১৭৩২ থ্রী-রাও পৈতৃক-ব্যবসায়ে অত্যন্ত বিরক্ত হই- ষ্টাকে যে সময় মালওয়া-রাজ্যের সুবাদার या युष्कवृत्ति व्यवनथन कब्रिटनन, ও का॰টाकी- मिया-बहामूत लिमाश्यात महिल यु**ष्क श**तासः कम्म-नामक अक वर्जिङ रमनानायकत व्यथीरन हम। अवः উक्त त्रारका श्रमान व्यक्तित কর্ম প্রাপ্ত হইয়া ভাহার নত্তে গুরুত্র-দেশ হয়, সে সময় মল্হররাও পেশওয়ার দেনা-জয় করিতে যাত্রা করেন। ঐ যুদ্ধে তাঁহার পতিত-পদে অভিবিক্ত ছিলেন। ঐ ব্যাপারের वित्मय यूष-रेनिशूना ध्रकाम शास्त्राटि जिनि किছू मिन शद्र मल्द्रत्ता तमात्र दाय-निर्दा-২৫ অত্থের অধ্যক্ষতা পদে অতিবিক্ত হয়েন। হাথে পেশওয়ার নিকট হইতে ইন্দোর রাজ্য मन्हद्रता अथकारन डाखि-नमी-डीरत कम्रायत श्राध इन, এवः ১१०० मारन नमीत छेख-वाणेत्र कार्य। निवार कतिए नियुक्त हिलन, त्राःभाष् ममूनात्र महाताहु-एनटमत कर्ज्य-शरम তৎকালে পেশওয়া ঐ কদমের রাজ্যদিয়া মাল- নিযুক্ত হন। ১৭০৮ খ্রীষ্টাবে যথন ভূপাল-রা-य-(मरम रेमम) (अत्रन कतिवात जिलकम कतारण स्मात निकरणे निकामूम्यूरन्कत अधीनक त्राज्-मन्द्रता अविष्ण-टेनरम् । त्रिण गार्ग-टिन्। नकन आका इहाः उथन मन्द्रता ।

যুদ্ধে অত্যন্ত সাহস ও পারদর্শিতা প্রকাশিত করেন, এবং পরে তাঁহারই বাহ্বল-প্রভাবে नम्मा-नमोहरू हथन-नमी-भर्गाञ्च नमूमाम् श्रान মহারাষ্ট্রীয়-রাজের অন্তগত হইয়াছিল।

এই ঘটনার পর-বংসরে মল্ছররাও পোটু-গিল্দিগের সহিত থোরতর সন্ত্রাম করিয়া তাহা-করেন: তদনন্তর তিনি নাদির্শাহের আক্রমণ-

কর্মান প্রাপ্ত হন। তাহাকে নিজপদে স্থাপন মান্য বদান্যতার জন্য ভাছাকে অবলাই প্রাণং-নাথে হলকর ৪০,০০০ হাজার মহারাষ্ট্রায় যোদা র বৃদ্ধের রাওকে সমভিব/হোরে লইয়া তা− हाइ सङ्क्ष्रभन करदन; किन्नु शाक्तिजेपीन प्या-ওরজাবাদ পৌছিয়া কোন ছলনাক্রমে বিষ-পানভারা হত হইলে ছল্কর হিন্দুস্থানে প্রত্যা-शक्त करिलन

ব্চাইবরভাব উপস্থিত হয়, এবং ঐ বৈরভা⊦উপ- | ১৭৮০ শালে টুকাজী সিজিয়ার সহিত নি-

লকে পেশওয়া-ভ্রাত্থারা ৮ বৎসরের পর প্র নিপতে মহাসর্বনাশ উপস্থিত হয়৷ পানিপতের যুদ্ধে বছসভথাক নহারাষ্ট্রীয় যোজারা নিহত হয়; হুল্কর স্বীয় যুক্তি উপদেশবারা এ বিষ-য়ের কোন প্রতীকার করিতে পারেন নাই।

মল্হররাও ৪০ বৎসর-কাল-পর্য্যন্ত নানাপ্রকার দিগের অধিকৃত বাদিন-নামক স্থান আক্রমণ যুদ্ধ বিগুহ করিয়া এবং মহারাষ্ট্রীয় যোদ্ধা-দিগের মধ্যে বিশেষ খ্যাতি লাভ করিয়া ইংরাজি रुहेट (लम्ब्यात करिकात तका कतिवात निमिख । ১१७१ **चर्क शतलार्क शमन** करत्रन। जिनि श्रायः হিন্দুস্থানে আনিয়া পেশ্ওয়ার অনেক সহা ৭৫,০০,০০০ পঁচত্র লক্ষ টাকা রাখিয়া যান। তাঁ-য়তা করেন; কিন্তু নাদিরশাহ মহারাষ্ট্রদেশ- হার মৃত্যুর পূর্বেই তাঁহার পুঞ খুন্দিরাও কা-পর্যান্ত গমন করেন নাই; তিনি দিল্লানগর লুঠ লের গাুদে পতিত হইয়াছিলেন, কিন্তু তাহার করিয়াই পারস-দেশে প্রত্যাগমন করেন। । একটি পুঞা ছিল, তাছার নাম মালিরাও। পে-১৭৫১ খ্রীষ্টাব্দে যে সময় রোহিলাদিগের সহিত শুওয়া তাহাকেই ছলকরের উত্তরাধিকারী করি-व्यायाधात्र नवारवत युक्त इह, उरकारन छ्ल- हाहिरनन, किन्नु पूहरथत विषय अहे या मिल्यन-क्रव के नवारवंत क्रानक माहाया करतन। भारत छानवयः आध इहेर न। इहेर आविजान करतः। কৌশলক্রমে উহাদিগের উভয়পক্ষের মধ্যে দক্ষি তদ্মস্তর থুনিরোও-ছ ন্করের উপজ্ঞা অহল্যা-করিয়া দেন। মহারাষ্ট্রীয়দিণের যুদ্ধকালে গা- বাই অতি-আশ্চর্যাকপে সমস্ত বিষয়কার্য্য জিউদ্দীন তাহাদিগকে রাজকর প্রদান করিবার শিপান করিতে লাগিল। তাহার ন্যায়-পরতা निभिन्न दङ्भएथाक मृत् अवस्त्रभ धारान करत- । ও कर्यनक्ष्णा भव्यर्भ कहिया **मान**य-द्वारकात ন; ও তাছার পরিবর্ত্তে মহারাষ্ট্রীয়দিগের নি- 'সকল লোকেই তাহাকে প্রশংসা করিতে লা-কটছইতে হাইদরাবাদের কর্ত্ব করিতে এক গিল। ফলতঃ তাহার অসাধারণ দয়া ও অসা-করণার্থে এবং ভাছাদিগের ভ্রাতৃবিরোধ-ভঞ্জ- সা করিতে হয়। তিনি টুকাজী-ছল্কর-নামক এক ব্যক্তিকে আপমার সেনাধিপত্য-পদে নি-युक्त करतन। किन्तु व वर्गक्तित्र निहरू पहल्छ। वारेंब्र कान विस्नय मन्नक हिन ना। अनेबाध-क्रिंख ७ वाद्रावनोट अहला वाह निष्पापि उ चानक नश्कीर्ख चम्राणि वर्खमान चारह।

वृंकाकी नमछ नमात्र कर्जा इंडशांट मूख्ताः এই समग्र ए ल्करत व (भभ ध्यात जा जात महिक त्रारकात जिना कर्व हिना कि विन।

লিত হইয়া গুজ্জর-প্রদেশীর ইংরাজ-সেনাপতি কর্নেল্ গড়াডের প্রতি বিপক্ষতাচরণ করেন, बवः ১१৮ ७ माल यथन मितानुत-श्राप्तरमत नवार টিপুদুল্তানের উপর আক্রমণ করে; তৎকালেও ভিনি বিশেষকণে ঐ নবাবের সহায়ত। করি-श्रीष्ट्रिलन। के छेरतान-एम्टम य श्रकात टेमरनात्र শৃঙ্থলা ও রাহি নীতি আছে, ১৭৯২ শালে টুকা-को जाशन देनन।-मकन्तक स्म के करश मृध्यना-বন্ধ করিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি মূশি ও ডুড-त्रक नामक दूरे जन कहा हो भारक आश्रमात छाति দল বিধনের উপর অধ্যক্ষ পদে নিযুক্ত করেন।

কে বৎসর তিনি একপ সৈনা প্রস্তুত করেন, 🗝 গোপ তিনি সে পরাজ্যে নিক্ৎসাহী না হইয়া 🔻 প্রাণর । প্রকার বেনা প্রস্তুত করিতে আরম্ভ তাহার প্রাণদন্ত করিতে অনুমতি দেন। ক্রিজান চিরাভ্যাস-বশাত মহারাষ্ট্রায় যোদ্ধা-লেশ্ৰ জিল : তাহারা অস্পৃষ্ঠহটতে অস্ত্রদারা শনাং বে বহু শত্তু কর করিয়া জয় লাভ করিকে | লারিক কিন্তু তাখাদিগের মধ্যে **গুলি** গোলা काः म रम्पूरकर शक्तां श्रवां श्रवं श्रवां श्रवं श् क्ष्यि सामाप्रियत चनुस्रिक चात्रस रहेल।

াক্ষা শালে দ্বিশার্জা লোকান্তর গমন করেন; ও তাঁহার ম্লুরে দ্র বংসর পূর্বে অহল্যা বাই প্রাণত্যাগ করেনঃ টুকাজীর চারি সন্তা-লের মধ্যে, থাসিরাও এবং মল্ছররাও চাংগর বিবাহিতা জ্ঞার গর্মজাত, এবং বিভোজী ও যশেষজ্ঞরাও নামক অপর দুই সন্তান ভাহার डेनबीह गर्ब नकुष। उत्तरका थानिदा धरक पूर्वन विक्वां । पूर्भीन (प्रथितः श्रधान हाकक्ष

কারিরা দেশব্যবহারানুসারে তাখাকে লৈত্ক मम्मिखिए व्यनिधकाती कताई विरवहनानिक বোধ করিয়াছিল। কিন্তু নিক্ষিয়ার রাজা তা-হার সপক্তা করিলেন: डाहांत्र अक मल योका बक्रनीरयारण मल्ह्तबारयब প्रक्रि चाळ-মণ করিয়া ভাহাকে বধ করে, এবং ভাহার একটি শিশু সন্তান নিবিয়ার সেনাপতির হস্তে অপ্ন করে। সেনাপতি তাছাকে ধৃত করত नक्ति नहेशा शबन करतन।

বিভোজী এবং যশোমস্তরাও উভয়েই তাহা-দিগের হস্তহইতে নিজ্তি প্রাপ্ত হন। অপর বিভোজি দন্যবৃত্তি ক্ষবলম্বন করিয়া কিয়ৎকাল এট বঙ্গারেট সিব্যিয়াদিণের সহিত তাঁহার দক্ষিণ-প্রদেশে মত্যন্ত দৌরাক্স করিয়াছিলেন; মহানার উপস্থিত হওয়াতে তাহার ঐ সুশি- পরে লোকে তাঁহাকে ধৃত করিয়া পূনা-রাজ্ধানীতে ক্ষিত্র বৈন্য-সকল প্রায়ঃ অনেক হত হয়, কিন্তু লইয়া আইনে, এবং পেশ্বয়া তাহাকে হস্তির পদতলে ব্যান-পূর্বক বার ২ প্রদক্ষিণ করাইয়া

व्यन युद्ध ग्रामा खुद्दा नाजभूरत ताङा द नाज-মিশের গুণারোহণ ও অক্সযুদ্ধ-বিষয়ে বিলক্ষণ গাপায় হইলেন, কিন্তু রাজা শঠভাপূর্বক তাহা-কে বন্দি করিয়া রাথেন। তিনি ছয় মান কাল जे वारण काजावाम किंद्या अवरणस्य शला-রন-পূর্বক কিছু দিন গোপনভাবে অজ্ঞাত-वास्त काल इत्रव कतिए नाशिस्त्र । छीश्रंद बीय उँ०मार ७ উদ্যোগদার। এবং পূর্বপুরুষের অসাধারণ সম্ভ্রম হেতু অবিলয়েই তিনি পুন-र्वात्र (लाकमञ्जूर कतिए नक्षम इरेलन, अवः উপযুঁপেরি কএক বার বিপক্ষের প্রতি আক্র-মণ করিয়া সভ্রেই বিলক্ষণ খ্যাতি ও প্রতি-পত্তি লাভ কারলেন। ফরাসিস যোগা ভুজর-न्दिकत मूर्णिकिक टेनमा ७ शाठान टेनमा ह क कामित्रथात कर्शनइ (मना-नमूर, ६ डा-शांत जाका धानिवां ब्रह्म य नक्न देवनामञ्ज

हिल, (म नमछहे अकब इहेश छीहांत वनीचूण र्हेन।

তিনি আপন জেন্তে লুভার পুঞ থুনিরোও-রের নামে আপনাদিগের টপতৃক রাজ্য রাখিয়া আপনি প্রতিনিধির পদ গুহণ করেন; কিন্তু शृह्यी क मभाउ देमानात প্रक्रिशालानत चना कान উপায় না পাইয়া তিনি কিছু দিন দসুত্ৰিভ অবলম্বন-পূর্বক কাল হরণ করিতে প্রকৃত্ত হইয়া ছিলেন। শত্তু মিত্র সকলেরি সর্বস্ব হরণ করিয়া रेमना ध्रांकियानन ७ व्यायनात व्यवहायत वास নিরাছ করিতে লাগিলেন। তাঁ**ছার দৌরাত্মে**। সিক্ষিয়া, পেশ্ওয়া প্রভৃতি হিন্দু স্থানের অনে-कात्नक ब्राह्म (लाकम्म जादना मगान इहेरक লাগিল। পরিশেনে উড্জয়নী-দেশে ভ্লকর-বৈ-ন্যের সহিত নিলিয়া-সেনার এক যোরতর সম্থ যুদ্ধ উপস্থিত হয়। তাহাতে দিক্ষিয়াদিগের জ-(नक (योक्ता नक्षे इस; अव॰ उद्शरकात्रहे शतः-জয় হয়। একাদশ জন ইউরোপীয় যোদ্ধার মধেঃ ৭জন গত হ্য, এবং তিন জন নাড্যাতিক্ৰাপে আহত ও বান হয়:

অতঃপ: ইন্দোর রাজ্যে এক মহাযুদ্ধ উপস্থিত क्रेश निकिशांत निक्टे यत्नाम उता ७ शतांख रून, এক ভদুপলক্ষে বিপক্ষের। ভাঁছার রাজধানী শুঠ করে। বংশামন্তরাও অবশে**ষে অ**পর **কোন** উপায় লা দেখিয়া আপন বৈন্যদিগকে রভ-লম্নগর গৃঠ করিতে অনুমতি দেন: ইহার পর কিয়ংক ক তিনি নিয়মিতকপে আর কোন যুদ্ধ অবশিষ্ট সেনঃ সমন্তিব্যাহাতে করিয়া রাজ্পু-্র পরাহত হন। পরে করক্রাবাদের এক যুদ্ধে

কিয়ৎকাল গত হইলে পর আক্টোবর মানের ২৫ দিবসে পূনা-নগরে তাঁহার সহিত সিক্ষিয়া त्रासात्र अक महानमुग्न रुत्र; अरे यूटक यटना-মস্তরাও অসাধারণ বারত প্রকাশ করেন, ও मच्यूर्वेक्टल जभी रुन; उथा मिकियात्राका लना-य्रम करतन। थाउःপत ১৮०२ मालित ७১ ডि-দেশ্বর-দিবদে ঐ রাজ্**ত্ররে মধ্যে এক সন্ধি** খ্যাপিত হয়৷

্তদনস্তর নিভারার খ্লাজার নিকটহুইতে যশো-মস্তরাও পেশওয়ার রাজ্যে নৃতন অধিপতি নি-যুক্ত করিবার অনুমতি প্রাপ্ত হইলেন, এাণ তৎ-পদে বিনায়করা ওকে অভিযিক্ত করাই মনং করি-लिनः **এমত সময় বাজিরাওকে এক দল বাটি**শ নেনা সমভিব্যাহারে পুনা রাজ্যে আগম ফরি-তে দেখিয়া ভাঁছাকে অবরোধ-করণাথে তথা-কার শত্রু-মিত্র-সকল পদাই এক যোগ ছইল: **এই ऐशनक्ति निक्सित अका यम्माभट उ**र्माहरू মিলন করণাভিলাখে তাঁয়ার ভাুত্গুঞ গুন্দি রাওকে তাহার হয়ে সমর্ণণ করেন। যাশা-মন্তরাও যদিচ ব্রিটিশ দেনার বিপক্ষে অক্তরা इन क्रिएं ज्लोकांत्र क्रीहशा हिल्लन ; किंदु कल छः मीघु छाहा अनुष्ठान करत्रम नाहै। अवस्मरः **एलगदा महिल विकिन-हारक्ष्य विवा**न 'हेल-ष्ट्रिल, इ.स. अव॰ कब्र्याल सन्त्रम् नार्ट्राट्य अर्थ-**ন**স্থাৰক দল সামান্য সৈনে।র সহিত যুঘ क्रिया यानामखदां अध आध हरेया महामा-হইয়া উঠিলেন, এব° ক্থিত **আ**ছে **ह**जी विश्व करान माहे, प्रमू वृद्धि अवलयम-शूर्वक २०००० हाकात याचा मरस लहेशा विकिंग ग-बहेंक जूठे केशिए**ण पात्रस किंदिलन। फिनि | क्लिंद्र मिझीनशत पाक्रमन करतन, किंस्र जार**ीए⁵ তানা কৰ্ষি পূন-পৰ্যান্ত সমস্ত দেশের প্রতি পরাস্ত হইয়া বলোমন্তরাও ভরতপুরের রা नाना कोताका कतिरु लागिरमन। **এই প্রকারে । कात महनागद्य इन, এবং ভারার সহায়তা**॥

প্রস্থান করেন; কিন্তু তাছাতে কোন ইষ্ট সিদ্ধ ব্রিটিশদিগের নিকট পরাস্ত হন; এবং আপনার অনেক-রাজ্যাদি-ক্ষতি-খাকার-পূর্বক তাহাদিগের সহিত সন্ধি করিয়া স্থীয় দৈন্যসামস্ত লইয়া মালব-রাজ্যে প্রস্থান করেন। এই ঘটনার এক বৎসরের পরে ব্রিটিশ-কর্মাধ্যকেরা তাঁহার সদ্ব/বহার দেখিয়া ভাহার সমস্ত রাজ্য ফিরিয়া দেন।

মানবে তাহার কারাবদ্ধ ভ্রাতা থাসিরাও এবং তাঁহার গার্ডবভা পত্নীকে বধ করেন। ঐ ব**ৎসরে** ভাঁহার জুভি্পুঞ্জ একাদশ-বংশরের বা**লক থানি** 🔒 রাও বিষ পানদার। প্রাণত্যাগ করে।

যশোমন্ত রাজা-সম্পদ্ বৃদ্ধি করিতে অসম্ভত অনুরাগাহও য়াতে, ক্রমে ভীহার বুদ্ধির হুাস

जूनमी बाई ममस ब्राह्मकार्य। निष्णापन कविएडन।

मायक, मिखमायक, जवः वस्नायक हेराव कि-खूदरे कात व्यालका तिहल ना; त्रारकात उलत उन्हाता वार्षिक अवनक है। का उलसबु उरला हरे कः

উপর্যুপরি কএক বার ইংরাজদিগের অনেক সকল দোষ ঘটল। প্রজারা বিভিত বিবানে অনিষ্ট করেন। অনন্তর ভরতপুরের রাজার সহিত বিচার প্রাপ্ত হয় না; সেনাগণ বিশ্বখনাগুত ব্রিটিশদিগের সন্ধি হইলে তথায় আর কোন হইয়া বেতনের জন্য সর্বদা উৎপাত করে: এই উপায় না পাইয়া-রাজা রণজীত নিংহের সাহা- সকল অবস্থা সন্দর্শন করিয়া তুলসী বাই জা-য্য পাইরার প্রত্যাশায় যশোমন্ত শিথ-রাজ্যে, হার এব- সেই শিশুসন্তানের রক্ষণাবেক্ষণের জন আপনাহইতে ব্রিটিশ-গবর্ণনৈণ্টের নিকট সাহায্য না হুইলে অবশেষে লাভ লেকু সাহের কর্তৃক প্রার্থনায় আবেদন করিলেন। এই প্রকার প্রস্তাব भां इहेन, किञ्ज वञ्जाङ (कान वावञ्चाहे हहेन না; অধিকম্ভ পেশওয়ার সহিত পুনঃ শতুর আরক হইল। পেশওয়ার পঠোন-কর্মাধ্যকের। इन्करवद रागानिश्व मकन त्व इन श्विरमाध করিরা ভাষাদিগকে বশীভূত করিল, এবং যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। প্রথমতঃ ভাষারী ত্রদা বাইকে ইং১৮০৬ মধ্যে যশোমস্তরাও নিকণ্টক হইবার বিধ-করণ নিমিত্ত ভাঁচাকে সিপরা-নদার ভীরে প্রেরণ-করিবার মন্ত্রণা করিল, এবং তাহার প্রধান ২ মন্ত্রিদিগকে কারাগারে রুদ্ধ করিল। পরে মহীদ-**পুরে এক ঘার সম্ভাব্যে ছল্কর দৈন্য এতেবারে** পরাস্ত হয়, এবং সূত্রাং ভলকর-রাজ্যের কলেক-ক্ষতি-দীকার-পূর্বক পাঠানদিগের সহিত তাহাদি-ণের মনোমত-নিয়মে দল্ধি জাপন চইবার প্রস্তাব হুইতে লাগিল: এব॰ পরে তিনি বিক্ষিপ্তপ্রায়ঃ হয়। ঐ স্থার প্রথান নিয়ন এই যে ন্বাব অন্তর হওয়াতে ভাঁছার কলাত্যগণ ভাঁহাকে যাব-়ুখাঁ এবং ভাহার ন্যালক গফুল খাঁই জায়গাঁর যাহা ভটাবন কারাকদ্ধ করিয়া রাখিলা ঐ কারাগারে তুল্করের অথান ছিল তাহা এফকালে ভ্যাগ করি-ই॰ ১৮১১ শালে ভাষার লোকান্তর-প্রাপ্তি হয়। 🦠 তে হইবেক; কোটা প্রদেশের কর্মকর্ত্তাকে চারি-यामामारखं उचामावयात्र वाँशांत शूळ मनश्त- थानि চाकना निकत मान कतिए वहेरवक, अवः वि-রাও তৎপদাভিষক্ত হয়; কিন্তু তাঁহার প্রিয়পত্নী টিশ অধিকারের মধ্যে নৎপুরা-পাহাড়ের দক্ষিণা০-শে হল্করের যে সমস্ত ভূমি আছে, ভাছা বিটি-যশোমন্তের মৃত্যুর পর অবধি ছল্কর-রা- শদিগেরই থাকিবেক। এই নিয়মে সঞ্জি স্থাপিত জ্যের অভি শীঘু ২ হু যে হইতে লাগিল। ফলতঃ ইইলে পর ব্রিটিশ-কর্মাধ্যক্ষেরা হৃত্করের অবশিষ্ঠ রাজ বিপুবের সকল কারণ ঘটিয়া উঠিল, জ্রী- সকল রাজ্যের রক্ষণাবেক্ষণের ভার গুহুণ করিলেন। এই অবস্থায় ত্ল্কর রাজার যে অধিকার ছিল উন্নত হট্যা ভাহাহট্টে ২০ লক্ষ টাকা বাৎসরিক উপস্তু जित्र इहेशाङ्ग: व हे किता सथ्रहरू কেবল তিন সহসু অশ্বারোহী সেনার ব্যয় নির্বাচ कब्रिट इडेंड।

কালাব্যি প্রম্যুথে রাজ্য করিয়াছিলেন। তাঁহার পদুবে রাজ্যপালন করিতে লাগিলেন।

किन्नु के व्यक्षिकात्र कृषि मकरत्र व्यवका क्रमणः शिषात ष्रेत्रामावद्यात शत्र वकाम्ण वश्यत्र कात य ये श्रेषाता माना कर शाहेशाहिन, त्रारकात প্রতি নানা উৎপাত ও উপদূব ঘটিয়াছিল, তাহার नगरम (जगनि अकार्य) नकरन मूर्य कानकर्व क्तिएक साशिल, मिन्मिन तारकात्र म्स्थना वृचि ইখার পর যশোষভার পুঞা মল্ছররাও বছ- ছইতে লাগিল এবং মলহররাও নিকটকে নিক



कख्दी-मृग।

थिया लाटक विरुट्ड लाशिल, " म्थ, कि निष्ठू इ পুৰুষ; আপন সন্তানকৈ হাঁটাইয়া আপনি গা-ালিক আছে যে একদা গৰ্মভ-পৃষ্টে। ধায় চড়িয়া যাইতেছে।" বৃদ্ধ ঐ কথায় লজ্জিত এক ব্ৰ ভাছার সন্তা- হট্য়া পুপ্ৰকে গদভাৰত করাইয়া বয়ং পদ-नक नक नरेश रूखे गारेक बुक्क प्रतिन किंद्र जाराक का र्मान ा प्राप्ति हिन। পথिमध्य डाहानिगरक (ए- ना। श्राथरकत्रा वे मूखरक सत्रशक्त स्थित्र।

কহিলেক, "এব/জ্ঞি কি পামর, বৃদ্ধ পিতাকে ইহা সর্বদা চেপ্তিতব্য। মুভ্রাং পশুপজিব বর্ণন হাঁটাইয়া সাপনি গর্মভ-পৃষ্ঠে ষাইতেছে"। পুঞ ঐ তিরস্কারে খরপৃষ্ঠ চইতে অবতরণ করিয়া लम्युकी रहेन, किन्न हेराटा निमारहेट के পিতাপুঞ্রে নিজ্তি হইল না; কারণ তাহা-দিগকে তদবস্থায় দেখিয়। অপর কতকগুলি**্** लाक कहिए नाशिन, "प्रथ, हेराद्वा कि म्थ! क्षे शृक्षे ककता शर्मा नर्म थाक्रिक जाल-নার। হাঁটিয়া মরিকেছে "। বিবিধার্থে প্রাণি-বিদার আলোচনায় আমাদিগের এই বৃদ্ধের मना छेलक्टि ।

আনাদিনের আত্মীয় বন্ধু অনেকেই জীবসংস্থার বর্ণনে শভুপ্ত হইয়াথাকেন; তাঁহাদিগের বোধে বিবিধাথের যে কয়েক প্রে পশুপক্ষ্যাদির বিব-त्रव थारक उरममूम्य वार्थश्रयुक्त इयः; ठाहारक चना कान প্রয়োজনীয় প্রসম্ব থাকিলে অনে-কের উপকার দর্শিতে পারে। এতৎপত্তের ভিন চারি পৃষ্ঠের অধিক কদাপি প্রাণিবিদ্যার মালোচনায় নিযুক্ত হয় না; ত্রাপি তাহার অনুরোধে তাঁহায়া সমস্ত পত্রকে প্রাণিবিদ্যোৎ-শাহি পত্র বলিয়া উল্লেখ করেন। অপর কৃতি-পয় বিদ্যোৎসাহি মহাশয়েরা কছেন যে এত-দেশীয় ব্যক্তিবৰ্গ প্ৰাণিবৰ্গের অবস্থা-বিষয়ে অত্যন্ত অজ্ঞ, এবং তৎপ্রযুক্ত প্রচুর-পণ্ডপক্ষি-পরিবৃত-দেশে বাদ করিয়া ঐ সকল জাবহুইতে আপনাদিগের ঐহিক মঙ্গল সাধন করিতে পারে ना; चल्जबर लिवरम्न मरनारयानी इहेम याहा । ज्थन के कीर्टिन श्रान्त रूप स्थान कात कमानि তে सरम्भि-क्रमणन की वम्षि-इइएक व्यर्थभादम थाकिएक भारतमा। मक्रिका कि मामाना भागर्थ! করিতে পারেন ইছা আমাদিগের অবশ্য কর্ত্ত ; । আগু বোধ হয় না যে তাহার দৈহিক বিষর্ স্**টির বিররণ সম্পর্কপে জাত হইতে পারেন** তাহাহইতে কত সহসু মন মধ ও মোম উৎ-

করা না করা উভয়ই কোন না কোন আস্থেগণের **अञ्धित कात्रव 'हरेटाहा। अरे** छेड्स नक्षरते উক্ত বৃদ্ধের নাম পুনঃ ২ অবস্থার পরিবর্তন না করিয়া কোন পক্ষ যথার্থ ইস্ট ভাহারই নিৰূপণ করা সম্পূতি আমাদিগের কর্ত্তব্য। ইহা অনা-য়ালেই অন্ভূত হইতেছে, পশুপক্ষির বিবরণ সু রম মুপাঠ্য নছে: অভি অংশ ব্যক্তি ভৎপাঠে পরিভুগু হইয়া থাকেন। জি উংরাজি, কি পারসি, कि मःष्ठु, कि वाञ्चानि, कि कतानिम्, कि हिन्दूः যে কোন ভাষায় শামরা জীন-বিনরণ পাঠ করি-शाहि उৎসমুদ্ধ কর্কশ বোধ হট্যাছে; কোন বণনাই কৌতুকাবহ গণ্পের ন্যায় মণোরম অনু-चुठ इश् नाई; शहुद्ध क्विन हात वर्गनास कृ<u>णा</u>-ব্যতা ভিন্ন অন্য কোন দোষ কেহ আরোপিত করেন নাই: বোধ করি ইছার উপকারিতা विषयः काहात नत्मह नाहे। हेहा खोक ठवा त्य "একটা সাদা পোকা আছে, তাহার লেজের কাছে একটা কাল চিহ্ন থাকে; এ কটি সাতদিন তুত কি অন্য গাছের পাতা খায়, খাট বা দশ দিনের দিন গুটি বাঁধে " এতাদ্শ-বর্ণনায় অম্প-লোকের তৃথি জন্মিতে পারে; পরস্তু যথন মনে कत्रा यात्र (य नर्सिष्कृष्टे उच्च 🕹 की वेष्ट्रेट उप-भन्न रूम-- जाहात % जिलालत जात उन्तर्य विश-শनकाधिक मनुष् अভिलानिङ स्ट्रेट्स्, अ প্রতি বর্ষে দুই কোটি মূদ্র লভ্য হইয়া থাকে— मर्हः (य काम প्रकाद्ध अञ्चलभीय जाक जीव- एक कञ जाक श्रव्य-मन्मान्ति-भानी इनेप्रारहः।

পত্ন হইয়া আমাদিগের সুথ সংবৃদ্ধি করিতেছে! মেদ বিক্রয় করিয়া কবিয়া-দেশের মসুষ্য ২০ स्माद्ध (भीषे। विक्रीत इहेदा व्यवं प्रेमेंतक ऐकि। खे**० शत** क्हेश शांदक ; मुख्यत्वत्व (महे मण्मा खाष्ट् किञ्च जाहा । हेटल (कह अक शर्मा ও প্राध हर मा; अकथा कम-ममारक **का**ज कहा ७ **के मर्रा**श् বিবরণ প্রচার করা আগু শ্রুতি-কর্মশ হইলেও অন্চিড বেধি চইতেছে না, তালচড়া পাফার ন্যায় মালাকা-দেশে এক প্রকার পক্ষী আছে, কিন্তু তা-হার নীড় বামান্য ভালচড়ার বাবার তুলা নহে; তাহা 🖟 প্রিদিণের মুখামৃতে নির্মিত হয়। ङ ভালচড়ার বাস। বিক্রয় করিয়া ভত্তত মনু-েটো প্রতি বয়ে পাঁচ লক্ষ টাকা প্রাপ্ত হইয়া पारक। कविमनना शास्त्र अक श्रकांत की है। জনায়, ভাষা ছারপোক ধ্ইতেও ক্দু, পর্ম্ভ তাহার বাণিজ্যে দক্ষিণামরিকার লোক পঞ্চা-न लक्ष টोक। नाच करत्। अञ्चलनीय नाक्षाः कीलें ७ विषर्यद्व जाभागा मुक्षास महा जाहा अञापृभ कुमू ७ अरधील की है अवस्त पारक स्य লোধ হয় ভৎপ্রযুক্ত লোকে লক্ষ শব্দের অপ্-कण्य । अपूर्व की है इंड करवें अर बाका सन शाला : एक्ष्मा इंडेस पारक, जे कार्तित विवत्न कानाम ब्हारकः উপकार **ভिন্न कर्नाश श्रशकांत मस्ट्र** না ে পশুর লোমে শাল প্রস্তুত হয়, যাহার বিষ-হান? কোন্ দেশে কোন্ কটি-পতছ্হইতে াজে চানঃ উৎপন্ন হয় যাজার চর্ম ভিন্ন উত্তম : লোকে কিছ কল প্রাপ্ত চ্ইয়া থাকে? কোন্ ডানে পান্ত ইবার সম্ভাবন: নাই, যাহার মাণ্সে কি২ পশু লইরা গেলে লোকের স্থসম্দির প্তिটার অধিতাতশ মনুষ্য জীবন ধারণ করি- বৃদ্ধি চ্ইতে পারে? এই সকল অনুসন্ধানে অব-েত আহার আশুর ভিন্ন দুর্গম প্রান্তরে যা- শাই জগতের মঙ্গলোমতি হইতে পারে, আর ভারতের কোন মাত্র উপায় নাই, দেই সকল যে আলোচনায় ঐতিক-কুশল-সভাবনা, ভাষা कोलड़ निवहन-भारते य कवाजाव हैहा आमता आख मूनुवित ना हहैता य आमाहिरगत नि-

मानाका-(मरम क्लासक क्लायकात मर- विक होका आध इस ; टेन्टिम-क्लारवर्स वानिरका विवाणि ৫००० काशक नियुक्त चारक, जाहारज व्यन्त्र ৮०,००० मनुष्य उत्रक्षीविका भाहेरलहाः শৃগালের লোম, নকুলের লোম ও বীবর-পশুর लाम नक्र कतिश कल नर्नु २ मनुषा धनावा **इहेट्य्ट् । উत्तर्शावकाय लाग मक्**र कविया এক দল বণিক্ প্রতিবর্ষে ১॰ লক্ষ টাকা প্রাপ্ত হয়। नमुद्भु विमुक ध्रतिश कण्ण उः ১०,००० व/ खि। क्रीवि-कः উপाङ्जिन क्रिट्डिष्ट् ; म्रद्रिगात चाँहिने मङ्गुरु করিয়া কত সহসু ব্যক্তি প্রতিপালিত হইছেছে? কত শত্ত জাবের দন্ত, নথ, পক্ষ, কেশ, বুচা-**फिट्ट मनूरियात सूथममृक्षि वर्षिक इट्टाइट्ट**! মনুষ্টের ভক্লেপিযোগি মৎস্য মাংস প্রতি-मारम कञ लक्ष भाग मध्रोञ रहेशा थारक, এবং তাহাতে মনুষ্যের কি পর্যান্ত উপকার, একবারমাত্র তাহার চিন্তন করিলে অনেকেই चीकाइ कतिरवन, त्य जीवन्धित क्वान आमानि গের পক্ষে প্রয়োজনীয় বটে। কোন্ মৎস गुथाना ७ कि वा अकाषकता कान् १७ कि ভূপো ভাষার নাম লাক্ষা রাথিয়াছে। পরস্তু ঐ। উপকারজনক ও কোন্ পশুই বা অনিষ্টকর? কোন্ **मिट्या कि शक्टा लाक्ति उनकात्र मग्राव? ड** कि উপায়ে हि॰मू ७ व्यहिजकत शरुत উৎসেদ इहेरक शादि कान् गर्श वियास, अ कान् मण कानमण्ड कनुष्ट्र किट्ड शांति ना। ज्ञादिकत्र जान्छ नमान्द्रनीयः, हेश चामता मूकक्टे बीकात

নকলের স্দয়ক্ষ হয়, তাহা আমাদের চেষ্টি-তব্য, ইহাও নিয়ত অন্ধীকার করিতে হইবে।

যে পশুর প্রদক্ষে আমরা এ পর্য্যস্ত লিখি-नाम, जाहारक जाण नारक हिनिएं भातिरवन, পরস্তু সে আমাদিগের কথিত বাক্যের পো-यक दाएँ। जनमविष्णां कछुतो ले शखहरूट উৎপদ্ম হয়। হিমালয়ের উত্তর-পার্শে ইহার বাসস্থান; তথায় নীহারমণ্ডিত পর্যতশ্লে কটে উৎপন্ন যথাকথঞ্চিৎ তৃণ অবলম্বন করিয়া এই পশু দেহযাত্র। নির্বাহ করে। ইহার পদচতু-ঔয় অত্যন্ত সূকা; দূরহইতে তাহাতে জঙ্ঘাদির বিভিন্নতা বোধ হয় না, এই প্রযুক্ত সামান্য গণ্প আছে, যে ক্সুরিকা পশুর হাঁটু নাই!

এই পর্যার অবয়ব হরিন-তুল্যা, এই কারেনবশতঃ উহা মৃগ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে, পরস্তু মৃগহইতে हरात অনেক অংশে প্রভেদ দৃষ্ট হয়। ইহার শৃঞ্ উৎপন্ন হয় না, হরিণের ন্যায় ইহার চক্ষুলে শক্ষিছিদু নাই; অপর ইহার উপর মাড়িতে জাত मुहे शक्कम ख मृथ्र इंटिन क सूच विश्विशं ठ हरेश थारक। हेरात लाम प्रार्भ कदिएन है ताजी কলমের পালথের ন্যায় ককশ বোৰ হয়। কন্ত্রা हेराम्टिगत गाजिएम्टिंग क्रट्या, श्रद्ध वहे श्रष्ट প্রাপ্তবয়ক না হইলে ঐ পদার্থ উৎপন্ন হয় না; অপর ভাহার গন্ধও সর্বদা নমান থাকে না! डाहारमञ्ज अञ्चारनहे के शक्षमुवा चलान्छ मूर्वा-নিত হয়।

ভারতবর্ষে কন্তুরী ভিন দেশহইতে আনিয়া पारक, उपाया चानाम, तिलाल, बदः काचीदः; चम्राधः। चानाम-रम्रामः कखूती উत्तमः, ও काणी-झाग्छ कङ्बी व्यथम।

क्खूबी-म्राब मध्या व्यक्ति काली, बद शा- हिंहा नूमहरू ताथ इहेरहरू।

कतिवः, ज्ञथा याहार्ड ले वाका चाकीय वसू । हरिक वध-कतां मुक्तिन, मुख्याः कख्ती चला-**स्व व्यक्षिकमृत्व। विकास एस, बदः व्यक्तिक स्ट-**কিঞ্চিৎ কন্তুরীতে মাংস**থণ্ড ও** শোণিত মিঞ্চি ক্রিয়া কৃত্রি**ম চর্মলোমে মণ্ডিত করত** বিক্রয় করিয়া থাকে; পরস্তু তাহার কৃত্তিমতের পরীক্ষা করা কঠিন নহে। কৃত্তিম কস্তুরী অভিতে নি-ক্ষিত্ত করিলে যে প্রকার দুগন্ধ নির্গত হয়, প্রকৃত क्युतीट ठाहा मस्रद नः। कान ६ ममस्य **बक्कारन २०००—२००० नांडा अञ्चलमा चानी उ** इरेशा थारक।

> क्सूतिका-ग्रात्र नम्म ভाর**ভনমৃদ্রীয়-দাপে** কতকগুলি ক্দু পশু আছে, কিন্তু তাহাদিগের নাদিতেক জুৱা উৎপন্ন হয় না। ২৪৯ পৃষ্টে যে চিত্র মুদুত হইয়াছে, তাহা কন্তুরিকাম্গ-বংশ জাত। তাহাদের জন্মস্থান জাবা-দ্বীপ; তথার তাহারা অতি মনোহর বলিয়া প্রনিদ্ধ আছে; কলতঃ অর্জহস্ত পরিমিত কুদু হরিণ লোকের श्रिय हरेत, रेहा चाम्ठर्य नत्हा सावाबीला अहे भर्छ "मिर्वारिन्" नारम विथ्या । क्ल-कालाय हैश कथनर चानील इहेश बाका

व्योश।

各本务务本外 🚆 খপাতার অনুকল্পার পৃথিবীত্ত যে क मूरवात य পतिभारत প্রয়োজন তাছা 🖁 🛠 🛪 🛠 🐺 (यह श्रांत्र यात्वह श्रास्त्र हे स्वा थारक ; कान मुरा अद्यालनीय श्राद्यात्वत अधिक वा অণ্প দেখা যায় না। কি স্থাবর, কি অস্থাবর, मकन-अमार्थ-मञ्चल्हा वह निश्रम मूशदिक चारह,

^{* &#}x27;'कोश्यर्भत दिवाम'' मामक श्रमात्त्व शृद्धते और श्रमाद মুদ্রিত করিবার উচ্ছা ভিল; কিন্ত টনসাম ভাষা না হওয়াতে

कूजाणि हेरात प्रमाथ। मसावनीय नरह। धाराकीव **बरभक्कात्र था**मककोरवद्ग मङ्थत बम्भ, **रेश ब**-নেকেই জ্ঞাত আছেন। প্রয়োজনীয় সো অপে-काम्र ष्रश्रुदशास्त्रमेश वराघू करु षः स्म षरभ ? ट्य श्रिकार वानगामि मन्य करका, जाहात निह्छ স্খাদু অথচ অপৌষ্টিক দাড়িম্বের তুলনা কে-इहे कहिरवन ना। मूच्यं नर्नाटनकां मुग्दत ধাতু বটে, কিন্তু লৌহ-তামুদি-ধাতুতে আ-मामिरशह रंग नकन डेलकात म्हार्न, मूर्या ভাগার কিঞ্জাত সন্তাবনীয় নহে। মনুষ্যের जेहिक-मूथ-मः वस्तार्थ लोह यामृश উপकाती অপর কোন ধাতু তাদ্শ নহে। রজত, কা-क्षन, नीमक, তামুদি ধাতু পৃথিবীতে ना था-কিলে আমাদিগের কোন বিশেষ অনিষ্ট সম্ভবে ना; किन्न व्यक्तान लोहिवहीन हहेल का-माहिनाक পश्चरहेराज्य व्यथम रहेरा रश्च-र्ग्रह. বস্ত্র, অলঙ্কার শস্পাদি কিছুই আমরা বিনা লিছে প্রস্তুত করিতে পারি না। কুধার্ত-কুরুই-পঞ্চে शंतक यामृत्र, । लोरहत ज्ञाद मृदर् आश्रीनिरंगत পক্ষে তাদৃশ হইয়া উঠে। বর্ণ-বলয় অপেকায় मः, कुष्तुन, ছूत्रो, य कि भग्रान्त प्रायाजनीय जा-स्थव वर्गना कहा यहिए शाहिना। अहे अयुक्तहे জগৎপাতা কাঞ্চনাপেকায় লৌহ-তামাদির পরি-মাণ অপরিমেয় অধিক করিয়াছেন।

প্রায়ঃ পৃথিবীর সর্বত্রই লৌহ পাঁওয়া যায়—কি नाहारावृत्र विममसन, कि छेउस भुषिमसन, नर्वे बहे लोह वख्यान चाहि। ভाরতবর্ষের প্রায়ঃ नकन ञ्चात्नरे लोह अनाशात्म आखवा, अहे श्रयुक्त अक জন পঞ্জিত কহিয়াছেন, যে "ভারভবর্ষের কোন্ হানে লৌহ পাওয়া যায়, এতদপেকার কোথার लोइ পाওয়া यात्र मा, देश निम्निष्ठे कहा कठिन "।

ৰাই; মাতৃত্তপেও ইছা থনিকে সুপ্ৰাপ্য নহে। ৰভাবনিদ্ধ ধাতুৰাপ যে লৌহ পাওয়া নিরাছে, তাহাতে নিকেল্ দামক এক বিশেষ থাতু মিশিক আছে; খনিজলোহে ঐ নিকেল্ ধাতুর সম্পর্ক দেখা যায় না; খপর নিকেলের সহিত মিশ্রিত লৌছ-পিণ্ড আকাশহইতে পড়িতে দেখা গিয়াছে; এই প্রযুক্ত পঞ্জিরের স্থির করিয়াছেন, যে নিকেল্-मिण्डि यञ लोह পाउया शियाह, उৎममून-য়ই আকাশহইতে আগত। জিলা বাহুড়ার শালু-का-गुरम है: ३৮०३ षरमत ७०८म नरवयत त्राबि पूरे প্রহর একটার সময়ে কএক ব্যক্তি আকাশ-হইতৈ এই প্রকার লৌহলিও পড়িতে দেখিয়া-किन; ও পরদিন প্রাতে গ্রামত আনেকেই ঐ লোহপিও ভথকরত তাহার এক ২ খণ্ড গৃহে লই-য়া যায়। তাহার এক খণ্ড এইক্সণে কলিকাভার भानियां कि मानाइको नामी नडाइ नहुंशनरह বর্ত্তমান আছে। রাজমহলের নিকটত খড়গণুরের পাহাড়ে এই প্রকার ১॥• মোন পরিমিত একথণ্ড तो र পिष्याहिन। शिक्पराम छन् कविन् छिप्तः निम् नामा ७३ वर्गक वह प्रकार वक लोहथस দেখিয়াছিল, তাহার পরিমাণ. ৪০৫ মোন।

থনিমধ্যে যে সকল লৌছ পাওয়া যায়, ভাছা অক্সিজিন বায়ু, কয়লা,গল্পক,সৃত্তিকা,বা সেঁথুয়ার महिल मिल्रिक थारक; जे मकन शरार्थहरेरक शृबक कदाहे लोह्टनाथन-कार्यात प्रधान कण्या

य बाबूट পृथिबी नमावृत्र चाह्न, जारा पूरे অংশে পৃথক্ হইতে পারে, ভা্হার একের নাম वक्तिकिन, ७ व्यथरत्रद्र माम साईर्ष्ट्राकिन्; उत्पर्धा चक्निकिन् चामापिरगत दिर्णय श्रद्धाक्नीयः তাहाই আমাদিগের জীবনাবলমন; ভক্তির শাস-কর্ম নিষ্ণান্ন হইতে পারে না, ও তদিরহে প্রায়ঃ অভাবনিদ পরিশুদ্ধ লৌহ কুরাপি পাশ্রয়া যায় তিকান পদার্থই অধিসংযোগে ভব্যাভূত হইতে পারে

ना। जोटरद गहिन्छ से वार्द्रद्र चनाशांत्र मिनन हरेशा थारक: वहे श्रयुक्त लोह संভावकः পরি-গুদ্ধ থাকে না, অবিলয়ে তাহার সহিত মিশ্রিত **हहेशा याय: कन डः छाहात मिनार नहें लोटह** मित्रिका भट्छ। आमत्रा य गक्न लोक वाव-हाद्र कति, जाहात अधिकाश्म खे मतिहाह्हेटक প্রস্তুত হয়। ঐ মরিচাপ্রযুক্ত গেরিমাটি রক্ত-वर्ग इहेशा थारक। ले मजिहात महिल कशनात म॰ रघाश इहेरन जाहात वर्ग छक्न, शोज, तक वा शिक्रत हहेशा थारक। करालामाज-मिन्डि लोह भोनरकत नाम्य कामल, এवः "शुरुष्णा" नात्म अनिक। कार्ष्टें अन्तिन् निर्मान कतिए जे পুষেগো পদার্থ ব্যবহাত হয়। গন্ধক-মিশ্রিত লৌহ श्रुक्, शील, क्कामि, नानावर्त्व इरेशा थारक।

बर् मकल नाना प्रकांत्र लो ए- भरार्थ प्राप्तः जुनिशिक्षकरण প्राथ इवशा याश। जाहाहहेरज लोह প্রস্তুত করিতে হইলে আদে। ঐ পিণ্ড বড় খোয়ার ন্যায় চূর্ব করিচে হয়; পরে আহা এক দিন বা ততোধিক কাল অগ্নিতে পোড়াইলে তাহাহইতে বাষ্পা, গন্ধক, সেঁথুয়া প্রভৃতি পদার্থ নিগত হইয়া যায়। অতঃপর কাঁপা-থামের नाम अक व्लीमस्या वे लोक्टक वृत्नत शायत চূর্ ও কয়লার সহিত একত্রে মিশ্রিচ করিয়া দিয়া **ভাদশ ঘণ্টাকাল ক্রমাগত বৃহৎ** জাঁভাছারা বা অন্য কোন যন্ত্রধারা অগিকে অভ্যন্ত প্রথর করিয়া রাখিলে লৌহ গলিয়া চুল্লীর নিমুভাগে 🏻 পড়ে। পরে চুন্নীর নিকটে কতক বালুকা ছড়াইয়া ভাষতে পয়ঃপ্রণালিবৎ ছিদু করত, চুল্লীর নিমৃ-ভাগে এক ছিদু করিলে দুবীভূত লৌহ নির্গত হইয়া वे भग्नः अनामाव ছिप्तु निপতिত হয়। ये पुरी-ভূত লৌহের নাম; "পিগ্লায়ারণ" বা "চা-बाई-त्वाहा "। छानाई-कर्यात्र निभिन्न वह त्वोह शासन; व श्रासनीय त्वोह वन्यस्थीय श्राया

অনেক ব্যব**হাত চ্ইয়া থাকে, প**রস্তু ডিভিডাপ-कबु जास्वय अस्ति लोट्ड अधान अननकन ইহাতে থাকে না; সুতরাং ঐ লৌহে অজ ব। যদ্রাদি নির্মাণ ও ভার বা পাত প্রস্তুত হইতে शाद्र ना। **के मकल पूर्वा**त श्रद्धा**लन इ**हेटन वारि वे छानाइ-लोग्टक मूहेमधीकान व्यञ्ज প্রশ্বর উত্তাপে দুব করিয়া রাথিতে হয়। তাহা रहेरन वे लाइरहेरड कग्नना अक्निजिन-वाश् প্রভৃতি পদার্থ নিগত হুইয়া লৌহ শুল হয়। **এই সোধন-कार्या** अपन जे लोहरक करन मीछन করিতে হয়; ও ভদনন্তর অপর এক চূল্লীতে ঐ লৌহ দুব করিয়া দুবাবস্থায় ক্রমাগত বি-लाएन कतिए इस; उम्रात। लोह इहेए उ অনেক বায়ু নিগত হয়, ও লোহ ক্রমশঃ কঠিন পিও হইয়া যায়। ঐ কঠিন পিও পরিশুদ্ধ तोहः जाहार**७ लो**र्ह्त ममस ७१ वर्जमान पारकः ভाशास्क लिप्तिया চाम्य कवा याहेरङ পারে; গণ্ডিগাছ-বৃৎ লৌহ্যন্ত্রে চাপিয়া গরা-**मिश्रा वानान यात्र; ও ডাই नामक यदञ्ज টাनिश्रा** তার বানান যাইতে পারে; অধিকন্তু কয়লার महिन विद्निष अक्रिशाषाता वे लोहरक भूनः पुक क्रिंदिल हेम्लां अञ्चन हहेश थारक।

लोर-प्रस् ७-कद्रश्व अरे प्रक्रिया विनादस প্রচলিত আছে; এতদেশে ইহার প্রচার নাই। ভারতবর্ধের যে২ স্থানে লৌহ প্রস্তুত হুইয়া থাকে. তথাকার লোকেরা ক্ষুদু চুল্লাতে অস্পপরিমিত লোহ-মৃত্তিকা উতপ্ত করিয়া পুনঃ ২ পিটিয়া লৌহ প্রস্তুত করে; পরস্তু তাহাতে ব্যয়ও পরিশুম অধিক, এবং এককালে অধিক লৌহ প্রস্তুত হইবার সঞ্জা-वना नाइ। अधूना लोइ-११थ लोइ-८०१ छ श्रृ इ-**ए**९२ कार्यात निमिष्ठ প्रापृत-পतिमारि कोरहत श्र-

প্রস্তুত করিলে প্রচুররূপে উৎপদ্ম ইইবার নন্তাবনা করিলাম, তুমি বল আমার পুঞ্জকে কিছুই धनियाक्तिता विलाधात्र-ध्रथानुमाद्ध को इ ध्रख् করিতে প্রবৃত্ত ইয়া ধদেশের ও আপন ২ উন্নতি नाथन कडिए इति कडिएवन ना। विवाकीय प्रथाय २४० वृह्माटक अधिवृद्ध श्रीयः पूरे कावि मन लोह প্রস্তুত হুইয়া খাকে; তাহার মূল্য প্রায়ঃ দশ কোটি होका हहेदवक। अङ्फ्रांस लोह-धनित कान অভাব নাই; উৎসাহান্বিত ব্যক্তি ও অর্থের माहाय। इहेटलई ভाরতবর্ষীয় জনগণ বীরভূম ও পাচেত্রের থনি হইতে অনেক কোটী টাকা উৎপন্ন করিতে পারেন। অধুনা উত্তম পাথু-विया कशनात ও लोट्ड थिन मुवर्न-थनि-इइएड-**ल लाज्जनक ; व्यज्यद धनार्थि धनि व**र्जिमिरणज এবিষয়ে মনোযোগ করা অভ্যন্ত আবশ্যক; ভदुम। कृति चरमभीश्रुभेव अविषयः मानामिर्देभ করিতে জুটি করিবেন না।

(मालाजीत शारंगाना।

क्षेत्रकार के कार्या के कार्या के अक-🕻 🍑 🍪 ভিল বালকদিগকে পাঠ-শিক্ষা 🏂 🗴 🛱 🕉 করাইয়া কালযাপন করিত। এক দিন এক বালকের পিতা আদিয়া মোলাকে ক-হিল " নিঞা সাহেব, আমার পুঞ্জে আপনি কিছ্যাত্র শিক্ষা দেন নাই। সে কেবল দিবা-ব্লাত্তি থেলা করিয়া বেড়ায়, পড়িবার নামও करत ना. कात कामात कथायमुक्-भाउ ७ करत ना"। ি জাজী একথায় অভ্যস্ত **ক্রোধ করিয়া বলিলেন,** " 🖅 मार्ट्स, थाश् (मर्गात काश् विषात উक्षे-का-हे । बाल ; जामि बक-वर्ष-भर्य छ कर भद्रिभुम র্মারত লেখা পড়া শিখাইয়া গাখাহইতে মানুষ স্থাৎ তিনি আপনার পূর্ব বৃত্তান্ত প্রকৃতিত

'नाइ; चारु अव खत्र ना कति अरेकारा अवस्माति मिथा अवहिंग। मोआक्रीत अक्थांत रा वास्क्रि কিঞ্চিৎ অপ্রস্তুত হইয়া আন্তে২ প্রস্থান করিল। পরস্তু খনাষ্ট্য এক জন খোবা ও তাহায় জ্রী बे कर्याशक्यम छनिया माल्लाकोव निकरे पशु-मत्र इहेशा क्लाफ्ह्रत्छ विनश्भृतःमत्र कहिन. "भीवनों को मारहत, यत्र छै। को कान उठहें मित्र, किन्न व्यासात शाक्षांटिक सानूय कतिया फिटक हरें(व"। भाक्षा मत्न २ : त्वित्मन, अ पूरे छात्र शक्षमूर्थ; दुष पीर्घ किछू तरे खान नारे, व्यथठ धरम े পরিপূর্ণ, ভাহাদিগের কাছে কিছ হাতমারাই শেুয়া। এই মনন করিয়া কহি-লেন, "একটা ছাজার টাকা দক্ষিণা দিয়া शाधादक चामात क्थारन साथिया पांच. कक वरमञ्जयद्या ट्यामारमञ्ज व्यक्तीष्ट मिषा इहेरव"। वसक उरक्षार अक हासात्र-टोका-श्रमानपूर्वक আপন গাধাটিকে দেখানে রাখিয়া গেল।

একবৎসর অমন্তর রক্তক রক্তকিনী মোলা-कीत निक्रे चाहेरण, जिनि कहिरलन, "चाहा! তোমরা দুই দিন পূর্বে আসিতে তেঃভোমাদের গাধাটির সহিত সাক্ষাৎ হইতে পায়িত। এখন त्म क्लोनशूत-भूरिम काकीत श्रम आख हहेगाल "। (धावा जिल्लानिन, "मिकाकी गारहर, अथन जा-মরা ভাহাকে কেমন করে পাইব"। তিনি উত্তর फिलन, " ভোমরা ভাছাকে বাঁধিবার क्ড়ी, দানা, আর গামলা সঙ্গে লইয়া সেই গ্রামে কাজীর সন্ধু-थ्य गिहा अगठ सात्म माँ ए। हेटन, य छिनि चा-পদার দড়ী দড়া দেখিয়া ভোষাদিগকে তিনিতে পারেন; পরে যখন ভোষাদিগকে তিনি নিকটে ডাকিবেন, তথন তোমরা ভাঁহার সলে নিরা-नाम विनदा अरे नव व्लाख कामारेखः; वर्गाल-

করাতে তোমাদিগকে ভয় দেখান্. তথাপি তোম-ता **फ**तिल ना, दत्र॰ विलाउं या चार्यान यपि ७ कथा-य विश्वाम ना सान, তবে हंसून, प्याननात निकक মোলাজীর কাছে জিজ্ঞাদা করিবেন: তামরা কি কোন দলীল না পাইয়া এত বড় মান্য-लाक्त निक्टि व्यमनि एकार्राष्ट्र शामनः नहेशा আদিয়াছি "।

মোলাজীর এই কথানুসারে তাহারা জোন-পরে গিয়া উক্ত-নিয়ম-পূর্বক কাজীর সম্বাথে म्खाशमान क्हेल। "हेशांता पृष्टे जारन वमाल-শুদ্ধ লইয়া আমার কাছে অভিযোগ করিতে কালিয়াছে. ইছারা যথার্থ বাদা হইবে", এই ভাবিয়া ভাহাদিগের পুঞ্জ স্থানার করিলেন। वारथ काओ जाशांमिशक निकरणे **आ**कित्वन। তাছারা মনে করিল, যে বুঝি আপনার বাঁধিবার मज़ा ও थाइवात गामना प्रिया जाहामिश्रक **क्रिनिया निकार जाकिए उप्ति, अ वे त्वार्य इर्य-**পূর্বক তাঁহার সমাপে উপস্থিত হইল।

काकी इंहामिशरक किन्द्रांना कतिरतन, " जामहा দড়াদড়া গামলা লইয়াকি করিয়াদ করিতে আ-লে, তাহারা তাঁহাকে আনুপুর্বিক পূর্বোক্ত বৃত্তান্ত ন্থনাইল। ভাহা শুনিবামাত্র কাজীনাহেব অপ্রস্তুত ছইয়া মনে২ ভাবিতে লাগিলেন, ''যে কোন সুচতুর ব্যক্তি ইহাদিগকৈ কাণ্ডজ্ঞান রহিত জানিয়া প্রতা-त्रभा कतिशास्त्र, व्यामि यपि अवियद्य व्यश्चोकात कति, তবে এই মূর্থ বেচারা রাষ্ট্র করিয়া বেড়াইবে, এবং আমাকেও ছাড়িবে না; অপর যদ্যপি ভীকার করি, তথাপি লজ্জার বিষয়; যাহা হউক, অস্বীকার कतिया ताहु कता व्यालका व्यालनावालनि ची-কার করা ভাষা। কাজী এপ্রকার বিবেচনা করিয়া বলিলেন, ''ডোমরা যাহা বলিয়াছ, তাহা

मजा वर्षे, अथन जामहा कि हाइ "? जाए हा কহিল. " আমাদের সস্তানাদি কেছনাই; শতএব কালবশতঃ আমাদের পরলোক হইলে তুমি আ-भारमञ्ज्ञानव शाह मिरव, जाह यक विषशानश আছে তাহা ভোগ করিবে, আমরা এই চাহি"। काकीमारहर ভानित्तन, " এकथा कान ভদুলোক र्श्वनिएक लावेटन जाकाल नाब्जामायक क्वेटन ; बनः এথন যাহার৷ আমাকে কাঞাসাহেব বলিয়া মা-ন্যমান করিতেছে, সে দকলে পাজা বলিয়া আ-खान कतिर्द, कठवर शालान वह लागनिमर्गक শাস্ত করাই শেয়;" অপর এপ্রকার সাত পাচ

কুণান-কুলসরস্-নাটকের সমালোচন।

তাবতঃ মন্ধ্যাত্তেই অনুকরণে রত।
স্থান্তর অবস্থা, অন্থের ভাব, বা 🎚 🗮 🗮 🔆 यत्मात तागरवर्गाप धर्म छेडळ नकार । मान विकासिक इंदेलाई सिहे दा कि व व्यक्त छ। নিয়াছ "? তাহারা কহিল, " সে কথা আমরা নি-্রবের অনুকরণ করিতে প্রায়ঃ নকলেরই প্রবৃত্তি রালায় বলিব"। পরে কাজী একান্তে গিয়া বনি- হয়। কদাপি ইচ্ছা না থাকিলেও ঐ প্রবৃত্তি স্বয়ৎ উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই অনুফরণ-ক্রিয়া মনুষ্য-माख्यारे ज्यानमञ्ज्ञक। वालएकवा देशाटा नर्यमा তৎপর; পিতৃমাতৃ বয়স্য পরিজন প্রভৃতিরা, জী-्दनयाजात्र (य नकन किञ्जाह मण्णापन करत, वास-কেরা তালার অনুকরণ করিতে নিয়ত অনুরত থাকে; তাহাদিগের অত্যন্ত প্রমোদজনক ক্রীড়ার मस्या व व्यन्कतन-कार्याहे नई प्रथान। कृप्-नृत्ह्द ञ्चारान कहा, जाहाटक मृखिकानि श्रमार्थबात। का-পোনিক অম ব্যঞ্জন প্রস্তুত করা, পরিবেশন করা, কাষ্টপুত্তলিকাকে পুত্রকন্যার ন্যায় লালনপালন করা, তাহার বেশভূষা ও কম্পিত বিবাহাদি-সং-

স্কার সমাধা করা, অপেফায় বালিকার পক্ষে প্রিয়-. **छत** क्लोड़ा कि इंडे ८५ थे। याय ना: **ও वाल कित शरक** গুরুমহাশায় ছওয়, রাজা হওয়া, চোর হওয়া, কণ্পিত অন্যান্ত্রাহণ করা প্রভৃতি কার্যাই অত্যন্ত প্রযোগজনক। বাল্যকালাবধি এই ৰূপ অনুকরণ-স্পৃত্য সময়না হইতে২ অধিক বয়ন্দ্ৰকৈ অভি-नक्षत्र नृष्टि कहायः कलकः वैश्वलादक य मकल घटेन। नर्ना घिष्ठा थात्क श्रामान-क्रमार्थं छा- ! হার অনুকরণের নাম "অভিনয়"৷ *

এই প্রকারে অনুকরণকে অভিনয়ের মূল বলিয়া : স্বাকার করিলে স্পাইকাপে প্রকৌত হইতে পারে. ৷ যে, যে ঘটনাদি যে২ ব্যক্তি দ্বারা সম্ভিত ছয়, इत, शठेन, भोर्चका. थर्नका. त्रश्क्रम, सोन्मया । ও অनकात आमामिश्नत উष्प्रभा नरह। कानि-প্রভৃতি যে প্রকার হয় অভিনয়েতে সেই সক- । দাস ও বরকচি যে ছলে কাব্যরচনা করিয়াছেল, ্নধ্য়েভব্য ব্যক্তিদিগের হাব ভাব কটাক এবং হাতে কেহই কালিদাস হইতে পারেন নাই। বাক্ফের্তির ও অনুকরণ করা আবেশ্যক। তদ্ব্য- । মেঘদ্তের ছন্দঃ প্রবেজাদি সকল লক্ষণের অনুকরণে ভীত ভাহ্যদিগের পরিজ্ল, পদচিজ্ল, বয়ংক্রম | কোন নব্য কবি "পদাঙ্কদুত" রচিত করিয়া-এবং দেশাচারও অবিকল অনুকরণীয়; তাহা নহিলে কে রাজা, কে মন্ত্রী, কে সভা, কে প্র-ভাহারী, ভাষার নির্থাস হওয়া কঠিন হয়; সুত-রাং ক্তিনয়েরও বৈফল্য। এবশ্পুকারে অভি-मः निष्णापनार्थं बारभंत चारताभ कतिरु इश् रनिष्य नाष्ट्रिक जुद्ध साप्रेक रक "बावक " + मारक दिशान करता

অনেক কবিতা খাছে, যাহাতে ভাব ও ছন্দো-

লকারের কিছুমাত্র জুটি নাই, অথচ তাহা রক্ত-ভূমিতে পাঠ করিলে কাছার মনোরঞ্জন হয় না; অপর কতগ্ণুলি কবিতায় ছন্দোলস্কারের অনেক ব্যত্যর আছে, তথাপি রম্ভূমিতে মনোরঞ্জন কারিতা গুণ অতি স্পষ্ট দেখা যায়। এই প্রযক্ত माहिका-कारतता कावारक "मृमाण । "मृवाण * এই দুই অংশে বিভাগ করিয়াছেন; তন্মধ্যে मृना कावा "काशक" वा "काजिनश्" मारम বিখ্যাত। ঐ অভিনয়ৰূপ-কবিতার দেশ্যগুণ বিচার করিতে হইলে ভাহার কবিত্ব ও অভি-নয়ত্ব উভয়গুণের আলোচনা করিতে হয়।

व्यत्मक यस्न कहिएल शास्त्रम, य नाष्ट्रिक्ट्र অভিনয়েও তত্তাবং ব্যক্তির উপস্থিতি থাক: অধিকাংশ গদ্যে রচিত, তাহাতে কি কবিত্ব থা-ঐ সকল ব্যক্তির প্রকৃতি অব- । কিতে পারে? অতএব বক্তব। যে ক্বির শদে ছন্দ লের অবিকল অনুকরণ না হইলে সাতিশয় ও যে অলঙ্কার ব্যবহারের করিতেন, এই ক্লণকার রদের হানি হয়। অপর প্রকরণবশতঃ অভি- অনেক কবি তজ্ঞপ করিয়া থাকেন, ভাগচ তা-ছেন, তথাপি উভয়ে ৰগ-মন্ত)বৎ ভেদ রহিয়াছে; মেঘদতের রমণীয় সুন্দর রস পদাক্ষদুতের কুতাপি প্রাপ্তব্য নছে; অভএব কহিছে হহবে রবই | কবিতার প্রাণ; ভড়িন্ন কদাপি উত্তম কবিত। इरेट भारत ना। क्वन इस्मानकाद कविन्र ও মৃত্তিকা-নির্মিত মনুষ্যমুর্ত্তি, উভয়ই সমান, প্রকৃতির অনুৰূপ বটে, কিন্তু প্রকৃতপদার্থ নছে। ৰূপকে এই ভাব রক্ষার নিমিত্ত আদে৷ যে

^{*} कटनम्(छन्दर्गाचनकोनुदन्दरः। ध्यथादः **अवसातः ध्यनुकृत्वहः** क्षाक्रियाः मार्किश्वमभेद्ध अर्थाद्वरण्डम २५८ काहिका।

र् क्षणाद्वालाकु क्षणकः। साधिका**मभंग वर्षभ**क्रिष्क्र**म २००** 4. Tr. c.

^{*} मृगाञ्चराञ्चरकारम् **न्यः कारा**९ विधायक्रशः मारिकामशल वर्षः भदिष्कतम २१२ कार्विका।

ले ठाका १ वमाञ्चल **कावा १। माहि** जान भरि क कातिका।

আথ্যায়িকা-ঘটিত নাটক রচনা করিতে মানস হয়, তাহাতে কেবল ঐ সকল প্রসন্ধ একত্রিত করা व्यादमारक, याहारखं हाना, कंकना, बीत, होमू, **ভয়ানকাদি রদের উদ্বাপন হইতে পারে—সা**-মান্য-কথায় মুখ্যকণ্পের ব্যাঘাত না হয়; कन कः कविमित्रात अथान চाजूर्य। এই य गा-মান্য কথার পরিছার-পূর্বক কেবল মুখ্য কথা-नकन बशुकादा बक्ज करहम, भागारक चार्यासि-কার কোন অংশ অসমত ও অসম্ভব বোধ না হয়৷ আখ্যায়িকা মিখ্যা হউক, বা সত্য হউক, তাহাতে কোন হানি হয় না; কিন্তু মনুষ্যের যে স্মরস্তায় যে ভার উলয় হল, লাক্যদারা তাহার আবিদার ও অবিজলক্ষে তত্তদাকারের উৎপা-দন করাই ক্রিদিগের মুখ্য কংপা: তাহার কিঞ্চি-त्राज राजाय वर्षात्र इत्मत शांग हय।

রক্ষা করিয়া নাটক রচিত হইতে পারে না;় সুতরাং গুদ্ধভাবাধিত বালক অভ্যন্ত দুষ্পাপ্য অনেক কবি অপ্রিমেয় পরিশ্ব করিয়াও नाहै। स्थान्तराम जाश् फि त्यं भागा अकः জন কবি ১২৭০ খানি নাটক লিখিয়াছিলেন. কিন্তু তাহার একথানিও সহাদয় মহাশয়েরা পাঠ क्रिटि উৎमूक नर्द्रन।

नमछ-वारमामक्रमक शमार्थकार्ष्ठ महथा अवन्त्र-কার ৰূপকের দশন সর্বতোভাবে উৎকৃষ্ট: ইহা-তে মন ও বুদ্ধির সহিত সমস্ত ইন্দ্রির সন্তুপ্ত হইয়া থাকে; গাঁতনৃত্যদি অন্য কোন আ-स्मारिक जानून मूर्थंद्र मञ्जावना नाहै। अहे अयुक्क हैं। প্রাচীন সভ্যকাতির মধ্যে গ্রীকজাতি, রোমীয়

নমৃৎস্ক ছিলেন, এবং সং मभारम खाउ।स দেশে যে কোন উৎসব হইলেই ঐ ক্প**ে**চৰ প্র-চার করিতেন। প্রাচীন হিন্দুদিশের ও এবিযায়ে শত্যে অন্রাগ ছিল। তাঁছার। ইহাতে যথ-शासास्त्रि मगाम्ब कित्रिटन, ७वः क्रांलिमाम ভবভূতি প্রভৃতি অগুগণ্য মহাক্রিরা উৎকৃষ্ট क्षणक बहुनाय यनुकाल हिल्लन। जाहारक वे **महानु** ভाবদিগের যাতুহ ব্যর্থ হয় **নাই ; ভত্তৎক-**ভূক শকুন্তল৷ বীরচরিতাদি নাটক ৰূপকরচনার चामर्भ सक्तल इहेद: १ हिश्र (हा। के गकन चाम्धर्य)। রচনায় কবিদিগের অন্তক্তেশিলে বাক্যদারা लोकिक घটेगानकन अयसि याविष्ठ इहेशाएड. যে তৎসারণে বুজির ব্যক্তি হটয়া ভাচাতে সভের ভাণ হইয়া থাকে; ভূতকালের ব্যাপার বর্ত্তমান হুইয়া উঠে. মিখ্যা সভা হয়, এবং চিত্রিত পদা-व्यमाधादव क्रम छ। छित्र नरेख अरे नक्क निष्ठम । व्यंत व्यमुक्त मन कामरकावानि तरम व्यामु इश्व। কবিদিগের কি আশ্চর্য্য ঐন্দুজালিক ক্ষমতা! তদ্যার: তাঁহারা প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান অলীক ক-হই খ্লাছে। প্রায়ঃ দুট গ্রুপু বংশরাবাধি এতদেশে। শিগত গণগদ্ধার। দশক্ষাত্তের বৃদ্ধিকে জড়ীভূত করিয়া আপন ইচ্ছানুসারে অনায়ানে তাহাদিনের শকুন্তলার সদৃশ জাণাক উৎপাদন করিতে পারেন মনকে কথন হাস্ত, কখন মধুর, কখন বা কঞ্গা इत्न मूजा कतिएक्टिन, ও धानकरक क्रमान कता-रेश व्यानम श्रमान कहिराग्रहन!

এই মনোহর বিনোদ দুদ্দান্ত ঘবনদিলের রাজ্যকালে এতদেশে একেবারে বিলুপ্ত হয়। কবি ও পণ্ডিভেরা দুই এক থানি উৎকৃষ্ট ৰূপক রক্ষা করিয়াছিলেন; কিন্তু সাধারণ জনগণের মনে তাহার নাম পর্যান্ত বিশ্বত হইয়াছিল। ইश অত্যন্ত আहु। दिवस य बहेका (१ छ দ্রবস্থার লোপ হইতেছে; এবং সহাদয় ব্যক্তি-গ্ন রমভূমিতে কবিতাসুধাকরের উদয় কর-बार्जि, চीन-बार्जि अवः हिन्दुकाजीयाता कानक-। नार्थि यजुनान् इहेग्नाह्न। य भूरस्त प्रमास এই প্রস্তাব আরক্ষ চইয়াছে তাহা এই নির্মাল চন্দ্রোদয়ের আদিকিরণ বলিলে বলাযায়।

পূর্বে বন্ধভাষায় কয়েক খানি নাটক প্রকটিত ছট্য়াছে, কিন্তু ডাহা যথার্থ নাটক নহে।
তাহাতে অনেক পদ্যাদি আছে, এবং তাহার নর্বাক্ত দ্যাহিচান ও সুসম্পন্ন এবং সুপাঠ্য
বটে: কিন্তু লাহিচাকারেরা যাদৃশ গুণগ্রযুক্ত নাটককে "দুশা কাব্য" বলিয়া বণন বরেন, তাহার অভাশ্যমাত্র ভাহাতে বর্তুমান দেখা যায়।

প্রস্তাবিত নাটক খানিতে রূপকের অনেক ধর্ম রক্ষিত হইয়াছে; ভাহার আখ্যায়িকা একানুগা-भिन्ने रहि. हेरात अध्यात छेत्रम, ও ভাব। পরিশুদ্ধ। গুন্থকার এযুক্ত রামনারায়ণ তর্কদিদান্ত সাহিত্যালস্কার-শাক্তে সুপণ্ডিত, এবং কাব্য-রচনায় তৎপর। তিনি সমিচান-যতে এই নাট-कथानि तहना कतिशास्त्रः अवः नक्षय পा-ঠকগণ যে কেছ ইছা পাঠ করিয়াছেন, তিনি करमाहै चीकांत्र कतिरवन, या जाहात श्रयकु वार्थ इय नाहै। जानता अयः উপঢৌকনম্বৰণে ঐ গুত্ত প্রাপ্ত হইয়াছি, এবং ডৎপাঠে অত্যন্ত পরিত্ত ছইয়া পণ্ডিতবর গুস্তুকারের নিকটে প্র-বাশ্যক্রপে কৃতভ্রত। স্বীকার করিতেছি। উক্ত গুল্পের পাঠাব্যি ভাহার গুণ-বর্ণেও আমা-দিগের বিশেষ আকাত্ত্বা হইয়াছিল; কিন্তু মঢ়োদ্য ব্যক্তিরা, উপকৃত ব।ক্তিকৃত উপকারের প্রতি প্রশংস্বাদ অপেকায়, পক্ষপাত্রিহীন ব্যক্তির মনোগত অভিপ্রায় শুলণে অধিক পরি-कृष इन, এই কারণ এবং नक्षम আত্রীয়গণের বিলেয় অনুরোধবশতঃ, কেবল স্বাভিমত তদ্পুণ वर्गन का कविशा "कुलीन कुलनर्वच" शाठिमगरश ভদ্ওণ বিষয়ে আমাদিণের মনে যে২ হানে যে২ भार केषिक क्हेब्रा**हिल, जाकांद्रहें यद्यांकिक्षद नि**-े

পিবন্ধ করিভেছি। ইহাতে আমাদিগের অভীষ্ট निक रहेवांद्र जामा नाहे वर्षे, शब्द ताथ कवि, আত্মীয়বর্গ, গৃস্কুকার ও পাঠকবর্গ সুভৃপ্ত ছইবেন। "वद्यानरमनीय कोनीमा अषा अठनिक धाकाय कूलीन-कामिनीशरवत अक्रर्ण य जान मूर्फणा যটিতেছে?' অভিনয়দারা বাদেশীয় মহোদয়গণের মনে তাহা সমুদিত করিয়া দেওয়াই প্রস্তাহিত নাটকের মুখ্যকত্প। দেশীয় কোন নিদিত প্র-থার উৎসেদের নিমিত্ত প্রাচীন পণ্ডিতেরা এই প্রকারে জপক-রচনা সর্বদাই করিতেন। "धূর্ত্ত-নৰ্ত্তক" "কোতুকগৰ্বৰ" প্ৰান্তি ৰূপক নকল **बरे ब**िश्राराहे श्रस्त हरेशा ह्वा। सगिना नामा এक जन कवि, ताजा, वाजान, टेरमा अ टेम्बर्क्डिम्टिशंत व्यथ्यसांब्ट्समार्थ । भ्रान्तान्य । নামে একটি ৰূপক প্রস্তুত করেন। যদিচ তাহা-তে অনেক অশ্লাল কথা আছে; তথাপি ভাহা क्लीन-क्लमईरबंद चारमं बंबल विल्ल वना যায়। তাহাতে অন্যায়নিকু-রাজা আপন নগর ভুষণ করিতে ২ স্বাধী জ্ঞী, গেহিন্যনুরক্তমামি, ধর্মের সমাদর, অধর্মের অবছেলা দেখিয়া অভ্যন্ত ক্রমনে যাহাতে বাুক্সণে পাদুকা প্রস্তুত করে, ও অন্যান্য সৎপ্রথা স্থাপিত হয়, তদর্থে এক বারাঙ্কনার গৃহে উপস্থিত হন। পরে তথায় বিশ্বভাপ্ত নামা এক শৈব যোগী ও ভাহার শিষ্য কল্ছাঙ্কুর আসিয়া এক বেশ্যার নিমিত্ত কলহ উত্থাপন করে। অপর রাজার প্রিয় চি-কিৎসক ব্যাধিনিজ্ব, ক্লিনি জিন্তায় তপ্তশলাকা বিন্ধ করিয়া শূলরোগের প্রতিকার করেন, ও তাঁ-হার সাধৃহিংসক কোডোয়াল, যিনি সমস্ত নগর চোরদিগকে সমর্পিত করিয়া পরম হর্যাছত হন, ও তাহার রণজমূক সেনাপতি প্রভৃতি পারিবদ্গণ উপস্থিত इहेश मार्छ। इ कार्य। नमाथा करता।

নাহিত্যকারদিপের মতান্নারে এবল্পুকার রচ-নার নাম " প্রহসন"; এবং তাহাতে দুই অঙ্কনাত্র থাকা উপযুক্ত *। বিজ্ঞবর তর্কসিদ্ধান্ত মহাশয় তদন/থায় প্রহ্মনকে কি কারণে যড়ক্ক-সম্পন্ন नावेक्करण প्रচातिङ कतिरानन, जाहात जार्भर्य অনুভূত হইতেছে না; বোধ হয়, বঞ্জাবায় ৰূপ-কের প্রভেদ রক্ষা করা অনাবশ্যক বিবেচনায় ত-क्रण कतिश्च पाकिरवन ; शतस्त्र (न नरमह शाठेक-দিগের মনে বহুকাল স্থান পাইবার নছে: নটীর সুললিত গানে মোহিত হইয়া অবিলম্বেই তাহা বিফাৰ হইতে হয়। এতদেশীয় কবিরা প্রায়ঃ বৃত্ত-क्राम हे कित्र:-त्राम कितिया थार्कन, अव मर्था २ नागरिकाम, वन्भकका अञ्चि सहस्म विविध ছন্দের সৃষ্টিও করিয়া থাকেন; কিন্তু অভ্যাপ লোকে পূর্ব-প্রনিদা মাত্রাছন্দে কবিতা রচনা করি-या क्ञकार्या इरेग्नाइन। उक्नमान अवियस मन्जून बर्ज निष्क्रकाम इहेशाएन। डीहात "मू-কণ্ঠ-নির্গলিত সুসন্ধীতটি" পাতমাত্রই জয়দেবের ভূবনবিখ্যাত গাতিগোবিনের অরণ হয়। আমা-দিগের এ অভিপ্রায়ের নাক্ষিম্বরূপে উক্ত গীতটি এখনে উদ্ধৃত করা গেল।

"চ্তমুকুলকুল, সঞ্লদলিকুল,
গুণ হ রঞ্জন গানে।
মদকল কোকিল, কলরব সঙ্কুল,
রঞ্জিত বাদন তানে।
রতিপতিনর্ত্তন, বিরুদ্ধিকর্ত্তন,
গুড-ঋত্রাজ-সমাজে।
নবং কুদ্দিত, বিশিন সুবাদিত,
গার্দমীর বিরাজে"।

প্রস্তাবিত নাটকের আখ্যাত্মিকার কোন বি-শেষ সৌন্দর্য্য নাই; কৌলীন্য-মর্য্যাদাভিমানী

कान वाञ्चनकर्ज्क शूर्व रिन निवाद्यः नथक ভির করিয়া পর দিন এক অতি বৃদ্ধ কুলান-পাত্তে আপন কন্যাচতুষ্ট<mark>য়কে সম্পু</mark>দান করা^ই ইহার ভূল তাৎপর্য**় পরম্ভ সুকবি** তর্কনি-দান্ত মহাশয় প্রমচাত্র্যের সহিত সামান্য विवारक्त উদেশারে অদেকগুলি প্রসঞ্জ ত্রিত করিয়া অনেক ব্যক্তির চরিত অতি পরি-পাটিকপে বিনাস্ত করিয়াছেন। তম্বধ্যে কন্যা-করা কুলপালকই প্রদক্ষবিধায়ে সর্বপ্রধান; তাঁ-হার বর্ণনা-পাঠে কন্যাদিগের দুংথে দৃঃথিত অথচ ভলাভিমান রক্ষার্থে দৃদ্প্রতিক্ত কন্যাভারগুম্ভ ক্-লানের মূর্ত্তি মনোমধ্যে অবিকল উদিত হয়; কোন অংশে কিছুমাত্র তুটি বোধ হয় না। পরস্ত নাটকের ক্রিয়াকলাপ-সম্বন্ধে প্রধান নায়ক তিনি नर्हन, তिविष्य अन्जाहार्य हुड़ामनिहे नदीशुन्तर वितर्क इरेरव। यहेरकत सार्शीय धर्म-त्रकारथं जिनि সকল ঘটেই বৰ্তমান; বোধ হয়, তৰ্তমিদান্ত মহাশার অনেক প্রীয়তে উহার চরিত্রের বিদ্যাস করিয়া থাকিবেন; পরস্ত তৎপাঠানন্তর আমা-দিগের অপ্পবৃদ্ধিতে স্বভাবতঃ ধূর্ত্ত ঘটকের অবি-কল প্রতিমূর্ত্তি অনুভূত হুইল না; কোনে পরিচিত পদার্থের চিত্রপটের স্থানে ২ অসংলগ্ন বর্ণ বিন্যস্ত থাকিলে যজপ নয়নের অত্থি জল্মে, ঘটক-রাজের চরিত্রে ভজ্রপ বর্গাঘাত ঘটিয়াছে। নাটক-কার তর্কসিন্ধান্ত মহাশয় ঘটকচুড়ামণির চরিত্র কি প্রকারে বর্ণিবেন, তাহার সঙ্কপে এই বাক্যে করিয়াছেন;

তদ্যথা,

"আর্দিল পরের জাতি কুল নাশ ছেতু। বিবাহ নির্বাহ বিধি জলধির দেতু॥ অনর্থ অর্থের লাগি ত্যক্তধর্মকর্মা। চূড়ামণি মিধ্যাবাদী অনৃতাগ্য শর্মা"॥

^{*} ভাগবৎ সন্ধিসন্ধ্যক্ষাস্যাসাক্ষেতিনিমিতি তত্তবং প্রহসনৎ বৃত্তং নিন্দ্যানাৎ কবিকম্পিতং ॥ সাহিত্যদুর্গণে যভাতে ৫০০ কারিকা।

সভাচালা। আপনকার পিতৃ চাকুরের নাম স্থনিতে ইক্ষ্যাকরি।

অনৃতাচাধা (অ) কি বল্যেছে? কালি রাত্রে নিদ্রু হয় নাই, বড় গ্রীয়া !

প্তত। মহাশ্রের পিতার নাম কি?

অন্। বড় মশা।

মভা (উচ্চৈঃদরে) বলি আপনি করে পুত্র:

অন্। অধিক দিন হউল আমার পিতৃ চাকুরের পর-লোক হউয়াছে:

শুন। (সহাস্থা মুখে) আমি প্রলোক ও ইফলোকের কথা জিঞাণা করি নাই, পিতার নাম জিজাসা করিয়াছি, ইফাতে প্রলোক ইফলোকের কথা কেন।

অন্। বিশহ কর, অধিক দিন তাঁচার কাল হই-লাছে, নাম প্রায় এক প্রকার বিশ্বত হওয়া গিলছে, নারণ করি তবেতো বলিব, তাড়াতাড়ি করিলে কি হইবে?

গুড। কে ছাজ হে—গুনিলে? ইনি এমনি ঘটক নিজ পিতৃ নামও লেক্ড হন। কিন্তু আনেটে পিতৃপিতামহের নান ইছার মৃধ্যাপ্রতিত্ব সে সময়ে একটাও চেকেনা।

অনু। পরের পিড়ার নাম কহিছে বিবেচনা কি ? যাহা আইকে একটা বলিলেই হয়। ভাল দে কথা থা-কুক--ভুম কোন্ব্যবসায়ী ?

बहें कर्षाशकश्रामत किश्वि श्राम श्रामार्ग्य प्रदेश कर्मा सिक्षामित व्यम् जार्गि कर्म।

অনু। খাঁ, বাপু হে পথে আইন, আমার নিকটে খনিতে খন।

প্রবঞ্জন পরায়ণ, মুথে প্রিয় আলাপন.
ধর্মাধর্মে নাই বিচারণ।
না পাইলে বলে কটু, বোদর পূরণে পটু,
দৃষ্টিমাত্র করে সম্লাষণ॥
বাচাল আচার ভুক্ট, জাতি কুল করে নফী,
দৃষ্টমতি মূর্থের প্রবর।
বিবাদে নারদসম, মুদ্জিমান্ ফেন ভ্যা,
হয় নয় বল সুধীবর॥

বেল্লিক পুরাণে মাতলামি থণ্ডে ঘটকের এই লক্ষণ লিখিত আছে, তা বাপুহে, এসকল জান্তে হয়, এসকল শিক্তে হয়, পেটে থেকে পড়িয়াট ঘটক হইলে হয় বা। আমি এ সকল শিথিয়া ও এ সকল প্রনে ভূষিত হই-হাট "ঘটক চ্ছামণি" নামে আতি আছি। আমার গণের কথা কতো কহিব—আমি সাবৰ-গৃহে কত শত কৈবৰ্ত্তক্যা চালাএছি ; স্তন্ধ শ্ৰোতিয় ববে ক্ষতিত্ত কন্যা, বিষ্ণু চাকুরের বংশে বৈষ্ণব কন্যা, শিবচ্জবন্তির সন্তা-নে পশ্মরাজ দুহিতঃ ঘটাএছি; আর কানা, গোড়া, অস্থ-মাহুর, এসমস্ত তে। আমার শরীরের আভরণ। এই ১৪ ই মাঘে থাড়ীবাটীর কচিরাম চক্রবর্ত্তির কন্যাকে এক উचाम मिशश्रुत नद अमान कविया मिलिन शरसूत किश्चिम-কিণা পাইয়া মাদাবধি শ্যাগত ছিলাম, কিন্তু আগার এরণ অপরপ চাতুয়া দে এতাদৃশ বাবহারেও আগম কথ্য কোথায় অপমানিত হটু নাট, তুমি আমাকে দি ঘটকালি দেখাও। ভাল তারে একটা কথা জিজ্ঞান। করি, ভূমিও মন্দ নও, বল দেখি কুলান কাছাকে বলে?

এ উক্তির প্রথম ভাগ অন্তের মুখে মভাব-নিক বোধ হয় না, সুধীরের মুখে অতি পরি-পাটী হইত। কেহ ২ মনে করেন, লেয় ভাগও অন্য কোন নটের মুখে থাকিলে ভাল হইত; কিন্তু, আমাদের বোধে, সাক্ষাৎ দন্তাবভার ঘট-কের পক্ষে একথা নিভান্ত অনুপযুক্ত জান হয় না।

७७। हार्ये अन्ट अ शरहाटक करहन ।

তত। (জনাত্তিকে) ওছে তাই সুধীর, একি উঃ, বেটা কি দান্তিক! বোধ হয় দন্তই শরীরী হটুয়া উপস্থিত হর্মাছে, কিন্তু ইহার উদরে ক অক্ষর গ্রামাণ্স, তজ অভন্ত কথাই অনুগ্ল কহিতেছে! • • •

কিন্ত একথা-রক্ষার নিমিত্ত গুস্থকার চূড়া- "বাদা দিছিদ্ কোথায় মা? চুলি ২ দেকতে किह जोहा अदनमन किंद्रिक शाद ना।

क्छ कथा आदन " छाड़ा छनिटड, "हिट्डे क्कांडे। ভন্ন মত্রেশ ভাষাকে ভেড়া করিয়া রাখিতে, ও गरुग्छ - १८% कामाई" ग. इत्र, हेळामि नाना-ভিলাপে বিলম্প অনুরক্তা, কোন মতে আতুরা বৃদ্ধরি কামে নহেন; পরস্তু কুলপালকের বাক্যা-मुनारत. जीकात छात्रि कन्ता, उत्पर्द्य " वक् कन्त्रात प भाषाग्रहित नकत पछ शांक्ष इस नाहै; सक्षाम- | किटनाही। (कारमुका) "টার সকল কেশও পকু হয় নাই; তৃতীয় কন্যাৎ " প্রায় মধ্যেটার মত; আর আনার যে কনিষ্ঠা "কন্য সে অতি শিশু, বেগে হর গারে সৃতিকা - शक्त थाकित्व थाकित्व शांत्र, वाष्ट्रा अहे भव "পৌষ মাসে দবে পঁচিশ বৎদরে পড়িয়াছে"। এই কন্যা চতুষ্টয়ের মধ্যে জ্যেষ্ঠা ও দ্বিভায়া ब्हारूनी । भास्त्री भाशन २ तक्कामानूनात् সম্রেষে মাতৃদহিত বিবাহের মালাপ করে; কিন্তু কামিনাটী ভাদৃশ শান্ত নছে। ভাছার বয়স প্রায়ঃ মধ্যমটার মতন, "সকল চুল পাকে নাই" व्यथा व्यावनादा পतिशृतः अहे नारमन कथाम বিশাস হয় না, আবার বরের বয়েস শুব্রে:চায়, অথচ "যা হোক বিবাহ হইলেই হয়" (৩২ পৃঞ্চে) चारात्र वरण, "अमा, मुख्यि वत्र कि अरमरङ्

মৰির মুখে কিঞ্ছিৎ অন্তন্ধ কথা দিতে বিস্মৃত "গেলে হয় না, ক্ষেতি কি মাণ্য এদিগে গে.প-হইয়াছেন, তাহা থাকিলে উত্তম হইত। অন্তা- । নে গিয়া বর দেখিয়া (১০৮ পৃষ্ঠে) "বড় দিদির চার্য্য সভ্যের বিপর্যায়ে তৎপর বটেন, কিন্তু কপাল ভাল, যেমন দেব। তেমনি দেবী" দেখে। ব্যাকরণেয় সহিত তাঁহায় বিশেষ বিবাদ বোধ তথাপি যে বরং পদে আছে, তাহার কনি ছা ছয় না। অপর কুলপালকের সম্মুথে তিনি যে। কিশোরী ডাই। হইতেও এক কাঠি অধিক। শবাছ। কৌশলে গৃহাচার্য্যকে দুরাকৃত করেন, প্রকৃত- পৌষ মানে পঁচিশ বংগরে পড়িয়াছে", এবং লোক্যাত্রায় কোন বিজ্ঞ কন্যাকর্ত্তার প্রত্যক্ষে কবিতায় বলস্ত ও বিরহ কর্নেও স্থানটু নছে: ज्याभि माद विनास स्नोभट होए छ। डाइाइ डाटव कूलशांतरकद (श्रेट्नी " गुक्कभीद्र" तांक्रातारश | বোৰ হয়, कुलशांतक आशन एविटानिस्थित वयः- त्वां व इ.इ. जिनि शूर्ववयया (शुोहा; "काभाहेरविते। किम निर्वित जूनियाहिन; अथना , ०० दर्गह, ष्टिठीश २ ६, वृञीश >5 अव- काभिनो ৮ वयनत रहेल भकरनत कया मन्नय रहेड। अवियस था-ঠকদিগের সন্দেহ ভঞ্জনাথে তায়ার মাজ্-সহিত क्रियाशकथन अञ्चल উषाउ क्रिवाम । जारात्रा विद्वहमा कहिया (पश्चित्न, न्यूरवांकि विवया हेकात अञ्चाठा कांग्रेस भाइतक नाइद कि ना।

> প্রসূত্র রকুল কূল, রক্ষে অন্ধ অলিকুল, वासुकृत् श्रास्य अतः । প্রবাদ না মানে মন, যদ। করে আংকিঞ্ন, বল্লালির নিকে বিষয়ক। कुरम बर्शन मिर्थ जानो यस अन वात का हिन् शहिकाली कि कतिराव कार्य । ভৌতৰ আমূলা পৰ, কারত গো বিক্তৰ, नारि छ। थाकित काहात।

(क (ह यामात्र अक्टिं।)

কামিন। মা ডাভ্চে।

কিশোরী। কেন মা আমায় ভাক্লি >

बाधनी। जूरे कालि अविधि क्लाबार हो। . मक्रड शाहित (कन?

কিশোরী। ও মা, ও মা, আমি ও পাড়াতে স্বোষে দের বাড়া লুকোচুরি থেল্ভে নিছিলাম।

द्राक्रगी। ना बाहा, चात अमन् (बात्रामा, जारतात ला-शांत्र (मरम, रबरंड ब्यास्ट? लाटक रच नित्य कर्दा हि!

किर्माही। अ मा तकम मिल्म करवें मार करवेंना, रह मा, बांगड आमि याँगे।

ব্রাক্সণী। মা কাজা, আরু বেনোণা, আজি এক কর্মআচে। কিশোরী। কি কমা মাণ

ব্ৰাজন বেছিন আৰ্থিক আমাৰের সাড়িতে এক উতকর্ম হবে। কিলেনি ও মা কি উত ক্ষা বল্না মান হে মা কল, কি উত্তৰ্মান বল্ননে ১০

্ৰুংক্ষণী; কেন গো, বল্ৰেং **না কেন** ? **আজি ভোদের** ৰে বিচৰ

কিশোষী। (স্বিদ্যান) ও মা, 'ধে' কাকে বলে মা। বালনী। 'বে' আবে বলে তাও জানিস নে বাছা। 'প্রসান শাক্ষার'।

किटन हो। श्रम, जाकि जानि भारत

বাঞ্জন বাছা 'বে' কি থেতে হয় ? রাভাবর আস্-ে, ডেলস্ড 'বে' করে, কতো ঘটাঘাট হবে, সেকি বাছে বিজুই জানিস্নে।

িলেল্ডা ই ৬, সেই 'বে' ; তা আমি জানি, ত: কার হলে লাভ

লুকেণী। তোমার হবে, তোমার আর তিন বেফনর হবে। কিশোরী। ও মা, তবে তোর হবে না ?

্রুফোটা (হানচকরিকা) বাছা ভুই অবোগ, তোর এনে ২৪ নেই, ভাকি সলতে আছে আমি মা হই।

কিশোরী। জীজী, ছু, বুলিচি ভোর ক্ষে গেছে, ও মানিত কলে ক্ষেত্ৰছে, বল্ম জা

বুল্জনী। (কভেন্তি) দূর ক্ জ্যামার ব্যস্ত করিকনে, একিচি নানান জালা, জোনা সকলে এখন বাড়িতে যা।

তৃতীয়াকের প্রথান প্রক্রিয়া কামিনাগণের জলনত্ত্যা; ভাষার কোন অংশে কিছুমাত্র জুটি হয়
নাট : মোহিনার প্রবেশ অবধি নকল কর্ম সুপরিপাটারাপে নির্সাহ ঘটয়াছে। মহিলাগণের আন
পান মামি-সম্বন্ধে বিলাপ-পাঠে অনেকের মনে
নার্ডচলু-কৃত বিদ্যাসুন্দর-গুদ্ধ সুন্দর-দর্শনে
কামিনাগণের উক্তি মনে পড়িতে পারে, কেহ বা
এই অকের কবিভার বাছল্য-বিষয়ে সাহিত্যকারিদিগের নিষেধ স্বর্গন করিতে পারেন, পরস্ত
নিম্মেদ্ত গভাকের পরমসৌন্দর্য্যের ও অবিকল

च्छार नामृत्मात श्रमःना व्यवमाहे कतित्वन, देशाष्ट्र काम नत्मह माहे।

মোহিনী। এই তো বে বাড়ি, কৈ কে কোখা গো? কা-কেও যে দেক্তে পাইনে। ও মা দে এ কি গো? ঐ যে কথায় বলে "যার বে তার মনে নাই, কাটনা কামাই পাড়া পড়নীর"।

ভামিনী। মরণ, ও কি হলো । মিলো কৈ লো । মোহিনী। আর ভাই, মেলে কৈ?

ভামিনী। গুণ থাগ্লেই মেলে, "মার বে তার মনে নাই, পাড়াপড়্মীর হুম নাই"। দেকদেকি মিছো কি না?

মোহিনী। ভাল ভাই, তাই যেন মিল্লো, এখন বে বং ড়ির কাকেও যে মেলে না, তার কি বলনা;

যমুনা। বলে মন্দ নহ, বে বাজি, অচ্চ কিছুই দেক্টে পাইনে। বান্দি নেই, বান্ধনা নেই, কিছুই নেই; দে কি,আঁ,ওমা আমি কোথা যাব, ওমা আমি কোপায় নাৰ!

(इम्रम्का। अहे स्य छाडे अक्षे कनाताह तस्तरः।

যমুনা। অমন কত গাচ কত দিকে আচে, আসল কৈ লো? বাড়িয়োক কৈ ?

ব্রাহ্মণী। (প্রকুল মুখে) এই যে মা সকল, দিদি সকল, নছে। নকল, এনেচো এস ২, আস্বে বৈ কি; তোমাদের কমা, করে। কমাগেন, গাবে পারুমাবে, নেনে পোরে, তোমানা না কলো কে করোঁ। জ্ঞাতি বলা, গোল নল, সকলি আমার তোমরা।

হেমলতা। ওলো চান্দিদি বলি একি লো। করেছের বে দিতে বদেছিল, ভা সব ফাকিজুকি, ঘটাঘাটি কৈ, । ত-ছুই যে দেখিনে?

বুক্লিণী। আর ভাই 'ষটা,' কুলীনের মেয়ের 'রে, ঘটাই ভার, আবার 'ঘটা' পাবো কোথা বোন ভবে তোরা এনেছিদ্ এই ঘটাই 'ঘটা'।

কামিনী। এলো হেমলতা, জানিস্নে বড় গিন্নির সহ ফাকি, নিথরচায় জামাই পাবে, ছাড়বে কেন?

ব্রাহ্মণী। দূর ছুঁড়ি, ওকথা কি বলতে আছে? জা-মাই আর ছেলে ভিন্ন কি: যা, ভোরা সকলে মিলে-ছুলে জলসৈতে যা দেখি?

চপলা। যে তোর মেক্লেদের বর এলেচে, ... (বাটামধ্যে ব্যক্তার প্রক্ষান।)

তার জনো জললৈতে হবে না, তাকে 'জল লৈ'
কলিই ভাল হয়——তানে গোলিনে মাণি?

बहे का जिनस्य कि शिष्ट श्राह (१२ श्रिष्ठ) यर नामा ७ कृ कर्मादी करणा श्राह स्व विमा विभिन्न हरें -ग्राह, जाहा शार्ठ कि तिल बम्ज शार्यान-समग्र कि-हरें ना है, या बर्क वाद महाशाशीयमी को लिम्-ध्राथा के रममार्थ बका गृहिन्त ना ह्य; जम् का-माजा तमाय नदा थम कि जूम श्राह जा जा कारह है

পাঠকবৃদ্ধ অনায়াদেই মনে করিতে পারেন, যে
স্কবি তর্কসিদ্ধান্ত-কর্তৃক অধ্যাপক-ভটাচার্য্যের
বর্ণন অবশ্যই উত্তম হইবে, কিন্তু যদবধি তাঁহারা
প্রভাবিত গুত্তুত্ব ধর্মশাল ও তর্কবাগীশের বর্ণনা না
পড়েন, তদব্যি বর্ণনালারা কি পর্যান্ত প্রকৃতের
প্রতিমা মনে উদিত হয়, তাহার অনুভব করিতে
পারিবেন না। ধর্মশালকে লৌকিক-ব্যাপারে
অনভিজ্ঞ, শাস্তে একাণুচিত, অথচ অধাভিলাষা
অধ্যাপকবর্গের আদর্শন্তরূপ বলিলে বলা যায়।

কুলীন-কামিনীদিগের দুংখবর্ণন-করণানন্তর তাহাদের দুঃখদাতা কুলান-কলিপুঞ্চিগের মূর্ত্তি চিক্রিতে অনায়াসেই স্পাহা হইতে পারে; তর্কশিক্ষান্ত বিবাহবণিক, অধর্মকাচ, ও উত্তমমুখোপাখ্যায়ের চরিত্রেই অভিপরিপাটারূপে সে স্পৃহা
নিবৃত্ত করিয়াছেন! কুলান-কুল সর্ব্য-দেষী কুলান
কলির চেলা" এমত কেহই নাই, যে সে চরিত্রের
কোন কংশে তিলার্দ্ধ দোষারোপ করিতে পারে।
বিবাহবণিক্ (৭২ পৃষ্টে) "১২৫২ শালের তরা মাঘ
বিমলাপুরের কমল ন্যায়ালক্ষারের কন্যাকে" বিবাহ করিয়া কি প্রকারে ১২৩১ শালে " এক কালে
কুড়ি বৎসরের ছেলে" প্রাপ্ত হইলেন, তাহা সন্দেহজনক মনে হইতে পারে; পরস্ক বনিক্জার "কদেশি বিশ্বাস কি? তাহার "লেখাপড়া" কুলখনের
কন্যার ঠিকুজির * ন্যায় অস্পাই হইয়া থাকিবে,বা

বৃণিগ্বর ১২৪২ কে ১২৫২ পড়িয়া থাকিবেন। অতঃপর কন্যাপ্রসূ গর্ভবতীর দুংখ, কন্য-বিক্ত-स्त्रत (कारवाक्रायन, कनारतत नक्न, वित्रि शक्त-ননের যাতনা, ও অভব/চন্দের পরিচয় প্রভৃতি নানা প্রদক্ষে তর্কনিদ্ধান্ত এতদেশীয় অনেক ব্যা-পারের সুবর্ণ করিয়াছেন, কিন্তু এ অপ্পায়তন পত্রে তাহার আলোচনা করায় নিরস্ত হইতে হইল: পরস্তু এই প্রস্তাবের উপসংহার করিবার পূর্বে ইহা व्यवना बीकर्जवा एवं वज्र जायाय य जनन क्या প্রকটিত হইয়াছে, তথ্যধে কুলান-কুলনর্থই রহ-ভূ**মিতে অ**ভিনীত **হওয়া**র উপযুক্ত; তাহার অভি-নয় যাদৃশ মনোহ্র-বিনোদের মঞ্চে পরিগণিত हहेरव, जामून नम्दिरनाम अधुना वक अत्याय चारह. এমত কিছুই আমাদিগের মনে উদিত হইকেছে না। প্রস্তাবিত নাটক-পাঠেও প্রায়ঃ সকলেই গরি-তুষ্ট হটবেন; অভএব আমরা মুক্তকটে সনুরোধ कतिराज्ञ । य भाष्ठेकशव मकरन । कुर्नान कुन **সর্বর " আলোচনা**য় সানন্দ লাভ কর্ন ৷

রাজশ্বগায়,শায়নের ফ্রা।

শ্রু শুরু শত শ্রুত আছে, যে ইবরাহীম্ অদ্শ্রু হ্ম পাদশাহের শ্যাতে প্রতি দিন
শ্রু এক মোন পুলা বিছাইয়া দিতে
শ্রু ইউ হইত। এক দিবস দাসী এ কাপে
শ্রুণ প্রত্ত করিয়া মনে ২ ভাবিল যে ইহাতে
শারন করিলে কেমন আনন্দ হইতে পারে। ইহা
ভাবিয়া দে ইতন্ততঃ অবলোকন করত যেমন
এ শ্যায় শ্রুন করিল, অমনি নিদার বশীভূত
হইয়া অফোরকাপে ঘুম্নইতে লাগিল, এবং শরীরের
ভারে ক্রমশঃ পুলামধ্যে নিম্মা-হইয়া আদৃশ্য

^{* &}quot;বয়েস বড় অধিক নয়, সে দিন ঠিকুলি খুলিয়া দেখিলায়, ব**লি দেখি দেখি মেটেটার ব**য়েস্কত, ভা ভাই বুকিতে পারিল_{য়ে}

না, ঠিকুঁজি খান জীব হওছে, আঁকর বোঝা যায় নাই পেলো, নে এই বড় পিসীর বইদী কুলীনকুলসর্ক্তমে ৯ পৃষ্টে।



हेत्रहीर जन्दम् भाषणाद्वतं ककोती जावसा

চইল। এই ঘটনার কিয়ৎকাল পর পাদ্শাহ যথানিয়দে দেই শ্যাতে শয়ন করিলেন। ইহার প্রায়ঃ
দ্রু দণ্ডের পর ঐ দাসী পার্মা পরিবর্জন করিলে পাদশাহ ভয়তুর হইয়া নসবাস্তে গাজোখান করত
বলিলেন, "দেখ, আমার শ্যাতে নাপই হউক,
কি বেজই হউক, একটা কি আছে।" পাদ্শাহের
আজ্ঞায় ভ্রেতারা বাস্ত সমস্ত হওক তরিকটে
আমিয়া সেই শ্যায় অস্বেষণ করিয়া দেখে, যে তথায় পাদ্শাহের কর্মকারিনী দাসী রহিয়াছে। পাদশাহ ভাহাকে দেখিয়া জোধপূর্বস্থ আজ্ঞা করিলোন, "উহাকে শামার সমক্ষেত্ৰ মাত বেজাঘাতে
ভাত্ন কর্ম "। ভূত্যেরা গুডেমনি দুর্দান্ত, ব্লিবামাজই বেজাঘাত করিতে লাগিল। ভাহাতে ঐ
দানা প্রথম ৫° যা বেত থাইবার সময়ে হাঁসিল,
আর শোব ৫০ ঘার সময়ে কাঁদিল। এই এক আ-

দেশভিতিষি মহাশায়ের। আনেকেই থেদ করিয়া পাচকন, যে অধুনা উপজীবিকাথে ধন্দীন ভদ্রস্কানের।
কালত অধিক ক্লেশ পাইতেছেন। পূর্বে মাঁছারা প্রতি মানে অনায়াসে শত্র টাকা উপার্জন করিতেন, ইদানীং
কালদের তাহার অস্পাংশও অর্জন করা অতান্ত দুদ্ধর চইলাছে: কলতঃ তাঁহাদের প্রকে কেরানীগিরী ভিন্ন অন্য
োন উপায় না থাকাপ্রযুক্ত এ আপ্রদেব জন্মাঃ বৃদ্ধি হইবারই সন্থাবনা। এক নগরের সকল ভত্র নান ব্যক্তি
কেরানী চইলে কদাপি তাহাদের সমুন্নতি হয় না, বিবিধ বাবসায় থাকিকেই নগরেও সকলের উগতি হইতে
পারে; এতদর্থে কএক বিশিষ্ট ব্যক্তি শিশপবিদ্যোৎসাহিনী নামী এক সভা সংস্থাপনপ্রকাক গত বংসর প্রাক্ নামে শিশপবিদ্যা-শিকারে নিমিল্ল একটি বিদ্যালয় সংস্থাপিত করিয়াছেন; তাহাতে চিজবিদ্যা, তঞ্চন-বিদ্যা ও মহপাত-পুত্লিকানির গঠনোপ্রে গি বিনারে উপন্তেশ প্রদৃত্ত হাইতেছে।

্র বিদ্যালয়-স্থাপনের প্রধান অভিপ্রায় এই যে শিশ্প-সাধ্য-ব্যবসান্ত্রের উৎসংছ ও টলতি হয়, এতদেশে ক্ষিত্র ও তক্ষতের আতার নিশারিত হয়, এবং হিন্দু, নোসল্মান ও ইংরাজ-সন্তান, যাহার। কিংশিং বিদ্যা-ভামে ক্ষিয়া পরে উপর্জাবিকা-প্রাপ্তার্থে ক্লেশ পাইতেছে, তাহাদিধের নিমিত্ত ব্যবসায় প্রস্তুত হয়।

 ७३ डिम फिल्माई स्य उलक्ति हाश दक्ष्ण अयोकात कतित्वम मा। ठिज्ञाया, उक्षणकाया, ७। अवकाया, স্থাকিকা আছতি স্কা শিপ্পাৰ্গ। এদেশে একেবারে লুপ্ত হইয়াছে বলিলে বলা যায়। হিন্দ্রধাে এমত চিত্রকর কেওই নাই, যে বিলাতের বংসাধানা চিত্তকরেরও ভুলা ছইতে পারে, অবচ ঐ চিতাবিদা। যে বিংখন অর্থকরী ইচাতে কোন সন্দেশ ন।ই। উত্তন চিত্রকরেরা অপ্যাপ্তি ধন উপার্জন করিয়া থাকেন। হটি নংসর হাইল, নিলাতে রেলেশ্র্নামা এক জন আস্থল চিত্রকর ছিলেন, তিনি শেষ।বস্তায় এক ২ থানি প্রতিমূর্তি চিস করিছে ৫০,০০০ টাক। কাব্যা মূলা লইতেন, ভগাপি ভাঁছার এভ কল্ম উপস্থিত ছইত, যে কণকালের নিমিত্তেও ভাঁছার অবকশে থাকিত রেনল্ডসেব ভুল্য চিত্রকর শান্ত হইবার নছে; পারস্ক ছলিকাভায় সামনে। ভূত্রিকরের বেতন কেরানীর বেতনহইতে ৯/১৯ অধিক। ৬।৭ দিনে সাধ্য একত্ থানি চিত্র কলিক্তায় ২।৩,শত ট্।কার কমে এপ্রত ইয় না। অপর ধাতু ক 🔩 । ভক্ষণ করিয়া চিত্র প্রস্তুত করা ও প্রস্তুরের মূর্ত্তি নিক্ষাণ করাও নির্থ কর্মা নতে ; তি, সাতে শতি ২ ব্যক্তি বিভাবেত প্রচুর অর্থ উপার্জন করিতেছে। এত**ন্দেশে ঐ সকল কা্**যোর প্রাচার **হউলে অবশা অনেকে উভ্**ম উপ-র্জ"কো প্রাপ্ত ছইবেক। কলতঃ প্রস্তাবিত বিদ্যালয় কিছুকাল উত্তমক্সপে নির্বাচিত ছটালে, ধনিগণ চিত্রাদি উত্তম ্চসক্ষা অপেমুলো প্রাপ্ত চইবেন, ব্যবসায়ি লোক শিপির অভাবে বিবৃত হইবেন না, ও ভদ্রসন্তানকে ৮।১০ টাকরে কেরানীগিরির নিমিত্ত লালটেত হুইতে হুইবে না! এই স্কাটনা অতি অপ্পরায়ে স্সম্পন্ন চুইতে পারে; মাসিক সাও টাকা বায় করিয়া ২।১ বংসর প্রস্থাহিত বিদ্যালয়ে শিকা করিলে, অনায়াদে ই লকেরা সং উপ-कीरिक। উপজেনে সমর্থ ছইবে। অধিকন্ত এই বিদ্যালয়ে এমত নিয়ম নির্দ্ধারিত ছটয়াছে, যাগতে যে সকল বিলেক ১বৎসর কলি শিম্পবিদ্যা শিক্ষা করিতে অঞ্চীকার করিয়া প্রতাহ ৬ ঘনী কাল শিক্ষা করিবে, ভাহার ছাত্রীয় অবস্থায় প্রস্তুতীকৃত চিত্রাদি বিক্তি ছইয়া যে লভা ছইবে, ভাছার কিয়দংশ বিদ্যালয় পরিত্যাগ-করণ সময়ে তাহাকে দেওয়া বাইবেক: তাহাতে ছাত্রীয় ব্ভিতে তাহারা বে বায় করিবে, তাহা প্রতি প্রাপ্ত হাইবেক, অধিকল্প স্বয়ং বাবস।য় আরম্ভ কালে ঐঅর্থে যন্ত্রাদি ক্রয়ের উপায় হইবেক।

প্রস্তাবিত বিদ্যাশিক্ষায় দেশীয় বালকাদ্গের সম্পূর্ণ উৎসাই আছে; শত ২ বালক ইয়ার উপার্জনার্থে ছাত্রত্ব দীকার করিতে উদাত ছইয়াছে: কিন্তু অর্থাভাবপ্রযুক্ত শিপাবিদ্যোৎসাহিনী সভা সকলকে শিক্ষাদান করি-তে অশক্ত হইয়াছেন। এইক্ষণে যে প্রকারে বিদ্যালয় চলিতৈছে, তাহাতে মাসিক ৭২০ টাকাঁ বায় হইয়া পাকে। তন্মধ্যে মাসিক দাতব্যে ২৫০ টাকা, এবং ছাত্রীয়বৃত্তিতে ১২০ টাকা, সকলে ৩২০ টাকার সম্বতি আছে; আৰ্দিন্ট টাকা সভার মূলধনছইতে দিতে ছইতেছে। এই অনুপপত্তির প্রভাপকারার্থে সভা গব মেন্টের সাছাবা প্রার্থনা করিয়ালের; কিন্তু এন্তন্দেশীয় বিদ্যালয়ের সাছাবাশর্থে গ্রন্থনিট যে নিয়ম সংস্থ পিত করিয়াছেন, তদনুসারে কোন বিদ্যালয়ে সাধারণকর্তৃক যে অর্থ প্রদন্ত হয়, গ্রহ্মেট ভাছাহুইতে অদি টাকা বৃত্তি দিবেন না, সূত্রাং এ নিয়মবশতঃ শিপেবিদ্যোৎসাহিনী সভা ২৫০ টাকা মাজ পাইতে প্রারেটিন্ট তালার সমস্ত অনাটন পূর্ণ হইতে পারে না। অভএব উক্ত সভা বিনয়পুরঃসর সাধারণ-জ্ব গণের সালানালার্থনা করিতেছেন, এবং ভরসা করেন, যে সহ্লায় মহাশয়দিগের নিকট তালাদের যাজা বিদ্যালার করিছে বৃত্তি বৃত্তি পাইবার পূর্বে প্রস্তাবিত সভা সাধারণস্থাপে যত অদিক টাকা প্রাপ্ত হই বেন, গালানিক ইতি তাল অধিক টাকা পাইবার সন্তাবনা; অভএব এক্ষণে যে কেছ অনুগ্রহ করিয়া কিছিলা মাদিক স্থান করিবেন তালা সভার পক্ষে দ্বিগুণ হইবেক। যে কেছ সভায় মাদিক ও টাকা অধ্বা এককাল বন টাকা বান করিবেন, তিনি সভার সভায়ধা গণ্য হইবেন।

সভাকত্তক সংস্থাপিত বিদ্যালয়ে এতদেশের সমাক্ উপকার সন্তাবনা, ইছাতে কোন সন্দেহ নাই। মান্তাপ্ত নগরে তাজুর হাটির সাহেব এই প্রকার কএকটি বিদ্যালয় সংস্থাপিত করিয়াছেন, তাছাতে যে যে দ্রবা প্রস্তুত্ব হাটির সাহেব এই প্রকার কএকটি বিদ্যালয় সংস্থাপিত করিয়াছেন, তাছাতে যে যে দ্রবা প্রস্তুত্ব হালে এতাদ্ব বাহা করিতে ও যে সকল ছাতে সুশিক্ষিত হয় তাছাদিগকৈ কর্মে নিযুক্ত করিতে, লোকে এতাদ্ব বাগ্র ছইয়াছে যে ডাভুরে সাহেব সকল প্রাথিদিগের মানস সকল করিতে পারেন নাই। এতদেশীয়ে ব্যক্তির শিক্ষেবিদ্যানস্থানিক মনুষ্যাহাইতে কোনমতে অক্ষম নহে। অতথব এখানকার মনুষ্যারাও যথেপ্রিত ক্ষ প্রাপ্ত ছইবেন, ইছাত্বেকাই স্থীকার করিতে ছইবে। প্রথমতঃ কিয়ংকাল বিদ্যালয় রক্ষা করাই প্রধান কম্প দেশাহতিবী ধনিদিগের সাহায়ে তাছা নিল্পন্ন ইইলে, অত্যিত সিদ্ধা হইবার অন্য কোন বাধা নাই।

বিজ্ঞাপন।

প্রাকৃত-ভূগোল

खर्थाद

ভূমগুলের নৈদর্গিকাবস্থা-বর্ণন-বিষয়ক গ্রন্থ।

ইতিপূর্বে এতৎপত্তে-প্রাকৃত-ভূগোল বিষয়ে যে সকল প্রস্তাব প্রকটিত হইয়াছিল, অধুনা তাহা পরিশোধিত হইয়া ক্লুদু পুস্তকাকারে মুদুত হইয়াছে। তাহাতে জল, হল, পর্বত, ভূমিকম্প, আথেয়গিরি, সমুদুদ্যোতঃ, উৎন, নদী, বায়ু, বৃষ্টি, হিম, উদ্ভিজ্ঞ, পশ্বাদি পৃথিবীয় বিবিধ পদার্থের প্রকৃত অবস্থার বিবরণ বিন্যস্ত আছে; তৎপাঠে কি বিষয়ি লোক কি ছাত্র, সকলেই উপকৃত হইবেন। উক্ত গুল্পে যাহাদিগের প্রয়োজন হয়, এই পত্তের সম্পাদকের নিকট অথবা লালবাজারত্ব রোজাক কোম্পানির নিকট তত্ত্ব করিলে প্রাপ্ত হইবেন। মূল্য ৮০ আনা।

বিবিধার্থ-সঞ্জুহ,

স্থা

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব]

भकाक ১११७, कान्छन।

् ७५ थडा



मळ् कनिया-मलजुक स्वयंभिः दश्त विधवा श्र्ववध्त सलकार रहेट प्रतिक् रूप्यन। कम/ात महिত त्रवक्षीणिमः एवत विवाद एय।

वात लारहात चाक्रमन करतन, जनविष्ट तनजीज-थमण्ड जिन वीर्याहीम "ज्ह्री" म्ल প्रजिम्दिशंत

্তথায় তাঁহার প্রধান রাজধানী স্থাপন করেন। মহারাজা রণজীতসিংহের জীবন-বৃত্তান্ত। কিঞ্ছিৎকাল পরে ১৮৫২ সংবৎসার তিনি কনিয়। प्रत्वत्र गाहारमः नगरः ''ङक्षो' नम्भूमाञ्चरक ১০৭ সংবৎসরে মহারাজারণ- আপন বশে আনয়ন করেন। উক্ত সম্পূদায়ের জাতসিংহ ভূমিষ্ঠ হয়েন। তৎ- সহকারী কন্সুর-প্রদেশ-নিবাসী নিজাম্দ্রীন থাঁ কালে তাহার পিতা মহা- দেখিলেন, যে তৎকালে রনজীতের নিপক্ষতা সিংক্ত পঞ্জাবত শিথদিগের করা তাঁহার পক্ষে কোন সংশেই শুেয় নহে. দাদশ-দলের মধ্যে এক দলের অধিপতি সুভরাং তিনি রণজীতের জায়গারদার হইয়া ছিলেন। বাল্যাবস্থায় রণজীচসিংহ কি প্রকারে রহিলেন। এই জয়-লাভের পর রণজীত ভারণ-কাল্যাপন করিতেন, এবং তৎকালে তাঁছার নামক পবিত্র সরোবরে তার্থ-সান করিতে গমন পিতা তাঁহাকে কি প্রকার জ্ঞান ও বিদ্যার করেন, এবং তথায় তাঁহার নহিত কতেসিং-শিকা প্রদান করিয়াছিলেন, আমরা তাহার হের সাকাৎ হওয়ায় তিনি তাহার সহিত উ-সবিশেষ কিছুই বলিতে পারি না। কথিত আছে, 'ফীষ বিনিময় করিয়া স্থ্যতা করেন। ১৮৬০ যে মহাসিংহের সম্পদের সময়ে তাঁহার পূর্- সালে এ। নগরের অধিপতি সংবারচন্দু তাঁহাদার।

এই ঘটনার কিয়ৎকাল পরে রাজ্যলোভে মু**থা** যৎকালে আফ্গান রাজ্যাধিপতি শাহ জমান্ হইয়া আফ্গান্-সানের অধিপতি শাহজমানকে পঞ্জাবরাজ্য অধিকৃত-করণে ইচ্ছুক হইয়া দিঠায় তাহার ভাতা মহমুদ অধা করে, এবং পরে ধরং তাহার ভৃতীয় সহোদর শাহসুজা কর্ক রাজ্ঞ হইতে সিং**ছের প্রভাবের বৃদ্ধি হই**তে আরম্ভ হয়। প্র- দূর্রাকৃত হয়। ঐ অবকাশে রণজীত তাহাদিগের অধিকারের উপর আক্রমণ করিতে আরম্ভ করি_ন **হত্তহট্তে লাছোরের** অধিকার গুছুৰ করিয়া লেন,এবং ১৮৩১—১৬২ সালে ক্রমাগত স**ন্তাম ক**রত

मृट्डि छक्न अवः माहि काल प्राप्तमान यवत्नता ताला त्राका त्राका व्यक्ति व्यक्ति । अहे उपलब्क ठाँहारक यरथङ उपछोकन श्रमान कतिन, बरः মুলতান নিবাসী মুজক্কর খা প্রচুর ধন প্রদান এবং শতক্ত-নদীর পূর্বপারস্থ সমস্ত প্রধান শি-कहिंदा जिल्हा काशानकहरेट निकृषि शाहे- थिता है बासिपिशित विशेष हैन। है बारकता লা রাজা রণজাত সিংহ এই প্রকারে সিন্ধু नहरूत পূর্বপারস্থ সমস্ত যবন রাজ্য জয় করিয়া। নিকটে এই কথার যোষণা করিয়া দিলেন, যে ম্হ্রেড লাহোরে প্রত্যাগমন করত, আড়মর রাজা রণজীতকে আর কেহ কর দিবেক না; পূর্বক আপন রাজ্যে হোলীপর্বে মহোৎসব এবং কেছ তাহার অধীন থাকিবে না, বুটিশ-ারয়াছিলেন।

১৮৬২ जनवर्गात यरमामा अन्त्रां क सम्बद्ध हेर- े जाकामिरगंत मकनरक व महाग्र हहेर व हहेरव। রিভে গমন করিয়াছিলেন। প্রথমতঃ সন্ধির সুযোগ। সরহিন্দবাসী শিখদিগের সহিত ঐক। হুইতেছেন। গিলেন। ইংরাজদিগের কর্মকর্ত্তা লার্ড কর্ণভয়া-। লিন্ সাহেব এই ব্যাপার অবগত হইয়া মেট্-কাক্ সাহেবের সহায়তা-করণার্থে এবং রাজা রণ-को उटक भुष्ठ कर्नार्थ वृह्द क्र एन र्या को ८% तन করেন, এখং তাহাতেই রাজা রণজীতের সহিত ইংরাজদিগের বিপক্ষতার সূত্র হয়। ইংরাজ-যো-षात्र। त्रविष्ठा निक्षेविष्ठं इरेटन जिनि जाहारज বিশেষ কোন উগুভাব প্রকাশ না করিয়া কৌ-मनकरमरे चालनात कार्या छेकात करमन, बदः एक्विच लावन्यात मध्य मिक इंग्लिक इस। खे निकार नियमानुनारत भाजक नगात प्रकार भागा ह शुंष्टिमव्यधिकारदेव जीया निर्फिष्टे इय, अवः खाहात्र

পশ্চিমাভিমুখে অগুসর হইতে লাগিলেন। এত- উত্তর-তীরহইতে সমুদায় পঞ্জাবরাজ্য পূর্ববং लूचियानाटक वीष्टिम-टेनन। पिरंगत शास्ति इहेन; व्यालनामिरणत व्यक्षीन मकन প्रधान निथमिरणत ेरान्। जकलरक ब्रक्षा कविरव, किन्नु कार्याकाल

রাজদিণের নিকট পরাস্ত হইয়া রণজাতের আশুয় এই শব্বিতে শিখ ও ইংরাজ উভয়ের কা-যাচ্ঞা করেন, কিন্তু দুরদর্শী রণজীত দেখি- হারো প্রতি কাহারো সম্পূর্ণরূপে বিশ্বাস জন্মে लिम, या इंश्ताक्षपिरंगत महिक विवाप कतिता नारे। इंश्तारकता विरंविष्मा कतिरक नागिलिम, তাঁহার মন্ত্রন হইবেনা; অতএব ইংরাজদিগের যে যদিও রাজা মৌথিক বিলক্ষ্ণ সভাব দেখা-সহিত সন্ধির কম্পেনা করেন। ইংরাজদিগের পকে ইতেছেন; কিন্তু অন্তরে ২ তিনি অবশাই শত্রুত। মেট্কাফ্ লাহেব রণজীতসিংহের সহিত সন্ধিক- বাধনের চেষ্টা পাইতেছেন, এবং জ্ল্কর ও হ্য নাই, এ প্রযুক্ত রাজা তাহাতে নিভঁর না করিয়া। রাজা রণজীতনিংহও ইংরাজদিগের প্রতি ঐ রূপ অধালা-প্রভৃতি নানা-দেশ আক্রমণ করিতে লা- নানা সন্দেহ উত্থাপন করিতে লাগিলেন, কিন্তু কালেতে তাহাদিগের উভয়পক্ষেরই আশঙ্কা मृत इहेए नागिन।

> ১৮৬৮ मःवर्गदा द्राकाद महिक हेन्द्राक्षिर्शद গবর্ণরের পরস্পার উপঢৌকন আদান প্রদান করা হয়, এবং তাহার পরবৎশর ইংরাজদিগের **मिनाशिक व्यक्षेत्रलामी नार्ह्य बद्द् ताक्ष**र्थ. থড়গদিণহের বিবাহের নিমন্ত্রণে গমন করেন। करविध द्रवकीरंकत मृजू कान-शर्या उ उ उत्रा क्कित्र मध्या चात्र काम विवासित्र चामका छेश-श्चि इम्र नारे।

काङ्ग्र-भर्वरञ्ज अधिकांत्र भारेवात निमिख त्रकीर्जान्य मन्त्राहरुकुत्र व्यक्ति वक्ता

গোর্থাজাতির নহিত সন্থাম করিয়াছিলেন। এ ই উপলক্ষে তাঁহার সহিত নেপালরাজ্যের সেনা-পতির সহিতও বিবাদ উপস্থিত হয়।

১৮৬৭ সংবৎসরে রণজীতসিংহ মহাআড়ম্বর-পূর্বক মুল্ভান্-রাজ্যের উপর আক্রমণ করেন; কিন্তু তাহাতে কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই। এই ব্যাপারে কেবল তাঁহার ১,৮০,০০০ টাকা মাত্র নষ্ট হয়। তিনি মুল্ভান্-অধিকার-করণার্থে ইংরাজ্যদি-গের সহিত যোগ করিতে প্রার্থনা করিয়াছিলেন; কিন্তু তাঁহার সে প্রার্থনাও পূর্ণ হয় নাই।

১৮৬৮ সংবৎসরে আফ্নান্স্নের অল রাজা শাহজমান্ সিল্পুনদ পার হইয়া পঞ্জাব-দেশে আগমন করত রাজা রণজীতসিংহের সহিত সা-কাৎ করেন। তাহার পরবৎসর শাহজমানের ও তাহার ভুলো শাহসুজার পরিবারের। আ-দিয়া লাহোরে বাস করে।

১৮১৯ নালে রাজা রণজাত আফ্গান্রাজ্যের পাদশাহ শাহ মহমদের উজীর ফতেথার বহিত একত্র হইয়া কাশ্মীরাবিপতির সভ্তুত সঙ্গুমে नड्डी ভূত হয়েন, এবং ১৮१० नालের মাঘ মাদে উক্ত ব্লাজ্য জয় করেন। কিন্তু কতেখা ছন করিয়া রাজাকে ভাহার অংশ দিতে স্বীকার করিল না। রাজা আর কোন উপায় না পাইয়া শাহসুজাকে লাছোরে লইয়া গিয়া আপনার व्यथोत्न द्राथित्नन । পূर्वकात्न हिन्नीयद्रितिश्र রাজভাণ্ডারে "কোহেনুর" নামক এক প্রসিদ্ধ হীরক ছিল, ভাগ্যক্রমে তাহা কাব্লাধিপতি-**पिरात रुखगळ रुग्र।** कातूनरुरेट शनायन-मगर्य শাহসূজা তাহ। আপন সঙ্গে আনিয়াছিলেন। त्राका त्रवकीष वे त्रज्ञ-प्राधार्य मारुम्कात निक्रे के ब्रज् প्रार्थना कतित्व मार जारा मिर्ज चबीकांत्र करतमः; शरत त्रांका जाहात शनवक्श

প্রচুর অর্থ দিতে চাছিলেও শাহসুজা সমত হয়ে।
নাই। অবশেষে রাজা ময়ং সাক্ষাৎ করত তাহার
সহিত স্থাভাব সম্পাদনার্থ উষ্ণীয় বদল করিয়া
দেশ-বিখ্যাত কোহেনুর রত্ন হস্তপ্তত করেন। এই
রত্নের পরিবর্ত্তে তিনি শাহসুজাকে তাহার দারণপোষণের নিমিত্ত লাহোরের মধ্যে কিঞ্চিৎ ভূমি
বৃত্তি প্রদান করেন, এবং শুত্রহুইতে কাবুল উদ্ধার
করিয়া তাঁহাকে দিবার অঞ্জীকার করিয়াছিলেন।
পরস্ত শাহসুজা কাল ক্রমে রাজার হস্তহুতে
মুক্তি পাইয়া স্থানান্তর শমন করেন, সুতরাং সে
অঞ্জীকার বর্থে হয়।

১৮১৪ नालं वर्षाकाल काणीत-एएम युक्त व्यावस्थ रहा वाला वन्धाविम्हर्द्व केलयुक मन्त्री साक्य रहा वाला वन्धाविम्हर्द्व केलयुक मन्त्री साक्य रुक्त युक्त वाला लोक्डि हिल्लन, এই প্রযুক্ত বিশেষকালে युक्तव केएमान कविष्ठ भारतन नाहे। व्यावक, कालं भहमन व्याकोमधा वालांव प्रधान समान केलव कियमहरूम कय श्राप्त हम, उ वर्षाव श्राप्त वालांव अक हम श्राप्त हमाना वालांव रुक्त व्यावक वालांव अक हम श्राप्त समानि हक हम, এই श्राप्त क्रिक्ट कालांव अक हम श्राप्त समानि हक हम, এই श्राप्त क्रिक्ट कालांव अक हम श्राप्त समानिक हक वालांव अक हम श्राप्त समानिक हक हम श्राप्त समानिक हक वालांव अक हम श्राप्त समानिक हक हम श्राप्त समानिक हम समानिक हम

১৮৭৫ সালে মহারাজা রণজীত স্বীয় পূপ্র থড়গসিংহকে মুল্তান্ জয় করিতে প্রেরণ করেন। ঐ
রাজকুমার অনেক সন্থামকরণানস্তর তদেশে জয়ী
হয়েন। ঐ সালে উজার কতেখার মৃত্যুঘটনায়
আক্ণান্রাজ্যে গোলযোগ উপস্থিত হওয়াতে,
রাজা রণজীত বিলক্ষণ অবসর পাইয়া পোলাওর
প্রদেশ অধিকার করিতে সিন্ধু পার হইয়া তথায়
উপস্থিত হইলেন; কিন্তু কিঞ্জিৎকাল বিলম্বে সেথানে আপনার বিশ্বস্ত দাদখাকে রাথিয়া আপান কাখার জয় করণার্থে যাত্রা করেন, ও তুমুল্ব
সন্থানানস্তর উভয় স্থানই অধিকৃত করেন।

১৮৮০ সালে রণজাতিসিংহ দক্ষিণাতিমুথে গমন
করিয়া সিদিয়া-প্রভৃতি স্থানের সমস্ত যবন-বৃত্তিভোগা ক্ষরিরাদিগতে আপনার অধান করেন;
এই প্রকারে পঞাবরাক্ষ্যে আর তাঁহার প্রতিহাদী কেহই রহিল না। লাহোর, কাশ্মীর, পেশান্তর প্রভৃতি সমস্ত দেশ তাঁহার অধান হইল, ও মীয় অসামান্য বাহুবল ও অসাধারণ
যুক্তি মত্রণাঘারা ক্রমে পঞ্জাবের একাধীশর
হুইয়া ভাইলেন। কেবল কোটকান্ধড়া-রাক্ষ্যের
অধিকার্য় সংলারচন্দ্রের পুত্রের প্রতি দয়া করিহা ভাহার পিত্রিয়োগের পর তাহাকে ভাহার
পিতার সিংহাবনে সমারাচ্ করান, এবং স্বায়
পুত্র প্রভৃত্বিয়াগের সিক্তিন, এবং স্বায়

রাজা রণজাত যাদৃশ বিত্তীর্ণ **রাজ্যের রাজা** क्रेश्राक्रिस्त, वालाकात्व जाहात नियम-मः जानन ख मान्यवारक कहरनाभरदांनी जानूम किछ् छेभ-দেশ প্রাপ্ত হন নাই; পরস্তু তাঁহার স্বাভাবিক বুজির এতাদৃশ লক্তি ছিল, যে তিনি অনায়ানে 🖯 দেশের ভার ও আপন অধীনত লোকদিগের অবস্থা 🕒 বিবেচনা করিয়া, ভদনুসারে রাজকার্য সমাধা করিতেন। তিনি প্রজাদিগের উ**থায়ত অনুসারে** তाशामित्यत्र निक्षेक्ष्टराज कर शृष्ट्र करिएक, अवः ব্রিগ্দিপের বাণিজ্য-লাভানুদারে তাহাদিগের विक्रिक्ट्रेट नहाया **छन् नहरून: छाहात निक्**रे কখন কোন বিষয়ে অবিচার হইত না; যথার্থ-काल मूर्छेद मगन ও निष्टित लामन रहेख; टाहांत लोखना अवः वरानाजां व्यवसामाना छिन। তাहांत्र वीर्यात कथा वनाहे राष्ट्रनाः टिनि अकाको नगुनाय मूर्जीख **निथकाठिएक** योदङ्गीदन जांशन दरन दाथियाहितन। जाहाह तारकः धरमंत सर्यापा दिलक्षन क्रिन। द्रशकी छ

নিংছ আপনি নিতান্ত মার্থপর ছিলেন না,
সর্বদা রাজ্যেরই ছিত অংশ্বন করিতেন; তাঁহার কার্য্যদারা কথন মার্থপরতা প্রকাশ পায়
নাই। তিনি যথন যাহা কিছু করিতেন, ভাষা
ইশ্বরের নাম লইয়া গুরুগোবিন্দের উদ্দেশে করিতেন; এবং আপনাকে সামান্য লোকের ন্যায়
ঐ গুরুর অধীন দ্বীকার করিতেন।

১৮৭৯ সংবৎসরে পারস্য-দেশ দিয়া বে-গুরা, এবং এলাড নামক দুই জন ফরাশিস্ देनन 🏿 अक्त नारहात-नगरत उपिञ्च हन। यहा-রাজা রণজীত আপন দৈন্যদিগকে শিক্ষা দিবার নিশিত্ত তাহাদিগকে নিযুক্ত করিয়া রাথেন। के पूरे जन याना लारकत शतिभूमबाता निथ-নেনারা যুদ্ধ-বিদ্যায় অভ্যস্ত উৎকর্মতা প্রাপ্ত হয়। রাজা রণজ্ঞীত বহু**কৌশলে আপন দেনা**র মধ্যে ইউরোপীয় শৃঙ্থলা স্থাপন করেন। পূর্বপ্রচলিত একাগু চিত্ত শিখদিগকে বেশ ও পূর্বপ্রচলিত অস্ত্র পরিভাগ করাইয়া নূতন অজ্ঞ ও নূতন যুদ্ধ-বেশ ধারণ করাইটুেড, এবং তাহাদিগকে নূতন-নিয়মের অনুগত করিতে তাঁহার পরিপুন ও ব্যয় অতান্ত্র হইয়াছিল। ভিদি তাহাদিণের উৎসাহের জন্য আপনি স্বয়ং তাহাদিগের সঙ্গে সমান সমর-বেশ ধারণ এবং সমস্ত অভিনব মিয়ম অবলম্বন করি-য়াছিলেন। পরস্ত তাঁহার এত যতেতেও নুতন নিয়মের প্রতি পূর্বতন সরদারেরা এক ২ বার বিরক্ত হইয়া উঠিত, কিন্তু ভাহাতে দেশের তাঁহার সৈনের व्यनिष्ठे घटि नाहै। তলবার বন্দুক ও কামান লইয়া যুদ্ধ করিত, ও कामात्मत्र युष्क विलक्षण मुनिशून इहेशाहिल। **डाँहां द्र रेननाम्ब हेर्डे द्वाभाव जूलिकिक.** याका-मिर्गित व्यर्शका (काम व्यन्तम मूम हिन मा; वहर काम र जराम उदक्ष हिना एक्सी,

अनार्छ कृत প्रजृति कथक सम देजेद्वानीय त्या-। काशिकिरिशत नाहारय। ताका शिश्विरिशत बरध्-উৎকৃষ্ট অখারোহি ও পদাতিক মেলা প্রস্তুত এই নিমিত্ত কান্স প্রভৃতি করিয়াছিলেন: ञ्रात्न वे नारहविष्टरांत्र अविकाश भाषि विञ्रुष्ठ क्रेशाहिल।

রাজা রণজীতের শব্দ গুরুষক্সসিংহের জী সদাকৃত্যর বাল্যাবস্থায় তাঁহার উন্নতির নিমিত্ত অনেক নহায়তা করিয়াছিল, এবং তাঁহার সহিত আপন ্তা মহতাব্কুমরের বিবাহ দিয়া মনে क्रियाहिन, य जारात पोर्विवरे पतिशास्य पक्षां-বের অধীশর হুইবেক, এবং ভাহার কন্যা রাজ-भाग हहेया तारकात कर्ज्य कतिरव । এই আশয়ে म तनकीर उत्र याना । वद्यार उरे जाहात विश्व मा-তার হস্তহ্ততে রাজ্যের কর্ত্ব গুহণ করিতে উপ-प्रमा (मध्र, अदः शांका ७ जाहात जेशरममानूनारत मधममा वर्ष वसम् अवधिष्टे ताककार्य। कतिएक আরম্ভ করেন, এবং, প্রবাদ আছে, ব্যভিচা-রের দোষ সংশয় করিয়া আপন মাতার প্রাণ বধ करतनः किन्न পরিণামে সদাকুঁকরের আশাও পূর্ণ: हम् नाई, এবং তাহার মন্ত্রণাও সফল হয় নাই, কা-त्र**कोच कितकावके (भद्रगिःहरक मृ**क्षदत्रत्र ७ (फ्रायी, ७व॰ चरनक विवस्त्र श्रमःमनीयः।

তারাসিংহকে ভদ্রবায়ের পূঞা বলিয়া জানি-**टिन । नेपार्क् यत वर्ष मिन प्रेंडि॰** नेखानरक या-পন দৌহিত্রবৎ পালন করিয়াছিল, কিন্তু তাহা-**ष्मिरक** ताक्य पूर्ण विद्या मार्ग कतिए ना পারিয়া নিতান্ত বিরক্তা হইয়া অংশেষে জামা তার নামে ইংরাজদিগের নিকট অভিযোগ করে। **छाहार७ है**॰ রাজের। মধ/স্থ হইয়া সদকেঁ মরকে তাহার স্বামীর সমস্ত সম্পত্তি দেওয়ান।

১৮৭৭ সালে মহারাজা আপন শ্বাকে শাসন করিবার অভিপ্রায়ে শেরনিংছকে দত্তকপুত্র ঘরূপ গৃহণ করিয়া ভাহার মাতামহের সমত বিবয়-বৈ-ভব চাছিলেন: ভাছাতে সদাকুঁমর নমতা না হও-য়ায় তিনি তাছার সকল বিষয় বৈভব অপছ্ত করত তাহাকে বন্দি করিয়া রাথেন।

রাজার দ্বিতীয় জ্রী সুজানসিংহ-নানক এক জন শিখপ্रধানের কন্যা ছিলেন। তাঁছার গর্ভে রাজপুল থড্গদিণ্ছ জন্মগুহণ করেন, এবং ঐ রাজপুত্রই রাজ্যের অধিকারী হয়েন। তাঁহার ण्ञ नोनिश्ननि॰ र भक्षात्वत भूष्ण्त त्यामा चित्रा विश्वाक इहेशाहितन। त्रविशेष्ठत ताला-কালে তাঁহার দৈন্যাধ্যক ও কর্মকরা মন্ত্রির त्रव काहात कन्या निःमञ्जान इरेल। अक्रेल প्रवाह मर्द्य श्रुनिशालिन इ, मत्रहात लहना निःइ, लि-चाट्य, (य ১৮७৪ मःवर्गत महाजावकूँ वादात छ। (पर्मानिःह, मत्रात छलाविमःह, धार्मानिःह, গর্ভবতী হওনের কথা প্রচার হয়, এবং যথাকালে হিরিসিংহ, প্রভৃতি কএক জন সর্বপ্রধান ছিলেন; স্থাহার একটি কন্য। জম্মে, কিন্তু রণজাত তৎ- ইহার মধ্যে খুদিয়ালসিংহ সর্বপ্রিয় হইয়াছি-কালে রাজধানীতে উপস্থিত ছিলেন না, তাঁহার লেন। প্রথমবিস্থায় রাজা রণজীতের পান দোব প্রত্যাগমন হইলে র জমহিষা তাঁহার যমক- প্রভৃতি কিছু ২ দোষ ছিল, এবং তাঁহার এ পুঞা সস্তান জন্মিয়াছে বলিয়া ভাঁহার নিকট দোব দেখিয়া ভিন্নদেশীয় লোকে সমস্ত পঞ্জাবস্থ मूरेंकि वानक नरेशा उनशिष्ठ करतम, किन्न ताका भिश्वप्तिर्गक उन्न पार्य प्रायो मान कतिक, स्य वारका श्राकाम करतन माहे। **वे यमरक**त्र अरकत श्राहण त्राकात पार्य ममक काठि पायी एहेरक माम (महनिःह बदः जगदात नाम जातामिःह। शादत ना; जशत वज्र काहाता जामदक्रे नि-



(क्शत्क्वी शकी।

वरेटक शारत मारे; जन्भकान-मर्था जयावरेटक कथाकात नकातः सनूनाः माद्व**रे** जार्यसः सनूक

रेशांक शनांत्रम कतिएक इरेशांक्ति ; अरे कार्य ए-ত शर्दत ७) श्रह वक शक्त- थार वे शक्त कि जाइ वकि शावता यारा ना। अथूना विद्यास्य वर्गा अकिए इसाए । हेरात शिक्ष व्यावामकान मूरमक-ममूरमुत मिक्छेक क्रिक्क वे প্ৰির অনুৰূপ অপর এক পক্ষী নীহারাবৃত শীতল দেশ; তথায় ভাহারা পাইন-পূৰ্বকালে ব্ৰিটনদেশে প্ৰশিক্ষ ছিল, তাহার নাম বৃক্ষের নবীন পল্লব ভক্ষণ করিয়া দেহ-যাত্রা "কেপর্কেলী"। দেখিতে তাহা প্রায়ঃ পেরুপক্ষির নির্বাহ করে; পরস্ত তথায়ও ইহারা নিকণ্টকে नाम वृह्द। प्रकृतुंहरेए शुक्रामु भर्यन्त हेहात वाम कतिए भारत मा। मूसामू साहरमञ्जालमा व रेम्धं पूर्वे व्य अवः अक्यात श्रात्रमान काक त्वता पूर्णम-प्रत्मक छात्रापत अविकृतः क्रेका व्यवि-ৰভাৰতঃ এই পক্ষী মনুষ্য দেখিলে অভ্যস্ত ভীত রত তাছাদের বংশ নাশাক্ষরিতেছে। লা-প্লাপ্ত ध्रेश भनायन करत, अवः वेशद्र माश्म विस्था नद्राव, निवीक्षिता अक्षि मुख्यक-नमूमु-निक्षेष मुयापू, मुख्याः मृशयानुबक देः बाकिरिशंब (मर्ग (मर्ग लाक्राकिक श्रापूर्व) साहे, नक्करकरे मध्या हेहात व्यवस्थित कान मटउहे बोर्चकान-बर्गाला मारलात हैना क्रिके कतिएक व्यक्त मुख्यार

 अधिम। उपन नामा (नरे मृतक अक दाकि | **ইতিপূর্বে ঘণ্টায় চাব্লি ক্রোন্স নাড়ে** ়চাব্লি ब्लाम পথ इजिएक विसक्तन शर्वे हिन, वे हिन न वक २ शाया त्कान याय, जात वरम; वमनि করিয়া চলার বিষয়ে বড় বিলম্ব করিতে লাগিল -তাহার তাদৃশ নিকৎ বাহজনক ব্যাপারেতে-তদি-वरम अक कक्क पिया याङ्वात मगरश महत्त-**म्रितंत्र नाजिभाय क्षे तीथ क्षेयां क्लि। यदकार**न তাহার। বন পার হইল তথন ঠিক মধ্যার কাল। প্রচণ্ড সূর্য্যকিরণে তাহাদের কণ্ঠ, ওষ্ঠ, তালু, একেবারে শুক্ষ হইয়া উঠিয়াছে; আর জল না পাওয়া গেলে ভাছারা কোনমভেই চলিতে পারে না। তাহাদের তেমন দশা হওয়াতেও, কাপ্তেন গ্রে সাহেব তাহাদিগকে আরো আড়াই ক্রোশ চলি-তে অনুমতি করিলেন। কিন্তু তাহাদিগকে তথা-হইতে তুলিবার বিষয় কি? পরে অনেক বার বুঝাইয়া বলিতে কহিতে তাহারা নিৰুপায় হইয়া ঢলিতে লাগিল, কিন্তু পোয়া দুই তিন পথ যা-ইতে না যাইতে তাহারা এককালে নিতান্ত ক্লান্ত হইয়া এক স্থানে ব্সিয়া পড়িল। তথন ভাছা-দের আর এক পাও চলিবার নামর্থ্য ছিল না। তথনও ভাহারা সে मकन বোঝা ছাড়ে নাই। অনন্তর গ্রে সাহেব দলের মধ্যে যাহারা ভাল-क्राल চলিতে পারিত, তাছাদিগকে কছিলেন, य "जामता आमात नटक ठन, जामि जन অবেৰণ করিয়া আনিভেছি"। এইৰূপে ভাহারা ठाँहात मझी हरूल श्रेत कारधन त्यु भारहत उथा-হইতে জনানয়নার্থে প্রস্থান করিলেন, এবং ঘুরিয়া कित्रिया नाएक जिन व्याम পথ চলিয়া छन अधि इहेरलन ।

ু ১০ এতিল। ঐ দিন যাহার। জল আনিতে বা-বির ক্ট্রাহিল, তাহারা পুনর্বার ফিরিয়া আ-

বিয়া অবশিষ্ট অবস্থিত পিপাসাত ব্যক্তিদিণের महिक मिलिक इहेन. अवश नमिक्याहारत कति-য়া যে জল আনিয়াছিল, তদারা তাহাদিগকে প্রকৃতিত্ব করিল। অনস্তর তাহারা দর্বারম্ভে তথা-উদ্যমে বিলম্ব করিতে লাগিল। কলভঃ তথন जाहात यथायह शीका हहेग्राहिल। हेहा प्रियम. কাণ্ডেন গ্রে সাহেব ভাহার নিকটহইতে এই বলিয়া **নেই বোঢ্কাটি লইলেন ; যে " আমি প্রতিজ্ঞা** করিয়া কহিতেছি, আমি পথে পঁত্ছিবামাত্র ভোমার ও দকল আনীত দুব্যদামগ্রার যথার্থ মূল্য প্রদান করিব, তুমি ইহা পরিভগার করিয়া চল"। এই বলিয়া তিনি তথনই তাহার এ বোচ্কা খুলিয়া দেখিতে লাগিলেন। সে যথোচিত তির-कांत्र नाक्ष्मा कतिएक नाणिन, उथाणि किमि काहा করিতে বিরত হইলেন না। একে তাহার মুমূর্ অবস্থা, তাহাতে আবার যথা সর্বৰ অনেক্র হস্তগত হয়, ইহা দেখিয়া সে যাহার পর নাই রোদন ও বিলাপাদি করিতে লাগিল। কাপ্তেন গুে বাহেব তাহার বে কান্নায় কান না দিয়া ঐ পোটলীটি খুলিয়া দেখিলেন, যে তাহার ভিতর অপ্ররণ করা গজ দুই তিন মোটা ভারী কা-चिन, এक जाल त्नलाई कतियात मूठा, चात এक তাল অন্য প্রকার সৃতা, আর সে একটা পুরা-তम জেকেট চাহিয়াছিল, তাহা তিনি ভাষাকে मोकाटण्डे मिया व्यामियाहित्सन, (महेहा, अतः चना क्यक श्रकात शृतालन काब्रित्रत हेकता, ও ছেঁড়া খোঁড়া খানক। নেকড়া। আৰু তাঁ-हात विनानुमिक्टिक गृहीक (महे निकान वक् म् । शक्षात थानिकणे। मात त्रक्तिहरू। अह গোটাকত কুৎদিত यৎमामाना पुरदात सन् क्वन तम् अत्यारभन्ने याज्यमः यविशाहिन,

এমত মহে, কিন্তু যাহাদিগকে তাহার অনু-तात्व थाकिया २ हिनाए हरेयाहिन, जारात्व अम्ब প्राव टाहेश होनाहानि इहेन। जाहारमंत्र करार्थ मधीर वना हरेन वर्षे, কিন্তু এপর্যান্ত ৩৫ পাঁইত্রিম ক্রোশ পথের অধিক চলা হইয়া উঠে নাই। ওথাৰহইতে পর্থে যা-ইতে ঠিক সোজা এক শত পোনেরো ক্রোশ এখন প্রান্ত ও চলিতে রহিয়াছে। দলত কঞ্ক करनद व्याहात पुरा थात्र किष्टु हिन ना। सन क जिल्हा निक्षे छिल दिए, किंख जिन मित्र मार्ड তিন সের আটার অধিক নছে। কাণ্ডেন গ্রের নি-ফট কেবল ভিন পোয়া আটা ও এক পোয়া এরা-ৰুট মাত্ৰ ৱহিয়াছিল। তক্ষণ্ডে কেবর নামা তদে-শায় ব/ক্তি যে তাহার নিকট ছিব, সে আবার নেই আহারের ভাগী। ত**েকালে দলশুদ্ধ সকলেই** अभि की। इट्या পिएशाहिन, य जहना कर গমনে যে নিাদত হামে পঁত্ছিতে পারে, এমন किছ माज मछावना हिन मा। शानिक २ विशास ও একটু ২ চলিতে অ**নেকেই আরম্ভ করিল। কা**-থেন গ্রে নাছেব তাছাদের এভাদৃশ দুরবস্থার সময়ে জন কত ভাল ২ পর্যটক ও বলবান্ লোক সমভিব্যাহারে লইয়া পর্থের অভিমুখে অগুসর হুইটের ম**নস্থ করিলেন। যাইবার সময়ে** অবশিষ্ট লোকদের নিকট দৃত্প্রতিজ্ঞা-সহকারে अहे कहिशा शिलम, "लामता क्राय २ पानिएड থাক, আমরা আগে গিয়া তোমাদের নিমিত্ত খাদ্যসামগ্রী সজ্ফ করিয়া পর্যের পঁচিশ জোশ এদিকে এক স্থানে পাঠাইয়া দিব। ভোমরা ज्याय याहेवामाळ जाहा भाहेटल भातित्व, हेहाटल मत्मक नाहे"। अथन भूदिंत एक इत्र स्वत्न विভक्त इरेग्ना पूरेशन इरेन। शु नारहर बन्नः क्वत वर जात ठाति सन मिनिया वक मस

অগুনর হইবা। অপর হয় জনের এক নল পাচাৎ পড়িয়া রহিল। থারে ২ পথা চলিবার পরা-মর্শের পরামর্শী সেই নব কটিই ছিল। তাহা-দের বেই কর্মের কি কল তাহা পরে বজবা, অধুনা কাণ্ডেন গুরু দলের কিঞ্চিৎ বিবরণ লিখিতেছি।

১১। এপ্রিন তাহারা ত তথাহইতে প্রস্থান করি-য়া অনেক কণ্টে কতকগুলি গণ্ডশৈলের উপরি ভাগে আরোহণ করিল। সে স্থান কাঁটাবনময়। অনেক कछि (मधानवरेट उँखीर्व व्हेश जावांता अयमि এক দুর্গম গহনবনমধ্যে প্রবিষ্ট হইল, যে বহু-তর যতু ওকৌশল করিয়া কেবল মনুষ/জাতিই নেথান দিয়া যাইতে সমর্থ হয়, অন্য জন্তুর তথার প্রবেশ করা নিতান্ত দুর্ঘট। ঐ বন উত্তীর্ণ হইয়া তাहाता अयनि পति भाख ও পিপাদার্ক हहेताहरू, य कनकाल चात्र छल भाग ना कित्रश थाकिएड পারিতেছে না। পরে তাহারা সাভিশয় ব্যাকু-লতার সহিত ইতন্ততঃ জল অস্থেষণ করিতে ২ এক গুক্ষ বালুকাময় নদী দেখিতে পাইল। ভাছা অন্ধিক ছয়,শত হাত প্রশস্ত, এবং চল্লিশ পঞ্চাশ পাদিক গভার। ব্যাকালে অভিশয় বন্যা হইয়া ভাৰার নিকটন্থ দেশ সকলকে এককালে প্রাবিভ করিয়া কেলে, কিন্তু তৎকালে কেবল খেতদি-কতাময় খালমাত্র পতিত ছিল বই নয়। খানিক-**ক্ষ**ণ স্থির দৃষ্টিতে দেখিতে গেলে চকুতে সাতি-मग्न अमूथ वाथ ६॥, किंड मिरे बालूकाजूनि बक्ट्रे ठाँठिया गर्ख किल्लिहे छाहात्र ठातिहिक् रिया कांगे २ सन निःगृष्ठ क्हेटच थाटक। कां-खिन (भू अथम के करन जाननात्र निकरिं) रव আধ দের শেষ শক্তু হিল, তাহা ভিজাইয়া नहरतन, अवः अक চामिछिया अवास्क्रेमाख (क्वन उपम रकावम क्रियामा ने कीका बाकूड कान

महेशा ज्यान करत बरः मुथामा शक्ष शको शा-हेरन विमष्टे कतिरु खूषि करत मा।

পূর্বেই উক্ত হইয়াছে কেপর্কেলী অভাবতঃ
আতীবভয়াতুর, মনুষে/র নিকট হইতে অতি দৃরে
পলায়ন করে, পরস্ত বদস্তে এই রীতির অন্যথা হয়; তৎকালে ঋতুর প্রভাবে জ্রীসঙ্গোলাদে,
প্রকৃষ্ণ হৃদয়ে ঐ পক্ষিরা ফ্রীতপক্ষে বিস্তৃত
পুক্তে পক্ষিণীর আহ্বান-সূচক ধুনি করিতে ২
এমনি মত্ত হয় যে চক্ষু কর্নের চৈতন্য লুপ্ত
হইয়া যায়; তথন মনুষে/র নমাগমে আর কিছু
মাত্র ভার থাকে না। এই অবকাশে ইহাদিগের
দ্বেষিরা অনায়াদে প্রত্যহ বহুসঙ্থ্যক পক্ষী
বথকরিয়া থাকে, এবং তাহাতেই ক্রমণঃ ইহাদের
অনেক হাস হইতেছে, সুতরাং অধুনা কেপর্কেলী অভ্যন্ত দ্র্লভ হইয়াছে।

কাপেন গ্রে সাহেবের ভূমণ-ব্তান্ত

ত্রতা অভুত পদাথের বিবরণ অত্রতা অভুত পদাথের বিবরণ অত্রতা অভুত পদাথের বিবরণ অত্রতা অভ্রত পদাথের বিবরণ অত্রতা অভ্রত পদাথের বিবরণ অত্রতা আভ্রত পদাথের বিবরণ
কিল্লা কলজনক। একাল-পর্যাস্ত্র
কিল্লা কালার মধ্যকলের সমগু বিবরণ
কেহই স্চাক্তরণে পরিজ্ঞাত হয় নাই। তত্রতা
সিজ্নী-নগরের পশ্চাষ্ট্রী নীলগিরিমালা পর্বতহইতে কঞ্চটি পশ্চিমবাহিনী নদী নির্গত
হয়। অন্যান্য নদী-সকল সচরাচরলপে যেমত
কাগরের সহিত সক্ষত হইয়া থাকে, এ সকল
নদী ভেমত নহে; এ মহাছীপের মধ্যবর্ত্তী
এক প্রকাশ্ত বৃদ্ধ তত্তাবতের সক্ষাম্পাদ। এ
হুদ্ধ সমুদ্রাভিম্থ নহে, তথাপি তাহার গভীরতা
ভ্রত্তাক্তর সাম্পাদ্যার কাল অংশে মুদ্দ বলা

यात्र मा। একাল পर्याञ्च अहे ज्ञान घष्टिक याका ह কিছু জানিতে, এবং সমুদুসম্বায় যে কোন অন্তুত পদার্থের প্রচার করিতে অবশিষ্ঠ আছে. **जाहा** निजाल पूकत विलाक **हरे**(दक। हेरात मध्या (य नमस्र नक्क छेखीर्न इड्रेट इड़, जाहा ष्यकान्त ज्ञानक। वज्र विक्रमभानी वाकितान তাহা যৎসামান্য বোধ করিতে পারেন না; बदः नाहिमय विथाक नाह्नी ও উদ্যোগी হইলেও কোন ব্যক্তির তাহা যৎসামান্য বোধ হয় না। আধুনিক ভূতত্ত্বেতা পণ্ডিতদিগের মধেট যিনি অজেলিয়ার তভা্নুসন্ধান-বিষয়ে नक्रमामा एरेशाएकन, छीरांत्र नम्म अर्ज (गु.। পূর্বে তিনি একজন সেনানায়ক ছিলেন; পরে দক্ষিণ অজেলিয়ার শাসন-কর্তৃত্ব পদে অভি-विक रन। ये महामहिम वाक्ति ১৮৪० श्रीष्ठी-ব্দের ১৭ ই কেব্রুয়ারিতে পশ্চিম অক্সেলিয়ার শোণনদী উত্তীৰ্ হন। তাঁহার তথায় গমনের অভিপ্ৰায় এই ছিল যে তিনি ২% অৰ্থি ২৩ অক্ষাংশের মধ্যে উক্ত দ্বাপের পাশ্চাত্য অংশের **शर्य) दिक्क । भाग व । व इ । शर्म क दि द । ।** कार्ष्टिम् (भू नारहद किन्नम नहत्रभगरक नम-ভিব্যহারে লইয়া "আমেরিকান হোএলার" नामक जाहारक चारताहनभूर्वक "मार्के" मामक উপনাগরে উপস্থিত হন। তথায় তাঁছারা পাঁচ মানের উপযুক্ত থাদা দুবা তিন পানা কুছু नोकास दावारे कतिसा भमन करतन; **कार्**स मध्य अकथाना मोका ख्याय वानिकानि क्रमा यात्र। এই উপলক্ষে তাঁহারা যাহার পর নাই कून शाह्या २० मार्च थारापुरा नमूर कि वात मामत्म वर्मत छेलबीत्म अख्यानाम कार्यनी किन उरकानीन श्रम्थ वर्षिकात्र नमूरमृत्र सन उरवन् श्रेवारक एकका नमूरात्र साम अक्कारक शामिक

भवरेशांक्षिः, जाशास्य ज्याश स्य किंहू थाना मुद्रा स्तिक्छ हरेन मध्य नात्रस्य महिन्द्र वाद्यानिशास्त्र-हिन छोहा এककारल वानुकाम (आर्थिक हरेग्रा যায়। এইকপ দুঘটনা দর্শন করিয়া তাঁহাদের च्यांत लक्षत वेशका त्रिक ना । अ फिरक फरनत नकत्वरे बकार्य काल रहेशा शिष्ट्रशास्त्र, अपित लोकार इ कन फेठिएडर्ड, उपालि भ्य नार्ट्रद · सान " नमीटि या अयात मात्र मित्य हरे**ल ना। मू**-ভরাং সকলকে অগুসর হুইতে হুইল। পরে এই-ৰূপে ঘাইতে ২ যথন তী**ছারা গেছু/ম-অথাতে** উপান্তিত হুইলেন, তথ্ন তাঁছাদের অবশিষ্ট আর **मृज्यानि** सोकास वानिष्ठाल **म्हेन। स्य यानि** পৃথিবীর ২৮৮০ সাজে আটাইশ অকাংশে হই-(तरा: क्राउन् शु नारहर नहात्रभारक नरा नहे-য়া ঐ ভানহইতে পর্থ-নগরে যাত্রা করেন। আ-महा अहे घाळा-नगराव पूर्य**टेनांत वियस अकारन**े বণুনা করিয়া পাঠকবর্গের গোচর করিতে মনস্থ করিয়াড়ি।

্যু লাহেবের নৌকা-সকল ১লা এপ্রিলে বা- নিয়ম আদ্যোপান্ত ক্রমাগতই করিয়াছিলেন। নিচালি হয়। তথ্য তি**নি মনে ২** বিবেচনা করি-। থিক ডেড় শত জোশ ঠীক গোলা হইবেক; ভা-हात्र जरमह नाहे; किन्तु शिथग्रदा वन शईछ नर नहीं প্রভৃতি অনেক ২ ব্যাঘাত থাকাতে আনেক যুরিয়া কিরিয়া না গেলে তথায় উত্তীৰ্ণ ক্রেয়া অক্ত্য-छ पूफर "। यादा रुजैक, वर्षे बाल विरवंग्नालूईक । তথাহইতে পর্য-লগরের অতিমুখ্যে চলিয়া বাওয়াই

ना र दिवन नामक बक र किल्ल केर्मा नईए कवा मन जम बाजी हिना योखाकारन जाहाता नकरन अक-मण इरेश वि नकत भागः नामश्री नमछ-ব্যাহারে আনিয়াছিল, তাছা ভাগ করিয়া লই-ল৷ প্রত্যেকের ভাগে দশ ২ বের গুমো আটা ও व्याध र मित स्वत गांक इड्ला पुःनगन्न ना করিতে পাল্লে এমন কর্মই নাই। তাদৃশ কুৎসিত দুব্য থাইতেও তাহারা তথন লালায়িত।

ং ২ এপ্রিল। এ দিন যাত্রা করিবার উপক্রম হইতেছে এমত-কালে সঞ্চিগণের প্রতি এই नियम दित रहेन, य ज्ञांगे व्यविमास ५ वक ঘণ্টা চলিলে পর পাঁচ ২ মিনিট করিয়া বিশামের नमञ्च (मञ्जा याह्रयक। जे व्यवकारण कारधम् लु नार्ह्य पर्याचिनकानीन य थात्न य विषश्चि व्यान्धर्य स्कारण मन्त्रन किंद्रा यान, ठाका जाव-ধানতার সহিত টুকিয়া রাখিতেন। তিনি 🖦 🤊

े ইতিপূর্বে मझोरित व्यन्तिक रूपने वानिচानि তে लागिलन, य "अथानहरेट छन्नथ रिया रख्या मोकाहरेट नानाश्चकात पुरामाम्भी न-পদবুজে পর্থ-নপরে না যাইতে পারিলে আর ইয়া বোঝা বাঁধিয়া রাখিয়াছিল। ভাছাদের আমাদের কোন প্রকারে নিভারের পথ নাই, মনের অভিপ্রায় এই যে সে সকল দুরা পর্থ-কিন্তু সমভিব্যাহারীর। ইতিপূর্বে যে সকল কেুশ। **নগরে বিক্রয় করিয়া কিঞ্চিৎ অর্থ সন্তুত্ ক**রি-সহ্য করিয়াছে, ভাহাতে ভাহারা যে এত পথ বিক। এখন ভাহার। সে নকল দুব্যসামগ্রী আ-চলিতে সমর্থ হয়, এমত বোধ হইতেছে না। পন ২ মন্তকে করিয়া চুলিতে লাগিল। কিন্তু এস্থান্ত্রতে পর্য নগর বড় কম পথ নতে, অন্ন- সে প্রকার বোঝা লইয়া এমন পথ এক দিন क्तांक प्रमाधा। शाका क्षेत्र, काकाजा कमूक करहे প্रथम मिनक वन कक्रम जिल्ला (नहेनवः क्रिका **लरेत्रा श्रेमम कित्रम।** १८ १ ८७६ ८ ४६५ १ ४७५

> ण्या अधिव । १ को विन कार्या । हा । छ। छ। कार्य किष्ट् १ क्रमस्मान क्रिया प्रवाद क्रमस्म नम-ন্ত দিনের সভাচ লিতে লারভাকরিল। ভাকনে

পথিমধ্যে তাহাদের এমন এক নিবিড় বন প্রাপ্তি
হয়. যে তাহাতে প্রবেশ করা অভীব দুকর।
তাহা উত্তীর্ণ হইতে আড়াই ষণ্টা সময় লাগে।
সেই স্থানও বন পার হইতে২ ঐ লোকেরা
এক কালে একান্ত কুন্তি হইয়া পড়িল; তথাপি
তাহারা সেই ভারী বোঝা ছাড়িতে চাহিল না।

৪টা এপ্রিল তাহাদের ভূমণ-ক্রেশের আর नीय। পরিশেষ ছিল না। প্রাতঃকালাবধি नस्।-পर्याञ्च रम पिन ছয় ক্রোশ বই আর চলা হয় नारे। तम पिन পথিমধে। कन मिनियाहिन वर्षे, কিন্তু কেশের বিষয় বর্ণনাতীত। সেই দিন সঙ্গী লোকেরা কাঞ্চেন গ্রে সাহেবের নিকট সাতি-শয়-বাগুভাসহকারে কহিতে লাগিল, "আমরা আর এক পাও চলিতে পারি না"। ইহাতে তিনি याहात भत नाहे वितक हहेत्वन; उथाभि या-हाटि डाहानिगरक नहेशा याहेट পारतन, अभन कोशन (मिश्राट अपि कतितन ना। अठ य কেশ, তথাপি সেই লোকেরা তাদৃশ নিস্পুরো-জন ভার বোঝার মমতা ত্যাগ করিতে সমর্থ क्हेल ना। वे जकल मुरवाटक य का**क्रास्त्र मरना**-ভীষ্ট দিদ্ধি হইবে, দিবা রাত্রি ভাহাদের সেই বি-যয়েরই কথাবার্ত্ত। শুনিতে পাওয়া যাইত। যাহা रुष्ठेक, जे अकल लारकत्रा अधन उथाय हिटेनक पूरे फिन विभाग कतिया यारेवात छन। कार्थन ণ্ডের নিকট প্রার্থনা করিলে পর তিনি মনে ২ विरवण्या कतिरलन, य यमि हेशमिश्रक किश्विष् শক্তি থাকিতে ২ এখান থেকে না নইয়া যাওয়া यात्र, जाहा इट्टल इंशामिशक अटकवादबर्ट हा-**बाहरक इहेरककः बदः ब श**र्याष्टरम्ब शर्व स्य नमञ्ज रकुम मध्यप्रेन इट्रेंचिक, याहाता पूरे बक দিন বিশাস করিয়া অপে২ পথ চলিভে **চায়, ভাহায় অধিকাংশই, ভাহাদিগকে ভোগ**

করিতে হইবেক। যাহা হউক, উত্তর কালের কেলা ঘটনার শক্ষা হইতে তাহাদের আপাততঃ আছা ও বিশ্বামলাভের সুখনজোগই প্রবলতর বোধ হইল। ইহাতে কাপ্তেন গ্রে সাহেব এতাদৃশ উৎকটকোটি-সম্ভাবনায় অধিকাংশের সমতি লওয়া ব্যতাত আর অন্য কোন উপায় দেখিতে পাইলেন না।

८३ अधित। अथन याजीता (मरमत अक अक्षन দিয়া চলিতে লাগিল, অষ্ট্রেলিয়ার অধিকাংশ-হইতে তাহা এত বিভিন্ন যে দেখিলে তাহা একটা न्जन घील विनया ताथ रुया वे अकत्नत जृति मकन প্रकाराखन, ममूरमूत উপকृषवर्जी य ममस পর্বত আছে, ভাছা সাতিশয় উচ্চ ; ভূমির উর্বরাৎ শক্তি কিছুমাত নাই, এবং প্রজা সকল প্রায় অস্থি-চর্মাবশেষ মাত্র। তত্রত্য কতিপয় প্রজার নহিত ঐ যাত্রীদিগের সহিত প্রথম-সাক্ষাৎকার সময়ে তা-হাদের রীতি নীতি অবস্থা নকল অতি অসভ্য জা-जोग्नद्भन मञ বোধ इहेन। हेहारङ कारश्चन (भू नार्ट्व তाहारम्ब माथाव উপदि मिशा मिहामिहि বন্দুক ছুড়িয়া তাহাদিগকে ভন্ন দেখাইবার জন্য **আপ**দার বন্দুকের কল টিপিলেন। তাহাতে দৈবাৎ म वातरे! ठाश विकल इहेश शिल्। जाशास्त्र তাহারা তুড়ি এবং করতালি দিয়া পরিহাস করিতে লাগিল। তথন কাথেন গ্রে আর একবার **जारात्त्र माथात्र डेशिट मिया वस्क मुखिलम,** তথাপি ভাহার। বিক্ষিত হইল मा।

তথন গ্রে সাহেব নিকটন্ত এক বোপ লক্ষ্য করিয়া ভাহার প্রতি পিন্তল ছুড়িলেন। ভাহাতে ভাহার গুদ্ধ পত্রাদি যাহা ছিল, সকল ছিল ভিন্ন হইয়া চতুর্দ্দিকে পড়িতে লাগিল। ইহা দেখিয়া ঐ প্রজারা পলায়ন না করিয়া কোনমভেই। থাকিতে পারিল না।

সেই লোকদের প্রায় তিন ঘণ্ট। কাল চলাই। হারাইয়াছে, স্থির করিয়া ই**ডয়তঃ অংশ্যেশ** করিতে क्हेल ना। এত य कहे, उथाणि जाराता (नरे लाजिस। नकटल यारात शत मारे, नथना ह हिन, লকল আনাত দূৰা সামগ্ৰীর বোঝা ছাড়িয়া যা- তথাপি দেই নজীর জন্যে বাজুল হইরা অবেষণ हेटक शांतिन मा। जाराज्ञा बहेकारण प्याप्त २ कतिए बृष्टि कतिम मा। प्यवापार कान उत्पान हे চলিতে ও অধিক কণ বিশাম করিতে যে প্রকার পাওয়া গেল না। এদিকে রাজিও অধিক চইল প্রতিক্তা করিয়াছিল, ডজ্জনিত কেবল উভরোভর দেখিয়া তাহার। পুনর্বার নকলে একত হইল। ত্যাগ করিতে লাগিলেন।

नाम वाश्वित्वन । शूर्वमिदक मण जान व्यापना चारवा इतिह कतिए एका

१८७ विश्वत। तम पिन परनत व्यविकाशमात नि- । शर्या**स**ंकिकातिक स्व शर्वकरम्नी विका कारारिक क्के नार्फ किन त्मत छाति (मरत्त अधिक आत । विक्टोन्निकारभूवी । नारम अधीक कतिरसम। काहै। हिल मा। जाहा कावात मुथान/काश नरह, त्मश्रारम ब्राजिकास वाश्रम कतिवात मगरत जा-ভদ্তাবং গুনে উঠিয়াছিল। কাণ্ডেন গ্রেনাছেব হাদের বোধ হইল, যেন ভাছার। কোন ছরিম্বর্ণ পুনর্বার প্রভানের উদ্যম দেখিতে লাগিলেন; কৌতুক গৃহের ভিতত্তে ব্রহিয়াছে। ভাহার চতু-किन्न उदकातीन याजात रफ़ काल मुर्याश किंग्वन्ती नोमा नकल शर्बक्ट्युनी । नागवकरि হইয়া উচিল না। কারণ এক ব্যক্তি ঐ দলকে পরিবেণ্টিত। তত্ত্তা উপাত্যকাইইতে প্রকাপ্ত অনুরোধ করিয়া কহিল, "তোমরা আমার জন্য ভারতীয় সাগর ভাহাদের নয়নগোচর ছইতে লা-আর অধিক পাঁচ ২ মিনিট অপেকা করিয়া গিল। সময়ে ষ্টাইন্স্নামক সেই দলের এক জন চল, তোমাদের সঙ্গে দহিলে আমি চলিয়া লোক কোন কারণে পেছিয়া আসিতেছিল, ইহা উঠতে পারি না ।। এই কপে স্থািত হইতে ২ তাহাদের জাতসার নাই। ইহাজে তাহারা নে

यन कन्न मिथिया कारश्वन श्रि भारम्य एफिमा- ৮ अधिन। खे मिरम्ड स्म माजान यासिय ব্যি নিদিষ্ট তানে পঁত্ছিবার আশা ক্রমশঃ অনুসন্ধান হইতে লাগিল। এতক্ষণ উহাকে না পাওয়াতে সকলের মন সাতিশয় ব্যাকুল १ अधिला अहाता मकरन अक डेफ श्रांष्ठ- इन्हेंर डिन। याना न्डेक, व्यवस्थाय डानाक শ্রেণার উপরি উত্তিতে লাগিল। সর্বাধ্যে কাপ্তেন পাওয়া গেল। অনস্তর কাণ্ডেন গ্রেপুনঃ সর্বাস্তম (भू मार्ट्ट जाहात मृद्ध पारताह्व कतिरामा: जथाहरू अवान कतिराज केनाज हरेराना नकी লোকের। দেই নিরর্থক বোঝা মাথাছ করিয়া উদ্যুত হুইলেন বটে, কিন্তু এবার আরি অধিক তাহার পশ্চাৎ ২ উঠিকে লাগিল। তথ্য গ্রেমা- চলা হইল না। দলের ক্তকগুলি লোক গ্রে क्ष्य मञ्ज्ञतिमश्रीक विनादक वाशिरनाम, "या वा कि । नारक्रवत भीचे २ अकाम क्याकेवात नियाम चिमानिशक अ वाका नरेशा याहेरच नश्या- मिछाद्ध व्यवस्थि रहेशा निवृण्यिक व्यक्तिमानी हेशाहरू, व्यामि जाशास्य निजास रहत्रस्थान विति १। ७० डे०क्कोक्किक्टार्य अविताहे प्रहिन, रम অবশেষে তাঁহারা যে স্থানে উপাস্থিত হইলেন, ছিল আরু এক পাও চলিতে চাহিল লা তা-তাহ। অষ্ট্ৰেলিয়ার সর্বপ্রধান ভান জানিতে পারি- হাতে কাণ্ডেন গ্রেকে একান্ড নিক্পীয় ক্ইয়া अ। (गु नाद्द्रव विक्रिवेदिया द्राक्य विवया जाहात चार्यात्व जाहारहत मराज्ये मनाज हरें वा

একট। কান্বিদের বৈলীর মধ্যে রাখিয়াছিলেন, কেবল লবণ মছে। খার হইতে যত লোলা ধরিয়া রাত্রিকালে একটা ইন্দুর তাহার মধ্যে প্রবেশ করিয়া আবার ভাহার অদ্ধেক শেষ করিয়া কে-লিল। এখন ভাহার সেই ছাতুর তালের অবশিষ্ট च्यक्ति बरः जिन চाমচে बत्ताक्टे-माञ्ज क्वरन সম্বল রহিল। অবশিষ্ট পরে প্রকাশ্য।

শোরা-পুস্তুত-করণের পুথা।

धान; इंश्व এक र शमार्थंत व्यवमारम लक লক্ষ টাকা এতদেশে উপাজ্জিত হইয়া থাকে। অতএব ঐ সকল দুব্য কোন কোন স্থানে কি প্রকারে প্রস্তুত হয়? তদুৎপাদনের সদুপায় কি? তাহার ব্যবহার কি? কোন্কোন্দেশে कान मगरत जाहा (श्रुत्व क्रिय्त विस्मय नाज হইতে পারে? ইত্যাদি বিষয়ের বিবরণ ভারত-বর্ষীয় ভদুলোক-মাত্রেরই জ্ঞাত থাকা কর্ত্তব্য। ও গো-ময় মিশ্রিত করিয়া অনেক শোরা প্রস্তুত এবিধায় বিবিধার্থের পূর্ব২ খণ্ডে এতদেশীয় কএক প্রধান ২ দুব্যের সঙ্ক্ষেপ বিবরণ প্রকটিত। প্রকারে শোরা প্রভৃতি পদার্থ প্রচুর পরিমাণে করা গিয়াছে, অধুনা শোরা কিপ্রকারে প্রস্তুত জিমিয়া থাকে, এবং তৎপ্রযুক্ত ঐ প্রদেশ হইয়া থাকে তদিবয়ে যৎকিঞিৎ লিখিতব্য। শোরার আকর বলিয়া প্রদিদ্ধ হইয়াছে। সকলেই দেখিয়াছেন, কিন্তু তাহা কিপ্সকারে "লুনিয়া" নামে প্রসিদ্ধা অগুহায়ণ মাসে তাহারা ৰটে তাহার অনুসন্ধান অতি অংশ লোকে আপন ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইয়া প্রাচীন মাটির করিয়া থাকিবেন। অনেকে বিশ্বাস করেন যে চিপি, ভগ্ন-প্রাচীর, পড়া ভুঁই প্রভৃতি যে যে ভাহার আদিকারণ লবণ-লবণ- বিশিষ্ট জল স্থানে লোনা মৃত্তিকা পাওয়া বাইতে পারে, পৃথিবী হইতে ভিত্তিতে উঠিয়া প্রাচারের ইষ্ট- সেই ২ স্থান চাঁচিয়া শোরার মৃত্তিকা সন্তুহ করে। कापि कोर् कड़िया करल, बदर वे घटेमात नाम वे मृखिका-मन्द्र-कत्र-किया नदर्वत मृखिका-" लामाध्द्र।"। किन्न लामा ध्रतियात्र कात्रव मनुष्-िकुशात्र मन्म, अरे व्यासारक नवरवित्र हरू हरू

थारक नवन इहेरछ छछ लोना कमाणि धरत ना ! अक्निक्न ७ नाहेत्। कन् नामक पूरे विटमय বায়ু মিশ্রিত হইয়া এক সামান/ বায়ু উৎপন্ন হয়; ঐ বায়ুদ্বয় বিশেষ পরিমাণে মিশ্রিত হইলে এক প্রকার অমু দ্যুবক জম্মে; খারের সহিত ঐ দাবক মিশিত হইয়া শোরা উৎপন্ন করে; তাহা চূর্বের সহিত একত্র হইলে নাইট্রেট্ অফ্ লাইম্ नामक नवन-विद्याय करमा; बदः नवद्य महिष्ठ ** के इंडिंग्स्ट वि किन वार्षिका पूरा शिक थाकिल नाइएके चक लाज छेरलझ अप्रस्क काम कीनो ' बदः स्थाताह अ- शार्थ पाक महत्त है स्थात वार । **बहे नकल थांत्रक हूर्नक भमार्थ एमथिए** नवर्गत जूना, अवः जाहाहहैट अधितात लाना धतिया थाक। नमजूमित मृखिकाय थात व। हूर्न था-কিলে তথায়ও লোনা ধরে, স্তরাং যে সকল স্থা-নের মৃত্তিকায় লোনা ধরিয়া থাকে তদ্যারা অনা-রাদে শোরা প্রস্তুত হইতে পারে। তিরত্-প্র-দেশে লোকে মৃত্তিকার সহিত মেষ ও ছাগের মল করিয়া থাকে। ত্রিহুট-প্রদেশের শৃত্তিকায় এই

পাঠকবর্গ প্রাচীন অক্টালিকায় লোনা ধরিতে 🐪 শেষোক্ত স্থানে শোরার মৃত্তিকা-সন্তুহ-কারিরা

জ্বা ক্ষেত্র করিয়া রাথে; ভাষ্তিই প্রয়ো-। জনীয় পরিমানে শোরার মৃত্তিকা জক্মে । এই মৃদ্রিকা সঙ্গীত হইয়া শোরার কুঠিতে আনীত হইলে প্রথমতঃ ভাহা থেটিত করিতে হয়। তদ-বর্থ কুঠতে ৪।৫ হন্ত পরিসর এক ২ টা মৃৎকৃত্ত থাকে। তাহার তলায় বাথারি ও শুক্ষ তৃণ দিয়া এক প্রকার ছাঁকনী প্রস্তুত করিতে হয়। ঐ ছাঁ-কনার উপর এক প্রস্থ নীলবৃক্ষের ভষ্ম ও তদু-্ পরি ২০ মোন লোন। মৃত্তিকা স্থাপন-পূর্বক ঐ মৃত্তিকা পা দিয়া দাবন করিতে হয়। উপ-যক্ত-মতে মৃত্তিকা দাবিত হইলে তদুপরি এমত পরিনাদে জনশঃ জল দেওয়া আবশ্যক যা-হাতে ঐ জল মৃত্তিকার উপর ১ অকুলী পুরা रुइंडा थारक। २८ **घ**न्छे। का**लमरधा कृर**खंड छन 🖹 জন 🖟রং কাল হির থাকিলে ভাছা অনেক নিমল হয়, কিন্তু তাহার সহিত লৌহ ও বনজ পদার্থ অংনক মিশ্রিত থাকে। তাহা পৃথক্। কারিবার নিমিত্ত ও জল পাক করা আবশ্যক। जनत्यं न्याहाता शरहदानानीवर मीर्च ठूली নিমিত করত তদ্পরি শোরার জলপুণ এক नाति हैं कि ताथिका ठूलीत अक शार्थ आयु-शास्त्र। ভाहार अकत भारबंद ब्हान भिर्फ भारतः जन जम्मः एक क्रेश यात्र। पूरे घणी कानगरश. भारति ।। । अः अः अन छक इहेरन অবশিষ্ঠাংশ অগভীর সৃৎপাত্তে শীতল করা काइवा। ले मो इन-कार्य-मगर्य क्रम्ब्हर्ट मगर भाव। माना वास्त्रिया भारत्वत निरम् छामशा

थाटकः अहे (भारात माम " स्वामा (भारत "। रेशां जातक नवन मुखिकांकि सना वर्खमान থাকে। ভাষা পৃথক্ করিতে ছইলে ধোয়া শোরাকে পুনরায় জলে গুলিয়া পাক করত शान काणिया माना वालिए इस: जाहा इहेरलई "কলমী" শোরা প্রস্তুত হয়।

শোরার মৃত্তিকা ধৌত করিলে পর ছাঁকনীর উপর যে পদার্থ অবশিষ্ট থাকে ও শোরা দানা বান্ধিলে পর যে জল অবশিষ্ট থাকে ভাছা শোরা-প্রস্তুত করিতে বিশেষ প্রয়োজনীয়; শোরার ক্ষেত্রে ভাহ। নিকেপ করিলে পরবৎসর ঐ ক্ষেত্রে প্রচুরপরিমাণে শোরা উৎপন্ন হয়।

कनमीरभाता পतिस्य भगार्थ नर्ह, लाहारक বালুকা জল, লবৰ, গ্লাবর্শাল্ট প্রভৃতি পদার্থ मभय-लवन-अमार्थिक मुब करिया छीकनी उन्ह मिल्लिक थारक। बिनिएकहा के अमार्थित अदिमान করত তালার নিমে পড়িয়া যায়। বৃহৎ ২ পাত্রে নিরূপিত না করিতে পারিলে শোরার বাণিছে। লাভ করিতে পারে না; অভএব ভাষারা অনেকে শোরা ক্রয় করিবার পূর্বে অর্থ-ব্যয় করত তেতব্য শোরার কিয়দ শ রসায়নবিজ-वािक बाता भर्ताकिक कतिया नया छ मकन ব্যক্তির উপকারার্থে আমরা এবলে শোরা-পরী-ক্ষার নিয়ম লিখিতেছি, বোধ করি, ভাছাতে व्यत्नदक्त डेशकात हरूटड शाहित।

> পরীক্ষণীয় শোরার কিয়দংশ কোন পরিষ্ঠৃত কাচ পাত্তে চূর্ণ করঙ এক শত গুেন্ পরিমিত वे हुन लहेदा बक छेउड काह शास्त्र * चक ঘণ্টাকাল রাখিতে হয়; তাহা হইলে ঐ চূর্বে যে কিছু জলীয় ভাগ থাকে, ভালা নিগৰ চ্ট্য়া যায়, क्वित एक (माता व्यवनिष्ट थादक। ये एक भगाय ভূলে পরিমিত করিজা যে অংশ ক্ষিয়া যায়,

इ.च.बारवार ३६ बारवार ३३ श्रीक खरन-सळड-कवारन स्रथाः প্রাকটিত কর্মার (ভার) পাচ গারকো পাচক্রর এবেয়ারের বিশেষ

[ं] के छेटेचा वालिह स्थालाह डिलर्स अठ स्थान। हीर्नह मानकि हाशिद्दन क्यों कियान रहेदह भारत् ।

ভাহাইজ লের পরিমাণ৷ এক শত গুেন্ শো- গুেন্ বৃদ্ধি হইয়া থাকে, ভবে ভাহাতে ৪ গ্রেন্ রার ৯৫ গ্রেন্ অবশিষ্ট থাকিলে পরীক্ষণীয় শোরায় माउकत्रो ६ भाग क्रम चाएए, हेरा निम्छि छ हरेरव ।

অতঃপর শুক্ষ শোরাকে চোলাইকরা পরিশুদ্ধ कारन छनिया शिनारमत कॅमिरन अजन कता বুটি॰ কাগজ দিয়া ভাছা ছাঁকিতে ছইবে। ছাঁকা শেষ हहेरल हाँकनी कागरखंत **উপর १**—► वात शक जल मिरवक; भारत উত্তপ্ত काठ-পাত্রে ঐ কাগজ শুক্ষ করিয়া পুনরায় ওজন খাটি শোরা, ৮-৯ গেন্-পর ১২ পেল হয়, ডাহা হইলে শোরায় শতকর। বর সালেটর পরিমাণ অনুভূত হইবে। २ गर मृद्धिकामि थारक।

ইহার পর শোরার ছাঁকা জল ও ছাঁকনী-কাগ-**जित डेशत (य एक कल जाना इरेग्नाहिन, उरमम्**-দায় একত্র করিতে হয়, ও কিঞ্চিৎ কাষ্ট্রকি শুদ্ধ জলে ভালয়া শোরার জলের ওপর তাহার এক বিন্দু নিক্ষেপ করিবে; ভাছাতে যদ্যপি শোরার জল বিবৰ্ণ না হয়, তবে আর ভাহা নিকেপ ক্রিবার আবশ্যক রাথে না; কিন্তু তৎস্পার্শে শোরার জল मू**र्धा**त न**ाम भारण इहेल य भर्या छ मारा इ**य, তদবধি কাষ্ট্রকির জল এক ২ বিন্দু করিয়া ভদুপরি দিতে হইবে। ত**ংপরে ওজন করা বুটিং কাগজে** শোরার জল ছাঁকিয়া পূর্ববং ৭-৮ বার ছাঁকনীর উ-शत कालारे करा जल गालिया, जनरमार्य हाँकनोत কাগজ শুক্ষ করত ওজন করিবে। ইহাতে কাগজের পরিমানে যত বৃদ্ধি হইবে, তাহার ১০ অণ্নের ৪ অণ্শ পরিমিত লবে পরীক্ষণীয়-শোরায় বর্ত্তমান আছে, रेरा जाना कर्जवा। कामरज्ञद्व गद्रियान यनार्जन 🐎 📜

লবণ নিৰূপিত হয়৷ এই পরীক্ষার সমষ্টি নিম্নে निथित हरेन; उपाया,

कलीम (माता, ,			200	গেন,
स्य,				
माष्टी,	ર	গ্ৰেন্,		
लवन,	8	গ্ৰেন্,		
শতকরা মলা,	••		. 22	গ্ৰেম,

করিতে হইবে৷ তাহাতে কাগজের যত পরি- পরীক্ষণীয় শোরায় যদ্যপি গাবর্ সাল্ট থা-মাণ বৃদ্ধি ছইবে, শোরায় তত মৃত্তিকা বালু- কিবার সন্দেহ হয়, তবে কাষ্ট্রকির পরিবর্ত্তে कार्षि अमार्थ चाह्न, हेश दित इस। वृष्टिः नाहेट्डिट चक् वितासिं। नामक मुत्र करन छ-কাগজ ফঁদিলের উপর রাখিবার পূর্বে যদ্যপি লিয়া তাহা শোরার **জলে মিশ্রিত ক**রত পূর্ব**ং** ১০ গুনু থাকে, এবং শোরা ছাকিয়া শুক্ষ করিলে। ছাঁকিয়া ছাঁকনীর শুক্ষ কাগজ ওজন করিলে গ্রা-

আফরিকা-দেশের টাকা।

খ্ৰভ্ৰতভ্ৰ ব্যবসায়ি পল্লাগ্ৰামন্ত লোকের। বে-ক্লোট দেখিলেই অত্যন্ত জুদ্ধ হইয়া কহিয়া থাকেন, "টাকার পরিবত্তে श्री अ<u>प्रत्यक्त ल</u>्ला (नाप्रे क्वन ठेकाहेवात किन्स "। কলভঃ তুলধাতু ভিন্ন তাঁহারা সক**ল পদার্থই** व्यशुंक्। क्रांन : (वाच क्र्य, डीक्रिम अपक व्याक-রিকা-দেশের টাকাই শূেংঃ জ্ঞান হইবেক, জা-হাতে খুল ধাতুর কোন অভাব নাই। তদে-भीय "मानिली" नाम क अक्रि টाका श्रस्तक করিতে হইলে একটা পিতলের কলদা গলাইতে হয়; কারণ দুইদের পার্মিত পিতল-পি**র্**ঞ্জ नाम भानिनी। अञापृत्र वित्र शैंहिनि है। का मरण गरेया देजख्यः यारंटा ६ हेरलहे विचाहे; व्यक देशात मूला अक फाल्डात कथिक मदर।

देशांत्र निकीत नाम " वांत्राभाष्ट्" जम्दर्थ अक वान्ता-बीट्ण देश ७०।७৫ इन्ड मीर्च इत्र, किन्तु काँछा, जामाक, वाक्टरत कोछा, वाज्य, वस्क, টাকরে মধ্যে গণ্য হইয়া থাকে। তথায় একটা কতকগুলিতে পুংপুষ্প জন্মিয়া থাকে; অপর मूबभीव मृज्य पूर्वे मध्मा-धविवाद काँगे, जबः একটা বানরের মূল্য একটা বার-মদেরে বো- কিন্তু তাদৃশ বৃক্ষে প্রচুর ফল উৎপন্ন হয় নাঃ ভল। পিতলের কেতলি, বন্দুক প্রভৃতি পদার্থ लाई ठाढ़ांत প্রয়োজন হয়।

किञी ও जाग्रकन।

🗒 ে 🖂 🔆 সমৃদ্যুয়-দাপব্যহ্শনামে প্রসিদ্ধা ঐ। নার্থে অনেক সহিষ্ণুতা গুণ থাকা হৃত্যন্ত প্রয়ো-দ্বীপর্তহ্যে সকল পদার্থ উৎপন্ন হয়, তক্মধে। জনীয়, তাহা না থাকিলে জায়কল চাবের সমস্ত এলা, লবজ, জায়ফল, জৈত্রী, কপরাদি মসা- পরিশূম ব্যর্থ হয়। পঞ্চদশ বৎসর কাল জমা-লাই প্রধান। ফলতঃ ঐ সকল দ্বাপ মসলার গত অপর্যাপ্ত পরিশুমে এই বৃক্ষের পালন করি-আকর, এবং ভংপ্রযুক্ত অনেকে তাহাদিগের তি হয়; ঐ কাল মধ্যে ঝড়, বৃষ্টি, উই, সূয়া প্রভৃতি कछकछिति साम "ममालाघील" ताथिशाष्ट्र। चात्मक चालम् इटेट अहे वृद्धकत दक्षा ना कतित्व জয়েকল ও জৈত্রা এই দ্বীপ ভিন্ন অন্যত্র জন্মে প্রাপ্তক্ত লাভ ভোগ হইবার নহে। উই পোক। না এ নকল দাপের প্রাকৃত-ধর্ম যে প্র- নিবারণের নিমিত্ত প্রস্তাবিত দীপবাসিরা শূক कात, जमनूना प्राकृष-धर्मादिनाष्टे व्यम्। छोरण (तत विष्ठा करण छिना वृक्षमृत्म (महन करत, अवः चारनिक अरे शनार्थंत ठाय कतियरिक, किस करह त्य जाहारिक नकम डेहरेशाका अत्कवादि वि-किहरे क् उकाया दस नारे। नहां बीटल अरे शहा- नहें दस। अउटम भीत रेकू-हाटयत शतम माजू छेरे থের দুই একটা গাছ আছে, কিন্তু তাহা উত্তম পোকা; তৎকত্ক অনেক কৃষির সর্ব্য নত হইয়া (जरकावज नरहा

জায়কলের গাছ দেখিতে মৌয়াগাছের তুল্য; হয় তবে অৰুশ্য পরীক্ষা করা কর্ত্তব্য।

থানি বড়জুল-পরিনিত লেকড়ার প্রয়োজন: সিঙ্গাপুর-প্রদেশে ইহা ১৫।২০ হস্তহ্ইতে অধিক कारात के व्य शृद्ध अपूत-कारण किए में किटलरे मीर्च मिथा शाय ना। य श्वात हाया अधिक, সিকা প্রস্তুত হয়। এতডিয় ,মৎস্য ধরিবার ও অধিক ঝড় বৃষ্টি না লাগে, তথায়ই এই বৃক্ষ উত্তমকপে জমে। এই বৃক্ষের এক প্রধান লক্ষ্ এবং পিতলের কেতলীও প্রস্তাবিত দেশে চলিত এই যে ইছার কতকগুলিতে জ্ঞীপুড্প, ও অপর কথন ২ উভয় প্রকার পুষ্পাই এক বৃক্ষে জন্মে;

कारकलात हार काल लालकनक। अक दीया মোহরের প্রতিনিধি বলিলে বল। যায়; মৃগ, ভূমিতে ৭০ টা বৃক্ষ জন্মিতে পারে, তাহার এক২ क्षिरखानि वरुमुना पूर्वा क्या कतिए हहे- वृत्क वर्ष ১०१२ होक। मृत्नात काय्यन देखे बो উৎপন্ন হয়, সুতরাং প্রতি বীঘায় ৭০০৮০০ টাকা প্রাপ্ত হইয়া থাকে; অন্য কোন চাষ ইহার তুল্য লাভদায়ক বোধ হয় না। নারিকেলের নাড্র ' লায়কল-বৃক্ষে বার মাস ফুল ফল হইয়া থাকে; ্তিত্ৰ ক্ষুৰ্ভ সম্পুৰে পূৰ্ব-পাখে অনেকগুলি অতএব কথন এককালে নমস্ত ক্ষল নষ্ট হই ্ৰ 💓 💢 দাল একএে মাছে; ভাছা "ভারত- বার সম্ভাবনাও নাই। পরস্তু এই লাভ ভোগকর-থাকে; শূকর-বিষ্ঠায় যদ্যপি ভাষার প্রভীকার

কথিত হইয়াছে প্রস্তাবিত বৃক্ষের ফল বারমাস জন্মিয়া থাকে; তাহা দেখিতে গাব-ফলের
সদৃশ; এবং তাহা কাটিলে তথ্যধ্যে যে বীজ পাওয়া যায় তাহাই জায়ফল * নামে প্রসিদ্ধ, এবং
ঐ বাজও তদাবরণকারি শসের মধ্যে যে পদার্থ
থাকে তাহার নাম জৈত্রী। এই উভয় পদার্থকে
ভক্ষ করিলেই বাণিজ্যের উপযুক্ত হয়।

তিরত্দেশীয় মনুষ্যদিগের আচার ব্যবহার ৷

বিবিধার্থে তিম্বতদেশ-নিবাসিবর্ণ জ্ঞাদিগের মুথবিন্যানের প্রথা †
বর্ণ করা সিহাছে, অধুনা উক্ত দেবিষয়ক কিঞ্চিৎ প্রকাশিতব্য।

हिमानस्त उ उत्त- शार्श्य कि व्यक्षिक काम विविद्धान । वे प्रमा गर्वमा व्यक्त कीउन थारक; कर श्रमुक उपमांग्र धनी महिमू
गक्तकर व्याशाम मछक गर्वाक लामक व्यक्त वख्रवाता व्यक्त किया ताथिए एम। धनी वर्गकिरिशत शक्त शमम प्रविद्या गाणीन वखर मीज-निवात्र श्रमान उ शाम जेशाम, किया वर्गक व्यात शिक ब लामविनिष्ठ स्माप्त वर्गक-राक व्यात शिक नार, क्ष श्रम्हरू विद्धाल यार्हेट स्माप्त व्यात शिक नार, क्ष श्रम्हरू विद्धाल यार्हेट स्माप्त व्यात शिक नार, क्ष श्रम्हरू विद्धाल यार्हेट स्माप्त व्यात व्यात व्यात व्यात व्यात ना कित-स्माप्त व्यात व्यात व्यात व्यात ना कित-

मोइंड नगरम ज्ञाहारम्त्र मरथा श्राप्तः कहरे

গাত্ত-মুখাদি-প্রকালন করে না; ইছাতে তাহার।
এই কারণ দর্শায়, যে । ক কালে দৈবাৎ মুখকপোলাদির কোন হানে জল স্পৃষ্ট হইলে
তৎক্ষণাৎ কত হইবার সম্ভাবনা।

हेश खनाशिष्ट ज्ञन्ज हरेल भारत, य प्रत्मत लारकता नमंख मांजकाल नान करत ना, এবং मूथधूरेराउथ खनिष्टूक ठाशाता विद्यापित প্र-कालत्न ठाम्य यञ्जान हरेरक ना; कनजुर ठा-शांपिरात प्रशांकान विद्यापि खाउछ मिनिना खनत, प्रमावावशात्रवम्य उपम्याति खाउका खारकता खक माश्म, ठा ७ जम्भराति भाजापि, हूतो, काँछा, नवन, शाँका श्राङ्गि य कालापि, हूतो, काँछा, नवन, शाँका श्राङ्गि य कालापि, ह्रतो, काँछा, नवन, शाँका श्राङ्गि य कालापि, ह्रतो, वहेशा याहेवात खावमायक ह्रा, उर्धमभूमा स २ वर्ष्माप्तम खे खावनायक ह्रा, उर्धमभूमा स २ वर्ष्माप्तम खे खावनायक ह्रा, उर्धमभूमा स २ वर्ष्माप्तम खे खावनायक ह्रा, उर्धमभूमा स २ वर्ष्माप्तम खे खावनाय ह्रा वर्ष्मा काला वर्छ-मान खाह्म। जिच्चप्रमारात्र वर्ष्माप्तम खेखा वृद्यापि त्रार्थ, य खे स्ना छाङ्गाप्तरात्र खाञ्चात्र वित्रात्म वन्ना याह्म।

যে দেশে বর্ষের ছয় মাস মুথ প্রকালন করিবার রীতি নাই, এবং সলোম মেষচর্মই প্রধান পরিধেয়, তথায় সাবান বছমুলো বিক্রীত

হইবে, ইহা আশ্চর্যা নছে; পরস্ত তদেশে যে
সকল চীনের লোফ বসতি করে, তাহাদিগের
ব্যবহারারে কাশ্মীর ও নেপালহইতেই সাবান্ উক্ত দেশে প্রেরিত হয়। সিকিমদেশহইতে
যাহা যায় তাহা অত্যাপ। প্রস্তাবিত দেশে
বজাদি পরিকারাথে সানানের বড় অপেকা রাথে
না; তথায় এক রকম ঘাস জিমিয়া থাকে, তথান

जिवज्रासभीशिवरणत वार्म गमती रगाई श्र-निका कि जो कि शूक्य मकरल अधारताहरूवत नगाग जनूशित बारताहर करत, अवर जर्कारन

^{*} সৎকৃত ভাষায় এই পদার্থের আনেক নাম আছে ভরিখা; জাতীকল, জাতিফল, জাতীপুষ্পাসার, রাজভোগ্য, জাতীকোশ, জাতীকোষ।

^{, †} विविधार्यक् > शदर्वक >88 शृद्ध (मन्।

ভাছাদের বেশভূষা ও চড়িবার রীতি দেখিয়া। কেছ্ট জীপুক্ষের কিঞ্চিন্সাত্র ভেদ অনুমাণ করি। ভে পারে না।

উক্ত হইয়াছে, যে ভিত্তত্দেশের মনুষ্যেরা অত্যন্ত অপরিকৃত, কিন্তু তথাকীর স্থান তেমত नरह, ভত্রত্য কি সহর, कि পল্লীগুমি, সকল স্থান অতিসাবধানে পরিষ্ঠ রাথা হয়, কুত্রা-পি किञ्चिर मात्र मना थाकिवांत मञ्चादना नाहै। नगर्दक मन मध्य किल्या द्राधिवात निमित्त ध-ত্যেক লোকের বাটাতে এক ২ পার্থানা আছে. এবং লোকে তথাকার মল অতিপ্রযতে রাথিয়া थारक। रकह र्कह्वा कोरयोत खरत्र श्रहतिषात्र। ভাৰা রক্ষা করিয়া থাকে। তদ্দেশে শীতের প্রা-খান্যতাপ্রয়ক্ত অতি অত্প বৃক্ষাদি জয়ে, সুতরাং ইন্ধনের নিমিন্ত সকলকেই ঘুঁটিয়ার অবলম্বন করিতে হয়; দেশের সমস্ত পশুর মল জালাইবার নিষিত্ই ব্যবস্ত হয়; সার প্রস্তুত করিতে কিছুই পাওয়া যায় না; তদর্থে মনুষ্ঠের মল একমাত্র फेलाया जनद कान २ **फारन जे मरन** स्नाहां ड প্রান্তত एकेशा थाकि। এই প্রয়োজনানুরোপে **उत्पन्धीय लाटक मनटक श्रायः मनद्यान कदा ना**। मल्लविकात्रस्था कूमानामि व्यक्तत व्यवचन ना कविश रुख्याताई উक्त मन উत्त्वानन करत, अवः পার্থানা পরিকার ক্রিচে২ অনায়াসে সেই ष्याधील इराउँ हा माश्मामि लान उक्क व करता অপর, চাল ডাল প্রভৃতি বাণিজ্য দুব্যের ন্যায় **७** बड़ा नकरनरे जे मन विकीड कविशा ऋर्थी-भार्क्जन कतिया **थारक ; म्हार्म्म त्रांका ७ नग**रब २ मन विकासवाता धन मध्यस करतम। अभिकृष् कनाना वानिका मुखात्र ७०८७८ए य अकात মূল্যের তারতমা হয়, মল-বিক্সপ্পেও তজ্ঞপ নিয়ম भाष्ट्र। जम्मूनादा रेज्य मीतवाकित मनारशकाम

धनकान् मान्। वृद्धित यस व्यक्षिक मृद्धा विक्री व क्षेत्रा थारक । मन्द्रात मृद्ध छेखम-नारतत्र मरधा नगा, मृज्द्राः जिस्क एएटम काक्षेत्र गृहक जरमक व्यास्ट्रन

जिन्न ए तमीय मनूरवाता वोषध्यावनधी, वदः तिहै धर्मित श्रधान कर्डवा याश्विय-छात्राः व्यवह তিৰ্তীয়েরা অত্যন্ত মাংসাশী। লামা নামক ধর্মযাজক ভিন্ন সকলেই মেযাদির মাংস ভক্ষণ করিয়া থাকে, এবং অনেকে আমমংল রৌদু শুক করিয়া ভক্ষণ করে। দরিদু-লোক-মাত্রেই কিয়ৎ-পরিমিত শুক্ষ আমনাংস আপন ২ বকো-দেশে রাথিয়া থাকে, এবং আবশ্যক মতে ঐ **নাধারণ ভাণ্ডারহ্ইতে বাছির করিয়া লবণাদির** নিরবলম্বনে ভক্ষণ করে। অন্নের পরিবত্তে শক্তুই उथाकात श्रद्धान थाना; जाहा "माल्ला" नात्म প্রসিদ্ধ, এবং দেশের অর্জেক লোক ঐ সাম্পার অবলম্বনে দেহ-রক্ষা করে। কথন কেহ ডঙ্ল পাইলে তাহার পিউক বানাইয়া খায়; অন্ন পাক করিয়া খাইবার কুত্রাপি প্রথা নাই। भागीय मुद्राते मर्दा हो। এবং স্পাবালবৃদ্ধবনিতা नकदनरे প্रভ/र ৪—৫ বার করিয়া তাহা পান क्रिया थारक।

উক্ত দেশে শবসংস্কারের প্রথা অতি আশ্চর্য। তথার সমাধি বা দাহ করিবার রাভি
নাই; তৎপরিবর্ত্তে কেশন ব্যক্তি মৃত হইলে তাহাকে পর্বভাদি সদৃশ উচ্চ স্থানে রাথিয়া দেয়,
যাহাতে নির্হিত্ব শকুনি প্রভৃতি পশ্চিগন ভাহার
মাণস ভক্ষণ করিতে পারে, এই রাভি শার্মিদিগের শব সংস্কারের নিয়মের সহিত তুলা
হয়। ভাহারা প্রাচীর বেন্দিত সমাধি-স্থানে
শব কেলিয়া রাথে, এবং কালকালৈ মাংসাদি
পশ্ত পক্ষিদারা ভুক্ত ও গলিত হইলে অহি

🗝 वि पन् कूर्ण मृर्था निर्माण करत 📲 (य वें) जिल्ला **जिव**ण-(मृनीय भेर लहेया **প**र्वजानि डेक शास्त्र রাথে, তাহাদিণের দেশ-প্রসিদ্ধ নাম "রাগা তংদেন্ "; তাহারা ৰডন্ত দলে বিভক্ত। অপ্রিয় ব্যক্তিদিগের শবকে ভক্ষণ করাইবার নিমিছে ঐ খাশানবানিরা কতকগুলি কুরুর প্রতিপালন করি-য়া থাকে। ভিক্ষাই ভাহাদিপের প্রধান উপজী-विका। यथन छाहाड्रा कान धनी वास्त्रित निक्छे ৰাচিত বস্তু প্ৰাপ্ত না হয়, তথন ক্ৰোধপূৰ্বক करह, "चाष्ट्रं अथन जामानिशक किंहू ना रिख; कथन ना कथन वामादम्ब हाटा शिएट हरेदा ; তথন জোমার পায়ে দড়ি বালিয়া পথে ২ টানিয়া বেড়াইব, এবং তোমার শরীর কুক্কুরদিগকে থা-ওয়াইয়া দিব"। বস্তুতঃ দীন ব্যক্তির মৃতদে-(इंद्र नर्दमा के क्ल निष्ठ इरेग्ना थारक। धनवान् ব্যক্তি মৃত হইলে ভাহার দেহকে উক্ত শব-বাহকেরা পরতের উপরে লইয়া গিয়া ভাহার क्षिष्ठ ७ माःन शृथक् कदिशा व्यक्ति-मकन पूर्व এবং মাংস খণ্ড ২, করিয়া সমস্ত একত্র করত তল্পি-कटणे किकिन शब कानाहेशा (एश, जाहात धुम দৃষ্টে বহু সঙ্থাকে শকুণী জাতীয় পাক্ষিরা আ-নিয়া চুৰ্ণ অন্থি ও মাংস সমস্ত ভক্ষণ করে।

আয়ুর্লণ্ড-দেশীয় ভণ্ড ভিচ্চুক।

শ্বারাধন। শভাবসিদ্ধ সংস্কার,

শ্বারাধন। শভাবসিদ্ধ সংস্কার,

শ্বারাধন। শভাবসিদ্ধ সংস্কার,

শ্বারাধন। শ্বারাধন। আনেকর সোধে কা
শ্বারাধারে ১০৮ প্রে দেবার্থ



নেরাই এই দলের প্রধান। তাহারা করির নির্মানুসারে কালিক শুন্দারা আপন ২ আক হার উৎপাদন না করিয়া প্রবঞ্চনা-পূর্বক পরের মত্ত্ব অপহর। করিতে তৎপর—দিবারার এ অ-ভাইসাধনে বিবৃত থাকে। আর্শ্চর্য্যের বিষয় এই যে এই ব্যবসারে অনেকে যে পরিমানে শুন্ন ও ক্রেশ ল সহ্য করে, তাহার অধ্যেক করিলানে অন্য শুন করিয়া কোন উদু ব্যবসায় করিলে ভাহারা অনা-য়ানে সৎ উপজীবিকা অভ্যান করিতে পারিত।

ভেত্রতা অত্যন্ত প্রবল হইয়াছিল, এবং নহনুং ব্যক্তি একর হইয়া গামে ২ ভুমণ করত অনেকের আনিউ করিছ। প্রমাণ আছে, যে কোন গামে মদোনীছ ভিকা না পাইলে এই পামরের। তথ-ক্লণ্ড নমন্ত ম্যুম বৃষ্ঠ করিছ। এতাদৃশ অত্যা-চারে ভারত্বধের অনেক গুমুম ধ্বন হইয়াছে।

कांत्र, (भारमणा, यामू, ठेण প্রভৃতি লোকের।
প্রায়ঃ আনেকেই ভি চাকর বেশ ধারণ করিয়া
থাকে। ভিকৃর মধ্যে যাখারা চৌর্য্য বা অন্য
কোন ব্যবদার লা করিয়া কেবল যাচ্ঞা করিয়া
দিনঝাত করে, ভাষার মধ্যেও অনেকে অভ্যন্ত
মন্দ। ভতিনালোর যে প্রকারে গৃহত্তর ভারে
আনিয়া অবিরুত্ত চীৎকার, কটুভি, দেকে অন্তাযাত, বিশ্ব ভিক্তর, অন্সন্ধানি যাতনা নহ্য করত
ভিক্তা করে, ভাষা পাঠকর্ম নকলেই দেখিয়াহেন, এবং অনেকে অক্তণ পানরবিশ্বকে দানও
দিয়া থালি নি কির, বাজা করি। ভাষণ
ভিক্তার কি করা অন্যাপ্তি কারার অনুভৃত করিছে
পারেন নাই। আন্যাদিকের বিশ্বকর্মের ক্রাঞ্চ করিছে
পারেন নাই। আন্যাদিকের বিশ্বকর্মের ক্রাঞ্চ করিছে

" विवारिक अहे शरवाहा जाशन २ स्मर्क कमर्या या করিয়া সাধারণকে তাছাই দেখাইয়া অর্থ উপা জ্ঞানি ক্লব্লিড; অনেকে কশ্পিত অন্ধ হইয়। পথবা বিকলাক হইয়া প্রভারণা করিত, কেহ ২ বা লোকের দয়া বৃদ্ধি করিবার নিনিত শোকাতুর वा किछ इहेउ। किय़ काल भूटर्व वहे नक्त च-ত্যাচারের এতাদৃশ বৃদ্ধি হয়, যে ভরিবারণারে **बहे** निश्रम हितीक्छ रश, ८य, ८म न/फि तास-भर्ष डिकार्ष बाभन कठ वह एथाहरूव, ठा-হাকে কারাগার ভোগ করিছে ছইবে। এই নিয়মপ্রযুক্ত অধুনা বিলাতে প্রতিশারির সুক্রন সঙ্খ্যা অভি অংশ হইরাছে: কিন্তু ইহাতে শঠের वकास निवृत्ति इस नाहे; चटनाक वचन नमान **उत्रम्माका किया नग्रामिनुत्र महै कर्नाक नथ** जुनन कांत्रशा शारक। डेशांत य किंत मृह्यि रहेशांत. ভাষাতে এবস্পুকার ইন্ছাজাত অব্যের প্রতিমূর্ত্তি पृष्ठे इहरतक। आध-वंश-प्रताम अध्यक्षक जिन् चालक चारहः छाराहा >--> व निक अन्त वक गृहि वान करत । प्रवासारम ग्वक् वरेश बनायक समी-पूर्वन स्वित्व आर्थ वृत्ति रक्षेत्र अवस्था अवसीरकार्य निकरणत नार्थ अन्द क्षित्रा अत्र भाग्य नरकार्य करते।